اَضْوَاءُ الْبَيَان

فِي

تَرْجَمَةِ الْقُرْآنِ

अद़वाउल बयान

फी

तरजमतिल क़ुरआन

हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा दा० ब०

नोटः इस तरजमे की इशाअत की तहरीरी इजाज़त इदारा अज़हर अकेड़मी लन्दन के क़ानूनी शौबे से ले कर आप भी तिजारत के लिए या लिवजहिल्लाह इशाअत कर सकते हैं।

नाम : अद़्वाउल बयान फी तरजमतिल कुरआन

मुतरजिम : हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा दा० ब०

सफहात : 872

सिन् इशाअत : 1435 हि० - 2014 ई०

नाशिर : अज़हर अकेड़मी, लन्दन, बरतानिया

मिलने के पतेः

हिन्दुस्तानः

कुतुबखाना यहयवी, नज़्द मदरसा मज़ाहिर उलूम, सहारनपुर, यू०पी०
जामिअतुज़्ज़हरा, मुल्ला मोहल्ला, नानी नरोली, सूरत, गुजरात - 394110

पाकिस्तानः

दारूल इशाअत, उर्दू बाज़ार, एम. ए. जिन्नाह रोड, कराची - 1

जुनूबी अफ्रीकाः

Jamiatul Ulama South Africa
P. O. Box 42863, Fordsburg, 2033, Johannesburg

JUT Publishing
32 Dolly Rathebe Road, Fordsburg, 2033, Johannesburg
Tel: (+27) 11373 8000 | E: tasheel@islamsa.org.za

बरतानियाः

Azhar Academy Ltd.
54-68 Little Ilford Lane, Manor Park
London E12 5QA | UK
Tel: (+44) 208 911 9797 | Fax: (+44) 208 911 8999
E: sales@azharacademy.com | W: www.azharacademy.com

अर्ज़े नाशिर

➲ हमारे मुशफिक् शेख और उस्ताज़े मुहतरम हज़रत अक्दस शैखुल हदीस मौलाना यूसुफ मोतारा साहब दामत फुयूज़ुहुम दारूल उलूम, होलकम्ब, बरी, में दारूल उलूम के इब्तिदाई सालों से ले कर अब तक तरजमा कुरआन शरीफ पढ़ाते रहे। शुरू में कई साल तलबा अपनी तरजमा की कापियाँ लाहिक़ीन को मुन्तकि़ल करते रहे। फिर कापियों की जगह कैसेट्स (ब्ैंमजजमे), फिर सीडीज़ (ब्के) मुन्तकि़ल होती रहीं। यहाँ तक के पन्द्रह बीस वरस से जब ये सीडीज़ वेब साईट पर रख दी गईं, तो दारूल उलूम के मुतअल्लिक़ीन के लिए मज़ीद आसानी हो गई थी।

➲ अब आखिरी मरहला तबाअत का रेह गया था। अगर्चे तलबा ने अपने तौर पर टाईप कर के, मालूम नहीं कुल्ली या जुज़्ई तौर पर, ये मरहला भी तै कर लिया था। लेकिन हमारी ख्वाहिश थी के बाक़ाइदा साहिबे तरजमा की इजाज़त से हम इस तरजमे को अज़हर अकेड़मी की तरफ से तबअ कराएं। मगर हमारी दरख्वास्त के बाद शुरू में तो इन्कार होता रहा। बाद में इस शर्त के साथ इजाज़त मिली के कोई माहिर इस तरजमे को बनज़्रे तस्हीह व इस्लाह मुकम्मल तौर पर देख ले।

➲ चुनांचे हम ने मुशफिक् दोस्त जनाब खलील अशरफ साहब उस्मानी ज़ीद मजदुहुम के तवस्सुत से हज़रत मुफती मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहब दाम ज़िल्लुहुम से इस पर नज़रे सानी की दरखवास्त की, तो उन्हों ने अपने दारूल उलूम कराची के शौबए तखस्सुस फिद्‌दावत के डाइरेक्टर, हज़रत मौलाना डा० साजिदुर्रहमान साहब कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि के सुपुर्द ये काम फरमा दिया।

➲ डा० साजिदुर्रहमान साहब के वालिदे मुहतरम मुहद्दिसे कबीर शारिहे सुनने तिर्मिज़ी हज़रत मौलाना अश्फाकुर्रहमान साहब कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू हैं। चुनांचे आप ने चन्द माह में किबरे सिन्नी और इल्मी मशाग़िल और दारूल उलूम कराची की खिदमात के साथ तरजमे की इस्लाह व तस्हीह का काम मुकम्मल फरमा लिया। अल्लाह तबारक व तआला उन्हें बेहद जज़ाए खैर अता फरमाए और उन की खिदमाते जलीला को क़बूल फरमा कर उन के दरजात बुलन्द फरमाए। आमीन!

➲ अखीर में दुआ है के कलामे इलाही के इस तरजमे के सिलसिले में जो कोताही, कमी वाकेअ हुई हो, अल्लाह तआला उसे मुआफ फरमाए और अब तक जिन हज़रात ने उस में जांफिशानी की है या आइन्दा जो करेंगे, उन सब को अल्लाह तआला क़बूल फरमाए और सब के लिए उखरवी नजात का ज़रिया बनाए। आमीन!

इदारा अज़हर अकेड़मी, लन्दन

असातिज़ाए दारुल उलूम देवबन्द की ताईदी तहरीर
5

क़ुरआने करीम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ से नाज़िलकरदा सब से आखिरी किताबे रुश्द व हिदायत है और तमाम उलूम व फुनून का सरचश्मा और बेहरे नापैदाकिनार है, जिस के हक़ाइक़ और निकात बयान करने के लिए क़ुरूने ऊला से ही उलमाए किराम ने अर्क़रेज़ी और जांफशानी की है और मुखतलिफ ज़बानों में तर्जमे व तफासीर लिखे हैं।

चुनांचे उर्दू ज़बान जो अपनी वुसअत व मक़बूलियत के ऐतेबार से दुन्या की चंद बड़ी ज़बानों में शुमार होती है, इस ज़बान में भी उलमाए किराम ने बड़ी अर्क़रेज़ी के साथ तर्जमे किए हैं, जिन में शैखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी नव्वरल्लाहु मरक़दहू, हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रहिमहुल्लाह और हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी हफिज़हुल्लाह के तर्जमे बेहद मक़बूल हुए, और ये मुबारक सिलसिला ता हुनूज़ जारी है।

ये तर्जमाए क़ुरआने करीम जो आप के सामने है, हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब दा० ब० का है। हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा हफिज़हुल्लाह, शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करीया मुहाजिर मदनी नव्वरल्लाहु मरक़दहु के मौतमिदे खास और अजल खुलफा में से हैं और हज़रत शैखुल हदीस रहिमहुल्लाह के ईमा पर दयारे यूरोप के मुल्के बरतानिया में दिने इस्लाम की इशाअत व तबलीग़ के लिए ख़ैमाज़न हो गए और वहां दारुल उलूम बरी के नाम से इदारा क़ाइम कर के आज तक शब व रोज़ दीन की खिदमत और तअलीम व तअल्लुम के लिए वक़्फ़ हैं, और इस वक़्त इंग्लैंड, कनाडा और अमरीका के मुख्तलिफ शेहरों में आप के इदारे के फ़ारिग़ुत्तहसील उलमाए किराम खिदमते दीन के लिए फैले हुए हैं, जो आप ही के मरहूने मिन्नत हैं।
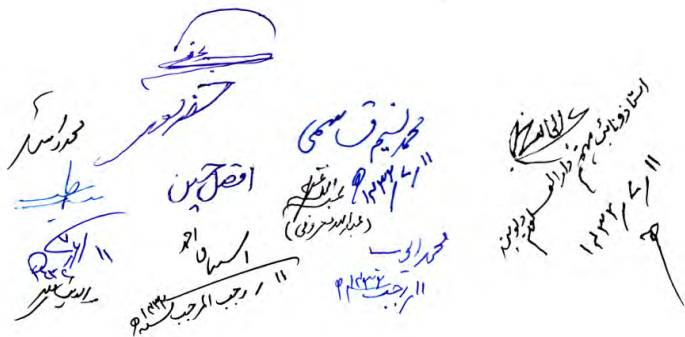
ज़मानाए तदरीस में हज़रत वाला से क़ुरआने करीम का तर्जमा पढ़ने वाले तलबा तर्जमाए क़ुरआने करीम नोट करते रहे और कैसेटों और सी डी में तर्जमे के दर्स को महफूज़ करते रहे। इसी महफूज़ तर्जमे को हज़रत ने दक़ीक़ नज़रे सानी और ज़रूरी इस्लाह के बाद तय्यार किया है जो अल्हम्दुलिल्लाह क़ाबिले क़दर और लाइक़े तहसीन है।

हज़रत वाला ने अपने बिरादरे कबीर हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा दा० ब० के दस्तगिरिफ्ता हज़रत मौलाना मुहम्मद सालिम साहब क़ासमी, बानी व मुहतमिम जामिआ

क़ासिमीया दारुल उलूम ज़करीया, ट्रांसपोर्ट नगर, मुरादाबाद, की मारिफ़त ये तर्जमा नज़रे सानी के लिए हम असातिज़ाए दारुल उलूम देवबन्द के पास इरसाल फरमाया, जिस को हम लोगों ने तक़रीबन चार माह की मुद्दत में बड़ी गेहराई और गीराई और ख़ुलूस व महब्बत के साथ देखा, पढ़ा और जहाँ ज़रूरत महसूस हुई मशवरे दिए, जिस से ये तर्जमा मुस्तनद, क़ाबिले ऐतेमाद, नाफिअ और मुफीद हो गया है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ साहब मोतारा हफिज़हुल्लाह का ये तर्जमाए क़ुरआन उम्दा किताबत और आला तबाअत से आरास्ता हो कर क़ारिईन के हाथों में है। दुआ है के रब्बे रहीम व करीम मौलाना मोतारा साहब को शायाने शान जज़ाए खैर अता फरमाए और हम सब के लिए ज़ख़ीरए आख़िरत बनाए। आमीन।

मौलाना मुहम्मद नसीम अहमद साहब बाराबंकवी, मौलाना मुहम्मद अय्यूब साहब मुज़फ़्फ़रनगरी, मौलाना मुनीर अहमद साहब, मौलाना मुफ़्ती राशिद साहब, मौलाना मुफ़्ती अब्दुल्लाह साहब मारूफी, मौलाना खिज़र अहमद साहब, मौलाना मुहम्मद अफज़ल साहब, मौलाना मुहम्मद साजिद साहब व मौलाना मुहम्मद आरिफ जमील साहब

हज़रत मौलाना मुख़्तार असअद साहब की राए गिरामी

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ○

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم۔ امابعد۔۔

दर्स व तदरीस या किसी वाक़िआती इल्मी शाहकार की बड़ी खूबी ये होती है के वो किसी तअब और उल्झन के बग़ैर समझ में आ जाए, सामिईन व नाज़िरीन के कुलूब को अपनी तरफ खींचे और अगर उस को तवज्जुह से सुना जाए तो ज़हननशीन होने में भी देर न लगे।

हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा साहब दामत बरकातुहुम का ये तर्जमा मज़कूरा तमाम खुबियों का मजमूआ हैः आसान भी है, जाज़िबे कुलूब भी है, और तवज्जुह के साथ पढ़ा जाए तो जल्द ज़हननशीन भी हो जाता है। मज़ीद बरआँ अक़रब इला अल्फाज़िल कुरआन भी है, जिस से कलामुल्लाह शरीफ का मफहूम व मक़सूद उजागर होने के साथ ये वज़ाहत भी हो जाती है के अल्फाज़ के अस्ल और लुग़वी मआनी क्या हैं।

खुलासा ये के ये बाबरकत तर्जमा एक इन्तिहाई मुफीद इल्मी काविश और उलूमे कुरआनी पर हज़रत मौलाना मद्दज़िल्लुहुल आली की नज़रे अमीक़ और महारते ताम्मा का अक्से जमील है।

हिन्द व पाक के मुतअद्दद उलमाए किराम ने नज़रे सानी के बाद उस की तसवीब व तहसीन फरमाई है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का करम है के राक़िम को भी इस पर नज़रे सानी की सआदत हासिल हुई और इस ज़ैल में जो कुछ बन्दे ने लिखा, साहिबे तर्जमा ज़ीद मजदुहुम ने शरफे क़बूल से नवाज़ा और दुआएं दीं। फलिल्लाहिल हम्द।

अल्लाह तआला तिश्नगाने उलूम को ज़्यादा से ज़्यादा इस चश्मए शीरीं से सैराब करे, अवाम व खवास के लिए इस को नाफेअ बनाए और दारैन में क़बूलियते आम्मा व ताम्मा अता फरमाए। ईं दुआ अज़ मन व अज़ जुम्ला जहाँ आमीन बाद।

(हज़रत मौलाना) मुख़्तार असअद सहारनपूरी (उफिय अन्हु)
19 मार्च 2012 ई०
अज़हर अकेड़मी, लन्दन

आह! हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा

रहमतुल्लाहि अलैह

दरअस्ल ये तर्जमा "अदवाउल बयान" क़ारिईन के हाथों में न पहोंच पाता, अगर मौलाना अब्दुर रहीम साहब रहमतुल्लाहि अलैह की दुआएं और तवज्जुहात और उन की तहरीज़ व तशजीअ उन के बिरादरे खुर्द हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा पर न होतीं, बल्के ये केहना ज़्यादा मुनासिब है के हज़रत मरहूम के पैहम इसरार और वाज़ेह हुक्म के बाद ही ये तर्जमा पेहली मर्तबा मन्ज़रे आम पर आया था, इस लिए मुनासिब मालूम होता है के हज़रत मौलाना मरहूम के मुख़्तसर हालात और उन की ख़ुसूसियात यहां शामिले इशाअत कर दी जाएं। अल्लाह तआला मरहूम को जज़ाए खैर दे और ये तर्जमा उन के हसनात में इज़ाफ़े का सबब हो।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा अल्लाह के एक बातौफ़ीक़ बन्दे, खामोश तबीअत दाओ, सरज़मीने कुफ्रिस्तान पर एक शमए फ़रोज़ाँ, मीनाराए नूर, मम्बए इल्मे दीन और नाशिरे रुश्द व हिदायत थे। उन्हों ने बचपन ही से तालीम व तर्बियत की तरफ तवज्जुह दी, और ज़ाहिरी उलूम की तकमील के बाद बातिनी उलूम की तहक़ीक़ व तहसील के लिए वक़्त की मशहूर शख्सीयत क़ुत्बे आलम शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करीया साहब कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैह की खिदमते बाबरकत में हाज़िरी दी, जिन से पेहले इल्मे हदीस की दौलत हासिल की, जो गोया के बातिनी उलूम की तहसील और तकमील के लिए तमहीद थी। इस तरह हज़रत शैख़ के यहाँ एक आम शागिर्द से ख़ास शागिर्द और एक आम कातिब से ख़ास कातिब और खादिमे खास का मक़ाम हासिल कर लिया। फिर सुलूक व तरीक़त का रास्ता भी बहुस्न व खूबी तय कर लिया, यहाँ तक को हज़रत शैख़ को आप से राहत महसूस होने लगी, जिस का इज़्हार हज़रत शैख़ ने इस तरह फरमाया के: "अब्दुर रहीम! तुझ से रूहानी राहत मिलती है।"

फिर इरशाद फरमाया के ज़ाम्बिया के लक़ व दक़ वीराने में जा कर दीन की शमअ रौशन करो और दीने मुबीन की दअवत दो और तालीम व तरबियत का इन्तिज़ाम करो, और जहालत व तारीकी के मुल्क में इल्म की रौशनी के दीप जलाओ। चुनांचे हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब ने ज़ाम्बिया के एक ग़ैर तरक़्क़ीयाफ्ता दूरउफ्तादा इलाक़ा चीपाटा में पहोंच कर एक दीनी इदारे की बुन्याद रख दी, और मअहदुर रशीद अलइस्लामी उस का नाम रखा। इस तरह हज़रत शैख़ ने

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब को अफ़्रीक़ा की सरज़मीने ज़ाम्बिया के लिए मुन्तख़ब फ़रमाया, और आप के छोटे भाई हज़रत मौलाना यूसुफ साहब को बरतानिया की सरज़मीन पर इल्म की शमअ रौशन करने के लिए मुक़र्रर फरमाया। और दोनों को एक ख़ास रक़म भी इनायत फरमाई, और दोनों के इदारों को अपने क़ुदूमे मयमनत से भी मुशर्रफ फरमाया।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब ने अपनी इल्मी क़ाबिलीयत व सलाहियत के बावजूद हज़रत शैख़ के हुक्म पर ऐसे बयाबान जंगल में जाने को पसन्द किया, और अपनी आला इल्मी सलाहियत को वहां के झाड़ झंकार को साफ़ करने में ख़त्म कर दिया, और ऐसा शजरए तय्यिबा लगाया के أَصْلُهَا ثَـابِتٌ وَّفَرْعُهَـا فِي السَّمَـآءِ का मन्ज़र मह्सूस होने लगा। मौलाना ने जिस दौर में वहाँ जा कर काम शुरूअ किया, वो इन्तिहाई पुरखार था, बल्के एक चटयल मैदान था, जहां पर हर तरफ सियाही, तारीकी और जहालत के बादल मंडला रहे थे, और पढ़े लिखे आदमी का जी लगना बहोत दुश्वार था, मगर उस हिम्मत के जियाले ने ये सब अल्लाह की ख़ुशनूदी और अपने शैख़ के हुक्म की तामील में बर्दाश्त किया, और अखीर ज़िन्दगी तक शैख़ के हुक्म को निभा दिया, और वहीं की ख़ाक में आसूदा हो गए। इस तरह बफ़ज़्ले खुदा वहां जो तालीमी काम शुरूअ किया था, उस का फैज़ अफ़्रीक़ा के बहोत से मुल्कों, ख़ास तौर से ज़ाम्बिया और उस के आस पास के मुल्कों में खूब फैला हुवा है। मौलाना ने सियाहफाम नस्ल के तलबा को जहां दीन और इल्मे दीन सिखाया, क़ुरआने करीम और दीनियात की तालीम दी, वहीं उन को उर्दू ज़बान भी सिखाई, जो इस वक़्त बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक ही की नहीं, बल्के दुन्या में अरबी, अंग्रेज़ी के साथ ज़्यादा बोली जाने वाली ज़बान है, और अरबी के बाद जिस में दीन का सब से ज़्यादा सरमाया मौजूद है।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब की पैदाइश यकुम जुमादस्सानिया सन १३६३ हिजरी, मुताबिक़ २४ मई सन १९४४ बरोज़े बुध मौज़अ वरेठी में हुई। आप के आबाई वतन और खानदान और इब्तिदाई हालात से मुतअल्लिक़ आप के छोटे भाई हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा साहब तहरीर फरमाते हैं के: हमारा खानदान वरेठी ज़िला सूरत में सदियों से मुक़ीम है, और ज़िराअत पेशा है। मगर हमारे दादा मुहतरम और वालिद साहब ने ज़मीन बटाई पर दे कर तिजारत का पेशा इख़्तियार किया। और दादा मरहूम ने जुनूबी अफ़्रीक़ा का सफर किया, कई साल वहां मुक़ीम रहे और अरसाए दराज़ के बाद वतन वापस लौटे और चन्द रोज़ बाद ही वरेठी में इन्तिकाल फ़रमाया। दादा साहब ने इकलौते बेटे को औलाद में पीछे छोड़ा। वालिद साहब ने अपनी वालिदा की आग़ोशे तरबियत में यतीमी की हालत में परवरिश पाई, और जवानी को पहोंच कर तिजारत शुरूअ कर दी। और हथुरण के एक मुख़्य्यर खानदान में पेहला निकाह हुवा और

अल्लाह ने एक लड़का अता फरमाया, नाम मुहम्मद अली तजवीज़ फरमाया। और पेहली एहलिया का चन्द साल ही में इन्तिक़ाल हो गया, तब दूसरा निकाह हमारी वालिदा आमिना बिन्ते मुहम्मद बिन इस्माईल देसाई से हुवा। हमारे नाना के आबा व अजदाद दरयाए ताप्ती के किनारे पर खुलवड़ नामी क़स्बे में आबाद थे। वहाँ इस खानदान की ज़मीन पर बनाई हुवी किनारे वाली मस्जिद अब तक मौजूद है। किसी वजह से ये खानदान नानी नरोली मुन्तक़िल हो गया, जो उस ज़माने में तक़रीबन जंगल ही था। यहां ज़िराअत का पेशा इख़्तियार किया और दीनी ऐतेबार से न सिर्फ गाउँ में, बल्के अतराफ़ में ये खानदान बिलखुसूस हमारे नाना जान दीनी हल्क़े में मशहूर थे। इस लिए आप ही का दौलतकदा यहां आने वाले उलमा व मशाइख के लिए मेहमानखाना होता था।

वालिदा मुहतरमा से निकाह के बाद वालिदा की दीनदारी का असर वालिद साहब पर भी आहिस्ता आहिस्ता पड़ना शुरूअ हुवा, यहाँ तक के वालिद साहब मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर बंगाली मुहाजिरे मक्की (जो हज़रत अल्लामा मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी रहमतुल्लाहि अलैह के खलीफा मुजाज़ थे) से बैअत हो गए और ज़िक्र व शग़ल शुरूअ कर दिया। इधर निकाह के बाद पांच छे साल तक कोई औलाद नहीं हुई। इसी अस्ना में हज़रत मूसा सुहाग के सिलसिले के एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए। वालिद साहब ने औलाद के लिए दुआ की दरख्वास्त की। आप ने वालिदा के लिए अंगूठी दे कर एक लड़के की बशारत दी और होने वाले लड़के के लिए इल्म व सलाह वग़ैरा औसाफ से मुत्तसिफ़ होने की बशारत दी। साल भर के बाद वो बुज़ुर्ग दोबारा तशरीफ़ लाए, तो उस से पेहले मौलाना अब्दुर रहीम साहब का तवल्लुद हो चुका था। उन्हें देख कर मसरूर हुए, दुआएं दीं और दूसरी अंगूठी दे कर एक दुसरे लड़के की इसी तरह बशारत दी।

वालिद साहब ने जब से ज़िक्र व शग़ल शुरूअ किया था, आहिस्ता आहिस्ता उन की तबीअत पर ज़िक्र का असर बढ़ता चला गया। यहां तक के वालिद साहब पर जज़्बी कैफियत का ग़लबा होने लगा। और उसी कैफियत में वालिदा साहिबा से फरमाते के: “मैं ने तर्के दुन्या का इरादा कर लिया है, आप अपने घर चली जाओ!” खानदान के बड़ों ने हर तरह समझाने की कोशिश की, बिलआख़िर उन्हों ने तलाक़ नामे पर दस्तखत करवा लिए के कहीं ये हालत जुनून में तब्दील हो गई तो बीवी उमर भर के लिए मुअल्लक़ रेह जाएगी। और तलाक़ की इद्दत वज़्ए हमल थी। चुनांचे तलाक़ के चन्द रोज़ बाद ही नन्हियाल नानी नरोली में हमारे नाना के यहां मेरी यकुम मुहर्रमुल हराम सन १३६६ हिजरी पीर की शब में विलादत हुई। जब उमर तक़रीबन आठ साल हुई, तो जुनूबी अफ़्रीक़ा में हमारी खाला ग्यारा बच्चों को छोड़ कर हालते ज़चगी में इन्तिक़ाल कर गईं। उन की जगह खालू ने वालिदा से निकाह किया और वालिदा अफ़्रीक़ा चली गईं। और

नाना नानी ने (भाई साहब की और) मेरी परवरिश की। चन्द साल बाद उन दोनों का साया भी सर से उठ गया। उन के बाद ख़ाला ने परवरिश की और परवरिश का हक़ अदा कर दिया।

हर बुज़ुर्ग की अलग अलग सिफ़ात होती हैं, मगर हज़रत मौलाना की बहोत सी सिफात में से एक सिफत ये थी के वो एहले तअल्लुक़ का बहोत लिहाज़ करते थे और जो एहले मदारिस वहां पहोंचते थे उन को हक़ीर नहीं समझते थे। नहीं तो आज कल, बाज़ एहले इल्म और मशाइख ही नहीं, बल्के बाज़ मर्तबा तो बाज़ एहले मदारिस भी जब उन को मालूम हो जाए के आने वाला चन्दे वाला है या मदरसा वाला है, तो उस को हक़ीर समझते हैं, और हक़ीर न भी समझें मगर ज़्यादा खातिर में नहीं लाते, उस की तरफ तवज्जुह और उस का तआवुन करना तो दूर की बात है। इस सिफत में मुफक्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली हसनी नदवी नव्वरल्लाहु मरक़दहु बहोत मुमताज़ थे। वो हर आने वाले की क़दर करते थे, ख़ास तौर से दीनी कामों की निस्बत पर जो भी आते थे। इसी तरह हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब मोतारा भी इस सिलसिले में मुमताज़ थे, जो एहले मदारिस हा ख़ास ख़याल फरमाते थे और उन का हर मुमकिन तआवुन करते थे। हैरत होती है के वो शैख़ होने के बावजूद लेने वाले हज़रत ही नहीं, देने वाले हज़रत थे। वो हिन्दुस्तान में बाज़ मशाइख को खुसूसी रक़में भेजते थे। एक सिफत हज़रत मौलाना में ये थी के वो मुस्तग़नी थे, गोया के उन को लोगों से मिल कर वहशत होती थी। वो अपने मामूलात के पाबन्द थे, मामूलात में ज़र्रा बराबर भी फ़र्क़ नहीं आता था। नवाफिल और तिलावते क़ुरआने करीम में अक्सर मशग़ूल रेहते थे।

बात साफ़ करते थे, और साफ़ सीधी बात ही को पसन्द करते थे। किसी सवाल के जवाब में बात के तकरार और हेराफेरी को नापसन्द फरमाते थे और उस पर फ़ौरन नकीर करते थे। उन्हों ने अपने मअहद को चलाने में एक चीज़ का ख़ास तौर से एहतेमाम किया है के अपने मदरसे में ज़कात की मद उन्हों ने नहीं ली, सिर्फ लिल्लाह अतिय्ये की मद में उन्हों ने अपने इदारे की तामीरात भी कीं, और सालाना खर्च जो अच्छा खासा है, वो हमेशा लिल्लाह से चलाया है। वरना आज कल तो तुज्जार का भी ज़्यादातर मिज़ाज ज़कात देने का है, मगर हज़रत की करामत ही कहिए के ऐसे आज़माइश के पुराशोब दौर में उन्हों ने अपने मअहद को लिल्लाह के ज़रिए से चलाया। क़ुरआने करीम की ये आयत وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ فَهُوَ حَسْبُهُ، وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ऐसे ही लोगों के लिए है।

बहर हाल, हज़रत की किन किन सिफ़ात को बयान किया जाए? वो तो अल्लाह के एक

वली और अल्लाह की निशानियों में से एक थे और गोया के सरज़मीने अफ़्रीक़ा के लिए चाहे उन को इमाम कहा जाए या मुस्लिह कहा जाए या मुजद्दिद कहा जाए, हर एक लक़ब उन के लिए मौज़ून है। वो बेज़रर और मुख्लिस इन्सान थे। अल्लाह तआला ने उन को हज़रत शैख़ की दुआ की बरकत से हज और उमरे की भी बार बार तौफ़ीक़ दी और उन्हों ने भी इस नेअमते उज़्मा से खूब फाइदा उठाया। अल्लाह तआला उन को ग़रीक़े रहमत करे।

हज़रत मौलाना अब्दुर रहीम साहब ने अपनी पूरी ज़िन्दगी अफ़्रीक़ा की सरज़मीन पर दिनी तालीम की नशर व इशाअत में तमाम कर दी और जब आख़िरत के सफर का वक़्त आया तो बाक़ियाते सालिहात छोड़ कर चले गए। हदीस में आता है के जब इन्सान मर जाता है तो तीन चीज़ों का सवाब उस के लिए जारी रेहता है। एक तो सदकए जारिया मसलन कोई रिफाही काम अन्जाम दिया या कोई मस्जिद व मकतब और मदरसा बना दिया या आम पब्लिक के फाइदे की खातिर कोई काम किया, या कोई इल्मी कुतुबखाना क़ाइम किया, या इल्मी किताबें और तसनीफ़ात छोड़ी हों और शागिर्दों का एक सिलसिला हो, इसी तरह नेक सालिह औलाद छोड़ी हो जो सआदतमन्द हो और वालिदैन के लिए दुआ करती हो। माशाअल्लाह, अल्लाह तआला ने हज़रत मौलाना को तीनों निअमतों में से वाफिर हिस्सा अता फ़रमाया के "सिराजुल क़ारी", "महब्बतनामे", और "हक़ीक़ते शुक्र" वग़ैरा किताबें और हज़ारों शागिर्द छोड़े, एक दिनी तालीमी इदारा छोड़ा, और फिर उस के तहत कितने ही मकातिब छोड़े और नेक सालिह औलाद छोड़ी।

अब हज़रत मौलाना की ज़िन्दगी की शाम हो चुकी थी, इस लिए वो अपने आमाल व खिदमात की उजरत के लिए लिक़ाए रब के मुन्तज़िर थे, जो बग़ैर मौत के मुमकिन नहीं। इस लिए हज़रत मौलाना ने भी यही राह इख़तियार की और २५ मुहर्रमुल हराम सन १४३४ हिजरी मुताबिक़ ९ दिसंबर २०१२ की सुब्ह की नमाज़ के बाद तमाम मामूलात से फ़ारिग़ हो कर अपने रब के हुज़ूर हाज़िर हो गए। इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन। और शाम को साढ़े तीन बजे नमाज़े जनाज़ा हुई और चीपाटा के आम क़ब्रस्तान में हमेशा हमेश के लिए आसूदाए ख़ाक हो गए।

غفر الله له ورفع درجاته في جنات النعيم

इदारा अज़हर अकैडमी, लन्दन

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जमा कुरआन हज़रत मौलाना यूसुफ मोतारा दाम ज़िल्लुहुम

(साहिबे मुक़द्दमा हाज़ा, हज़रत मौलाना साजिदुर्रहमान साहब सिद्दीक़ी, 4 सफर 1433 हि०, मुताबिक़ 30 दिसम्बर 2011 ई०, बरोज़ जुमा इस दारे फानी से रिहलत फरमा गए। नमाज़े जनाज़ा हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद रफीअ उस्मानी साहब दाम ज़िल्लुहुम ने पढ़ाई। अल्लाह तबारक व तआला मौलाना मरहूम को अपने जिवारे रेहमत में बुलन्द दरजात से नवाज़े। आमीन!)

الحمد للہ نحمدہ ونستعینہ ونستغفرہ ونؤمن بہٖ ونتوکل علیہ ونعوذ باللہ من شرور انفسنا ومن سیئات اعمالنا من یھدہٖ اللہ فلا مضل لہ ومن یضللہ فلا ھادی لہ ونشھد ان لا الہ الا اللہ وحدہ لا شریک لہ ونشھد ان سیدنا ومولانا محمداً عبدہ ورسولہ وصلی اللہ علیہ وعلی آلہٖ وصحبہ وسلم۔

सय्यिदी व मुरशिदी हज़रत शैखुल इस्लाम मुफ्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी मुद्द ज़िल्लुहुम ने अज राहे कमाले इनायत इरशाद फरमाया के अहक़र हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम (मुहतमिम दारूल उलूम बरी, इंगलैंड) के तर्जमए कुरआने करीम का मुतालआ करे और उस के बारे में अपनी मुतवाज़िआना राए से मौसूफ को मुत्तलेअ कर दे। अहक़र ने हज़रत शैख के ईमा को हुक्म तसव्वुर करते हुए हज़रत मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम के तर्जमए कुरआन को लफज़न लफज़न पढ़ा और जुस्ता जुस्ता अपनी मुतवाज़िआना राए भी तहरीर की। जिस को हज़रत मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम ने अपने अल्ताफे करीमाना से शरफे क़बूल भी अता फरमाया। फलिल्लाहिल हम्दु वलहुश्शुक्र।

इस अहक़र को अपनी कमइल्मी की बिना पर हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम की गिरांक़द्र शख्सीयत और उन के हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से तअल्लुक़ के बारे में आगाही हासिल न थी। हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी दामत बरकातुहुम ने इस आजिज़ को ज़रूरी कवाइफ से मुत्तलेअ फरमाया। अगर्चे मैं हरगिज़ इस क़ाबिल न था के हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम की शख्सीयत और उन के तर्जमए कुरआन के बारे में कोई तहरीर सुपुर्दे क़लम करता, मगर बक़ौले शाइरः

हिकायत अज़ क़दे आँ यार दिलनवाज़ कुनैम
बईं बहाना मगर उम्रे खुद दराज़ कुनैम

हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू कमालाते बातिनी और मदारिजे इल्मी की उन बुलन्दियों तक पहोंचे हुए थे के बिला तअम्मुल उन की शख्सीयत को सलफे सालेह की सीरत व किरदार और उन के इल्म व अमल का एक जामेअ तरीन पैकर क़रार दिया जा सकता है। हज़रत शैखुल हदीस का तअल्लुक़ कांधला के उस अज़ीम खानवादे से था जिस का सिलसिलए नसब हज़रत मुफ्ती इलाहीबख्श साहब रहमतुल्लाहि अलैहि और फिर ऊपर हज़रत अबू

बक्र सिद्दीक़ रदि़यल्लाहु अन्हु तक पहोंचता है।

हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू 11 रमज़ानुल मुबारक 1315 हि० में पैदा हुए। आप के वालिद का नाम हज़रत मौलाना मुहम्मद यहया कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि और आप के जद्दे अमजद का इस्मे गिरामी हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माईल कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि है। हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि ने इल्मे हदीस अव्वलन अपने वालिद मौलाना मुहम्मद यहया कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि और उन के बाद अपने मुरब्बी व मुरशिद हज़रत मौलाना खलील अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि से हासिल किया और 'बज़्लुल मजहूद' की तालीफ में अपने शेख की मुआवनत फरमाई। हदीस और उलूमे हदीस का अस्ल ज़ौक़, मौज़ूअ और मेहनत व तहक़ीक़ का मैदान था और उस को वो तक़र्रूब इलल्लाह और तक़र्रूब इलर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सब से बड़ा ज़रिया समझते थे और उस को उन्हों ने अपना शिआर व दिसार बना लिया था। यहांतक के शैखुल हदीस उन के नाम के क़ाइम मक़ाम और उस से ज़्यादा मशहूर हो गया था।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम हज़रत शैखुल हदीस के तिलमीज़े खास, उन के मुजाज़े बैअत और उन के मुक़र्रबीने खास में से हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोताा साहब मुद्द ज़िल्लुहुमुल आली मुहतमिम दारूल उलूम बरी इंगलैंड मुहर्रमुल हराम 1366 हि० (25 नवम्बर 1946 ई०) को एक दीनी घराने में पैदा हुए। इब्तिदाई तालीम मदरसा तरग़ीबुल कुरआन नानी नरोली में हासिल कर के सन् 1961 ई० में रांदेर के मशहूर मदरसा जामिआ हुसैनिया में दाखला लिया और हिदाया अव्वलैन तक यहीं तालीम हासिल की। उस के बाद मज़ाहिर उलूम (सहारनपूर) में दाखला लिया और शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब से मिश्कात पढ़ी और जलालैन मौलाना मुहम्मद आक़िल साहब से और हिदाया सालिस मौलाना मुफ्ती मुहम्मद यहया साहब से पढ़ी। उस के बाद नसई और अबू दाऊद हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब जौनपुरी से, तिरमिज़ी और सहीह मुस्लिम हज़रत मौलाना मुफ्ती मुज़फ्फर हुसैन साहब से और तहावी हज़रत मौलाना असअदुल्लाह साहब से पढ़ी और सहीह बुखारी शरीफ (मुकम्मल) हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से पढ़ी।

दौराने तालीम ही इस्लाह की फिक्र दामनगीर हुई और हज़रत मौलाना अहमद अदा गोधरवी के मश्वरे से हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से बैअत के लिए उन की खिदमत में अरीज़ा इरसाल किया जिस को हज़रत शैखुल हदीस ने शरफे क़बूलियत बख्शा और दाखिले सिलसिला फरमा लिया।

तअल्लुक़े इरादत क़ाइम होने के बाद तालीम के साथ मामूलात का सिलसिला भी जारी रहा। हज़रत शैख से पेहली मुलाक़ात उस वक़्त हुई जब हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैहि (अमीर तबलीग़ी जमाअत) सफरे हज के लिए तशरीफ ले जा रहे थे। और देहली से बम्बई आने वाले थे। सूरत के शाइक़ीने मुलाक़ात हज़ारों की तादाद में रेलवे स्टेशन पर जमा हो गए थे जिन में जामिआ हुसैनिया, मदरसा अशरफीया (रांदेर) और मदरसा

जामिआ इस्लामिया (डाभेल) के तलबा व असातिजा के अलावा हज़ारों अवाम सरापा इशतियाक़े ज़ियारत बन कर शुरूअ रात से ही वहाँ पहोंच गए थे। सुब्ह चार बजे ट्रेन स्टेशन पर पहोंची। ट्रेन के ठेहेरने का वक़्त सिर्फ तीन मिनट था। मगर ट्रेन पंद्रह मिनट ठेहरी रही। और मुशताक़ाने ज़ियारत ने हज़रत का दीदार किया और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैहि ने ट्रेन के दरवाज़े में खड़े हो कर हाज़िरीन से खिताब फरमाया, जो ट्रेन की रवानगी तक जारी रहा।

१३८४ हि० में हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्दद ज़िल्लुहुम की हज़रत शैखुल हदीस की खिदमत में अपने बिरादरे मुहतरम मौलाना अब्दुर्रहीम साहब की मईयत में हाज़िरी हुई। मौलाना अब्दुर्रहीम साहब दौराए हदीस से फराग़त के बाद हज़रत शैखुल हदीस की खिदमत में मुस्तक़िल क़ियाम का इरादा रखते थे। बिरादरे मुहतरम के हमराह सहारनपूर पहोंच गए। और हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि की खिदमत में हाज़िरी का शर्फ हासिल हुवा।

"कच्चे घर में क़दम रखते ही चौखट से आगे क़दम बढ़ाना मुशकिल हो गया। नज़रें चुरा कर देखा तो निगाहें चका चौंध हो गईं। आफताब की तरह पुरजलाल चेहरा जिस में निगाहों को खैरा करने वाली बर्क़बार आँखें, सर खुला हुवा, आस्तीनें चढ़ी हुईं, चहारज़ानू जल्वाअफरोज़ हैं।"

उसी साल हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि ने पूरे माह के ऐतेकाफ का सिलसिला मदरसा क़दीम की दफ्तर वाली मस्जिद से शुरू किया। मस्जिद मौतकिफीन से भर गई।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्दद ज़िल्लुहुम ने सहारनपूर के अपने क़ियाम के दौरान अपने तालीमी मराहिल भी मुकम्मल किए और हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करीया कांधलवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू से रूहानी फुयूज़ भी हासिल करते रहे।

दौराए हदीस से फराग़त के बाद वालिदा ने इंगलिस्तान में मुक़ीम रिश्तेदारों में निकाह तै कर दिया और हज़रत शैखुल हदीस ने हुक्म फरमाया के "जाओ सूरत जा कर वालिदैन की खिदमत करो।" चंद माह बाद वालिदे मुहतरम का इन्तिक़ाल हो गया और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्दद ज़िल्लुहुम इंगलिस्तान तशरीफ ले गए।

१३८६ हि० में हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू रमज़ानुल मुबारक में हरमैन तशरीफ लाए और पन्द्रह रोज़ मक्का मुकर्रमा में क़ियाम फरमाया और आखिरी अशरे में ऐतेकाफ फरमाया। दौराने ऐतेकाफ एक शब तरावीह वग़ैरा से फराग़त के बाद हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू ने हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्दद ज़िल्लुहुम को याद फरमाया और आप को बैअत की इजाज़त मरहमत फरमाई। और अपने दस्ते मुबारक से मिशलह पेहनाया।

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्दद ज़िल्लुहुम का हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू से बहोत गेहरा और मरबूत तअल्लुक़ रहा और ये तअल्लुक़ हज़रत शैखुल हदीस नव्वरल्लाहु मरक़दहू की हयात के आखिरी लमहात तक जारी रहा। हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि के ईमा पर आप ने इंगलिस्तान में दारूल उलूम क़ाइम किया और दीनी तालीम व तरबियत का एहतेमाम फरमाया। और हज़रत शैखुल हदीस रहमतुल्लाहि अलैहि ने तहरीर फरमाया के

"इन्शाअल्लाह तुम्हारे मदरसे की ज़रूरियात अल्लाह की ज़ात से क़वी उम्मीद है के जल्द पूरी हो जाएंगी।"

दारूल उलूम के मुतअल्लिक़ एक दूसरे गिरामीनामे में ये भी तहरीर फरमाया के-

"क़ारी यूसुफ! तुम्हारे मदरसे का फिक्र मुझे भी इन्शाअल्लाह तुम से कम न होगा। दिल से दुआएं भी कर रहा हूँ।"

"मगर मेरे प्यारे! इन मशाग़िले आलिया में लग कर हमारी लाईन को खैरबाद न केह देना। दीनी कामों में कुव्वत रूहानियत से होती है। मामूलात की पाबन्दी और कम से कम आधा घंटा यकसूई का रखना ज़रूरी है।"

"मगर यूसुफ प्यारे!

है यही शर्ते वफादारी के बे चूनो चिरा
वो मुझे चाहे न चाहे मैं उसे चाहा करूँ

मुझे तो तुम्हारे दारूल उलूम ने ऐसा पागल बना रखा है के हर वक़्त उसी का खयाल, और सोच व बिचार उसी का रेहता है। तुम तो माशाअल्लाह

متى ما تلق من تهوى، دع الدنيا وأهملها

के मरतबे पर फाईज़ हो और तुम्हारे खुद्दाम तुम से भी बीस गज़ आगे। ये तो पयारे! जो अपने बड़ों के साथ जैसा सुलूक करता है छोटे उस के साथ यही करते हैं। मुन्तज़िर रहो।"

आम तौर पर मुसलमानों का इल्मी और दीनी इन्हितात अब इस दरजा गेहरा और मुहीत हो चुका है के आम्मतुल मुस्लिमीन बुज़ुर्गों की उर्दू तहरीरों के पढ़ने और उन के कमा हक़्क़हू समझने पर भी क़ादिर नहीं रहे। ये अम्र एक नागुज़ीर ज़रूरत बन कर सामने आ गया है के इल्मे दीन की इशाअत व तबलीग़ के लिए उर्दू ज़बान के सहल और रवां उसलूबे निगारिश को तरजीह दी जाए और इल्मी दक़ाइक़ के बजाए अस्ल हक़ीक़त से रूशनास कराने की फिक्र की जाए। खुद ये कुरआने करीम के उर्दू के तराजिम अब आम मुसलमानों के लिए क़ाबिले फहम नहीं रहे इस लिए ये एक नागुज़ीर तक़ाज़ा था के मौजूदा ज़रूरतों के पेशे नज़र कुरआने करीम का सलीस और रवां क़ाबिले फहम उर्दू में तर्जमा किया जाए। 'अलहम्दुलिल्लाहि वलमिन्नह' के हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ मोतारा साहब मुद्द ज़िल्लुहुम ने इस ज़रूरत को बहोत अहसन तरीक़े से मुकम्मल फरमा दिया।

ये अल्लाह तआला का फज़्ल व करम और उस का एहसाने अज़ीम है के ज़ेरे नज़र तर्जमए कुरआन मुतअद्ददद खूबियों और गूनागूँ ज़ाहिरी और मअनवी महासिन का जामेअ बन गया है। बतौरे खास इस तर्जमए कुरआन के चंद नुमायाँ पेहलू हस्बे ज़ैल हैं।

- ये तर्जमए कुरआन सहाबाए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम और सलफे सालेह के तफसीरी नुकात पर मुशतमिल है।
- तर्जमए कुरआन में आयात के फिक़्ही पेहलू बखूबी उजागर हो गए हैं।
- हर आयत का तर्जमा पिछली और बाद वाली आयत से मरबूत होने के साथ साथ अपनी जगह पर मुस्तक़िल है।
- तर्जमा सलीस, रवां और आम फहम है।

➲ इस तर्जमे की मदद से कुरआने करीम के मज़ामीन को समझना और ज़हननशीन करना आसान हो गया है।

जहाँ तक नज़रे सानी का तअल्लुक़ है, तो ये महज़ तौफीक़े रब्बानी और बजुर्गों के फुयूज़ व बरकात हैं के अहक़र अपनी इल्मी बेबिज़ाअती के बावजूद इस खिदमत की अन्जाम दही के क़ाबिल हुवा है। अहक़र ने ये तर्जमा दो मर्तबा बिल इस्तीआब हरफन हरफन पढ़ा है और दीगर उर्दू तराजिम से मुवाज़ना किया है। और बतौरे खास सय्यिदी व मुरशिदी हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी दामत बरकातुहुम के आसान तर्जमए कुरआन को पेशे नज़र रखा है। अल्लाह तआला का इस आजिज़ पर इहसाने अज़ीम और लुत्फे अमीम है के तर्जमए कुरआन पर नज़रे सानी का तमाम काम इसी नहज पर मुकम्मल हुवा। फलिल्लाहिल हम्द वश्शुक्र।

दस्त बदुआ हूँ के अल्लाह तआला इस कोशिश व काविश को शरफे क़बूल से सरफराज़ फरमाए और इस खिदमत को ज़खीरए आखिरत बनाए और इस के ज़रीए मुसलमानों में कुरआन के समझने और उस के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगियों को संवारने का ज़ौक़ व शौक़ पैदा फरमाए। आमीन! वमा ज़ालिक अलल्लाहि बिअज़ीज़!

(हज़रत मौलाना डा०) साजिदुर्रहमान सिद्दीक़ी (रहमतुल्लाहि अलैहि)

1 मुहर्रमुल हराम 1432 हि०

मेरा अक़ीदा है के...

★ क़ुरआन कलामे इलाही है। मख़्लूक़ नहीं, बल्के कलामुल्लाह, अल्लाह की सिफत है।

★ क़ुरआन अल्लाह की आखिरी किताब है। इस के बाद कोई किताब अल्लाह ने नाज़िल नहीं फ़रमाई और न नाज़िल होगी।

★ क़ुरआन ख़ातमुल अम्बिया, खत्मुल मुरसलीन, आखिरी पैग़ामबर, नबीए उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म पर अल्लाह ने नाज़िल फरमाया जो साबिक़ा तमाम अम्बिया की शराइअ के लिए नासिख़ है। क़ुरआनी अहकाम और शरीअते मुहम्मदी पर ही क़ियामत तक इन्सानीयत को चलना है।

★ क़ुरआन के बाद अब न कोई किताब उतरेगी, न मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म के बाद कोई नबी अल्लाह भेजेगा। झूठे मुद्दइए नुबुव्वत की अल्लाह के पैग़ामबर ने खबर दी है, वो दज्जाल पैदा होते रहेंगे।

★ क़ुरआने करीम अल्लाह की ऐसी किताब है जो अपने नुज़ूल में मुनफ़रिद हैसियत रखती है, के ये दीगर अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की तरह किताबी शक्ल में नहीं दी गई। जिब्रईले अमीन और दीगर मलाइका को हज़ारों दफा दरे रिसालत पर बारयाबी का शर्फ़ हासिल हुवा। इस तरह ये किताब उम्मत को पहोंची।

★ ये ऐसी किताब है जो मोअज़िज़ है, के अल्लाह ने तमाम सुन्ने वालों, पढ़ने वालों को उस जैसी एक आयत बनाने का चैलेंज दे रखा है ।

★ बशरीय्यत के आलम के अलावा कुर्रए अर्ज़ी पर बेशुमार दूसरे आलमों का उस में ज़िक्र है। उन सब के निज़ाम पर मलाइका मुक़र्रर हैं।

★ क़ुरआने करीम सिर्फ बशरी क़ूव्वत, अरबीदानी और अक़्ल के ज़रिए नहीं समझा जा सकता, बल्के नबीए उम्मी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की बतलाई हुई तफ़्सीरे क़ुरआन, जो सहाबाए किराम के ज़रिए उम्मत को पहोंची, वही मोअतबर है।

★ मौजूदा क़ुरआन मुकम्मल है, जो एक सो चौदा (११४) सूरतों और तीस (३०) पारों का मजमूआ, मसाहिफ़ में और उम्मत के हुफ़्फ़ाज़ के सीनों में है। उसी को बग़ैर किसी कमी बेशी के

सहाबाए किराम ने उम्मत को पहोंचाया है।

★ क़ुरआन ख़ल्क़त और उलूहीय्यत के मा बय्न की हुदूद इन्सान को बताता है। खुदा ही तमाम मख़लूक़ात का ख़ालिक़ व मालिक है। नफा व ज़रर उसी की क़ुदरत में है। रिज़्क़ की तंगी व वुसअत उसी की तरफ से है। शिफ़ा व सिहहत वही देता है। वही अल्लामुल ग़ुयूब है। अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से ले कर तमाम इन्सानों को हर चीज़ का इल्म उसी ने दिया। हज़रत आदम अलैहि वअला नबीय्यिना अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से ले कर ख़ातमुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म तक तमाम अम्बिया खुदा की मख्लूक़ व बशर थे। अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम, मुअजिज़ाते अम्बिया और उन की उम्मतों के अहवाल की खबर क़ुरआन हमें देता है। मसअलए तक़दीर को अल्लाह ने जगह जगह बयान फरमाया।

★ सरवरे अम्बिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म ने सहाबाए किराम को क़ुरआने करीम की बहोत सी पेशिन्गोइयाँ मुख्तलिफ आयात में सुनाईं। बहोत सारी पूरी हुईं, और जो बाक़ी हैं, क़ियामत से पेहले पूरी होंगी। और भी जो बाक़ी रहेंगी, वो आलमे बरज़ख, हश्र व नश्र और जन्नत व जहन्नम में पूरी होंगी। कुछ पेशिन्गोइयाँ क़ुर्बे क़ियामत की अलामात के तौर पर उस में बयान की गई हैं, जैसे याजूज माजूज का निकलना, दाब्बतुल अर्ज़ और नुज़ूले ईसा अलैहि व अला नबीय्यिना अस्सलातु वस्सलाम।

★ आलमे बरज़ख, हश्र व नश्र और नफखे सूर के अहवाल सब से ज़्यादा तफ्सील से क़ुरआन में बयान किए गए। हश्र में मख्लूक़ की खुदा के सामने पेशी और हिसाब व किताब और आमाल की जज़ा व सज़ा का ज़िक्र क़ुरआने करीम में जगह जगह है।

★ शरीअते मुहम्मदी के अहकाम, पंजवक़्ता और जुमुआ की नमाज़ें और तहारत, ग़ुस्ल, वुज़ू और तयम्मुम का बयान है। सदक़ा, ज़कात, रोज़ा, ऐतेकाफ, लैलतुल क़दर, हज और उस के अक़्साम, उमरा और हज के मसाइल क़ुरआन हमें सिखाता है। निकाह, तलाक़, तलाक़ की अक़्साम, महर, मुतआ, रिज़ाअत, खुल्अ, ज़िहार, इद्दत और नफ़क़ा वग़ैरा को बयान किया गया।

★ ज़िना और तोहमते ज़िना की सज़ा और चोरी डकैती की सज़ाएं बयान की गई हैं। ज़िना वग़ैरा से तहफ़्फ़ुज़ के लिए पर्दे के अहकाम, किसी के घर में दाखले के लिए इजाज़त ले कर दाखिल होने के आदाब बयान किए गए और रास्ते में निगाहों की हिफाज़त वग़ैरा आदाबे

मुआशरत बयान किए गए।

★ खरीद व फरोख्त और लैन दैन के तरीक़े और गवाहों की गवाही वग़ैरा भी बयान किए गए हैं। खरीद व फरोख्त में सूदी लैन दैन से न बचने पर वईदें बयान की गई हैं।

★ दो दर्जन से ज़ाइद हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ज़वात में से सब से मुहतम्म बिश्शान वो हैं जिन को खुसूसियत के साथ क़ुरआन ने बयान किया। बदरे कुबरा, बदरे सुग़रा, उहुद, अहज़ाब, बनू क़ुरैज़ा, सुल्हे हुदैबिया, फत्हे मक्का, ग़ज़वए हुनैन और ग़ज़वए तबूक के सिलसिले में मुस्तक़िल आयात नाज़िल हुई हैं। इन ग़ज़वात के शुरका को सहाबाए किराम में एक मुमताज़ नुमायां हैसियत दी गई।

★ उम्मते मुहम्मदीया में, बल्के अम्बिया अलैहुमस्सलातु वस्सलाम को छोड़ कर तमाम अम्बिया की उम्मतों में सब से अफज़ल तरीन सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन अबू बक्र अस्सिद्दीक़ रदियल्लाहु अन्हु, सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन उमर इब्नुल खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु, सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन उस्मान इब्ने अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु, सय्यिदुना अमीरुल मुअमिनीन अली इब्ने अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु अलत्तरतीब सब से अफज़ल क़रार पाए। ख़ुलफ़ाए अरबआ के दीगर कारनामों के साथ अज़ीम कारनामा क़ुरआने करीम की तजमीअ, तहफ़्फ़ुज़ और उसे उम्मत तक पहोंचाना है। रदियल्लाहु अन्हुम व अरज़ाहुम।

यूसुफ मोतारा
दारुल उलूम होलकम्ब, बरी
१७ जुमादा अलउखरा १४३५
मुताबिक़ १७ अपरैल २०१४

اٰيَاتُهَا ٧ (١) سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ (٥) رُكُوْعُهَا ١

और १ रूकूअ है सूरह फातिहा मक्का में नाज़िल हुई इस में ७ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿١﴾ الرَّحْمٰنِ

तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। जो बड़ा महरबान,

الرَّحِيْمِ ۙ﴿٢﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿٣﴾

निहायत रहम वाला है। जो हिसाब के दिन का मालिक है।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿٤﴾

ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद तलब करते हैं।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿٥﴾ صِرَاطَ

तू हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे। उन लोगों

الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ

के रास्ते की जिन पर तू ने इन्आम फरमाया, न

الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۧ﴿٧﴾

उन के रास्ते की जिन पर गज़ब किया गया और न गुमराहों के रास्ते की।

ع

اٰیاتُھَا ۲۸۶ (۲) سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِیَّةٌ (۸۷) رُکُوْعَاتُھَا ۴۰

उस में २८६ आयतें हैं सूरह बक़रह मदीना में नाज़िल हुई और ४० रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ

अलिफ लाम मीम। ये ऐसी किताब है के जिस में शक नहीं।

هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

जो मुत्तक़ियों को हिदायत देने वाली है। उन मुत्तक़ियों को जो ईमान रखते हैं

بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا

गैब पर और नमाज़ क़ाइम करते हैं और उन चीज़ों में से

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳﴾ وَ الَّذِيْنَ

जो हम ने उन को दीं खर्च करते हैं। और जो

يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ

ईमान रखते हैं उस किताब पर जो आप की तरफ उतारी गई और उन किताबों

مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾

पर जो आप से पेहले उतारी गईं। और आखिरत पर भी वो यक़ीन रखते हैं।

أُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥

यही लोग अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ

यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया उन के लिए बराबर है चाहे आप उन्हें डराएं या

لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

उन्हें न डराएं, वो ईमान नहीं लाएंगे। अल्लाह ने मुहर लगा दी है उन के दिलों पर

وَعَلٰى سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ز وَّ لَهُمْ عَذَابٌ

और उन के कानों पर और उन की आँखों पर परदा है। और उन के लिए भारी

عَظِيْمٌ ۝٧ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ

ع

अज़ाब है। और बाज़ लोग ऐसे हैं जो केहते हैं के हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर

وَ بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٨ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ

وقف لازم

और आखिरी दिन पर हालांके वो ईमान नहीं लाए। वो अल्लाह को धोका दे रहे हैं

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ج وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩ ؕ

और उन को भी जो ईमान लाए हैं। और वो धोका नहीं देते मगर अपने आप को और उन्हें एहसास भी नहीं।

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ لا فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا ج وَلَهُمْ عَذَابٌ

उन के दिलों में बीमारी है, फिर अल्लाह ने उन की बीमारी और बढ़ा दी। और उन के लिए दर्दनाक

اَلِيْمٌ ۙ۬ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝١٠ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ

अज़ाब है इस वजह से के वो झूठ बोलते हैं। और जब उन से कहा जाता है

لَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ لا قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ ۝١١

तुम ज़मीन में फसाद मत फैलाओ, तो केहते हैं के हम तो सिर्फ इस्लाह करने वाले हैं।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝١٢

सुनो! यक़ीनन यही लोग फसाद फैलाने वाले हैं, लेकिन उन्हें एहसास नहीं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ

और जब उन से कहा जाता है के तुम ईमान लाओ ऐसा जैसा के ये लोग (यानी सहाबा) ईमान लाए हैं तो केहते हैं

كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ

के क्या हम ईमान लाएं जैसा के ये बेवक़ूफ लोग ईमान लाए हैं? सुनो! यक़ीनन यही लोग बेवक़ूफ हैं, लेकिन

لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ
वो जानते नहीं। और जब वो मिलते हैं ईमान वालों से तो केहते हैं के हम मोमिन हैं।

وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ
और जब वो तनहाई में होते हैं अपने शयातीन के पास, तो केहते हैं के हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो सिर्फ

مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾ اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ
मज़ाक़ कर रहे थे। अल्लाह उन के साथ मज़ाक़ करता है और उन्हें ढील देता है के अपनी सरकशी में

يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۪
हैरान फिरें। यही लोग हैं जिन्हों ने गुमराही को खरीदा हिदायत के बदले में।

فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾
फिर उन की तिजारत नफाबख्श नहीं हुई और वो हिदायतयाफता नहीं हैं।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ
उन का हाल ऐसा है जैसा उस शख्स का हाल जिस ने आग जलाई। फिर जब आग ने रोशन कर दिया

مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ
उस के अतराफ को तो अल्लाह ने उन के नूर को सल्ब कर लिया और उन को छोड़ दिया तारीकियों में के वो

لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾ ۙ
देख नहीं पाते। वो बेहरे हैं, गूंगे हैं, अन्धे हैं, इस लिए वो (कुफ्र से) रूजअू नहीं करेंगे।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّ بَرْقٌ ۚ
या उन का हाल आसमान से बरसने वाली बारिश की तरह है के जिस में तारीकियाँ हों और गर्ज हो और बिजली हो।

يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ
वो अपनी उंगलियां डाल रहे हैं अपने कानों में गर्ज की वजह से, मौत के

الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ
खौफ से। और अल्लाह काफिरों का इहाता किए हुए हैं। क़रीब है के बिजली

يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ
उन की बीनाइयों को उचक ले। जब कभी बिजली उन के लिए रोशनी कर देती है तो उस में चलने लगते हैं।

وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ
और जब उन पर तारीकी छा जाती है तो खड़े रेह जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहता तो सल्ब कर लेता उन के कान

وَ اَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۟ يٰۤاَيُّهَا

और उन की आँखों को। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। ऐ इन्सानो!

النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَ الَّذِيْنَ

इबादत करो अपने उस रब की जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी पैदा किया

مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۟ۙ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ

जो तुम से पेहले थे ताके तुम मुत्तक़ी बनो। वो अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को

فِرَاشًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ

बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया। और जिस ने आसमान से पानी उतारा, फिर उस

بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا

पानी के ज़रिए फलों को निकाला तुम्हारे खाने के लिए। इस लिए तुम अल्लाह के शरीक मत बनाओ

وَّ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۟ وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا

हालाँके तुम जानते हो। और अगर तुम शक में हो उस कुरआन की तरफ से जो हम ने उतारा

عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ

अपने बन्दे पर तो तुम उसी जैसी एक सूरत ले आओ। और तुम बुलाओ अपने मददगारों को

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۟ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا

अल्लाह के अलावा अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर तुम ऐसा न कर सको

وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ

और हरगिज़ तुम ऐसा नहीं कर सकोगे, तो तुम डरो उस आग से जिस का ईंधन इन्सान

وَ الْحِجَارَةُ ۖۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۟ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और पथ्थर (बुत) हैं, जो तय्यार की गई है काफिरों के लिए। और आप बशारत सुना दीजिए उन लोगों को जो ईमान लाए

وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

और नेक अमल करते रहे, (इस बात की बशारत) के उन के लिए जन्नतें हैं के जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا

होंगी। जब कभी वहाँ से कोई फल उन्हें खाने को दिया जाएगा, तो वो कहेंगे के ये तो वही फल है जो

هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ

हमें खाने को दिया गया इस से पेहले, और उन्हें एक दूसरे के मुशाबेह फल दिए जाएंगे। और उन के लिए

فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ

उन में पाक साफ बीवियाँ होंगी और वो उन में हमेशा रहेंगे। यक़ीनन अल्लाह

لَا يَسْتَحْيٖۤ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ

हया नहीं करता इस से के वो कोई मिसाल बयान करे किसी मच्छर की हो या उस से भी बढ़ कर।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ

फिर अलबत्ता वो लोग जो ईमान लाए, तो वो यकीन रखते हैं के ये हक़ है, उन के रब की तरफ से है।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ

वقف لازم

और अलबत्ता जो काफिर हैं वो केहते हैं के उस के ज़रिए मिसाल बयान कर के अल्लाह ने किस चीज़ का इरादा किया?

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖۤ

अल्लाह उस के ज़रिए बहोत सों को गुमराह करते हैं और बहोत सों को उस के ज़रिए हिदायत देते हैं। और उस के ज़रिए अल्लाह गुमराह

اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ

नहीं करते मगर नाफरमान लोगों को। उन लोगों को जो अल्लाह का अहद तोड़ते हैं उस के पुखता

مِيْثَاقِهٖ ۪ وَ يَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ

करने के बाद, और जो तोड़ते हैं उन तअल्लुक़ात को जिन के जोड़े जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है

وَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾

और वो ज़मीन में फसाद फैलाते हैं। यही लोग खसारा उठाने वाले हैं।

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ

कैसे तुम कुफ्र करते हो अल्लाह के साथ हालांके तुम बेजान थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ज़िन्दा किया। फिर वो तुम्हें मौत देगा, फिर

ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ

वो तुम्हें ज़िन्दा करेगा, फिर उस की तरफ तुम लौटाए जाओगे। वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए पैदा कीं

مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ

वो तमाम चीज़ें जो ज़मीन में हैं। फिर वो आसमान की तरफ मुतवज्जेह हुवा, फिर उस ने उन को

سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ

ع٣

सात आसमान बनाया। और वो हर चीज़ को खूब जानने वाला है। और जब के आप के रब ने फरिश्तों से

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ

फरमाया के मैं ज़मीन में खलीफा मुकर्रर करने वाला हूँ। फरिश्तों ने कहा क्या आप ज़मीन में

فِيهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيهَا وَ يَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ

मुकर्रर करते हैं उस को जो ज़मीन में फसाद फैलाए और खूँरेज़ी करे? हालांके हम तसबीह करते हैं

بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٣٠

आप की हम्द के साथ और हम आप की पाकी बयान करते हैं। अल्लाह ने फरमाया मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ

और अल्लाह ने आदम (अलैहिस्सलाम) को तमाम नाम सिखला दिए, फिर उन को पेश किया फरिश्तों पर।

فَقَالَ اَنْۢبِئُوْنِيْ بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٣١

उस के बाद फरमाया के तुम मुझे खबर दो उन चीज़ों के नामों की अगर तुम सच्चे हो।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۖ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ

फरिश्तों ने कहा आप पाक हैं, हमें इल्म नहीं मगर उतना ही जो आप ने हमें सिखलाया। यक़ीनन आप ही इल्म

الْحَكِيْمُ ۝٣٢ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ

वाले, हिकमत वाले हैं। अल्लाह ने फरमाया ऐ आदम! आप उन को बतलाइए उन चीज़ों के नाम। फिर जब आदम (अलैहिस्सलाम)

بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ

ने उन को उन चीज़ों के नाम बतला दिए, तो अल्लाह ने फरमाया के क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था के मैं जानता हूँ

وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝٣٣

आसमानों और ज़मीन की छुपी हुई चीज़ें। और मैं जानता हूँ वो जो तुम ज़ाहिर करते हो और वो जो तुम छुपाते हो।

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۖ اَبٰى

और जब के हम ने फरिश्तों से कहा के तुम सजदा करो आदम को, तो उन तमाम ने सजदा किया सिवाए इबलीस के। के उस ने इन्कार किया

وَاسْتَكْبَرَ ۫ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٣٤ وَ قُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ

और उस ने बड़ा बनना चाहा। और वो काफिरों में से हो गया। और हम ने कहा के ऐ आदम! तुम

اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۠

और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो। और तुम दोनों जन्नत से खाओ कुशादगी के साथ जहाँ तुम चाहो।

وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣٥ فَاَزَلَّهُمَا

लेकिन तुम क़रीब मत जाना इस दरख्त के, वरना तुम कुसूरवारों में से बन जाओगे। फिर उन दोनों को शैतान

الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۠ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا

ने वहाँ से फुसला दिया, फिर उन को निकाल दिया उन नेअमतों में से जिन में वो थे। और हम ने कहा के तुम नीचे उतर जाओ

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ
तुम में से एक दूसरे के दुशमन बन कर रहोगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में आरज़ी ठिकाना है और फाइदा उठाना है एक वक्त

اِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾ فَتَلَقّٰۤى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ
तक। फिर आदम (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब से चन्द कलिमात हासिल किए, फिर अल्लाह ने आदम (अलैहिस्सलाम) की तौबा कबूल फरमाई।

اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ
यक़ीनन वो तौबा कबूल करने वाला, निहायत रहम वाला है। हम ने कहा के तुम सब यहाँ से नीचे उतर जाओ।

فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ
फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए, तो जो मेरी हिदायत के पीछे चलेगा, तो उन पर न खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا
होगा और न वो ग़मगीन होंगे। और वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों

بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾
को झुठलाया, तो ये लोग दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ
ऐ याकूब (अलैहिस्सलाम) की औलाद! तुम याद करो मेरी उस नेअमत को जो मैं ने तुम पर की

وَ اَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾
और तुम मेरा अहद पूरा करो, मैं तुमहारा अहद पूरा करूंगा। और तुम मुझ ही से डरो।

وَ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ
और ईमान लाओ उस पर जिस को मैं ने उतारा, जो सच्चा बतलाने वाला है उस को जो तुम्हारे पास है और तुम उस के

كَافِرٍ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَّاِيَّايَ
सब से पेहले इन्कार करने वाले मत बनो। और तुम मेरी आयतों के बदले में थोड़ी सी क़ीमत मत लो। और तुम मुझ ही

فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوا
से डरो। और हक़ को बातिल के साथ मत मिलाओ और हक़ को मत

الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا
छुपाओ इस हाल में के तुम जानते हो। और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात

الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ
दो और रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ करो। क्या तुम दूसरों को नेकी का

بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَ اَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ
हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो, इस हाल में के तुम किताब की तिलावत भी करते हो?
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا
क्या तुम अक़्ल नहीं रखते? और सब्र और नमाज़ से मदद तलब करो। और यक़ीनन ये नमाज़
لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿۴۵﴾ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ
भारी चीज़ है मगर उन खुशूअ करने वालों पर, जो यक़ीन रखते हैं
اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَ اَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۴۶﴾ يٰبَنِيْٓ
के वो अपने रब से मिलने वाले हैं और ये के वो अल्लाह की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। ऐ याक़ूब
اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَ اَنِّيْ
(अलैहिस्सलाम) की औलाद! तुम याद करो मेरी उस नेअमत को जो मैं ने तुम पर की और ये के
فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَ اتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ
मैं ने तुम को फज़ीलत दी (तमाम जहान वालों) पर। और डरो उस दिन से जिस दिन कोई शख्स
عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ
किसी शख्स के कुछ भी काम नहीं आएगा और किसी की तरफ से सिफ़ारिश कबूल नहीं की जाएगी और किसी की तरफ
مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ
से फिदया नहीं लिया जाएगा और न उन की नुसरत की जाएगी। और जब हम ने तुम्हें नजात दी
مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ
आले फिरऔन से जो तुम्हें बदतरीन सज़ा के ज़रिए तकलीफ देते थे, वो ज़बह करते थे
اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ
तुम्हारे बेटों को और ज़िन्दा छोड़ते थे तुम्हारी औरतों को। और उस में तुम्हारे रब की तरफ से
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۴۹﴾ وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ
भारी इम्तिहान था। और जब हम ने तुमहारे लिए समन्दर को फाड़ा, फिर हम ने तुम्हें नजात दी
وَ اَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَاِذْ وٰعَدْنَا
और आले फिरऔन को ग़र्क किया और तुम देख भी रहे थे। और जब हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से
مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ
चालीस रात का वादा किया, फिर तुम ने उन के जाने के बाद बछड़े को माबूद बनाया

ركوع ٥

وَ اَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۱﴾ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
इस हाल में के तुम ज़ुल्म कर रहे थे। फिर हम ने तुम से मुआफ किया इस के बाद
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
ताके तुम शुक्र अदा करो। और जब के हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी
وَ الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۵۳﴾ وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى
और हक़ व बातिल के दरमियान फैसला करने वाली किताब दी ताके तुम हिदायतयाफता बनो। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम)
لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ
ने अपनी क़ौम से फरमाया के ऐ मेरी क़ौम! यक़ीनन तुम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है तुम्हारे बछड़े को माबूद
الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ
बनाने की वजह से तो तुम तौबा करो अपने पैदा करने वाले की तरफ, फिर बाज़ आदमी बाज़ को क़त्ल करो। ये तुम्हारे
خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ
लिए बेहतर है तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक, फिर उस ने तुमहारी तौबा कबूल की। यक़ीनन वो तौबा कबूल करने
الرَّحِيْمُ ﴿۵۴﴾ وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى
वाला, निहायत रहम वाला है। और जब तुम ने कहा ऐ मूसा! हम हरगिज़ आप पर ईमान नहीं लाएंगे जब तक के हम अल्लाह को
اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾
आमने सामने न देख लें, फिर तुम्हें बिजली की एक ज़ोरदार आवाज़ ने पकड़ लिया इस हाल में के तुम (आँखों से) देख
ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾
रहे थे। फिर हम ने तुम्हें (ज़िन्दा कर के) उठाया तुम्हारे मर जाने के बाद ताके तुम शुक्रगुज़ार बनो।
وَ ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ
और हम ने तुम पर बादलों का साया किया और हम ने तुम पर मन्न और सल्वा उतारा। के तुम
كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا
खाओ उन पाकीज़ा चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दीं। और उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन
اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। और जब हम ने कहा के तुम दाखिल हो जाओ इस बसती में,
فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا
फिर उस में से खाओ जहाँ तुम चाहो कुशादगी के साथ और तुम दरवाज़े से दाखिल हो जाओ सजदा करते हुए

وَّ قُوۡلُوۡا حِطَّةٌ نَّغۡفِرۡ لَکُمۡ خَطٰیٰکُمۡ ؕ وَ سَنَزِیۡدُ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ﴿۵۸﴾

और तुम यूँ कहो तौबा (तौबा), तो हम तुम्हारे लिए तुम्हारी खताएं बख्श देंगे। और हम नेकी करने वालों को मज़ीद देंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا قَوۡلًا غَیۡرَ الَّذِیۡ قِیۡلَ لَہُمۡ فَاَنۡزَلۡنَا

फिर उन ज़ालिमों ने बदल दिया बात को उस के अलावा से जो उन से कही गई थी, फिर हम ने

عَلَی الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا رِجۡزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا کَانُوۡا

उन ज़ालिमों पर उतारा आसमान से अज़ाब इस वजह से के वो

یَفۡسُقُوۡنَ ﴿۵۹﴾ وَ اِذِ اسۡتَسۡقٰی مُوۡسٰی لِقَوۡمِہٖ فَقُلۡنَا اضۡرِبۡ

नाफरमान थे। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने पानी तलब किया अपनी क़ौम के लिए तो हम ने कहा

بِّعَصَاکَ الۡحَجَرَ ؕ فَانۡفَجَرَتۡ مِنۡہُ اثۡنَتَا عَشۡرَۃَ عَیۡنًا ؕ

अपना असा पथ्थर पर मारिए। फिर उस से बारा चश्मे फूट पड़े।

قَدۡ عَلِمَ کُلُّ اُنَاسٍ مَّشۡرَبَہُمۡ ؕ کُلُوۡا وَ اشۡرَبُوۡا

तमाम लोगों ने अपने पीने की जगह मालूम कर ली। खाओ और पियो

مِنۡ رِّزۡقِ اللّٰہِ وَ لَا تَعۡثَوۡا فِی الۡاَرۡضِ مُفۡسِدِیۡنَ ﴿۶۰﴾ وَ اِذۡ قُلۡتُمۡ

अल्लाह की रोज़ी में से और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो। और जब तुम ने कहा

یٰمُوۡسٰی لَنۡ نَّصۡبِرَ عَلٰی طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادۡعُ لَنَا رَبَّکَ

ऐ मूसा! हम हरगिज़ सब्र नहीं करेंगे एक खाने पर, इस लिए आप हमारे लिए दुआ कीजिए अपने रब से

یُخۡرِجۡ لَنَا مِمَّا تُنۡۢبِتُ الۡاَرۡضُ مِنۡۢ بَقۡلِہَا وَ قِثَّآئِہَا

के वो हमारे लिए निकाले उन चीज़ों में से जिसे ज़मीन उगाती है यानी उस की सबज़ी और ककड़ी

وَ فُوۡمِہَا وَ عَدَسِہَا وَ بَصَلِہَا ؕ قَالَ اَتَسۡتَبۡدِلُوۡنَ

और लहसन और मसूर और प्याज़। अल्लाह ने फरमाया क्या तुम बदले में मांगते हो

الَّذِیۡ ہُوَ اَدۡنٰی بِالَّذِیۡ ہُوَ خَیۡرٌ ؕ اِہۡبِطُوۡا مِصۡرًا

उस चीज़ को जो अदना है उस के बदले में जो उस से बेहतर है? तुम शेहर में उतर जाओ

فَاِنَّ لَکُمۡ مَّا سَاَلۡتُمۡ ؕ وَ ضُرِبَتۡ عَلَیۡہِمُ الذِّلَّۃُ وَ الۡمَسۡکَنَۃُ ٭

तो यक़ीनन तुम्हारे लिए वो चीज़ें होंगी जिन का तुम ने सवाल किया। और उन के ऊपर ज़िल्लत और फक़्र मार दिया गया,

وَ بَآءُوۡ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰہِ ؕ ذٰلِکَ بِاَنَّہُمۡ کَانُوۡا یَکۡفُرُوۡنَ

और वो अल्लाह का गज़ब ले कर लौटे। ये इस वजह से के वो अल्लाह की

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ

आयात का इन्कार करते थे और अम्बिया को नाहक़ क़त्ल करते थे। ये

بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

इस वजह से के उन्हों ने नाफरमानी की और वो हद से आगे बढ़ते थे। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए

وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

और जो यहूदी हैं और नसारा हैं और साबी हैं, जो भी ईमान लाएंगे अल्लाह पर

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ

और आखिरी दिन पर और नेक काम करते रहेंगे तो उन के लिए उन का अज्र होगा उन के

رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

रब के पास। और न उन पर खौफ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا

और जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर को उठाया। (कहा के) पकड़ो

مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

मज़बूती से उस तौरात को जो हम ने तुम्हें दी और याद करो उस को जो उस में है ताके तुम मुत्तक़ी बनो।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

फिर तुम ने उस के बाद ऐराज़ किया। फिर अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की महरबानी

وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ

तुम पर न होती तो तुम नुक़सान उठाने वालों में से बन जाते। यक़ीनन तुम्हें मालूम हैं वो लोग

الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا

जिन्हों ने तुम में से ज़्यादती की सनीचर के बारे में, फिर हम ने उन से कहा के तुम ज़लील

قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿٦٥﴾ ۚ فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا

बन्दर बन जाओ। फिर हम ने उन्हें उन के आगे वालों के लिए और उन से पीछे वालों के लिए इबरत बनाया

وَمَا خَلْفَهَا وَ مَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى

और मुत्तक़ियों के लिए नसीहत बनाया। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا

अपनी क़ौम से अल्लाह तुम्हें हुक्म देते हैं के तुम कोई गाय ज़बह करो। तो उन्हों ने कहा के

اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ
क्या आप हम से मज़ाक़ करते हैं? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अल्लाह की पनाह इस से के मैं जाहिलों में
مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ
से हो जाऊँ। यहूदियों ने कहा के आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए के वो हमारे लिए साफ बयान करे के वो
اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ
गाय क्या है? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह फरमाते हैं के वो गाय ऐसी है जो न बहोत बूढ़ी हो और न बिल्कुल
بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا
जवान हो, उस के दरमियान में अधेड़ उम्र वाली हो। और तुम कर गुज़रो जिस का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है। उन्हों ने कहा
رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا
के आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए के वो हमारे लिए साफ बयान करे के उस का रंग कैसा हो। मूसा
بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا
(अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह फरमाते हैं वो गाय पीली हो, उस का रंग खुला हुवा हो, जो देखने वालों को मसरूर करती हो।
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ
उन्हों ने कहा के आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए के वो हमारे लिए बयान करे के वो गाय क्या है? इस लिए के
وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا
गाय हम पर मुश्तबह हो गई। और यक़ीनन अगर अल्लाह ने चाहा हम राह पा लेंगे। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह फरमाते हैं
بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ۚ
के वो गाय ऐसी हो जो खेती के लिए जोती न गई हो जो ज़मीन को फाड़े, और न खेती को सैराब करती हो।
مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ قَالُوا الْئٰنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ
और सहीह सालिम हो, उस में कोई धब्बा न हो। उन्हों ने कहा अब आप हक़ बात ले आए।
فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾ ع وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا
फिर उन्हों ने उस को ज़बह किया और वो उस के क़रीब भी नहीं थे। और जब तुम ने एक शख़्स को क़त्ल किया,
فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾ ۚ
फिर तुम ने उस के बारे में झगड़ा किया। और अल्लाह निकालने वाला था उस को जो तुम छुपा रहे थे।
فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ
फिर हम ने कहा के तुम गाय के किसी टुकड़े को मक़तूल पर मारो। इसी तरह अल्लाह मुरदों को भी ज़िन्दा करेंगे।

ع ٨

وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ۝٧٣ ثُمَّ قَسَتْ

और अल्लाह तुम्हें अपनी आयतें दिखाते हैं ताके तुम अक़्ल वाले बन जाओ। फिर तुम्हारे दिल

قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ

उस के बाद सख़्त हो गए, फिर वो पथ्थर की तरह हो गए या उस से भी ज़्यादा

قَسْوَةً ط وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ط

सख़्त। और यक़ीनन पथ्थरों में से तो कुछ ऐसे होते हैं के अलबत्ता उन से नेहरें फूटती हैं।

وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ط وَاِنَّ مِنْهَا

और उन में से कुछ फट जाते हैं जिन से पानी निकलता है। और उन में से कुछ

لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

अल्लाह के ख़ौफ़ से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह बेख़बर नहीं है उन

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ۝٧٤ اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَ قَدْ كَانَ

कामों से जो तुम करते हो। क्या फिर तुम इस की उम्मीद रखते हो के ये (यहूदी) तुमहारे केहने से ईमान ले आएंगे

فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ

हालांके उन में से एक जमाअत अल्लाह के कलाम को सुनती है, फिर उस में तहरीफ़ करती है

مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ۝٧٥ وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ

इस के बाद के वो उस को समझती है, हालांके वो इल्म भी रखती है। और जब वो ईमान वालों से मिलते हैं

اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ج وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا

तो केहते हैं के 'हम मोमिन हैं'। और जब उन में से एक दूसरे के साथ तन्हाई में होते हैं तो केहते हैं के

اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ

क्या तुम उन मुसलमानों से बयान कर देते हो वो जो अल्लाह ने तुम पर खोला है ताके वो तुम से उस के ज़रिए हुज्जतबाज़ी

بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ۝٧٦ اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ

करें तुम्हारे रब के पास? क्या तुम्हें अक़्ल नहीं? क्या वो ये नहीं जानते के

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ۝٧٧ وَ مِنْهُمْ

अल्लाह जानता है उस को भी जिस को वो छुपाते हैं और जिस को वो ज़ाहिर करते हैं। और उन में से बाज़

اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا

अनपढ़ हैं जो किताब को नहीं जानते सिवाए तमन्नाओं के। और वो सिर्फ़

النصف

يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ

गुमान करते हैं। फिर हलाकत है उन लोगों के लिए जो किताब को अपने हाथों से लिखते हैं,

ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا

फिर केहते हैं के ये अल्लाह की तरफ से है ताके उस के बदले में थोड़ी सी क़ीमत

قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ

ले लें। फिर हलाकत है उन के लिए उस से जो उन के हाथों ने लिखा है और हलाकत है उन के लिए

مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ

उस माल से जो वो कमा रहे हैं। और उन्हों ने कहा के आग हमें हरगिज़ नहीं छुएगी मगर चन्द गिने चुने दिन।

قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ

आप फरमा दीजिए क्या तुम ने अल्लाह के पास कोई अहद ले रखा है के फिर अल्लाह हरगिज़ अपने अहद के खिलाफ नहीं करेगा

اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلٰى مَنْ كَسَبَ

या तुम अल्लाह पर केहते हो वो जो तुम जानते नहीं हो? क्यूं नहीं! जो भी बुरा काम

سَيِّئَةً وَّ اَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓئَتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ

करेगा और उस को उस की खताओं ने घेर लिया तो यही लोग दोज़खी हैं।

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

वो उस में हमेशा रहेंगे। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا

ع

तो ये लोग जन्नती हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। और जब के हम ने बनी इस्राईल

مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۫ وَ بِالْوَالِدَيْنِ

से पुख्ता अहद लिया के तुम इबादत न करो मगर अल्लाह की। और वालिदैन के साथ

اِحْسَانًا وَّذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا

हुस्ने सुलूक करो और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मिस्कीनों के साथ और लोगों

لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ

से अच्छी बात कहो और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾

फिर तुम ने रूगरदानी की मगर तुम में से थोड़े लोगों ने इस हाल में के तुम मुँह फेर रहे थे।

وَاِذۡ اَخَذۡنَا مِيۡثَاقَكُمۡ لَا تَسۡفِكُوۡنَ دِمَآءَكُمۡ وَلَا تُخۡرِجُوۡنَ

और जब के हम ने तुम से पुख़्ता अहद लिया के तुम आपस में खून मत बहाओ और एक दूसरे को

اَنۡفُسَكُمۡ مِّنۡ دِيَارِكُمۡ ثُمَّ اَقۡرَرۡتُمۡ وَاَنۡتُمۡ تَشۡهَدُوۡنَ ﴿٨٤﴾

अपने घरों से मत निकालो। फिर तुम ने इक़रार किया इस हाल में के तुम गवाही देते हो।

ثُمَّ اَنۡتُمۡ هٰٓؤُلَآءِ تَقۡتُلُوۡنَ اَنۡفُسَكُمۡ وَ تُخۡرِجُوۡنَ فَرِيۡقًا

फिर तुम वो लोग हो के तुम एक दूसरे को क़त्ल करते थे और तुम अपने में से एक जमाअत को

مِّنۡكُمۡ مِّنۡ دِيَارِهِمۡ ز تَظٰهَرُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ بِالۡاِثۡمِ

निकालते थे उन के घरों से। तुम उन के खिलाफ गुनाह और ज़ुल्म में

وَالۡعُدۡوَانِ ط وَاِنۡ يَّاۡتُوۡكُمۡ اُسٰرٰى تُفٰدُوۡهُمۡ وَهُوَ

मदद करते थे। और अगर वो तुमहारे पास कैदी बन कर आएं तो तुम उन का फिदया देते थे इस हाल में के

مُحَرَّمٌ عَلَيۡكُمۡ اِخۡرَاجُهُمۡ ط اَفَتُؤۡمِنُوۡنَ بِبَعۡضِ الۡكِتٰبِ

तुम पर उन का निकालना हराम था। क्या फिर तुम तौरात के बाज़ हिस्से पर ईमान रखते हो, और बाज़ के

وَ تَكۡفُرُوۡنَ بِبَعۡضٍ ج فَمَا جَزَآءُ مَنۡ يَّفۡعَلُ ذٰلِكَ

साथ कुफ्र करते हो? फिर उस शख्स की सज़ा क्या होगी जो तुम में से उस को करे

مِنۡكُمۡ اِلَّا خِزۡىٌ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ج وَيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ

सिवाए दुन्यवी ज़िन्दगी में रुसवाई के? और क़ियामत के दिन

يُرَدُّوۡنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الۡعَذَابِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

उन को सख्ततरीन अज़ाब की तरफ लौटाया जाएगा। और अल्लाह बेखबर नहीं है

عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿٨٥﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ اشۡتَرَوُا الۡحَيٰوةَ

उन कामों से जो तुम करते हो। यही लोग हैं जिन्हों ने दुन्यवी ज़िन्दगी को आखिरत के

الدُّنۡيَا بِالۡاٰخِرَةِ ز فَلَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمُ الۡعَذَابُ

मुक़ाबले में खरीदा। फिर उन का अज़ाब हलका नहीं किया जाएगा

وَلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿٨٦﴾ ع وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ

और उन की नुसरत नहीं की जाएगी। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी

وَ قَفَّيۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهٖ بِالرُّسُلِ ز وَاٰتَيۡنَا عِيۡسَى ابۡنَ

और उन के बाद लगातार रसूल भेजे। और हम ने ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)

مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَ اَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا
को रोशन मोअजिज़ात दिए और हम ने उन की ताईद की रूहुल कुदुस के ज़रिए। क्या फिर जब कभी
جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ
तुम्हारे पास कोई पैगम्बर आया ऐसी चीजें ले कर जिन को तुम्हारे नफ्स चाहते नहीं थे तो तुम ने बड़ा बनना चाहा।
فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ؗ وَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿۸۷﴾ وَ قَالُوْا
फिर एक जमाअत को तुम ने झुठलाया और एक जमाअत को तुम क़त्ल करते थे। और उन्हों ने कहा के
قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا
हमारे दिल बन्द हैं। बल्के अल्लाह ने उन पर लानत फरमाई उन के कुफ्र की वजह से, फिर बहोत कम
مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
ये ईमान लाएंगे। और जब उन के पास किताब आई अल्लाह की तरफ से जो
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ
सच्चा बतलाने वाली है उस को जो उन के पास है, और वो उस से पेहले काफिरों के खिलाफ फत्ह
عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚۖ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ؗ
तलब करते थे। फिर जब उन के पास आ गया वो जिस को वो पेहचानते भी थे तो उन्हों ने उस के साथ कुफ्र किया।
فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖۤ
फिर अल्लाह की लानत है काफिरों पर। बुरा है जिस के बदले में उन्हों ने
اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ
अपनी जानों को बेचा, ये के वो कुफ्र करते हैं उस के साथ जिस को अल्लाह ने उतारा हसद की वजह से, इस
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ
वजह से के अल्लाह उतारते हैं अपना फज़्ल जिस पर चाहते हैं अपने बन्दों में से। फिर वो
بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۹۰﴾
ग़ज़ब पर ग़ज़ब को ले कर लौटे। और काफिरों के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब है।
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ
और जब उन से कहा जाता है के ईमान लाओ उस पर जो अल्लाह ने उतारा है तो वो केहते हैं के हम ईमान लाएंगे
بِمَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ
उस पर जो हम पर उतारा गया है और वो उस के अलावा के साथ कुफ्र करते हैं। हालांके वो हक़ है

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْبِيَآءَ اللّٰهِ
सच्चा बतलाने वाला है उस को जो उन के पास है। आप फरमा दीजिए तुम क्यूं क़त्ल करते थे अल्लाह के नबियों को
مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى
इस से पेहले अगर तुम मोमिन हो। और यक़ीनन तुम्हारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम)
بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَنْتُمْ
रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर तुम ने बछड़े को माबूद बनाया उन के बाद इस हाल में के तुम
ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَ اِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَ رَفَعْنَا فَوْقَكُمُ
ज़ुल्म कर रहे थे। और जब हम ने तुम से पुख्ता अहद लिया और हम ने तुम्हारे ऊपर कोहे तूर को
الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّ اسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا
उठाया। (कहा) के मज़बूती से पकड़ो उस को जो हम ने तुम्हें दिया और गौर से सुनो। उन्हों ने कहा के हम ने
سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا ۗ وَ اُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ
सुना, लेकिन हम नाफरमानी करते हैं। और उन के दिलों में बछड़े की महब्बत पिला दी गई उन के कुफ्र की वजह से।
قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾
आप फरमा दीजिए बुरा है वो जिस का तुम्हारा ईमान तुम्हें हुक्म दे रहा है अगर तुम मोमिन हो।
قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً
आप फरमा दीजिए के अगर सिर्फ तुम्हारे लिए है आखिरत वाला घर अल्लाह के पास,
مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾
और इन्सानों को छोड़ कर, तो मौत की तमन्ना करो अगर तुम सच्चे हो।
وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
और वो हरगिज़ मौत की तमन्ना नहीं करेंगे कभी भी उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे हैं। और अल्लाह
بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾ وَ لَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ
इन ज़ालिमों को खूब जानते हैं। और ज़रूर आप उन्हें तमाम इन्सानों से ज़्यादा हरीस पाएंगे
عَلٰى حَيٰوةٍ ۚۛ وَ مِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚۛ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ
ज़िन्दा रेहने पर और मुशरिकीन से भी। उन में से एक एक शख्स तमन्ना करता है के काश उसे एक हज़ार साल
اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ
की ज़िन्दगी दी जाए, हालांके एक हज़ार साल की ज़िन्दगी दिया जाना उसे अज़ाब से बचाने वाला

معانقة ٢ عند المتأخرين

ع ١١

يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيۡرٌۢ بِمَا يَعۡمَلُوۡنَ ۝٩٦ قُلۡ مَنۡ كَانَ

नहीं है। और उन के आमाल को अल्लाह देख रहा है। आप फरमा दीजिए के जो

عَدُوًّا لِّجِبۡرِيۡلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلۡبِكَ بِاِذۡنِ اللّٰهِ

जिबरील का दुशमन है तो यक़ीनन जिबरील ने इस कुरआन को आप के क़ल्ब पर उतारा है अल्लाह के हुक्म से,

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَ هُدًى وَّ بُشۡرٰى لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝٩٧

जो सच्चा बतलाने वाला है उन किताबों को जो उस से पेहले थीं, और हिदायत और बशारत है ईमान वालों के लिए।

مَنۡ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَ مَلٰٓٮِٕكَتِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ جِبۡرِيۡلَ

जो अल्लाह का और उस के फरिश्तों और उस के पैगम्बरों का और जिबरील

وَ مِيۡكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلۡكٰفِرِيۡنَ ۝٩٨ وَلَقَدۡ

और मीकाईल का दुशमन है तो यक़ीनन अल्लाह भी दुशमन है काफिरों का। यक़ीनन

اَنۡزَلۡنَآ اِلَيۡكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكۡفُرُ بِهَآ

हम ने आप की तरफ रोशन आयतें उतारीं। और इन आयतों के साथ कुफ्र नहीं करते

اِلَّا الۡفٰسِقُوۡنَ ۝٩٩ اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوۡا عَهۡدًا نَّبَذَهٗ فَرِيۡقٌ

मगर नाफरमान लोग। क्या फिर जब कभी उन्हों ने कोई अहद किया तो उन में से एक जमाअत ने उस को

مِّنۡهُمۡ ؕ بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٠٠ وَلَمَّا جَآءَهُمۡ

फेंक (नहीं) दिया? बल्के उन में से अकसर ईमान ही नहीं लाते। और जब उन के पास रसूल

رَسُوۡلٌ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمۡ نَبَذَ

आया अल्लाह की तरफ से जो सच्चा बतलाने वाला है उस को जो उन के पास है, तो

فَرِيۡقٌ مِّنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ

एहले किताब की एक जमाअत ने फैंक दिया अल्लाह की किताब को अपनी पीठ

ظُهُوۡرِهِمۡ كَاَنَّهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝١٠١ وَ اتَّبَعُوۡا مَا تَتۡلُوا

पीछे गोया के वो जानते ही नहीं। और वो पीछे पड़े उन चीज़ों के जिन की शयातीन तिलावत

الشَّيٰطِيۡنُ عَلٰى مُلۡكِ سُلَيۡمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيۡمٰنُ

करते थे सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के दौरे हुकूमत में। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कुफ्र नहीं किया

وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيۡنَ كَفَرُوۡا يُعَلِّمُوۡنَ النَّاسَ السِّحۡرَ ۗ وَمَآ

लेकिन शयातीन कुफ्र करते थे के वो इन्सानों को जादू सिखाते थे। और वो चीज़

اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَ مَارُوْتَ ؕ
सिखाते थे जो दो फरिश्तों पर उतारी गई बाबुल में, हारूत और मारूत पर।
وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ
और वो किसी को सिखलाते नहीं थे जब तक के ये नहीं केहते थे के हम तो सिर्फ आज़माइश हैं,
فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ
इस लिए तू काफिर मत बन। फिर भी वो उन दोनों फरिश्तों से सीखते थे वो जादू जिस के ज़रिए वो जुदाई
الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ
डालते थे शौहर और बीवी के दरमियान। और वो उस के ज़रिए किसी को ज़रर नहीं पहोंचा सकते
اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ يَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ
मगर अल्लाह के हुक्म से। और वो सीखते थे वो जादू जो उन को नुक़सान देता था और उन को नफा नहीं देता था।
وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ
और यक़ीनन उन्हें मालूम है के अलबत्ता वो आदमी जिस ने उस को खरीदा उस के लिए आखिरत में
مِنْ خَلَاقٍ ۚ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا
कोई हिस्सा नहीं। और अलबत्ता बुरा है जिस के बदले में उन्हों ने अपनी जानों को बेचा। काश के वो
يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ
जानते। और अगर वो ईमान लाते और मुत्तक़ी बनते तो अल्लाह के पास से
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
जो सवाब है वो बेहतर होता। काश के वो जानते। ऐ ईमान वालो!
اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ
तुम 'رَاعِنَا' मत कहो बल्के 'اُنْظُرْنَا' कहो और ग़ौर से सुनो।
وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾ مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ
और काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। एहले किताब में से जो
كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ
काफिर हैं वो, और मुशरिकीन ये नहीं चाहते के तुम पर कोई खैर
عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ
उतारी जाए तुम्हारे रब की तरफ से। और अल्लाह अपनी रहमत के साथ खास करता है

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۰۵﴾ مَا نَنْسَخْ

जिसे चाहता है। और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। हम जो आयत मन्सूख

مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ

करते या हम उस को भुला देते हैं तो हम उस से बेहतर या उसी जैसी ले आते हैं।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۶﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ

क्या आप को मालूम नहीं के अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। क्या आप को मालूम नहीं के

اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ

अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है। और तुम्हारे लिए

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۰۷﴾ اَمْ تُرِيْدُوْنَ

अल्लाह के अलावा कोई मददगार और हिमायती नहीं। क्या तुम ये चाहते हो के

اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ

तुम अपने रसूल से सवाल करो जिस तरह से मूसा (अलैहिस्सलाम) से इस से पेहले सवाल किया गया। और जो

يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۱۰۸﴾

कुफ़्र को ईमान के बदले में लेगा तो यक़ीनन वो सीधे रास्ते से भटक गया।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

एहले किताब में से बहोत से चाहते हैं के काश के वो तुम्हें तुम्हारे ईमान लाने के

اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ

बाद काफिर बना दें अपनी तरफ के हसद से इस के बाद के

مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَ اصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ

उन के लिए हक़ वाज़ेह हो गया। इस लिए तुम मुआफ करो और दरगुज़र करो यहाँ तक के अल्लाह अपना हुक्म

بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۰۹﴾ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

ले आए। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। और नमाज़ क़ाइम करो

الثلثة

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ

और ज़कात दो। और जो भलाई तुम अपनी जानों के लिए आगे भेजोगे तो उसे

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۰﴾ وَ قَالُوْا

अल्लाह के पास पाओगे। यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। और ये केहते हैं के

لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ

हरगिज़ जन्नत में दाखिल नहीं होंगे मगर वही जो यहूदी हैं या नसरानी हैं।

تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

ये उन की झूठी तमन्नाएं हैं। आप फरमा दीजिए तुम अपनी दलील लाओ अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ۝١١١ بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ

सच्चे हो। क्यूं नहीं! जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ किया इस हाल में के वो

مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۠ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

नेकी करने वाला है, तो उस के लिए अपने रब के पास उस का अज्र है। और उन पर न खौफ होगा

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝١١٢ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى

और न वो ग़मगीन होंगे। और यहूद ने कहा के नसारा किसी चीज़

عَلٰى شَيْءٍ ۠ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ

पर नहीं। और नसारा ने कहा के यहूद किसी चीज़ पर नहीं।

وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ

हालांके वो किताब की तिलावत करते हैं। इसी तरह उन्ही जैसा क़ौल उन्हों ने भी कहा जो कुछ

مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

जानते नहीं। फिर अल्लाह उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝١١٣ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ

उस में जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं। और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों से

اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ

रोके, (इस से रोके) के उन में अल्लाह का नाम लिया जाए और उन को वीरान करने की कोशिश करे। ये लोग

مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ۬ؕ لَهُمْ

हैं के उन के लाइक़ नहीं है के वो उन में दाखिल हों मगर डरते डरते। उन के लिए

فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١١٤

दुन्या में रूस्वाई होगी और उन के लिए आखिरत में भारी अज़ाब होगा।

وَ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ

और अल्लाह की मिल्क है मश्रिक़ भी और मग़रिब भी। तो जिधर तुम मुंह फेरोगे तो उधर अल्लाह का

اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ
चेहरा है। यक़ीनन अल्लाह वुसअत वाले, इल्म वाले हैं। और उन्हों ने कहा के अल्लाह
اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
औलाद रखता है। अल्लाह औलाद से पाक है, बल्के अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों
وَ الْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ
और ज़मीन में हैं। सब उस के सामने आजिज़ी करने वाले हैं। वो आसमानों और ज़मीन को बग़ैर नमूने
وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ
के पैदा करने वाला है। और जब वो किसी चीज़ का फैसला करता है तो उस से केहता है के हो जा,
فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا
तो वो हो जाती है। और उन लोगों ने कहा जो जानते नहीं के अल्लाह हम से कलाम क्यूं नहीं करता
اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
या हमारे पास कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं आता? इस तरह उन्ही जैसा क़ौल उन लोगों ने भी कहा जो उन से
مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ
पेहले थे। उन के दिल एक दूसरे के मुशाबेह हैं। यक़ीनन हम ने आयात को साफ साफ बयान किया
لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا
ऐसी क़ौम के लिए जो यक़ीन रखती है। यक़ीनन हम ने आप को हक़ दे कर भेजा बशारत देने वाला
وَّ نَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾
और डराने वाला बना कर के। और आप से दोज़खियों के मुतअल्लिक़ सवाल नहीं किया जाएगा।
وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ
और यहूद व नसारा हरगिज़ आप से राज़ी नहीं होंगे यहाँ तक के आप उन के मज़हब की
مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ
पैरवी कर लें। आप फरमा दीजिए के यक़ीनन अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है।
وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ
और अगर आप उन की ख्वाहिशात के पीछे चलेंगे इस के बाद के आप के पास इल्म आ गया
مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢٠﴾ اَلَّذِيْنَ
तो आप के लिए अल्लाह से कोई (बचाने वाला) मददगार और हिमायती नहीं होगा। वो लोग

وقف منزل

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ

जिन को हम ने किताब दी वो उस की तिलावत करते हैं जैसा के उस की तिलावत का हक़ है। ये

يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

उस पर ईमान रखते हैं। और जो उस का इन्कार करेगा तो वही

الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ

खसारा उठाने वाले हैं। ऐ बनी इसराईल! तुम याद करो मेरी उस नेअमत को जिस का

اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

मैं ने तुम पर इन्आम किया और ये के मैं ने तुम्हें तमाम जहानों (जहान वालों) पर फज़ीलत दी।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا

और डरो उस दिन से जिस दिन कोई शख्स किसी शख्स के कुछ भी काम नहीं आएगा

وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ

और किसी की तरफ से फिदया कबूल नहीं किया जाएगा और उस को सिफारिश नफा नहीं देगी और उन की

يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ

नुसरत नहीं की जाएगी। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इम्तिहान लिया उन के रब ने चन्द कलिमात के ज़रिए तो इब्राहीम

فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ

(अलैहिस्सलाम) ने उन को पूरे तौर पर अदा किया। अल्लाह ने फरमाया के मैं तुम्हें इन्सानों का पेशवा बनाने वाला हूँ। इब्राहीम

وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾ وَاِذْ جَعَلْنَا

(अलैहिस्सलाम) ने कहा के और मेरी औलाद में से भी। अल्लाह ने फरमाया के मेरा अहद ज़ालिमों को नहीं पहोंचेगा। और जब के हम ने

الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا

बैतुल्लाह को बनाया इन्सानों के बार बार आने की जगह और अमन की जगह। और (हम ने हुक्म दिया के) तुम

مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ

मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बनाओ। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और

وَ اِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ الْعٰكِفِيْنَ

इस्माईल (अलैहिस्सलाम) को ताकीदी हुक्म दिया के तवाफ करने वालों और ऐतेकाफ करने वालों और रूकूअ सजदा

وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ

करने वालों के लिए मेरे घर को पाक करो। और जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे

هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ

रब! उस को अमन वाला शेहर बनाइए और यहाँ वालों को फलों की रोज़ी दीजिए, उन को

اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ

जो उन में से ईमान रखते हों अल्लाह पर और आखिरी दिन पर। अल्लाह ने फरमाया के और जो कुफ्र करेगा

فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ

तो मैं उसे थोड़ा नफा पहोंचाऊँगा, फिर उस को खींच कर आग के अज़ाब की तरफ ले जाऊँगा।

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾ وَ اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ

और वो बुरी जगह है। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) बैतुल्लाह की बुन्यादों को ऊपर उठा रहे थे

مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ

और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) भी, (तो दुआ कर रहे थे के) ऐ हमारे रब! तू हमारी तरफ से कबूल फरमा। यक़ीनन तू

اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ

सुनने वाला, इल्म वाला है। ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी ताबेदारी करने वाला बना

لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا

और हमारी औलाद में से भी अपनी ताबेदार उम्मत बना। और हम को हमारे हज के अहकाम सिखला

وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾ رَبَّنَا وَابْعَثْ

और हमारी तौबा क़बूल फरमा। यक़ीनन तू तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है। ऐ हमारे रब! और तू

فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ

उन में उन्ही में से एक रसूल भेज जो उन पर तेरी आयतें तिलावत करे, और उन्हें किताब

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ

व हिकमत की तालीम दे, और उन को पाक करे। यक़ीनन तू ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ

हिकमत वाला है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत से ऐराज़ नहीं करता

اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا ۚ

मगर वो जिस ने अपने आप को बेवकूफ बनाया। और यक़ीनन हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को दुन्या में मुन्तखब किया था।

وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِذْ قَالَ لَهٗ

और यक़ीनन वो आखिरत में नेक लोगों में से होंगे। जब के उन से उन के

رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٣١ وَ وَصّٰى

रब ने फरमाया के ताबेदार बन जाओ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा के मैं रब्बुल आलमीन का ताबेदार बन गया। और इसी की

بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَ يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने वसीय्यत की अपने बेटों को और याकूब (अलैहिस्सलाम) ने भी। (फरमाया) ऐ मेरे बेटो! यक़ीनन

لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝١٣٢ؕ

अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस दीन को मुन्तखब कर लिया है, अब तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में के तुम मुसलमान हो।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ

क्या तुम मौजूद थे जब याकूब (अलैहिस्सलाम) क़रीबुल मौत हुए? जब के आप ने अपने बेटों से फरमाया

لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ

के मेरे बाद तुम किस चीज़ की इबादत करोगे? तो उन्हों ने कहा के हम इबादत करेंगे आप के माबूद की

وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ

और आप के बाप दादा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ (अलैहिमुस्सलाम) के माबूद की, एक ही माबूद की।

وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝١٣٣ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا

और हम उसी की ताबेदारी करने वाले हैं। ये उम्मत गुज़र गई। उस के लिए

مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا

वो है जो उस ने कमाया और तुम्हारे लिए वो है जो तुम ने कमाया। और तुम से सवाल नहीं किया जाएगा उन कामों

يَعْمَلُوْنَ ۝١٣٤ وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ

के मुतअल्लिक़ जो वो करते थे। और उन्हों ने कहा के तुम यहूदी या नसरानी बन जाओ, तो तुम हिदायतयाफ्ता केहलाओगे।

قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ

आप फरमा दीजिए बल्के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत (का इत्तिबा कर लो) जो सिर्फ एक अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٣٥ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا

और मुशरिकीन में से नहीं थे। कहो के हम ईमान लाए अल्लाह पर और उन किताबों पर जो हमारी तरफ उतारी

وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ

गईं और उन किताबों पर जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम)

وَالْاَسْبَاطِ وَمَاۤ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَ عِيْسٰى وَمَاۤ اُوْتِيَ

और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटों पर उतारी गईं और उन किताबों पर जो मूसा और ईसा (अलैहिमस्सलाम) को दी गईं और उन

النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ

किताबों पर जो दूसरे अम्बिया को दी गईं उन के रब की तरफ से। हम उन में से किसी के दरमियान तफरीक़ नहीं करते।

وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾ فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَاۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ

और हम अल्लाह के ताबेदार हैं। फिर अगर ये कुफ्फार ईमान ले आएं उस के मानिन्द जैसा के तुम सहाबा ईमान लाए हो

فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ

तब ये कुफ्फार हिदायतयाफ्ता केहलाएंगे। और अगर वो ऐराज़ करें तो वो सिर्फ (आप की) मुखालफत में हैं।

فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳۷﴾ صِبْغَةَ

फिर अनक़रीब अल्लाह तुम्हारी तरफ से उन के लिए काफी हो जाएगा। और वो सुनने वाला, इल्म वाला है। (हम ने) अल्लाह

اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّ نَحْنُ لَهٗ

का रंग (इखतियार कर लिया है)। और अल्लाह से बेहतर किस का रंग हो सकता है? और हम उसी की इबादत करने

عٰبِدُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَ هُوَ رَبُّنَا

वाले हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम हम से हुज्जतबाज़ी करते हो अल्लाह के बारे में हालांके वो हमारा और

وَ رَبُّكُمْ ۚ وَلَنَاۤ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَ نَحْنُ لَهٗ

तुम्हारा रब है। और हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। और हम उसी के

مُخْلِصُوْنَ ﴿۱۳۹﴾ اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ

लिए इख्लास करने वाले हैं। क्या तुम यूँ केहते हो के इब्राहीम और इस्माईल और

وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَ الْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا

इस्हाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटे वो यहूदी या

اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ

नसरानी थे? आप फरमा दीजिए क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह ज़्यादा जानते हैं? और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा

كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ

जो वो गवाही छुपाए जो अल्लाह की तरफ से उस के पास है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बेखबर

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۰﴾ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ

नहीं है। ये उम्मत गुज़र चुकी। उस के लिए वो अमल हैं जो उस ने कमाए और तुम्हारे लिए

مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۱﴾ ع

वो अमल हैं जो तुम ने कमाए। और तुम से सवाल नहीं किया जाएगा उन आमाल के मुतअल्लिक़ जो वो करते थे।

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰهُمْ

अनकरीब बेवकूफ लोग कहेंगे के किस चीज़ ने उन को फेर दिया

عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِیْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ

उन के उस क़िबले से जिस पर वो थे। आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही के लिए मशरिक़

وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِیْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٤٢﴾

और मगरिब है। अल्लाह सीधे रास्ते की तरफ हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ

और इसी तरह हम ने तुम्हें दरमियानी उम्मत बनाया ताके तुम इन्सानों पर

عَلَی النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ

गवाह रहो और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम पर गवाह रहें।

وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِیْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ

और हम ने नहीं बनाया उस क़िबले को जिस पर आप थे मगर इस लिए ताके हम मालूम करें के कौन

يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰی عَقِبَيْهِ ؕ

रसूल के पीछे चलता है (और कौन) उन में से अपनी एड़ियों के बल पलट जाते हैं।

وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَی الَّذِيْنَ هَدَی اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ

और यक़ीनन ये क़िबला बड़ी भारी चीज़ थी मगर उन पर जिन को अल्लाह ने हिदायत दी। और अल्लाह

اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٣﴾

ऐसा नहीं के तुम्हारी नमाज़ को ज़ायेअ करे। यक़ीनन अल्लाह इन्सानों पर शफक़त वाले, निहायत रहम वाले हैं।

قَدْ نَرٰی تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِی السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ

यक़ीनन आप के चेहरे के बार बार आसमान की तरफ उठने को हम देख रहे हैं। फिर हम ज़रूर आप को

قِبْلَةً تَرْضٰهَا ۪ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ

फेर देंगे उस क़िबले की तरफ जिस को आप पसन्द करते हैं। इस लिए आप अपना रुख मस्जिदे हराम की तरफ कर लीजिए।

وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ

और जहां भी तुम हो तो तुम अपना रूख मस्जिदे हराम की तरफ फेर लो।

وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ

और यक़ीनन वो लोग जिन को किताब दी गई वो यक़ीन रखते हैं के ये हक़ है उन के

رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾ وَلَئِنْ اَتَيْتَ

रब की तरफ से। और अल्लाह बेखबर नहीं है उन आमाल से जो वो कर रहे हैं। और अगर आप ले आऐं

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ

उन के पास जिन को किताब दी गई तमाम मोअजिज़ात भी, तब भी वो आप के क़िबले का इत्तिबा नहीं करेंगे

وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَ مَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ

और न आप उन के क़िबले का इत्तिबा करने वाले हैं। और न उन में से एक दूसरे के क़िबले का इत्तिबा

بَعْضٍ ؕ وَ لَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ

करने वाला है। और अगर आप उन की ख्वाहिशात के पीछे चले इस के बाद के आप के पास

مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٥﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

इल्म आ गया तो यक़ीनन आप कुसूरवारों में से हो जाएंगे। वो लोग जिन को हम ने

الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ

किताब दी वो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पेहचानते हैं जैसा के अपने बेटों को पेहचानते हैं।

وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَ هُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤٦﴾

और यक़ीनन उन में से एक जमाअत हक़ को छुपाती है इस हाल में के वो जानती भी है।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

ये हक़ है आप के रब की तरफ से, इस लिए आप शक करने वालों में से न हों।

وَ لِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ

और हर एक के लिए एक जिहत है जिस की तरफ वो मुंह करने वाला है, इस लिए तुम खैर के कामों में सबक़त करो।

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

तुम जहां भी होगे, अल्लाह तुम्हें इकट्ठा ले आएगा। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾ وَ مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ

कुदरत वाले हैं। और जहां से भी तुम निकलो तो मस्जिदे हराम की

شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَ اِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ

तरफ अपना रूख कर लो। और यक़ीनन ये हक़ है आप के रब की तरफ से।

وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾ وَ مِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ

और अल्लाह बेखबर नहीं है उन कामों से जो तुम करते हो। और जहां से भी आप निकलें

وقف لازم

وقف منزل

ع ١٧

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۭ وَ حَيْثُ مَا كُنْتُمْ

तो अपना रूख मस्जिदे हराम की तरफ फेर लीजिए। और तुम जहां भी हो

فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ

तो अपना रूख मस्जिदे हराम की तरफ कर लिया करो, ताके उन लोगों के लिए तुम पर

عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۤ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۤ فَلَا تَخْشَوْهُمْ

कोई हुज्जत बाक़ी न रहे मगर वो लोग जो उन में से ज़ालिम हैं। तो आप उन से न डरें,

وَ اخْشَوْنِيْ ۤ وَ لِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ

बल्के मुझ से डरें। और इस लिए ताके मैं तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दूँ और ताके तुम

تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا

हिदायत याफ्ता बन जाओ। जैसा के हम ने तुम में एक रसूल भेजा तुम ही में से जो तुम पर तिलावत

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَ يُزَكِّيْكُمْ وَ يُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ

करते हैं हमारी आयतें और तुम्हारा तज़किया करते हैं और तुम्हें किताब व हिकमत की तालीम

وَ الْحِكْمَةَ وَ يُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۵۱﴾

देते हैं और तुम्हें सिखाते हैं वो जो तुम जानते नहीं थे।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿۱۵۲﴾

इस लिए तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूंगा और तुम मेरा शुक्र अदा करो और तुम मेरी नाशुक्री मत करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ۭ

ऐ ईमान वालो! तुम मदद तलब करो सब्र और नमाज़ के ज़रिए।

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾ وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ

यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं। और तुम उन लोगों के मुतअल्लिक़ जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۭ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

किए जाएं, उन्हें मुर्दे मत कहो, बल्के वो ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम्हें उस का एहसास नहीं।

وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَ نَقْصٍ

और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे किसी क़द्र खौफ और भूक और मालों और

مِّنَ الْاَمْوَالِ وَ الْاَنْفُسِ وَ الثَّمَرٰتِ ۭ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۵۵﴾

जानों और फलों की कमी के ज़रिए। और आप बशारत सुना दीजिए उन सब्र करने वालों को।

معانقۃ ۳ عند المتأخرین ۱۲

رکوع ۱۸

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ

के जब उन्हें मुसीबत पहोंचती है, तो केहते हैं اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (हम भी अल्लाह के ममलूक हैं

رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ

और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं)। उन पर उन के रब की तरफ से रहमतें हैं

وَ رَحْمَةٌ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿١٥٧﴾ اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ

और खुसूसी रहमत है। और यही लोग हिदायतयाफ्ता हैं। यक़ीनन सफा और मरवा

مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ

अल्लाह के (दीन की) यादगारों में से हैं। फिर जो शख्स बैतुल्लाह का हज करे या उमरा करे तो

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ۭ وَ مَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ

उस पर कोई गुनाह नहीं के वो उन दोनों का तवाफ करे। और जो किसी भलाई को खुशी से करे तो यक़ीनन

فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ

अल्लाह कदरदान, जानने वाले हैं। यक़ीनन जो लोग छुपाते हैं उन

مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَ الْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ

वाज़ेह आयात को और हिदायत को जिस को हम ने उतारा इस के बाद के हम ने उस को साफ साफ बयान किया

لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ يَلْعَنُهُمُ

किताब में इन्सानों के लिए, तो उन पर अल्लाह की लानत है और उन पर लानत करने वाले भी लानत

اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَ بَيَّنُوْا

करते हैं। मगर वो लोग जिन्हों ने तौबा की और इस्लाह की और साफ साफ

فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَ اَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾

बयान किया, उन की तौबा मैं क़बूल करूंगा। और मैं तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम वाला हूँ।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ

यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और वो मर गए इस हाल में के वो काफिर थे, तो उन पर

لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾ ۙ خٰلِدِيْنَ

अल्लाह की लानत और फरिश्तों और तमाम इन्सानों की लानत है। वो उस में हमेशा

فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

रहेंगे। उन से अज़ाब हल्का नहीं किया जाएगा और उन को मोहलत नहीं दी जाएगी।

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ

और तुम्हारा माबूद यकता माबूद है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो बड़ा महरबान,

الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ

निहायत रहम वाला है। यक़ीनन आसमानों और ज़मीन के पैदा करने

وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ الْفُلْكِ الَّتِیْ تَجْرِیْ

और रात और दिन के आने जाने में और उस कश्ती में जो चलती है

فِی الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

समन्दर में उन चीज़ों को ले कर जो इन्सानों को नफा देती है और उस पानी में जिस को अल्लाह ने

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

आसमान से उतारा, फिर उस के ज़रिए ज़मीन को उस के खुश्क़ हो जाने के बाद ज़िन्दा किया

وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ

और हर क़िस्म के जानवर उस में फैला दिए, और हवाओं के उलट फेर में

وَ السَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ

और उस बादल में जो मुअल्लक़ है आसमान और ज़मीन के दरमियान, अलबत्ता निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ

ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती है। और कुछ लोग वो हैं जो अल्लाह को छोड़ कर

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

कई माबूद बनाते हैं, उन से वो महब्बत करते हैं अल्लाह की महब्बत की तरह। और जो ईमान वाले हैं

اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ

वो अल्लाह से ज़्यादा महब्बत रखने वाले हैं। और काश के ये ज़ालिम सोचते जब वो अज़ाब

الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

देखेंगे के कुव्वत सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है। और ये के अल्लाह सख्त अज़ाब

الْعَذَابِ ﴿۱۶۵﴾ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا

देने वाले हैं। जब बराअत करेंगे वो लोग जिन का इत्तिबा किया गया उन से जिन्हों ने इत्तिबा किया

وَ رَاَوُا الْعَذَابَ وَ تَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ﴿۱۶۶﴾ وَقَالَ

और वो अज़ाब देखेंगे और उन से असबाब मुनक़तेअ हो जाएंगे। और वो लोग कहेंगे

اَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ

जो मुत्तबिअ थे के अगर हमारे लिए (ज़मीन में) दोबारा लौट कर जाना हो, तो हम उन से बराअत करेंगे जैसा

كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ

के उन्हों ने हम से बराअत की। इस तरह अल्लाह उन के आमाल उन पर हसरत बना कर

عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ

दिखाएंगे। और वो दोज़ख से निकलने वाले नहीं हैं। ऐ इन्सानो!

كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّ لَا تَتَّبِعُوْا

तुम खाओ उन चीज़ों में से जो ज़मीन में हैं हलाल पाकीज़ा को। और तुम शैतान के

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾

क़दम ब क़दम मत चलो। यक़ीनन वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَ الْفَحْشَآءِ وَ اَنْ تَقُوْلُوْا

वो तो सिर्फ तुम्हें बुराई और बेहयाई का हुक्म देता है और इस का के तुम अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا

कहो वो जो तुम जानते नहीं हो। और जब उन से कहा जाता है के तुम उस के पीछे चलो

مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ

जिस को अल्लाह ने उतारा तो वो केहते हैं बल्के हम तो उस के पीछे चलेंगे जिस पर हम ने अपने

اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا

बाप दादा को पाया। क्या अगरचे उन के बाप दादा कुछ भी अक़्ल नहीं रखते थे

وَّ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ

और हिदायतयाफ्ता नहीं थे? और काफिरों का हाल उस शख्स के हाल की तरह है जो

يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّ نِدَآءً ؕ صُمٌّۢ

आवाज़ देता है ऐसी चीज़ को जो सुन नहीं सकती सिवाए बुलाने और पुकारने के। वो बेहरे हैं,

بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

गूंगे हैं, अन्धे हैं, फिर वो अक़्ल भी नहीं रखते। ऐ ईमान

اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَ اشْكُرُوْا

वालो! तुम खाओ उन उम्दा चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें दी हैं और तुम अल्लाह के

لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ

शुक्रगुज़ार रहो अगर तुम उसी की इबादत करते हो। अल्लाह ने तो तुम पर हराम किया है

الْمَيْتَةَ وَ الدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ

मुर्दार और खून और खिन्ज़ीर का गोश्त और वो जानवर जिस पर गैरूल्लाह का नाम लिया

اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ

गया हो। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए इस हाल में के वो लज़्ज़त को तलब करने वाला न हो और जान बचाने की मिक़्दार से

عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ

ज़्यादा खाने वाला न हो, तो उस पर कोई गुनाह नहीं है। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। यक़ीनन जो लोग

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا

छुपाते हैं उस किताब को जो अल्लाह ने उतारी और उस के बदले में थोड़ी सी क़ीमत

قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ

लेते हैं, तो ये लोग अपने पेट में आग के सिवा नहीं भर रहे हैं

وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚۖ

और अल्लाह उन से कलाम नहीं करेगा क़यामत के दिन और उन का तज़किया नहीं करेगा।

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ

और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। यही लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले ज़लालत

بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَهُمْ

खरीदी और मग़फिरत के बदले अज़ाब खरीदा। फिर वो लोग आग पर कितना सब्र

عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۭ

करने वाले हैं? ये इस वजह से के अल्लाह ने किताब हक़ के साथ उतारी। और यक़ीनन

وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِى الْكِتٰبِ لَفِىْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ﴿١٧٦﴾ ع

जो लोग किताब में इख्तिलाफ कर रहे हैं, अलबत्ता वो दूर की मुखालफत (लम्बे झगड़े) में हैं।

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ

नेकी सिर्फ ये नहीं है के तुम अपना रूख फेर लो मशरिक़ की तरफ

وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

और मगरिब की तरफ, लेकिन नेक वो शख्स है जो ईमान रखे अल्लाह पर और आखिरी दिन

وَ الۡمَلٰٓئِكَةِ وَ الۡكِتٰبِ وَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الۡمَالَ

और फरिश्तों और किताबों और अम्बिया पर। और माल दे

عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى وَ الۡمَسٰكِيۡنَ وَابۡنَ

माल की महब्बत के बावजूद रिश्तेदारों को और यतीमों और मिस्कीनों और

السَّبِيۡلِۙ وَالسَّآئِلِيۡنَ وَفِى الرِّقَابِۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ

मुसाफिरों को और सवाल करने वालों को और गर्दनों के छुड़ाने में, और नमाज़ क़ाइम करे

وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالۡمُوۡفُوۡنَ بِعَهۡدِهِمۡ اِذَا عٰهَدُوۡا ۚ

और ज़कात दे, और जो अपना अहद पूरा करने वाले हैं जब वो अहद करें,

وَالصّٰبِرِيۡنَ فِى الۡبَاۡسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَ حِيۡنَ الۡبَاۡسِ ؕ

और जो सब्र करने वाले हैं सख्ती और तकलीफ में और लड़ाई के वक़्त।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ صَدَقُوۡا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُتَّقُوۡنَ ﴿١٧٧﴾

यही लोग सच्चे हैं। और यही लोग मुत्तक़ी हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُتِبَ عَلَيۡكُمُ الۡقِصَاصُ

ऐ ईमान वालो! तुम पर क़िसास फर्ज़ किया गया मक़्तूलीन के बारे

فِى الۡقَتۡلٰى ؕ اَلۡحُرُّ بِالۡحُرِّ وَ الۡعَبۡدُ بِالۡعَبۡدِ وَ الۡاُنۡثٰى

में के आज़ाद क़त्ल किया जाए आज़ाद के बदले और गुलाम क़त्ल किया जाए गुलाम के बदले और औरत क़त्ल

بِالۡاُنۡثٰى ؕ فَمَنۡ عُفِىَ لَهٗ مِنۡ اَخِيۡهِ شَىۡءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ

की जाए औरत के बदले। फिर जिस शख्स को उस के भाई की तरफ से मुआफी हो जाए, तो माकूल तरीक़े पर

بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَاَدَآءٌ اِلَيۡهِ بِاِحۡسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخۡفِيۡفٌ

मुतालबा करना है और उस की तरफ भलाई के साथ अदा कर देना है। ये तुम्हारे रब की तरफ से

مِّنۡ رَّبِّكُمۡ وَ رَحۡمَةٌ ؕ فَمَنِ اعۡتَدٰى بَعۡدَ ذٰلِكَ

आसानी है और रहमत है। लेकिन उस के बाद जो ज़्यादती करेगा

فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿١٧٨﴾ وَلَكُمۡ فِى الۡقِصَاصِ حَيٰوةٌ

तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। और तुम्हारे लिए ऐ अक़्ल वालो! क़िसास में

يّٰۤاُولِى الۡاَلۡبَابِ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَ ﴿١٧٩﴾ كُتِبَ عَلَيۡكُمۡ اِذَا

ज़िन्दगी है ताके तुम (क़त्ल करने से) परहेज़ करो। तुम पर फर्ज़ किया गया जब

حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ ۨ الْوَصِيَّةُ

तुम में से किसी एक की मौत का वक़्त क़रीब आ जाए अगर उस ने माल छोड़ा हो, (तो फर्ज़ किया गया)

لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا

वसीय्यत करना वालिदैन और रिश्तेदारों के लिए माकूल तरीक़े पर। ये मुत्तक़ियों पर

عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝١٨٠ فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ

लाज़िम है। फिर उस को जो बदल देगा उस को सुनने के बाद तो

اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝١٨١ۭ

उस का गुनाह सिर्फ उन लोगों पर है जो उस को बदलेंगे। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ

फिर जो वसीय्यत करने वाले की तरफ से खौफ करे एक तरफ माइल होने का या गुनाह का, फिर वो उन के

بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٨٢ۧ

दरमियान सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं है। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज़ किए गए

كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝١٨٣ۙ

जैसा के उन लोगों पर फर्ज़ किए गए जो तुम से पेहले थे, ताके तुम मुत्तक़ी बनो।

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا

चन्द गिने चुने दिनों के (रोज़े फर्ज़ किए गए)। फिर तुम में से जो बीमार हो

اَوْ عَلٰي سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ۭ وَعَلَى الَّذِيْنَ

या सफर पर हो तो दूसरे दिनों से तादाद को पूरा करना है। और उन लोगों पर जो रोज़े

يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ۭ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا

की ताक़त रखते हैं, एक मिस्कीन का खाना फिदया देना है (ये हुक्म मन्सूख है)। फिर जो खुशी से नेकी करे

فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ۭ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

तो वो उस के लिए बेहतर है। और ये के तुम रोज़ा रखो ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम

تَعْلَمُوْنَ ۝١٨٤ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ

जानते हो। रमज़ान का महीना वो महीना है जिस में कुरआन उतारा गया, जो इन्सानों के लिए

هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ ۚ

हिदायत है और हिदायत की साफ साफ आयात और हक़ व बातिल के दरमियान फैसला करने वाली साफ साफ आयतें हैं।

فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ

फिर तुम में से जो ये महीना पाए तो उस को चाहिए के उस के रोज़े रखे। और जो बीमार

مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ

हो या सफर पर हो तो दूसरे दिनों से तादाद को पूरा करना है। अल्लाह तुम्हारे

اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ز وَ لِتُكْمِلُوا

साथ आसानी का इरादा फरमाते हैं और अल्लाह तुम्हारे साथ तंगी का इरादा नहीं फरमाते। और इस लिए

الْعِدَّةَ وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ

ताके तुम तादाद को पूरा करो और ताके तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो इस पर के अल्लाह ने तुम्हें हिदायत दी और

تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ

ताके तुम शुक्रगुज़ार बनो। और जब आप से मेरे बन्दे सवाल करें मेरे मुतअल्लिक़, तो मैं क़रीब ही हूँ।

اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ

मैं पुकारने वाले की पुकार क़बूल करता हूँ जब वो मुझे पुकारता है। इस लिए उन्हें चाहिए के वो मेरे हुक्म

وَ لْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ﴿۱۸۶﴾ اُحِلَّ لَكُمْ

को क़बूल करें और मुझ पर ही ईमान लाएं ताके वो राह पाएं। तुम्हारे लिए अपनी

لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ

बीवियों से जिमाअ रोज़ों की रात में हलाल किया गया। वो तुम्हारा लिबास

لَّكُمْ وَ اَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ

हैं और तुम उन का लिबास हो। अल्लाह जानते हैं के तुम अपने नफ्सों से

تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَ عَفَا عَنْكُمْ ۚ

खयानत करते थे, इस लिए अल्लाह ते तुम्हारी तौबा क़बूल फरमाई और तुम्हें मुआफ कर दिया।

فَالْئٰنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ص

इस लिए अब तुम उन से मुबाशरत करो और तुम तलब करो वो (औलाद) जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है।

وَ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ

और तुम खाओ और पियो यहां तक के तुम्हारे लिए सफेद धागा

مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ص ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ

सियाह धागे से सुबह (सादिक़) अलग नज़र आ जाए। फिर रात तक रोज़ों को

اِلَى الَّيْلِ ج وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَ اَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ لا

पूरा करो। और तुम उन से जिमाअ मत करो इस हाल में के तुम मस्जिदों में

فِي الْمَسٰجِدِ ط تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ط كَذٰلِكَ

मोअतकिफ हों। ये अल्लाह की हुदूद हैं। तुम उन के क़रीब भी मत जाओ। इसी तरह

يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝١٨٧ وَلَا تَاْكُلُوْٓا

अल्लाह अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं लोगों के लिए ताके वो मुत्तक़ी बनें। और अपने माल

اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ

आपस में बातिल तरीक़े से मत खाओ और तुम उन को हुक्काम तक मत ले जाओ

لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَ اَنْتُمْ

ताके तुम लोगों के मालों का एक हिस्सा गुनाह के ज़रिए खा जाओ, इस हाल में के तुम

تَعْلَمُوْنَ ۝١٨٨ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ط قُلْ هِيَ

जानते हो। ये लोग आप से चाँदों के मुतअल्लिक़ सवाल करते हैं। आप फरमा दीजिए के चाँद

مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ط وَ لَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا

इन्सानों के लिए औक़ात मालूम करने और हज का वक़्त मालूम करने का ज़रिया है। और नेकी ये नहीं है के

الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ج وَاْتُوا

तुम घरों में आओ उन की पुश्त की जानिब से, लेकिन नेक वो शख्स है जो अल्लाह से डरे। और

الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٨٩

घरों में उन के दरवाज़ों से आओ। और अल्लाह से डरो ताके तुम फलाह पाओ।

وَ قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ

और अल्लाह के रास्ते में क़िताल करो उन लोगों से जो तुम से क़िताल करें

وَلَا تَعْتَدُوْا ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝١٩٠ وَاقْتُلُوْهُمْ

और तुम ज़्यादती मत करो। यक़ीनन अल्लाह ज़्यादती करने वालों से महब्बत नहीं करते। और उन को क़त्ल करो

حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَ اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ

जहाँ उन को पाओ और उन को निकालो जहाँ से उन्हों ने तुम्हें निकाला

وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ
और फितना ये क़त्ल से भी ज़्यादा सख्त चीज़ है। और उन से क़िताल मत करो

عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ
मस्जिदे हराम के पास जब तक के वो तुम से मस्जिदे हराम में क़िताल न करें। फिर अगर वो तुम से क़िताल करें

فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا
तो तुम उन को क़त्ल कर दो। इसी तरह काफिरों की सज़ा है। फिर अगर वो बाज़ आ जाएं

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٢﴾ وَ قٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ
तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और उन से क़िताल करो यहां तक के फितना बाक़ी

فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا
न रहे और दीन अल्लाह ही का हो जाए। फिर अगर वो बाज़ आ जाएं

فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩٣﴾ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ
तो सिवाए ज़ालिमों के किसी पर ज़्यादती नहीं है। ये हुरमत वाला महीना उस हुरमत वाले

الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ
महीने के बदले में है और दूसरी मोहतरम चीज़ों का भी बदला है। फिर जो तुम पर ज़्यादती करे

فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ص
तो तुम उस पर ज़्यादती करो उसी जैसी जो उस ने तुम पर ज़्यादती की है।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾
और अल्लाह से डरो और जान लो के अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है।

وَ اَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ
और अल्लाह के रास्ते में खर्च करो और खुद अपने को हलाकत में

اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَ اَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾
मत डालो। और तुम नेकी करो। यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों से महब्बत फरमाते हैं।

مع عند المتقدمين ١٢

وَ اَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ
और हज और उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो। फिर अगर तुम्हें घेर लिया जाए

فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى
तो जो हदी मुयस्सर हो (वो दो)। और अपने सरों को मत मुंडाओ यहां तक के

يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا

हदी अपने हलाल होने की जगह पहोंच जाए। फिर जो तुम में से बीमार हो

اَوْ بِهٖۤ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ

या उस के सर में तकलीफ हो तो रोज़ों से या सदक़े से या जानवर ज़बह कर के

اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ ۥ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ

फिदया देना है। फिर जब तुम मामून हो जाओ, तो फिर जो शख़्स हज के साथ उमरा

اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ

को मिला कर फायदा उठाए, तो जो हदी मुयस्सर हो (वो दे)। फिर जो शख़्स

لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِى الْحَجِّ وَ سَبْعَةٍ

हदी न पाए तो तीन दिन के रोज़े रखने हैं हज में और सात रोज़े रखने हैं

اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ

जब तुम वापस लौटो (जब तुम फारिग़ हो जाओ)। ये पूरे दस दिन हैं। ये उस शख़्स के लिए है

اَهْلُهٗ حَاضِرِى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ

जिस के घर वाले मस्जिदे हराम के पास मौजूद न हों। और अल्लाह से डरो

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ

और जान लो के यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं। हज के महीने

مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ

मालूम हैं। फिर जो उन में हज फ़र्ज कर ले तो फिर न जिमाअ पर उभारने वाली गुफतगू और न

وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا

गुनाह की बात करनी है और न हज में झगड़ा करना है। और जो भलाई तुम

مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى

करो तो अल्लाह उसे जानते हैं। और तोशा तय्यार कर लो, फिर बेशक बेहतरीन तोशा तक़्वा है।

وَاتَّقُوْنِ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ

और मुझ से डरो, ऐ अक़्ल वालो! तुम पर कोई गुनाह नहीं है

اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ

के तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलब करो। फिर जब अरफात

مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ

से वापस लौटो तो अल्लाह को मशअरे हराम के पास (मुज़दलिफा में) याद करो।

وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ

और अल्लाह को याद करो जैसा के उस ने तुम्हें हिदायत दी। और यक़ीनन तुम उस से पेहले

لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۱۹۸﴾ ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ

अलबत्ता गुमराहों में से थे। फिर तुम लौटो जहां से सब लोग वापस लौटते हैं

وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۹۹﴾

और अल्लाह से मग़फिरत तलब करो। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ

फिर जब तुम अपने हज के अरकान पूरे कर चुको, तो अल्लाह को याद करो अपने याद करने की तरह

اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ

अपने बाप दादा को या उस से भी ज़्यादा याद करो। फिर कुछ लोग वो हैं जो

يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ

यूँ केहते हैं के ऐ हमारे रब! तू हमें दुन्या ही में दे दे और उन के लिए आखिरत में

مِنْ خَلَاقٍ ﴿۲۰۰﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا

कोई हिस्सा नहीं है। और उन में से कुछ लोग वो हैं जो यूं केहते हैं के ऐ हमारे रब! तू हमें

فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ

दुन्या में भी भलाई अता फरमा और आखिरत में भी भलाई अता फरमा और तू हमें दोज़ख के अज़ाब से

النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ

बचा ले। यही लोग हैं जिन के लिए उन के किए का हिस्सा है।

النصف

وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۲۰۲﴾ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِىْٓ اَيَّامٍ

और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं। और अल्लाह को चन्द गिने चुने दिनों में

مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ

याद करो। फिर जो दो दिन में जल्दी (मक्का) वापस आ जाए तो उस पर कोई गुनाह

عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ

नहीं है। और जो उस के बाद भी रहे तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं है, ये उन के लिए है जो मुत्तक़ी हैं।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾
और अल्लाह से डरो और जान लो के तुम उस की तरफ इकट्ठे किए जाओगे।
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ
और लोगों में ऐसा शख्स भी है के जिस का कलाम आप को अच्छा लगता है दुन्यवी ज़िन्दगी के
الدُّنْيَا وَ يُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ
बारे में और वो अल्लाह को गवाह बनाता है उस पर जो उस के दिल में है। हालांके वो सख्त
الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾ وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ
झगड़ालू है। और जब वो वापस लौटता है तो ज़मीन में कोशिश करता है ताके उस में फसाद
فِيْهَا وَ يُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ
फेलाए और वो खेती और जानवरों को बरबाद करता है। और अल्लाह को फसाद पसन्द
الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ
नहीं। और जब उस से कहा जाता है के अल्लाह से डर, तो उसे बड़ाई
بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۭ وَ لَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾
गुनाह पर उभारती है, फिर उस के लिए जहन्नम काफी है। और वो बुरा ठिकाना है।
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۭ
और कुछ लोग वो हैं जो अल्लाह की रज़ा की तलब में अपनी जान दे देते हैं।
وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ ۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا
और अल्लाह बन्दों पर महरबान है। ऐ ईमान वालो! तुम इस्लाम
فِي السِّلْمِ كَاۗفَّةً ۠ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ
में पूरे पूरे दाखिल हो जाओ। और तुम शैतान के क़दम ब क़दम मत चलो।
اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٨﴾ فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ
यक़ीनन वो तुम्हारा खुला दुशमन है। फिर अगर तुम फिसल जाओ इस के बाद के
مَا جَاۗءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٠٩﴾
तुम्हारे पास वाज़ेह आयतें आ चुकीं तो जान लो के अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ
वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर इस बात के के उन के पास अल्लाह आ जाए बादलों के सायबानों

اَلْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَ قُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

में और फरिश्ते आ जाएं और मुआमला खत्म कर दिया जाए। और अल्लाह ही की तरफ

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾ سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ

तमाम उमूर लौटाए जाएंगे। आप बनी इस्राईल से सवाल कीजिए के हम ने उन्हें कितनी

مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَ مَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ

रोशन निशानियाँ अता कीं। और जो अल्लाह की नेअमत को बदलेगा इस

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

के बाद के वो उस के पास आई तो यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ يَسْخَرُوْنَ

काफिरों के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी मुज़य्यन की गई और वो ईमान

مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ

वालों से मज़ाक़ करते हैं। और जो मुत्तक़ी हैं वो क़यामत के दिन उन के ऊपर

الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾

रहेंगे। और अल्लाह बेहिसाब रोज़ी देते हैं जिसे चाहते हैं।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ

तमाम इन्सान एक ही उम्मत थे। फिर अल्लाह ने अम्बिया भेजे

مُبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ

बशारत देने वाले और डराने वाले। और उन के साथ किताब उतारी

بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ

हक़ के साथ ताके वो इन्सानों के दरमियान फैसला करे जिस में वो इख्तिलाफ कर रहे हैं।

وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ

और उस में इखतिलाफ नहीं किया मगर उन लोगों ने जिन को किताब दी गई थी इस के बाद के

مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ

उन के पास रोशन मोअजिज़ात आए, आपस की ज़िद की वजह से। फिर अल्लाह ने

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ

अपने हुक्म से हिदायत दी ईमान वालों को उस हक़ की जिस में वो इखतिलाफ कर रहे थे।

وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۱۳﴾

और अल्लाह सीधे रास्ते की तरफ हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ

क्या तुम ने ये गुमान कर रखा है के तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे हालांके तुम पर अब तक उन लोगों जैसे

الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ط مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ

हालात नहीं आए जो तुम से पेहले गुज़र चुके। जिन को सख्ती और

وَ الضَّرَّآءُ وَ زُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ

तकलीफ पहोंची और वो हिला दिए गए यहां तक के केह उठे रसूल और वो लोग जो उन के साथ

اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ط اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿۲۱۴﴾

ईमान लाए थे के अल्लाह की नुसरत कब आएगी? सुनो! यक़ीनन अल्लाह की नुसरत क़रीब है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَا ذَا يُنْفِقُوْنَ ط قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ

वो सवाल करते हैं के क्या खर्च करें? आप फरमा दीजिए के जो माल तुम खर्च करो

فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

वो वालिदैन, और रिश्तेदारों, और यतीमों और मिस्कीनों

وَابْنِ السَّبِيْلِ ط وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ

और मुसाफिर के लिए होना चाहिए। और जो भलाई तुम करोगे तो यक़ीनन अल्लाह

بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۱۵﴾ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ج

उसे जानते हैं। तुम पर क़िताल फर्ज़ किया गया हालांके ये तुम्हें नापसन्द है।

وَ عَسٰى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ج

और शायद किसी चीज़ को तुम नापसन्द करो, हालांके वो तुम्हारे लिए बेहतर हो।

وَ عَسٰى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ط وَ اللّٰهُ

और शायद तुम किसी चीज़ से महब्बत करो, हालांके वो तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह

يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱۶﴾ ع يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ

जानते हैं और तुम जानते नहीं हो। ये आप से सवाल करते हैं हुरमत वाले महीने

الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ط قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ط وَصَدٌّ

के मुतअल्लिक़, उस में क़िताल के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के उस में क़िताल करना बहोत बड़ा गुनाह है। लेकिन

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ كُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ
अल्लाह के रास्ते से रोकना और अल्लाह के साथ कुफ्र करना और मस्जिदे हराम से रोकना

وَ اِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ
और वहाँ वालों को वहाँ से निकालना, ये अल्लाह के नज़दीक़ उस से भी बड़ा गुनाह है। और फितना

اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ
क़त्ल से भी बड़ा गुनाह है। और वो लोग तुम से बराबर क़िताल करते रहेंगे

حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ
यहां तक के तुम्हें तुम्हारे दीन से मुर्तद बना दें अगर वो उस की ताक़त रखें। और जो

يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ
तुम में से अपने दीन से मुर्तद हो जाएगा, फिर वो मरेगा इस हाल में के वो काफिर है

فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ
तो उन के आमाल ज़ायेअ हो जाएंगे दुन्या और आखिरत में।

وَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾
और ये दोज़खी होंगे। वो उस में हमेशा रहेंगे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا
यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और जिन्हों ने हिजरत की और जिहाद किया

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
अल्लाह के रास्ते में, ये अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾ يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ
बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ये आप से सवाल करते हैं शराब और जुए के मुतअल्लिक़। आप फरमा

فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ
दीजिए के इन दोनों में बड़ा गुनाह है, और लोगों के लिए कुछ मनाफेअ भी हैं। और उन का गुनाह उन के नफे से

مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَ يَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ قُلِ
ज़्यादा बड़ा है। और ये आप से सवाल करते हैं के क्या खर्च करें? आप फरमा दीजिए

الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
के ज़ाइद को खर्च करो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें साफ साफ बयान करते हैं ताके तुम

تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١٩﴾ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۭ وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ

दुन्या और आखिरत में सोचो। और ये आप से सवाल करते हैं

عَنِ الْيَتٰمٰى ۭ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ۭ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ

यतीमों के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के उन की इस्लाह करना बेहतर है। और अगर उन का खर्च अपने साथ तुम मिला लो

فَاِخْوَانُكُمْ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۭ

तो वो तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह जानता है माल बरबाद करने वाले को इस्लाह करने वाले से।

وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٠﴾

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मशक्क़त में डालता। यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۭ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ

और मुश्रिक औरतों से तुम निकाह मत करो जब तक के वो ईमान न ले आएं। और अलबत्ता ईमान वाली बाँदी

خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا

मुशरिक औरत से बेहतर है, अगर्चे वो तुम्हें अच्छी लगे। और मुशरिक मर्दों से निकाह

الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ۭ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ

मत करो जब तक के वो ईमान न ले आएं। और अलबत्ता मोमिन गुलाम बेहतर है

مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ښ

मुशरिक मर्द से अगर्चे वो तुम्हें अच्छा लगे। ये लोग दोज़ख की तरफ दावत देते हैं।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ

और अल्लाह दावत देते हैं जन्नत की तरफ और अपने हुक्म से मग़फिरत की तरफ।

وَ يُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾ ع

और अल्लाह अपनी आयतें इन्सानों के लिए साफ साफ बयान करते हैं ताके वो नसीहत हासिल करें।

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۭ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا

और वो आप से सवाल करते हैं हैज़ के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के ये गन्दी चीज़ है, इस लिए औरतों से हैज़

النِّسَاۗءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ

की हालत में अलग रहो। और उन के क़रीब मत जाओ यहां तक के वो पाक हो जाएं।

فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۭ

फिर जब वो पाक हो जाएं तो उन औरतों के पास आओ उस जगह से जहां से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾

यक़ीनन अल्लाह तौबा करने वालों से महब्बत फरमाते हैं और पाक रेहने वालों से महब्बत फरमाते हैं।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۫

तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं। तो अपनी खेती में आओ जिस तरीक़े से तुम चाहो।

وَ قَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ

और अपने लिए आगे की तदबीर करो। और अल्लाह से डरो और जान लो के अल्लाह से

مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٢٣﴾ وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً

मिलने वाले हो। और आप ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। और अल्लाह को अपनी क़स्मों का निशाना

لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَ تَتَّقُوْا وَ تُصْلِحُوْا بَيْنَ

मत बनाओ के तुम नेकी नहीं करोगे और परहेज़गारी नहीं करोगे और लोगों के दरमियान सुलह

النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ

न कराओगे। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। अल्लाह मुआख़ज़ा नहीं करेंगे

بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ

तुम्हारी क़स्मों में से लग़्व क़सम पर। लेकिन अल्लाह तुम्हारा मुआख़ज़ा करेंगे उस पर जिस का तुम्हारे दिलों ने पुख़्ता

قُلُوْبُكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ

इरादा किया हो। और अल्लाह बख़्शने वाले, हिल्म वाले हैं। उन लोगों के लिए जो क़सम खा लेते हैं

مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ

अपनी बीवियों के पास जाने से चार महीने इन्तिज़ार करना है। फिर अगर वो रूजूअ कर लें

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾ وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ

तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और अगर वो तलाक़ का पुख़्ता इरादा कर लें

فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾ وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ

तो यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। और तलाक़ दी हुई औरतें अपनी ज़ात के बारे में

بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ

तीन हैज़ तक इन्तिज़ार करें। और उन औरतों के लिए हलाल नहीं है

اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ

के वो छुपाएं उस को जो अल्लाह ने उन के रहम में पैदा किया अगर वो

يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَ بُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर ईमान रखती हों। और उन के शौहर हक़दार हैं

بِرَدِّهِنَّ فِىْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْۤا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ

उन के लौटाने के उस मुद्दत में अगर वो इस्लाह का इरादा करें। और उन औरतों के लिए

مِثْلُ الَّذِىْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ص وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ

भी हक़ है उसी जैसा जो उन औरतों के ज़िम्मे हक़ है उर्फ के मुताबिक़। लेकिन मर्दों के लिए उन औरतों

دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ص

पर एक दर्जा (ज़्यादा हक़) है। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। तलाक़ दो मर्तबा (दी जा सकती)

فَاِمْسَاكٌ ۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌ ۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ

है। उस के बाद या तो क़ाइदे के मुताबिक़ रोक लेना है या फिर अच्छी तरह छोड़ देना है। और तुम्हारे

لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْئًا اِلَّاۤ

लिए हलाल नहीं है के कुछ भी ले लो उस महर में से जो तुम ने उन को दिया हो, मगर

اَنْ يَّخَافَاۤ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ

ये के वो दोनों डरें इस से के वो अल्लाह की हुदूद को क़ाइम नहीं रख सकेंगे। फिर अगर तुम डरो

اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا

के वो दोनों अल्लाह की हुदूद को क़ाइम नहीं रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं है

فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ

इस में के औरत फिदया दे कर सुलह कर ले। ये अल्लाह की हुदूद हैं, तो उन से आगे मत बढ़ो।

وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

और जो अल्लाह की हुदूद से आगे बढ़ेगा तो यही लोग ज़ालिम हैं।

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْ ۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ

फिर अगर मर्द बीवी को (तीसरी) तलाक़ दे दे, तो फिर वो औरत मर्द के लिए हलाल नहीं है उस के बाद यहां तक के वो औरत

زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَاۤ

उस के अलावा किसी दूसरे शौहर से निकाह कर ले। फिर अगर वो दूसरा शौहर भी उसे तलाक़ दे दे, तो फिर उन दोनों पर कोई गुनाह

اَنْ يَّتَرَاجَعَاۤ اِنْ ظَنَّاۤ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ

नहीं है इस में के वो आपस में दोबारा निकाह कर लें अगर वो गुमान रखते हों के वो दोनों अल्लाह की हुदूद को क़ाइम रख सकेंगे।

حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ

और ये अल्लाह की हुदूद हैं, जिन को अल्लाह बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो जानती है। और जब तुम औरतों को

النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ

तलाक़ दो, फिर वो अपनी इद्दत की इन्तिहा (के क़रीब) पहोंच जाएं तो उन्हें रोक लो उर्फ के मुताबिक़

اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا

या उन्हें छोड़ दो उर्फ के मुताबिक़। और उन को मत रोके रखो ज़रर पहोंचाने के लिए

لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ

ताके तुम ज़्यादती करो। और जो ऐसा करेगा तो यक़ीनन उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया।

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ز وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ

और अल्लाह की आयतों को मज़ाक़ मत बनाओ। और याद करो अल्लाह की उस नेअमत को

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ

जो तुम पर है और उस किताब और हिक्मत को जो उस

وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا

ने तुम पर उतारी, इस की अल्लाह तुम्हें नसीहत करते हैं। और अल्लाह से डरो और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ

के अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। और जब तुम औरतों को तलाक़ दो,

فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ

फिर वो अपनी इद्दत की इन्तिहा को पहोंच जाएं तो उन को मत रोको इस से के वो अपने शौहरों से

اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ

निकाह करें जब वो आपस में राज़ी हों उर्फ के मुताबिक़। इसी की

يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ

नसीहत की जाती है उस शख़्स को जो तुम में से अल्लाह पर और आखिरी दिन पर ईमान रखता

الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ

है। ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़गी वाला है और ज़्यादा साफ सुथरा है। और अल्लाह जानता है और तुम

لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ

नहीं जानते। और माएं अपनी औलाद को दूध पिलाएं

حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ
पूरे दो साल, उस के लिए जो रज़ाअत की मुद्दत पूरी करना चाहे।

وَ عَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَ كِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ
और बाप (शौहर) के ज़िम्मे दूध पिलाने वाली औरतों को खाना और कपड़ा देना है उर्फ के मुताबिक़।

لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌ ۢ
किसी शख़्स को तकलीफ नहीं दी जाएगी, मगर उस की वुसअत के मुताबिक़। किसी माँ को ज़रर नहीं पहोंचाया जाएगा

بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَ عَلَى الْوَارِثِ
उस के बच्चे की वजह से और किसी बाप को ज़रर नहीं पहोंचाया जाएगा उस के बच्चे की वजह से। और वारिस के ज़िम्मे

مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا
भी उसी के मानिन्द है। फिर अगर माँ बाप दोनों इरादा करें दूध छुड़ाने का आपस की रज़ामन्दी से

وَ تَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ
और आपस के मशवरे से तो उन पर कोई गुनाह नहीं है। और अगर चाहो

اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ
के तुम दूध पिलवाओ अपने बच्चों को, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है जब तुम दो

مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا
वो माल जो तुम देते हो उर्फ के मुताबिक़। और अल्लाह से डरो और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾ وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ
के अल्लाह तुम्हारे आमाल को देख रहे हैं। और जो तुम में से वफात

مِنْكُمْ وَ يَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ
पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो वो अपने बारे में इन्तिज़ार करें

اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ
चार महीने और दस दिन। फिर जब वो अपनी इद्दत की इन्तिहा को पहोंच जाएं

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ
तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है उस में जो वो अपने बारे में करें

بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾ وَلَا
उर्फ के मुताबिक़। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। और

جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ

तुम पर कोई गुनाह नहीं है उस में जिस को तुम इशारे से बयान करो औरतों की मंगनी के मुतअल्लिक़

اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ

या तुम अपने दिलों में छुपाओ। अल्लाह जानता है के तुम उन औरतों का तज़किरा करोगे

وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا

लेकिन तुम उन से चुपके चुपके वादा मत कर लो, मगर ये के कोई अच्छी बात

مَّعْرُوْفًا ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ

कहो। और निकाह का बन्धन मज़बूत मत बांध लो यहां तक के लिखी हुई मुद्दत

الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ

अपनी इन्तिहा को पहोंच जाए। और जान लो के अल्लाह जानता है उस को जो तुम्हारे दिलों में है,

فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾ ع

तो तुम उस से डरो। और जान लो के अल्लाह बख्शने वाले, हिल्म वाले हैं।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ

तुम पर कोई गुनाह नहीं है के अगर तुम ने औरतों को तलाक़ दी हो जब तुम ने उन को छुवा न हो,

اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۖۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ

और तुम ने उन के लिए महर मुकर्रर न किया हो। और उन को एक जोड़ा दो, वुसअत वाले के ज़िम्मे उस की

قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ

इस्तिताअत के बक़दर है और तंगदस्त के ज़िम्मे उस की इस्तिताअत के बक़दर है। ये जोड़ा देना है उर्फ के मुताबिक़।

حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾ وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ

ये लाज़िम है नेकी करने वालों पर। और अगर तुम औरतों को तलाक़ दो इस से पेहले के

قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ

तुम उन को छुओ इस हाल में के तुम ने उन के लिए महर मुक़र्रर

فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا

किया हो, तो उस महर का आधा देना है जो तुम ने मुक़र्रर किया है, मगर ये के वो औरतें मुआफ कर दें या वो शख्स (वली)

الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ؕ وَاَنْ تَعْفُوْٓا

मुआफ कर दे जिस के हाथ में निकाह का बन्धन है। और ये के तुम मुआफ कर दो

اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَ لَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ

ये तक़वा के ज़्यादा क़रीब है। और तुम आपस में एहसान करना मत भूलो।

اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾ حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ

यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। तमाम नमाज़ों की हिफाज़त करो,

وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾

खास तौर पर दरमियानी नमाज़ की। और अल्लाह के सामने खुशूअ के साथ खड़े हो जाओ।

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ

फिर अगर तुम खौफ की हालत में हो तो (फिर नमाज़ पढ़ो) खड़े खड़े या सवारी पर। फिर जब तुम मामून हो जाओ

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾

तो अल्लाह को याद करो जैसा के उस ने तुम्हें इल्म दिया उस चीज़ का जो तुम जानते नहीं थे।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۖۚ

और वो लोग जो तुम में से वफात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं,

وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ

तो अपनी बीवियों के लिए वसीय्यत करना है खर्च देने की एक साल तक इस हाल में के (उन को मकान से)

اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ

निकाला न जाए। फिर अगर वो खुद ही शौहर के मकान से निकल जाएं, तो तुम पर कोई गुनाह नहीं उस में

مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ

जो वो अपनी ज़ात के बारे में करें उर्फ में से। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं,

حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾ وَ لِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا

हिक्मत वाले हैं। और तलाक़ दी हुई औरतों के लिए फाइदा पहोंचाना है उर्फ के मुताबिक़। ये

عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ

मुत्तक़ियों पर लाज़िम है। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें साफ साफ बयान करते हैं

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا

ताके तुम अक़्लमन्द बन जाओ। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जो अपने

مِنْ دِيَارِهِمْ وَ هُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۨ

घरों से निकले इस हाल में के वो हज़ारों थे, (वो निकले) मौत के डर से।

فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

फिर अल्लाह ने उन से फरमाया के तुम सब मर जाओ। फिर अल्लाह ने उन सब को ज़िन्दा फरमा दिया। यक़ीनन अल्लाह

لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

इन्सानों पर एहसान वाले हैं, लेकिन अकसर लोग

لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾ وَ قَاتِلُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا

शुक्र अदा नहीं करते। और क़िताल करो अल्लाह के रास्ते में और जान लो

اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾ مَنْ ذَا الَّذِیْ يُقْرِضُ اللّٰهَ

के अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे

قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ

अच्छा क़र्ज़, फिर अल्लाह उस के लिए उस को कई गुना बढ़ाए।

وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَ يَبْصُۜطُ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٤٥﴾

और अल्लाह तंगी करते हैं और वुस्अत करते हैं। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِیْٓ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ

क्या आप ने देखा नहीं बनी इस्राईल की जमाअत की तरफ मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद

مُوْسٰىۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِیٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ

जब के उन्हों ने कहा अपने नबी से के आप हमारे लिए किसी को बादशाह बना कर हमारे साथ भेजिए ताके हम अल्लाह

وقف لازم

فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ

के रास्ते में क़िताल करें। तो नबी ने फरमाया अगर तुम पर क़िताल फर्ज़ किया जाए

عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَآ

तो ये हो सकता है के तुम क़िताल न करो? तो उन्हों ने कहा के हमें क्या हुआ के हम

اَلَّا نُقَاتِلَ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا

क़िताल न करें अल्लाह के रास्ते में हालांके हमें अपने घरों से और अपने बेटों से

وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا

निकाल दिया गया है। फिर जब उन पर क़िताल फर्ज़ किया गया तो मुकर गए

اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٤٦﴾

मगर उन में से थोड़े। और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं।

وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ

और उन लोगों से उन के नबी ने फरमाया के यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह बना कर भेजा है।

مَلِكًا ؕ قَالُوْٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَ نَحْنُ

उन्हों ने कहा के उस के लिए हम पर बादशाहत कैसे हो सकती है, हालांके हम उस की

اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ

बनिस्बत बादशाहत के ज़्यादा हक़दार हैं और उस को तो माल की वुस्अत भी नहीं दी गई।

قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً

नबी ने फरमाया के यक़ीनन अल्लाह ने उस को तुम पर मुन्तखब फरमाया है और उस के लिए इल्म और

فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ

जसामत में ज़्यादा वुस्अत दी है। और अल्लाह अपनी सलतनत देते हैं जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٧﴾ وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ

चाहते हैं। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। और उन से उन के नबी ने फरमाया

اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ

के यक़ीनन उस के बादशाह होने की निशानी ये है के तुम्हारे पास वो सन्दूक़ आ जाएगा जिस में

سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى

तुम्हारे रब की तरफ से तसकीन की चीज़ है और उन तबर्रुकात का बक़ीय्या है जिस को आले मूसा

وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ

और आले हारून ने छोड़ा, उस को फरिश्ते उठा कर लाएंगे। यक़ीनन उस में

لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٤٨﴾ فَلَمَّا فَصَلَ

निशानी है तुम्हारे लिए अगर तुम ईमान लाते हो। फिर जब तालूत लशकरों को

طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ

ले कर चले तो तालूत ने कहा के यक़ीनन अल्लाह तुम्हारा एक नहर के ज़रिए इम्तिहान लेने

بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّىْ ۚ وَمَنْ

वाले हैं। फिर जो उस नहर में से पिएगा, तो वो मुझ से नहीं है। और जो

لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّىْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً

उस को चखेगा भी नहीं तो यक़ीनन वो मुझ से है, मगर वो जो अपने हाथ से चुल्लू

بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ

उठा ले। फिर उन सब ने पिया नहर में से मगर उन में से थोड़े लोगों ने।

فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا لَا طَاقَةَ

फिर जब उस नहर को पार कर लिया तालूत ने और उन लोगों ने जो आप के साथ ईमान लाए थे, तो वो केहने लगे के आज

لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ

हमें जालूत और उस के लशकर से लड़ने की ताक़त नहीं है। तो उन लोगों ने कहा जो यक़ीन रखते थे के

اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ

हमें अल्लाह से मिलना है के बहोत सी छोटी जमाअतें बड़ी

فِئَةً كَثِيْرَةً ۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۲۴۹﴾

जमाअत पर अल्लाह के हुक्म से ग़ालिब आ गई हैं। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ

और जब वो जालूत और उस के लशकर के मुक़ाबले के लिए निकले तो दुआ करने लगे के ऐ हमारे रब! तू हम पर सब्र

عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا

उंडेल दे और हमारे क़दम जमा दे और तू हमारी नुसरत फरमा

عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۲۵۰﴾ؕ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ۫

काफिर क़ौम के खिलाफ। फिर उन्हों ने उन को अल्लाह के हुक्म से शिकस्त दी।

وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ

और दावूद (अलैहिस्सलाम) ने जालूत को क़त्ल किया और अल्लाह ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को सलतनत और हिक्मत

وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ

दी और उन्हें इल्म दिया उन चीज़ों का जो अल्लाह ने चाहा। और अगर अल्लाह का इन्सानों में से एक को

النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ

दूसरे के ज़रिए दफा करना न होता तो ज़मीन खराब हो जाती,

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۵۱﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ

लेकिन अल्लाह तमाम जहान वालों पर फ़ज़्ल वाले हैं। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन को

نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۵۲﴾

हम आप पर हक़ के साथ तिलावत करते हैं। और यक़ीनन आप भेजे हुए पैगम्बरों में से हैं।

اَلْجُزْءُ الثَّالِثُ (٣)
وقف لازم

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ م
ये ऐसे पैगम्बर हैं के उन में से बाज़ को हम ने बाज़ पर फज़ीलत दी।
مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ط وَاٰتَيْنَا
उन में से बाज़ वो हैं जिन से अल्लाह ने कलाम फरमाया और उन में से बाज़ के दरजात बुलन्द फरमाए। और हम ने
عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ط
ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) को रोशन मोअजिज़ात दिए और हम ने उन की रूहुल कुदुस के ज़रिए ताईद की।
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ
और अगर अल्लाह चाहता तो वो लोग बाहम क़िताल न करते जो उन के बाद हुए
مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا
इस के बाद के उन के पास मोअजिज़ात आए, लेकिन उन्हों ने इखतिलाफ किया।
فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
फिर उन में से कुछ वो हैं जो ईमान लाए और उन में से कुछ वो हैं जिन्हों ने कुफ्र किया। और अगर अल्लाह चाहता
مَا اقْتَتَلُوْا قف وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾ ع
तो वो आपस में क़िताल न करते। लेकिन अल्लाह करते हैं वही जो वो चाहते हैं।
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ
ऐ ईमान वालो! खर्च करो उन चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दीं इस से पेहले
اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ط
के वो दिन आ जाए जिस में न खरीद व फरोख्त होगी और न दोस्ती और न सिफारिश।
وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ
और काफिर लोग वही ज़ालिम हैं। अल्लाह के सिवा कोई
اِلَّا هُوَ ج اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ج لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ط
माबूद नहीं। वो ज़िन्दा है, सब को थामने वाला है। उस को न ऊँघ आती है और न नींद।
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ط مَنْ ذَا الَّذِيْ
उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। कौन है जो
يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ط يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
सिफारिश कर सके उस के पास मगर उस के हुक्म से। अल्लाह खूब जानता है उन चीज़ों को

٣٤ ع ٥

اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَیْءٍ
जो उन के आगे और उन के पीछे हैं। और वो अल्लाह के इल्म में से किसी एक चीज़ का भी इहाता
مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ
नहीं कर सकते मगर जितना अल्लाह चाहे। अल्लाह की कुर्सी आसमानों और ज़मीन पर वसीअ
وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ
है। और आसमान और ज़मीन की हिफाज़त करना अल्लाह को थकाता नहीं है। और वो बरतर है,
الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ لَآ اِكْرَاهَ فِی الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ
अज़मत वाला है। दीन में ज़बर्दस्ती नहीं। यक़ीनन हिदायत गुमराही
مِنَ الْغَیِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ
से अलग हो चुकी। फिर जो शैतान के साथ कुफ्र करेगा और अल्लाह पर ईमान लाएगा
فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ
तो यक़ीनन उस ने बड़े मज़बूत हलक़े को मज़बूती से थाम लिया, जिस के लिए टूटना नहीं है।
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾ اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ
और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है।
يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
अल्लाह उन्हें तारीकियों से नूर की तरफ निकालते हैं। और जो काफिर हैं
اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ
उन के दोस्त शैतान हैं। वो उन्हें नूर से ज़ुलमतों की तरफ
اِلَی الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
निकालते हैं। वही लोग दोज़खी हैं। वो उस में
خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَی الَّذِیْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ
हमेशा रहेंगे। क्या आप ने देखा नहीं उस शख्स की तरफ जिस ने हुज्जतबाज़ी की इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से
فِیْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّیَ
अपने रब के बारे में इस वजह से के अल्लाह ने उसे सलतनत दी थी। जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के
الَّذِیْ يُحْیٖ وَ يُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْیٖ وَاُمِيْتُ ؕ
मेरा रब वो है जो ज़िन्दगी देता है और मौत देता है। तो उस ने कहा के मैं भी ज़िन्दगी देता हूँ और मैं भी मौत देता

ع ٣٤ ٢

وقف لازم

قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ

हूँ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन अल्लाह सूरज को मशरिक़ से लाता है,

فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ط

तो तू उस को मग़रिब की तरफ से ले आ, फिर वो काफिर मबहूत रेह गया।

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥٨﴾ اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ

और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देते। या उस शख्स (उज़ैर अलैहिस्सलाम) की तरह जो एक बस्ती पर गुज़रे इस

عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ج قَالَ اَنّٰى

हाल में के वो अपनी छतों पर गिरी हुई थी। उस (उज़ैर अलैहिस्सलाम) ने कहा के कैसे इस बस्ती को उस के वीरान हो

يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ج فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ

जाने के बाद अल्लाह ज़िन्दा करेंगे? फिर अल्लाह ने उस शख्स (उज़ैर अलैहिस्सलाम) को मौत दे दी

عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ط قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ط قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا

सौ साल तक, फिर उन्हें ज़िन्दा कर के उठाया। अल्लाह ने पूछा के आप कितनी मुद्दत तक इस हाल में रहे? वो (उज़ैर अलैहिस्सलाम)

اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ط قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ

केहने लगे के मैं एक दिन या एक दिन से भी कम रहा। अल्लाह ने फरमाया बल्के तुम रहे पूरे सौ साल, इस

اِلٰى طَعَامِكَ وَ شَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ج وَانْظُرْ

लिए आप अपने खाने की चीज़ों को और पीने की चीज़ों को देखिए के वो सड़ी भी नहीं। और आप देखिए अपने

اِلٰى حِمَارِكَ قف وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ

दराज़गोश की तरफ। और इस लिए ताके हम आप को इन्सानों के लिए निशानी बनाएं। और आप देखिए

اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ط

हड्डियों की तरफ के हम उन्हें कैसे जोड़ते हैं, फिर उन पर गोश्त पेहनाते हैं।

فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ لا قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

फिर जब उस (उज़ैर अलैहिस्सलाम) के सामने ये वाज़ेह हो गया तो वो केहने लगे के मैं ये यक़ीन रखता हूँ के अल्लाह

قَدِيْرٌ ﴿٢٥٩﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِيْ كَيْفَ تُحْيِ

हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! आप मुझे दिखाइए

الْمَوْتٰى ط قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ط قَالَ بَلٰى وَلٰكِنْ

के आप कैसे मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे? तो अल्लाह ने पूछा क्या आप ईमान नहीं रखते? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने

لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِىْ ؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ

अर्ज़ किया क्यूं नहीं? लेकिन इस लिए ताके मेरा दिल मुतमइन हो जाए। तो अल्लाह ने फरमाया के फिर आप परिन्दों में से चार

فَصُرْهُنَّ اِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ

परिन्दे लीजिए, फिर उन को अपनी तरफ मानूस कर लीजिए, फिर हर पहाड़ पर उन का एक एक हिस्सा

جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَاْتِيْنَكَ سَعْيًا ؕ وَاعْلَمْ

रख दीजिए, फिर आप उन को बुलाइए, तो वो आप के पास तेज़ चलते हुए आएंगे। और जान लो के

اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। उन लोगों का हाल जो अपने माल अल्लाह के

اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ

रास्ते में खर्च करते हैं एक दाने की तरह है जिस ने सात खोशे

سَنَابِلَ فِىْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ

उगाए, हर एक खोशे में सौ दाने हैं। और अल्लाह कई गुना करते हैं

لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦١﴾ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

जिस के लिए चाहते हैं। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। जो लोग अपने माल को

اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا

अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर अपने खर्च करने के पीछे वो नहीं लाते

مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ

एहसान जतलाने को और न ईज़ा पहोंचाने को, तो उन के लिए उन का अज्र है उन के रब के पास।

وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ

और न उन पर खौफ होगा और न वो गमगीन होंगे। भली बात केहना

وَّ مَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ؕ

और मुआफ कर देना बेहतर है ऐसे सदक़े से जिस के पीछे ईज़ा पहोंचाना हो।

وَاللّٰهُ غَنِىٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا

और अल्लाह बेनियाज़ है, हिल्म वाला है। ऐ ईमान वालो! तुम अपने सदक़ात एहसान

صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِىْ يُنْفِقُ

जतला कर के और ईज़ा पहोंचा कर बातिल मत करो, उस शख्स की तरह जो अपना माल

مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِؕ

खर्च करता है लोगों के दिखावे के लिए और जो ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और आखिरी दिन पर।

فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ

फिर उस शख्स का हाल उस चटान की तरह है जिस पर मिट्टी हो, फिर उसे तेज़

وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًاؕ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَیْءٍ

बारिश पहोंचे, फिर उसे साफ कर छोड़े। वो अपनी कमाई में से किसी चीज़ पर क़ादिर

مِّمَّا كَسَبُوْاؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦٤﴾

नहीं होंगे। और अल्लाह काफिर लोगों को हिदायत नहीं देते।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ

और उन लोगों का हाल जो अपने मालों को खर्च करते हैं अल्लाह की रज़ा तलब

اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ

करने के लिए और अपनी तरफ से अमली सुबूत पेश करते हुए उस बाग़ की तरह है जो टीले पर हो,

اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِۚ فَاِنْ

जिस को ज़ोर की बारिश पहोंची हो, फिर वो अपने फल दुगने पैदा करता हो। फिर अगर

لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾

उसे ज़्यादा बारिश न पहोंचे, तो फिर थोड़ी बारिश भी काफी हो जाए। और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं।

اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ

क्या तुम में से कोई एक चाहेगा ये के उस के लिए खजूर और अंगूर का एक

وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۙ لَهٗ فِيْهَا

बाग़ हो, जिस के नीचे से नेहरें बेहती हों, उस के लिए उस बाग़ में

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ

तमाम फल हों और उसे बुढ़ापा पहोंच चुका हो और उस की कमज़ोर

ضُعَفَآءُ ۖۚ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْؕ

औलाद हो। फिर उस बाग़ पर एक बगोला आए जिस में आग हो, फिर वो बाग़ जल जाए।

٣٦ ع

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾ ع

इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें बयान करते हैं ताके तुम गौर व फिक्र करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ
ऐ ईमान वालो! तुम खर्च करो उन उम्दा चीज़ों में से जो तुम ने कमाई हैं
وَمِمَّآ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۠ وَلَا تَيَمَّمُوا
और उन चीज़ों में से जो हम ने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली हैं। और तुम उस में से
الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّآ
बुरी चीज़ का क़स्द मत करो खर्च करने के लिए और खुद तुम भी उस को नहीं लोगे मगर
اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾
ये के तुम उस में चश्मपोशी करो। और जान लो के अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है।
اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ
शैतान तुम्हें फक्र से डराता है और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है।
وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَ فَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ
और अल्लाह अपनी तरफ से मग़फिरत और फ़ज़्ल का तुम से वादा करता है। और अल्लाह
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾ يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ
वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। अल्लाह हिक्मत देते हैं जिसे चाहते हैं। और जिसे
يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ
हिक्मत दी गई, उसे बड़ी भलाई दी गई।
وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ
और नसीहत हासिल नहीं करते मगर अक़्ल वाले। और जो खर्च
مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ
तुम करो या जो नज़र तुम मानो तो यक़ीनन अल्लाह
يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾ اِنْ تُبْدُوا
उसे जानते हैं। और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं होगा। अगर तुम सदक़ात
الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا
अलानिया दो तो ये अच्छी बात है। और अगर तुम उन को छुपा कर फुक़रा को
الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ
दो तो ये तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है। और अल्लाह तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर

سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾ لَيْسَ

कर देगा। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। आप के

عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

ज़िम्मे नहीं है उन को हिदायत देना, लेकिन अल्लाह हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ

और जो माल तुम खर्च करो तो वो तुम्हारे अपने ही लिए है। और तुम खर्च नहीं करते हो

اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ

मगर अल्लाह की रज़ा तलब करने के लिए। और जो माल खर्च करोगे

يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾ لِلْفُقَرَآءِ

तो वो तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम से कमी नहीं की जाएगी। (सदक़ात) उन फुक़रा के लिए हैं

الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

जो अल्लाह के रास्ते में घिरे रेहते हैं, जो ज़मीन में सफर करने की

ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ ز يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ

ताक़त नहीं रखते, नावाक़िफ आदमी उन को न मांगने की वजह से मालदार

مِنَ التَّعَفُّفِ ج تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ج لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ

समझता है। आप उन के चेहरे से उन को पेहचान लोगे। वो लोगों से इसरार से सवाल

اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٣﴾ ع

नहीं करते। और जो माल तुम खर्च करोगे तो यक़ीनन अल्लाह उसे जानते हैं।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا

जो लोग अपने मालों को खर्च करते हैं रात में और दिन में चुपके

وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ج وَلَا خَوْفٌ

और अलानिया तो उन के लिए उन के रब के पास उन का अज्र है। और उन पर न खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٤﴾ اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। वो लोग जो सूद

الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِىْ يَتَخَبَّطُهُ

खाते हैं वो (क़ब्रों से) नहीं उठेंगे मगर ऐसा जैसा के उठता है वो शख्स जिसे शैतान

وقف منزل

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا

ने छू कर के खबती बना दिया हो। ये इस वजह से के उन्हों ने कहा के

اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ

बैअ तो सूद ही की तरह है। हालांके अल्लाह ने बैअ को हलाल किया है और सूद को हराम क़रार दिया है।

وقف لازم

فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ

फिर जिस शख्स के पास उस के रब की तरफ से नसीहत आए, फिर वो रूक जाए तो उस के लिए वो है

مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ

जो पेहले हो चुका है। और उस का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द है। और जो दोबारा ऐसा करेगा तो ये

اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا

लोग दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। अल्लाह सूद को मिटाते हैं

وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾

और सदक़ात को बढ़ाते हैं। और अल्लाह किसी गुनहगार काफिर से महब्बत नहीं करते।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ

यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और नमाज़ क़ाइम की

وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ

और ज़कात दी, उन के लिए उन का अज्र है उन के रब के पास। और न उन पर खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। ऐ ईमान वालो!

اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِىَ مِنَ الرِّبٰٓوا اِنْ كُنْتُمْ

अल्लाह से डरो और छोड़ दो उस सूद को जो बाक़ी रेह गया है अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ

ईमान वाले हो। फिर अगर ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से

مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ

ऐलाने जंग है। और अगर तुम तौबा करो तो तुम्हारे लिए तुम्हारे अस्ल माल हैं।

لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾ وَاِنْ كَانَ ذُوْ

न तुम ज़ुल्म करोगे और न तुम पर ज़ुल्म किया जाएगा। और अगर वो कर्ज़ लेने वाला

عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ

तंगदस्त हो तो उसे वुस्अत हासिल होने तक मोहलत दी जाए। और ये के मुआफ कर दो तो ये तुम्हारे लिए

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ

ज़्यादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। और तुम डरो उस दिन से जिस दिन में तुम

فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ

अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे। फिर हर शख्स को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा उन आमाल का जो उस ने किए,

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। ऐ ईमान वालो!

اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ

जब तुम आपस में कर्ज़ का लेन देन करो किसी वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए, तो उस को लिख लिया करो।

وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ ۪ وَلَا يَاْبَ

और चाहिए के तुम्हारे दरमियान लिखने वाला इन्साफ से लिखे। और लिखने वाला इन्कार

كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ

न करे लिखने से जैसा के अल्लाह ने उस को इल्म दिया है, तो उसे चाहिए के लिखे। और लिखवाए वो शख्स

الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ

जिस के ज़िम्मे हक़ है और चाहिए के वो अल्लाह से डरे जो उस का रब है और वो उस में से कुछ भी कम

مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا

न करे। फिर अगर वो शख्स जिस के ज़िम्मे हक़ है वो बेवक़ूफ हो

اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ

या कमज़ोर हो या लिखवा न सकता हो तो लिखवाए

وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ

उस का वली इन्साफ से। और तुम अपने मर्दों में से दो गवाह

مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ

बना लो। फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें होनी

مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا

चाहिएं उन गवाहों में से जिन को तुम पसन्द करते हो, इस वजह से के उन दो औरतों में से एक भूल

فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ

जाए तो उन में से एक दूसरी को याद दिलाए। और गवाह इन्कार न करें

اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا

जब उन्हें बुलाया जाए। और न उकताओ इस से के तुम उस को लिखो, चाहे छोटी रक़म हो या बड़ी,

اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ

उस की मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिए। ये ज़्यादा इन्साफ वाला है अल्लाह के नज़दीक और गवाही को ज़्यादा सीधा रखने वाला है

وَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً

और इस के ज़्यादा क़रीब है के तुम शक न करो, मगर ये के वो मौजूद (नक़द, कैश)

حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ

तिजारत हो जिस का तुम आपस में लेन देन करते हो, तो तुम पर कोई गुनाह

جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ص

नहीं है के तुम उस को न लिखो। और तुम गवाह बना लो जब तुम आपस में खरीद व फरोख्त करो।

وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ وَاِنْ تَفْعَلُوْا

और लिखने वाले को और गवाह को ज़रर न पहोंचाया जाए। और अगर तुम ऐसा करोगे

فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ

तो ये तुम्हारे वास्ते गुनाह है। और अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें तालीम देते हैं।

وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ

और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। और अगर तुम सफर पर हो

وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ اَمِنَ

और किसी लिखने वाले को न पाओ, तो फिर रहन है जिस पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए। फिर अगर तुम में से एक दूसरे का

بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ

ऐतेबार करे, तो चाहिए के अमानत अदा कर दे वो शख्स जिस के पास अमानत रखी गई

وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا

और चाहिए के वो अल्लाह से डरे जो उस का रब है। और तुम गवाही को मत छुपाओ। और जो उस को छुपाएगा

فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾ ع ٣٩

तो यक़ीनन उस का दिल गुनहगार है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल खूब जानते हैं।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ تُبْدُوْا
अल्लाह की ममलूक हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। और अगर ज़ाहिर करो

مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ
उन बातों को जो तुम्हारे दिलों में हैं या तुम उन को छुपाओ तब भी अल्लाह तुम से उन का मुहासबा करेगा।

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
फिर बख्श देगा जिस के लिए चाहेगा और अज़ाब देगा जिसे चाहेगा। और अल्लाह

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ
हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। रसूल ईमान ले आए उस पर जो उन की तरफ उतारा गया

اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
उन के रब की तरफ से और ईमान ले आए ईमान वाले भी। सब के सब ईमान ले आए अल्लाह पर

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ
और उस के फरिश्तों और उस की किताबों और उस के पैगम्बरों पर। (वो केहते हैं के) उस के पैगम्बरों में से किसी

مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ
के दरमियान हम तफरीक़ नहीं करते। और वो केहते हैं के हम ने सुना और हम ने खुशी से मान लिया।

رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا
ऐ हमारे रब! तू हमारी मग़फिरत कर दे और तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाते मगर

اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ
उस की वुस्अत के मुताबिक़। उस के लिए वो आमाल हैं जो उस ने किए और उस के ज़िम्मे वो गुनाह पड़ेंगे जो उस ने

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا
कमाए। ऐ हमारे रब! तू हमारा मुआखज़ा मत कर अगर हम भूल जाएं या हम चूक जाएं। ऐ हमारे रब!

وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
और तू हम पर न लाद बोझ जैसा के तू ने उस को लादा उन लोगों पर जो

مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ
हम से पेहले थे। ऐ हमारे रब! और तू हम पर न लाद उस को जिस की हम में ताक़त नहीं।

وَاعْفُ عَنَّا ۥ وقفة وَاغْفِرْ لَنَا ۥ وقفة وَارْحَمْنَا ۥ وقفة اَنْتَ مَوْلٰنَا
और तू हमें मुआफ कर दे। और हमें बख्श दे। और हम पर रहम फरमा। तू हमारा मौला है,

فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾

तू काफिर कौम के खिलाफ हमारी नुसरत फरमा।

اٰيَاتُهَا ٢٠٠ (٣) سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ (٨٩) رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

उस में २०० आयतें हैं सूरह आले इमरान मदीना में नाज़िल हुई और २० रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ

अलिफ लाम मीम। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़िन्दा है, सब को थामने वाला है। उस ने आप पर

عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ

ये बरहक़ किताब उतारी जो सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को जो इस से पेहले थीं,

وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَ الْاِنْجِيْلَ ﴿٣﴾ مِنْ قَبْلُ هُدًى

और उस ने तौरात और इन्जील इन्सानों की हिदायत के लिए इस से पेहले उतारी। और उसी ने हक़ और बातिल

لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۬ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ

के दरमियान फैसला करने वाली किताब (कुरआन) नाज़िल की। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया अल्लाह की

اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُوانْتِقَامٍ ﴿٤﴾

आयात के साथ, उन के लिए सख्त अज़ाब है। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, इन्तिक़ाम लेने वाला है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا

यक़ीनन अल्लाह पर कोई चीज़ मखफी नहीं है, न ज़मीन में और न

فِي السَّمَآءِ ﴿٥﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ

आसमान में। वही तुम्हारी सूरतें बनाता है बच्चेदानियों में जिस तरह

يَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦﴾ هُوَ

वो चाहता है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़बर्दस्त है, हिकमत वाला है। उसी ने

الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ

आप पर ये किताब उतारी, इस में से कुछ आयतें मुहकम (इश्तिबाहे मुराद से महफूज़) हैं,

هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

वही अस्ल किताब हैं, और दूसरी आयतें मुतशाबिहात हैं। फिर अलबत्ता वो लोग

وَقْفُ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ

فِیْ قُلُوْبِہِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَہَ مِنْہُ ابْتِغَآءَ

जिन के दिलों में कजी है वो उस में से मुतशाबिहात के पीछे पड़ते हैं फितनातलबी

الْفِتْنَۃِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِہٖ ۚ وَمَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَہٗۤ

की गर्ज़ से और उन का मतलब मालूम करने के लिए। हालांके उन का मतलब सिवाए अल्लाह के कोई

وقف لازم
وقف منزل

اِلَّا اللّٰہُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِہٖ ۙ کُلٌّ

नहीं जानता। और जो इल्म (दीन) में मज़बूत हैं वो केहते हैं के हम सब पर ईमान ले आए, ये सब की सब

مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا یَذَّکَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۷﴾

आयतें हमारे रब की तरफ से हैं। और नसीहत हासिल नहीं करते मगर अक़्ल वाले।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ ہَدَیْتَنَا وَہَبْ

ऐ हमारे रब! तू हमारे दिलों को टेढ़ा मत कर इस के बाद के तू ने हमें हिदायत दी और तू

لَنَا مِنْ لَّدُنْکَ رَحْمَۃً ۚ اِنَّکَ اَنْتَ الْوَہَّابُ ﴿۸﴾

हमारे लिए अपनी तरफ से रहमत अता फरमा। यक़ीनन तू बहोत अता करने वाला है।

رَبَّنَاۤ اِنَّکَ جَامِعُ النَّاسِ لِیَوْمٍ لَّا رَیْبَ فِیْہِ ؕ

ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू इन्सानों को जमा करने वाला है ऐसे दिन में जिस में कोई शक नहीं।

ع

اِنَّ اللّٰہَ لَا یُخْلِفُ الْمِیْعَادَ ﴿۹﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا

यक़ीनन अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करेंगे। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया

لَنْ تُغْنِیَ عَنْہُمْ اَمْوَالُہُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُہُمْ مِّنَ اللّٰہِ

बिलकुल उन के काम नहीं आएंगे न उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह के मुक़ाबले में

شَیْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِکَ ہُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ﴿۱۰﴾ کَدَاْبِ اٰلِ

ज़रा भी। और यही लोग आग का ईंधन हैं। उन का हाल आले फिरऔन के

فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِہِمْ ؕ کَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا ۚ

हाल की तरह है और उन लोगों के हाल की तरह है जो उन से पेहले थे, जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया।

فَاَخَذَہُمُ اللّٰہُ بِذُنُوْبِہِمْ ؕ وَاللّٰہُ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۱﴾

फिर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। और अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं।

قُلْ لِّلَّذِیْنَ کَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَ تُحْشَرُوْنَ اِلٰی

आप काफिरों से फरमा दीजिए के अन्क़रीब तुम मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ तुम इकट्ठे

جَهَنَّمَ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ۝١٢ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ

किए जाओगे। और वो बुरा ठिकाना है। यक़ीनन तुम्हारे लिए दो लशकरों में

فِىْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

बहोत बड़ा मोअजिज़ा था जो बाहम मुक़ाबिल हुए थे। एक लशकर तो क़िताल कर रहा था अल्लाह के रास्ते में

وَ اُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْىَ الْعَيْنِ ؕ

और दूसरा लशकर काफिर था। ये काफिर लशकर उन मुसलमानों को अपने से दुगना देख रहा था खुली आँखों से।

وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً

और अल्लाह अपनी नुसरत से मदद करते हैं जिस की चाहते हैं। यक़ीनन इस में इबरत है

لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ۝١٣ زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ

आँखों वालों के लिए। इन्सानों के लिए मुज़य्यन की गई मरगूब चीज़ों की महब्बत

مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ

यानी औरतें और बेटे और ढेर लगाए हुए

مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ

सौने और चाँदी और निशान लगाए हुए घोड़े

وَ الْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

और चौपाए और खेती। ये दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान है।

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ۝١٤ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ

और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। आप फरमा दीजिए क्या मैं तुम्हें

بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ

खबर दूं इस से बेहतर चीज़ की? उन लोगों के लिए जो मुत्तक़ी हैं (उन के लिए) अपने रब के पास

جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

जन्नतें होंगी जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, वो उन में हमेशा रहेंगे,

وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ

और साफ सुथरी बीवियाँ होंगी और अल्लाह की तरफ से खुशनूदी मिलेगी। और अल्लाह

بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝١٥ ۚ اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا

बन्दों को देख रहे हैं। वो लोग जो केहते हैं के ऐ हमारे रब! यक़ीनन हम ईमान ले आए

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾ اَلصّٰبِرِيْنَ

तो हमारे लिए हमारे गुनाहों की मग़फिरत कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा ले। जो सब्र करने वाले

وَ الصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ

और सच बोलने वाले और फरमांबरदारी करने वाले और खर्च करने वाले और सहर के वक़्त मग़फिरत तलब

بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

करने वाले हैं। अल्लाह गवाही देते हैं इस बात की के उस के सिवा कोई माबूद नहीं

وَ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ط لَآ اِلٰهَ

और फरिश्ते भी गवाही देते हैं और इल्म वाले भी गवाही देते हैं, (इस हाल में के) अल्लाह इन्साफ के

اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ

साथ क़ाइम हैं। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। यक़ीनन दीन तो अल्लाह के नज़दीक

وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْ بَعْدِ

सिर्फ इस्लाम ही है। और इखतिलाफ नहीं किया उन लोगों ने जिन को किताब दी गई मगर इस के बाद के

مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ط وَ مَنْ يَّكْفُرْ

उन के पास इल्म आया आपस की ज़िद की वजह से। और जो भी अल्लाह की आयतों

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾

के साथ कुफ्र करेगा तो यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं।

فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ط

फिर अगर वो आप से हुज्जतबाज़ी करें तो आप फरमा दीजिए के मैं ने तो अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ कर लिया है और उन्हों ने भी जिन्हों ने

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ الْاُمِّيّٖنَ ءَ اَسْلَمْتُمْ ط

मेरा इत्तिबा किया। और आप एहले किताब से और अनपढ़ लोगों (मुशरिकीने अरब) से फरमा दीजिए के क्या तुम इस्लाम लाते हो?

فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ج وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا

फिर अगर वो इस्लाम ले आएं तो वो हिदायतयाफता होंगे। और अगर वो मुंह मोड़ें तो आप के ज़िम्मे

عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ط وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾ اِنَّ

सिर्फ पहोंचा देना है। और अल्लाह बन्दों को देख रहे हैं। यक़ीनन

الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ

वो लोग जो कुफ्र करते हैं अल्लाह की आयात के साथ और अम्बिया को नाहक़

بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ

क़त्ल करते हैं और उन को भी क़त्ल करते हैं जो लोगों में से इन्साफ

مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۲۱﴾ اُولٰٓئِكَ

का हुक्म करते हैं, तो आप उन को दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी सुना दीजिए। ये वो लोग हैं

الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ز

जिन के आमाल ज़ायेअ हो गए दुन्या और आखिरत में

وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۲﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا

और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन को

مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

किताब का एक हिस्सा दिया गया, उन को बुलाया जाता है अल्लाह की किताब की तरफ ताके उन के दरमियान वो फैसला करे,

ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۳﴾

फिर उन में से एक जमाअत ऐराज़ करते हुए रूगरदानी करती है।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا

ये इस वजह से के उन्हों ने कहा के हमें आग हरगिज़ नहीं छुएगी मगर चन्द गिने

مَّعْدُوْدٰتٍ ص وَّ غَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا

चुने दिन। और उन को धोके में डाल रखा है उन के दीन के बारे में उन चीज़ों ने

يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ

जिन को वो खुद घड़ते हैं। फिर क्या हाल होगा जब हम उन को जमा करेंगे ऐसे दिन में जिस में

فِيْهِ قف وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا

शक नहीं। और हर शख्स को पूरा पूरा बदला दिया जाएगा उस अमल का जो उस ने किया और उन पर ज़ुल्म

يُظْلَمُوْنَ ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ

नहीं किया जाएगा। आप फरमा दीजिए के ऐ अल्लाह! सलतनत के मालिक! तू सलतनत देता है

مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ز وَتُعِزُّ

जिसे चाहता है और सलतनत छीनता है जिस से चाहता है। और तू इज़्ज़त देता है

مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ

जिसे चाहता है और तू ज़िल्लत देता है जिसे चाहता है। तेरे ही हाथ में भलाई है। यक़ीनन तू

عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿٢٦﴾ تُوۡلِجُ الَّیۡلَ فِی النَّهَارِ
हर चीज़ पर कुदरत वाला है। तू रात को दिन में दाखिल करता है
وَ تُوۡلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیۡلِ ۫ وَ تُخۡرِجُ الۡحَیَّ مِنَ الۡمَیِّتِ
और दिन को रात में दाखिल करता है। और ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है
وَ تُخۡرِجُ الۡمَیِّتَ مِنَ الۡحَیِّ ۫ وَ تَرۡزُقُ مَنۡ تَشَآءُ
और मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है। और तू जिसे चाहता है, बेहिसाब
بِغَیۡرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا یَتَّخِذِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ الۡکٰفِرِیۡنَ
रोज़ी देता है। ईमान वाले काफिरों को दोस्त
اَوۡلِیَآءَ مِنۡ دُوۡنِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ۚ وَمَنۡ یَّفۡعَلۡ ذٰلِکَ
न बनाएं ईमान वालों को छोड़ कर। और जो ऐसा करेगा,
فَلَیۡسَ مِنَ اللّٰهِ فِیۡ شَیۡءٍ اِلَّاۤ اَنۡ تَتَّقُوۡا مِنۡهُمۡ
उस का अल्लाह से किसी भी चीज़ का तअल्लुक़ नहीं है मगर ये के तुम कुफ्फार से किसी तरह
تُقٰىةً ؕ وَیُحَذِّرُکُمُ اللّٰهُ نَفۡسَهٗ ؕ وَاِلَی اللّٰهِ الۡمَصِیۡرُ ﴿٢٨﴾
बचना चाहो। और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराते हैं। और अल्लाह ही की तरफ लौटना है।
قُلۡ اِنۡ تُخۡفُوۡا مَا فِیۡ صُدُوۡرِکُمۡ اَوۡ تُبۡدُوۡهُ یَعۡلَمۡهُ
आप फरमा दीजिए अगर तुम छुपाओ उन चीज़ों को जो तुम्हारे सीनों में हैं या तुम उन को ज़ाहिर करो, तब भी अल्लाह
اللّٰهُ ؕ وَیَعۡلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ
उन्हें जानते हैं। और अल्लाह जानते हैं उन तमाम चीज़ों को जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।
وَاللّٰهُ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿٢٩﴾ یَوۡمَ تَجِدُ کُلُّ
और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। जिस दिन हर शख्स उन आमाल को
نَفۡسٍ مَّا عَمِلَتۡ مِنۡ خَیۡرٍ مُّحۡضَرًا ۚۖۛ وَّمَا عَمِلَتۡ
जो उस ने खैर में से किए हाज़िर पाएगा और अपने किए हुए बुरे आमाल को भी
مِنۡ سُوۡٓءٍ ۚۛ تَوَدُّ لَوۡ اَنَّ بَیۡنَهَا وَ بَیۡنَهٗۤ اَمَدًۢا بَعِیۡدًا ؕ
हाज़िर पाएगा, तो वो चाहेगा के काश के उस के दरमियान और उस दिन के दरमियान बड़ी दूर की मसाफत होती।
وَیُحَذِّرُکُمُ اللّٰهُ نَفۡسَهٗ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ﴿٣٠﴾
और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराते हैं। और अल्लाह बन्दों पर बहोत महरबान हैं।

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

आप फरमा दीजिए अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो, तो मेरा इत्तिबा करो, तो अल्लाह तुम्हें महबूब बना लेगा

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

और तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा। और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

आप फरमा दीजिए तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर वो मुंह फेर लें तो यक़ीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ

काफिरों से महब्बत नहीं करते। यक़ीनन अल्लाह ने मुन्तखब किया आदम (अलैहिस्सलाम) को

وَ نُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾ۙ

और नूह (अलैहिस्सलाम) और आले इब्राहीम और आले इमरान को तमाम जहानों (जहान वालों) पर।

ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ۚ

जो एक दूसरे की औलाद हैं। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं।

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ

जब के इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब! मैं ने आप की नज़र कर दिया

مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

आज़ाद बना कर इस बच्चे को जो मेरे पेट में है, तो आप इसे मेरी तरफ से क़बूल कर लीजिए। यक़ीनन आप

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ

सुनने वाले, इल्म वाले हैं। फिर जब इमरान की बीवी ने उस को जना तो केहने लगी ऐ मेरे रब!

اِنِّيْ وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ

मैं ने तो इस को लड़की जना। हालांके अल्लाह खूब जानता है उस को जो उस ने जना। और

الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ

लड़का इस लड़की के बराबर नहीं हो सकता। और मैं ने उस का नाम मरयम रखा

وَاِنِّيْۤ اُعِيْذُهَا بِكَ وَ ذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾

और मैं उसे और उस की औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूँ।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّ اَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا

फिर उन के रब ने उन को कबूल किया अच्छा कबूल करना और मरयम को बढ़ाया अच्छी तरह

حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا

बढ़ाना। और मरयम (अलैहस्सलाम) की कफालत की ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने। जब कभी मरयम (अलैहस्सलाम) के पास दाखिल

الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى

होते ज़करीया (अलैहिस्सलाम) मेहराब में, तो मरयम (अलैहस्सलाम) के पास खाने की चीज़ें पाते। पूछते ऐ मरयम!

لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ

कहां से तेरे पास ये चीज़ें आईं? तो मरयम (अलैहस्सलाम) केहतीं के ये अल्लाह की तरफ से है। यक़ीनन अल्लाह बेहिसाब

مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۷﴾ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا

रोज़ी देते हैं जिसे चाहते हैं। वहीं पर ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब से

رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً

दुआ की। केहने लगे ऐ मेरे रब! तू मुझे अपनी तरफ से पाकीज़ा औलाद अता

طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ

फरमा। यक़ीनन तू दुआ को सुनने वाला है। तो उन को फरिश्तों ने आवाज़ दी

وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ

जब के वो खड़े हुए मेहराब में नमाज़ पढ़ रहे थे के अल्लाह आप को बशारत देते हैं

بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا ۢ بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا

यहया की जो तसदीक़ करने वाले होंगे अल्लाह के कलिमे की और सय्यद होंगे और औरतों से बेरग़बत पाकदामन

وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۳۹﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ

होंगे और नबी होंगे, नेक लोगों में से होंगे। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब!

لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ

मेरे लिए लड़का कहां से होगा? हालांके मुझे बुढ़ापा पहोंच चुका है और मेरी बीवी बांझ है।

قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿۴۰﴾ قَالَ رَبِّ

अल्लाह ने फरमाया इसी तरह अल्लाह करते हैं जो चाहते हैं। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब!

اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर कर दीजिए। अल्लाह ने फरमाया के तुम्हारी निशानी ये है के तुम इन्सानों से कलाम नहीं

ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّ

करोगे तीन दिन तक मगर इशारे से। और आप अपने रब को बहोत ज़्यादा याद कीजिए और

سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ
सुब्ह व शाम तस्बीह कीजिए। और जब के फरिश्तों ने कहा

يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ
ऐ मरयम! यक़ीनन अल्लाह ने तुझ को मुन्तखब किया है और तुझ को पाकबाज़ बनाया है और तुझ को

عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ
तमाम जहान की औरतों पर मुन्तखब किया है। ऐ मरयम! तू अपने रब की इबादत कर

وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ
और सजदा कर और रूकूअ करने वालों के साथ रूकूअ कर। ये

مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ
ग़ैब की खबरों में से है, हम इस को आप की तरफ वही करते हैं। और आप उन के पास मौजूद नहीं थे

اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪
जब वो अपने क़लम (नेहर में) डाल रहे थे के कौन मरयम की कफालत करेगा?

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ
और आप उन के पास नहीं थे जब वो झगड़ रहे थे। जब फरिश्तों ने कहा

يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ ق
ऐ मरयम! यक़ीनन अल्लाह तुम को बशारत देते हैं अपनी तरफ से कलिमे की

اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا
जिस का नाम मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा, जो वजाहत वाले होंगे

فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَيُكَلِّمُ
दुन्या और आखिरत में और मुक़र्रबीन में से होंगे। और वो इन्सानों से

النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾
कलाम करेंगे गेहवारे में और बड़े हो कर के और सुलहा में से होंगे।

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ؕ
मरयम (अलैहस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे औलाद कहां से होगी, हालांके मुझे किसी इन्सान ने छुवा नहीं है।

قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى
तो अल्लाह ने फरमाया इसी तरह अल्लाह पैदा करते हैं जो चाहते हैं। जब वो किसी काम

اَمۡرًا فَاِنَّمَا يَقُوۡلُ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ﴿۴۷﴾ وَيُعَلِّمُهُ
का फैसला करते हैं तो उस से केहते हैं के "कुन" हो जा, तो वो हो जाता है। और उस को अल्लाह
الۡكِتٰبَ وَالۡحِكۡمَةَ وَالتَّوۡرٰىةَ وَالۡاِنۡجِيۡلَ ﴿۴۸﴾ وَرَسُوۡلًا
किताब व हिकमत और तौरात और इन्जील की तालीम देंगे। और बनी इस्राईल की तरफ
اِلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ۙ اَنِّىۡ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِاٰيَةٍ
रसूल बना कर भेजेंगे। (वो कहेंगे के) यक़ीनन मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से मोअजिज़ा
مِّنۡ رَّبِّكُمۡ ۙ اَنِّىۡۤ اَخۡلُقُ لَكُمۡ مِّنَ الطِّيۡنِ كَهَیۡـــَٔةِ
ले कर आया हूँ। ये के मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिन्दे की शक्ल की तरह बनाता
الطَّيۡرِ فَاَنۡفُخُ فِيۡهِ فَيَكُوۡنُ طَيۡرًاۢ بِاِذۡنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبۡرِئُ
हूँ, फिर मैं उस में फूंक मारता हूँ, तो वो अल्लाह के हुक्म से (जानदार) परिन्दा बन जाता है। और
الۡاَكۡمَهَ وَالۡاَبۡرَصَ وَاُحۡىِ الۡمَوۡتٰى بِاِذۡنِ اللّٰهِ ۚ
मैं अच्छा करता हूँ अन्धे को और बर्स वाले को और मैं मुर्दों को ज़िन्दा करता हूँ अल्लाह के हुक्म से।
وَاُنَبِّئُكُمۡ بِمَا تَاۡكُلُوۡنَ وَمَا تَدَّخِرُوۡنَ ۙ
और मैं तुम्हें बतला देता हूँ वो चीज़ें जो तुम खा कर आते हो और वो चीज़ें जो तुम अपने घरों में
فِىۡ بُيُوۡتِكُمۡ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ
ज़खीरा कर के आते हो। यक़ीनन इस में निशानी है तुम्हारे लिए अगर तुम
مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۴۹﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَىَّ
ईमान लाते हो। और मैं तसदीक़ करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से
مِنَ التَّوۡرٰٮةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمۡ بَعۡضَ الَّذِىۡ حُرِّمَ عَلَيۡكُمۡ
पेहले थी और ताके मैं तुम्हारे लिए हलाल कर दूँ उन बाज़ चीज़ों को जो तुम पर हराम की गईं
وَجِئۡتُكُمۡ بِاٰيَةٍ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से मोअजिज़ा ले कर आया हूँ। फिर अल्लाह से डरो
وَ اَطِيۡعُوۡنِ ﴿۵۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ رَبِّىۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ
और मेरा केहना मानो। यक़ीनन अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, तो तुम उसी की इबादत करो।
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿۵۱﴾ فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِيۡسٰى مِنۡهُمُ
ये सीधा रास्ता है। फिर जब ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उन की तरफ से कुफ्र

الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ

महसूस किया तो फरमाया कौन मेरे मददगार हैं अल्लाह की तरफ? हवारीयीन केहने लगे

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿۵۲﴾

हम अल्लाह के (दीन के) मददगार हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं। और आप गवाह रहिए के यक़ीनन हम मुसलमान हैं।

رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا بِمَاۤ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए हैं उस पर जो आप ने उतारा और हम ने रसूल का इत्तिबा किया, तो आप

مَعَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۵۳﴾ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَیْرُ

हमें गवाही देने वालों के साथ लिख लीजिए। और उन कुफ्फार ने तदबीर की और अल्लाह ने भी तदबीर की। और अल्लाह

الْمٰكِرِیْنَ ﴿۵۴﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ یٰعِیْسٰۤی اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ

बेहतरीन तदबीर करने वाले हैं। जब के अल्लाह ने फरमाया के ऐ ईसा! मैं आप को पूरा पूरा लेने वाला हूँ (जिस्म

وَ رَافِعُكَ اِلَیَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا

व रूह समेत उठाने वाला हूँ) और आप को उठाने वाला हूँ अपने पास और आप को पाक करने वाला हूँ उन

وَ جَاعِلُ الَّذِیْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا

लोगों से जिन्हों ने कुफ्र किया और क़यामत के दिन तक आप के मुत्तबिईन को काफिरों के

اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ

ऊपर रखूंगा। फिर मेरी तरफ तुम्हें लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान

بَیْنَكُمْ فِیْمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۵۵﴾

फेसला करूंगा उस में जिस में तुम इखतिलाफ कर रहे थे।

فَاَمَّا الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِیْدًا

फिर अलबत्ता वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया, मैं उन्हें सख्त अज़ाब दूंगा

فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ ؗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۵۶﴾

दुन्या और आखिरत में। और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा।

وَ اَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَیُوَفِّیْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ

और अलबत्ता वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे तो अल्लाह उन को उन का पूरा पूरा सवाब देंगे।

وَاللّٰهُ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۷﴾ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَیْكَ

और अल्लाह ज़ालिमों से महब्बत नहीं करते। ये हम आप के सामने आयात की

مِنَ الْاٰیٰتِ وَ الذِّكْرِ الْحَكِیْمِ ﴿٥٨﴾ اِنَّ مَثَلَ عِیْسٰی

और मुहकम ज़िक्र की तिलावत करते हैं। यक़ीनन ईसा (अलैहिस्सलाम) का हाल

عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ

अल्लाह के नज़दीक आदम (अलैहिस्सलाम) के हाल की तरह है। जिन को अल्लाह ने मिट्टी से पैदा किया, फिर उन से

لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿٥٩﴾ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ

फरमाया के हो जा, तो वो हो गए। ये हक़ है आप के रब की तरफ से इस लिए आप शक करने वालों में

مِّنَ الْمُمْتَرِیْنَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَآجَّكَ فِیْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ

से न हों। फिर जो भी आप से हुज्जतबाज़ी करे ईसा (अलैहिस्सलाम) के बारे में इस के बाद के आप

مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَ اَبْنَآءَكُمْ

के पास इल्म आया, तो आप केह दीजिए के तुम आओ, हम बुलाते हैं हमारे बेटों को और तुम्हारे बेटों को और हमारी

وَ نِسَآءَنَا وَ نِسَآءَكُمْ وَ اَنْفُسَنَا وَ اَنْفُسَكُمْ قف

औरतों को और तुम्हारी औरतों को और अपनी जानों को और तुम्हारी जानों को।

ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَی الْكٰذِبِیْنَ ﴿٦١﴾

फिर हम मुबाहला करें, फिर हम झूठों पर अल्लाह की लानत करें।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ج وَمَا مِنْ اِلٰهٍ

यक़ीनन ये सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई माबूद

اِلَّا اللّٰهُؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿٦٢﴾

नहीं। और यक़ीनन अल्लाह वही ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌۢ بِالْمُفْسِدِیْنَ ﴿٦٣﴾ ع قُلْ یٰۤاَهْلَ

फिर भी अगर वो मुंह मोड़ें तो यक़ीनन अल्लाह फसाद फैलाने वालों को खूब जानते हैं। आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब!

الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰی كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَیْنَنَا وَ بَیْنَكُمْ

तुम आओ ऐसे कलिमे की तरफ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर है,

اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَیْـًٔا وَّلَا یَتَّخِذَ

ये के हम इबादत न करें मगर अल्लाह की और हम उस के साथ किसी चीज़ को शरीक न ठेहराएं और हम में से

بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا

एक दूसरे को अल्लाह को छोड़ कर के रब न बनाएं। फिर अगर वो रूगरदानी करें

فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ

तो केह दो के तुम गवाह रहो के हम मुसलमान हैं। ऐ एहले किताब!

لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ

तुम क्यूं हुज्जतबाज़ी करते हो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में हालांके तौरात

وَالْاِنْجِیْلُ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾ هٰۤاَنْتُمْ

और इन्जील नहीं उतारी गईं मगर उन के बाद। क्या तुम अक़्ल नहीं रखते? सुनो! तुम तो

هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِیْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ

वो लोग हो के तुम ने हुज्जतबाज़ी की ऐसी चीज़ में जिस का तुम्हें इल्म है,

فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْمَا لَیْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ

फिर तुम क्यूं हुज्जतबाज़ी करते हो ऐसी चीज़ में जिस का तुम्हें कोई इल्म नहीं है। और अल्लाह जानता है

وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ اِبْرٰهِیْمُ یَهُوْدِیًّا

और तुम जानते नहीं हो। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) न यहूदी थे,

وَّلَا نَصْرَانِیًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِیْفًا مُّسْلِمًا ؕ

न नसरानी थे, लेकिन सिर्फ एक अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे, मुसलमान थे।

وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿٦٧﴾ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِیْمَ

और मुशरिकीन में से नहीं थे। यक़ीनन तमाम इन्सानों में सब से ज़्यादा क़रीब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के अलबत्ता वो लोग हैं

لَلَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِیُّ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ

जिन्हों ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इत्तिबा किया और ये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं और वह लोग हैं जो ईमान लाए हैं।

وَاللّٰهُ وَلِیُّ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٦٨﴾ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ

और अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है। एहले किताब की एक जमाअत तो

مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ یُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا یُضِلُّوْنَ

चाहती है के काश के वो तुम्हें गुमराह कर दें। और वो गुमराह नहीं करते

اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا یَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾ یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ

मगर अपने आप को और उन्हें पता नहीं। ऐ एहले किताब!

لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾ یٰۤاَهْلَ

तुम क्यूं कुफ़्र करते हो अल्लाह की आयात के साथ इस हाल में के तुम गवाही देते हो? ऐ एहले

الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوْنَ

किताब! तुम क्यूं हक़ को बातिल के साथ मिलाते हो और हक़

الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾ وَ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ

छुपाते हो हालांके तुम जानते हो? और एहले किताब की एक जमाअत ने

الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِیْٓ اُنْزِلَ عَلَی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ

कहा के तुम ईमान लाओ उस कुरआन पर जो ईमान वालों पर उतारा गया दिन के

النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾

शुरू हिस्से में और तुम काफिर बन जाओ दिन के आखिरी हिस्से में, ताके ये भी मुर्तद हो जाएं।

وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِیْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰی هُدَی

और तुम अमीन मत समझना मगर उसी को जो तुम्हारे दीन पर चलता हो। आप केह दीजिए यक़ीनन हिदायत अल्लाह की हिदायत

اللّٰهِ ۙ اَنْ یُّؤْتٰۤی اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِیْتُمْ اَوْ یُحَآجُّوْكُمْ

है। (ऐसा इस वजह से करते हो) के किसी को दिया जाए उसी जैसा जो तुम्हें दिया गया या वो तुम से तुम्हारे रब

عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِیَدِ اللّٰهِ ۚ یُؤْتِیْهِ مَنْ

के पास हुज्जतबाज़ी करें। आप केह दीजिए यक़ीनन फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है। वो उसे देता है जिसे

یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿٧٣﴾ یَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ

चाहता है। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। वो अपनी रहमत के साथ खास करता है जिसे

یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

चाहता है। और अल्लाह भारी फ़ज़्ल वाले हैं। और एहले किताब में से कुछ लोग ऐसे हैं के

مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ یُّؤَدِّهٖۤ اِلَیْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ

अगर आप उसे अमीन बनाएं ढेरों माल पर तो भी उस को आप की तरफ अदा कर दे। और उन में कुछ लोग

اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِیْنَارٍ لَّا یُؤَدِّهٖۤ اِلَیْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ

ऐसे हैं के अगर आप उसे अमीन बनाएं एक दीनार पर भी, तो भी उस को आप की तरफ अदा न करे, मगर जब तक

عَلَیْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَیْسَ عَلَیْنَا

आप उस पर (निगरां बन कर) खड़े रहें। ये इस वजह से के उन्हों ने कहा के इन उम्मीयों के लिए हम पर

فِی الْاُمِّیّٖنَ سَبِیْلٌ ۚ وَ یَقُوْلُوْنَ عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ

कोई रास्ता नहीं। और ये अल्लाह पर झूठ केह रहे हैं और वो

يَعْلَمُوْنَ ۝٧٥ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ

जानते भी हैं। क्यूं नहीं! जो अपना अहद पूरा करे और डरे तो यक़ीनन अल्लाह

يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧٦ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ

डरने वालों से महब्बत रखते हैं। यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह के अहद के बदले में

وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ

और अपनी क़समों के बदले में थोड़ी क़ीमत लेते हैं, उन के लिए कोई हिस्सा नहीं है आखिरत

فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ

में और अल्लाह उन से कलाम नहीं करेगा और उन की तरफ क़यामत के दिन निगाह नहीं

الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٧٧

करेगा और उन का तज़किया नहीं करेगा। और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ

और यक़ीनन उन में से एक जमाअत है जो अपनी ज़बानों को मोड़ती है किताब (के पढ़ने) में ताके तुम उसे

مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَ يَقُوْلُوْنَ هُوَ

किताब में से समझो, हालांके वो किताब में से नहीं है। और वो केहते हैं के ये

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَ يَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ से है, हालांके वो अल्लाह की तरफ से नहीं है। और वो अल्लाह पर झूठ केहते हैं

الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٧٨ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ

इस हाल में के वो जानते भी हैं। किसी इन्सान की ताक़त नहीं है के अल्लाह उसे

اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ

किताब और शरीअत और नुबूवत दे, फिर वो इन्सानों से कहे के

كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ

तुम अल्लाह को छोड़ कर मेरी इबादत करने वाले बन जाओ, लेकिन (वो तो कहेगा के) तुम रब्बानी बन जाओ

بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَ بِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۝٧٩ ۙ

इस वजह से के तुम किताब की तालीम देते हो और इस वजह से के तुम खुद पढ़ते हो।

وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ؕ

और वो तुम्हें इस बात का हुक्म नहीं देगा के तुम फरिश्तों और नबीयों को रब बना लो।

ع ٩ ١٦

اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾

क्या तुम्हें वो कुफ्र का हुक्म देगा इस के बाद के तुम मुसलमान हो?

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ

और जब के अल्लाह ने अम्बिया (अलैहिमुस्सलात वस्सलाम) से पुख़्ता अहद लिया के जब मैं तुम्हें किताब

وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ

और हिक्मत दूं, फिर तुम्हारे पास रसूल आए जो सच्चा बतलाने वाला हो उस को जो तुम्हारे पास है

لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَ اَخَذْتُمْ

तो तुम उस रसूल पर ईमान लाओगे और उन की नुसरत करोगे। अल्लाह ने फरमाया क्या तुम ने इक़रार किया और इस

عَلٰى ذٰلِكُمْ اِصْرِيْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا

पर मेरा अहद तुम ने क़ुबूल किया? अम्बिया ने कहा के हम ने इक़रार किया। अल्लाह ने फरमाया फिर तुम गवाह रहो,

وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ

मैं भी तुम्हारे साथ गवाही देने वालों में से हूँ। फिर उस के बाद जो रूगरदानी

ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ

करे तो वही लोग नाफरमान हैं। क्या फिर अल्लाह के दीन के अलावा को ये लोग

يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

चाहते हैं? हालांके अल्लाह के सामने सर झुकाए हुए हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं

طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ

खुशी से और ज़बर्दस्ती से, और उसी की तरफ वो लौटाए जाएंगे। आप फरमा दीजिए के हम ईमान लाए अल्लाह पर

وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ

और उस पर जो हम पर उतारा गया और उस पर जो इब्राहीम, और इस्माईल,

وَاِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى

और इसहाक़, और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटों पर उतारा गया, और उस पर जो मूसा

وَ عِيْسٰى وَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ

(अलैहिस्सलाम) को दिया गया और ईसा (अलैहिस्सलाम) और दूसरे अम्बिया को दिया गया उन के रब की तरफ से। हम उन में

اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ

से किसी के दरमियान तफरीक़ नहीं करते। और हम अल्लाह ही के ताबेदार हैं। और जो इस्लाम के अलावा को

غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ

दीन के तौर पर तलब करेगा, तो उस की तरफ से हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा। और वो आखिरत में

مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا

खसारा उठाने वालों में से होगा। अल्लाह कैसे हिदायत देगा उस क़ौम को जिन्हों ने कुफ़्र किया

بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَ شَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ

अपने ईमान लाने के बाद और शहादत देने के बाद के ये रसूल हक़ है, और उन के पास

الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾ اُولٰٓئِكَ

रोशन मोअजिज़ात भी आ गए। और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देंगे। उन की सज़ा

جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ

ये है के उन पर अल्लाह की लानत और फरिश्तों

وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ

और तमाम इन्सानों की लानत है। वो उस में हमेशा रहेंगे। उन से अज़ाब हलका नहीं

الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا

किया जाएगा और उन को मोहलत नहीं मिलेगी। मगर वो लोग जिन्हों ने तौबा की

مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۟ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾

उस के बाद और इस्लाह की, तो यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا

यक़ीनन वो लोग जो काफिर हो गए अपने ईमान लाने के बाद, फिर वो कुफ़्र में बढ़ गए,

لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿٩٠﴾

तो हरगिज़ उन की तौबा क़बूल नहीं की जाएगी। और वही लोग गुमराह हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ

यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और मर गए इस हाल में के वो काफिर थे, तो हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा

مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ۭ

उन में से किसी एक की तरफ से ज़मीन भर सौना, अगर्चे वो उस को फिदये के तौर पर दे दे।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٩١﴾ ع

उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा, और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ؕ
कामिल नेकी को तुम हरगिज़ नहीं पहोंच सकते जब तक के अपनी महबूब चीज़ में से खर्च न करो।

وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ ﴿۹۲﴾ كُلُّ
और जो चीज़ भी खर्च करो, तो यक़ीनन अल्लाह उसे जानते हैं। तमाम

الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ
खाने की चीज़ें बनी इस्राईल के लिए हलाल थीं मगर जो हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) ने

اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ
अपने आप पर हराम कर ली थी इस से पेहले के तौरात उतारी जाए।

قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾
आप फरमा दीजिए के फिर तौरात लाओ और उस की तिलावत करो अगर तुम सच्चे हो।

فَمَنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
फिर जो अल्लाह पर झूठ गढ़े इस के बाद

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۹۴﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۫ فَاتَّبِعُوْا
तो वही लोग ज़ालिम हैं। आप फरमा दीजिए के अल्लाह ने सच फरमाया। फिर तुम इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत

مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۵﴾
का इत्तिबा करो जो एक अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे।

اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ
यक़ीनन सब से पेहला घर जो इन्सानों के लिए बनाया गया, अलबत्ता वो घर है जो मक्का में है,

مُبٰرَكًا وَّهُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۶﴾ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ
बरकत वाला है और तमाम जहान वालों के लिए हिदायत है। उस में रोशन निशानियाँ हैं,

مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ
मक़ामे इब्राहीम है। और जो उस में दाखिल हो गया वो अमन वाला हो गया। और अल्लाह के लिए

عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ
इन्सानों पर फर्ज़ है बैतुल्लाह का हज करना उस शख्स के लिए जो बैतुल्लाह तक रास्ता क़तअ करने की ताक़त रखता हो।

وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۷﴾
और जो काफिर होगा तो यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है तमाम जहान वालों से।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖۗ
आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब! अल्लाह की आयात के साथ क्यूं कुफ्र करते हो?

وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ۝٩٨ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ
और अल्लाह देख रहा है उन आमाल को जो तुम करते हो। आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब!

لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا
क्यूं रोकते हो अल्लाह के रासते से उस शख्स को जो ईमान लाए, तुम उस में कजी

عِوَجًا وَّ اَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
तलाश करते हो इस हाल में के तुम जानते हो। और अल्लाह बेखबर नहीं है उन कामों से जो तुम

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٩٩ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا
करते हो। ऐ ईमान वालो! अगर तुम केहना मान लोगे

فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ
एहले किताब के एक गिरोह का तो वो तुम्हारे ईमान लाने के बाद

بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ۝١٠٠ وَ كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ
दोबारा तुम्हें काफिर बना देंगे। और कैसे कुफ्र करोगे, हालांके तुम पर

تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَ فِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ
अल्लाह की आयतें तिलावत की जाती हैं और तुम में अल्लाह के रसूल हैं। और जो

يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝١٠١ ع
अल्लाह की रस्सी मज़बूत पकड़ेगा, तो यक़ीनन उसे सीधे रास्ते की तरफ हिदायत दी जाती है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ
ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा के उस से डरने का हक़ है

وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝١٠٢ وَاعْتَصِمُوْا
और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में के तुम मुसलमान हो। और अल्लाह की रस्सी को

بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ
इकट्ठे हो कर मज़बूत पकड़ो और अलग अलग मत हो। और याद करो अल्लाह की

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ
उस नेअमत को जो तुम पर है जब के तुम दुशमन थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारे दिल जोड़ दिए,

فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ وَ كُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ

फिर तुम अल्लाह की नेअमत की वजह से भाई भाई बन गए। और तुम आग के गढ़े के

مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

किनारे पर थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें वहां से बचा लिया। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें

اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ

बयान करते हैं ताके तुम हिदायतयाफता हो जाओ। और चाहिए के तुम में से एक जमाअत हो

يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ

जो खैर की तरफ बुलाती हो और अम्र बिल मारूफ करती हो और नही

عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۴﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

अनिल मुनकर करती हो। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और उन लोगों की तरह

كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ

मत बनो जो अलग अलग फिरक़े हो गए और जिन्हों ने इखतिलाफ किया इस के बाद के उन के पास रोशन

الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۰۵﴾ يَّوْمَ

मोअजिज़ात आए। और उन के लिए भारी अज़ाब होगा। उस दिन जिस दिन

تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

कुछ चेहरे सफेद होंगे और कुछ चेहरे सियाह होंगे। फिर अलबत्ता वो लोग जिन के

اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۗ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

चेहरे सियाह होंगे, (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया?

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۱۰۶﴾

फिर अज़ाब चखो इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ

और अलबत्ता वो लोग जिन के चेहरे सफेद होंगे वो अल्लाह की रहमत में होंगे।

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

वो उस में हमेशा रहेंगे। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन को हम आप के सामने हक़ के साथ

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

तिलावत करते हैं। और अल्लाह जहान वालों पर ज़ुल्म का इरादा भी नहीं करते।

وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝١٠٩ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ
और अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे। तुम बेहतरीन उम्मत हो जो इन्सानों के लिए

لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
निकाली गई है, अम्र बिल मारूफ करते हो और नही अनिल मुनकर करते हो

وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ
और अल्लाह पर ईमान रखते हो। और अगर एहले किताब ईमान ले आते तो ये

خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ اَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝١١٠
उन के लिए बेहतर होता। उन में से कुछ लोग मोमिन हैं और उन में से अकसर नाफरमान हैं।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ
वो तुम्हें हरगिज़ ज़रर नहीं पहोंचा सकते मगर थोड़ा सा ईज़ा पहोंचाना। और अगर वो तुम से क़िताल करेंगे तो वो तुम से पुश्त

الْاَدْبَارَ ۛ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝١١١ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ
फेर कर भागेंगे। फिर उन की नुसरत नहीं की जाएगी। उन पर ज़िल्लत मार दी गई

اَيْنَ مَا ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ حَبْلٍ
जहाँ वो पाए जाएं, मगर ऐसे ज़रिए से जो अल्लाह की तरफ से हो और ऐसे ज़रिए से

مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ ضُرِبَتْ
जो इन्सानों की तरफ से हो और वो अल्लाह का ग़ज़ब ले कर लौटे और उन पर

عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ
पस्ती जमा दी गई। ये इस वजह से के वो कुफ्र करते थे

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ يَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ
अल्लाह की आयात के साथ और अम्बिया को नाहक़ क़त्ल करते थे। ये

بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝١١٢ لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ
इस वजह से के वो नाफरमान हैं और हद से आगे बढ़ते थे। ये सारे के सारे बराबर नहीं हैं।

مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ
एहले किताब में से एक जमाअत है जो हक़ पर क़ाइम है, अल्लाह की आयतों की रात की घड़ियों में तिलावत

الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ

करते हैं और वो नमाज़ भी पढ़ते हैं। वो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरी

الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ

दिन पर और अम्र बिल मारूफ करते हैं और नही अनिल मुनकर करते

عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ

हैं और नेकी के कामों में तेज़ी करते हैं। और ये

مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ

अच्छे लोगों में से हैं। और जो भलाई भी वो करेंगे तो हरगिज़ उस की नाक़दरी नहीं की जाएगी।

وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और अल्लाह मुत्तक़ियों को खूब जानते हैं। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया,

لَنْ تُغْنِىَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

हरगिज़ उन के कुछ काम नहीं आएंगे न उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से

شَيْئًا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾

ज़रा भी। और यही लोग दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِىْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

उन चीज़ों का हाल जिन को वो इस दुन्यवी ज़िन्दगी में खर्च करते हैं

كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا

उस तूफानी हवा की तरह है जिस में सख्त सरदी हो, जो ऐसी क़ौम की खेती को पहोंची हो जिन्हों ने

اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ

अपनी जान पर ज़ुल्म किया, फिर वो उस को बरबाद कर दे। और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया

وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا

लेकिन वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। ऐ ईमान वालो! अपने अलावा किसी को

بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا

राज़दां मत बनाओ, वो तुम से फसाद करने में कोताही नहीं करते। वो तो चाहते हैं

مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚۖ

वो चीज़ जिस से तुम मशक्क़त में पड़ो। यक़ीनन बुग्ज़ ज़ाहिर हो चुका है उन के मुंह से।

وَمَا تُخْفِیْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ بَیَّنَّا لَكُمُ

और जो उन के सीने छुपाए हुए हैं वो उस से भी बड़ी है। यक़ीनन हम ने तुम्हारे लिए

الْاٰیٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۸﴾ هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ

आयतों को खोल खोल कर बयान किया अगर तुम अक़्ल रखते हो। सुनो! तुम तो वो लोग हो के

تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا یُحِبُّوْنَكُمْ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ

तुम उन से महब्बत करते हो और ये तुम से महब्बत नहीं करते और तुम तमाम किताबों पर ईमान

كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا

रखते हो। और जब ये तुम से मिलते हैं तो اٰمَنَّا (के हम ईमान लाए हैं) केहते हैं। और जब तन्हाई में

عَلَیْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَیْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَیْظِكُمْ ؕ

होते हैं, तो तुम पर गुस्से की वजह से उंगलियों के पोरे काटते है। आप केह दीजिए के अपने गुस्से से मर जाओ।

اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ

यक़ीनन अल्लाह दिलों के हाल को खूब जानते हैं। अगर तुम्हें भलाई

حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَیِّئَةٌ یَّفْرَحُوْا

पहोंचे तो उन्हें बुरी लगती है। और अगर तुम्हें मुसीबत पहोंचे तो उस से वो खुश हो जाते

بِهَا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا یَضُرُّكُمْ كَیْدُهُمْ

हैं। और अगर सब्र करोगे और मुत्तक़ी बनोगे तो उन का मक्र तुम्हें कुछ भी ज़रर नहीं पहोंचा

شَیْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا یَعْمَلُوْنَ مُحِیْطٌ ﴿۱۲۰﴾ ع وَاِذْ غَدَوْتَ

सकेगा। यक़ीनन अल्लाह उन के आमाल का इहाता किए हुए है। और जब आप अपने एहल से

مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِیْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ

सुबह के वक्त निकले, आप ईमान वालों को लड़ने की जगहों पर मुतअय्यन कर रहे थे।

وَاللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۲۱﴾ اِذْ هَمَّتْ طَّآىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ

और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। जब तुम में से दो जमाअतों ने इरादा किया के

اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِیُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ

वो हिम्मत हार बैठें, हालांके अल्लाह उन का कारसाज़ है। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ

करना चाहिए। और यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हारी नुसरत फरमाई बदर में इस हाल

اَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۱۲۳﴾

में के तुम कमज़ोर थे। फिर तुम अल्लाह से डरो ताके तुम शुक्र अदा करो।

اِذۡ تَقُوۡلُ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ اَلَنۡ يَّكۡفِيَكُمۡ اَنۡ يُّمِدَّكُمۡ

जब के आप ईमान वालों से फरमा रहे थे के क्या तुम्हें काफी नहीं है के तुम्हारा रब

رَبُّكُمۡ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الۡمَلٰٓئِكَةِ مُنۡزَلِيۡنَ ﴿۱۲۴﴾

तुम्हारी इमदाद करे तीन हज़ार फरिश्तों के ज़रिए जो उतारे जाएंगे।

بَلٰٓى ۙ اِنۡ تَصۡبِرُوۡا وَتَتَّقُوۡا وَ يَاۡتُوۡكُمۡ مِّنۡ فَوۡرِهِمۡ

क्यूं नहीं! अगर तुम सब्र करोगे और मुत्तक़ी बनोगे तो वो तुम्हारे पास फौरन आ जाएंगे,

هٰذَا يُمۡدِدۡكُمۡ رَبُّكُمۡ بِخَمۡسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الۡمَلٰٓئِكَةِ

ये वो है के तुम्हारा रब पाँच हज़ार निशानज़दा फरिश्तों के ज़रिए तुम्हारी इमदाद

مُسَوِّمِيۡنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشۡرٰى لَكُمۡ

करेगा। और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर तुम्हारे लिए बशारत

وَلِتَطۡمَئِنَّ قُلُوۡبُكُمۡ بِهٖ ؕ وَمَا النَّصۡرُ اِلَّا

और इस लिए ताके तुम्हारे दिल उस से मुतमइन हों। और नुसरत तो सिर्फ ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले

مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ الۡعَزِيۡزِ الۡحَكِيۡمِ ﴿۱۲۶﴾ لِيَقۡطَعَ طَرَفًا

अल्लाह ही की तरफ से आती है। ताके वो काफिरों के एक गिरोह को

مِّنَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَوۡ يَكۡبِتَهُمۡ فَيَنۡقَلِبُوۡا خَآئِبِيۡنَ ﴿۱۲۷﴾

काट कर रख दे या उन्हें (कैदी बना कर) ज़लील करे, के वो नाकाम वापस चले जाएं।

لَيۡسَ لَكَ مِنَ الۡاَمۡرِ شَىۡءٌ اَوۡ يَتُوۡبَ عَلَيۡهِمۡ

आप का इस मुआमले में कोई इखतियार नहीं है, चाहे अल्लाह उन की तौबा क़बूल करे

اَوۡ يُعَذِّبَهُمۡ فَاِنَّهُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿۱۲۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

या उन्हें अज़ाब दे, क्यूंके वही लोग ज़ालिम हैं। और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं

وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ يَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ

और जो ज़मीन में हैं। अल्लाह मग़फिरत करते हैं जिस की चाहते हैं और अज़ाब

مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۲۹﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ

देते हैं जिसे चाहते हैं। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ ईमान

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪

वालो! कई कई गुना कर के सूद मत खाओ।

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ

और अल्लाह से डरो ताके तुम फलाह पाओ। और डरो उस आग से

الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ

जो काफिरों के लिए तय्यार की गई है। और अल्लाह और रसूल का केहना मानो

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

ताके तुम पर रहम किया जाए। और अपने रब की मग़फिरत की तरफ

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ ۙ

दौड़ो और ऐसी जन्नत की तरफ जिस की चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है,

اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ

जो मुत्तक़ियों के लिए तय्यार की गई है। उन के लिए जो खर्च करते हैं आसानी और

وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ

तकलीफ में और जो गुस्से को पी जाने वाले हैं और लोगों को

عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾ وَالَّذِيْنَ

मुआफ करने वाले हैं। और अल्लाह एहसान करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। और वो लोग हैं

اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا

के जब वो कोई बुरा काम कर बैठते हैं या अपनी जान पर ज़ुल्म कर लेते हैं, तो अल्लाह को याद करने

اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَمَنْ يَّغْفِرُ

लग जाते हैं, फिर अपने गुनाहों की मुआफी तलब करते हैं। और सिवाए अल्लाह के

الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۣ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰي مَا فَعَلُوْا

कौन गुनाह मुआफ कर सकता है? और वो अपने किए पर इसरार नहीं करते

وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ اُولٰۗىِٕكَ جَزَاۗؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ

इस हाल में के वो जानते हों। उन का बदला उन के रब की तरफ से मग़फिरत है

مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

और जन्नतें हैं जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ قَدْ

जिन में वो हमेशा रहेंगे। और ये काम करने वालों का कितना अच्छा बदला है। यक़ीनन

خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

तुम से पेहले तरीक़े गुज़र चुके, तो ज़मीन में चलो फिरो

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ هٰذَا

फिर देखो के झुठलाने वालों का अन्जाम कैसा हुवा? ये

بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ مَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۳۸﴾

इन्सानों के लिए बयान है और हिदायत और मुत्तक़ियों के लिए नसीहत है।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ

और हिम्मत न हारो और ग़म न करो और तुम ही बुलन्द रहोगे अगर

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾ اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ

तुम ईमान वाले हो। अगर तुम्हें ज़ख्म पहोंचा है तो उसी जैसा ज़ख्म उस क़ौम को

قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ

भी पहोंच चुका है। और ये जंगें हैं जिन को हम इन्सानों के दरमियान अदलते बदलते रहा करते हैं।

وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ

और ताके अल्लाह जान ले उन को जो ईमान वाले हैं और तुम में से शुहदा बनाए।

وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

और अल्लाह ज़ालिमों से महब्बत नहीं करते। और इस लिए ताके अल्लाह खालिस करे उन को

اٰمَنُوْا وَ يَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۴۱﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا

जो ईमान लाए और काफिरों को मिटाए। क्या तुम ने ये समझ रखा है के जन्नत में दाखिल

الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ

हो जाओगे हालांके अब तक अल्लाह ने मालूम नहीं किया उन को जो तुम में से मुजाहिद हैं

وَ يَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۴۲﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ

और अब तक सब्र करने वालों को मालूम नहीं किया। और यक़ीनन तुम मौत की तमन्ना करते थे

مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ص فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ

इस से पेहले के उस से मिलो। तो यक़ीनन तुम ने उस को अपनी आँखों

تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ

से देख लिया। और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम) नहीं हैं मगर भेजे हुए पैगम्बर। यक़ीनन आप से पेहले

مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ اَفَا۟ىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ

बहोत से पैगम्बर गुज़र चुके। क्या फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम) मर जाएं या क़त्ल किए जाएं तो तुम अपनी एड़ियों

عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۭ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ

के बल पलट जाओगे। और जो भी अपनी एड़ियों के बल पलट जाएगा

فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ۭ وَ سَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

तो वो अल्लाह को हरगिज़ ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकेगा। और अनक़रीब अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देंगे।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا

और किसी जानदार की ये ताक़त नहीं है के वो मर सके मगर अल्लाह के हुक्म से लिखी हुई (मुक़र्रर की हुई)

مُّؤَجَّلًا ۭ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ

मुद्दत पर। और जो दुन्या के सवाब का इरादा करेगा तो हम उस को उस में से कुछ दे देंगे।

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۭ وَسَنَجْزِى

और जो आखिरत के सवाब का इरादा करेगा तो हम उस को उस में से कुछ दे देंगे। और अनक़रीब हम

الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ

शुक्र अदा करने वालों को बदला देंगे। और बहोत से नबी थे के उन के साथ बहोत से

رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ

अल्लाह वालों ने क़िताल किया। फिर उन मुसीबतों की वजह से जो उन्हें पहोंचीं अल्लाह के रास्ते में उन्हों

فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ۭ وَاللّٰهُ

ने न हिम्मत हारी और न कमज़ोरी दिखाई और न दबे। और अल्लाह

يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ

सब्र करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। और उन की दुआ सिर्फ ये थी

اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَ اِسْرَافَنَا

के केहने लगे ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए हमारे गुनाह बख्श दे और इस काम में हमारी ज़्यादती

فِىْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَ انْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ

मुआफ कर दे और हमारे क़दम जमा दे और काफिर क़ौम के खिलाफ हमारी नुसरत

الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰتٰهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا

फरमा। तो अल्लाह ने उन्हें दुन्या का सवाब भी दिया

وَ حُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ط وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾

और आखिरत का बेहतर सवाब भी दिया। और अल्लाह नेकी करने वालों से महब्बत फरमाते हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफिरों का केहना मान लोगे

يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

तो वो तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल पलटा कर मुर्तद बना देंगे, फिर तुम नुक़सान उठाने वाले बन जाओगे।

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ج وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾ سَنُلْقِيْ

बल्के अल्लाह तुम्हारा मौला है। और वो बेहतरीन नुसरत करने वाला है। अनकरीब हम काफिरों

فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ

के दिलों में रौब डाल देंगे, इस वजह से के वो शरीक ठेहराते हैं अल्लाह के साथ

مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ج وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ط وَبِئْسَ

ऐसी चीज़ें जिन पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। और उन का ठिकाना दोज़ख है। और वो

مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ

ज़ालिमों का बुरा ठिकाना है। और यक़ीनन अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच कर दिखाया

اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ج حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ

जब तुम उन कुफ्फार को अल्लाह के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे। यहां तक के जब तुम हिम्मत हार बैठे

وَ تَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَ عَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

और तुम ने इस मुआमले में आपस में झगड़ा किया और तुम ने नाफरमानी की इस के बाद के

مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ط مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا

अल्लाह ने दिखाई वो (फत्ह) जो तुम पसन्द करते थे। तुम में से कुछ वो हैं जो दुन्या चाहते हैं

وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ج ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ

और तुम में से कुछ वो हैं जो आखिरत चाहते हैं। फिर अल्लाह ने तुम्हें उन से फेर दिया ताके अल्लाह तुम्हें

لِيَبْتَلِيَكُمْ ج وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ط وَ اللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ

आज़माए। और यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हें मुआफ कर दिया। और अल्लाह ईमान वालों पर

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵۲﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ

फ़ज़्ल वाले हैं। जब तुम पहाड़ पर चढ़े चले जा रहे थे और पीछे मुड़ कर किसी को

عَلٰٓى اَحَدٍ وَّ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِىْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ

देखते भी नहीं थे हालांके रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हें पुकार रहे थे तुम्हारे पीछे, फिर अल्लाह ने

غَمًّا ۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا

तुम्हें ग़म के बदले ग़म दिया ताके तुम ग़म न करो उस फत्ह पर जो तुम से फौत हो गई ओर न उस शिकस्त पर

مَآ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌ ۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵۳﴾

जो तुम्हें पहोंची। और अल्लाह बाखबर है उन कामों से जो तुम करते हो।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى

फिर अल्लाह ने तुम पर ग़म के बाद इतमिनान वाली ऊँघ उतारी जो तुम में से एक जमाअत

طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ

पर तारी थी और एक जमाअत को अपनी जानों का फिक्र था,

يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ

वो अल्लाह के साथ हक़ के अलावा का जाहिलीयत का गुमान करते थे।

يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَىْءٍ ؕ قُلْ

वो केहते थे के हमारे लिए इस मुआमले में कोई इखतियार नहीं है। आप फरमा दीजिए

اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِىْٓ اَنْفُسِهِمْ

के तमाम उमूर अल्लाह के कब्ज़े में हैं। वो अपने दिलों में छुपाते हैं वो जिस को

مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ

आप के सामने ज़ाहिर नहीं करते थे। वो मुनाफिक़ीन केहते थे के अगर हमारा इस मुआमले में कोई भी इखतियार

شَىْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِىْ بُيُوْتِكُمْ

होता तो हम यहां क़त्ल न किए जाते। आप फरमा दीजिए के अगर तुम अपने घरों में भी रेहते

لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ

तो भी यक़ीनन मुबारिज़ बन कर निकलते वो जिन पर क़त्ल होना लिख दिया गया था, (वो निकलते) अपने क़त्ल होने की जगहों की तरफ।

وَلِيَبْتَلِىَ اللّٰهُ مَا فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا

और अल्लाह ने ऐसा इस लिए किया ताके अल्लाह इम्तिहान ले उस का जो तुम्हारे सीनों में है और ताके साफ करे उस को जो

فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝١٥٤

तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह दिलों के हाल को खूब जानते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ

यक़ीनन वो लोग जो तुम में से मैदान छोड़ कर चले गए उस दिन जिस दिन दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए,

اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ

तो उन को तो सिर्फ शैतान ने फुसलाया उन बाज़ हरकतों की वजह से जो उन्होंने ने कीं।

وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝١٥٥

यक़ीनन अल्लाह ने उन्हें मुआफ कर दिया। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, हिल्म वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ऐ ईमान वालो! तुम उन की तरह मत बनो जिन्होंने ने कुफ्र किया

وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ

और जिन्होंने ने अपने भाइयों से कहा जब वो ज़मीन में सफर करते हैं

اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا

या ग़ाज़ी बन कर जाते हैं के अगर वो हमारे पास रेहते तो न मरते

وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ

और क़त्ल न किए जाते। ताके अल्लाह उस को उन के दिलों में हसरत बनाए।

وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝١٥٦

और अल्लाह ही ज़िन्दगी देते हैं और मौत देते हैं। और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं।

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ

और अगर तुम अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किए जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की तरफ से मग़फिरत

مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝١٥٧ وَلَئِنْ مُّتُّمْ

और रहमत बेहतर है उस दौलत से जिसे वो जमा कर रहे हैं। और अगर मर जाओ

اَوْ قُتِلْتُمْ لَاۡاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ۝١٥٨ فَبِمَا رَحْمَةٍ

या तुम क़त्ल किए जाओ तो यक़ीनन अल्लाह ही की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। फिर अल्लाह की रहमत की

مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ

वजह से ही उन के लिए आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम) नर्म हो गए हैं। और अगर आप सख्त या सख्त दिल वाले होते

لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ

तो यक़ीनन सहाबाए किराम आप के आस पास से मुन्तशिर हो जाते। इस लिए आप उन्हें मुआफ कीजिए और उन के लिए मग़फिरत

لَهُمْ وَ شَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ

तलब कीजिए और कामों में उन से मशवरा लेते रहिए। फिर जब आप पुख्ता इरादा कर लें तो अल्लाह ही पर

عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾ اِنْ يَّنْصُرْكُمُ

तवक्कुल कीजिए। यक़ीनन अल्लाह तवक्कुल करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। अगर अल्लाह तुम्हारी नुसरत करे

اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ

तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता। और अगर वो तुम्हारी नुसरत छोड़ दे तो अल्लाह

ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

के बाद कौन है जो तुम्हारी नुसरत करे? और अललाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल

الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۭ وَمَنْ

करना चाहिए। और किसी नबी की ये शान नहीं है के वो खयानत करे। और जो

يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى

खयानत करेगा तो ले कर आएगा क़यामत के दिन वो चीज़ जिस में खयानत की है। फिर हर शख्स को

كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾ اَفَمَنِ

अपने किए का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। क्या फिर

اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَاۗءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ

वो शख्स जिस ने अल्लाह की खुशनूदी का इत्तिबा किया उस शख्स की तरह हो सकता है जो अल्लाह का गज़ब ले कर लौटा

وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾ هُمْ دَرَجٰتٌ

और उस का ठिकाना जहन्नम है? और वो बुरी जगह है। वो अल्लाह के पास मुख्तलिफ दरजात

عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ

में होंगे। और अल्लाह देख रहे हैं उन कामों को जो वो कर रहे हैं। यक़ीनन अल्लाह ने एहसान फरमाया

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ

ईमान वालों पर जब के उन में रसूल भेजा उन्ही में से

يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

जो उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत करते हैं और उन का तज़किया करते हैं और उन्हें किताब और हिक्मत की

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾

तालीम देते हैं। और यक़ीनन वो उस से पेहले अलबत्ता खुली गुमराही में थे।

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ

क्या तुम्हें जो एक मुसीबत पहोंची तो उस की दुगनी तुम उन काफिरों को नहीं पहोंचा चुके?

قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ۭ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ۭ

तुम केहते हो के ये मुसीबत कहां से आ गई? आप फरमा दीजिए के ये तुम्हारी ही तरफ से आई।

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾ وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ

यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। और जो मुसीबत तुम्हें पहोंची उस दिन जिस दिन

الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾ ۙ

दोनों लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए वो अल्लाह के हुक्म से (पहोंची) और इस लिए ताके अल्लाह ईमान वालों को मालूम करें।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ښ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا

और ताके अल्लाह मुनाफिक़ीन को मालूम करें। हालांके उन से कहा गया के आओ,

قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ۭ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ

अल्लाह के रास्ते में क़िताल करो, या कम अज़ कम दिफाअ तो करो। तो वो केहते हैं के अगर हम ढंग की लड़ाई

قِتَالًا لَّااتَّبَعْنٰكُمْ ۭ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ

जानते तो हम ज़रूर तुम्हारे पीछे चलते। वो उस दिन ईमान की बनिस्बत कुफ्र के ज़्यादा

مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ

क़रीब थे। वो अपने मुंह से ऐसी बात केहते थे जो उन के

فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ

दिलों में नहीं थी। और अल्लाह खूब जानते हैं जो वो छुपा रहे हैं। वो लोग जो

قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ۭ

अपने भाइयों से केहते हैं, और खुद बैठ गए हैं, के अगर ये हमारा केहना मानते तो वो क़त्ल न किए जाते।

قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ

आप फरमा दीजिए के फिर तुम अपने आप से मौत को दफा करो अगर

صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ

सच्चे हो। और आप उन लोगों को जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किए जाएं

اللّٰهِ اَمۡوَاتًا ؕ بَلۡ اَحۡيَآءٌ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ يُرۡزَقُوۡنَ ﴿۱۶۹﴾

मुर्दे गुमान न करें। बल्के वो अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, उन्हें रोज़ी दी जाती है।

فَرِحِيۡنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ ۙ وَ يَسۡتَبۡشِرُوۡنَ

वो खुश हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन को दिया है और वो खुशखबरी पहोंचाना चाहते हैं

بِالَّذِيۡنَ لَمۡ يَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ مِّنۡ خَلۡفِهِمۡ ۙ اَلَّا خَوۡفٌ

उन लोगों को जो उन से नहीं मिले उन के पीछे वालों में से इस बात की के उन पर न खौफ

عَلَيۡهِمۡ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۱۷۰﴾ يَسۡتَبۡشِرُوۡنَ بِنِعۡمَةٍ

है और न वो ग़मगीन हैं। वो खुशखबरी पहोंचाना चाहते हैं अल्लाह की

مِّنَ اللّٰهِ وَفَضۡلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيۡعُ اَجۡرَ

नेअमत की और अल्लाह के फ़ज़्ल की और इस बात की के अल्लाह ईमान वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं

الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۷۱﴾ اَلَّذِيۡنَ اسۡتَجَابُوۡا لِلّٰهِ وَالرَّسُوۡلِ

करेंगे। वो लोग जिन्हों ने अल्लाह और रसूल का हुक्म माना

مِنۡۢ بَعۡدِ مَآ اَصَابَهُمُ الۡقَرۡحُ ؕ لِلَّذِيۡنَ اَحۡسَنُوۡا

इस के बाद के उन को ज़ख्म पहोंचा, उन लोगों के लिए जो उन में से नेक हैं

مِنۡهُمۡ وَاتَّقَوۡا اَجۡرٌ عَظِيۡمٌ ﴿۱۷۲﴾ اَلَّذِيۡنَ قَالَ لَهُمُ

और मुत्तक़ी हैं, उन के लिए भारी अज्र है। वो लोग जिन से लोगों ने

النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدۡ جَمَعُوۡا لَكُمۡ فَاخۡشَوۡهُمۡ

कहा के यक़ीनन ये लोग तुम्हारे लिए जमा हो गए हैं, तो तुम उन से डरो

فَزَادَهُمۡ اِيۡمَانًا ۖ وَّقَالُوۡا حَسۡبُنَا اللّٰهُ وَنِعۡمَ الۡوَكِيۡلُ ﴿۱۷۳﴾

तो उस चीज़ ने उन के ईमान को और बढ़ा दिया। और उन्हों ने कहा के अल्लाह हमें काफी है और बेहतरीन कारसाज़ है।

فَانۡقَلَبُوۡا بِنِعۡمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضۡلٍ لَّمۡ يَمۡسَسۡهُمۡ

फिर वो अल्लाह की नेअमत और अल्लाह के फ़ज़्ल को ले कर लौटे, उन को किसी तकलीफ ने

سُوۡٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوۡا رِضۡوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوۡ فَضۡلٍ عَظِيۡمٍ ﴿۱۷۴﴾

छुवा तक नहीं और उन्हों ने अल्लाह की खुशनूदी का इत्तिबा किया। और अल्लाह भारी फ़ज़्ल वाले हैं।

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيۡطٰنُ يُخَوِّفُ اَوۡلِيَآءَهٗ ۖ فَلَا تَخَافُوۡهُمۡ

ये तो सिर्फ शैतान अपने दोस्तों से डराता है। तो तुम उन से मत डरो

وقف لازم

ع ۱۸

معٓ عند المتقدمین ۱۲

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ

और मुझ से डरो अगर ईमान वाले हो। और आप को ग़मगीन न करें

الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا

वो लोग जो कुफ्र में तेज़ी कर रहे हैं। यक़ीनन वो अल्लाह को ज़रा भी ज़रर नहीं

اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا

पहोंचा सकेंगे। अल्लाह ये चाहते हैं के उन के लिए आखिरत में कोई हिस्सा

فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا

न रखें। और उन के लिए भारी अज़ाब होगा। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र को

الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ

ईमान के बदले में खरीदा, वो अल्लाह को ज़रा भी ज़रर हरगिज़ नहीं पहोंचा सकेंगे। और उन के लिए

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا

दर्दनाक अज़ाब होगा। और वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया वो ये न समझें के जो

نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ۗ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ

हम उन को ढील दे रहे हैं, ये उन के लिए बेहतर है। हम तो सिर्फ उन को ढील दे रहे हैं

لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ مَا كَانَ

इस लिए ताके वो गुनाह में और बढ़ें। और उन के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब होगा। अल्लाह ऐसा नहीं है

اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ

के ईमान वालों को छोड़ दे उस पर जिस पर तुम हो जब तक के अच्छे

الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ

से बुरे को अलग न कर दे। और अल्लाह ऐसा नहीं है के तुम्हें ग़ैब

عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ

पर मुत्तलेअ करे लेकिन अल्लाह मुन्तखब करते हैं अपने पैगम्बरों में से जिसे

يَّشَآءُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا

चाहते हैं। तो अल्लाह पर और उस के पैगम्बर पर ईमान ले आओ। और अगर तुम ईमान लाओगे

وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

और मुत्तक़ी बनोगे तो तुम्हारे लिए भारी अज्र होगा। और वो लोग जो बुख्ल करते हैं

يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ

उन चीज़ों में जो अल्लाह ने उन को अपने फ़ज़्ल से दी हैं, वो ये न समझें के ये बुख़्ल उन के लिए बेहतर है।

بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ

बल्के ये उन के लिए बुरा है। क़यामत के दिन अनक़रीब तौक़ बना कर पेहनाए जाएंगे उन को वो जिस के

الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

साथ उन्हों ने बुख़्ल किया। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की मीरास है।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٨٠ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ

और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। यक़ीनन अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ

ली जिन्हों ने कहा के यक़ीनन अल्लाह फक़ीर है और हम ग़नी हैं।

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ

अनक़रीब हम लिख रहे हैं उस को जो उन्हों ने कहा और उन के अम्बिया को नाहक़ क़त्ल करने को (हम लिख रहे हैं)।

وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝١٨١ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

और हम कहेंगे के आग का अज़ाब चखो। ये अज़ाब उन आमाल के बदले में है जिन को तुम्हारे

اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝١٨٢ ۚ

हाथों ने आगे भेजा और ये के अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करने वाला नहीं है।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ

वो लोग जिन्हों ने कहा के यक़ीनन अल्लाह ने हमें ताकीदी हुक्म दिया है ये के हम ईमान न लाएं

لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ

किसी पैग़म्बर पर जब तक के वो हमारे पास ऐसी कुरबानी न लाए जिस को आग खा जाए। आप फरमा दीजिए के

قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ

यक़ीनन तुम्हारे पास मुझ से पेहले पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए और उस चीज़ को भी ले कर आए

قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١٨٣

जो तुम ने कही। फिर तुम ने उन को क्यूं क़त्ल किया अगर सच्चे हो।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ

फिर अगर वो आप को झुठलाएं तो यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बर झुठलाए गए जो

ع ۱۸ وقف لازم

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۱۸۴﴾ كُلُّ نَفْسٍ

रोशन मोअजिज़ात और लिखी हुई किताबें और रोशन किताब ले कर आए। हर शख्स

ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

मौत का मज़ा चखने वाला है। और तुम्हें तुम्हारे सवाब क़यामत के दिन पूरे पूरे दिए जाएंगे।

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ

फिर जिस शख्स को आग से दूर रख गया और जन्नत में दाखिल किया गया तो यक़ीनन वो कामयाब हो गया।

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۱۸۵﴾ لَتُبْلَوُنَّ

और दुन्यवी ज़िन्दगी नहीं है मगर धोके का सामान। तुम्हें तुम्हारे

فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۣ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ

मालों में और तुम्हारे नफ्सों में ज़रूर आज़माया जाएगा। और उन लोगों की तरफ से जिन को तुम से पेहले

اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا

किताब दी गई और मुशरिकीन की तरफ से बहोत सी ईज़ा पहोंचाने वाली चीज़ें

اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ

ज़रूर सुनोगे। और अगर सब्र करोगे और मुत्तक़ी रहोगे, तो यक़ीनन ये

مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۸۶﴾ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ

ताकीदी उमूर से है। और जब के अल्लाह ने उन लोगों से पुख्ता अहद लिया

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ

जिन को किताब दी गई के तुम उस को लोगों के सामने ज़रूर बयान करोगे

وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ؗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا

और तुम उस को छुपाओगे नहीं। फिर उन्हों ने उस अहद को अपनी पीठ पीछे फैंक दिया और उस के बदले में

بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ

थोड़ी क़ीमत ले ली। फिर बुरा है वो जिस को वो खरीद रहे हैं। आप गुमान न कीजिए

الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا

वो लोग जो खुश होते हैं उन हरकतों पर जो वो कर रहे हैं और वो चाहते हैं के उन की तारीफ की जाए

بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ

ऐसे कामों में जो उन्हों ने नहीं किए तो आप उन को अज़ाब से नजात में गुमान न कीजिए।

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है।

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۸۹﴾ ع اِنَّ فِيْ خَلْقِ
और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। यक़ीनन आसमानों और

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ
ज़मीन के पैदा करने और रात और दिन के आने जाने में

لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾ ج ۙ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ
अक़्ल वालों के लिए निशानियां है। उन के लिए जो अल्लाह को याद करते हैं

قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ يَتَفَكَّرُوْنَ
खड़े और बैठे और अपने पेहलू पर लेट कर और वो गौर व फ़िक्र करते हैं

فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ج رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ
आसमानों और ज़मीन के पैदा करने में। ऐ हमारे रब! तू ने इस को बेकार

هٰذَا بَاطِلًا ج سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾ رَبَّنَآ
पैदा नहीं किया। तू पाक है, तो तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले। ऐ हमारे रब!

اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ط
यक़ीनन जिस को तू आग में दाखिल करेगा तो यक़ीनन तू ने उस को रूस्वा कर दिया।

وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا
और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं होगा। ऐ हमारे रब! यक़ीनन हम ने एक मुनादी को सुना

يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا
जो ईमान की आवाज़ लगा रहा था के ईमान ले आओ अपने रब पर, फिर हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब!

فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا
फिर तू हमारे गुनाह बख्श दे और हम से हमारी बुराइयाँ दूर कर दे और तू हमें नेक लोगों के साथ वफात

مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾ ج رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ
दे। ऐ हमारे रब! और तू हमें वो चीज़ अता फरमा जिस का तू ने हम से वादा किया तेरे पैग़म्बरों की ज़बानी

وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾
और तू हमें क़यामत के दिन रूस्वा न कर। यक़ीनन तू वादे के खिलाफ नहीं करेगा।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ

फिर उन के रब ने उन की दुआ क़बूल कर ली के मैं तुम में से किसी अमल करने वाले के अमल को ज़ायेअ नहीं

مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ

करूंगा, वो मर्दों में से हो या औरतों में से। तुम में से एक

مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ

दूसरे से हो। फिर वो लोग जिन्हों ने हिजरत की और जो निकाल दिए गए अपने घरों से

وَ اُوْذُوْا فِىْ سَبِيْلِىْ وَ قٰتَلُوْا وَ قُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ

और जिन को ईज़ा दी गई मेरे रास्ते में और जिन्हों ने क़िताल किया और वो क़त्ल किए गए तो मैं उन से उन की

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

बुराइयाँ ज़रूर दूर कर दूंगा और मैं उन्हें ज़रूर दाखिल करूंगा ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ

नेहरें बेहती होंगी। अल्लाह की तरफ से सवाब के तौर पर। और अल्लाह के पास

حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ

बेहतरीन सवाब है। आप को धोके में न डाले उन काफिरों का

كَفَرُوْا فِى الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۟ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ

मुल्कों में आना जाना। ये थोड़ा नफा उठाना है, फिर उन का ठिकाना

جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ

जहन्नम है। और वो बुरा बिछौना है। लेकिन वो लोग जो अपने रब से डरते हैं

لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

उन के लिए बाग़ात (जन्नतें) होंगे जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जिन में वो हमेशा

فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ

रहेंगे, अल्लाह की तरफ से ज़ियाफत के तौर पर। और जो अल्लाह के पास है वो नेक लोगों के लिए

لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ

बेहतर है। और यक़ीनन एहले किताब में से अलबत्ता वो भी हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर

وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ

और उस किताब पर जो तुम्हारी तरफ उतारी गई और उस किताब पर जो उन की तरफ उतारी गई जो अल्लाह के लिए खुशूअ करने वाले हैं,

لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

वो अल्लाह की आयात के बदले में थोड़ी क़ीमत नहीं लेते। उन के लिए

اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۹۹﴾

उन के रब के पास उन का अज्र है। यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۫

ऐ ईमान वालो! सब्र करो और एक दूसरे को मज़बूत करो और पेहले से तय्यारी रखो।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۲۰۰﴾

और अल्लाह से डरो ताके फलाह पाओ।

ع ۲۰

اٰيَاتُهَا ۱۷۶ (۴) سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ (۹۲) رُكُوْعَاتُهَا ۲۴

इस में १७६ आयतें हैं सूरह निसा मदीना में नाज़िल हुई और २४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ

ऐ इन्सानो! अपने उस रब से डरो जिस ने तुम्हें पैदा किया

مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا

एक जान से और उन्ही से उन की बीवी को पैदा किया और उन दोनों से

رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ

बहोत से मर्दों और बहोत सी औरतों को फैलाया। और डरो उस अल्लाह से जिस के वासते से तुम एक दूसरे

بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ﴿۱﴾

से सवाल करते हो और रिश्तेदारी तोड़ने से डरो। यक़ीनन अल्लाह तुम पर निगरां है।

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ

और यतीमों को उन का माल दो और हलाल के बदले में हराम को (पाकीज़ा के बदले में गन्दे को)

بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ

मत लो। और उन के मालों को अपने मालों के साथ मिला कर के मत खाओ।

اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ﴿۲﴾ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا

यक़ीनन ये बड़ा गुनाह है। और अगर डरो इस से के तुम इन्साफ नहीं कर सकोगे

فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى

यतीमों के बारे में तो तुम निकाह करो उन औरतों से जो तुम्हें अच्छी लगें, दो दो से

وَثُلٰثَ وَ رُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً

और तीन तीन से और चार चार से। फिर अगर डरो इस से के तुम अदल नहीं कर सकोगे तो फिर एक ही से निकाह करो

اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝۳

या अपनी बांदियों से। ये इस के ज़्यादा क़रीब है के बिल्कुल एक की तरफ तुम माइल न हो जाओ।

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ۭ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ

और औरतों को उन के महर (खुशी से) दो। फिर अगर वो तुम्हें खुशदिली से उस में से

عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـــًٔا مَّرِيْٓـــًٔا ۝۴ وَلَا تُؤْتُوا

कोई चीज़ दें तो तुम उस को खाओ, खुशगवार और आसानी से हलक़ से उतरने वाला होने की हालत में। और

السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا

बेवकूफों को अपना वो माल मत दो जिन पर अल्लाह ने तुम्हें निगरां बनाया है

وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَ قُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا

और उस में से उन को खाना दो और उन को कपड़ा दो और उन से अच्छी

مَّعْرُوْفًا ۝۵ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ

बात कहो। और यतीमों का इम्तिहान लो यहां तक के जब वो निकाह की उम्र को पहोंच जाएं।

فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ

फिर अगर तुम उन की तरफ से अक़्लमन्दी को महसूस करो तो उन को उन के माल दे दो।

وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّ بِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ

और उन को इस्राफ करते हुए मत खा जाओ और जल्दी करते हुए के कहीं वो बड़े हो जाएंगे। और जो

غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ

मालदार हो उसे चाहिए के अफीफ रहे। और जो फक़ीर हो तो वो खा सकता है

بِالْمَعْرُوْفِ ۭ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ

उर्फ के मुताबिक़। फिर जब उन को उन के माल दो

فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝۶ لِلرِّجَالِ

तो तुम उन पर गवाह बना लो। और अल्लाह हिसाब लेने वाला काफी है। मर्दों के लिए

نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَالۡاَقۡرَبُوۡنَ ۖ وَلِلنِّسَآءِ

हिस्सा है उस माल में से जो वालिदैन और रिश्तेदारों ने छोड़ा। और औरतों के लिए

نَصِيۡبٌ مِّمَّا تَرَكَ الۡوَالِدٰنِ وَالۡاَقۡرَبُوۡنَ مِمَّا قَلَّ

हिस्सा है उस माल में से जो वालिदैन और रिश्तेदारों ने छोड़ा, क़लील माल में से

مِنۡهُ اَوۡ كَثُرَ ؕ نَصِيۡبًا مَّفۡرُوۡضًا ﴿۷﴾ وَاِذَا حَضَرَ

या कसीर माल में से। मुकर्रर किए हुए हिस्से के तौर पर। और जब तक़सीम

الۡقِسۡمَةَ اُولُوا الۡقُرۡبٰى وَالۡيَتٰمٰى وَالۡمَسٰكِيۡنُ

के वक्त रिश्तेदार और यतीम और मिसकीन हाज़िर हों

فَارۡزُقُوۡهُمۡ مِّنۡهُ وَقُوۡلُوۡا لَهُمۡ قَوۡلًا مَّعۡرُوۡفًا ﴿۸﴾

तो उस में से उन को खाना दो और उन से अच्छी बात कहो।

وَلۡيَخۡشَ الَّذِيۡنَ لَوۡ تَرَكُوۡا مِنۡ خَلۡفِهِمۡ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا

और उन लोगों को भी डरना चाहिए के अगर वो अपने पीछे कमज़ोर औलाद छोड़ जाते

خَافُوۡا عَلَيۡهِمۡ ۖ فَلۡيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلۡيَقُوۡلُوۡا قَوۡلًا سَدِيۡدًا ﴿۹﴾

तो उन पर वो डरते। तो उन्हें चाहिए के वो अल्लाह से डरें और सीधी बात कहें।

اِنَّ الَّذِيۡنَ يَاۡكُلُوۡنَ اَمۡوَالَ الۡيَتٰمٰى ظُلۡمًا اِنَّمَا

यक़ीनन वो लोग जो यतीमों के माल खाते हैं जुल्म से वो सिर्फ

يَاۡكُلُوۡنَ فِىۡ بُطُوۡنِهِمۡ نَارًا ؕ وَسَيَصۡلَوۡنَ سَعِيۡرًا ﴿۱۰﴾

अपने पेटों में आग भर रहे हैं। और अनक़रीब वो आग में दाखिल होंगे।

يُوۡصِيۡكُمُ اللّٰهُ فِىۡۤ اَوۡلَادِكُمۡ ۗ لِلذَّكَرِ مِثۡلُ حَظِّ

अल्लाह तुम्हें ताकीदी हुक्म देते हैं तुम्हारी औलाद के बारे में के मर्द के लिए दो औरतों के हिस्से के

الۡاُنۡثَيَيۡنِ ۚ فَاِنۡ كُنَّ نِسَآءً فَوۡقَ اثۡنَتَيۡنِ فَلَهُنَّ

बराबर है। फिर अगर वो औरतें दो से ज़्यादा हों तो उन के लिए उस माल का

ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنۡ كَانَتۡ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصۡفُ ؕ

दो तिहाई हिस्सा है जो मरने वाले ने छोड़ा। और अगर वो औरत एक हो तो उस को आधा हिस्सा मिलेगा।

وَلِاَبَوَيۡهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنۡهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ

और मरने वाले के वालिदैन में से हर एक के लिए छट्ठा हिस्सा है उस माल में से जो मरने वाले ने छोड़ा

اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗۤ

अगर उस की औलाद हो। फिर अगर उस की औलाद न हो और उस के वालिदैन

اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗۤ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ

उस के वारिस हों तो उस की माँ को तिहाई मिलेगा। फिर अगर उस मरने वाले के भाई हों तो उस की माँ को

السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَاۤ اَوْ دَيْنٍ ؕ

छठ्ठा हिस्सा मिलेगा वसीय्यत के बाद जिस की वसीय्यत मरने वाला करे और क़र्ज़ अदा करने के बाद।

اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ

तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे, तुम नहीं जानते के नफे के ऐतेबार से उन में तुम से ज़्यादा क़रीब

نَفْعًا ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا

कौन है। ये मुक़र्रर किए हुए हिस्से के तौर पर है अल्लाह की तरफ से। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले,

حَكِيْمًا ۝١١ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ

हिक्मत वाले हैं। और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियों ने छोड़ा अगर

لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ

उन की औलाद न हो। फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए

الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَاۤ

चौथाई हिस्सा है उस माल में से जो बीवियाँ छोड़ें वसीय्यत के बाद जिस की वो वसीय्यत करें

اَوْ دَيْنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ

और क़र्ज़ अदा करने के बाद। और उन औरतों के लिए चौथाई हिस्सा है उस माल में से जो तुम शौहर छोड़ो अगर

لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ

तुम्हारी औलाद न हो। फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो उन्हें आठवां हिस्सा मिलेगा

مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَاۤ اَوْ دَيْنٍ ؕ

उस माल में से जो तुम शौहरों ने छोड़ा वसीय्यत के बाद जिस की तुम वसीय्यत करो और क़र्ज़ अदा करने के बाद।

وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗۤ اَخٌ

और अगर कोई मर्द ऐसा हो के जिस का वारिस बना जा रहा हो कलाला होने की हालत में या कोई औरत हो इस हाल में

اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْۤا

के उस का कोई भाई हो या कोई बेहेन हो, तो उन में से हर एक को छठ्ठा हिस्सा मिलेगा। फिर अगर वो

اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ
उस से ज़्यादा हों तो वो सब तिहाई में शरीक होंगे वसीय्यत के बाद

وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَآرٍّ وَصِيَّةً
जिस की वसीय्यत की जाए और क़र्ज़ अदा करने के बाद, इस हाल में के किसी को ज़रर नहीं पहोंचाया जाएगा। ये

مِّنَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝١٢ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ
अल्लाह की तरफ से ताकीदी हुक्म है। और अल्लाह इल्म वाले, हिल्म वाले हैं। ये अल्लाह की हुदूद हैं।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा तो अल्लाह उसे जन्नतों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٣
नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। और ये भारी कामयाबी है।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ
और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफरमानी करेगा और उस की हुदूद से तजावुज़ करेगा, तो अल्लाह उसे आग में

نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝١٤ وَالّٰتِيْ
दाखिल करेंगे, उस में वो हमेशा रहेगा। और उस के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब होगा। और जो

يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا
औरतें तुम्हारी औरतों में से बेहयाई (यानी ज़िना) का इर्तिकाब करें तो तुम उन के

عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ
खिलाफ तुम में से चार को गवाह बना लो। फिर अगर वो गवाह गवाही दें तो उन औरतों को रोक लो घरों में

فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ
यहां तक के उन को मौत आ जाए या अल्लाह उन के लिए

لَهُنَّ سَبِيْلًا ۝١٥ وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا
कोई दूसरा रास्ता पैदा कर दे। और तुम में से जो मर्द इस बेहयाई को करें (लवातत) तो उन दोनों को ईज़ा दो।

فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا اِنَّ اللّٰهَ
फिर अगर वो तौबा करें और इस्लाह करें तो उन से ऐराज़ कर लो। यक़ीनन अल्लाह

كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝١٦ اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ
तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम वाला है। सिर्फ उन लोगों की तौबा क़बूल करना अल्लाह के ज़िम्मे है

يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ

जो बुरे काम करते हैं नावाक़िफ़ीय्यत से, फिर क़रीब ही में तौबा कर

مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ

लेते हैं, तो अल्लाह उन की तौबा क़बूल करेंगे। और अल्लाह

عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١٧ وَ لَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ

इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और उन लोगों की तौबा क़बूल नहीं है जो बुराइयाँ करते

السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ

रेहते हैं। यहां तक के जब उन में से किसी एक की मौत का वक़्त क़रीब आ जाता है, तब वो केहता है के

اِنِّىْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ

मैं अब तौबा करता हूँ और न उन लोगों की तौबा क़बूल की जाती है जो मरते हैं इस हाल में के वो काफिर होते हैं।

اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٨ يٰٓاَيُّهَا

हम ने उन के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ

ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं है के औरतों के ज़बर्दस्ती वारिस

كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ

बन जाओ। और उन औरतों को मत रोको ताके तुम ले लो उस माल का कुछ हिस्सा

مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ

जो तुम ने उन औरतों को दिया है, मगर ये के वो खुली बेहयाई करें।

وَ عَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ

और उन के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो भलाई के मुताबिक़। फिर अगर उन्हें नापसन्द करो

فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا

तो शायद के तुम किसी चीज़ को नापसन्द करो और अल्लाह ने उस में बहोत सारी भलाई

كَثِيْرًا ۝١٩ وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ

रखी हो। और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी बदलने का इरादा

زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ

करो, इस हाल में के तुम ने उन में से किसी एक को ढेरों माल दिया हो, तब भी उस में से कुछ

شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ۝۲۰ وَ كَيْفَ

मत लो। क्या तुम उस को लेते हो बोहतान होने की हालत में और खुला हुवा गुनाह होने की हालत में? और तुम कैसे

تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ

उस को लेते हो हालांके तुम में से एक दूसरे तक पहोंच चुका है

وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝۲۱ وَلَا تَنْكِحُوْا

और उन औरतों ने तुम से भारी अहद लिया है? और निकाह मत करो

مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ

उन औरतों से जिन से तुम्हारे बाप दादा ने निकाह किया हो मगर वो जो पेहले हो चुका।

اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝۲۲

यक़ीनन ये बेहयाई है और अल्लाह की नफरत का मूजिब है और बुरा रास्ता है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَ اَخَوٰتُكُمْ

तुम पर हराम की गईं तुम्हारी माएं और तुम्हारी बेटियाँ और तुम्हारी बेहनें

وَ عَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ

और तुम्हारी फूफियाँ और तुम्हारी खालाएं और भाई की बेटियाँ और बेहेन की बेटियाँ

وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِىْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ

और तुम्हरी वो माएं जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी रज़ाई बेहनें

وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِىْ فِىْ حُجُوْرِكُمْ

और तुम्हारी बीवियों की माएं और तुम्हारी रबीबा औलाद, जो तुम्हारी परवरिश में हैं

مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِىْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ز فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا

तुम्हारी बीवियों की तरफ से, (उन बीवियों की तरफ से) जिन से तुम ने दुखूल किया (सोहबत की)। फिर अगर तुम

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ز وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ

ने उन से दुखूल न किया हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है। और हराम की गईं तुम्हारे उन बेटों की बहुएं

الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ

जो तुम्हारी पुश्तों से हैं। और हराम किया गया ये के तुम जमा करो दो बेहनों को

اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۲۳

मगर वो जो पेहले हो चुका। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ

और हराम की गईं औरतों में से शौहर वाली औरतें मगर तुम्हारी बांदियाँ।

كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ

ये तुम पर अल्लाह की तरफ से लिखा हुवा (फर्ज़ किया हुवा) है। और तुम्हारे लिए उस के अलावा (औरतें) हलाल हैं

اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ

इस तरह के तलब करो अपने माल के ज़रिए इस हाल में के तुम निकाह करने वाले हो, ज़िना करने वाले न हो।

فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ

फिर उन में से जिन से तुम ने (सोहबत से) फाइदा उठाया तो उन को उन का महर दे दो जो

فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ

मुक़र्रर किया था। और तुम पर कोई गुनाह नहीं है उस में जिस पर आपस में तुम राज़ी हो जाओ

مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۲۴﴾

मुकर्रर कर लेने के बाद। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ

और तुम में से जो ताक़त न रखे इस की के वो पाकदामन ईमान वाली औरतों से

الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ

निकाह करे, तो फिर तुम्हारी लौंडियाँ (सही), तुम्हारी मोमिन बांदियों

الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ

में से। और अल्लाह खूब जानता है तुम्हारे ईमान को। तुम में से एक

مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ

दूसरे से हो। तो उन से निकाह करो उन के मालिकों की इजाज़त से और उन को

اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ

उन का महर दो उर्फ के मुताबिक़, इस हाल में के वो पाकदामनी इखतियार करने वाली हों और ज़िना करने वाली न हों

وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ

और चुपके चुपके दोस्त बनाने वाली न हों। फिर जब वो बांदियाँ, शादी शुदा होने के बाद, फिर अगर वो

بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ

ज़िना का इर्तिकाब करें तो उन बांदियों पर उस सज़ा का आधा हिस्सा है जो आज़ाद पाकदामन औरतों

الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ

पर है। ये उस के लिए है जो तुम में से ज़िना की मशक़्क़त में पड़ने से डरता हो।

وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۵﴾ ع يُرِيْدُ

और ये के सब्र करो ये तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। अल्लाह चाहते

اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَ يَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ

हैं के तुम्हारे लिए साफ साफ बयान करें और तुम्हें हिदायत दें उन लोगों के रास्ते की

مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۲۶﴾ وَاللّٰهُ

जो तुम से पेहले थे और तुम्हारी तौबा क़बूल करें। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और अल्लाह

يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۟ وَ يُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ

चाहते हैं के तुम्हारी तौबा क़बूल करें। और वो लोग जो ख्वाहिशात का इत्तिबा

الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿۲۷﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ

करते हैं वो ये चाहते हैं के तुम बहोत ज़्यादा माइल हो जाओ। अल्लाह ये चाहते हैं

اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَ خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿۲۸﴾

के तुम से तखफीफ करें। और इन्सान कमज़ोर पैदा किया गया है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ

ऐ ईमान वालो! अपने माल आपस में बातिल तरीक़े से

بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟

मत खाओ, मगर ये के वो तुम्हारी आपस की रज़ामन्दी से तिजारत हो।

وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۲۹﴾

और अपने आप को क़त्ल मत करो। यक़ीनन अल्लाह तुम पर मेहरबान है।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّ ظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ

और जो उस को करेगा ज़्यादती और ज़ुल्म से तो हम उसे आग में दाखिल

نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾ اِنْ تَجْتَنِبُوْا

करेंगे। और ये अल्लाह पर आसान है। अगर तुम बचोगे

كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ

उन बड़े गुनाहों से जिन से तुम्हें मना किया जा रहा है तो हम तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देंगे और तुम्हें

مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ

इज़्ज़त की जगह में दाखिल करेंगे। और उस की तमन्ना मत करो जिस के ज़रिए तुम में से एक को

بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ

दूसरे पर अल्लाह ने फज़ीलत दी है। मर्दों के लिए हिस्सा है उल माल में से जो वो कमाएं।

وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْـَٔلُوا اللّٰهَ

और औरतों के लिए हिस्सा है उस माल में से जो वो कमाएं। और अल्लाह से उस के

مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾

फज़्ल का सवाल करो। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِیَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ

और हर एक के लिए हम ने वारिस मुक़र्रर कर दिए हैं उस माल के जो वालिदैन और रिश्तेदारों ने छोड़ा।

وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ

और उन्हों ने छोड़ा जिन से तुम ने अक़्द (अहद) किया है, तो तुम उन को उन का हिस्सा दो।

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾ اَلرِّجَالُ

यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को देख रहे हैं। मर्द

قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ

निगरां हैं औरतों पर इस वजह से के अल्लाह ने उन में से बाज़ को बाज़ पर

عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ

फज़ीलत दी है और इस वजह से के वो अपने अमवाल में से खर्च करते हैं। तो नेक औरतें वो हैं जो

قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِیْ

खुशूअ करने वाली हों और ग़ैबत में हिफाज़त करने वाली हों उस में जिस पर अल्लाह ने मुहाफ़िज़ बनाया है। और जिन

تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ

औरतों की नाफरमानी का तुम्हें अन्देशा हो, तो उन को नसीहत करो और उन को अलग छोड़ दो

فِی الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا

बिस्तरों में और तुम उन को मारो (अय्यूब अलैहिस्सलाम की तरह)। फिर अगर वो तुम्हारा केहना मान लें तो तुम उन के

عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

खिलाफ हुज्जत तलाश मत किया करो। यक़ीनन अल्लाह बरतर है, बड़ा है।

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا

और अगर तुम्हें अन्देशा हो आपस में उन दोनों के झगड़े का तो एक हकम भेजो शौहर के

مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا

कुम्बे की तरफ से और एक हकम भेजो बीवी के कुम्बे की तरफ से। अगर वो दोनों हकम सुल्ह कराने का इरादा करेंगे

يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿۳۵﴾

तो अल्लाह उन के दरमियान मुवाफक़त डाल देंगे। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले, बाखबर हैं।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ بِالْوَالِدَيْنِ

और अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ किसी चीज़ को शरीक मत ठेहराओ और वालिदैन के साथ

اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

हुस्ने सुलूक करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों के साथ

وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ

और रिश्तेदार पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी के साथ और पेहलू वाले साथी

بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ

के साथ और रास्ता चलते मुसाफिर के साथ और अपने गुलाम बांदियों के साथ।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرًا ﴿۳۶﴾ ۙ

यक़ीनन अल्लाह उस शख्स से महब्बत नहीं करते जो अकड़ने वाला, फख्र करने वाला है।

اِۨلَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ

वो लोग जो बुख्ल करते हैं और इन्सानों को बुख्ल का हुक्म देते हैं

وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاَعْتَدْنَا

और छुपाते हैं उस को जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन को दिया है। और हम ने काफिरों के लिए

لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۳۷﴾ ۚ وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ

रूस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है। और जो अपने माल

اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

खर्च करते हैं लोगों के दिखावे के लिए और अल्लाह पर ईमान नहीं रखते

وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا

और आखिरी दिन पर ईमान नहीं रखते। और शैतान जिस का साथी बन गया

فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾ وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

तो वो बुरा साथी है। और उन पर क्या बोझ होता अगर वो अल्लाह पर ईमान लाते

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَكَانَ

और आखिरी दिन पर ईमान लाते और खर्च करते उस माल में से जो अल्लाह ने उन को रोज़ी के तौर पर दिया। और

اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿٣٩﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ

अल्लाह उन को खूब जानने वाले हैं। यक़ीनन अल्लाह ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं करते।

وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ

और अगर कोई एक नेकी होगी तो अल्लाह उसे कई गुना करेंगे और अपनी तरफ से भारी अज्र

اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾ فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ ۢ بِشَهِيْدٍ

देंगे। फिर क्या हाल होगा जब के हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे

وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾ؕ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ

और हम आप को उन के खिलाफ गवाह बना कर लाएंगे। उस दिन तमन्ना करेंगे वो लोग

كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ

जो काफिर हैं और जिन्हों ने रसूल की नाफरमानी की के काश के उन पर ज़मीन बराबर कर दी जाती।

وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ﴿٤٢﴾ۧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और अल्लाह से वो किसी बात को छुपा नहीं सकेंगे। ऐ ईमान वालो!

لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا

नमाज़ के क़रीब मत जाओ इस हाल में के तुम नशे में हो यहां तक के तुम समझने लगो

مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ

उस को जो बोल रहे हो और न जनाबत की हालत में (नमाज़ के क़रीब जाओ) मगर रास्ता उबूर करते हुए

حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ

जब तक के गुस्ल न कर लो। और अगर बीमार हो या सफर पर हो या तुम में से

اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ

कोई क़ज़ाए हाजत से आया हो या तुम ने औरतों से मुक़ारबत की हो

فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا

फिर पानी न पाओ तो पाक मिट्टी पर तयम्मुम कर लो, फिर अपने चेहरों

وقف النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

ع ٦

بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿۴۳﴾

और हाथों पर फेर लो। यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ करने वाला, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ

क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन को किताब का एक हिस्सा दिया गया

يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿۴۴﴾

जो गुमराही को खरीदते हैं और ये चाहते हैं के तुम रास्ते से भटक जाओ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى

और अल्लाह तुम्हारे दुशमनों को खूब जानते हैं। और अल्लाह काफी कारसाज़ हैं। और अल्लाह

بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿۴۵﴾ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ

काफी मददगार हैं। उन लोगों में से जो यहूदी हैं वो कलिमात को अपने मआनी

عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَ يَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَ عَصَيْنَا

से फेरते हैं और केहते हैं وَعَصَيْنَا سَمِعْنَا

وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّ رَاعِنَا لَيًّا ۢ بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا

और اِسْمَعْ غَيْرَمُسْمَعٍ केहते हैं और رَاعِنَا केहते हैं अपनी ज़बानों को मरोड़ते हुए (यानी رَاعِيْنَا) और दीन में

فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا

तानाज़नी करते हुए। और अगर वो केहते के سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا

وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ

और اِسْمَعْ وَانْظُرْنَا तो ये उन के लिए ज़्यादा बेहतर होता और ज़्यादा सीधा रखने वाला होता।

وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۴۶﴾

लेकिन अल्लाह ने उन के कुफ्र की वजह से उन पर लानत फरमाई, फिर वो ईमान नहीं लाएंगे मगर थोड़े।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا

ऐ एहले किताब! ईमान ले आओ उस कुरआन पर जिस को हम ने उतारा,

مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ

जो सच्चा बतलाने वाला है उस तौरात को जो तुम्हारे साथ है इस से पेहले के हम चेहरों को

وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا

मिटा दें, के हम उन चेहरों को उस के पीछे की तरफ कर दें या हम उन पर लानत करें जैसा

لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝٤٧

के हम ने सनीचर वालों पर लानत की। और अल्लाह का हुक्म पूरा हो कर रहा।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ

यक़ीनन अल्लाह मग़फिरत नहीं करेंगे इस की के उस के साथ शरीक ठेहराया जाए और मग़फिरत कर देंगे उस के

ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى

अलावा जिस के लिए चाहेंगे। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएगा तो यक़ीनन उस ने भारी गुनाह का

اِثْمًا عَظِيْمًا ۝٤٨ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ

इर्तिकाब किया। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जो अपने आप को मुज़क्का (पाक व साफ) बता रहे हैं?

بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝٤٩

बल्के अल्लाह मुक़द्दस बनाते हैं जिसे चाहते हैं और तागे के बराबर भी उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى

आप देखिए के कैसे वो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं। और यही

بِهٖٓ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۝٥٠ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا

सरीह गुनाह के लिए काफी है। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को जिन को किताब का

مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَ الطَّاغُوْتِ

एक हिस्सा दिया गया वो ईमान रखते हैं बुत पर और शैतान पर

وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ اَهْدٰى

और केहते हैं काफिरों के मुतअल्लिक़ के ये ईमान वालों की

مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ۝٥١ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ

बनिस्बत ज़्यादा सीधी राह पर हैं। ये वो लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत

اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ۝٥٢

फरमाई। और जिस पर अल्लाह लानत फरमाए तो आप उस के लिए कोई मददगार हरगिज़ नहीं पाओगे।

اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ

क्या उन के पास सलतनत का कोई हिस्सा है? फिर तब तो वो लोगों को खजूर की गुठली के सूराख के बराबर

النَّاسَ نَقِيْرًا ۝٥٣ اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى

भी नहीं देंगे। क्या उन्हें लोगों से हसद है उस पर

مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ
जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन को दिया है। यक़ीनन हम ने आले इब्राहीम
اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا
को किताब और हिक्मत दी और हम ने उन्हें मुल्के अज़ीम दिया।
عَظِيْمًا ﴿۵۴﴾ فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَ مِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ
फिर उन में से कुछ लोग उस पर ईमान ले आए और उन में से कुछ उस से दूर
عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
भागे। और जहन्नम जलाने के लिए काफी है। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने हमारी आयात के साथ
بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ
कुफ्र किया, अनक़रीब हम उन्हें आग में दाखिल करेंगे। जब कभी उन की खालें जल जाएंगी,
بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ
तो हम उस के अलावा और खाल से बदल देंगे ताके वो अज़ाब चखते रहें।
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। और वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल
الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
करते रहे, अनक़रीब हम उन्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे से
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ
नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। उन के लिए उन में पाक साफ बीवियाँ
مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ
होंगी। और हम उन्हें घने साए में दाखिल करेंगे। यक़ीनन अल्लाह
يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ
तुम्हें हुक्म देते हैं इस का के अमानत वालों की अमानतें अदा कर दो।
وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ
और जब तुम लोगों के दरमियान फैसला करो तो इन्साफ के साथ फैसला करो।
اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا
यक़ीनन अल्लाह तुम्हें कित्नी अच्छी चीज़ की नसीहत करते हैं। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले,

ركوع

بَصِيْرًا ﴿٥٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ

देखने वाले हैं। ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ

और रसूल की इताअत करो और तुम में से उलुल अम्र की इताअत करो।

فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِىْ شَىْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ

फिर अगर तुम किसी चीज़ में आपस में झगड़ो तो उस को पेश करो अल्लाह और रसूल की तरफ

اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ

अगर ईमान रखते हो अल्लाह पर और आखिरी दिन पर। ये

خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٥٩﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ

बेहतर है और अच्छे अन्जाम वाला है। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को

يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ

जो दावा करते हैं के वो ईमान रखते हैं उस कुरआन पर जो आप की तरफ उतारा गया और उन किताबों पर जो आप

مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْۤا اِلَى الطَّاغُوْتِ

से पेहले उतारी गईं, वो ये चाहते हैं के वो फैसला ले जाएं शैतान के पास

وَقَدْ اُمِرُوْۤا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ

हालांके उन्हें हुक्म दिया गया है के वो उस के साथ कुफ्र करें। और शैतान तो ये चाहता है

اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿٦٠﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا

के वो उन्हें दूर की गुमराही में गुमराह कर दे। और जब उन से कहा जाता है के आओ

اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ

उस की तरफ जो अल्लाह ने उतारा और रसूल की तरफ आओ, तो आप मुनाफिक़ीन को देखोगे

يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿٦١﴾ فَكَيْفَ اِذَاۤ اَصَابَتْهُمْ

के वो आप से ऐराज़ करते हैं। फिर क्या हाल होगा जब उन को मुसीबत

مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ

पहोंचेगी उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे, फिर वो आप के पास आते हैं

يَحْلِفُوْنَ ۖۗ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّاۤ اِحْسَانًا

अल्लाह की क़स्में खाते हुए के हम ने तो इरादा नहीं किया मगर नेकी का

ع ٨ ٥

وَّتَوْفِيْقًا ﴿۶۲﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا
और आपस में मुवाफक़त का। यही लोग हैं के अल्लाह खूब जानते हैं उसे जो
فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ
उन के दिलों में है। इस लिए आप उन की तरफ से ऐराज़ कीजिए और उन्हें नसीहत कीजिए और उन के
فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًاۢ بَلِيْغًا ﴿۶۳﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ
सामने उन के बारे में क़ौले बलीग़ (दिल में उतरने वाली बात) कहिए। और हम ने कोई रसूल नहीं भेजे
اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
मगर इस लिए ताके उन की इताअत की जाए अल्लाह के हुक्म से। और जब उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म कर लिया था
جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ
तो अगर वो आप के पास आते, फिर अल्लाह से इस्तिग़फार करते ओर उन के लिए रसूल भी इस्तिग़फार करते
لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
तो अलबत्ता वो अल्लाह को बहोत ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला पाते। फिर आप के रब की क़सम! बिल्कुल ये लोग
حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا
मोमिन नहीं हो सकते जब तक के वो आप को हकम न बनाएं उन के आपस के झगड़ों में, फिर वो अपने दिलों
فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۶۵﴾
में कोई तंगी भी न पाएं आप के फैसले से और दिल से मान लें।
وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اَوِاخْرُجُوْا
और अगर हम उन पर ये फर्ज़ कर देते के अपने आप को हलाक कर दो या अपने
مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ
घरों से निकल जाओ तो उस को न करते मगर उन में से थोड़े लोग। और अगर वो
فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ
करेंगे वो जिस की उन्हें नसीहत की जा रही है तो उन के लिए बेहतर होगा और ज़्यादा साबित क़दम
تَثْبِيْتًا ﴿۶۶﴾ وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۶۷﴾
रखने वाला होगा। और तब तो हम उन्हें अपनी तरफ से अज्रे अज़ीम देंगे।
وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۶۸﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ
और हम उन्हें सिराते मुस्तक़ीम की रहनुमाई करेंगे। और जो अल्लाह और रसूल की

وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ

इताअत करेगा तो ये लोग उन के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इन्आम फरमाया

مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ

अम्बिया, और सिद्दीक़ीन, और शुहदा और सालिहीन में से।

وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ۝٦٩ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ؕ

और रिफाक़त के लिए ये लोग अच्छे हैं। ये अल्लाह की तरफ से फज़्ल है।

وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ۝٧٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا

और अल्लाह काफी जानने वाला है। ऐ ईमान वालो! अपने बचाव

حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا ۝٧١

के हथ्यार ले लो, फिर छोटी छोटी जमाअतें बन कर निकलो या तुम इकट्ठे निकलो।

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ

और यक़ीनन तुम में से कुछ लोग वो हैं जो देर लगाते हैं। फिर अगर तुम्हें मुसीबत पहोंचे तो वो केहते हैं

قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ۝٧٢

के अल्लाह ने मेरे ऊपर इन्आम फरमाया के मैं उन के साथ मौजूद नहीं था।

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ

और अगर तुम्हें अल्लाह का फज़्ल पहोंचे तो वो ज़रूर कहेगा, गोया

لَّمْ تَكُنْۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ

तुम्हारे और उस के दरमियान दोस्ती थी ही नहीं, (वो कहेगा के) काश के मैं उन के साथ होता,

فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝٧٣ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

फिर मैं भी भारी कामयाबी से कामयाब हो जाता। फिर चाहिए के अल्लाह के रास्ते में क़िताल करें

الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ

वो लोग जो आखिरत के मुक़ाबले में दुन्यवी ज़िन्दगी को बेच देते हैं। और जो भी

يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ

अल्लाह के रास्ते में क़िताल करे, फिर वो क़त्ल हो जाए या ग़ालिब आए तो हम

نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٧٤ وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ

अनक़रीब उसे भारी अज्र देंगे। और तुम्हें क्या हुवा के तुम अल्लाह के रास्ते में क़िताल

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
नहीं करते हालांके मर्द और औरतें और बच्चे जिन्हें कमज़ोर कर के

وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ
रखा गया है जो केहते हैं के ए हमारे रब! हमें इस बस्ती से निकाल जिस के बसने

الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
वाले ज़ालिम हैं। और हमारे लिए अपनी तरफ से हिमायती मुतअय्यन

وَلِيًّا ۚۙ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ۝٧٥
फरमा। और हमारे लिए अपनी तरफ से नुसरत करने वाला मुतअय्यन फरमा।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ
वो लोग जो ईमान लाए वो अल्लाह के रास्ते में क़िताल करते हैं। और जो

كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا
काफिर हैं वो शैतान के रास्ते में क़िताल करते हैं, तो तुम शैतान के

اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝٧٦
दोस्तों से क़िताल करो। यक़ीनन शैतान का मक्र कमज़ोर है।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ
क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को जिन से कहा गया था के तुम अपने हाथ रोके रहो

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो। फिर जब उन पर क़िताल फर्ज़

الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ
किया गया तो अचानक उन में से एक जमाअत इन्सानों से डरने लगी अल्लाह से डरने की

اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ
तरह या उस से भी ज़्यादा। और वो केहते हैं के ऐ हमारे रब! तू ने हम पर क़िताल

عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ؕ قُلْ
क्यूं फर्ज़ किया? तू ने हमें क़रीबी मुद्दत तक (जीने की) क्यूं मोहलत नहीं दी? आप फरमा दीजिए के

مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۣ
दुन्या का फाइदा थोड़ा है। और आखिरत बेहतर है उस शख्स के लिए जो मुत्तक़ी है।

وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿۷۷﴾ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ

और तुम पर एक तागे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। तुम जहां कहीं भी होगे तो मौत तुम्हें

الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ

पकड़ लेगी अगर्चे तुम ऊँचे ऊँचे क़िल्ओं में हो। और अगर उन्हें कोई

حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ

भलाई पहोंचती है तो केहते हैं के ये अल्लाह की तरफ से है। और अगर उन्हें कोई मुसीबत

سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ كُلٌّ مِّنْ

पहोंचती है तो केहते हैं के ये आप की तरफ से है। आप फरमा दीजिए के सब कुछ

عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ

अल्लाह की तरफ से है। फिर इस क़ौम को क्या हुवा के वो बात समझने के क़रीब भी नहीं

حَدِيْثًا ﴿۷۸﴾ مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ز

होते। (ऐ मुखातब!) तुझे जो भलाई पहोंचे वो अल्लाह की तरफ से है।

وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَ اَرْسَلْنٰكَ

और तुझे जो मुसीबत पहोंचे वो तेरी अपनी तरफ से है। और हम ने आप को

لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿۷۹﴾ مَنْ يُّطِعِ

तमाम इन्सानों के लिए रसूल बना कर भेजा है। और अल्लाह काफी गवाह है। जो रसूल की इताअत

الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ

करेगा तो यक़ीनन उस ने अल्लाह की इताअत की। और जो मुंह मोड़ेगा तो फिर हम ने आप को उन पर निगरां बना कर

عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ﴿۸۰﴾ وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ز فَاِذَا بَرَزُوْا

नहीं भेजा। और ये केहते हैं के हमारा काम तो खुशी से बात को मानना है। लेकिन जब वो आप के पास से बाहर निकलते

مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ

हैं तो उन में से एक जमाअत रात को चुपके चुपके बातें करती है उस के अलावा जो वो पेहले केह रही थी। और अल्लाह लिख

يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَ تَوَكَّلْ

रहे हैं उस को जो वो रात को चुपके चुपके बातें करते हैं। फिर आप उन से ऐराज़ कीजिए और अल्लाह पर तवक्कुल

عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۸۱﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ

कीजिए। और अल्लाह काफी कारसाज़ है। क्या फिर वो कुरआन में तदब्बुर

الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ
नहीं करते? और अगर ये (कुरआन) अल्लाह के अलावा की तरफ से होता तो वो ज़रूर उस में
اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ
बहोत सा इखतिलाफ पाते। और जब अमन या खौफ की कोई बात
اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ
आती है, तो वो उस को फैला देते हैं। और अगर वो उस को पेश करते रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ
وَاِلٰٓى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ
और सहाबा में से उलुल अम्र की तरफ तो ज़रूर उस को जानते वो लोग जो उन में से उस से इस्तिम्बात कर
مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ
सकते हैं। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की मेहरबानी न होती तो तुम भी शैतान के
الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾ فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ
पीछे पड़ जाते मगर थोड़े। इस लिए आप अल्लाह के रास्ते में क़िताल कीजिए।
لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ
आप को मुकल्लफ नहीं बनाया जाता मगर आप की ज़ात का और आप ईमान वालों को उभारिए। हो सकता है के अल्लाह
اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ
काफिरों के ज़ोर को रोक दे। और अल्लाह ज़्यादा सख्त लड़ाई वाला और ज़्यादा सख्त इबरत
تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ
दिलाने वाला है। जो नेक काम में सिफारिश करे तो उस के लिए उस
نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ
में से हिस्सा होगा। और जो बुरे काम की सिफारिश करे तो उस के लिए
لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾
उस में से हिस्सा होगा। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है।
وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ
और जब तुम्हें सलाम किया जाए तो तुम उस से बेहतर सलाम के साथ जवाब दो या उसी को दोहरा दो।
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ
यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद

النصف

اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ
नहीं। वो तुम्हें ज़रूर जमा करेगा क़यामत के दिन में जिस में कोई शक नहीं।

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿۸۷﴾ فَمَا لَكُمْ
और अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात किस की हो सकती है? फिर तुम्हें क्या हुवा के

فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ
मुनाफ़िक़ीन के बारे में दो जमाअतें बन रहे हो, हालांके अल्लाह ने उन के आमाल की वजह से उन को औंधा कर दिया है।

اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ
क्या ये चाहते हो के तुम उन को हिदायत दो जिन को अल्लाह ने गुमराह किया? और जिस को अल्लाह

اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ
गुमराह कर दे तो आप उस के लिए कोई रास्ता हरगिज़ नहीं पाओगे। वो चाहते हैं के काश के तुम भी काफ़िर बन जाओ

كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ
जैसा के वो काफ़िर बन गए हैं के फिर तुम और वो बराबर हो जाओ, तो तुम उन में से किसी को दोस्त

اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا
मत बनाओ जब तक के वो अल्लाह के रास्ते में हिजरत न करें। फिर अगर वो ऐराज़ करें

فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪
तो तुम उन को पकड़ो और उन को क़त्ल करो जहाँ तुम उन को पाओ।

وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۸۹﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ
और तुम उन में से किसी को मददगार और दोस्त मत बनाओ। मगर वो लोग जो

يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ
ऐसी क़ौम से तअल्लुक़ रखते हैं के तुम्हारे और उन के दरमियान में मुआहदा है या वो तुम्हारे पास आएं

حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا
इस हाल में के उन के सीने तंग हैं इस से के वो तुम से क़िताल करें या अपनी क़ौम से

قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ
क़िताल करें। और अगर अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर मुसल्लत करता, फिर वो तुम से क़िताल करते।

فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ
फिर अगर ये लोग तुम से अलग रहें, फिर तुम से क़िताल न करें और तुम्हारी तरफ़ सुल्ह को

السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ۝۹۰
डालें, तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर कोई रास्ता नहीं बनाया।

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ
अनक़रीब तुम दूसरों को पाओगे जो चाहते हैं के वो तुम से अमन में रहें

وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا
और अपनी क़ौम से भी अमन में रहें। जब कभी वो फितने के लिए बुलाए जाते हैं तो उस में औंधे

فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ
गिरते हैं। फिर अगर वो तुम से अलग न रहें और तुम्हारी तरफ सुल्ह को न डालें

وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
और अपने हाथ न रोकें तो उन को पकड़ो और उन को क़त्ल करो जहाँ

ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا
उन को पाओ। और यही हैं के उन पर हम ने तुम्हारे लिए वाज़ेह दलील मुक़र्रर

مُّبِيْنًا ۝۹۱ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا
कर दी है। और किसी मोमिन के लिए जाइज़ नहीं है के किसी मोमिन को क़त्ल करे मगर ग़लती

اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ
से। और जो किसी मोमिन को ग़लती से भी क़त्ल करेगा तो उसे एक मोमिन गर्दन (गुलाम या बांदी) को आज़ाद

مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ
करना है और दियत है जो सुपुर्द की जाएगी मक़्तूल के वुरसा को मगर

اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ
ये के वो मुआफ कर दें। फिर अगर वो मक़्तूल तुम्हारे दुशमन की क़ौम में से हो और वो

مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ
मोमिन भी हो तो फिर एक मोमिन गर्दन को आज़ाद करना है। और अगर वो

مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ
ऐसी क़ौम में से हो के तुम्हारे और उन के दरमियान में मुआहदा हो तो दियत है

مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ
जो सुपुर्द की जाएगी मक़्तूल के वुरसा को और एक मोमिन गर्दन को आज़ाद करना है।

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ز تَوْبَةً
फिर जो उस को न पाए तो दो महीने के लगातार रोज़े रखने हैं। अल्लाह की तरफ से
مِّنَ اللّٰهِ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۹۲﴾ وَمَنْ
तौबा के तौर पर। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और जो
يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا
किसी मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस की सज़ा जहन्नम है, जिस में वो हमेशा
فِيْهَا وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَ اَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا
रहेगा और अल्लाह का उस पर गज़ब है और उस पर लानत है और अल्लाह ने उस के लिए भारी अज़ाब
عَظِيْمًا ﴿۹۳﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ضَرَبْتُمْ
तय्यार कर रखा है। ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के रास्ते में
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰۤى
सफर करो तो अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लो और उस शख्स के मुतअल्लिक़ जो तुम्हें सलाम करे
اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ج تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ
उस को यूं मत कहो के तू मोमिन नहीं है। क्या तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ز فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ط كَذٰلِكَ
सामान चाहते हो? फिर अल्लाह के पास बहोत सी ग़नीमतें हैं। इसी तरह
كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ط
इस से पेहले तुम भी थे, फिर अल्लाह ने तुम पर एहसान फरमाया तो अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लिया करो।
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۹۴﴾ لَا يَسْتَوِى
यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर हैं। ईमान वालों में से
الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ
जिहाद से बैठने वाले जो माजूरीन के अलावा हों,
وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ط
वो और अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और जानों के ज़रिए जिहाद करने वाले दोनों बराबर नहीं हो सकते।
فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ
अल्लाह ने अपने मालों और जानों के ज़रिए जिहाद करने वालों को फज़ीलत दी है

عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ

जिहाद से बैठने वालों पर एक दरजे के ऐतेबार से। ओर हर एक से अल्लाह ने अच्छे बदले का

الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ

वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को जिहाद से बैठने वालों पर फज़ीलत दी है

اَجْرًا عَظِيْمًا ۙ﴿٩٥﴾ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ

भारी अज्र से। जो अल्लाह की तरफ से दरजात होंगे और मग़फिरत और रहमत होगी।

وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ

और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। यक़ीनन वो लोग जो अपनी जानों पर

الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ

ज़ुल्म करने वाले हैं, उन की फरिश्ते जान निकालते हैं तो फरिश्ते पूछते हैं के तुम किस जगह में थे?

قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا

तो वो केहते हैं के हम उस मुल्क में कमज़ोर कर के रखे गए थे। तो वो केहते हैं के

اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ

क्या अल्लाह की ज़मीन वसीअ नहीं थी के तुम उस में हिजरत कर जाते?

فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۙ﴿٩٧﴾

फिर उन का ठिकाना जहन्नम है। और वो बुरी जगह है।

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ

मगर वो जो कमज़ोर कर के रखे गए हों मर्दों और औरतों

وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ

और बच्चों में से, जो किसी हीले की ताक़त नहीं रखते और वो न कोई रास्ता

سَبِيْلًا ۙ﴿٩٨﴾ فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ

जानते हैं। तो उम्मीद है के अल्लाह उन्हें मुआफ कर दें।

وَ كَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُّهَاجِرْ

और अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ करने वाले, बहोत ज़्यादा बख्शने वाले हैं। और जो हिजरत करेगा

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا

अल्लाह के रास्ते में तो वो ज़मीन में बहोत सी कशाइश

وَّسَعَةً ؕ وَمَنۡ يَّخۡرُجۡ مِنۡۢ بَيۡتِهٖ مُهَاجِرًا
और वुस्अत पाएगा। और जो अपने घर से निकले मुहाजिर बन कर

اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ ثُمَّ يُدۡرِكۡهُ الۡمَوۡتُ فَقَدۡ وَقَعَ
अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़, फिर उस को मौत पा ले तो उस

اَجۡرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ۝۱۰۰
का अज्र अल्लाह के ज़िम्मे वाजिब हो गया। और अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

وَاِذَا ضَرَبۡتُمۡ فِى الۡاَرۡضِ فَلَيۡسَ عَلَيۡكُمۡ جُنَاحٌ
और जब तुम ज़मीन में सफर करो, फिर तुम पर कोई गुनाह नहीं है

اَنۡ تَقۡصُرُوۡا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنۡ خِفۡتُمۡ اَنۡ يَّفۡتِنَكُمُ
के नमाज़ को क़स्र पढ़ो, अगर तुम्हें डर हो के काफिर

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ؕ اِنَّ الۡكٰفِرِيۡنَ كَانُوۡا لَكُمۡ عَدُوًّا
तुम्हें सताएंगे। यक़ीनन काफिर लोग तुम्हारे खुले दुशमन

مُّبِيۡنًا ۝۱۰۱ وَاِذَا كُنۡتَ فِيۡهِمۡ فَاَقَمۡتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ
हैं। और जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन में हों, फिर आप उन के लिए नमाज़ क़ाइम करें

فَلۡتَقُمۡ طَآئِفَةٌ مِّنۡهُمۡ مَّعَكَ وَلۡيَاۡخُذُوۡۤا اَسۡلِحَتَهُمۡ ۚ
तो चाहिए के उन में से एक जमाअत आप के साथ खड़ी हो जाए और उन्हें चाहिए के वो अपना अस्लहा लिए रहें।

فَاِذَا سَجَدُوۡا فَلۡيَكُوۡنُوۡا مِنۡ وَّرَآئِكُمۡ ۖ وَلۡتَاۡتِ
फिर जब वो सजदा करें तो वो तुम्हारे पीछे हो जाएं, और दूसरी

طَآئِفَةٌ اُخۡرٰى لَمۡ يُصَلُّوۡا فَلۡيُصَلُّوۡا مَعَكَ
जमाअत आ जाए जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी, फिर चाहिए के वो आप के साथ नमाज़ पढ़ें

وَلۡيَاۡخُذُوۡا حِذۡرَهُمۡ وَ اَسۡلِحَتَهُمۡ ۚ وَدَّ الَّذِيۡنَ
और वो भी अपनी हिफाज़त का सामान और अपना अस्लहा लिए रहें। काफिर लोग चाहते हैं

كَفَرُوۡا لَوۡ تَغۡفُلُوۡنَ عَنۡ اَسۡلِحَتِكُمۡ وَ اَمۡتِعَتِكُمۡ
के काश के तुम अपने अस्लहे और अपने सामान से ग़ाफिल हो जाओ,

فَيَمِيۡلُوۡنَ عَلَيۡكُمۡ مَّيۡلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ
फिर वो अचानक तुम्हारे ऊपर हमला कर दें। और अगर तुम्हें बारिश की

عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ
वजह से तकलीफ हो या तुम बीमार हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है

مَّرْضٰى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ
इस में के अपने हथयार रख दो। और अपने बचाव के सामान को लिए रहो।

اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٠٢﴾
यक़ीनन अल्लाह ने काफिरों के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है।

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا
फिर जब नमाज़ अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे

وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ
और अपने पेहलू पर लेट कर। फिर जब तुम मुतमइन हो तो नमाज़ क़ाइम करो।

اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿١٠٣﴾
यक़ीनन नमाज़ ईमान वालों पर मुक़र्ररा औक़ात में फर्ज़ की गई है।

وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ
और उस क़ौम का पीछा करने में हिम्मत न हारो। अगर तुम्हें अलम (तकलीफ) पहोंचा है

فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَ تَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ
तो उन्हें भी अलम पहोंचा है जैसा के तुम्हें अलम पहोंचा है। और तुम अल्लाह से उम्मीद रखते हो

مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٠٤﴾ ع
उन चीज़ों की जो वो उम्मीद नहीं रखते। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

ع ١٥ / ١٢

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
यक़ीनन हम ने आप की तरफ ये किताब उतारी हक़ के साथ ताके आप फैसला करें इन्सानों के दरमियान

بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿١٠٥﴾ لا
उस के मुताबिक़ जो अल्लाह आप को दिखाए। और आप खयानत करने वालों की तरफ से झगड़ा करने वाले न बनें।

وَّاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٦﴾ ج
और आप अल्लाह से इस्तिग़फार कीजिए। यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ اِنَّ
और आप उन की तरफ से न झगड़ें जो अपनी जानों से खयानत करते हैं। यक़ीनन

اللّٰہَ لَا یُحِبُّ مَنْ کَانَ خَوَّانًا اَثِیْمًا ﴿۱۰۷﴾ یَّسْتَخْفُوْنَ

अल्लाह उस शख़्स से महब्बत नहीं रखता जो खयानत करने वाला, गुनहगार है। वो लोगों

مِنَ النَّاسِ وَلَا یَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰہِ وَھُوَ مَعَھُمْ

से छुपना चाहते हैं और अल्लाह से छुप नहीं सकते इस हाल में के वो उन के साथ होता है

اِذْ یُبَیِّتُوْنَ مَا لَا یَرْضٰی مِنَ الْقَوْلِ ؕ وَکَانَ

जब वो रात के वक्त सरगोशी कर रहे होते हैं ऐसी बातों की जो अल्लाह को पसन्द नहीं हैं। और

اللّٰہُ بِمَا یَعْمَلُوْنَ مُحِیْطًا ﴿۱۰۸﴾ ھٰۤاَنْتُمْ ھٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ

अल्लाह उन के आमाल का इहाता किए हुए है। सुनो! तुम तो वो लोग हो के तुम ने

عَنْھُمْ فِی الْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا قف فَمَنْ یُّجَادِلُ اللّٰہَ

उन की तरफ से दुन्यवी ज़िन्दगी में झगड़ा कर लिया। फिर कौन अल्लाह से झगड़ेगा

عَنْھُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ اَمْ مَّنْ یَّکُوْنُ عَلَیْھِمْ وَکِیْلًا ﴿۱۰۹﴾

उन की तरफ से क़यामत के दिन या कौन उन का वकील बनेगा?

وَمَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ یَظْلِمْ نَفْسَہٗ ثُمَّ یَسْتَغْفِرِ

और जो कोई बुरा काम कर ले या अपनी जान पर ज़ुल्म कर ले, फिर वो अल्लाह से इसतिग़फार

اللّٰہَ یَجِدِ اللّٰہَ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ﴿۱۱۰﴾ وَمَنْ یَّکْسِبْ

कर ले तो वो अल्लाह को बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला पाएगा। और जो

اِثْمًا فَاِنَّمَا یَکْسِبُہٗ عَلٰی نَفْسِہٖ ؕ وَکَانَ اللّٰہُ

गुनाह कमाता है तो वो सिर्फ अपनी जान ही के खिलाफ गुनाह कमा रहा है। और अल्लाह

عَلِیْمًا حَکِیْمًا ﴿۱۱۱﴾ وَمَنْ یَّکْسِبْ خَطِیْٓئَۃً اَوْ اِثْمًا

इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और जो कोई ग़लती कर ले या कोई गुनाह कर ले,

ثُمَّ یَرْمِ بِہٖ بَرِیْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُھْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِیْنًا ﴿۱۱۲﴾ ع

फिर उस के ज़रिए किसी बेगुनाह को मुत्तहम करे, तो यक़ीनन उस ने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाया।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰہِ عَلَیْکَ وَرَحْمَتُہٗ لَھَمَّتْ

और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की मेहरबानी न होती तो उन में

طَّآئِفَۃٌ مِّنْھُمْ اَنْ یُّضِلُّوْکَ ؕ وَمَا یُضِلُّوْنَ اِلَّآ

से एक जमाअत ने इरादा कर लिया था इस बात का के वो आप को गुमराह कर दें। और वो गुमराह नहीं करते मगर

اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَ اَنْزَلَ اللّٰهُ

अपने आप को और वो आप को ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकते। और अल्लाह ने आप पर

عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ عَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ

किताब और हिक्मत उतारी और आप को इल्म दिया ऐसी चीज़ों का जो आप जानते

تَعْلَمُ ؕ وَ كَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾ لَا خَيْرَ

नहीं थे। और अल्लाह का फ़ज़्ल आप पर बहोत ज़्यादा है। उन की

فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ

सरगोशियों में से बहोत सी सरगोशी में कोई भलाई नहीं, मगर वो शख़्स जो सदक़े का हुक्म करे

اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ

या नेकी का हुक्म दे या इन्सानों के दरमियान सुल्ह का हुक्म दे। और जो ऐसा

ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا

करेगा अल्लाह की रज़ा तलब करने के लिए तो अनक़रीब हम उसे भारी अज्र

عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾ وَ مَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ

देंगे। और जो रसूल की मुखालफत करेगा इस के बाद के

مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَ يَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ

उस के लिए हिदायत वाज़ेह हो गई और वो ईमान वालों के रास्ते के अलावा पर चलेगा,

نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَ نُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَ سَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾

तो हम उस के लिए महबूब बना देंगे जिसे उस ने पसन्द किया है और हम उसे जहन्नम में दाखिल करेंगे। और वो बुरी जगह है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَ يَغْفِرُ مَا دُوْنَ

यक़ीनन अल्लाह मग़फिरत नहीं करेंगे इस की के उस के साथ किसी को शरीक ठेहराया जाए और वो उस के अलावा की

ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ

मग़फिरत कर देंगे जिस के लिए वो चाहेंगे। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठेहराए, तो यक़ीनन वो दूर की

ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾ اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّآ اِنٰثًا ج

गुमराही में गुमराह हो गया। वो अल्लाह को छोड़ कर इबादत नहीं करते मगर मुअन्नस की।

وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ م

और वो नहीं पुकारते मगर सरकश शैतान को। जिस पर अल्लाह ने लानत की है।

وَ قَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾ۙ

और जिस ने कहा है के मैं तेरे बन्दों में से एक मुकर्रर किया हुवा हिस्सा ज़रूर बनाऊँगा।

وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ

और मैं उन्हें गुमराह किया करूंगा और मैं उन्हें तमन्नाएं दिलाऊँगा और मैं उन्हें हुक्म करूंगा, फिर वो चौपाओं

اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ

के कान चीरेंगे और मैं उन्हें हुक्म दूंगा फिर वो अल्लाह के बनाए हुए जिस्म को बदलेंगे।

وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ

और जो शैतान को दोस्त बनाएगा अल्लाह को छोड़ कर के तो

خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾ؕ يَعِدُهُمْ وَ يُمَنِّيْهِمْ ؕ

उस ने खुला खसारा उठाया। शैतान उन्हें वादा दिलाता है और उन्हें तमन्नाएं दिलाता है।

وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ

और शैतान उन से वादा नहीं करता मगर धोके का। यही हैं जिन का ठिकाना

جَهَنَّمُ ز وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿١٢١﴾ وَالَّذِيْنَ

जहन्नम है। और वो उस से भागने की कोई जगह नहीं पाएंगे। और जो लोग

اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, तो अनक़रीब हम उन्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेंगे जिन के

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ

नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह की तरफ से सच्चे

حَقًّا ؕ وَ مَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ

वादे के तौर पर। और अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात किस की हो सकती है? न तुम्हारी

بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ

तमन्नाओं पर मदार है और न एहले किताब की तमन्नाओं पर मदार है। जो कोई बुरा काम

سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا

करेगा तो उस की सज़ा पाएगा और वो अपने लिए अल्लाह के अलावा कोई मददगार और कोई कारसाज़

وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ

नहीं पाएगा। और जो नेक आमाल करेगा, वो मर्दों में से हो

اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ
या औरतों में से हो, बशर्तेके वो मोमिन हो तो वही लोग जन्नत में दाखिल होंगे

وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾ وَ مَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ
और उन पर खजूर की गुठली के सूराख के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और उस शख्स से बेहतर दीन किस का हो सकता

اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ
है जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ कर दिया और वो नेकी करने वाला है और जो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की

اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿۱۲۵﴾
मिल्लत पर चला जो एक अल्लाह ही के हो कर रेहने वाले थे। और अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को खलील बनाया था।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ كَانَ
और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं ओर जो ज़मीन में हैं। और अल्लाह

اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿۱۲۶﴾ وَ يَسْتَفْتُوْنَكَ
हर चीज़ का इहाता किए हुए है। और ये आप से सवाल करते हैं

فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ
औरतों के बारे में। आप फरमा दीजिए के अल्लाह तुम्हें इजाज़त देते हैं उन औरतों के बारे में।

فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ
और वो जो तुम को सुनाया जाता है कुरआन में यतीम लड़कियों के बारे में जिन को तुम नहीं देते

مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَ تَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ
वो जो उन के लिए मुकर्रर किया गया है और तुम ऐराज़ करते हो इस से के तुम उन से निकाह करो

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى
और कमज़ोर बच्चों के मुतअल्लिक़ और इस बात का के तुम यतीमों के लिए इन्साफ को ले कर खड़े

بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ
हो जाओ। और जो भलाई भी तुम करोगे तो यक़ीनन अल्लाह उसे

بِهٖ عَلِيْمًا ﴿۱۲۷﴾ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا
खूब जानते हैं। और अगर किसी औरत को अन्देशा हो अपने शौहर की तरफ से

نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا
हक़तल्फी या बेऐतेनाई का तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं है के वो आपस

ع ۱۸ ۱۵

بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ

में सुल्ह कर लें। और सुल्ह बेहतर है। और बुख्ल सब ही तबायेअ में

الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ

रखा गया है। और अगर तुम नेकी करोगे और मुत्तक़ी बनोगे तो यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۲۸﴾ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ

से बाखबर है। और तुम इस की ताक़त हरगिज़ नहीं रखते के इन्साफ करो

النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا

बीवियों के दरमियान अगर्चे तुम कितनी हिर्स करो, इस लिए पूरे तौर पर एक तरफ माइल न हो जाओ के तुम उसे

كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

अध्धर लटकी हुई की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह करो और मुत्तक़ी बनो तो यक़ीनन अल्लाह

كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۲۹﴾ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا

बहोत ज़्यादा बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और अगर वो दोनों अलग हो जाएंगे तो अल्लाह अपनी वुस्अत

مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿۱۳۰﴾ وَلِلّٰهِ

से सब को ग़नी कर देंगे। और अल्लाह वुस्अत वाले, हिक्मत वाले हैं। और अल्लाह की मिल्क हैं

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ

वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और यक़ीनन हम ने ताकीदी हुक्म दिया उन को

اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

जिन्हें किताब दी गई तुम से पेहले और तुम्हें भी ये के अल्लाह से डरो।

وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

और अगर तुम कुफ्र करोगे तो यक़ीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿۱۳۱﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

और अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं

وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۱۳۲﴾ اِنْ يَّشَاْ

और जो ज़मीन में हैं। और अल्लाह काफी कारसाज़ है। अगर अल्लाह चाहे

يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ

तो तुम्हें हलाक कर दे ऐ इन्सानो! और दूसरों को ले आए। और अल्लाह

اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿۱۳۳﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ
इस पर कुदरत वाला है। जो दुन्या का सवाब चाहेगा

الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ
तो अल्लाह के पास दुन्या और आखिरत का सवाब है। और अल्लाह

اللّٰهُ سَمِيْعًا ۢ بَصِيْرًا ﴿۱۳۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا
सुनने वाले, देखने वाले हैं। ऐ ईमान वालो! इन्साफ को ले कर

قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ
खड़े होने वाले बन जाओ, अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बन जाओ, अगर्चे अपनी जानों के खिलाफ

اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا
वो गवाही क्यूं न हो या वालिदैन और रिश्तेदारों के खिलाफ क्यूं न हो। अगर वो मालदार या फकीर है

فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ
तो अल्लाह उन से ज़्यादा महब्बत वाला है। तो ख्वाहिशात के पीछे मत पड़ो के तुम इन्साफ न करो।

وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
और अगर तुम मुंह मोड़ोगे या ऐराज़ करोगे तो यकीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से

خَبِيْرًا ﴿۱۳۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ
बाखबर है। ऐ ईमान वालो! ईमान लाओ अल्लाह पर

وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ
और उस के रसूल पर और उस किताब पर जो उस ने उतारी अपने रसूल पर और उन किताबों पर

الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
जो इस से पेहले उस ने उतारी हैं। और जो कुफ्र करेगा अल्लाह के साथ और उस के फरिश्तों

وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا ۢ
और उस की किताबों और उस के पैगम्बरों और आखिरी दिन के साथ तो यकीनन वो दूर की गुमराही में गुमराह

بَعِيْدًا ﴿۱۳۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا
हो गया। यकीनन वो लोग जो ईमान लाए, फिर काफिर हो गए, फिर ईमान लाए,

ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
फिर काफिर हो गए, फिर कुफ्र में वो बढ़ते रहे, तो अल्लाह ऐसा नहीं है के उन की मग़फिरत करे

وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿۱۳۷﴾ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ

और अल्लाह ऐसा नहीं है के उन को रास्ते की हिदायत दे। मुनाफ़िक़ों को बशारत सुना दीजिए इस बात की के उन के लिए

عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۳۸﴾ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ

दर्दनाक अज़ाब है। उन को जो काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं

مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ

ईमान वालों को छोड़ कर। क्या वो उन के पास इज़्ज़त चाहते हैं?

فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿۱۳۹﴾ وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ

तो यक़ीनन सारी की सारी इज़्ज़त अल्लाह ही की है। यक़ीनन उस ने तुम पर किताब में ये बात

فِى الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا

उतारी है के जब तुम अल्लाह की आयतों को सुनो के उन के साथ कुफ़्र किया जा रहा है

وَ يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا

और उन का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है तो तुम उन के साथ मत बैठो यहां तक के वो उस के अलावा किसी

فِىْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖۤ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ

दूसरी बात में लग जाएं। यक़ीनन तब तो तुम उन्ही जैसे हो जाओगे। यक़ीनन अल्लाह मुनाफ़िक़ों

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِىْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ﴿۱۴۰﴾ الَّذِيْنَ

और काफ़िरों को जहन्नम में सब को इकट्ठा करने वाला है। उन को जो

يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْۤا

तुम्हारे मुतअल्लिक़ मुन्तज़िर रेहते हैं, फिर अगर अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे लिए फ़तह हो तो वो केहते हैं

اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْۤا

के क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे? और अगर काफ़िरों का हिस्सा हो तो केहते हैं

اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَ نَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ فَاللّٰهُ

क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं आ गए थे और मुसलमानों से बचाया नहीं था? फिर अल्लाह

يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ

तुम्हारे दरमियान क़यामत के दिन फ़ैसला करेगा। और अल्लाह ने काफ़िरों के लिए

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿۱۴۱﴾ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ

ईमान वालों पर रास्ता हरगिज़ नहीं बनाया। यक़ीनन मुनाफ़िक़ लोग वो अल्लाह को धोका

اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا

दे रहे हैं और अल्लाह भी उन के खिलाफ तदबीर कर रहा है। और जब वो नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो

كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ

सुस्ती से खड़े होते हैं। वो लोगों से दिखलावा करते हैं और वो अल्लाह को याद नहीं करते

اِلَّا قَلِيْلًا ۝١٤٢ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ

मगर थोड़ा। वो उस के दरमियान तज़बज़ुब में हैं, न इन की तरफ

وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ

और न उन की तरफ। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो आप उस के लिए कोई रास्ता

سَبِيْلًا ۝١٤٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا

हरगिज़ नहीं पाओगे। ऐ ईमान वालो! तुम काफिरों को

الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَتُرِيْدُوْنَ

दोस्त मत बनाओ ईमान वालों को छोड़ कर। क्या तुम ये चाहते हो के

اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝١٤٤

अल्लाह के लिए अपने खिलाफ वाज़ह दलील मुक़र्रर कर दो?

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ

यक़ीनन मुनाफिक़ लोग जहन्नम के सब से निचले वाले तबक़े में होंगे।

وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۝١٤٥ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا

और आप उन के लिए कोई मददगार हरगिज़ नहीं पाओगे। मगर वो लोग जिन्हों ने तौबा की और इस्लाह की

وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ

और अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ा और अपने दीन को अल्लाह के लिए खालिस किया तो ये लोग

مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ

ईमान वालों के साथ होंगे। और अनक़रीब अल्लाह ईमान वालों को

اَجْرًا عَظِيْمًا ۝١٤٦ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ

भारी सवाब देगा। अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा

اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝١٤٧

अगर तुम शुक्र अदा करो और ईमान लाओ। और अल्लाह क़दरदाँ है, इल्म वाला है।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ
बुरे कलाम से आवाज़ बुलन्द करना अल्लाह को पसन्द नहीं मगर जो

ظُلِمَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿۱۴۸﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا
मज़लूम हो। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। अगर किसी भलाई को ज़ाहिर करो

اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا
या उसे तुम छुपाओ या किसी बुराई से मुआफ कर दो तो यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ करने वाला,

قَدِيْرًا ﴿۱۴۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ
कदरदाँ है। यक़ीनन वो लोग जो कुफ्र करते हैं अल्लाह के साथ और उस के पैग़म्बरों के साथ

وَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَ يَقُوْلُوْنَ
और जो चाहते हैं के वो अल्लाह और उस के पैग़म्बरों के दरमियान फर्क करें और केहते हैं के

نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّ نَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّ يُرِيْدُوْنَ
हम बाज़ पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं और बाज़ के साथ कुफ्र करते हैं। और वो चाहते हैं के

اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۵۰﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ
वो उस के दरमियान रास्ता बनाएं। यही लोग ये हक़ीक़ी काफिर

حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۵۱﴾ وَالَّذِيْنَ
हैं। और हम ने काफिरों के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है। और जो लोग

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ
ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उस के पैग़म्बरों पर और उन्हों ने उन में से किसी के दरमियान तफरीक़ नहीं की

اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ
तो यही लोग हैं के जिन्हें अल्लाह अनक़रीब उन के सवाब देगा। और अल्लाह बहोत ज़्यादा

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۵۲﴾ ع يَسْئَلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ
बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। एहले किताब आप से सवाल करते हैं के आप उन पर

عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ
आसमान से कोई लिखी हुई किताब उतारें, तो यक़ीनन उन्हों ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से इस से भी बड़ी

مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ
चीज़ का सवाल किया था के उन्हों ने कहा था के आप हमें अल्लाह को खुल्लम खुल्ला दिखाइए, फिर उन को उन के

الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ
जुल्म की वजह से बिजली ने पकड़ लिया। फिर उन्हों ने बछड़े को माबूद बनाया इस के

مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا
बाद के उन के पास रोशन मोअजिज़ात आए, फिर हम ने उस से दरगुज़र कर दिया। और हम ने

مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿۱۵۳﴾ وَ رَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ
मूसा (अलैहिस्सलाम) को रोशन मोअजिज़ा दिया। और हम ने बनी इस्राईल पर कोहे तूर को उठाया

بِمِيْثَاقِهِمْ وَ قُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا
उन से अहद लेने के लिए और हम ने उन से कहा के तुम दरवाज़े में दाखिल हो जाओ सजदा करते हुए और हम ने

لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا
उन से कहा के सनीचर के बारे में ज़्यादती मत करो और हम ने उन से भारी

غَلِيْظًا ﴿۱۵۴﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَ كُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ
अहद लिया। फिर उन के अपना अहद तोड़ने की वजह से और उन के कुफ्र करने की वजह से अल्लाह की आयात

اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا
के साथ और उन के अम्बिया को नाहक़ क़त्ल करने की वजह से और उन के ये केहने की वजह से के हमारे दिल

غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ
महफूज़ हैं। बल्के अल्लाह ने उन पर मुहर लगा दी है उन के कुफ्र की वजह से, फिर वो ईमान नहीं लाएंगे

اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵۵﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَ قَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ
मगर थोड़े। और उन के कुफ्र की वजह से और उन के मरयम (अलैहस्सलाम) पर भारी

بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿۱۵۶﴾ وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ
बोहतान केहने की वजह से। और उन के ये केहने की वजह से के हम ने मसीह ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)

عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ
को क़त्ल कर दिया जो अल्लाह के रसूल हैं। हालांके उन्हों ने उन को क़त्ल नहीं किया

وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا
और न उन्हों ने उन को सूली दी, लेकिन उन के सामने (किसी को ईसा अलैहिस्सलाम के) मुशाबेह बना दिया गया। और यक़ीनन वो लोग

فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا
जो उन के बारे में इखतिलाफ कर रहे हैं यक़ीनन उन की तरफ से शक में हैं। उन के पास उस की कोई दलील

اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ﴿۱۵۷﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ
नहीं सिवाए गुमान के पीछे चलने के। और यक़ीनन उन्हों ने उन को क़त्ल नहीं किया। बल्के अल्लाह ने उन को

اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۵۸﴾ وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ
अपनी तरफ उठा लिया। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। और सब ही एहले किताब

الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
उन (ईसा अलैहिस्सलाम) की मौत से पेहले ज़रूर उन पर ईमान लाएंगे। और क़यामत के दिन

يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ﴿۱۵۹﴾ فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا
वो उन पर गवाह होंगे। फिर यहूदियों के ज़ुल्म की वजह से

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَ بِصَدِّهِمْ
हम ने उन पर हराम कीं पाकीज़ा चीज़ें जो उन के लिए हलाल की गई थीं और उन के अल्लाह के रास्ते से

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۙ﴿۱۶۰﴾ وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا
बहोत ज़्यादा रोकने की वजह से। और उन के सूद लेने की वजह से हालांके उन को उस से मना किया गया था

عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا
और उन के लोगों के मालों को बातिल तरीक़े से खाने की वजह से। और हम ने उन में से

لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶۱﴾ لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ
काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। लेकिन जो उन में से इल्म

فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ
में पुख़्तगी वाले हैं और जो मोमिन हैं वो ईमान रखते हैं उस किताब पर जो आप की तरफ

اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ
उतारी गई है और उन किताबों पर जो आप से पेहले उतारी गईं और जो नमाज़ क़ाइम करने वाले हैं

وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
और जो ज़कात देने वाले हैं और जो अल्लाह पर ईमान रखने वाले हैं और आखिरी दिन पर ईमान रखने

الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ۧ﴿۱۶۲﴾ اِنَّآ اَوْحَيْنَآ
वाले हैं। यही लोग हैं के अनक़रीब हम उन्हें बड़ा अज्र देंगे। यक़ीनन हम ने आप की तरफ

اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ
वही की जैसा के हम ने वही की नूह (अलैहिस्सलाम) की तरफ और नूह (अलैहिस्सलाम) के बाद दूसरे अम्बिया की तरफ।

وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ
और हम ने वही की इब्राहीम, और इस्माईल, और इसहाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) की तरफ
وَالْاَسْبَاطِ وَ عِيْسٰى وَ اَيُّوْبَ وَ يُوْنُسَ وَ هٰرُوْنَ
और याकूब (अलैहिस्सलाम) के बेटों की तरफ और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान (अलैहिमुस्सलाम)
وَ سُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٣﴾ وَ رُسُلًا قَدْ
की तरफ। और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को ज़बूर दी। और हम ने पैग़म्बर (भेजे)
قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ رُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ
जिन के क़िस्से हम ने इस से पेहले आप के सामने बयान किए और कुछ पैग़म्बर (भेजे) जिन के क़िस्से हम ने
عَلَيْكَ ؕ وَ كَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿١٦٤﴾ رُسُلًا
आप के सामने बयान नहीं किए। और अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से कलाम फरमाया। रसूलों को
مُّبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ
भेजा बशारत देने वाले और डराने वाले बना कर ताके इन्सानों के लिए उन पैग़म्बरों के बाद अल्लाह के
حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٦٥﴾
खिलाफ कोई हुज्जत बाक़ी न रहे। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।
لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ
लेकिन अल्लाह गवाही देते हैं उस पर जो उस ने आप की तरफ कुरआन उतारा के अल्लाह ने कुरआन अपने इल्म से उतारा है।
وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿١٦٦﴾
और फरिश्ते भी गवाही देते हैं। और अल्लाह ही गवाह काफी है।
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ
यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका,
ضَلُّوْا ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١٦٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا
वो दूर की गुमराही में गुमराह हो गए। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और ज़ुल्म किया
لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿١٦٨﴾
तो अल्लाह ऐसा नहीं है के उन की मग़फिरत करे और ऐसा नहीं है के उन्हें रास्ते की हिदायत दे।
اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَ كَانَ
मगर जहन्नम के रास्ते की, जिस में वो हमेशा रहेंगे। और

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٦٩﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ

ये अल्लाह पर आसान है। ऐ इन्सानो! यक़ीनन तुम्हारे पास ये पैग़म्बर हक़ ले कर आए हैं

الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ

तुम्हारे रब की तरफ से, फिर तुम ईमान ले आओ, (अगर ईमान लाओगे) तो तुम्हारे लिए बेहतर होगा।

وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और अगर कुफ्र करोगे तो यक़ीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ

और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। ऐ एहले किताब!

لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ

तुम दीन में ग़ुलू मत करो और अल्लाह पर हक़ के सिवा

اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ

मत कहो। मसीह ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) तो सिर्फ अल्लाह के भेजे हुए पैग़म्बर हैं

وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ

और अल्लाह का कलिमा हैं, जिस को मरयम (अलैहस्सलाम) तक पहोंचाया था और अल्लाह की तरफ से रूह हैं। तो ईमान लाओ

وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا

अल्लाह पर और उस के पैग़म्बरों पर। और यूँ मत कहो के (इलाह) तीन हैं। बाज़ आ जाओ, अगर तुम बाज़ आ जाओगे तो तुम्हारे लिए

اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ

बेहतर होगा। अल्लाह तो सिर्फ यकता माबूद है। अल्लाह इस से पाक है के उस के लिए कोई औलाद हो। उस की तो मिल्क हैं

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾

वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और अल्लाह काफी कारसाज़ है।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ

मसीह ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) को आर नहीं है इस से के वो अल्लाह के बन्दे हैं

وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ

और न मुकर्रब फरिशते इन्कार करते हैं। और जो भी अल्लाह की इबादत से आर

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾

करेगा और बड़ा बनना चाहेगा तो अल्लाह उन तमाम को अपने पास इकट्ठा करेगा।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ

फिर जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, तो उन को अल्लाह उन के सवाब

اُجُوْرَهُمْ وَ يَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا

पूरे पूरे देगा और उन को अपने फ़ज़्ल से मज़ीद भी देगा। और अलबत्ता जो आर करेंगे

وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ

और तकब्बुर करेंगे तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा। और वो अपने लिए अल्लाह के

لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾ يٰۤاَيُّهَا

अलावा कोई हिमायती और मददगार नहीं पाएंगे। ऐ

النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ اَنْزَلْنَاۤ

इन्सानो! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से बुरहान आ गया और हम ने तुम्हारी

اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا

तरफ रोशन नूर उतारा। फिर जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उस की रस्सी

بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَ فَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ

को मज़बून पकड़ा तो जल्द ही उन को अल्लाह अपनी रहमत में और फ़ज़्ल में दाखिल करेगा। और उन्हें अपनी तरफ

اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾ يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ

सीधे रास्ते की रहनुमाई करेगा। ये आप से सवाल करते हैं। आप फरमा दीजिए के अल्लाह

يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ

तुम्हें कलाला के बारे में हुक्म देते है। अगर कोई शख्स ऐसा हो के वो मर गया के जिस की औलाद न हो

وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ

इस हाल में के उस की बेहेन हो, तो उस के लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो मरने वाले ने छोड़ा। और वो उस

اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا

बेहेन का वारिस होगा अगर उस बेहेन की औलाद न हो। फिर अगर वो दो बेहनें हों तो उन दो बेहनों के लिए

الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً

दो सुलुस मिलेगा उस माल में से जो भाई ने छोड़ा। और अगर वो कई भाई और बेहनें हों

فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ

तो मर्द के लिए दो औरतों के हिस्से के बराबर है। अल्लाह तुम्हारे लिए साफ साफ बयान कर रहे हैं

اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿١٧٦﴾

ताके तुम गुमराह न हो जाओ। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

اٰیَاتُهَا ١٢٠ (٥) سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ مَدَنِیَّةٌ (١١٢) رُكُوْعَاتُهَا ١٦

उस में १२० आयतें हैं सूरह माइदा मदीना में नाज़िल हुई और १६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ

ऐ ईमान वालो! अहद व क़रार पूरे करो। तुम्हारे लिए हलाल किए गए

بَهِیْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا یُتْلٰی عَلَیْكُمْ غَیْرَ مُحِلِّی

चरने वाले चौपाए सिवाए उन के जो तुम पर आइन्दा तिलावत किए जाएंगे इस हाल में के तुम शिकार को हलाल

الصَّیْدِ وَ اَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَحْكُمُ مَا یُرِیْدُ ﴿١﴾

समझने वाले न हो मुहरिम होने की हालत में। यक़ीनन अल्लाह फैसला करता है वही जो वो चाहता है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के शआइर को हलाल मत करो

وَ لَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْیَ وَلَا الْقَلَآئِدَ

और न हुरमत वाले महीने को और न हदी के जानवरों को और न पट्टे वाले जानवरों को

وَلَاۤ اٰمِّیْنَ الْبَیْتَ الْحَرَامَ یَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ

और न हुरमत वाले घर का इरादा करने वालों को, जो अपने रब का फ़ज़्ल तलब करते हैं

وَ رِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا یَجْرِمَنَّكُمْ

और उस की खुशनूदी तलब करते हैं। और जब हलाल हो जाओ, तब तुम शिकार करो। और तुम्हें आमादा न करे

شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

किसी क़ौम की दुशमनी इस वजह से के उन्हों ने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका था

اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَی الْبِرِّ وَ التَّقْوٰی ص وَلَا تَعَاوَنُوْا

इस बात पर के ज़्यादती करो। बल्के तुम एक दूसरे से नेकी और तक़्वे पर तआवुन करो। और तआवुन मत करो

عَلَی الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ

गुनाह पर और ज़ुल्म पर। और अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने

وقف لازم

الْعِقَابِ ۝٢ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ

वाले हैं। तुम पर हराम किया गया मुर्दार और खून और खिन्ज़ीर का

الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ

गोश्त और वो जानवर जिन पर ग़ैरूल्लाह का नाम लिया गया हो और गला घोंटा हुवा

وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ

और टकरा कर मरा हुवा और ऊपर से लुढ़क कर मरा हुवा और वो जानवर जिसे किसी जानवर ने सींग मार कर मारा हो और वो जानवर

السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ قف وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ

के जिसे दरिन्दों ने खाया हो मगर वो जिन को तुम ज़बह कर लो। और हराम किया गया वो जो ज़बह किया गया हो बुतों पर

وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ط ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ط اَلْيَوْمَ يَئِسَ

और ये भी हराम किया गया के तुम तीरों के ज़रिए तक़सीम करो। ये नाफरमानी वाली चीज़ है। आज काफिर

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ط

लोग तुम्हारे दीन से मायूस हो गए, तो तुम उन से मत डरो और मुझ से डरो।

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ

आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल किया और मैं ने तुम पर अपनी नेअमत को इतमाम तक

نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ط فَمَنِ اضْطُرَّ

पहोंचाया और मैं ने तुम्हारे लिए इस्लाम को बतौरे दीन के पसन्द किया। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए

فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ لا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

भूक की वजह से इस हाल में के वो गुनाह की तरफ माइल होने वाला न हो तो यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले,

رَّحِيْمٌ ۝٣ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ط قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ

निहायत रहम वाले हैं। वो आप से सवाल करते हैं के क्या चीज़ उन के लिए हलाल की गई। आप फरमा दीजिए के

الطَّيِّبٰتُ لا وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ

तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल क़रार दी गई हैं, और शिकारी जानवर जिन को तुम तालीम दो छोड़ते हुए, उन को

مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ز فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا

तालीम देते हो उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें इल्म दिया, तो खाओ उस में से जो वो तुम्हारे लिए रोके रहें और तुम

اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ ط اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٤

अल्लाह का नाम उस पर ले लो। और अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाले हैं।

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا

आज तुम्हारे लिए हलाल की गई पाकीज़ा चीज़ें, ओर एहले किताब का ज़बीहा तुम्हारे

الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪ وَ طَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ

लिए हलाल किया गया। और तुम्हारा खाना उन के लिए हलाल है। और हलाल की गईं मोमिन

مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا

औरतों में से पाकदामन औरतें और उन की पाकदामन औरतें जिन को तुम से पेहले

الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ

किताब दी गई जब के तुम उन को उन के महर दो इस हाल में के तुम पाकदामनी इखतियार करने वाले हो,

غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْۤ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ

ज़िना करने वाले न हो और न चुपके चुपके दोस्त बनाने वाले हो। और जो ईमान के साथ

بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ

कुफ्र करेगा तो यक़ीनन उस का अमल हब्त हो गया। और वो आखिरत में

مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ

खसारा उठाने वालों में से होगा। ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए

اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ

खड़े हो तो अपने चेहरे और कोहनियों तक अपने हाथ धो लो

وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ

और तुम अपने सरों पर मसह कर लो और अपने पैर टखने तक धो लो।

وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ

और अगर तुम जनाबत की हालत में हो तो अच्छी तरह पाक हो जाओ। और अगर बीमार हो या

عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ

सफर पर हो या तुम में से कोई कज़ाए हाजत से आया हो या तुम ने औरतों से

النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا

मुक़ारबत की हो, फिर पानी न पाओ तो पाक मिट्टी का क़स्द करो,

فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ اَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ

फिर उस से अपने हाथों और अपने चेहरों पर मसह कर लो। अल्लाह ये इरादा नहीं करता

لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ
के तुम पर तंगी करे, लेकिन वो चाहता है के तुम्हें अच्छी तरह पाक करे

وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦ وَاذْكُرُوْا
और ताके तुम पर अपनी नेअमत को इतमाम तक पहोंचाए ताके तुम शुक्र अदा करो। और तुम याद करो

نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ
अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है और उस के उस अहद को जिस का उस ने तुम से अहद लिया है,

اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ز وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
जब के तुम ने कहा के سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا। और तुम अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
दिलों के हाल को खूब जानने वाले हैं। ऐ ईमान वालो!

كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ز وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
तुम अल्लाह के लिए खड़े होने वाले बन जाओ, इन्साफ की गवाही देने वाले बन जाओ। और तुम्हें मुजरिम न बनाए

شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۚ هُوَ اَقْرَبُ
किसी क़ौम की दुशमनी इस बात पर के तुम इन्साफ न करो। बल्के तुम इन्साफ करो। ये तक़्वा के ज़्यादा

لِلتَّقْوٰى ز وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨
क़रीब है। और तुम अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ
अल्लाह ने वादा किया है उन लोगों से जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे के उन के लिए

مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٩ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
मग़फिरत है और भारी अज्र है। और जिन्हों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों

بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝١٠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
को झुठलाया वही लोग दोज़खी हैं। ऐ ईमान

اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ
वालो! तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है जब के एक क़ौम ने इरादा किया

اَنْ يَّبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ
के वो तुम्हारी तरफ अपने हाथ फैलाएं, फिर अल्लाह ने उन के हाथ तुम से रोक दिए।

وَاتَّقُوا اللّٰہَ ؕ وَ عَلَی اللّٰہِ فَلْیَتَوَکَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾
और तुम अल्लाह से डरो। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰہُ مِیْثَاقَ بَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ ۚ وَ بَعَثْنَا
और यक़ीनन अल्लाह ने बनी इस्राईल से पुख़्ता अहद लिया। और हम ने

مِنْھُمُ اثْنَیْ عَشَرَ نَقِیْبًا ؕ وَ قَالَ اللّٰہُ اِنِّیْ مَعَکُمْ ؕ
उन में से बारा नक़ीब भेजे। और अल्लाह ने फरमाया के मैं तुम्हारे साथ हूँ।

لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوۃَ وَ اٰتَیْتُمُ الزَّکٰوۃَ وَاٰمَنْتُمْ
अगर नमाज़ क़ाइम करोगे और ज़कात दोगे और मेरे पैग़म्बरों पर

بِرُسُلِیْ وَ عَزَّرْتُمُوْھُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا
ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे

لَّاُکَفِّرَنَّ عَنْکُمْ سَیِّاٰتِکُمْ وَلَاُدْخِلَنَّکُمْ جَنّٰتٍ
तो मैं ज़रूर तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर दूंगा और मैं तुम्हें ज़रूर दाखिल करूंगा ऐसी जन्नतों में

تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِھَا الْاَنْھٰرُ ۚ فَمَنْ کَفَرَ بَعْدَ ذٰلِکَ
जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। फिर उस के बाद जो तुम में से कुफ्र

مِنْکُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِیْلِ ﴿١٢﴾ فَبِمَا نَقْضِھِمْ
करेगा तो यक़ीनन वो सीधे रास्ते से भटक गया। फिर उन के अपना अहद

مِّیْثَاقَھُمْ لَعَنّٰھُمْ وَ جَعَلْنَا قُلُوْبَھُمْ قٰسِیَۃً ۚ
तोड़ने की वजह से हम ने उन पर लानत की और हम ने उन के दिल सख्त बना दिए।

یُحَرِّفُوْنَ الْکَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِہٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا
वो कलिमात को बदलते थे अपने मआनी से और उस से फाइदा उठाना भूल गए

مِّمَّا ذُکِّرُوْا بِہٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰی خَآئِنَۃٍ مِّنْھُمْ
जो उन को नसीहत की गई थी। और आप बराबर मुत्तलेअ होते रहोगे उन की तरफ से खयानत पर

اِلَّا قَلِیْلًا مِّنْھُمْ فَاعْفُ عَنْھُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰہَ
मगर उन में से थोड़े लोग, इस लिए आप उन को मुआफ कीजिए और दरगुज़र कीजिए। यक़ीनन अल्लाह

یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿١٣﴾ وَمِنَ الَّذِیْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓی
नेकी करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। और उन लोगों में से जिन्हों ने कहा के हम नसारा हैं

اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ فَاَغْرَيْنَا

हम ने उन से पुख़्ता अहद लिया, फिर उस से फाइदा उठाना भूल गए जो उन को नसीहत की गई थी। फिर हम ने उन

بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ

के दरमियान क़यामत के दिन तक अदावत और बुग़्ज़ डाल दिया। और अनक़रीब

يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝١٤ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ

अल्लाह उन को खबर देगा उन आमाल की जो वो करते थे। ऐ एहले किताब!

قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ

यक़ीनन तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर आए जो तुम्हारे सामने बयान करते हैं उस में से बहोत सी चीज़ें

تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ قَدْ جَآءَكُمْ

जो तुम किताब में से छुपाते थे और बहोत सी चीज़ों से दरगुज़र करते हैं। यक़ीनन तुम्हारे पास अल्लाह की

مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥ۙ يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ

तरफ से रोशनी और साफ साफ बयान करने वाली किताब आ पहोंची। अल्लाह उस के ज़रिए हिदायत देते हैं

مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ

उस को जो अल्लाह की खुशनूदी का इत्तिबा करे, (यानी) सलामती के रास्तों पर चले, और अल्लाह उन्हें निकालते हैं

مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ

तारीकियों से नूर की तरफ अपने हुक्म से और अल्लाह उन्हें सीधे रास्ते की

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝١٦ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا

रहनुमाई करते हैं। यक़ीनन काफिर हैं वो लोग जिन्हों ने कहा के

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ

यक़ीनन अल्लाह मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ही है। आप फरमा दीजिए के फिर कौन मालिक होगा

مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ

अल्लाह की तरफ से किसी भी चीज़ का अगर अल्लाह इरादा करें के वो मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)

مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ

को और उन की माँ को और उन तमाम को जो ज़मीन में हैं सब को हलाक कर दे। और अल्लाह के लिए

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ

आसमानों और ज़मीन की सलतनत है और उन चीज़ों की जो उन के दरमियान में हैं। अल्लाह पैदा करता है

مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾ وَقَالَتِ
जिस को चाहता है। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। और

الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ
यहूद व नसारा ने कहा के हम अल्लाह के बेटे और उस के महबूब हैं। आप फरमा दीजिए के

فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ
फिर अल्लाह तुम्हारे गुनाहों की वजह से तुम्हें क्यूं अज़ाब देगा? बल्के तुम अल्लाह की मख्लूक़ में से एक इन्सान

خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
हो। अल्लाह मग़फिरत करते हैं जिस के लिए चाहते हैं और अज़ाब देते हैं जिसे चाहते हैं।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ز وَاِلَيْهِ
और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है और उन चीज़ों की जो उन के दरमियान में हैं। और उसी की

الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا
तरफ लौटना है। ऐ एहले किताब! यक़ीनन तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर पैग़म्बरों के फतरत के ज़माने में

يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا
आए जो तुम्हारे सामने (दीन की बातें) बयान करते हैं, इस लिए के कहीं तुम यूँ न कहो के हमारे पास तो

مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ز فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ
कोई बशारत देने वाला और डराने वाला नहीं आया। तो अब यक़ीनन तुम्हारे पास बशारत देने वाला और डराने

وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۹﴾ وَاِذْ قَالَ
वाला आ चुका। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। और जब के मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम से फरमाया

مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
के ऐ मेरी क़ौम! तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है।

اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَ جَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰكُمْ
जब के उस ने तुम में अम्बिया बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया। और तुम्हें

مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۰﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا
वह नेअमतें दीं जो जहान वालों में से किसी को नहीं दीं। ऐ मेरी क़ौम! तुम मुक़द्दस सरज़मीन

الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِىْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا
में दाखिल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है और तुम

تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾ قَالُوْا

अपनी एड़ियों के बल मत पलटो, वरना तुम नुक़सान उठाने वाले बन जाओगे। वो केहने लगे

يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا

ऐ मूसा! उस में तो बड़ी ज़ोरआवर क़ौम है। और हम उस में हरगिज़ दाखिल नहीं होंगे

حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا

जब तक के वो वहां से न निकलें। फिर अगर वो वहां से निकल जाएं तब हम

دٰخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾ قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ

दाखिल होंगे। दो आदमियों ने कहा उन लोगों में से जो डरते थे, जिन पर अल्लाह ने

اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ

इनआम फरमाया था के तुम उन पर दरवाज़े से दाखिल हो जाओ। फिर जब तुम उस में दाखिल हो जाओगे

فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ۬ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ

तुम ही ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह ही पर तुम्हें तवक्कुल करना चाहिए अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا

मोमिन हो। तो वो केहने लगे ऐ मूसा! हम उस में हरगिज़ दाखिल नहीं होंगे कभी भी

مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَ رَبُّكَ فَقَاتِلَآ

जब तक के वो उस में हैं, इस लिए तुम और तुम्हारा रब जाओ और तुम दोनों लड़ो,

اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ

हम तो यहां बैठे हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मैं सिर्फ अपने आप पर और अपने

وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

भाई ही पर इखतियार रखता हूँ, इस लिए आप हमारे दरमियान और नाफरमान क़ौम के दरमियान जुदाई कर दीजिए।

قَالَ فَاِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۚ

अल्लाह ने फरमाया के यक़ीनन ये ज़मीन उन पर हराम कर दी गई चालीस साल तक के लिए

يَتِيْهُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ

के वो इस ज़मीन में मारे मारे फिरते रहेंगे। इस लिए आप नाफरमान क़ौम पर अफसोस

الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ ۧ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ

न कीजिए। और आप उन के सामने तिलावत कीजिए आदम (अलैहिस्सलाम) के दो बेटों का क़िस्सा हक़ के मुताबिक़।

إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ

जब के दोनों ने कुरबानी पेश की तो उन में से एक की तरफ से क़बूल की गई और दूसरे की तरफ से

مِنَ الْاٰخَرِ ؕ قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ

क़बूल नहीं की गई। दूसरे ने कहा के मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा। पेहले ने कहा के अल्लाह तो सिर्फ

اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ

मुत्तक़ियों की तरफ से क़बूल करते हैं। अगर तू मेरी तरफ अपना हाथ बढ़ाएगा

النصف

لِتَقْتُلَنِيْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ

ताके तू मुझे क़त्ल करे तब भी मैं अपना हाथ तेरी तरफ बढ़ाने वाला नहीं हूँ ताके मैं तुझे क़त्ल करूँ।

اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ

इस लिए के मैं अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। मैं तो ये चाहता हूँ

اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ

कि तू मेरे और अपने गुनाह ले कर लौटे, फिर तू दोज़खियों में से बन

النَّارِ ۚ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَطَوَّعَتْ لَهٗ

जाए। और यही ज़ालिमों की सज़ा है। फिर उस के सामने उस के नफ्स ने अच्छा बना कर

نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٣٠﴾

पेश किया अपने भाई का क़त्ल, चुनांचे उस ने उस को क़त्ल कर दिया, फिर वो नुक़सान उठाने वालों में से बन गया।

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْاَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ

फिर अल्लाह ने एक कव्वा भेजा जो ज़मीन में कुरेद रहा था ताके उस को दिखाए के वो

يُوَارِيْ سَوْءَةَ اَخِيْهِ ؕ قَالَ يٰوَيْلَتٰۤى اَعَجَزْتُ

अपने भाई की लाश कैसे दफन करे। क़ाबील केहने लगा हाए अफसोस! क्या मैं आजिज़ रहा

اَنْ اَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَاُوَارِيَ سَوْءَةَ

इस से के मैं इस कव्वे की तरह होता के अपने भाई की लाश को

معانقة عند المتأخرين ١٢ وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

اَخِيْ ۚ فَاَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿٣١﴾ ۛ مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۛۚ

दफन करता। फिर वो नदामत करने वालों में से बन गया। इसी वजह से

كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًاۢ

हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया के जो भी किसी एक नफ्स को किसी नफ्स के बग़ैर

بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ
क़त्ल करे या ज़मीन में फसाद फेलाए तो गोया के उस ने तमाम इन्सानों

النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَمَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَآ اَحْيَا
को क़त्ल किया। और जो उस को ज़िन्दा रेहने दे तो गोया के उस ने तमाम इन्सानों को

النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ز
ज़िन्दा रेहने दिया। यक़ीनन उन के पास हमारे भेजे हुए पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए।

ثُمَّ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْاَرْضِ
फिर उन में से बहोत से उस के बाद भी ज़मीन में हद से आगे

لَمُسْرِفُوْنَ ﴿٣٢﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ
तजावुज़ करते हैं। उन लोगों की सज़ा जो अल्लाह और उस के रसूल से

وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا
जंग करते हैं ओर ज़मीन में फसाद फैलाने की कोशिश करते हैं ये है के उन्हें क़त्ल किया जाए

اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ
या उन्हें सूली दी जाए या उन के हाथ और पैर जानिबे मुखालिफ से काट

مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ
दिए जाएं या उन्हें उस जगह से जिलावतन कर दिया जाए। ये उन के लिए दुन्या में

فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٣٣﴾
रूस्वाई है और उन के लिए आखिरत में भारी अज़ाब है।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ج
मगर जिन्हों ने तौबा की इस से पेहले के तुम उन के ऊपर क़ादिर हो जाओ।

فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يٰٓاَيُّهَا
तो जान लो के अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ
ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उस की तरफ वसीला तलब करो

وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ
और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करो ताके फलाह पाओ। यक़ीनन

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا
वो लोग जो काफिर हैं अगर उन की मिल्क हो जाएं वो तमाम चीज़ें जो ज़मीन में हैं सारी की सारी और उसी जैसी उस
وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
के साथ और भी हो जाएं ताके वो उस को फिदये में दे दें क़यामत के दिन के अज़ाब से (बचने के लिए)
مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾ يُرِيْدُوْنَ
तो उन की तरफ से क़बूल नहीं की जाएंगी। और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। वो चाहेंगे
اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۫
के वो दोज़ख से निकलें, हालांके वो उस से निकलने वाले नहीं हैं।
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ
और उन के लिए दाइमी अज़ाब होगा। और चोरी करने वाला मर्द और चोरी करने वाली औरत
فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا
तो तुम उन दोनों के हाथ काट दो उस की सज़ा के तौर पर जो हरकत उन दोनों ने की अल्लाह की तरफ से
مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾ فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ
इबरत के तौर पर। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। फिर अपने ज़ुल्म के बाद जो तौबा
ظُلْمِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ
करे और इस्लाह कर ले तो यक़ीनन अल्लाह उस की तौबा क़बूल करेंगे।
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मग़फिरत करने वाले, निहायत रहम वाले हैं। क्या आप जानते नहीं के अल्लाह के लिए
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ
आसमानों और ज़मीन की सलतनत है। वो अज़ाब देता है जिसे चाहे और जिस की चाहे मग़फिरत करे।
لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا
और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। ऐ
الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ
रसूल! आप को ग़मगीन न करें वो लोग जो कुफ्र में तेज़ी कर रहे हैं
مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ
उन लोगों में से जो अपने मुंह से 'اٰمَنَّا' केहते हैं हालांके उन के दिल

قُلُوْبُهُمْ ۚۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۚۛ سَمّٰعُوْنَ

ईमान नहीं लाए। और यहूदियों में से भी कुछ लोग झूठ की तरफ ज़्यादा

لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ط

कान लगाने वाले हैं, दूसरी क़ौम के लिए ग़ौर से सुनते हैं जो आप के पास नहीं आए।

يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْ ۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ

जो कलिमात को उस के मआनी के मुतअय्यन हो जाने के बाद बदलते हैं। वो केहते हैं के

اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ

अगर ये फतवा तुम्हें दिया जाए तो उस को ले लो और अगर तुम्हें ये फतवा न दिया जाए,

فَاحْذَرُوْا ط وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ

तो तुम बच कर रेहना। और जिस के गुमराह होने का अल्लाह इरादा करे तो आप अल्लाह के मुक़ाबले में उस के लिए

لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ط اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ

किसी भी चीज़ के हरगिज़ मालिक नहीं हो। यही लोग हैं के अल्लाह ने इरादा ही

اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ط لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚۖ

नहीं किया के उन के दिलों को पाक करे। उन के लिए दुन्या में रूस्वाई है।

وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾ سَمّٰعُوْنَ

और उन के लिए आखिरत में भारी अज़ाब है। वो झूठ की तरफ ज़्यादा कान

لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ط فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ

लगाने वाले हैं, वो हराम बहोत ज़्यादा खाने वाले हैं। फिर अगर वो आप के पास आएं तो आप उन

بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ج وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ

के दरमियान फैसला कीजिए या उन की तरफ से ऐराज़ कीजिए। और अगर आप उन से ऐराज़ करेंगे

فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ط وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ

तो वो आप को ज़रा भी ज़रर हरगिज़ नहीं पहोंचा सकेंगे। और अगर आप फैसला करें तो उन के दरमियान इन्साफ के

بِالْقِسْطِ ط اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَكَيْفَ

साथ फैसला कीजिए। यक़ीनन अल्लाह इन्साफ करने वालों से महब्बत करते हैं। और वो आप को

يُحَكِّمُوْنَكَ وَ عِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ

कैसे हकम बनाएंगे हालांके उन के पास तौरात है जिस में अल्लाह का हुक्म है,

ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾

फिर वो इस के बाद ऐराज़ करते हैं। और ये ईमान वाले नहीं हैं।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّ نُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ

यक़ीनन हम ने तौरात उतारी जिस में हिदायत और नूर है। जिस के मुताबिक़ फैसला

بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا

करते रहे वो अम्बिया जो मुतीअ थे उन लोगों के लिए जो यहूदी थे

وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا

और फैसला करते रहे अल्लाह वाले और उलमा, इस वजह से के वो अल्लाह की किताब के मुहाफिज़

مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا

बनाए गए थे और वो उस पर गवाह थे। इस लिए तुम इन्सानों से

النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ

मत डरो और मुझ से डरो और मेरी आयात के बदले में थोड़ी क़ीमत मत लो।

وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

और जो फैसला नहीं करेगा उस के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उतारा तो यही लोग

الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَاۤ اَنَّ النَّفْسَ

काफिर हैं। और हम ने उन पर फर्ज़ कर दिया था तौरात में के नफ्स (को क़त्ल किया जाएगा)

بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ

नफ्स के बदले और आँख (फोड़ी जाएगी) आँख के बदले और नाक (काटी जाएगी) नाक के बदले

وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ

और कान (काटा जाएगा) कान के बदले और दांत (तोड़ा जाएगा) दांत के बदले और ज़ख्मों का भी

قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ

क़िसास लिया जाएगा। लेकिन जो उस को मुआफ कर दे तो ये उस के लिए कफ्फारा है।

وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

और जो फैसला न करे उस के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उतारा तो यही लोग

الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ

ज़ालिम हैं। और हम ने उन के पीछे ईसा इब्ने

مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪

मरयम (अलैहिमस्सलाम) को भेजा जो तसदीक़ करने वाले थे तौरात की जो उस से पेहले थी।

وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّ نُوْرٌ ۙ وَّ مُصَدِّقًا

और हम ने उन को इन्जील दी जिस में हिदायत थी और नूर था। और वो सच्चा बतलाने वाली थी

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ هُدًى وَّ مَوْعِظَةً

उस तौरात को जो उस से पेहले थी और मुत्तक़ियों के लिए हिदायत और

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ

नसीहत थी। और इन्जील वालों को चाहिए के वो फैसला करें उस के मुताबिक़ जो अल्लाह ने

اللّٰهُ فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ

इन्जील में उतारा। और जो फैसला नहीं करेगा उस के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उतारा तो यही

هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ

लोग नाफरमान हैं। और हम ने आप की तरफ ये किताब हक़ के साथ उतारी है

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ

जो सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को जो उस से पेहले थीं

وَ مُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

और उन किताबों की निगरानी करने वाली है, इस लिए आप उन के दरमियान फैसला कीजिए उस के मुताबिक़ जिस को अल्लाह

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ

ने उतारा और उन की ख्वाहिशात का इत्तिबा न कीजिए उस हक़ को छोड़ कर जो आप के पास आया। तुम में से

جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّ مِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

हर एक के लिए हम ने एक शरीअत और एक तरीक़ा मुकर्रर किया है। और अगर अल्लाह चाहता

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ

तो तुम्हें एक उम्मत बनाता, लेकिन (ऐसा इस लिए नहीं किया) ताके तुम्हें आज़माए उस में जो अल्लाह

مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا

ने तुम्हें दिया, इस लिए तुम खैर के कामों में दौड़ो। अल्लाह ही की तरफ तुम सब को लौटना है,

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾ ۙ وَاَنِ احْكُمْ

फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जिस में तुम इखतिलाफ करते थे। और ये के आप फैसला कीजिए

بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

उन के दरमियान उस के मुताबिक़ जो अल्लाह ने उतारा और उन की ख्वाहिशात का इत्तिबा न कीजिए

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ

और उन से बच कर रहिए के आप की तरफ अल्लाह के नाज़िलकरदा किसी हुक्म से कहीं आप को फितने में

اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ

डाल न दें। फिर अगर वो मुंह मोड़ें तो आप जान लीजिए के अल्लाह ये चाहते हैं

اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا

के उन्हें उन के बाज़ गुनाहों की वजह से मुसीबत पहोंचाए। और यक़ीनन उन में से अक्सर

مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ

लोग नाफरमान हैं। क्या फिर जाहिलीयत का फेसला वो चाहते हैं?

وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

और अल्लाह से बेहतर किस का फैसला हो सकता है ऐसी कौम के लिए जो यक़ीन रखती है?

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى

ऐ ईमान वालो! तुम यहूद व नसारा को दोस्त मत

اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ

बनाओ। उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं। और जो तुम में से उन से

مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

दोस्ती रखेगा तो वो भी उन्ही में से है। यक़ीनन अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

नहीं देते। फिर आप देखेंगे उन लोगों को जिन के दिलों में मर्ज़ है के

يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰۤى اَنْ تُصِيْبَنَا

वो उन के बारे में जल्दी करते हैं, वो केहते हैं के हम डरते हैं के हमें कोई मुसीबत का हादसा

دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ

न पहोंच जाए। फिर हो सकता है के अल्लाह फतह ले आए या अपनी तरफ से

مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ اَسَرُّوْا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ

कोई हुक्म ले आए, तो फिर वो नादिम होंगे उस पर जो उन्हों ने अपने दिलों में

نٰدِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ
छुपाया था। और ईमान वाले कहेंगे के क्या ये वही

الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ
लोग हैं जो अल्लाह की क़स्में खाते थे अपनी क़स्मों को मुअक्कद कर के के यक़ीनन हम

لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾
तुम्हारे साथ हैं। उन के आमाल हब्त हो गए, फिर वो खसारा उठाने वाले बन गए।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ
ऐ ईमान वालो! जो तुम में से मुर्तद हो जाएगा अपने दीन से

فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَ يُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ
तो फिर अल्लाह ऐसी क़ौम को ले आएंगे जिन से अल्लाह महब्बत करता होगा और वो अल्लाह से महब्बत करते होंगे।

اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ز
वो ईमान वालों के सामने आजिज़ी करने वाले होंगे, काफिरों पर भारी होंगे।

يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ
अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते होंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से

لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
डरते नहीं होंगे। ये अल्लाह का फ़ज़्ल है, वो उस को देता है जिसे चाहता है।

وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٤﴾ اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ
और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। तुम्हारा वली तो सिर्फ अल्लाह और उस का रसूल है

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
और वो लोग हैं जो ईमान लाए हैं जो नमाज़ क़ाइम करते हैं

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَمَنْ
और ज़कात देते हैं और वो रूकूअ भी करते हैं। और जो

يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ
अल्लाह और उस के रसूल से और ईमान वालों से दोस्ती करेगा, तो यक़ीनन अल्लाह की

اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٦﴾ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
जमाअत ही ग़ालिब है। ऐ ईमान वालो!

الثلٰثة

ع ٨ ١٢

لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا

तुम उन लोगों को दोस्त मत बनाओ जिन्हों ने तुम्हारे दीन को हंसी

وَّ لَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ

और खेल बना रखा है उन लोगों में से जिन को तुम से पेहले किताब दी गई

وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ج وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ

और काफिरों को दोस्त मत बनाओ। और तुम अल्लाह से डरो अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا

ईमान वाले हो। और जब तुम नमाज़ के लिए अज़ान देते हो तो वो उस को

هُزُوًا وَّلَعِبًا ط ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

हंसी और खेल बनाते हैं। ये इस वजह से के वो ऐसी क़ौम है जो अक़्ल नहीं रखती।

قُلْ يٰاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ

आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब! तुम्हें हमारी तरफ से बुरी नहीं लगी

اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ

मगर ये बात के हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उस किताब पर जो हम पर उतारी गई और उन किताबों पर

مِنْ قَبْلُ لا وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ قُلْ هَلْ

जो इस से पेहले उतारी गईं और ये के तुम में से अक्सर नाफरमान हैं। आप फरमा दीजिए क्या

اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ط

मैं तुम्हें खबर दूं उस से बुरी चीज़ की अल्लाह के नज़दीक सवाब (यानी सज़ा) के ऐतेबार से?

مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَ غَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ

वो शख्स है के जिस पर अल्लाह ने लानत फरमाई और जिस पर उस ने ग़ज़ब किया और जिन में से उस ने

الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَ عَبَدَ الطَّاغُوْتَ ط اُولٰٓئِكَ

बन्दर और खिन्ज़ीर बनाए और जो अल्लाह से सरकशी करने वाले शैतान की इबादत करता है। यही लोग

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾

बुरे दर्जे वाले और सीधी राह से ज़्यादा भटके हुए हैं।

وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَ قَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ

और जब वो तुम्हारे पास आते हैं तो اٰمَنَّا केहते हैं हालांके वो कुफ्र को ले कर दाखिल हुए

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا

और वो कुफ्र ही को ले कर निकले। और अल्लाह खूब जानता है उस को जो वो छुपा

يَكْتُمُوْنَ ۝٦١ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ

रहे हैं। और उन में से बहोत सों को आप देखोगे के वो गुनाह और ज़्यादती और

وَالْعُدْوَانِ وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا

अपने हराम खाने की तरफ तेज़ दौड़ते हैं। बेशक बुरे हैं वो काम जो वो

يَعْمَلُوْنَ ۝٦٢ لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ

कर रहे हैं। उन को क्यूं रोकते नहीं अल्लाह वाले और उलमा

عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَ اَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ

उन के गुनाह की बात बोलने से और उन के हराम खाने से? यक़ीनन बुरे हैं वो

مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝٦٣ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ

काम जो वो कर रहे हैं। और यहूदियों ने कहा के अल्लाह का हाथ बन्धा हुवा है।

غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ

وقف لازم

उन के हाथ बन्ध जाएं और उन पर इस केहने की वजह से लानत हो। बल्के अल्लाह के दोनों हाथ खुले हुए हैं।

يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ

वो खर्च करता है जैसे चाहता है। और उन में से बहोत सों को ज़रूर सरकशी और कुफ्र में

مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا

बढ़ाएगा वो कुरआन जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से उतारा गया है। और हम ने उन के

بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ

दरमियान क़यामत के दिन तक अदावत और बुग्ज़ डाल दिया।

كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ

जब कभी वो लड़ाई की आग भड़काएंगे तो अल्लाह उसे बुझा देंगे। और वो ज़मीन में

فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٦٤

फसाद फैलाने की कोशिश करते हैं। और अल्लाह फसाद फैलाने वालों से महब्बत नहीं करते।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ

और अगर एहले किताब ईमान लाते और तक़वा इखतियार करते तो हम उन से उन की बुराइयाँ

سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ

दूर कर देते और हम उन्हें जन्नाते नईम में दाखिल करते। और अगर वो

اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ

तौरात और इन्जील को क़ाइम करते और उन किताबों को जो उन की तरफ उन के रब की तरफ से उतारी गईं,

مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ

तो वो अलबत्ता ज़रूर खाते अपने ऊपर से और अपने पैरों के नीचे से।

مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ

उन में से एक जमाअत ऐतेदाल वाली है। और उन में से अक्सर बुरे हैं वो काम

مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

जो वो कर रहे हैं। ऐ पैग़म्बर! आप उस को पहोंचा दीजिए जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से

مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ

उतारा गया। और अगर आप ऐसा नहीं करोगे तो फिर आप ने अल्लाह का पैग़ाम नहीं पहोंचाया।

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى

और अल्लाह आप की इन्सानों से हिफाज़त करेंगे। यक़ीनन अल्लाह काफिर कौम को

الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾ قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ

हिदायत नहीं देते। आप फरमा दीजिए ऐ एहले किताब! तुम किसी चीज़ पर भी नहीं

عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ

हो जब तक के तुम तौरात और इन्जील को क़ाइम न करो और उन अहकाम को जो तुम्हारे रब की जानिब से तुम्हारी

اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ

तरफ उतारे गए हैं। और उन में से बहोत सों को सरकशी और कुफ्र में बढ़ाएगा वो

اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ

कुरआन जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से उतारा गया। इस लिए आप

عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

काफिर क़ौम पर अफसोस न कीजिए। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए

وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ

और जो यहूदी हैं और जो साबी हैं और जो नसारा हैं उन में से जो भी ईमान लाएगा

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और नेक अमल करता रहेगा तो उन पर न खौफ

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَقَدْ اَخَذْنَا

होगा और न वो ग़मगीन होंगे। यक़ीनन हम ने

مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ط

बनी इस्राईल से पुख्ता अहद लिया और हम ने उन की तरफ पैग़म्बर भेजे।

كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ

जब कभी उन के पास कोई पैग़म्बर उस को ले कर आता था जिसे उन के नफ्स चाहते नहीं थे

فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَ فَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَحَسِبُوْٓا

तो उन्हों ने एक जमाअत को झुठलाया और एक जमाअत को वो क़त्ल करते थे। और उन्हों ने गुमान किया

اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَ صَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ

के फितना नहीं होगा, फिर वो अन्धे बने और बेहरे हो गए, फिर अल्लाह ने उन की तौबा क़बूल

عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَ صَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ط وَاللّٰهُ

फरमाई, फिर वो अन्धे हो गए और बेहरे हो गए उन में से बहोत से। और अल्लाह

بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا

देख रहा है उन कामों को जो वो कर रहे हैं। यक़ीनन काफिर हैं वो लोग जिन्हों ने कहा के

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ط وَقَالَ الْمَسِيْحُ

यक़ीनन अल्लाह मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ही है। हालांके मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने कहा के

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ط

ऐ बनी इस्राईल! तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है।

اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ

यक़ीनन जो भी अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएगा तो यक़ीनन अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम

الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ط وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾

कर दी है और उस का ठिकाना दोज़ख है। और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं होगा।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ

यक़ीनन काफिर हैं वो लोग जिन्हों ने कहा के यक़ीनन अल्लाह तीन में का

وقف لازم

ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ

तीसरा है। हालांके कोई माबूद नहीं मगर यकता माबूद।

وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और अगर वो बाज़ नहीं आएंगे उन बातों से जो वो केह रहे हैं तो उन में से काफिरों

مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ

को ज़रूर दर्दनाक अज़ाब पहोंचेगा। क्या फिर वो अल्लाह की तरफ तौबा

اِلَى اللّٰهِ وَ يَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾

नहीं करते और उस से इस्तिग़फार नहीं करते? और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ

मसीह इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) नहीं हैं मगर भेजे हुए पैग़म्बर। यक़ीनन उन से

مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا

पहले भी बहोत से पैग़म्बर गुज़र चुके हैं। और उन की माँ सिद्दीक़ा थीं। वो दोनों

يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ

खाना भी खाते थे। आप देखिए के हम उन के लिए कैसे आयतें बयान करते हैं,

ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ

फिर आप देखिए के वो कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम अल्लाह

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا

के अलावा इबादत करते हो ऐसी चीज़ों की जो तुम्हारे लिए न ज़रर की मालिक हैं,

وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ

न नफे की मालिक हैं? और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। आप फरमा दीजिए ऐ एहले

الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ

किताब! तुम अपने दीन में हक़ के अलावा से गुलू मत करो और तुम

وَلَا تَتَّبِعُوْٓا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ

ऐसी क़ौम की ख्वाहिशात के पीछे मत चलो जो इस से पेहले गुमराह हो चुके

ع ١٠

وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾ ع

और उन्हों ने बहोत सों को गुमराह कर दिया और खुद भी सीधी राह से भटक गए।

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ

बनी इस्राईल में से काफिरों पर लानत की गई दावूद (अलैहिस्सलाम) की

دَاوٗدَ وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا

ज़बानी और ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) की ज़बानी। ये इस वजह से के उन्हों ने नाफरमानी की और वो हद से

يَعْتَدُوْنَ ۝۷۸ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ

आगे बढ़ते थे। वो एक दूसरे को रोकते नहीं थे ऐसे बुरे कामों से

فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝۷۹ تَرٰى كَثِيْرًا

जिन्हें वो खुद करते थे। यक़ीनन बुरे थे वो काम जो वो कर रहे थे। आप उन में से बहोत सों

مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ

को देखोगे के वो काफिरों से दोस्ती रखते हैं। अलबत्ता बुरे हैं वो आमाल जो खुद उन्हों ने अपने लिए

لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ

आगे भेज दिए हैं, इस वजह से के अल्लाह उन पर नाराज़ है और वो अज़ाब में

هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝۸۰ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ

हमेशा रहेंगे। और अगर वो ईमान लाते अल्लाह पर और इस नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर

وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ

और उस कुरआन पर जो इस नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ उतारा गया तो उन्हें दोस्त न बनाते,

وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝۸۱ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ

लेकिन उन में से अक्सर नाफरमान हैं। आप ज़रूर पाओगे तमाम इन्सानों में से

عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ

सब से ज़्यादा सख्त अदावत रखने वाला ईमान वालों से यहूदियों को और मुशरिकीन को।

وَ لَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

और ज़रूर आप मुसलमानों से सब से ज़्यादा महब्बत के ऐतेबार से क़रीब पाओगे

الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ

उन लोगों को जो केहते हैं के हम नसारा हैं। ये इस वजह से के उन में

قِسِّيْسِيْنَ وَ رُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝۸۲

उलमा हैं और राहिब हैं और इस वजह से के वो तकब्बुर नहीं करते।

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ

और जब वो उस कुरआन को सुनते हैं जो रसूल की तरफ उतारा गया तो आप उन की आँखों को

تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ

आंसुओं से बेहती हुइ देखेंगे उस हक़ की वजह से जो उन्हों ने पेहचाना। वो केहते हैं के

رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا

ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, इस लिए आप हमें शहादत देने वालों के साथ लिख दीजिए। और हमें क्या हुवा

لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ

के हम ईमान न लाएं अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमारे पास आया, हालांके हम

اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَاَثَابَهُمُ

उम्मीद रखते हैं के हमारा रब हमें सालेह कौम के साथ शामिल कर दे। फिर अल्लाह ने

اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

उन के इस केहने की वजह से बदले में ऐसी जन्नतें दीं, जिन के नीचे नेहरें बेहती होंगी,

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِيْنَ

वो उन में हमेशा रहेंगे। और ये नेकी करने वालों का बदला है। और जिन लोगों ने

كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٨٦﴾

कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वो दोज़खी हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ

ऐ ईमान वालो! तुम उन पाकीज़ा चीज़ों को हराम मत करो जो अल्लाह ने तुम्हारे

اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ

लिए हलाल की हैं और तुम हद से आगे मत बढ़ो। यक़ीनन अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों से

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪

महब्बत नहीं करते। और तुम अल्लाह तआला की दी हुई हलाल व पाकीज़ा रोज़ी को खाओ।

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ

और तुम अल्लाह से डरो, उस अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो। अल्लाह तुम्हारा मुआखज़ा

اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِىْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا

नहीं करेंगे तुम्हारी लग्व क़स्मों में, लेकिन अल्लाह तुम्हारा मुआखज़ा करेंगे

عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ عَشَرَةِ

तुम्हारी पुख्ता कस्मों में। फिर उस का कफ्फारा दस मिस्कीन को खाना

مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ

खिलाना है उस दरमियानी खाने में से जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन को कपड़ा देना है

اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ

या एक गुलाम आज़ाद करना है। फिर जो उस को न पाए तो तीन दिन के रोज़े हैं।

ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْۤا

ये तुम्हारी क़स्मों का कफ्फारा है जब तुम क़सम खा बैठो। और तुम अपनी कस्मों

اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ

की हिफाज़त करो। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान करते हैं ताके तुम

تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ

शुक्र अदा करो। ऐ ईमान वालो! शराब

وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ

और जुवा और बुत और जुवे के तीर गन्दगी, शैतान के कामों में

الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ

से हैं, इस लिए तुम उन से बचो ताके तुम फलाह पाओ। शैतान तो सिर्फ ये

الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ

चाहता है के शराब और जुवे की वजह से तुम्हारे दरमियान

فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

अदावत और बुग्ज़ डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद से

وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾ وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ

और नमाज़ से रोक दे। क्या फिर तुम बाज़ आते हो? और तुम अल्लाह की इताअत करो

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ

और रसूल की इताअत करो और बचते रहो। फिर अगर तुम मुंह फेर लोगे

فَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ

तो जान लो के हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे सिर्फ साफ साफ पहोंचा देना है। उन लोगों

عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ

पर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन पर कोई गुनाह नहीं है

فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

उस में जो वो पेहले खा चुके जब के वो मुत्तक़ी रहे और ईमान लाए और नेक अमल करते रहे,

ثُمَّ اتَّقَوْا وَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ط وَ اللّٰهُ

फिर वो मुत्तक़ी रहे और ईमान लाए, फिर मुत्तक़ी रहे और नेकोकार रहे। और अल्लाह

يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۳﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ

नेकी करने वालों से महब्बत फरमाते हैं। ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर

اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ

आज़माएंगे किसी क़दर शिकार के ज़रिए जिन को पहोंचते होंगे तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े,

لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ج فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ

इस लिए ताके अल्लाह मालूम करे उस शख्स को जो अल्लाह से डरता है बग़ैर देखे। फिर भी उस के बाद जो ज़्यादती

ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۴﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا

करेगा तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है। ऐ ईमान वालो! तुम शिकार को मत क़त्ल

الصَّيْدَ وَ اَنْتُمْ حُرُمٌ ط وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا

करो इस हाल में के तुम मुहरिम हो। और जो तुम में से उस को क़त्ल करेगा जान बूझ कर

فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ

तो बदला देना है उसी जैसा चौपाया जो उस ने क़त्ल किया, जिस का फैसला करेंगे तुम में से दो आदिल

مِّنْكُمْ هَدْيًا ۢ بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ

आदमी, जो हदी बन कर काबे को पहोंचने वाली हो, या कफ्फारा देना है मिस्कीनों का खाना

اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ط عَفَا

या उस के बराबर रोज़े रखने हैं ताके वो अपने गुनाह के वबाल को चखे। अल्लाह ने

اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ط وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ط

मुआफ कर दिया उस को जो पेहले हो चुका। और जो दोबारा ऐसा करेगा तो अल्लाह उस से इन्तिक़ाम लेंगे।

وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۹۵﴾ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ

और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। तुम्हारे लिए हलाल किया गया समन्दर का शिकार

ع ۱۲ ۲

وَ طَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ

और उस का खाना तुम्हारे फाइदे के लिए और मुसाफिरों के लिए। और तुम पर हराम किया गया

صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ

खुश्की का शिकार जब तक तुम मुहरिम हो। और उस अल्लाह से डरो

اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ

जिस की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। अल्लाह ने काबे को हुरमत वाला घर

الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْیَ

बनाया, इन्सानों के क़ियाम का ज़रिया बनाया, और अल्लाह ने हुरमत वाले महीने और हदी के जानवरों को

وَالْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا

और उन के गले में पड़े हुए पट्टों को (अमन का ज़रिया बनाया)। ये इस लिए ताके तुम जान लो के अल्लाह जानता है

فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ

उस को जो आसमानों और ज़मीन में है और ये के अल्लाह हर चीज़ को खूब

عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ

जानने वाले हैं। जान लो के यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं और ये के अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَی الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ

बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। रसूल के ज़िम्मे नहीं है मगर पहोंचा देना। और अल्लाह

يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّا يَسْتَوِی

खूब जानता है उसे जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। आप फरमा दीजिए के नापाक और

الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا

पाकीज़ा दोनों बराबर नहीं हो सकते अगर्चे गन्दी चीज़ की कसरत तुझे अच्छी लगे। तो अल्लाह से

اللّٰهَ يٰۤاُولِی الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾ يٰۤاَيُّهَا

डरो ऐ अक़्ल वालो! ताके फलाह पाओ। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ

ईमान वालो! बहोत सी चीज़ों के मुतअल्लिक़ सवाल मत करो के अगर वो तुम्हारे सामने ज़ाहिर की जाएं

تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ

तो तुम्हें बुरी लगें। और अगर सवाल करोगे उन चीज़ों के मुतअल्लिक़ जिस वक़्त कुरआन नाज़िल किया जा रहा है

تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

तो वो तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएंगी। साबिक़ा सवालात अल्लाह ने मुआफ कर दिए। और अल्लाह बख्शने वाले, हिल्म वाले हैं।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا

तुम से पेहले एक क़ौम ने उन चीज़ों का सवाल किया, फिर वो उस के साथ

كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ

कुफ्र करने वाले बन गए। अल्लाह ने नहीं बनाया बहीरा और न साइबा

وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

और न वसीला और न हाम, लेकिन वो लोग जो काफिर हैं

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

वो अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं। और उन में से अक्सर अक़्ल नहीं रखते।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

और जब उन से कहा जाता है के तुम आओ उस की तरफ जो अल्लाह ने उतारा

وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ

और रसूल की तरफ तो वो केहते हैं के हमारे लिए काफी है वो जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया।

اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٤﴾

क्या अगर्चे उन के बाप दादा कुछ भी जानते नहीं थे और हिदायतयाफ्ता नहीं थे?

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ

ऐ ईमान वालो! तुम अपनी फिक्र करो। तुम्हें ज़रर नहीं दे सकता

مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا

वो शख्स जो गुमराह हो गया जब तुम हिदायतयाफ्ता रहोगे। अल्लाह ही की तरफ तुम सब को लौट कर जाना है,

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों के मुतअल्लिक़ जो तुम करते थे। ऐ ईमान वालो!

شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ

तुम्हारे दरमियान की गवाही जब तुम में से किसी एक की मौत का वक़्त क़रीब आ जाए, तो

الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ

वसीय्यत के वक़्त तुम में से दो आदिल आदमी हैं या तुम्हारे अलावा में से दो,

اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ

अगर तुम ज़मीन में सफर करो, फिर तुम्हें मौत की मुसीबत

الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ

पहोंचे। तो तुम उन दोनों गवाहों को रोक लो नमाज़ के बाद, फिर वो अल्लाह की क़सम खाएं

اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ

अगर तुम शक करो, के हम इस क़सम को किसी क़ीमत पर नहीं बेच रहे, अगर्चे क़रीबी रिश्तेदार ही क्यूं न हो,

وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ۞۱۰۶ فَاِنْ عُثِرَ

और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाते हैं। यक़ीनन तब तो हम गुनेहगारों में से बन जाएंगे। फिर अगर इत्तिला

عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا

मिल जाए इस बात की के वो दोनों (क़सम खाने वाले) गुनाह के मुस्तहिक़ हुए हैं (हक़ दबा कर के) तो फिर दूसरे दो आदमी

مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ

मय्यित के क़रीबी रिश्तेदार उन के क़ाइम मुक़ाम हों उन में से जिन का हक़ दबा है, फिर वो दोनों अल्लाह की क़सम खाएं

لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَاۤ ۖ اِنَّاۤ

के यक़ीनन हमारी गवाही उन (पेहले वालों) की गवाही से ज़्यादा सच्ची है और हम ने ज़्यादती नहीं की। तब तो

اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۞۱۰۷ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ

हम ही कुसूरवार बन जाएंगे। ये इस के ज़्यादा क़रीब है के वो गवाही को अदा करें

عَلٰى وَجْهِهَاۤ اَوْ يَخَافُوْۤا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ

उस के तरीक़े पर या वो डरें इस से के उन की क़स्मों के बाद दूसरी क़स्में ली जाएंगी।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

और तुम अल्लाह से डरो और सुनो। और अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत नहीं

الْفٰسِقِيْنَ ۞۱۰۸ ع يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَاۤ

देते। जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को जमा करेंगे, फिर पूछेंगे के तुम्हें क्या

اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۞۱۰۹

जवाब दिया गया? वो कहेंगे के हमें मालूम नहीं। यक़ीनन तू ही ग़ैब की चीज़ों को जानने वाला है।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِىْ

जब के अल्लाह ने फरमाया के ऐ ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)! याद करो मेरी उस नेअमत को

عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۗ

जो आप पर हुई और आप की वालिदा पर। जब के मैं ने तुम्हारी ताईद की रूहुल कुदुस के ज़रिए।

تُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ

तुम इन्सानों से कलाम करते थे गेहवारे में और बड़ी उम्र में। और जब मैं ने

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ

तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील की तालीम दी। और जब तुम

مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِىْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا

मिट्टी से परिन्दे की शक्ल की तरह बनाते थे मेरे हुक्म से, फिर तुम उस में फूँक मारते थे,

فَتَكُوْنُ طَيْرًا ۢ بِاِذْنِىْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ

फिर वो उड़ता हुवा परिन्दा बन जाता था मेरे हुक्म से, और तुम नाबीना और बर्स वाले को मेरे हुक्म से अच्छा

بِاِذْنِىْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِىْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِىْٓ

करते थे। और जब तुम मुर्दों को मेरे हुक्म से (ज़िन्दा कर के) निकालते थे। और जब मैं ने बनी

اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ

इस्राईल को तुम से रोका जब आप उन के पास मोअजिज़ात ले कर आए, फिर उन में से

كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾ وَاِذْ

काफिरों ने कहा बस, ये तो खुला जादू है। और जब

اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِىْ وَبِرَسُوْلِىْ ۚ قَالُوْٓا

मैं ने वही की हवारीयीन की तरफ के तुम मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ। तो उन्हों ने कहा

اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

के हम ईमान ले आए और आप गवाह रहिए के हम मुसलमान हैं। जब के हवारीयीन ने कहा

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ

ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या आप का रब इस की ताक़त रखता है के हमारे ऊपर आसमान से

عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۗ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ

माइदा (भरा हुवा दस्तरख्वान) उतारे। ईसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अल्लाह से डरो अगर तुम

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ

मोमिन हो। उन्हों ने कहा के हम ये चाहते हैं के उस से खाएं और हमारे दिल

قُلُوْبُنَا وَ نَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَ نَكُوْنَ عَلَيْهَا

मुतमइन हों और मालूम कर लें के आप ने हम से सच बोला है और हम उस पर गवाही देने

مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۱۱۳﴾ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ

वालों में से हो जाएं। ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने कहा ऐ अल्लाह!

رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا

ऐ हमारे रब! तू हम पर आसमान से भरा हुवा दस्तरख्वान उतार जो हमारे

عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَ اٰخِرِنَا وَ اٰيَةً مِّنْكَ ج وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ

अगले और पिछलों के लिए खुशी का बाइस बने और तेरी तरफ से निशानी हो। और आप हमें रोज़ी दीजिए,

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ج

और आप बेहतरीन रोज़ी देने वाले हैं। अल्लाह ने फरमाया के मैं उसे उतारूंगा तुम पर।

فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا

लेकिन उस के बाद तुम में से जो कुफ्र करेगा तो मैं उसे ऐसा अज़ाब दूंगा के

لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ ع وَ اِذْ قَالَ اللّٰهُ

जहान वालों में से किसी को वो अज़ाब नहीं दूंगा। और जब अल्लाह ने फरमाया के

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ

ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या आप ने इन्सानों से कहा था के तुम मुझे

وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ

और मेरी माँ को अल्लाह को छोड़ कर दो माबूद बना लो। ईसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा के आप पाक हैं, मेरे लिए

لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ق بِحَقٍّ ط اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ

मुनासिब नहीं था के मैं कहूं वो जिस का मुझे हक़ नहीं। अगर मैं ने वो कहा होता तो यक़ीनन

عَلِمْتَهٗ ط تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ط

आप को मालूम होता। (क्यूं के) आप जानते हैं उस को जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता उस को जो आप के जी में है।

اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۱۱۶﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا

यक़ीनन आप तमाम छुपी हुई चीज़ों को खूब जानने वाले हैं। मैं ने तो उन से नहीं कहा मगर

مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ج وَكُنْتُ

वही जिस का आप ने मुझे हुक्म दिया के तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है। और मैं

الربع

ع ٥ / ٥

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ

उन पर गवाह था जब तक मैं उन में था। फिर जब आप ने मुझे उठा लिया

اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾

तो आप उन पर निगरान थे। और आप हर चीज़ देख रहे थे।

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ

अगर आप उन्हें अज़ाब दें तो यक़ीनन वो आप के बन्दे हैं। और अगर आप उन की मग़फिरत कर दें तो यक़ीनन

اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ

आप ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। अल्लाह ने फरमाया के ये वो दिन है के

الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

सच्चों को उन की सच्चाई नफा देगी। उन के लिए जन्नतें होंगी जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से राज़ी

عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

हुए। ये भारी कामयाबी है। अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन और उन तमाम चीज़ों

وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾

की सलतनत है जो उन में हैं। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

ع ١٦

اٰيَاتُهَا ١٦٥ (٦) سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ (٥٥) رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

उस में १६५ आयतें हैं सूरह अन्आम मक्का में नाज़िल हुई और २० रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा किए और तारीकियों और नूर को

الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۬ ؕ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١﴾

पैदा किया। फिर वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया, वो अपने रब के साथ दूसरे शुरका को बराबर क़रार देते हैं।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ؕ

वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर उस ने एक आखिरी मुद्दत का फैसला कर लिया।

وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ۝٢ وَهُوَ اللّٰهُ

और मुक़र्रर की हुई आखिरी मुद्दत अल्लाह के पास है, फिर भी तुम शक करते हो? और वही अल्लाह

فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ

आसमानों में भी है और ज़मीन में भी है। वो जानता है तुम्हारी चुपके से कही हुई बात को और तुम्हारी ज़ोर

وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ۝٣ وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ

से कही हुई बात को और वो जानता है उन आमाल को जो तुम करते हो। और उन के पास कोई निशानी नहीं आती

مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ۝٤ فَقَدْ

उन के रब की निशानियों में से मगर वो उस से ऐराज़ करते हैं। फिर

كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ

उन्हों ने हक़ को झुठलाया जब वो उन के पास आया। फिर अनक़रीब उन के

اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ۝٥ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ

पास उन चीज़ों की खबरें आएंगी जिन का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। क्या उन्हों ने देखा नहीं

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِی الْاَرْضِ

के हम ने उन से पेहले कितनी क़ौमों को हलाक किया जिन को हम ने क़ुदरत दी थी ज़मीन में,

مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا۪

उतनी जितनी हम ने तुम्हें क़ुदरत नहीं दी और हम ने उन पर आसमान बरसता हुवा छोड़ा।

وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

और हम ने नेहरें बनाईं जो उन के नीचे से बेहती थीं, फिर हम ने उन को हलाक किया

بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ۝٦

उन के गुनाहों की वजह से और हम ने उन के बाद दूसरी क़ौमें पैदा कीं।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِیْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ

और अगर हम आप के ऊपर कागज़ में लिखी हुई किताब उतारते, फिर वो उस को अपने हाथों से

بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ

छूते, तब भी काफिर लोग केहते के ये नहीं है मगर खुला

مُّبِيْنٌ۝٧ وَ قَالُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ

जादू। और उन्हों ने कहा के इस नबी पर कोई फरिश्ता क्यूं नहीं उतारा गया? और अगर

اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِیَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا یُنْظَرُوْنَ۝۸ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ

हम फरिश्ता उतारते तो अलबत्ता मुआमला खत्म कर दिया जाता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। और अगर हम उस को फरिश्ता

مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّ لَلَبَسْنَا عَلَیْهِمْ مَّا یَلْبِسُوْنَ۝۹

बनाते तो उस फरिश्ते को भी मर्द बनाते और हम उन पर वही शुबह डाल देते जिस शुबहे में वो अब हैं।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِیْنَ

यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बरों का भी इस्तिहज़ा किया गया, फिर उन में से मज़ाक़ करने वालों को

سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ۝۱۰ قُلْ

उस अज़ाब ने घेर लिया जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। आप फरमा दीजिए

ع ٧

سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

के तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो के झुठलाने वालों का अन्जाम

الْمُكَذِّبِیْنَ۝۱۱ قُلْ لِّمَنْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

कैसा हुआ। आप फरमा दीजिए के किस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं?

قُلْ لِّلّٰهِ كَتَبَ عَلٰی نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لَیَجْمَعَنَّكُمْ

आप फरमा दीजिए ये अल्लाह ही की हैं। अल्लाह ने अपनी ज़ात पर रहमत लाज़िम कर ली है। ज़रूर वो तुम्हें जमा

اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا رَیْبَ فِیْهِ اَلَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

करेगा क़यामत के दिन जिस में कोई शक नहीं। वो लोग जिन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला है, वो

فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ۝۱۲ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِی الَّیْلِ وَالنَّهَارِ

ईमान नहीं लाएंगे। और अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो रात और दिन में सुकून हासिल करती हैं। और वही

وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ۝۱۳ قُلْ اَغَیْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِیًّا

अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है। आप फरमा दीजिए के क्या मैं अल्लाह के अलावा को दोस्त बनाऊँ,

فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ یُطْعِمُ وَلَا یُطْعَمُ

जो अल्लाह आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है और वो खाना देता है और उसे खाना नहीं दिया जाता।

قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ

आप फरमा दीजिए के मुझे इस का हुक्म है के मैं सब से अव्वल फरमांबरदार बनूँ

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ۝۱۴ قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ

और आप मुशरिकीन में से हरगिज़ न बनें। आप फरमा दीजिए के अगर मैं मेरे रब की नाफरमानी

عَصَيْتُ رَبِّىْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ

करूं तो मैं भारी दिन के अज़ाब से डरता हूँ। जिस शख्स से उस दिन

عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

वो अज़ाब हटा दिया जाएगा, तो यक़ीनन अल्लाह ने उस पर रहम फरमाया। और ये खुली कामयाबी है।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ؕ

और अगर अल्लाह आप को ज़रर पहोंचाए तो सिवाए उस के कोई उस को दूर नहीं कर सकता।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

और अगर अल्लाह आप को भलाई पहोंचाए तो वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

और वो अपने बन्दों पर ग़ालिब है। और वो हिक्मत वाला, खबर रखने वाला है।

قُلْ اَىُّ شَىْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِيْدٌۢ

आप फरमा दीजिए के कौन सी चीज़ शहादत के ऐतेबार से सब से बड़ी है? आप फरमा दीजिए के अल्लाह! मेरे

بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَاُوْحِىَ اِلَىَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ

और तुम्हारे दरमियान गवाह है। और मेरी तरफ ये कुरआन वही किया गया ताके मैं उस के ज़रिए तुम्हें

بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ

डराऊँ और उन्हें भी डराऊँ जिन को ये कुरआन पहोंचे। क्या तुम गवाही देते हो के

مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ

अल्लाह के साथ दूसरे माबूद भी हैं? आप फरमा दीजिए के मैं तो गवाही नहीं देता। आप फरमा दीजिए के वो तो सिर्फ

وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِىْ بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ

وقف لازم بإختلاف

यकता माबूद है और ये के मैं बरी हूँ उन चीज़ों से जिन को तुम शरीक ठेहराते हो। वो लोग जिन को हम ने

الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ

وقف لازم

किताब दी वो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पेहचानते हैं जैसा के वो अपने बेटों को पेहचानते हैं। वो लोग

خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ ع وَمَنْ اَظْلَمُ

ع ٢ / ٨

जिन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला है अब वो ईमान नहीं लाएंगे। और उस से ज़्यादा ज़ालिम

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ

कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या उस की आयतों को झुठलाए? यक़ीनन

لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ

ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और जिस दिन हम उन्हें इकट्ठा करेंगे, फिर हम

لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ

मुशरिकीन से कहेंगे तुम्हारे वो शुरका कहां हैं जिन का तुम दावा किया

تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ

करते थे? फिर उन का जवाब नहीं होगा मगर ये के वो कहेंगे के हमारे रब अल्लाह की कसम!

رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا

हम शिर्क नहीं करते थे। आप देखिए के कैसे उन्हों ने अपनी जानों के खिलाफ

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ

झूठ बोला और उन से खो जाएंगे जो वो झूठ गढ़ा करते थे। और उन में से कुछ लोग

مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً

वो हैं जो आप की तरफ कान लगाते हैं। और हम ने उन के दिलों पर परदे रख दिए हैं

اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ

इस से के वो उस को समझें और उन के कानों में डाट रख दी है। और अगर वो तमाम मोअजिज़ात भी देख लेंगे

لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ

तब भी उन पर ईमान नहीं लाएंगे। यहां तक के जब वो आप के पास आते हैं तो आप से झगड़ते

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ

हुए काफिर लोग केहते हैं के ये नहीं है मगर पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ। और ये

يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ

दूसरों को उस से रोकते हैं और खुद भी उस से दूर भागते हैं। और वो हलाक नहीं करते

اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا

मगर अपनी जानों को और उन्हें पता नहीं। और काश के आप देखते जब वो आग के सामने खड़े किए जाएंगे,

عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا

फिर वो कहेंगे के काश के हम ज़मीन में दोबारा लौटाए जाते और हम अपने रब की आयात को न झुठलाते और हम

وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا

ईमान लाने वालों में से होते। बल्के उन के सामने खुल जाएंगे वो जिस को वो

يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ

इस से पेहले छुपाया करते थे। और अगर वो ज़मीन में लौटा भी दिए जाएं तब भी दोबारा वही करेंगे जिस से

وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا

उन्हें रोका गया था और यक़ीनन ये झूठ बोल रहे हैं। और ये केहते हैं के ये ज़िन्दगी नहीं है मगर हमारी सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी,

وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ

और हम मरने के बाद ज़िन्दा कर के उठाए नहीं जाएंगे। और काश के आप देखते जब वो अपने रब के सामने खड़े किए

قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا

जाएंगे तो अल्लाह फरमाएंगे क्या ये हक़ नहीं है? तो वो कहेंगे क्यूं नहीं? हमारे रब की क़सम! अल्लाह फरमाएंगे

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

के फिर अज़ाब चखो इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे। यक़ीनन नुक़सान उठाया उन लोगों ने जिन्हों ने अल्लाह की

بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا

मुलाक़ात को झुठलाया। यहां तक के जब उन के पास क़यामत अचानक आएगी तो वो कहेंगे

يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ

हाए अफसोस हमारी उस कोताही पर जो हम ने क़यामत के बारे में की। और वो अपने गुनाह उठा रहें होंगे

عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾ وَمَا الْحَيٰوةُ

अपनी पुश्तों पर। सुनो! बुरा है वो बोझ जो वो उठा रहे हैं। और ये दुन्यवी ज़िन्दगी

الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ

नहीं है मगर खेल और अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली। और अलबत्ता पिछला घर बेहतर है

لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ

उन के लिए जो मुत्तक़ी हैं। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? यक़ीनन हमें मालूम है के आप को

لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ

ग़मगीन करती है वो बात जो ये केहते हैं, के ये कुफ्फार आप को झूठा नहीं केहते,

وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ

लेकिन ये ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बरों

مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى

को झुठलाया गया, फिर उन्हों ने सब्र किया उन के झुठलाए जाने पर और उन को ईज़ा दिए जाने पर, यहां तक के

ع ٩

اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ

उन के पास हमारी नुसरत आई। और अल्लाह के कलिमात को कोई बदल नहीं सकता। और यक़ीनन आप के पास

مِنْ نَّبَاِئ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ

पैग़म्बरों की खबरों में से कुछ हिस्सा आ चुका है। और यक़ीनन आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उन का ऐराज़

اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ

भारी है, फिर अगर आप इस की ताक़त रखते हों के ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लें

اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

या आसमान में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई मोअजिज़ा आप ले आएं। और अगर अल्लाह चाहता

لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٥﴾

तो उन को हिदायत पर इकट्ठा कर देता, इस लिए आप जाहिलों में से न हों।

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ

बात सिर्फ वही लोग क़बूल करते हैं जो कान लगा कर सुनते हैं। और मुर्दों को अल्लाह ज़िन्दा कर के

اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ

उठाएंगे, फिर अल्लाह की तरफ वो लौटाए जाएंगे। और ये केहते हैं के इस नबी पर उस के रब की

مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً

तरफ से कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं उतारा गया? आप फरमा दीजिए यक़ीनन अल्लाह इस पर क़ादिर है के वो कोई मोअजिज़ा उतारे

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ

लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और ज़मीन में कोई चलने वाला नहीं

وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا

और न कोई परिन्दा अपने बाज़ुओं के ज़रिए उड़ता है, मगर वो तुम जैसी उम्मतें हैं। हम ने इस किताब

فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ

में कोई चीज़ नहीं छोड़ी। फिर अपने रब की तरफ उन्हें इकट्ठा किया जाएगा। और वो लोग

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّ بُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ

जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया वो बेहरे हैं और गूंगे हैं, तारीकियों में हैं। जिस को अल्लाह चाहें

يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾

उसे गुमराह कर देते हैं। और जिसे अल्लाह चाहते हैं उसे सीधे रास्ते पर कर देते हैं।

النصف

وقف غفران

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ

आप फरमा दीजिए क्या तुम्हारी राए है के अगर तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब आ जाए या तुम्हारे पास क़यामत आ जाए,

اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤٠ بَلْ اِيَّاهُ

क्या अल्लाह के अलावा को तुम पुकारोगे, अगर तुम सच्चे हो, बल्के तुम उसी को

تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ

पुकारोगे, फिर वही दूर करेगा वो जिस की तरफ तुम पुकारते हो अगर वो चाहेगा

وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ۝٤١ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ

और तुम भूल जाओगे उन को जिन को तुम शरीक ठेहराते थे। और यक़ीनन हम ने रसूल भेजे उन उम्मतों की तरफ

مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ

जो आप से पेहले थीं, फिर हम ने उन को पकड़ा सख्ती और तकलीफ के ज़रिए, शायद के वो आजिज़ी करें।

يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٤٢ فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا

फिर जब उन के पास हमारा अज़ाब आया तो उन्हों ने आजिज़ी क्यूं नहीं की?

وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا

लेकिन उन के दिल सख्त हो गए और उन के लिए शैतान ने मुज़य्यन किए वो आमाल जो वो

يَعْمَلُوْنَ ۝٤٣ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ

करते थे। फिर जब उन्हों ने भुला दिया उसे जिस के ज़रिए उन्हें नसीहत की गई थी, तो हम ने उन पर

اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۭ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ

हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए। यहां तक के जब वो इतराए उस की वजह से जो उन्हें दिया गया था

بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ۝٤٤ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ

तो हम ने उन्हें अचानक पकड़ लिया, फिर वो मायूस हो कर रेह गए। फिर ज़ालिम क़ौम की जड़

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٥ قُلْ

काट दी गई। और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं। आप फरमा दीजिए के

اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ

तुम्हारी क्या राए है अगर अल्लाह तुम्हारी कुव्वते सिमाअ और तुम्हारी बसारत को ले ले और तुम्हारे दिलों पर

عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ۭ اُنْظُرْ

मुहर लगा दे, तो अल्लाह के अलावा कौन माबूद है जो उस को तुम्हारे पास ले आए? आप देखिए

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ۝٤٦ قُلْ

के हम कैसे आयतों को फेर फेर कर बयान करते हैं, फिर भी वो ऐराज़ कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए

اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً

तुम्हारी क्या राए है अगर तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब अचानक आ जाए या खुल्लम खुल्ला आ जाए

هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٤٧ وَمَا نُرْسِلُ

तो सिवाए ज़ालिमों के कोई और हलाक होगा? और हम रसूलों को नहीं

الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ

भेजते मगर बशारत देने वाले और डराने वाले बना कर। फिर जो ईमान लाए

وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٤٨

और इस्लाह करे तो उन पर न खौफ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا

और वो लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया उन्हें अज़ाब पहोंच कर रहेगा इस वजह से के वो

يَفْسُقُوْنَ ۝٤٩ قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ

नाफरमान थे। आप फरमा दीजिए के मैं तुम से नहीं केहता के मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं

وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ

और न मैं ग़ैब जानता हूँ और न मैं ये केहता हूँ के मैं फरिश्ता हूँ।

اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى

मैं तो सिर्फ उस के पीछे चलता हूँ जो मेरी तरफ वही किया जा रहा है। आप फरमा दीजिए के क्या अन्धा और बीना

وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝٥٠ وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ

बराबर हो सकते हैं? क्या फिर तुम सोचते नहीं हो? और आप उस के ज़रिए डराइए उन को

يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ

जो डरते हैं इस से के वो इकट्ठे किए जाएंगे उन के रब की तरफ, उन के लिए उस के

مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝٥١

अलावा कोई मददगार और सिफारिशी नहीं होगा, (डराइए) ताके वो डरें।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

और आप उन को न धुतकारें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह व शाम

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ

और उस की रिज़ा चाहते हैं। आप पर उन के हिसाब में से कुछ भी

مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ

नहीं है और न आप के हिसाब में से उन पर कुछ है, फिर आप उन को धुतकार दोगे

فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٢ وَ كَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ

तो आप भी ज़ालिमों में से बन जाओगे। और इसी तरह हम ने उन में से एक को दूसरे के लिए

بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ

फितना (आज़माईश का ज़रिया) बनाया ताके वो कहें के क्या यही लोग हैं जिन पर हमारे दरमियान में से अल्लाह ने

مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝٥٣ وَاِذَا جَآءَكَ

इन्आम फरमाया? क्या अल्लाह क़दर करने वालों को खूब नहीं जानते? और जब आप के पास आएं

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ

वो लोग जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप कहिए अस्सलामु अलैकुम, तुम्हारे

رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ

रब ने अपनी ज़ात पर रहमत लाज़िम कर ली है के जो तुम में से कोई बुरा काम

سُوْٓءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ

कर लेगा नावाक़िफ़ीयत से, फिर वो उस के बाद तौबा कर लेगा और इस्लाह कर लेगा तो यक़ीनन अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥٤ وَ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और इसी तरह हम आयात तफसील से बयान करते हैं और इस लिए ताके

سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٥٥ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ

मुजरिमों का रास्ता साफ हो जाए। आप फरमा दीजिए के मुझे इस से मना किया गया है के मैं इबादत करूँ उन की

تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ

अल्लाह को छोड़ कर के जिन को तुम पुकारते हो। आप फरमा दीजिए के मैं तुम्हारी ख्वाहिशात के पीछे नहीं चलूंगा,

قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝٥٦ قُلْ

यक़ीनन तब तो मैं गुमराह हो जाऊँगा और मैं हिदायतयाफता लोगों में से नहीं हूंगा। आप फरमा दीजिए

اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ كَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ

यक़ीनन मैं अपने रब की तरफ से रोशन दलील पर हूँ और तुम ने उस को झुठलाया। मेरे पास वो अज़ाब नहीं

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ

है जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे हो। हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का चलता है। अल्लाह हक़ को बयान करता है और

وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِىْ

वो बेहतरीन फैसला करने वाला है। आप फरमा दीजिए के अगर मेरे पास वो अज़ाब होता

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِىَ الْاَمْرُ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ؕ

जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे हो तो मुआमला मेरे और तुम्हारे दरमियान खत्म कर दिया जाता।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾ وَ عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ

और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं। और अल्लाह के पास गै़ब की कुन्जियाँ हैं,

لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ وَ يَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ

उन को सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जानता। और अल्लाह जानता है उन तमाम चीज़ों को जो खुश्की और समन्दर में हैं।

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ

और कोई पत्ता नहीं गिरता मगर अल्लाह उसे जानता है और कोई दाना ज़मीन की

فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا

तारीकियों में नहीं होता और न कोई तर चीज़ और न खुश्क चीज़ है, मगर

فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ

वो साफ साफ बयान करने वाली किताब (यानी लौहे महफूज़) में है। और वही अल्लाह तुम्हें रात में वफात देता है

وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ

और वो जानता है उन आमाल को जो तुम दिन में करते हो, फिर वो तुम्हें उठाता है नींद से दिन में

لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ

ताके मुकर्रर की हुई आखिरी मुद्दत पूरी की जा सके। फिर उसी की तरफ तुम्हें लौट कर जाना है,

ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ

फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जो तुम करते थे। और वो अपने बन्दों पर ग़ालिब

عِبَادِهٖ وَ يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ

है और वो तुम पर मुहाफिज़ फरिश्ते भेजता है। यहां तक के जब तुम में से किसी एक की मौत का वक़्त

اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾

क़रीब आता है तो उसे हमारे भेजे हुए फरिश्ते वफात देते हैं और वो कोताही नहीं करते।

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۟

फिर वो लौटाए जाएंगे अल्लाह की तरफ जो उन का हक़ीक़ी मौला है। सुनो! उसी के लिए हुक्म है और वो हिसाब

وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ

लेने वालों में सब से तेज़ हिसाब लेने वाला है। आप फरमा दीजिए कौन तुम्हें खुश्की और

مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ

समन्दर की तारीकियों से नजात देता है, तुम उसी को पुकारते हो आजिज़ी से और चुपके चुपके।

لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

के अगर वो हमें इस से नजात देगा तो हम ज़रूर शुक्र करने वालों में से बन जाएंगे।

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ

आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही तुम्हें उस से नजात देता है और हर तकलीफ से नजात देता है, फिर तुम

تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ

शिर्क करने लग जाते हो। आप फरमा दीजिए के वो अल्लाह इस पर क़ादिर है के तुम पर अज़ाब

عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ

भेजे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या मुख्तलिफ फिरक़े बना कर

شِيَعًا وَّ يُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ

तुम्हें खलत मलत कर दे और तुम्हें आपस की लड़ाई का मज़ा चखाए। आप देखिए के हम

نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ

आयतों को कैसे फेर फेर कर बयान करते हैं ताके वो समझें। और आप की क़ौम ने उसे

قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾ ؕ

झुठलाया हालांके वो हक़ है। आप फरमा दीजिए के मैं तुम पर मुसल्लत नहीं हूँ।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ز وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ

हर खबर के लिए एक वाक़ेअ होने का वक़्त है। और अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। और जब आप

الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ

देखें उन लोगों को जो हमारी आयतों के बारे में बेहूदा कलाम करते हैं तो आप उन से ऐराज़ कीजिए

حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ

यहां तक के वो उस के अलावा किसी दूसरी बात में लग जाएं। और अगर आप को शैतान

الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾

भुला दे तो आप याद आने के बाद ज़ालिम क़ौम के साथ न बैठिए।

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

और मुत्तक़ियों पर उन के हिसाब की ज़िम्मेदारी ज़रा भी नहीं,

وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ الَّذِيْنَ

लेकिन नसीहत कर देना है, शायद वो मुत्तक़ी बन जाएं। और आप छोड़ दीजिए उन लोगों को

اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ

जिन्हों ने अपना दीन लहव व लइब को बना रखा है और उन को दुन्यवी ज़िन्दगी ने धोके में डाल रखा है

الدُّنْيَا وَ ذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ

और इस की आप नसीहत करते रहिए के कहीं कोई शख़्स उन आमाल की वजह से हलाक हो जाए जो उस ने किए।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ

के उस के लिए अल्लाह के अलावा कोई मददगार और सिफारिशी न हो।

وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

और अगर वो सारे फिदये भी दे देगा तो उस की तरफ से नहीं लिए जाएंगे। यही वो लोग हैं जो

اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ

हलाक हुए उन आमाल की वजह से जो उन्हों ने किए। उन के लिए गर्म पानी से पीना होगा और दर्दनाक

اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ

अज़ाब होगा इस वजह से के वो कुफ्र करते थे। आप फरमा दीजिए के क्या हम पुकारें अल्लाह को छोड़ कर के

اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَ نُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا

उन चीज़ों को जो हमें न नफा दे सकती हैं और न हमें ज़रर पहोंचा सकती हैं और हम पलट जाएं हमारी एड़ियों के बल

بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ

इस के बाद के अल्लाह ने हमें हिदायत दी उस शख़्स की तरह जिस को शयातीन ने

فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ

खबती बना दिया हो ज़मीन में हैरान हो। उस के दोस्त उस को बुला रहे हों

اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ

हिदायत की तरफ के तू हमारे पास आ जा। आप फरमा दीजिए के यक़ीनन अल्लाह की हिदायत वही हिदायत है।

وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا

और हमें हुक्म दिया गया है के हम रब्बुल आलमीन के सामने झुक जाएं। और ये के नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ۗ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾

क़ाइम करो और उस से डरो। और वही अल्लाह है जिस की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ

और वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया हक़ के साथ।

وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۗ وَلَهُ

और जिस दिन वो केहता है हो जा, तो वो हो जाता है। उस का केहना हक़ है। और उसी के लिए

الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ۗ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۗ

सलतनत है उस दिन जिस दिन सूर में फूंका जाएगा। वो छुपी हुई और ज़ाहिर चीज़ को जानने वाला है।

وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ

और वो हिक्मत वाला, बाखबर है। और जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने बाप आज़र से

اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ

फरमाया के क्या आप बुतों को माबूद बनाते हो? यक़ीनन मैं आप को और आप की क़ौम को

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ

खुली गुमराही में देख रहा हूँ। और इसी तरह हम इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को

مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ

दिखाने लगे आसमानों और ज़मीन की सलतनत ताके वो

مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ

यक़ीन करने वालों में से हों। फिर जब उन पर रात छा गई तो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सितारा देखा।

قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾

केहने लगे ये मेरा रब है। फिर जब वो डूब गया तो फरमाने लगे के मैं डूबने वालों से महब्बत नहीं

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ

करता। फिर जब आप ने चमकता हुवा चाँद देखा तो फरमाया ये मेरा रब है।

فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ

फिर जब वो भी डूब गया तो फरमाया के अगर मुझे मेरे रब ने हिदायत न दी, तो मैं गुमराह लोगों

مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ۝٧٧ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً

में से हो जाउंगा। फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जगमगाता सूरज देखा

قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ج فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ

तो फरमाया ये मेरा रब है के ये सब से बड़ा है। फिर जब वो डूब गया तो फरमाया

يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ۝٧٨ اِنِّيْ وَجَّهْتُ

ऐ मेरी क़ौम! यक़ीनन मैं तुम्हारे शिर्क से बरी हूँ। यक़ीनन मैं ने सब

وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا

तरफ से कट कर अपना रूख कर लिया है उस ज़ात की तरफ जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ۝٧٩ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ط قَالَ

और मैं मुशरिकीन में से नहीं हूँ। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से हुज्जतबाज़ी की उन की क़ौम ने। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ط وَلَآ اَخَافُ

ने फरमाया क्या तुम मुझ से हुज्जतबाज़ी करते हो अल्लाह के बारे में हालांके उस ने मुझे हिदायत दी है। और

مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ط وَسِعَ رَبِّيْ

मैं ज़रा भी नहीं डरता उन चीज़ों से जिन को तुम शरीक ठेहराते हो मगर ये के मेरा रब चाहे। मेरा रब हर

كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ط اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ۝٨٠ وَكَيْفَ

चीज़ पर इल्म के ऐतेबार से वसीअ है। क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और कैसे

اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ

मैं डरूंगा उन चीज़ों से जिन को तुम ने शरीक ठेहरा रखा है हालांके तुम नहीं डरते उस से के तुम ने अल्लाह

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ط

के साथ शरीक ठेहरा रखा है ऐसी चीज़ों को जिस पर अल्लाह ने तुम पर कोई दलील नहीं उतारी।

وقف لازم

فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ج اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۝٨١

फिर दोनों जमाअतों में से कौन सी जमाअत अमन की ज़्यादा हक़दार है, अगर तुम इल्म रखते हो?

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ

वो लोग जो ईमान लाए और जिन्हों ने अपने ईमान को ज़ुल्म के साथ नहीं मिलाया, तो उन्ही

لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ۝٨٢ ع وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ

लोगों के लिए अमन है और वही हिदायतयाफता हैं। और ये हमारी हुज्जत है

ع ٩/١٥

اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ

जो हम ने दी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को उन की क़ौम के खिलाफ। हम दरजात बुलन्द करते हैं जिस के चाहते हैं। यक़ीनन

اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۸۳﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ

तेरा रब हिक्मत वाला, इल्म वाला है। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इस्हाक़ और याकूब (अलैहिमस्सलाम) अता किए।

كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَ نُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ

सब को हम ने हिदायत दी। और नूह (अलैहिस्सलाम) को हम ने इस से पेहले हिदायत दी और उन्ही की औलाद

وَ سُلَيْمٰنَ وَ اَيُّوْبَ وَ يُوْسُفَ وَ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ؕ وَ كَذٰلِكَ

में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून (अलैहिमुस्सलाम) को हिदायत दी। और इसी तरह

نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۴﴾ وَ زَكَرِيَّا وَ يَحْيٰى وَ عِيْسٰى وَ اِلْيَاسَ ؕ

हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं। और ज़करीया और यहया और ईसा और इल्यास (अलैहिमुस्सलाम) को हिदायत दी।

كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۵﴾ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَ يُوْنُسَ

सब के सब सुलहा में से थे। और इस्माईल और अलयसअ और यूनुस और लूत (अलैहिमुस्सलाम)

وَ لُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۶﴾ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ

को हिदायत दी। और उन सब को हम ने तमाम जहान वालों पर फज़ीलत दी। और उन के बाप दादा

وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَ اِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَ هَدَيْنٰهُمْ

और उन की औलाद और उन के भाईयों में से भी हिदायत दी। और हम ने उन को मुन्तखब किया और हम ने उन को हिदायत

اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۸۷﴾ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ

दी सीधे रास्ते की। ये अल्लाह की हिदायत है, इस के ज़रिए वो हिदायत देता है जिसे

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

चाहता है अपने बन्दों में से। और अगर ये अम्बिया भी शिर्क करते तो उन से हब्त हो जाते वो अमल जो

يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ

उन्हों ने किए। ये वो थे के जिन्हें हम ने किताब और शरीअत और

وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا

नबूव्वत दी। फिर अगर ये लोग उस के साथ कुफ्र करेंगे तो हम इसे ऐसी क़ौम को सौंप देंगे

لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ

जो उस के साथ कुफ्र करने वाली नहीं होगी। यही लोग हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत दी, तो उन की हिदायत की

اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى

आप इक़्तिदा कीजिए। आप फरमा दीजिए के मैं उस पर तुम से किसी अज्र का सवाल नहीं करता। ये तो सिर्फ तमाम जहान

لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ اِذْ قَالُوْا

वालों के लिए नसीहत है। और उन्हों ने अल्लाह की क़दर नहीं पेहचानी जैसा के उस की क़दर पेहचानने का हक़ है,

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَىْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ

जब के उन्हों ने कहा के अल्लाह ने किसी बशर पर कोई चीज़ नहीं उतारी। आप फरमा दीजिए के किस ने उतारी वो किताब

الَّذِىْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ

जो मूसा (अलैहिस्सलाम) ले कर आए थे जो नूर थी और हिदायत थी इन्सानों के लिए जिस को तुम

قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَ تُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَ عُلِّمْتُمْ

काग़ज़ात में रखते हो, कुछ हिस्से को तुम खोलते हो और बहोत सी चीज़ें छुपाते हो। और तुम्हें इल्म दिया गया

مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِىْ خَوْضِهِمْ

उन चीज़ों का जो तुम और तुम्हारे बाप दादा जानते नहीं थे। आप फरमा दीजिए के अल्लाह (ही ने किताब उतारी है), फिर

يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾ وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِىْ

आप उन को छोड़ दीजिए उन की दिल्लगी में खेलता हुवा। और ये किताब जो हम ने उतारी है बरकत वाली है, जो सच्चा बतलाने वाली है उन

بَيْنَ يَدَيْهِ وَ لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ

किताबों को जो इस से पेहले थीं और इस लिए ताके आप मक्का वालों को डराएं और उन बस्तियों को जो उस के इर्द गिर्द हैं। और जो लोग

يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

आखिरत पर ईमान रखते हैं वो इस पर भी ईमान रखते हैं और वो अपनी नमाज़ों की भी

يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

पाबन्दी करते हैं। और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े

اَوْ قَالَ اُوْحِىَ اِلَىَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَىْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ

या यूं कहे के मेरी तरफ भी वही किया गया, हालांके उस की तरफ कोई चीज़ वही नहीं की गई और जो यूं कहे के

مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِىْ غَمَرٰتِ

अनक़रीब मैं भी उतारूंगा उस के मानिन्द जो अल्लाह ने उतारा। और काश के आप देखते जब के ये ज़ालिम लोग मौत

الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ

की सखतियों में होंगे और फरिश्ते अपने हाथ फैलाए हुए होंगे। (और केहते होंगे के) अपनी जानें निकालो।

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ

आज तुम्हें सज़ा दी जाएगी ज़िल्लत के अज़ाब की इस वजह से के तुम अल्लाह पर हक़

عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَ كُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ

के अलावा केहते थे और तुम अल्लाह की आयतों से तकब्बुर करते थे। और यक़ीनन

جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ تَرَكْتُمْ

तुम हमारे पास अकेले आए हो जैसा के हम ने तुम्हें पेहली मर्तबा पैदा किया था और तुम वो माल जो हम ने

مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ

तुम्हें दिया था अपनी पीठ पीछे छोड़ कर आए हो। और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन शुफ़आ को नहीं

الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ

देखते जिन के मुतअल्लिक़ तुम दावा करते थे के ये तुम में शरीक हैं। यक़ीनन तुम्हारे दरमियान जुदाई वाकेअ हो गई

وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ

ع

और तुम से खो गए वो जिन का तुम दावा किया करते थे। यक़ीनन अल्लाह दाने को फाड़ने वाला है और गुठली को

وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ مُخْرِجُ الْمَيِّتِ

निकालने वाला है। वो ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को निकालने वाला है

مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ

ज़िन्दा से। यही अल्लाह है, फिर तुम कहाँ उल्टे फिरे जा रहे हो? वो सुबह को फाड़ने वाला है।

وَ جَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ

और उसी ने रात को सुकून का वक्त बनाया और सूरज और चाँद को हिसाब का ज़रिया बनाया। ये

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ

ज़बरदस्त इल्म वाले अल्लाह की मुक़र्रर की हुई मिक़्दार है। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए

لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ

ताके तुम उन के ज़रिए खुश्की और समन्दर की तारीकियों में राह पाओ। यक़ीनन हम ने आयतें फेर फेर कर बयान कीं

لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

ऐसी क़ौम के लिए जो जानती है। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया,

وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّ مُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

फिर एक मुस्तक़िल ठिकाना है एक और आरज़ी ठिकाना है। यक़ीनन हम ने आयतें तफसील से बयान कीं ऐसी क़ौम

يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا

के लिए जो समझती है। और वही अल्लाह है जिस ने आसमान से पानी उतारा। फिर हम ने

بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ

उस के ज़रिए हर चीज़ के सब्ज़े को निकाला, फिर हम ने उस से सरसब्ज़ पौदे निकाले जिस से हम तेह बतेह

حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ

दाने निकालते हैं। और खजूर से यानी उस के खोशे से मिले हुए गुच्छे होते हैं

وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا

और उस ने निकाला अंगूर के बागात और ज़ैतून और अनार को के कुछ उन में से एक दूसरे के मुशाबेह हैं

وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۗ

और कुछ एक दूसरे के मुशाबेह नहीं हैं। तुम देखो उस के फल की तरफ जब वो अपना फल लाता है और उस के पकने को देखो।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। और उन्हों ने अल्लाह के लिए

شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍ

जिन्नात को शुरका क़रार दिया, हालांके अल्लाह ने उन को पैदा किया है और उन्हों ने अल्लाह के लिए बेटे गढ़े और बेटियाँ गढ़ीं

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ

इल्म के बग़ैर। अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों से जो वो बयान करते हैं। अल्लाह आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ ۗ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۗ

को बग़ैर नमूने के पैदा करने वाला है। उस के लिए औलाद कहाँ हो सकती है जब के उस की बीवी नहीं?

وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ

और हर चीज़ उस ने पैदा की है। और वो हर चीज़ को खूब जानने वाला है। यही अल्लाह तुम्हारा

رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ

रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो हर चीज़ को पैदा करने वाला है, तो तुम उसी की इबादत करो। और वो

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ

हर चीज़ पर निगरान है। उस का इदराक नहीं कर सकती आँखें और वो आँखों का

الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ

इदराक करता है। और वो लुत्फ करने वाला, बाखबर है। यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से बसीरतें

ع ١٢/١٨

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ

आ गईं। फिर जो बसीरत को इस्तेमाल करेगा वो अपने ही फाइदे के लिए है। और जो अन्धा रहेगा तो उस पर उस का वबाल पड़ेगा।

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ

और मैं तुम पर मुहाफ़िज़ नहीं हूँ। और इसी तरह हम आयतों को फेर फेर कर बयान करते हैं

وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ

और इस लिए ताके वो कहें के तुम ने तो सबक़ पढ़ लिया है और इस लिए ताके हम उस को बयान करें ऐसी क़ौम के लिए जो समझे। आप उस

مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ

का इत्तिबा कीजिए जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से वही किया जा रहा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। और आप मुशरिकीन

عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ

से ऐराज़ कीजिए। और अगर अल्लाह चाहता तो वो शिर्क न करते। और हम ने आप को

عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَلَا تَسُبُّوا

उन पर मुहाफ़िज़ बना कर नहीं भेजा। और आप उन पर मुसल्लत नहीं हो। और तुम लोग गाली न दो

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ

उन्हें जिन को ये अल्लाह के अलावा पुकारते हैं, वरना वो अल्लाह को गाली देंगे हद से तजावुज़ कर के इल्म न होने की

عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ

वजह से। इसी तरह हर उम्मत के लिए हम ने उन के आमाल मुज़य्यन किए। फिर उन के रब की तरफ

مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ

उन का लौटना है, फिर वो उन्हें खबर देगा उन कामों की जो वो करते थे। और वो अल्लाह की क़स्में खाते हैं

جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ

अपनी क़स्मों को मुअक्कद कर के के अगर उन के पास मोअजिज़ा आ जाएगा तो ज़रूर वो उस पर ईमान लाएंगे। आप फरमा दीजिए

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ

के तमाम मोअजिज़ात सिर्फ अल्लाह के पास हैं और आप को क्या मालूम के जब मोअजिज़ा आ जाएगा

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْئِدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا

तब भी वो ईमान नहीं लाएंगे। और हम उन के दिलों को उलट पलट करते हैं और उन की आँखों को जैसा

لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ نَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع

रुकू १३

के वो उस पर पेहली मर्तबा में ईमान नहीं लाए और हम उन को उन की सरकशी में भटकता हुवा छोड़ते हैं।

ولو اننا نزلنا اليهم الملئكة و كلمهم الموتى

और अगर हम उन की तरफ फरिश्ते उतारते और उन से मुर्दे कलाम करते

و حشرنا عليهم كل شيء قبلا ما كانوا ليؤمنوا

और हम उन पर हर चीज़ को इकट्ठा कर देते आमने सामने तब भी वो ईमान न लाते

الا ان يشاء الله و لكن اكثرهم يجهلون ﴿١١١﴾

मगर ये के अल्लाह चाहे। लेकिन उन में से अक्सर जहालत की बातें करते हैं।

و كذلك جعلنا لكل نبي عدوا شيطين الانس

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिन्नात में से शयातीन को दुशमन बनाया है,

والجن يوحي بعضهم الى بعض زخرف القول

उन में से एक दूसरे को मुज़य्यन बात की धोका देने के लिए खबर देते

غرورا ط ولو شاء ربك ما فعلوه فذرهم وما يفترون ﴿١١٢﴾

हैं। और अगर तेरा रब चाहता तो वो ऐसा न करते, इस लिए आप उन को छोड़ दीजिए और उस चीज़ को जिस को वो खुद घड़ रहे हैं।

ولتصغى اليه افدة الذين لا يؤمنون بالاخرة

और इस लिए ताके उस की तरफ माइल हो जाएं उन लोगों के दिल जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

وليرضوه وليقترفوا ما هم مقترفون ﴿١١٣﴾ افغير

और इस लिए ताके वो उस को पसन्द करें, और ताके वो करते रहें वो बुरे काम जो वो कर रहे हैं। क्या फिर

الله ابتغي حكما وهو الذي انزل اليكم

अल्लाह के अलावा को मैं हकम के तौर पर तलाश करूं हालांके उसी ने तुम्हारी तरफ

الكتب مفصلا ط والذين اتينهم الكتب

किताब तफसील से उतारी है। और वो लोग जिन को हम ने किताब दी

يعلمون انه منزل من ربك بالحق فلا تكونن

वो जानते हैं के ये तुम्हारे रब की तरफ से हक़ के साथ नाज़िल की गई है, इस लिए आप शक

من الممترين ﴿١١٤﴾ وتمت كلمت ربك صدقا

करने वालों में से न हों। और आप के रब के कलिमात सच्चाई और इन्साफ में ताम्म

و عدلا ط لا مبدل لكلمته ج وهو السميع

हैं। उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं। और वो सुनने वाला,

الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ
इल्म वाला है। और अगर आप उन में से अक्सर का केहना मान लोगे जो ज़मीन में हैं

يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ
तो वो आप को अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर देंगे। वो तो सिर्फ गुमान के पीछे चलते हैं

وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ
और वो सिर्फ अटकल से बातें करते हैं। यक़ीनन आप का रब वो खूब जानता है उस शख्स को

يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾
जो अल्लाह के रास्ते से भटक गया। और वो हिदायतयाफ्ता लोगों को भी खूब जानता है।

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ
फिर तुम खाओ उस में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो अगर तुम अल्लाह की आयतों पर

مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ
ईमान रखते हो। और तुम्हें क्या हुवा के तुम न खाओ उस में से जिस पर अल्लाह का नाम

اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ
लिया गया हो, हालांके उस ने तुम्हारे लिए तफसील से बयान कर दिया है उस को जो उस ने तुम पर हराम किया है

اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَاۗىِٕهِمْ
मगर वो जिस की तरफ तुम मजबूर हो जाओ। और यक़ीनन बहोत से लोग अपनी ख्वाहिशात के ज़रिए बग़ैर इल्म के गुमराह

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾
करते हैं। यक़ीनन आप का रब वो हद से तजावुज़ करने वालों को खूब जानता है।

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ
और ज़ाहिरी गुनाह और बातिनी गुनाह छोड़ दो। यक़ीनन वो लोग जो गुनाह कमाते

الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَاْكُلُوْا
हैं, अनक़रीब उन्हें उन के करतूत की सज़ा दी जाएगी। और तुम मत खाओ

مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ۭ
उस में से जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो और यक़ीनन ये नाफरमानी है।

وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰۗـِٕهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ
और यक़ीनन शयातीन अपने दोस्तों की तरफ वही करते हैं ताके वो तुम से झगड़ें। और अगर

اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾ اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا

तुम उन का केहना मान लोगे तो यक़ीनन तुम भी मुशरिक हो जाओगे। क्या वो शख्स जो मुर्दा था

فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ

फिर हम ने उसे ज़िन्दा किया और हम ने उस के लिए नूर बनाया जिस को ले कर वो इन्सानों में चलता है,

كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِي الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ

उस के मानिन्द हो सकता है जिस का हाल तारीकियों में है, जिस से वो निकलने वाला नहीं है।

كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ

इसी तरह काफ़िरों के लिए मुज़य्यन किए गए वो अमल जो वो करते हैं। और इसी तरह

جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ

हम ने हर बस्ती में वहां के बड़े मुजरिमों को बनाया ताके वो उस में मक्कारी करें।

وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

और वो मक्कारी नहीं करते मगर अपनी ही जान के साथ और उन्हें पता नहीं।

وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ

और जब उन के पास कोई मोअजिज़ा आता है तो वो केहते हैं के हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे जब तक के हमें उस के जैसा

مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔۘ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ

(मोअजिज़ा) न दिया जाए जो अल्लाह के दूसरे पैग़म्बरों को दिया गया। अल्लाह खूब जानता है उस जगह को जहां वो अपने पैग़ाम को रखता है।

سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَ عَذَابٌ

अनक़रीब मुजरिमों को ज़िल्लत पहोंचेगी अल्लाह के पास और सख्त अज़ाब

شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ

पहोंचेगा इस वजह से के वो मक्कारी करते हैं। फिर वो शख्स जिस को हिदायत देने का अल्लाह

اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ

इरादा करे तो अल्लाह उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देते हैं। और जिस के गुमराह करने का अल्लाह इरादा

اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ

करते हैं उस का सीना तंग कर देते हैं, बहोत ज़्यादा तंग, गोया के वो आसमान में

فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

चढ़ रहा है। इसी तरह अल्लाह गन्दगी डालते हैं उन लोगों पर

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَ هٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ

जो ईमान नहीं लाते। और ये तेरे रब का रास्ता सीधा है। यक़ीनन

فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ

हम ने आयात को तफसील से बयान किया ऐसी क़ौम के लिए जो नसीहत हासिल करती है। उन के लिए दारूस्सलाम है

عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ

उन के रब के पास और वो उन का कारसाज़ है उन आमाल की वजह से जो वो कर रहे हैं। और जिस दिन

يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ

अल्लाह उन तमाम को इकट्ठा करेगा, (तो कहेगा के) ऐ जिन्नात की जमाअत! तुम बहोत ज़्यादा

مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا

इन्सानों को तलब कर चुके। और उन के दोस्त इन्सानों में से कहेंगे ऐ हमारे रब!

اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ

हम में से एक ने दूसरे से फाइदा उठाया और हम पहोंच गए हमारी मुक़र्रर की हुई आखिरी मुद्दत तक

اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ

जो तू ने हमारे लिए मुक़र्रर की थी। अल्लाह फरमाएंगे के दोज़ख तुम्हारा ठिकाना है, उस में हमेशा रहोगे,

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذٰلِكَ

मगर जितना अल्लाह चाहे। यक़ीनन तेरा रब हिक्मत वाला, इल्म वाला है। और इसी तरह

نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع

हम ज़ालिमों में से एक को दूसरे पर मुसल्लत करते हैं उन आमाल की वजह से जो वो करते हैं।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

ऐ जिन्नात और इन्सानों की जमाअत! क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आए

يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

जो तुम पर मेरी आयतें तिलावत करते और जो तुम्हें तुम्हारे इस दिन के मिलने से

هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ

डराते थे? तो उन्हों ने कहा के हम ने हमारी जानों के खिलाफ गवाही दी और उन को दुन्यवी ज़िन्दगी ने

الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

धोके में डाले रखा और उन्हों ने अपनी जानों के खिलाफ गवाही दी के वो

كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى

काफिर थे। ये इस वजह से के तेरा रब बस्तियों को हलाक नहीं करता

بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ

ज़ुल्म से इस हाल में के वहां वाले गाफिल हों। और हर एक के लिए उन के आमाल के मुताबिक़

مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَرَبُّكَ

दरजात हैं। और तेरा रब बेखबर नहीं है उन कामों से जो वो कर रहे हैं। और तेरा रब

الْغَنِيُّ ذُوالرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ

बेनियाज़ है, रहमत वाला है। अगर वो चाहे तो तुम्हें हलाक कर दे और तुम्हारे

مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ

बाद जानशीन बनाए जिसे चाहे जैसा के तुम्हें दूसरी क़ौम की ज़ुर्रीयत में

قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ؕ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ

से पैदा किया। यक़ीनन जिस का तुम से वादा किया जा रहा है वो ज़रूर आने वाला है। और तुम भाग कर

بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ

अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते। आप फरमा दीजिए ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह पर रेह कर अमल करते रहो,

اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ

यक़ीनन मैं भी अमल कर रहा हूँ। अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के किस के लिए आखिरत का

الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

घर है। यक़ीनन ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और उन्हों ने अल्लाह के लिए हिस्सा

مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا

मुक़र्रर किया उस खेती में से और चौपाओं में से जिस को अल्लाह ने पैदा किया, फिर उन्हों ने अपने ज़अम के

لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ

मुताबिक़ कहा के ये अल्लाह का हिस्सा है और ये हमारे शुरका का हिस्सा है। फिर जो उन के शुरका का हिस्सा है

فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ

वो अल्लाह को नहीं पहोंचता। और जो अल्लाह का हिस्सा है वो उन के शुरका को

اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ

पहोंच जाता है। बुरे हैं वो फैसले जो वो कर रहे हैं। और इसी तरह मुशरिकीन में से

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ
बहोत सों के लिए उन के शुरका ने उन की औलाद का क़त्ल मुज़य्यन किया ताके वो उन्हें हलाक कर दें

وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ
और ताके उन पर उन के दीन को मुल्तबिस कर दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वो ऐसा न करते,

فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝١٣٧ وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ
इस लिए आप छोड़ दीजिए उन को और उन चीज़ों को जिस को वो झूठ गढ़ रहे हैं। और उन्हों ने कहा के ये चौपाए हैं

وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ
और ये खेतियाँ हैं जो ममनूअ हैं। इस को नहीं खा सकता मगर वही जो हम चाहें उन के ज़अम के मुताबिक़ और ये

وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَ اَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ
चौपाए हैं के जिन की पुश्त (उन की सवारी) हराम है और ये चौपाए जिन पर वो लोग

اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ
अल्लाह का नाम नहीं लेते, उस पर झूठ गढ़ते हुए। अनक़रीब अल्लाह उन को सज़ा देगा

بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝١٣٨ وَ قَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ
उन के झूठ गढ़ने की। और उन्हों ने कहा के जो इन चौपाओं के पेटों

الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَ مُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ
में है वो खालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी बीवियों पर हराम है।

وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ
और अगर वो (जनीन) मुर्दा हो तो वो सब उस में शरीक होंगे। अनक़रीब अल्लाह उन को उन के

وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝١٣٩ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ
बयान की सज़ा देगा। यक़ीनन वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है। यक़ीनन नुक़सान उठाया उन लोगों ने

قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا ۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا
जिन्हों ने अपनी औलाद को क़त्ल किया हिमाक़त से इल्म न होने की वजह से और उन्हों ने हराम की

مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا
वो चीज़ें जो अल्लाह ने उन को रोज़ी के तौर पर दी अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए। यक़ीनन वो गुमराह हो गए और

مُهْتَدِيْنَ ۝١٤٠ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ
उन्हों ने हिदायत नहीं पाई। और वही अल्लाह है जिस ने बेलों वाले और जिस ने बेलों के अलावा के (तने वाले दरख्तों के)

وَّ غَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ

बाग़ात बनाए, और उस ने खजूर और खेती को बनाया जिन के फल मुख्तलिफ होते हैं (मज़े और शक्ल में)।

وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ

और जिस ने ज़ैतून और अनार को बनाया के कुछ उन में से एक दूसरे के मुशाबेह हैं और कुछ एक दूसरे के मुशाबेह नहीं

كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ ۫

हैं। तो तुम उस के फल में से खाओ जब वो फल लाए और तुम उस का उस की खेती काटने के दिन हक़ अदा करो।

وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾

और तुम इसराफ मत करो। यक़ीनन अल्लाह इसराफ करने वालों से महब्बत नहीं करते।

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ

और उस ने चौपाओं में से कुछ जानवर बनाए बोझ उठाने वाले और कुछ छोटे चौपाए बनाए। तो तुम खाओ उस में

وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾

से जो अल्लाह ने तुम को रोज़ी के तौर पर दिए और तुम शैतान के क़दम बक़दम मत चलो। यक़ीनन वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ

उस ने आठ क़िस्में पैदा कीं। भेड़ों में से दो दो और बकरियों में से

اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ

दो दो। आप फरमा दीजिए के क्या दोनों मुज़क्कर उस ने हराम किए या दोनों मादाएं

اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِىْ بِعِلْمٍ

या जिस को दोनों मादाओं की बच्चेदानियाँ महफूज़ किए हुए हैं? तुम मुझे खबर दो दलील से

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ

अगर तुम सच्चे हो। और उस ने ऊँट में से पैदा किए दो दो

وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ

और गाए में से दो दो। आप फरमा दीजिए के क्या दोनों नर हराम किए या दोनों मादाएं हराम कीं

اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ

या उस को जिस को दोनों मादाओं की बच्चेदानी महफूज़ किए हुए हैं? क्या तुम

شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

मौजूद थे जब तुम्हें अल्लाह ने इस का हुक्म दिया? फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ

अल्लाह पर झूठ गढ़े ताके वो इन्सानों को बग़ैर तहक़ीक़ के गुमराह करे?

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ قُلْ لَّاۤ اَجِدُ

यक़ीनन अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत नहीं देते। आप फरमा दीजिए के मैं तो नहीं पाता

ع

فِىْ مَاۤ اُوْحِىَ اِلَىَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ

उस में जो मेरी तरफ वही किया जा रहा है कोई हराम चीज़ किसी खाने वाले पर जिस को वो खाए सिवाए

اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ

इस के वो मुर्दार हो या बेहता हुवा खून हो या खिन्ज़ीर का गोश्त हो, फिर वो यक़ीनन

رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ

सरापा गन्दगी है, या नाफरमानी का ज़रिया हो के उस पर ग़ैरुल्लाह का नाम लिया गया हो। फिर जो मजबूर हो जाए इस हाल में के वो लज़्ज़त को तलाश

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ

करने वाला न हो और जान बचाने की मिक़्दार से तजावुज़ करने वाला न हो तो यक़ीनन तेरा परवरदिगार बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और

هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ

यहूदियों पर हम ने हर नाखुन वाले जानवर को हराम किया था। और गाए और बकरी में से हम ने उन पर हराम किया था

حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ

उन की चरबियों को मगर वो चरबी जिस को उन की पीठ उठाए हुए हो

اَوِ الْحَوَايَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ

या आंतें जिस को उठाए हुए हो या जो हड्डियों के साथ मिली हुई हो। ये हम ने उन को उन की सरकशी की वजह से सज़ा दी।

وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ

और यक़ीनन हम सच्चे हैं। फिर अगर वो आप को झुठलाएं तो आप फरमा दीजिए तुम्हारा रब वसीअ

رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ

रहमत वाला है। और उस का अज़ाब मुजरिम क़ौम से लौटाया नहीं

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۴۷﴾ سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ

जाएगा। अनक़रीब मुशरिक लोग कहेंगे के अगर अल्लाह

اللّٰهُ مَاۤ اَشْرَكْنَا وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَىْءٍ ؕ

चाहता तो न हम और न हमारे बाप दादा शिर्क करते और न हम कोई चीज़ हराम करते।

كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا

इसी तरह झुठलाया उन लोगों ने जो उन से पेहले थे यहां तक के उन्हों ने हमारा अज़ाब

بَاْسَنَا ۭ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ۭ

चखा। आप फरमा दीजिए तुम्हारे पास क्या दलील है, तो तुम उसे हमारे सामने निकालो।

اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ۝١٤٨

तुम तो सिर्फ गुमान के पीछे चलते हो और तुम तो सिर्फ अटकल से बातें करते हो।

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ

आप फरमा दीजिए फिर अल्लाह ही के लिए (दिल तक) पहोंचने वाली हुज्जत है। फिर अगर अल्लाह चाहता तो तुम तमाम को हिदायत

اَجْمَعِيْنَ ۝١٤٩ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ

दे देता। आप फरमा दीजिए के तुम अपने गवाहों को लाओ जो गवाही दें

اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ

इस की के अल्लाह ने उस को हराम किया है। फिर अगर वो गवाही दें तो आप उन के साथ गवाही न दीजिए।

وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ

और उन की ख्वाहिशात के पीछे न चलिए जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और जो

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝١٥٠ قُلْ

आखिरत पर ईमान नहीं रखते और जो अपने रब के साथ दूसरे शुरका को बराबर क़रार देते हैं। आप फरमा दीजिए

تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ

के तुम आओ, मैं तिलावत करता हूँ वो जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम किया है, ये है के उस के साथ किसी भी

شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ

चीज़ को शरीक मत ठेहराओ और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करो। और अपनी औलाद को फक्र की वजह से

مِّنْ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا

क़त्ल मत करो। हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और बेहयाई की चीज़ों

الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا

के क़रीब मत जाओ, उन के जो उस में से ज़ाहिर हैं और जो छुपी हुई हैं। और उस नफ्स को

النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ

क़त्ल मत करो जिस को अल्लाह ने मुहतरम बनाया है, मगर हक़ की वजह से। इस की अल्लाह तुम्हें ताकीद

بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ

करता है ताके तुम अक़्लमन्द बनो। और यतीम के माल के क़रीब भी मत जाओ

اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَ اَوْفُوا

मगर उस तरीके से जो बेहतर हो यहां तक के वो अपनी जवानी को पहोंच जाए। और नाप

الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا

और तोल को इन्साफ के साथ पूरा पूरा दो। हम किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाते

اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ

मगर उस की वुस्अत के मुताबिक़। और जब बात करो तो इन्साफ की बात करो अगर्चे रिश्तेदार क्यूं न हों।

وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ

और अल्लाह के अहद को पूरा करो। इस की अल्लाह तुम्हें ताकीद करता है ताके तुम

تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۲﴾ وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا

नसीहत हासिल करो। और यक़ीनन ये मेरा रास्ता सीधा है

فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ

तो उस पर चलो। और अलग अलग रास्तों पर मत चलो, वरना वो तुम्हें अल्लाह के रास्ते से अलग कर

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۳﴾

देंगे। इस की अल्लाह तुम्हें ताकीद करता है ताके तुम मुत्तक़ी बनो।

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ

फिर हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को मुकम्मल किताब दी ऐसे लोगों के लिए जो नेक हैं

وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ

और हर चीज़ की तफसील और हिदायत और रहमत ताके वो अपने रब से मिलने

رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ

ع ۱۹

पर ईमान लाएं। और ये किताब है बरकत वाली जिस को हम ने उतारा,

فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۵۵﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا

तो उस के मुताबिक़ चलो और डरो ताके तुम पर रहम किया जाए। (इस वजह से उतारी) के कहीं तुम कहो

اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۠

के किताब हम से पेहले की दो जमाअतों पर उतारी गई।

وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا

और हम उन एहले किताब की किराअत (ज़बान और इल्म) से यक़ीनन बेखबर थे। या कहीं तुम ये कहो के

لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ

अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उन से ज़्यादा हिदायतयाफता होते।

فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ

फिर यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन किताब आ गई और हिदायत और रहमत आ गई।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ

फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उस से ऐराज़

عَنْهَا ۗ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا

करे। अनक़रीब हम उन को जो हमारी आयतों से ऐराज़ करते हैं

سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ

बदतरीन अज़ाब की सज़ा देंगे, इस वजह से के वो ऐराज़ करते हैं। वो मुन्तज़िर नहीं हैं

اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِىَ

मगर इस के के उन के पास फरिश्ते आ जाएं या तुम्हारा रब आ जाए या तेरे

بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ۗ يَوْمَ يَاْتِىْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ

रब की बाज़ अलामात आ जाएं। जिस दिन तेरे रब की बाज़ अलामात आ जाएंगी

لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ

तो किसी शख्स को उस का ईमान लाना नफा नहीं देगा जो उस से पेहले ईमान न लाया हो

اَوْ كَسَبَتْ فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ۗ قُلِ انْتَظِرُوْٓا

या जिस ने अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई हो। आप फरमा दीजिए के तुम मुन्तज़िर रहो,

اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا

यक़ीनन हम भी मुन्तज़िर हैं। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और वो

شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِىْ شَىْءٍ ۗ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ

अलग अलग गिरोह बन गए आप उन में से किसी चीज़ में नहीं हो। उन का मुआमला तो सिर्फ अल्लाह के सुपुर्द है,

ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ

फिर वो उन्हें खबर देगा उन कामों की जो वो करते थे। जो भलाई ले कर आएगा

فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ

तो उस के लिए उस के जैसी दस भलाइयाँ होंगी। और जो बुराई ले कर आएगा

فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ اِنَّنِىْ

तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उसी जैसी एक बुराई की और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। आप फरमा दीजिए यक़ीनन मुझे

هَدٰىنِىْ رَبِّىْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا

मेरे रब ने सीधे रास्ते की हिदायत दी है। सीधे दीन की,

مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत की, जो सब से कट कर एक अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِىْ وَ نُسُكِىْ وَ مَحْيَاىَ وَ مَمَاتِىْ لِلّٰهِ

आप फरमा दीजिए के यक़ीनन मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मरना अल्लाह रब्बुल आलमीन

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ

के लिए है। जिस का कोई शरीक नहीं। और उसी का मुझे हुक्म दिया गया है

وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِىْ رَبًّا

और मैं सब से पेहला इस्लाम लाने वाला हूँ। आप फरमा दीजिए क्या अल्लाह के अलावा मैं किसी को रब के तौर पर तलाश

وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَىْءٍ ۭ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ

करूं हालांके वो हर चीज़ का रब है? और कोई गुनाह नहीं करता

اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ

मगर वो उसी की जान पर वबाल होगा। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर

اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾

तुम्हारे रब की तरफ तुम्हें वापस जाना है, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन चीज़ों की जिन में तुम इखतिलाफ करते थे।

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ

और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें जानशीन बनाया ज़मीन में और जिस ने तुम में से एक को दूसरे पर

فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِىْ مَآ اٰتٰىكُمْ ۭ

दरजात के ऐतेबार से बुलन्द किया ताके वो तुम्हें आज़माए उस में जो उस ने तुम्हें दिया।

اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾

यक़ीनन तेरा रब जल्द हिसाब लेने वाला है। और यक़ीनन वो बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

اٰيَاتُهَا ۲۰۶ (۷) سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ (۳۹) رُكُوْعَاتُهَا ۲۴

उस में २०६ आयतें हैं सूरह आराफ मक्का में नाज़िल हुई और २४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓصٓ ۚ﴿۱﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِىْ صَدْرِكَ

अलिफ लाम मीम सॉद। ये किताब है जो आप की तरफ उतारी गई है, इस लिए आप के सीने में इस की तरफ

حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲﴾

से कोई तंगी न रहे ताके आप उस के ज़रिए डराएं और ये ईमान वालों के लिए नसीहत है।

اِتَّبِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا

तुम उस की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी तरफ उतारा गया है और तुम अल्लाह को छोड़ कर दोस्तों

مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳﴾ وَكَمْ

के पीछे मत चलो। बहोत कम तुम नसीहत हासिल करते हो। और कितनी बस्तियाँ

مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿۴﴾

हैं जिन को हम ने हलाक किया इस तरह के हमारा अज़ाब उन पर आया रात के वक़्त या जब वो क़ैलूला कर रहे थे।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَاۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا

फिर उन की पुकार नहीं थी जब के हमारा अज़ाब उन पर आया मगर ये के उन्हों ने कहा के

اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۵﴾ فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ

यक़ीनन हम ही कुसूरवार हैं। फिर हम ज़रूर सवाल करेंगे उन से जिन की तरफ पैग़म्बरों को भेजा गया

وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ﴿۶﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ

और पैग़म्बरों से भी ज़रूर हम सवाल करेंगे। फिर हम उन के सामने अपने इल्म से क़िस्से बयान करेंगे

وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ﴿۷﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ۟الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ

और हम ग़ाइब नहीं थे। और वज़न उस दिन हक़ है। फिर जिस के पलड़े भारी

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۸﴾ وَمَنْ خَفَّتْ

रहेंगे तो यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जिस के पलड़े हलके

مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا

रहेंगे तो यही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला इस वजह से के वो

بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝٩ وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ

हमारी आयतों के साथ ज़ुल्म करते थे। यक़ीनन हम ने तुम्हें बसाया ज़मीन में

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝١٠

और हम ने तुम्हारे लिए ज़मीन में ज़िन्दगी के अस्बाब बनाए। बहोत कम तुम शुक्र अदा करते हो।

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ

और यक़ीनन हम ने तुम्हें पैदा किया, फिर हम ने तुम्हारी सूरतें बनाईं, फिर हम ने फरिश्तों से कहा

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ

के आदम को सजदा करो। सिवाए इबलीस के सब ने सजदा किया। के वो सजदा करने वालों

مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝١١ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ

में से नहीं रहा। अल्लाह ने फरमाया तुझे क्या मानेअ हुवा इस से के तू सजदा नहीं करता जब के मैं ने तुझे हुक्म दिया?

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِىْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ

इबलीस ने कहा के मैं आदम से बेहतर हूँ। इस लिए के आप ने मुझे आग से पैदा किया और आप ने उसे

مِنْ طِيْنٍ ۝١٢ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ

मिट्टी से पैदा किया। अल्लाह ने फरमाया के फिर तू जन्नत से नीचे उतर जा, फिर तेरी ये ताक़त नहीं है

اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝١٣ قَالَ

के तू जन्नत में तकब्बुर करे, तो तू निकल जा! यक़ीनन तू ज़लील लोगों में से है। इबलीस ने कहा के

اَنْظِرْنِىْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝١٤ قَالَ اِنَّكَ

आप मुझे मोहलत दीजिए उस दिन तक जिस दिन मुर्दे कबरों से उठाए जाएंगे। अल्लाह ने फरमाया के

مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝١٥ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِىْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ

यक़ीनन तुझे मोहलत दी गई। इबलीस ने कहा के फिर इस वजह से के तू ने मुझे गुमराह किया है, मैं उन के लिए

صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝١٦ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْ بَيْنِ

तेरे सीधे रास्ते पर बैठ जाऊँगा। फिर मैं उन के पास आऊँगा उन के

اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ

आगे से और उन के पीछे से और उन के दाएं से

وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝١٧ قَالَ

और उन के बाएं से। और तू उन में से अक्सर को शुक्रगुज़ार नहीं पाएगा। अल्लाह ने फरमाया

اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ

के ज़लील और मरदूद हो कर तू जन्नत से निकल जा। अलबत्ता उन में से जो तेरे पीछे चलेगा

مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾ وَيٰۤاٰدَمُ

तो मैं तुम तमाम से जहन्नम को भर दूँगा। और (अल्लाह ने फरमाया के) ऐ आदम!

اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا

तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, फिर तुम दोनों खाओ जहां से तुम चाहो

وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

लेकिन इस दरख्त के क़रीब मत जाना, वरना तुम कुसूरवारों में से बन जाओगे।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا

फिर शैतान ने उन के लिए वसवसा डाला ताके उन के लिए खोल दे उन के छुपे

مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَ قَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا

हुए सतर को और इबलीस ने कहा के तुम्हारे रब ने तुम्हें इस

عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا

दरख्त से नहीं रोका मगर इस लिए के तुम दोनों फरिश्ते बन जाओगे या हमेशा रेहने वालों

مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَ قَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا

में से बन जाओगे। और इबलीस ने उन दोनों के सामने क़स्में खाईं के यक़ीनन मैं तुम दोनों के लिए

لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾ۙ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ

खैरख्वाही करने वालों में से हूँ। चुनांचे इबलीस ने उन दोनों को धोका दे कर नीचे गिरा दिया के जब दोनों ने दरख्त को

بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا

चखा तो उन के लिए उन के सतर खुल गए और वो दोनों अपने ऊपर जन्नत के

مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَ نَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا

पत्ते चिपकाने लगे। और उन के रब ने उन दोनों को पुकारा, क्या मैं ने तुम्हें मना नहीं किया था

عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَ اَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ

इस दरख्त से और मैं ने तुम से नहीं कहा था के शैतान तुम्हारा खुला

مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ

दुश्मन है? आदम और हव्वा (अलैहिमस्सलाम) केहने लगे ऐ हमारे रब! हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। और अगर

تَغۡفِرۡ لَنَا وَ تَرۡحَمۡنَا لَنَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ۝٢٣ قَالَ

आप हमारी मग़फिरत नहीं करोगे और हम पर रहम नहीं करोगे तो हम नुक़सान उठाने वालों में से बन जाएंगे। अल्लाह ने

اهۡبِطُوۡا بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمۡ فِي الۡاَرۡضِ

फरमाया के तुम सब नीचे उतर जाओ, तुम में से एक दूसरे के दुश्मन बन कर रहोगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में

مُسۡتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيۡنٍ ۝٢٤ قَالَ فِيۡهَا تَحۡيَوۡنَ

आरज़ी ठिकाना है और एक वक़्त तक फाइदा उठाना है। अल्लाह ने फरमाया के ज़मीन में तुम ज़िन्दगी गुज़ारोगे

وَ فِيۡهَا تَمُوۡتُوۡنَ وَ مِنۡهَا تُخۡرَجُوۡنَ ۝٢٥ يٰبَنِيۡۤ اٰدَمَ

और उसी में मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। ऐ इन्सानो!

قَدۡ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكُمۡ لِبَاسًا يُّوَارِيۡ سَوۡاٰتِكُمۡ وَرِيۡشًا ؕ

यक़ीनन हम ने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे जिस्म के उन हिस्सों को छुपा सके जिन का खोलना बुरा है और जो खुशनुमाई का ज़रिया भी है।

وَلِبَاسُ التَّقۡوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيۡرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ

और तक़्वे का लिबास ही बेहतर है। ये अल्लाह की आयात में से है

لَعَلَّهُمۡ يَذَّكَّرُوۡنَ ۝٢٦ يٰبَنِيۡۤ اٰدَمَ لَا يَفۡتِنَنَّكُمُ الشَّيۡطٰنُ

ताके वो नसीहत हासिल करें। ऐ इन्सानो! तुम्हें शैतान फितने में न डाले

كَمَاۤ اَخۡرَجَ اَبَوَيۡكُمۡ مِّنَ الۡجَنَّةِ يَنۡزِعُ عَنۡهُمَا لِبَاسَهُمَا

जैसा के तुम्हारे वालिदैन को जन्नत से निकाला के उन से उन के लिबास उतरवा रहा था

لِيُرِيَهُمَا سَوۡاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمۡ هُوَ وَ قَبِيۡلُهٗ

ताके उन को उन के सतर दिखाए। इस लिए के इबलीस और उस की जमाअत तुम्हें देखती है

مِنۡ حَيۡثُ لَا تَرَوۡنَهُمۡ ؕ اِنَّا جَعَلۡنَا الشَّيٰطِيۡنَ اَوۡلِيَآءَ

ऐसी जगह से के तुम उन को नहीं देख पाते। यक़ीनन हम ने शयातीन को उन लोगों का दोस्त बनाया है

لِلَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝٢٧ وَاِذَا فَعَلُوۡا فَاحِشَةً قَالُوۡا

जो ईमान नहीं लाते। और जब वो बेहयाई का काम करते हैं तो केहते हैं

وَجَدۡنَا عَلَيۡهَاۤ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلۡ

के हम ने इस पर हमारे बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया। आप फरमा दीजिए

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاۡمُرُ بِالۡفَحۡشَآءِ ؕ اَتَقُوۡلُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ

यक़ीनन अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देते। क्या तुम अल्लाह पर वो बात केहते हो

مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّىْ بِالْقِسْطِ ۗ وَاَقِيْمُوْا

जो तुम जानते नहीं हो? आप फरमा दीजिए के मेरे रब ने इन्साफ का हुक्म दिया है। और ये के तुम अपने रूख

وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ

सीधे रखो हर सजदे के वक्त और तुम उस को पुकारो उसी के लिए इबादत को खालिस

لَهُ الدِّيْنَ ۬ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَرِيْقًا هَدٰى

करते हुए। जैसा के उस ने तुम्हें पेहली मर्तबा पैदा किया, तुम दोबारा लौट कर आओगे। एक जमाअत को

وَ فَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا

अल्लाह ने हिदायत दी और एक जमाअत पर गुमराही साबित हो गई। यक़ीनन उन लोगों ने शयातीन को

الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ يَحْسَبُوْنَ

दोस्त बनाया अल्लाह को छोड़ कर के और वो समझते रहे के

اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ

वो हिदायतयाफता हैं। ऐ इन्सानो! तुम अपनी ज़ीनत ले लिया करो

عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ

हर नमाज़ के वक्त और तुम खाओ और पियो और हद से तजावुज़ मत करो। यक़ीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ

हद से तजावुज़ करने वालों से महब्बत नहीं करते। आप फरमा दीजिए के अल्लाह की ज़ीनत को जो उस ने अपने

اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ

बन्दों के लिए निकाली है और खाने की उम्दा चीज़ों को किस ने हराम किया? आप फरमा दीजिए ये नेअमतें

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ

ईमान वालों के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में हैं, क़यामत के दिन खालिस उन्ही के लिए

الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾

होंगी। इसी तरह हम आयतों को तफसील से बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो इल्म रखती हो।

قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا

आप फरमा दीजिए के मेरे रब ने बेहयाई की चीज़ों को हराम किया है, उन में से ज़ाहिरी को भी

وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا

और बातिनी को भी और उस ने हराम किया गुनाह और नाहक़ जुल्म को। और हराम किया ये के तुम अल्लाह के साथ

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا

शरीक ठेहराओ ऐसी चीज़ जिस पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और ये के तुम अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ

कहो वो जो तुम जानते नहीं हो। और हर उम्मत के लिए एक आखिरी वक्त मुक़र्रर किया हुवा है। फिर जब उस का

اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾

आखिरी मुक़र्रर किया हुवा वक़्त आ जाता है तो एक घड़ी न वो पीछे हट सकते हैं और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ

ऐ इन्सानो! अगर तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर आएं जो तुम पर मेरी आयतें

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ

तिलावत करें, फिर जो तक़्वा इखतियार करेगा और इस्लाह करेगा तो न उन पर खौफ होगा

وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

और न वो ग़मगीन होंगे। और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया

وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا

और उन से तकब्बुर किया वो दोज़खी हैं। वो उस में

خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

हमेशा रहेंगे। फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ

كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ

गढ़े या अल्लाह की आयतों को झुठलाए। उन को उन का हिस्सा लिखे हुए में से

مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ

पहोंच कर रहेगा। यहां तक के जब उन के पास हमारे भेजे हुए फरिश्ते आएंगे जो उन की जान निकाल रहे होंगे,

قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا

तो वो पूछेंगे कहाँ हैं वो शुरका जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा पुकारते थे? वो कहेंगे

ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا

के वो हम से खो गए और वो गवाही देंगे अपनी जानों के खिलाफ ये के वो

كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ

काफिर थे। अल्लाह फरमाएंगे के तुम दाखिल हो उन उम्मतों में जो तुम से पेहले

قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِى النَّارِ ؕ كُلَّمَا دَخَلَتْ

जिन्नात और इन्सानों की गुज़र चुकी हैं, (उन में शामिल हो कर) जहन्नम में दाखिल हो जाओ। जब कभी कोई जमाअत

اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ

जहन्नम में दाखिल होगी तो वो अपनी साथ वाली जमाअत पर लानत करेगी। यहां तक के जब वो जहन्नम में इकट्ठे हो जाएंगे

قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا

तो उन में से पीछे आने वाली जमाअत उन में से पेहली वाली जमाअत से कहेगी ऐ हमारे रब! ये वो लोग हैं

فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ؕ قَالَ لِكُلٍّ

जिन्हों ने हमें गुमराह किया, इस लिए आप उन्हें आग का दुगना अज़ाब दीजिए। अल्लाह फरमाएंगे हर एक के लिए

ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ

दुगना है, लेकिन तुम जानते नहीं हो। और उन में से पेहली जमाअत कहेगी

لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ

उन में से पीछे आने वाली जमाअत से के फिर तुम्हारे लिए हम पर कोई फज़ीलत नहीं है,

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٣٩﴾ ع

इस लिए तुम भी अज़ाब चखो उन्ही आमाल की वजह से जो तुम खुद करते थे।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ

यकीनन वो लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से तकब्बुर किया उन के लिए आसमान के दरवाज़े

لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ

खोले नहीं जाएंगे और वो जन्नत में दाखिल नहीं होंगे

حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِىْ سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى

यहां तक के ऊंट सुई के नाके (सुराख) में दाखिल हो जाए, और इसी तरह हम मुजरिमों को

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ

सज़ा देंगे। उन के लिए जहन्नम ही से बिछौना होगा और उन के ऊपर से

غَوَاشٍ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ओढ़ना भी होगा। और इसी तरह हम ज़ालिमों को सज़ा देंगे। और वो लोग जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَاۤ ۙ

और नेक काम करते रहे, हम किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाते मगर उस की ताक़त के मुताबिक़।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾
यही लोग जन्नती हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे।

وَ نَزَعْنَا مَا فِىْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِىْ
और हम निकाल देंगे वो कीना जो उन के सीनों में है, उन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَ قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ هَدٰىنَا
नेहरें बेहती होंगी। और वो कहेंगे के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की हिदायत

لِهٰذَا ۟ وَ مَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَاۤ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ
दी। और हम ऐसे नहीं थे के हम हिदायत पाते अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता।

لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَ نُوْدُوْۤا
यक़ीनन हमारे रब के भेजे हुए पैग़म्बर हक़ ले कर आए। और उन को आवाज़ दी जाएगी

اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾
के ये वो जन्नत है जिस का तुम्हें वारिस बनाया गया है उन आमाल की बदौलत जो तुम करते थे।

وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ
और जन्नती दोज़खियों को पुकारेंगे के यक़ीनन

وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ
हम ने तो हक़ पाया वो वादा जो हमारे रब ने हम से किया था, फिर क्या तुम ने उस वादे को हक़ पाया

مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ
जो तुम्हारे रब ने तुम से किया था? तो वो कहेंगे, जी हाँ। फिर एक ऐलान करने वाला उन के

بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ الَّذِيْنَ
दरमियान ऐलान करेगा के अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर। जो

يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ يَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ
अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में कजी तलाश करते थे।

وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَ بَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ
और वो आखिरत के भी मुन्किर थे। उन दोनों के दरमियान (आराफ की) दीवार होगी।

وَ عَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰهُمْ ۚ
और आराफ पर कुछ लोग होंगे जो सब को उन की अलामात से पेहचानते होंगे।

الثلثة

وقف لازم باختلاف

وَ نَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ قف

और वो जन्नतियों को पुकारेंगे के ''अस्सलामु अलैकुम''।

لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ

अब तक वो जन्नत में दाखिल नहीं हुए होंगे, बल्के वो उस का लालच रखते होंगे। और जब उन की निगाहें

تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا

दोज़खियों की तरफ फेरी जाएंगी, तो वो कहेंगे के ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिमों

مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا

के साथ मत करना। और आराफ वाले पुकारेंगे उन (चन्द) लोगों को

يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَاۤ اَغْنٰى عَنْكُمْ

जिन को वो उन की अलामात से पेहचानते होंगे, वो कहेंगे के तुम्हारे कुछ काम नहीं आया

جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ اَهٰۤؤُلَآءِ

तुम्हारा जमा किया हुवा माल और वो जो तुम बड़ा बनना चाहते थे। के क्या ये वही लोग हैं

الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ط اُدْخُلُوا

के तुम कस्में खाया करते थे के अल्लाह उन को रहमत नहीं पहोंचाएगा? तुम जन्नत में

الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾

दाखिल हो जाओ, तुम पर खौफ नहीं है और न तुम ग़मगीन होगे।

وَ نَادٰۤى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا

और दोज़खी जन्नतियों को पुकारेंगे के तुम हमारे ऊपर

عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ط قَالُوْۤا

पानी में से कुछ बहाओ या उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दिया है। तो वो कहेंगे के

اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

यक़ीनन अल्लाह ने उन दोनों को काफिरों पर हराम किया है। उन पर जिन्हों ने अपने

دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ج

दीन को दिल बेहलाने का ज़रिया और खेल बना लिया और उन को दुन्यवी ज़िन्दगी ने धोके में डाले रखा।

فَالْيَوْمَ نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا

फिर आज हम उन्हें भुला देंगे जैसा के उन्हों ने भुलाए रखा था उन के इस दिन के मिलने को। और इस

كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ﴿٥١﴾ وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ

वजह से के वो हमारी आयतों का इन्कार करते थे। यक़ीनन हम उन के पास किताब लाए हैं

فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ﴿٥٢﴾

जिस को हम ने इल्म के साथ तफसील से बयान किया है हिदायत और रहमत के तौर पर ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाए।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِیْ تَاْوِيْلُهٗ

वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर उस के नतीजे के। जिस दिन उस का नतीजा आ जाएगा

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ

तो कहेंगे वो लोग जिन्हों ने उस को भुला रखा था इस से पेहले के यक़ीनन हमारे रब के भेजे हुए पैग़म्बर

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا

हक़ ले कर आए थे। फिर क्या हमारे लिए कोई सिफारिशी है जो हमारे लिए सिफारिश

لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِیْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ

करे या हम (दुन्या में) वापस लौटाए जाएं के हम (जा कर) अमल करें उस के अलावा जो हम अमल करते थे? यक़ीनन

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ﴿٥٣﴾ ع

उन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला और उन से खो गए वो जो वो झूठ गढ़ा करते थे।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

यक़ीनन तुम्हारा रब वो अल्लाह है जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा किए

فِیْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَى الْعَرْشِ ۖ يُغْشِی

छे दिन में, फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा। वो रात को

الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

ढांपता है दिन पर, दिन रात की तलाश में तेज़ी से दौड़ता है और सूरज और चाँद

وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ

और सितारों को अपने हुक्म से काम में लगा रखा है। सुनो! उसी के लिए (आलमे) खल्क़ है और उसी के लिए (आलमे) अम्र है।

تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ﴿٥٤﴾ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ

अल्लाह बाबरकत है, तमाम जहानों का रब है। तुम अपने रब को पुकारो

تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾

आजिज़ी से और चुपके चुपके। यक़ीनन अल्लाह हद से आगे बढ़ने वालों से महब्बत नहीं करते।

وَلَا تُفۡسِدُوۡا فِى الۡاَرۡضِ بَعۡدَ اِصۡلَاحِهَا وَادۡعُوۡهُ خَوۡفًا

और ज़मीन में फसाद मत फैलाओ उस की इस्लाह के बाद और उसी को खौफ से और लालच

وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحۡمَتَ اللّٰهِ قَرِيۡبٌ مِّنَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ۝۵۶

से पुकारो। यक़ीनन अल्लाह की रहमत एहसान वालों से क़रीब है।

وَهُوَ الَّذِىۡ يُرۡسِلُ الرِّيٰحَ بُشۡرًاۢ بَيۡنَ يَدَىۡ

और वही अल्लाह है जो हवाओं को बशारत के तौर पर अपनी रहमत से पेहले

رَحۡمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتۡ سَحَابًا ثِقَالًا سُقۡنٰهُ

भेजता है। यहां तक के जब ये हवाएं भारी बादलों को उठा कर लाती हैं तो हम उस को

لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنۡزَلۡنَا بِهِ الۡمَآءَ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ

मुर्दा ज़मीन की तरफ हांक देते हैं, फिर हम उस से पानी उतारते हैं, फिर हम उस से तमाम

مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخۡرِجُ الۡمَوۡتٰى لَعَلَّكُمۡ

फलों को निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को भी (कबरों से) निकालेंगे, शायद के तुम नसीहत

تَذَكَّرُوۡنَ ۝۵۷ وَالۡبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخۡرُجُ نَبَاتُهٗ

हासिल करो। और अच्छी ज़मीन, उस का सब्ज़ा उस के रब के

بِاِذۡنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِىۡ خَبُثَ لَا يَخۡرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ

हुक्म से निकलता है। और वो ज़मीन जो बुरी है, उस का सब्ज़ा नहीं निकलता मगर निकम्मा।

كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ يَّشۡكُرُوۡنَ ۝۵۸ ع

इसी तरह हम आयतों को फेर फेर कर बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो शुक्र अदा करती है।

لَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا نُوۡحًا اِلٰى قَوۡمِهٖ فَقَالَ يٰقَوۡمِ

यक़ीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा उन की क़ौम की तरफ, फिर उन्हों ने कहा ऐ मेरी कौम!

اعۡبُدُوا اللّٰهَ مَا لَـكُمۡ مِّنۡ اِلٰهٍ غَيۡرُهٗ ؕ اِنِّىۡۤ

अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं। यक़ीनन मैं

اَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ۝۵۹ قَالَ

तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। उन की क़ौम

الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰٮكَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ۝۶۰

के सरदारों ने कहा के यक़ीनन हम आप को खुली गुमराही में देख रहे हैं।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ

नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी कौम! मुझ में गुमराही नहीं लेकिन मैं रब्बुल आलमीन की

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّىْ

तरफ से भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ। मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहोंचाता हूँ

وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَالَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

और मैं तुम्हारी खैरख्वाही करता हूँ और मैं अल्लाह की तरफ से जानता हूँ वो जो तुम नहीं जानते।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

क्या तुम्हें तअज्जुब हुवा इस बात से के तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई

عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَ لَعَلَّكُمْ

तुम में से एक शख्स पर ताके वो तुम्हें डराए और ताके तुम मुत्तक़ी बनो और ताके तुम पर रहम

تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ

किया जाए? फिर उन्हों ने नूह (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया, फिर हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को नजात दी और उन

مَعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَ اَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

लोगों को जो आप के साथ कश्ती में थे। और हम ने ग़र्क़ किया उन लोगों को जिन्हों ने

بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ ع

हमारी आयतों को झुठलाया। यक़ीनन वो अन्धी क़ौम थी।

وَ اِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

और क़ौमे आद की तरफ भेजा उन के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को। हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ

इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई माबूद नहीं। क्या फिर तुम डरते नहीं हो? उन की

الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ

क़ौम के काफिर सरदारों ने कहा के यक़ीनन हम आप को हिमाक़त में देख

فِىْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ قَالَ

रहे हैं और यक़ीनन हम आप को झूठों में से गुमान करते हैं। हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ سَفَاهَةٌ وَّ لٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ

ऐ मेरी क़ौम! मुझ में हिमाक़त नहीं, लेकिन मैं रब्बुल आलमीन की तरफ से भेजा हुवा

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴿٦٧﴾ اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا

पैग़म्बर हूँ। मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहोंचाता हूँ और मैं

لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ﴿٦٨﴾ اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ

तुम्हारे लिए अमानतदार खैरख्वाह हूँ। क्या तुम्हें तअज्जुब हुवा इस बात से के तुम्हारे पास

ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ۭ

तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई तुम में से एक शख्स पर ताके वो तुम्हें डराए?

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ

और याद करो जब के अल्लाह ने तुम्हें जानशीन बनाया क़ौमे नूह के

نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا

बाद और तुम्हारे डील डोल के फैलाव को ज़्यादा किया। फिर अल्लाह की नेअमतों

اٰلَاۤءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا

को याद करो ताके तुम फलाह पाओ। उन्हों ने कहा क्या आप हमारे पास आए हो

لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ

ताके हम यकता अल्लाह की इबादत करें और हम छोड़ दें उन माबूदों को जिन की हमारे बाप दादा इबादत

اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ

करते थे? तो फिर हमारे पास आप उस अज़ाब को ले आइए जिस से आप हमें डरा रहे हो अगर आप

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ﴿٧٠﴾ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ

सच्चों में से हो। हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से

رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۭ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ

अज़ाब और गज़ब नाज़िल हो चुका। क्या तुम मुझ से झगड़ते हो चन्द नामों के बारे में

سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ

जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख रखे हैं, जिस पर अल्लाह ने कोई

بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ

दलील नहीं उतारी? और इन्तिज़ार करो, यक़ीनन मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ﴿٧١﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ

करने वालों में से हूँ। फिर हम ने हूद (अलैहिस्सलाम) को नजात दी और उन लोगों को जो आप के

مِّنَّا وَ قَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

साथ थे हमारी रहमत से और हम ने उन की जड़ काट दी जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया

وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٧٢ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ

और वो ईमान वाले नहीं थे। और क़ौमे समूद की तरफ भेजा उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को।

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! इबादत करो अल्लाह की, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं है।

قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ

यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन मोअजिज़ा आ चुका है। ये अल्लाह की ऊँटनी

لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْۤ اَرْضِ اللّٰهِ

तुम्हारे लिए मोअजिज़े के तौर पर है, तो उस को छोड़ दो के वो अल्लाह की ज़मीन में खाए

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٧٣

और उस को बुराई के साथ मत छुओ, वरना तुम्हें दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा।

وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ

और याद करो जब के अल्लाह ने तुम्हें जानशीन बनाया क़ौमे आद के बाद

وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا

और तुम्हें ठिकाना दिया ज़मीन में, तुम उस के हमवार मैदानों में

قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْۤا

महल बनाते हो और तुम पहाड़ों को तराश कर मकानात बनाते हो। तो अल्लाह

اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٧٤

की नेअमतों को याद करो और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ

उन सरदारों ने जिन्हों ने तकब्बुर किया आप की क़ौम में से उन लोगों से कहा जो

اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ

कमज़ोर किए गए थे, उन लोगों से जो उन लोगों में से ईमान लाए थे के क्या तुम ये अक़ीदा रखते हो के

اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلَ

सालेह अपने रब की तरफ से भेजे हुए पैग़म्बर हैं? उन मोमिनीन ने कहा के यक़ीनन हम तो उस पर भी ईमान

بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ

रखते हैं जिस को दे कर सालेह (अलैहिस्सलाम) भेजे गए हैं। उन लोगों ने कहा जिन्हों ने बड़ा बनना चाहा यक़ीनन

اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا

हम तो कुफ्र करते हैं उस के साथ जिस पर तुम ईमान रखते हो। फिर उन्हों ने ऊँटनी के पैर काट दिए और उन्हों ने

عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ

सरकशी की अपने रब के हुक्म से और उन्हों ने कहा के ऐ सालेह! हमारे पास वो अज़ाब ले आइए जिस से तुम हमें डराते हो

اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

अगर तुम भेजे हुए पैग़म्बरों में से हो। फिर उन को ज़लज़ले ने पकड़ लिया,

فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ

फिर वो अपने घरों में औंधे पड़े रेह गए। फिर सालेह (अलैहिस्सलाम) ने उन से मुंह फेर लिया

وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ

और फरमाया ऐ मेरी क़ौम! यक़ीनन मैं ने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहोंचाया और मैं ने तुम्हारी

لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَلُوْطًا

खैरख्वाही की, लेकिन तुम खैरख्वाही करने वालों से महब्बत नहीं रखते थे। और लूत (अलैहिस्सलाम) को भेजा

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ

जब के उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया क्या तुम बेहयाई करते हो, ऐसी बेहयाई जो

بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ

तमाम जहान वालों में से किसी ने तुम से पेहले नहीं की? के मर्दों के पास आते हो

الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ط بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ

शहवत के मारे औरतों को छोड़ कर के। बल्के तुम ऐसी क़ौम हो जो

مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا

हद से तजावुज़ करती हो। और उन की क़ौम का जवाब नहीं था मगर ये के उन्हों ने कहा के

اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ج اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾

उन को निकाल दो अपनी बस्ती से। इस लिए के ये ऐसे लोग हैं जो पाकबाज़ बनना चाहते हैं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ﵗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾

फिर हम ने उन को और उन के घर वालों को नजात दी मगर उन की बीवी, जो हलाक होने वालों में से हो गई।

وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

और हम ने उन पर पथ्थरों की बारिश बरसाई। फिर आप देखिए के मुजरिमों का अन्जाम

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ

कैसा हुवा। और मदयन वालों की तरफ उन के भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ

ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। यक़ीनन

جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ

तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन मोअजिज़ा आ चुका, तो नाप और तोल को पूरा

وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا

पूरा दो और लोगों को उन की चीज़ें कम कर के मत दो और ज़मीन में फसाद

فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ

मत फैलाओ उस की इस्लाह के बाद। ये तुम्हारे लिए बेहतर है

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ

अगर तुम मोमिन हो। और हर रास्ते पर मत

صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

बैठो के तुम डराओ और रोको अल्लाह के रास्ते से

مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ

उन लोगों को जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं और तुम उस में कजी तलाश करते हो। और तुम याद करो जब के

كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۪ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ

तुम थोड़े थे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ज़्यादा किया। और देखो के फसाद फैलाने वालों

عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ

का अन्जाम कैसा हुवा? और यक़ीनन तुम में से एक जमाअत

اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا

ईमान लाई उस पर जिस को दे कर मैं भेजा गया हूँ और एक जमाअत ईमान नहीं लाई,

فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

तो तुम सब्र करो यहां तक के अल्लाह हमारे दरमियान फैसला कर दे। और वो बेहतरीन फैसला करने वाला है।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ

उन सरदारों ने कहा जो बड़ाई तलब करते थे आप की क़ौम में से के ऐ शुऐब।

يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ

हम तुम्हें और उन लोगों को भी जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे,

اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾

मगर ये के तुम हमारे मज़हब में लौट आओ। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या अगर्चे हम नापसन्द करते हों?

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ

तब तो हम ने अल्लाह पर झूठ बोला अगर हम तुम्हारे मज़हब में लौट जाएं

بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ

इस के बाद के अल्लाह ने हमें उस से नजात दी। और हमारे लिए जाइज़ नहीं है के हम उस में लौट

فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ

जाएं मगर ये के हमारा रब अल्लाह चाहे। हमारा रब इल्म के ऐतेबार से

شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا

हर चीज़ पर वसीअ है। अल्लाह ही पर हम ने तवक्कुल किया। ऐ हमारे रब! तू हमारे दरमियान और हमारी क़ौम

وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ

के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कर दे और तू सब से अच्छा फैसला करने वाला है। और उन

الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا

सरदारों ने कहा जो काफिर थे आप की क़ौम में से के अगर तुम ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) का इत्तिबा किया

اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا

तो यक़ीनन तुम नुकसान उठाने वाले बन जाओगे। फिर उन्हें ज़लज़ले ने पकड़ लिया, फिर वो अपने

فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾ۖۚ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا

घरों में घुटने के बल पड़े रेह गए। वो लोग जिन्हों ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۛۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا

गोया वो उस में बसे ही नहीं थे। वो लोग जिन्हों ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया वही

هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ

खसारा उठाने वाले बन बए। फिर शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने उन से मुंह फेर लिया और फरमाया के ऐ कौम!

اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى

यक़ीनन मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहोंचाए और मैं ने तुम्हारी खैरख्वाही की। फिर मैं कैसे अफसोस

عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ

करूँ काफिर क़ौम पर? और किसी बस्ती में हम ने कोई नबी नहीं भेजा

اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ

मगर हम ने वहां वालों को तकलीफ और सख्ती के ज़रिए पकड़ा, शायद वो

يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ

आजिज़ी करें। फिर हम ने बुराई के बदले में भलाई दी

حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ

यहां तक के वो खूब फूले फले और उन्हों ने कहा के हमारे बाप दादा को भी तकलीफ और खुशी पहोंची थी,

فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ

फिर अचानक हम ने उन को पकड़ लिया इस हाल में के उन्हें पता नहीं था। और अगर बस्तियों

الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ

वाले ईमान लाते और मुत्तक़ी बनते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकात

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ

खोल देते, लेकिन उन्हों ने झुठलाया, फिर हम ने उन को पकड़ लिया

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ

उन आमाल की वजह से जो वो करते थे। क्या ये (मक्का की) बस्तियों वाले मामून हैं इस से के उन के पास

بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى

हमारा अज़ाब आ जाए रात के वक्त इस हाल में के वो सोए हुए हों? क्या ये बस्तियों वाले इस से

اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ

मामून हैं के उन के पास हमारा अज़ाब आ जाए चाश्त के वक्त इस हाल में के वो खेल रहे हों? क्या फिर वो

اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾

अल्लाह की तदबीर से अमन में हैं? फिर अल्लाह की तदबीर से अमन में नहीं रेहते मगर खसारा उठाने वाले लोग।

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ

क्या हिदायत का बाइस नहीं बनी उन लोगों के लिए जो इस ज़मीन के वारिस होते हैं यहां वालों के

اَهۡلِهَاۤ اَنۡ لَّوۡ نَشَآءُ اَصَبۡنٰهُمۡ بِذُنُوۡبِهِمۡ‌ۚ وَنَطۡبَعُ

बाद ये बात के अगर हम चाहते तो उन्हें मुसीबत पहोंचाते उन के गुनाहों की वजह से? और हम उन के दिलों पर

عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ فَهُمۡ لَا يَسۡمَعُوۡنَ ۝١٠٠ تِلۡكَ الۡقُرٰى نَقُصُّ

मुहर लगाते हैं, फिर वो सुन नहीं पाते। ये बस्तियाँ जिन के कुछ क़िस्से हम

عَلَيۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآئِهَا‌ۚ وَلَقَدۡ جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ

आप के सामने बयान करते हैं। यक़ीनन उन के पैग़म्बर उन के पास

بِالۡبَيِّنٰتِ‌ۚ فَمَا كَانُوۡا لِيُؤۡمِنُوۡا بِمَا كَذَّبُوۡا مِنۡ قَبۡلُ‌ؕ

रोशन मोअजिज़ात ले कर आए। फिर वो ईमान नहीं लाते थे इस वजह से के वो उस से पेहले झुठला चुके थे।

كَذٰلِكَ يَطۡبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِ الۡكٰفِرِيۡنَ ۝١٠١

इसी तरह अल्लाह काफिरों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

وَمَا وَجَدۡنَا لِاَكۡثَرِهِمۡ مِّنۡ عَهۡدٍ‌ۚ وَاِنۡ وَّجَدۡنَاۤ اَكۡثَرَهُمۡ

और हम ने उन में से अक्सर में वफाए अहद नहीं पाया। और यक़ीनन हम ने उन में से अक्सर को

لَفٰسِقِيۡنَ ۝١٠٢ ثُمَّ بَعَثۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ مُّوۡسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ

नाफरमान पाया। फिर हम ने उन के बाद मूसा (अलैहिस्सलाम) को भेजा अपनी आयात दे कर

اِلٰى فِرۡعَوۡنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوۡا بِهَا‌ۚ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ

फिरऔन और उस की जमाअत की तरफ, फिर उन्हों ने उन आयात के साथ ज़ुल्म किया। फिर आप देखिए के फसाद फैलाने

عَاقِبَةُ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ۝١٠٣ وَقَالَ مُوۡسٰى يٰفِرۡعَوۡنُ

वालों का अन्जाम कैसा हुवा। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ फिरऔन!

اِنِّىۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِيۡنَۙ ۝١٠٤ حَقِيۡقٌ عَلٰٓى اَنۡ لَّاۤ اَقُوۡلَ

यक़ीनन मैं रब्बुल आलमीन की तरफ से भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ। लाइक़ हूँ के मैं अल्लाह के

عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الۡحَـقَّ‌ؕ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِبَيِّنَةٍ مِّنۡ رَّبِّكُمۡ

ज़िम्मे न कहूँ सिवाए हक़ बात के। यक़ीनन मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन मोअजिज़ात ले कर आया हूँ,

فَاَرۡسِلۡ مَعِىَ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ۝١٠٥ قَالَ اِنۡ كُنۡتَ جِئۡتَ

तो तू मेरे साथ बनी इस्राईल को जाने दे। फिरऔन ने कहा के अगर तू मोअजिज़ा

بِاٰيَةٍ فَاۡتِ بِهَاۤ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ۝١٠٦ فَاَلۡقٰى

लाया है, तो तू उस को पेश कर अगर तू सच्चों में से है। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने

عَصَاهُ فَاِذَا هِیَ ثُعۡبَانٌ مُّبِیۡنٌ ﴿۱۰۷﴾ وَّ نَزَعَ یَدَهٗ فَاِذَا

अपना असा डाला, तो अचानक वो खुला अजदहा बन गया। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना हाथ गिरेबान से निकाला तो अचानक

هِیَ بَیۡضَآءُ لِلنّٰظِرِیۡنَ ﴿۱۰۸﴾ قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِ فِرۡعَوۡنَ

वो देखने वालों के सामने रोशन हो गया। फिरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा के

اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِیۡمٌ ﴿۱۰۹﴾ یُّرِیۡدُ اَنۡ یُّخۡرِجَكُمۡ

यक़ीनन ये माहिर जादूगर है। ये चाहता है के तुम्हें तुम्हारे मुल्क

مِّنۡ اَرۡضِكُمۡ ۚ فَمَاذَا تَاۡمُرُوۡنَ ﴿۱۱۰﴾ قَالُوۡۤا اَرۡجِهۡ وَاَخَاهُ

से निकाल दे। फिर तुम क्या मश्वरा देते हो? उन्हों ने कहा के उन को और उन के भाई को मोहलत दीजिए और

وَاَرۡسِلۡ فِی الۡمَدَآئِنِ حٰشِرِیۡنَ ﴿۱۱۱﴾ یَاۡتُوۡكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ

शेहरों में जादूगरों को इकट्ठा करने वालों को भेज दीजिए। के वो आप के पास हर माहिर जादूगर को

عَلِیۡمٍ ﴿۱۱۲﴾ وَ جَآءَ السَّحَرَةُ فِرۡعَوۡنَ قَالُوۡۤا اِنَّ لَنَا

ले आएं। और जादूगर फिरऔन के पास आ गए। उन्हों ने कहा के यक़ीनन हमारे लिए

لَاَجۡرًا اِنۡ كُنَّا نَحۡنُ الۡغٰلِبِیۡنَ ﴿۱۱۳﴾ قَالَ نَعَمۡ وَاِنَّكُمۡ

उजरत होनी चाहिए अगर हम ग़ालिब हुए। फिरऔन ने कहा के जी हां! और यक़ीनन तुम

لَمِنَ الۡمُقَرَّبِیۡنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالُوۡا یٰمُوۡسٰۤی اِمَّاۤ اَنۡ تُلۡقِیَ وَاِمَّاۤ

मुक़र्रबीन में से कर दिए जाओगे। जादूगरों ने कहा ऐ मूसा! या आप डालोगे

اَنۡ نَّكُوۡنَ نَحۡنُ الۡمُلۡقِیۡنَ ﴿۱۱۵﴾ قَالَ اَلۡقُوۡا ۚ فَلَمَّاۤ اَلۡقَوۡا

या हम डालें? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम डालो। फिर जब उन्हों ने डाला

سَحَرُوۡۤا اَعۡیُنَ النَّاسِ وَاسۡتَرۡهَبُوۡهُمۡ وَجَآءُوۡ بِسِحۡرٍ

तो उन्हों ने लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हों ने उन को डराना चाहा और वो भारी जादू को ले कर

عَظِیۡمٍ ﴿۱۱۶﴾ وَ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلٰی مُوۡسٰۤی اَنۡ اَلۡقِ عَصَاكَ ۚ

आए थे। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की के अपना असा डाल दीजिए।

فَاِذَا هِیَ تَلۡقَفُ مَا یَاۡفِكُوۡنَ ﴿۱۱۷﴾ فَوَقَعَ الۡحَقُّ وَبَطَلَ

तो अचानक वो निगलने लगा उन चीज़ों को जो वो झूठ बना कर लाए थे। फिर हक़ साबित हो गया और उन का अमल

مَا كَانُوۡا یَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۱۸﴾ فَغُلِبُوۡا هُنَالِكَ وَانۡقَلَبُوۡا

बातिल हो गया। वहाँ पर जादूगर मग़लूब हो गए, और वो ज़लील

صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾ قَالُوْٓا

हो गए। और जादूगर सजदे में गिर गए। और उन्हों ने

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢١﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

कहा के हम रब्बुल आलमीन पर ईमान ले आए। जो मूसा और हारून (अलैहिमस्सलाम) का रब है।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ

फिरऔन ने कहा के तुम उस पर ईमान ले आए इस से पेहले के मैं तुम्हें इजाज़त दूँ?

اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ

यक़ीनन ये हीला है जो तुम ने इस शेहर में किया है ताके तुम इस शेहर से यहाँ वालों को

اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ

निकाल दो। फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। मैं तुम्हारे हाथ और पैर

وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾

जानिबे मुखालिफ से काट दूंगा, फिर मैं तुम सब को सूली दूंगा।

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ

उन्हों ने कहा के यक़ीनन हम अपने रब ही के पास पलट कर जाएंगे। और हमारी तरफ से तुझे बुरी नहीं लगी

اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَآ اَفْرِغْ

मगर ये बात के हम अपने रब की आयतों पर ईमान ले आए जब वो हमारे पास आईं। ऐ हमारे रब! हम

عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَ قَالَ الْمَلَاُ

पर सब्र उंडेल दे और तू हमें मुसलमान होने की हालत में वफात दे। और फिरऔन की क़ौम के

مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَ قَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا

सरदारों ने कहा के तुम छोड़ते हो मूसा और उस की क़ौम को ताके वो इस मुल्क में फसाद

فِي الْاَرْضِ وَ يَذَرَكَ وَ اٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

फैलाएं हालांके वो तुझे और तेरे माबूदों को छोड़ देता है। फिरऔन ने कहा अनक़रीब हम उन के बेटों को

وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ

क़त्ल कर देंगे और उन की औरतों को ज़िन्दा रेहने देंगे। और यक़ीनन हम उन पर ग़ालिब हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम)

مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ

ने अपनी क़ौम से फरमाया के तुम अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो।

الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۟ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ

ये ज़मीन अल्लाह की है, अल्लाह उस का वारिस उसे बनाते हैं जिसे चाहते हैं अपने बन्दों में से।

وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝١٢٨ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ

और अच्छा अन्जाम मुत्तक़ियों के लिए है। उन्हों ने कहा के हमें ईज़ा दी गई इस से पेहले के

اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ

आप हमारे पास आएं और इस के बाद भी के आप हमारे पास आए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ

हो सकता है के तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें इस मुल्क में जानशीन बनाए, फिर देखे

كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝١٢٩ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ

तुम कैसे अमल करते हो। और यक़ीनन हम ने आले फिरऔन को पकड़ा

بِالسِّنِيْنَ وَ نَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝١٣٠

क़हतसाली और फलों की कमी के ज़रिए ताके वो नसीहत हासिल करें।

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ

फिर जब उन्हें खुशहाली पहोंचती, तो वो केहते के ये तो हमारा हक़ है।

وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ

और अगर उन्हें मुसीबत पहोंचती तो वो बदफाली लेते मूसा (अलैहिस्सलाम) से और उन लोगों से जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के साथ थे।

اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

सुनो! उन ही की नहूसत अल्लाह के पास है, लेकिन उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣١ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ

जानते नहीं। और उन्हों ने कहा के जो मोअजिज़ा भी आप हमारे पास लाओगे

لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣٢ فَاَرْسَلْنَا

ताके तुम उस के ज़रिए हम पर जादू करो, तब भी हम उसे मानने वाले नहीं हैं।

عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ

फिर हम ने उन पर भेजा तूफान और टिड्डी और जुएं और मैंडक

وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۟ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا

और खून तफसीलवार निशानियाँ। फिर उन्हों ने बड़ा बनना चाहा और वो मुजरिम

مُّجۡرِمِيۡنَ ﴿۱۳۳﴾ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيۡهِمُ الرِّجۡزُ قَالُوۡا يٰمُوۡسَى

क़ौम थी। और जब उन पर अज़ाब वाकेअ हो चुका तो केहने लगे के ऐ मूसा!

ادۡعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنۡدَكَ ۚ لَئِنۡ كَشَفۡتَ

आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए उस अहद की वजह से जो उस ने आप से कर रखा है। के अगर ये अज़ाब तू

عَنَّا الرِّجۡزَ لَنُؤۡمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرۡسِلَنَّ مَعَكَ بَنِىۡۤ

हम से हटा देगा तो हम तुझ पर ईमान ले आएंगे और तेरे साथ बनी इस्राईल को भेज

اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿۱۳۴﴾ فَلَمَّا كَشَفۡنَا عَنۡهُمُ الرِّجۡزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمۡ

देंगे। फिर जब हम ने उन से अज़ाब हटा दिया एक वक्त तक जिस को

بٰلِغُوۡهُ اِذَا هُمۡ يَنۡكُثُوۡنَ ﴿۱۳۵﴾ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ فَاَغۡرَقۡنٰهُمۡ

वो पहोंचने वाले थे, तो अचानक वो अहदशिकनी करने लगे। फिर हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया, फिर हम ने उन्हें

فِى الۡيَمِّ بِاَنَّهُمۡ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَ كَانُوۡا عَنۡهَا

गर्क़ किया समन्दर में इस वजह से के वो हमारी आयतों को झुठलाते थे और उन से

غٰفِلِيۡنَ ﴿۱۳۶﴾ وَ اَوۡرَثۡنَا الۡقَوۡمَ الَّذِيۡنَ كَانُوۡا يُسۡتَضۡعَفُوۡنَ

ग़ाफिल थे। और हम ने वारिस बनाया उस क़ौम को जिस को कमज़ोर किया जा रहा था

مَشَارِقَ الۡاَرۡضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِىۡ بٰرَكۡنَا فِيۡهَا ؕ

ज़मीन के मशरिक़ व मग़रिब में उस ज़मीन का जिस में हम ने बरकतें रखी हैं।

وَتَمَّتۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ الۡحُسۡنٰى عَلٰى بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ ۙ

और आप के रब के अच्छे कलिमात पूरे हो कर रहे बनी इस्राईल पर

بِمَا صَبَرُوۡا ؕ وَ دَمَّرۡنَا مَا كَانَ يَصۡنَعُ فِرۡعَوۡنُ

इस वजह से के उन्हों ने सब्र किया। और हम ने तबाह कर दिया उस को जिसे फिरऔन और उस की क़ौम

وَقَوۡمُهٗ وَمَا كَانُوۡا يَعۡرِشُوۡنَ ﴿۱۳۷﴾ وَجٰوَزۡنَا بِبَنِىۡۤ

बना रही थी और उन इमारतों को जिन्हें वो ऊँचा बनाते थे। और हम ने बनी इस्राईल

اِسۡرَآءِيۡلَ الۡبَحۡرَ فَاَتَوۡا عَلٰى قَوۡمٍ يَّعۡكُفُوۡنَ

को समन्दर पार करा दिया, फिर वो आए एक क़ौम पर जो अपने बुतों पर

عَلٰٓى اَصۡنَامٍ لَّهُمۡ ۚ قَالُوۡا يٰمُوۡسَى اجۡعَلۡ لَّنَاۤ اِلٰهًا كَمَا

जमे हुए थे। वो केहने लगे ऐ मूसा! आप हमारे लिए भी माबूद मुक़र्रर कर दीजिए जैसा के

لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ

उन के लिए माबूद हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया यक़ीनन तुम ऐसी क़ौम हो जो जहालत की बातें करते हो। यक़ीनन ये

مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۹﴾

लोग जिस चीज़ (दीन) में लगे हैं वो तबाह होने वाला है और बातिल है वो काम जो वो कर रहे हैं।

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या मैं अल्लाह के अलावा किसी को माबूद के तौर पर तुम्हारे लिए तलाश करूँ हालांके

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ

उस ने तुम्हें तमाम जहां वालों पर फज़ीलत दी है। और जब हम ने तुम्हें आले फिरऔन से नजात दी

يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ

जो तुम्हें बदतरीन सज़ा के ज़रिए तकलीफ देते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते थे

وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रेहने देते थे। और उस में तुम्हारे रब की

مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿۱۴۱﴾ وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ

तरफ से भारी इमतिहान था। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से तीस रात का

لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖۤ اَرْبَعِيْنَ

वादा किया और हम ने उन को और दस रातों के ज़रिए पूरा किया, फिर आप के रब का मुक़र्रर किया हुवा वक्त चालीस

لَيْلَةً ۚ وَ قَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ

रातें पूरी हो गईं। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाई हारून (अलैहिस्सलाम) से फरमाया के तुम

فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۴۲﴾

मेरे जानशीन बन कर रहो मेरी क़ौम में और इस्लाह करना और फसाद फैलाने वालों के रास्ते पर मत चलना।

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ

और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) आए हमारे वक्ते मुक़र्रा पर और उन के रब ने उन से कलाम किया तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ

رَبِّ اَرِنِيْۤ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ

मेरे रब! आप मुझे दिखाइए के मैं आप की तरफ देखूं। अल्लाह ने फरमाया के आप हरगिज़ मुझे देख नहीं सकते, लेकिन आप

انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ

निगाह कीजिए पहाड़ की तरफ, फिर अगर वो अपनी जगह पर ठेहरा रहे तो अनक़रीब आप

تَرٰىنِیْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰی رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ

मुझे देखोगे। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) के रब ने पहाड़ पर तजल्ली फरमाई तो उसे रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा

مُوْسٰی صَعِقًا ۚ فَلَمَّاۤ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ

(अलैहिस्सलाम) बेहोश हो कर गिर गए। फिर जब होश में आए तो केहने लगे आप पाक हैं, मैं आप की

اِلَیْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۴۳﴾ قَالَ یٰمُوْسٰۤی

तरफ तौबा करता हूँ और मैं सब से पेहले ईमान लाने वाला हूँ। अल्लाह ने फरमाया के ऐ मूसा!

اِنِّی اصْطَفَیْتُكَ عَلَی النَّاسِ بِرِسٰلٰتِیْ وَ بِكَلَامِیْ ۖ

मैं ने आप को मुमताज़ किया तमाम इन्सानों से अपने पैग़ामात दे कर और मेरी हमकलामी के ज़रिए।

فَخُذْ مَاۤ اٰتَیْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَكَتَبْنَا لَهٗ

इस लिए आप लीजिए उसे जो मैं ने आप को दिया और आप शुक्रगुज़ारों में से रहिए। और हम ने उन्हें

فِی الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِیْلًا

तखतियों में हर चीज़ की नसीहत और तफसील हर चीज़ की

لِّكُلِّ شَیْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ یَاْخُذُوْا

लिख कर दी थी। फिर तुम उस को मज़बूत पकड़ लो और अपनी क़ौम को हुक्म दो के उस के अच्छे अहकामात पर

بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِیْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۱۴۵﴾ سَاَصْرِفُ

अमल करें। अनक़रीब मैं तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊँगा। मैं अनक़रीब मेरी आयतों (के समझने)

عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ

से हटा दूंगा उन को जो ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते हैं।

وَاِنْ یَّرَوْا كُلَّ اٰیَةٍ لَّا یُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ یَّرَوْا سَبِیْلَ

और अगर वो तमाम मोअजिज़ात भी देख लें तब भी वो ईमान न लावें। और अगर वो हिदायत के रास्ते

الرُّشْدِ لَا یَتَّخِذُوْهُ سَبِیْلًا ۚ وَاِنْ یَّرَوْا سَبِیْلَ الْغَیِّ

को देखें तो उस को रास्ता न बनावें। और अगर वो सरकशी के रास्ते को देखें

یَتَّخِذُوْهُ سَبِیْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ كَانُوْا

तो उसे रास्ता बना लें। ये इस वजह से के उन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और वो

عَنْهَا غٰفِلِیْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَلِقَآءِ

उस से ग़ाफिल थे। और वो लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और आखिरत के मिलने को

الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا

झुठलाया उन के आमाल हब्त हो गए। उन्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ

उन्ही कामों की जो वो करते थे। और मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम ने उन के जाने के बाद

مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ

अपने ज़ेवरात से बछड़े का एक जिस्म बनाया जिस की बैल जैसी आवाज़ थी। क्या वो समझते नहीं थे के

لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا

वो उन से कलाम नहीं कर सकता और उन को रास्ता नहीं दिखा सकता? उन्हों ने उस को बना लिया इस हाल में के वो

ظٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۸﴾ وَلَمَّا سُقِطَ فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ

शिर्क कर रहे थे। और जब वो नादिम हुए और उन्हों ने समझा के वो

قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا

गुमराह हो गए, तो उन्हों ने कहा के अगर हम पर हमारा रब रहम नहीं करेगा और हमारी मग़फिरत नहीं करेगा

لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۱۴۹﴾ وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى

तो हम ज़रूर खसारा उठाने वाले बन जाएंगे। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) वापस लौटे

اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِىْ

अपनी क़ौम की तरफ गुस्से में अफसोस करते हुए, फरमाने लगे के तुम ने मेरे पीछे मेरे जाने के बाद

مِنْۢ بَعْدِىْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ

बुरी जानशीनी की। तुम ने अपने रब के हुक्म से जल्दी क्यूं की? और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने तख्तियों को डाला

وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ

और अपने भाई का सर पकड़ा, उस को अपनी तरफ खींच रहे थे। हारून (अलैहिस्सलाम) अर्ज़ करने लगे ऐ मेरी माँ

اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِىْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِىْ ۖ

के बेटे! यक़ीनन इस क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब थे के मुझे क़त्ल कर देते।

فَلَا تُشْمِتْ بِىَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِىْ مَعَ الْقَوْمِ

इस लिए आप मुझ पर दुश्मनों को न हंसाइए और मुझे मुशरिक क़ौम के साथ

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۵۰﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَلِاَخِىْ وَاَدْخِلْنَا

न कीजिए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मेरी और मेरे भाई की मग़फिरत फरमा और तू हमें

فِىْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

अपनी रहमत में दाखिल कर दे। और तू अरहमुर्राहिमीन है। यक़ीनन वो लोग

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ

जिन्हों ने बछड़े को बनाया था, अनक़रीब उन्हें उन के रब की तरफ से गज़ब पहोंचेगा और दुन्यवी

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُفْتَرِيْنَ ﴿١٥٢﴾

ज़िन्दगी में ज़िल्लत पहोंचेगी। और इसी तरह हम झूठ गढ़ने वालों को सज़ा देते हैं।

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْۤا ۫

और वो लोग जिन्हों ने बुरे काम किए, फिर उस के बाद तौबा की और ईमान लाए।

اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٥٣﴾ وَلَمَّا سَكَتَ

यक़ीनन तेरा रब उस के बाद अलबत्ता बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है। और जब मूसा

عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَفِىْ نُسْخَتِهَا

(अलैहिस्सलाम) का गुस्सा ठन्डा हो गया तो आप ने तख्तियों को लिया। और उस के मज़मून में

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾

हिदायत और रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं।

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को हमारे वक्ते मुक़र्ररा के लिए मुन्तखब किया।

فَلَمَّاۤ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ

फिर जब उन को ज़लज़ले ने पकड़ लिया, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया के ऐ मेरे रब! अगर तू चाहता

اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّاىَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

तो इन्हें भी हलाक करता इस से पेहले और मुझे भी। क्या तू हमें हलाक करता है उस हरकत की वजह से जो हम

السُّفَهَاۤءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِىَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ

में से बेवकूफों ने की है? ये तो सिर्फ तेरा इमतिहान है। इस के ज़रिए तू गुमराह करता है

تَشَاۤءُ وَتَهْدِىْ مَنْ تَشَاۤءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا

जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है। तू हमारा कारसाज़ है, तू हमारी मग़फिरत कर दे

وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ وَاكْتُبْ لَنَا

और हम पर रहम फरमा, तू बेहतरीन मग़फिरत करने वाला है। और हमारे लिए

فِیْ هٰذِهِ الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ

इस दुन्या में भलाई लिख दे और आखिरत में भी, यक़ीनन हम ने

اِلَیْكَ ؕ قَالَ عَذَابِیْۤ اُصِیْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ

आप की तरफ रूजूअ किया। अल्लाह ने फरमाया के अपना अज़ाब मैं उसे पहोंचाऊँगा जिसे मैं चाहूंगा।

وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ كُلَّ شَیْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ

और मेरी रहमत हर चीज़ पर वसीअ है। अनक़रीब मैं उसे लिखूँगा उन लोगों के लिए

یَتَّقُوْنَ وَیُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِیْنَ هُمْ بِاٰیٰتِنَا

जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान

یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۶﴾ اَلَّذِیْنَ یَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِیَّ

रखते हैं। वो लोग जो इस रसूल नबीए उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इत्तिबा करते

الْاُمِّیَّ الَّذِیْ یَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ

हैं जिसे वो अपने पास तौरात और इन्जील में लिखा

فِی التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِیْلِ ز یَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْهٰهُمْ

हुवा पाते हैं, जो उन्हें नेक कामों का हुक्म देते हैं और उन्हें बुरे कामों से

عَنِ الْمُنْكَرِ وَیُحِلُّ لَهُمُ الطَّیِّبٰتِ وَ یُحَرِّمُ عَلَیْهِمُ

रोकते हैं और उन के लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल करते हैं और उन के लिए बुरी चीज़ें

الْخَبٰٓئِثَ وَیَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِیْ كَانَتْ

हराम करते हैं और उन से उन के भारी बोझ को हटाते हैं (जो उन पर लादे गए थे) और वो तौक़ जो

عَلَیْهِمْ ؕ فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ

उन के ऊपर थे। फिर वो लोग जो नबीए उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाए और जिन्हों ने उन की हिमायत की

وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ

और उन की नुसरत की और उस नूर के पीछे चले जो उन के साथ उतारा गया, यही लोग फलाह

الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ

पाने वाले हैं। आप फरमा दीजिए ए इन्सानो! यक़ीनन मैं तुम सब की तरफ अल्लाह

اِلَیْكُمْ جَمِیْعَا ِۨ الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ

का भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ, उस अल्लाह का जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ص فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ

जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दगी और मौत देता है। फिर तुम ईमान लाओ अल्लाह पर

وَ رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ

और उस के रसूल नबीए उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस के कलिमात पर

وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى

और तुम उसी का इत्तिबा करो ताके तुम हिदायत पाओ। और मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम में से एक

اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٩﴾ وَقَطَّعْنٰهُمُ

जमाअत थी जो हक़ की रहनुमाई करती थी और उसी के साथ इन्साफ करती थी। और हम

اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ط وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى

ने उन को बारा क़बीले बनाया था। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की

اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ج

जब के मूसा (अलैहिस्सलाम) से उन की क़ौम ने पानी मांगा, (वही की) के आप अपना असा पथ्थर पर मारिए।

فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ط قَدْ عَلِمَ

फिर उस में से बारा चश्मे फूट पड़े। यक़ीनन सब लोगों ने

كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ط وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ

अपने पीने की जगह को मालूम कर लिया। और हम ने उन पर बादलों का साया किया

وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ط كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

और हम ने उन पर मन्न और सलवा उतारा। के तुम खाओ उन उम्दा चीज़ों में से जो हम ने

مَا رَزَقْنٰكُمْ ط وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

तुम्हें रोज़ी के तौर पर दीं। और उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन वो ख़ुद अपनी जानों पर

يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ

ज़ुल्म करते थे। और जब उन से कहा गया के रहो इस बस्ती में

وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ

और इस में से खाओ जहां तुम चाहो और तुम कहो "حِطَّةٌ" और तुम दरवाज़े से सजदा करते हुए

سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ط سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾

दाखिल हो जाओ, हम तुम्हारे लिए तुम्हारी खताएं बख्श देंगे। अनक़रीब हम नेकी करने वालों को मज़ीद देंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ

फिर उन में से ज़ालिमों ने बात को बदल दिया उस के अलावा से जो उन से कही

لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

गई थी, इस लिए हम ने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इस वजह से के वो

يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۲﴾ وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ

ज़ालिम थे। और आप उन से सवाल कीजिए उस बस्ती के मुतअल्लिक़ जो समन्दर

حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ

के किनारे पर थी। जब वो सनीचर के बारे में ज़्यादती करते थे

اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّ يَوْمَ

इस लिए के उन के पास उन की मछलियाँ आती थीं सनीचर के दिन पानी पर तैरती हुई और जिस दिन

لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛۚ كَذٰلِكَ ۛۚ نَبْلُوْهُمْ

सनीचर नहीं होता था तो मछलियाँ उन के पास नहीं आती थीं। इसी तरह हम उन को आज़माते थे

بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ

इस वजह से के वो फासिक़ थे। और जब उन में से एक जमाअत ने कहा के

لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ

तुम क्यूं नसीहत करते हो ऐसी क़ौम को जिन को अल्लाह हलाक करने वाले हैं या उन को सख्त अज़ाब देने वाले हैं?

عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَ لَعَلَّهُمْ

उन्हों ने कहा के (हम नसीहत करते हैं) तुम्हारे रब की तरफ उज़्र पेश करने के लिए और इस लिए के

يَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ

शायद वो डरें। फिर जब उन्हों ने भुला दिया उस को जिस के ज़रिए उन को नसीहत की गई थी तो हम ने नजात दी

يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन को जो बुराई से रोकते थे और हम ने पकड़ लिया उन को जो ज़ालिम थे

بِعَذَابٍۭ بَـِٔيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾

सख्त अज़ाब में इस वजह से के वो नाफरमान थे।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً

फिर जब उन्हों ने सरकशी की उस से जिस से उन्हें मना किया गया था, तो हम ने उन से कहा के तुम ज़लील

خٰسِـِٔيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ

बन्दर बन जाओ। और जब आप के रब ने ऐलान किया के वो उन पर क़यामत के

اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ

दिन तक ज़रूर भेजता रहेगा ऐसे शख्स को जो उन्हें बदतरीन सज़ा से तकलीफ दे।

اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۚۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾

यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता जल्द सज़ा देने वाला है। और यक़ीनन वो बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ

और हम ने उन्हें ज़मीन में अलग अलग उम्मतें बनाया। उन में से कुछ नेक हैं

وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ؗ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ

और उन में से कुछ उस से कमतर हैं। और हम ने उन्हें आज़माया नेअमतों और निक़मतों (अज़ाब) के ज़रिए

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ

शायद वो बाज़ आएं। फिर उन के बाद नाखलफ आए

وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى

जो किताब के वारिस हुए जो इस ज़लील दुन्या का सामान लेते थे

وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ

और केहते थे के अनक़रीब हमारी तो मग़फिरत हो जाएगी। और अगर उन के पास उसी जैसा सामान आता

يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ

तो उस को भी ले लेते। क्या उन से किताब में अहद नहीं लिया गया था

اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ

के वो अल्लाह पर सिवाए हक़ के नहीं कहेंगे और उन्हों ने पढ़ लिया था उसे जो उस किताब में है।

وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ

और आखिरत वाला घर बेहतर है उन के लिए जो मुत्तक़ी हैं।

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا

क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? और वो लोग जो किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं और नमाज़ क़ाइम

الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾ وَاِذْ

करते हैं। यक़ीनन हम इस्लाह करने वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं करेंगे। और जब

نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ

हम ने उन के ऊपर पहाड़ को उठाया गोया के वो सायबान है और उन्हों ने समझा के वो

وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا

उन पर गिरने वाला है। (कहा के) मज़बूती से पकड़ो उसे जो हम ने तुम्हें दिया है और याद करो

مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ

उस को जो उस में है ताके तुम मुत्तक़ी बनो। और जब के तुम्हारे रब ने

مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ

बनू आदम की ज़ुर्रीयत को उन की पुश्तों से निकाल कर अहद लिया और उन्हें अपनी जानों

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۛ شَهِدْنَا ۛ

के खिलाफ गवाह बनाया के क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? उन्हों ने कहा क्यूं नहीं! हम गवाही देते हैं।

اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٧٢﴾ۙ

(ये इस लिए किया) के कहीं तुम क़यामत के दिन यूँ कहो के हम तो इस से बेखबर (ग़ाफिल) थे।

اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا

या तुम कहीं यूँ कहो के हमारे बाप दादा ने इस से पेहले शिर्क किया था और हम

ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

तो उन के बाद आने वाली औलाद थे। क्या फिर आप हमें हलाक करते हैं उस हरकत की वजह से जो

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ

बातिलपरस्तों ने की? और इसी तरह आयात को हम तफसील से बयान करते हैं शायद के वो

يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ

बाज़ आएं। और आप उन के सामने उस शख्स का क़िस्सा तिलावत कीजिए जिसे हम ने अपनी आयतें

اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ

दी थीं, फिर वो उन से सालिम निकल गया और शैतान उस के पीछे पड़ा, फिर वो

مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ

गुमराहों में से हो गया। और अगर हम चाहते तो उसे उन आयात की वजह से ऊपर उठाते, लेकिन वो

اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ

हमेशा नीचे ज़मीन की तरफ गया और अपनी ख्वाहिश के पीछे चलता रहा। तो उस का हाल कुत्ते के हाल

الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ

की तरह है के अगर तुम उस पर बोझ लादो तब भी हांपेगा या उस को छोड़ दो तब भी वो

يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ

हांपेगा। ये उस क़ौम का हाल है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया।

فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾ سَآءَ

तो आप ये क़िस्से बयान कीजिए ताके वो सोचें। बुरी

مَثَلَاۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ اَنْفُسَهُمْ

मिसाल है उस क़ौम की जिस ने हमारी आयतों को झुठलाया और जो अपनी

كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ

जानों पर ज़ुल्म करते थे। जिस को अल्लाह हिदायत दे वो हिदायतयाफ्ता है।

وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾ وَلَقَدْ

और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो वही लोग खसारा उठाने वाले हैं। और यक़ीनन

ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ

हम ने जहन्नम के लिए बहोत से जिन्नात और इन्सानों को पैदा किया।

لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ

उन के पास दिल हैं जिस से वो समझते नहीं। और उन के पास आँखें तो हैं (लेकिन)

لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ

उन से वो देखते नहीं। और उन के पास कान तो हैं (लेकिन) उन से वो सुनते नहीं।

اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ

ये चौपाओं की तरह हैं, बल्के उन से भी ज़्यादा गुमराह हैं। यही लोग

الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ

ग़ाफिल हैं। और अल्लाह के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं, तो अल्लाह को उन नामों के ज़रिए

بِهَا ۪ وَ ذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ

पुकारो। और छोड़ दो उन लोगों को जो अल्लाह के नामों में टेढ़ा रास्ता इखतियार करते हैं।

سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ

अनक़रीब उन्हें सज़ा दी जाएगी उस हरकत की जो वो कर रहे हैं। और हमारी मखलूक़ में से

أُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۸۱﴾

एक जमाअत है जो हक़ की रहनुमाई करती है और उसी के ज़रिए इन्साफ करती है।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ

और वो लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया अनक़रीब हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता पकड़ेंगे

مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۲﴾ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ

इस तरीक़े से के उन्हें पता न चले। और मैं उन को मोहलत दूँगा। यक़ीनन मेरी तदबीर

مَتِيْنٌ ﴿۱۸۳﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ٚ مَا بِصَاحِبِهِمْ

मज़बूत है। क्या उन्हों ने सोचा नहीं के उन के नबी को जुनून

مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸۴﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا

नहीं है? ये तो साफ साफ डराने वाले हैं। क्या उन्हों ने देखा नहीं

فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ

आसमानों और ज़मीन की सलतनत में और उन चीज़ों में जो अल्लाह ने पैदा

مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ

कीं, और (न देखा) ये के हो सकता है के उन की आखिरी मुद्दत क़रीब आ चुकी हो

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۵﴾ مَنْ يُّضْلِلِ

फिर उस के बाद किस चीज़ पर वो ईमान लाएंगे? जिस को अल्लाह गुमराह

اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ

कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। और अल्लाह उन्हें उन की सरकशी में सरगरदाँ

يَعْمَهُوْنَ ﴿۱۸۶﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ

छोड़ देते हैं। वो आप से सवाल करते हैं क़यामत के मुतअल्लिक़ के उस के वाकेअ होने का वक्त

مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا

कब है? आप फरमा दीजिए के उस का इल्म तो सिर्फ मेरे रब के पास है। उसे उस के वक्त पर

لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ۘؕ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

ज़ाहिर नहीं करेगा मगर वही। क़यामत बड़ी भारी चीज़ है आसमानों और ज़मीन में।

لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ

वो तुम्हारे पास नहीं आएगी मगर अचानक। वो आप से सवाल करते हैं गोया आप क़यामत के बारे में जानते हैं।

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
आप फरमा दीजिए के उस का इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है, लेकिन लोगों में से अक्सर जानते

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا
नहीं। आप फरमा दीजिए के मैं अपनी जान के लिए नफा और ज़रर का मालिक नहीं हूँ

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ
मगर वही जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो मैं खैर ज़्यादा

مِنَ الْخَيْرِ ۚۛ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۚۛ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ
तलब कर लेता और मुझे कोई तकलीफ न पहोंचती। मैं तो सिर्फ डराने वाला

وَّ بَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ
और बशारत देने वाला हूँ ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें पैदा किया है

مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
एक जान से (आदम अलैहिस्सलाम से) और उसी से उन की बीवी को बनाया ताके वो उन की तरफ सुकून

اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ
हासिल करे। फिर जब (आदम अलैहिस्सलाम) ने उन से सोहबत की तो वो हामिला हो गईं हलके हमल से, फिर वो उस को ले

بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا
कर चलती रहीं। फिर जब वो बोझल हुईं तो दोनों ने अल्लाह से अपने रब से दुआ की के अगर तू हमें नेक

صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾ فَلَمَّآ اٰتٰهُمَا
औलाद देगा तो हम शुक्र अदा करने वालों में से बन जाएंगे। फिर जब अल्लाह ने उन्हें सालेह औलाद दी

صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰهُمَا ۚ فَتَعٰلَى
तो वो अल्लाह के लिए शरीक ठेहराने लगे उस में जो अल्लाह ने उन्हें दिया। तो अल्लाह बरतर है उन चीज़ों से जिस

اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ
को वो शरीक ठेहरा रहे हैं। क्या वो शरीक ठेहराते हैं उन चीज़ों को जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकती,

شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾ۖ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا
बल्के वो खुद ही मखलूक़ हैं। और वो उन की मदद की ताक़त नहीं रखते

وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى
बल्के वो खुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते। और अगर आप उन्हें बुलाएं हिदायत की

الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ

तरफ तो वो आप के पीछे नहीं चलेंगे। तुम पर बराबर है चाहे तुम उन को पुकारो

اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿۱۹۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

या तुम चुप रहो। यक़ीनन जिन को तुम पुकारते हो अल्लाह के

اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ

अलावा वो तुम्हारे जैसे बन्दे हैं, फिर तुम उन्हें पुकारो, तो उन्हें चाहिए के वो तुम्हें जवाब दें

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ

अगर तुम सच्चे हो। क्या उन के पैर हैं जिन से वो चलते

بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ

हैं? या उन के हाथ हैं जिन से वो पकड़ते हैं? या उन की आँखें हैं जिन से

يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَاؕ قُلِ

वो देखते हैं? या उन के कान हैं जिन से वो सुन सकते हैं? आप फरमा दीजिए के

ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۱۹۵﴾

तुम अपने शुरका को पुकारो, फिर तुम मेरे खिलाफ मक्र करो, फिर मुझे मोहलत भी मत दो।

اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى

यक़ीनन मेरा कारसाज़ वो अल्लाह है जिस ने ये किताब उतारी। और वो नेक लोगों का

الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۹۶﴾ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

वाली है। और जिन को तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۷﴾

वो तुम्हारी नुसरत की ताक़त नहीं रखते और न ही वो अपने आप की मदद कर सकते हैं।

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْاؕ وَتَرٰىهُمْ

और अगर आप उन्हें बुलाएं हिदायत की तरफ तो वो सुनते भी नहीं। और आप उन्हें देखोगे

يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۹۸﴾ خُذِ الْعَفْوَ

के वो आप की तरफ देख रहे हैं हालांके वो देख नहीं पाते। आप मुआफी को लीजिए

وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾ وَاِمَّا

और नेकी का हुक्म दीजिए और जाहिलों से ऐराज़ कीजिए। और अगर

يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ

आप को शैतान की तरफ से कोई वसवसा आए तो अल्लाह की पनाह तलब कीजिए। यक़ीनन वो

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ

सुनने वाला, इल्म वाला है। यक़ीनन वो जो मुत्तक़ी हैं जब उन्हें शैतान की तरफ से

مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ﴿٢٠١﴾ ۚ

कोई वसवसा पहोंचता है, तो वो ज़िक्र (याद) में लग जाते हैं, फिर उसी वक्त उन्हें बसीरत मिल जाती है।

وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

और उन के भाई उन्हें खींच रहे हैं सरकशी में, फिर वो कोताही नहीं करते।

وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ

और जब उन के पास आप का कोई मोअजिज़ा नहीं लाते तो केहते हैं के तुम कोई मोअजिज़ा चुन कर क्यूं नहीं लाए?

قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ مِنْ رَّبِّىْ ۚ هٰذَا

आप फरमा दीजिए के मैं तो सिर्फ उस के पीछे चलता हूँ जो मेरी तरफ मेरे रब की तरफ से वही की जाती है। ये

بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ

तुम्हारे रब की तरफ से बसीरतें हैं और हिदायत और रहमत है ऐसी क़ौम के लिए जो

يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠٣﴾ وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ

ईमान लाती है। और जब कुरआन पढ़ा जाए तो सब उस की तरफ कान लगाओ

وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٢٠٤﴾ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ

और खामोशी इखतियार करो ताके तुम पर रहम किया जाए। और आप अपने रब को याद कीजिए

فِىْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ

अपने दिल में आजिज़ी के साथ और डरते डरते और आवाज़ बुलन्द किए बग़ैर

بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٢٠٥﴾

सुबह व शाम और आप ग़ाफिलों में से न बनें।

اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ

यक़ीनन वो फरिश्ते जो तेरे तब के पास हैं वो अल्लाह की इबादत से तकब्बुर

عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ يُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ السجدة ـ ع

नहीं करते, बल्के वो उस की तस्बीह करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं।

اٰیاتُہا ۷۵	(۸) سُوْرَۃُ الْاَنْفَالِ مَدَنِیَّۃٌ (۸۸)	رُکُوْعَاتُہا ۱۰
उस में ७५ आयतें हैं	सूरह अन्फाल मदीना में नाज़िल हुई	और १० रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ

ये आप से सवाल करते हैं अमवाले ग़नीमत के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के अमवाले ग़नीमत अल्लाह और रसूल के लिए हैं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

तो अल्लाह से डरो और आपस के तअल्लुक़ात उस्तुवार कर लो। और इताअत करो अल्लाह की

وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۱ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ

और उस के रसूल की अगर तुम ईमान वाले हो। ईमान वाले सिर्फ वही

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ

हैं के जब अल्लाह को याद किया जाए तो उन के दिल हिल जाते हैं और जब उन पर अल्लाह की आयतें

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ

तिलावत की जाती हैं तो ये आयतें उन का ईमान बढ़ा देती हैं और वो अपने रब पर तवक्कुल

يَتَوَكَّلُوْنَ ۝۲ۚۖ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ

करते हैं। जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और उन चीज़ों में से जो हम ने खाने के लिए उन्हें दीं

يُنْفِقُوْنَ ۝۳ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ

खर्च करते हैं। यही हक़ीक़ी मोमिन हैं। उन के लिए

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝۴ۚ

उन के रब के पास दरजात हैं और मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली रोज़ी है।

كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا

जैसा के आप को आप के रब ने आप के घर से हक़ की खातिर निकाला। और यक़ीनन ईमान वालों की एक

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝۵ۙ يُجَادِلُوْنَكَ

जमाअत अलबत्ता नापसन्द कर रही थी। वो आप से झगड़ रहे थे

فِى الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ

हक़ के बारे में इस के बाद के वो वाज़ेह हो चुका, गोया के वो हांके जा रहे थे मौत की तरफ

وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٦ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى

इस हाल में के वो उसे देख रहे हों। और जब तुम से अल्लाह वादा कर रहा था दो जमाअतों में से एक का

الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ

के यक़ीनन एक तुम्हारे लिए है और तुम चाह रहे थे के (खतरे के) कांटे वाला न हो

الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ

वो जमाअत तुम्हारे लिए हो जाए और अल्लाह चाहते थे के हक़ को अपने कलिमात के ज़रिए

الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَ يَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٧

हक़ साबित करे और काफिरों की जड़ काट दे।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨

ताके वो हक़ को हक़ साबित करे और बातिल को बातिल बनाए अगर्चे मुजरिमीन नापसन्द करें।

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ

जब के तुम अपने रब से मदद तलब कर रहे थे, तो उस ने तुम्हारी दुआ क़बूल की

اَنِّىْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝٩

के मैं लगातार आने वाले एक हज़ार फरिश्तों के ज़रिए तुम्हारी मदद करूंगा।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ج

और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर बशारत और इस लिए ताके उस से तुम्हारे दिल मुतमइन हों।

وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ

और नुसरत नहीं है मगर अल्लाह ही की तरफ से। यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है,

حَكِيْمٌ ۝١٠ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ

हिक्मत वाला है। जब अल्लाह तुम पर नींद डाल रहा था अपनी तरफ से अमन के लिए

وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ

और तुम पर आसमान से पानी बरसा रहा था ताके उस के ज़रिए तुम्हें पाक कर दे

وَ يُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ

और तुम से शैतान की गन्दगी को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को

عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ۝١١ اِذْ يُوْحِىْ

मज़बूत कर दे और उस से क़दमों को जमा दे। जब के तुम्हारा

رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّیْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِیْنَ

रब फरिश्तों को हुक्म दे रहा था के मैं तुम्हारे साथ हूँ, तो तुम ईमान वालों को जमाए

اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا

रखो। अनक़रीब मैं काफिरों के दिलों में रौब

الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا

डाल दूँगा, तो तुम मारो गर्दनों के ऊपर और उन

مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿۱۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ

की उँगलियों के हर जोड़ पर ज़र्ब लगाओ। ये इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल की

وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ یُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

मुखालफत की। और जो भी अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफत करेगा

فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۳﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ

तो यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है। उस को तुम चखो

وَاَنَّ لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۴﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ

और ये के काफिरों के लिए आग का अज़ाब भी है। ऐ ईमान

اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِیْتُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا

वालो! जब तुम कुफ्फार की जमईय्यत के मुक़ाबिल हो जाओ

فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿۱۵﴾ وَمَنْ یُّوَلِّهِمْ یَوْمَىِٕذٍ

तो तुम उन की तरफ पीठ मत करो (मत भागो)। और जो उन से उस दिन

دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَیِّزًا اِلٰى فِئَةٍ

भागे मगर वो जो लड़ाई के लिए किनारे पर आने वाला हो या लशकर की तरफ कूव्वत हासिल करने वाला हो,

فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ

तो यक़ीनन वो अल्लाह के गज़ब को ले कर लौटा और उस का ठिकाना जहन्नम है।

وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۶﴾ فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ

और वो बुरी जगह है। फिर तुम ने उन को क़त्ल नहीं किया

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

लेकिन अल्लाह ने उन को क़त्ल किया। और आप ने मिट्टी नहीं फैंकी जब के आप ने फैंकी थी लेकिन अल्लाह ही ने फैंकी।

رَمٰی ۚ وَلِیُبۡلِیَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ مِنۡہُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ
और इस लिए ताके अल्लाह अपनी तरफ से आज़माए ईमान वालों को अच्छी तरह आज़माना।

اِنَّ اللّٰہَ سَمِیۡعٌ عَلِیۡمٌ ﴿۱۷﴾ ذٰلِکُمۡ وَ اَنَّ اللّٰہَ مُوۡہِنُ
यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। ये इस वजह से के अल्लाह काफिरों के

کَیۡدِ الۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۱۸﴾ اِنۡ تَسۡتَفۡتِحُوۡا فَقَدۡ جَآءَکُمُ
मक्र को कमज़ोर करने वाले हैं। अगर तुम फतह तलब करते हो तो यक़ीनन तुम्हारे पास

الۡفَتۡحُ ۚ وَ اِنۡ تَنۡتَہُوۡا فَہُوَ خَیۡرٌ لَّکُمۡ ۚ وَ اِنۡ تَعُوۡدُوۡا
फतह आ पहोंची। और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो ये तुम्हारे लिए बेहतर है। और अगर तुम दोबारा ऐसा करोगे

نَعُدۡ ۚ وَ لَنۡ تُغۡنِیَ عَنۡکُمۡ فِئَتُکُمۡ شَیۡئًا
तो हम भी दोबारा ऐसा करेंगे। और हरगिज़ तुम्हारे काम नहीं आएगी तुम्हारी जमईय्यत कुछ भी

وَّ لَوۡ کَثُرَتۡ ۙ وَ اَنَّ اللّٰہَ مَعَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۱۹﴾ یٰۤاَیُّہَا
अगर्चे वो कितनी ही ज़्यादा क्यूं न हो। और ये इस लिए के अल्लाह ईमान वालों के साथ हैं। ऐ

الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَطِیۡعُوا اللّٰہَ وَ رَسُوۡلَہٗ وَ لَا تَوَلَّوۡا
ईमान वालो! तुम अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो और उस से मुंह मत

عَنۡہُ وَ اَنۡتُمۡ تَسۡمَعُوۡنَ ﴿ۚۖ۲۰﴾ وَ لَا تَکُوۡنُوۡا
मोड़ो इस हाल में के तुम सुनते भी हो। और तुम उन लोगों की तरह मत बनो

کَالَّذِیۡنَ قَالُوۡا سَمِعۡنَا وَ ہُمۡ لَا یَسۡمَعُوۡنَ ﴿۲۱﴾
जिन्हों ने कहा के ‘‘سَمِعۡنَا’’, हालांके वो सुनते नहीं।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنۡدَ اللّٰہِ الصُّمُّ الۡبُکۡمُ الَّذِیۡنَ
यक़ीनन बदतरीन चौपाए अल्लाह के नज़दीक वो बेहरे और गूंगे हैं जो

لَا یَعۡقِلُوۡنَ ﴿۲۲﴾ وَ لَوۡ عَلِمَ اللّٰہُ فِیۡہِمۡ خَیۡرًا لَّاَسۡمَعَہُمۡ ؕ
समझते भी नहीं। और अगर अल्लाह उन में कोई भलाई जानता तो ज़रूर उन्हें सुनाता।

وَ لَوۡ اَسۡمَعَہُمۡ لَتَوَلَّوۡا وَّ ہُمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿۲۳﴾ یٰۤاَیُّہَا
और अगर उन्हें अल्लाह सुनाता तो वो मुंह फेरते ऐराज़ करते हुए। ऐ

الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اسۡتَجِیۡبُوۡا لِلّٰہِ وَ لِلرَّسُوۡلِ اِذَا دَعَاکُمۡ
ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल की बात मानो जब तुम्हें वो पुकारें

لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ

ऐसी चीज़ की तरफ जो तुम्हें जिन्दगी देती है। और तुम जान लो के अल्लाह हाइल हो जाते हैं

الْمَرْءِ وَ قَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَاتَّقُوْا

इन्सान और उस के दिल के दरमियान और ये के तुम उस की तरफ इकट्ठे किए जाओगे। और तुम डरो

فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ

उस फितने (आज़माइश) से जो सिर्फ तुम में से ज़ालिमों को नहीं पहोंचेगा।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۵﴾ وَاذْكُرُوْٓا

और जान लो के अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं। और तुम याद करो

اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ

जब के तुम थोड़े थे, ज़मीन में कमज़ोर किए जा रहे थे, तुम डरते थे के

اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَ اَيَّدَكُمْ

तुम्हें लोग उचक लेंगे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ठिकाना दिया और तुम्हारी ताईद की

بِنَصْرِهٖ وَ رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۶﴾

अपनी नुसरत के ज़रिए और तुम्हें उम्दा चीज़ें खाने को दीं ताके तुम शुक्र अदा करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ

ऐ ईमान वालो! खयानत मत करो अल्लाह और रसूल से

وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَاعْلَمُوْٓا

और तुम अपनी अमानतों में खयानत मत करो इस हाल में के तुम जानते हो। और जान लो के

اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ

तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो सिर्फ आज़माइश हैं। और ये के अल्लाह के पास

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۸﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا

भारी अज्र है। ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे

اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّ يُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ

तो वो तुम्हारे लिए हक़ व बातिल के दरमियान फैसला करने वाली कुव्वत अता कर देगा और तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۹﴾ وَاِذْ

और तुम्हारी मग़फिरत करेगा। और अल्लाह भारी फज़्ल वाले हैं। और जब के

يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ

आप के साथ कुफ्फार मक्र कर रहे थे ताके वो आप को क़ैद कर दें या आप को क़त्ल कर दे

اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ وَ يَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ

या आप को वतन से निकाल दें। और वो मक्र कर रहे थे और अल्लाह भी तदबीर कर रहे थे। और अल्लाह बेहतरीन

الْمٰكِرِيْنَ ۝۳۰ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ

तदबीर करने वाले हैं। और जब उन पर हमरी आयतें तिलावत की जाती हैं तो केहते हैं बस

سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ

हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो यक़ीनन हम भी उस जैसा कलाम केह लें। ये तो सिर्फ

اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝۳۱ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ

पेहले लोगों की गढ़ी हुई कहानियाँ हैं। और जब के उन्हों ने कहा ऐ अल्लाह!

اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا

अगर ये तेरी तरफ से हक़ है, तो तू हम पर

حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝۳۲

आसमान से पथ्थर बरसा या हम पर दर्दनाक अज़ाब ले आ।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ

हालांके अल्लाह उन्हें अज़ाब नहीं देंगे इस हाल में के आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन में हैं। और अल्लाह उन्हें

اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝۳۳ وَمَا لَهُمْ

अज़ाब नहीं देंगे इस हाल में के वो इस्तिग़फार कर रहे हों। और उन को क्या हुवा

اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ

के अल्लाह उन को अज़ाब न दे इस हाल में के वो मस्जिदे हराम से रोकते

الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ

हैं, हालांके वो उस के हक़दार भी नहीं हैं। उस के हक़दार तो

اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۳۴ وَمَا كَانَ

सिर्फ मुत्तक़ी लोग हैं, लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और उन की

صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّ تَصْدِيَةً ؕ

नमाज़ बैतुल्लाह के पास सिवाए सीटियाँ बजाने और तालियों के नहीं होती।

فَذُوۡقُوا الۡعَذَابَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡفُرُوۡنَ ﴿۳۵﴾

तो अज़ाब चखो इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे।

اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَهُمۡ لِيَصُدُّوۡا

यक़ीनन वो लोग जो काफिर हैं वो अपने माल खर्च करते हैं ताके वो

عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنۡفِقُوۡنَهَا ثُمَّ تَكُوۡنُ

अल्लाह के रास्ते से रोकें। फिर वो अनक़रीब उसे खर्च करेंगे, फिर वो

عَلَيۡهِمۡ حَسۡرَةً ثُمَّ يُغۡلَبُوۡنَ ۬ؕ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا

उन पर हसरत का बाइस बनेगा, फिर वो मग़लूब होंगे। और जो काफिर हैं

اِلٰى جَهَنَّمَ يُحۡشَرُوۡنَ ﴿۳۶﴾ۙ لِيَمِيۡزَ اللّٰهُ الۡخَبِيۡثَ

वो जहन्नम की तरफ इकट्ठे किए जाएंगे। ताके अल्लाह बुरे को अच्छे से

مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجۡعَلَ الۡخَبِيۡثَ بَعۡضَهٗ عَلٰى بَعۡضٍ فَيَرۡكُمَهٗ

अलग करे और अल्लाह बुरे को एक दूसरे के ऊपर कर दे, फिर उस को इकट्ठा तेह बतेह

جَمِيۡعًا فَيَجۡعَلَهٗ فِىۡ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ

कर दे, फिर उस को जहन्नम में डाल दे। यही लोग खसारा

الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۳۷﴾ قُلۡ لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ يَّنۡتَهُوۡا يُغۡفَرۡ

उठाने वाले हैं। आप काफिरों से फरमा दीजिए के अगर वो बाज़ आ जाएंगे तो उन के लिए मग़फिरत कर दी

لَهُمۡ مَّا قَدۡ سَلَفَ ۚ وَاِنۡ يَّعُوۡدُوۡا فَقَدۡ مَضَتۡ

जाएगी उन गुनाहों की जो पेहले हो चुके। और अगर वो दोबारा ऐसा करेंगे तो पेहले लोगों का

سُنَّتُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۳۸﴾ وَقَاتِلُوۡهُمۡ حَتّٰى لَا تَكُوۡنَ فِتۡنَةٌ

तरीक़ा गुज़र चुका है। और तुम उन से क़िताल करो यहां तक के कुफ्र का फितना बाक़ी न रहे

وَّيَكُوۡنَ الدِّيۡنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انۡتَهَوۡا فَاِنَّ اللّٰهَ

और दीन सारा का सारा अल्लाह ही के लिए हो जाए। फिर अगर वो बाज़ आ जाएं तो यक़ीनन अल्लाह

بِمَا يَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ﴿۳۹﴾ وَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاعۡلَمُوۡۤا

उन के आमाल को देख रहे हैं। और अगर वो ऐराज़ करें तो तुम जान लो के

اَنَّ اللّٰهَ مَوۡلٰٮكُمۡ ؕ نِعۡمَ الۡمَوۡلٰى وَنِعۡمَ النَّصِيۡرُ ﴿۴۰﴾

अल्लाह तुम्हारा मौला है, बेहतरीन मौला और बेहतरीन मदद करने वाला है।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ

और जान लो के जो कुछ तुम ग़नीमत में हासिल करो तो अल्लाह

وَ لِلرَّسُوْلِ وَ لِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ

और रसूल और रिश्तेदारों और यतीमों और मिसकीनों और मुसाफिरों के लिए

وَابْنِ السَّبِیْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا

उस का खुम्स है, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस कुरआन पर जो हमारे बन्दे पर

عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی الْجَمْعٰنِ ؕ

हक़ और बातिल के दरमियान फैसले के दिन हम ने उतारा, जिस में दो लश्कर बाहम मुक़ाबिल हुए।

وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۴۱﴾ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ

और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाले हैं। जब तुम क़रीब वाले

الدُّنْیَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ

किनारे में थे और वो दूर वाले किनारे में थे और क़ाफला तुम से

مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ ۙ

नीचे था। और अगर तुम एक दूसरे से वादा कर लेते तो अलबत्ता वादे में ज़रूर तुम आगे पीछे हो जाते।

وَلٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ۬ لِّیَهْلِكَ

ये इस लिए किया ताके अल्लाह फैसला फरमा दे एक काम का जो मुक़र्रर हो चुका था, ताके हलाक हो

مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَّ یَحْیٰی مَنْ حَیَّ

जिसे हलाक होना हो क़यामे हुज्जत के बाद और ज़िन्दा रहे जिसे ज़िन्दा रेहना हो

عَنْۢ بَیِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۴۲﴾ ۙ اِذْ یُرِیْكَهُمُ اللّٰهُ

क़यामे हुज्जत के बाद। और यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। जब अल्लाह ने आप को दिखलाया

فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا ؕ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ

उन कुफ्फार को आप के ख्वाब में कम कर के। और अगर आप को अल्लाह उन कुफ्फार को ज़्यादा दिखाता तो तुम मुसलमान हिम्मत हार जाते

وَلَتَنَازَعْتُمْ فِی الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ

और तुम इस मुआमले में बाहम उलझ पड़ते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया। यक़ीनन वो

عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۴۳﴾ وَاِذْ یُرِیْكُمُوْهُمْ اِذِ

दिलों के हाल को खूब जानने वाला है। और जब अल्लाह उन कुफ्फार को जब तुम मुक़ाबिल

الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّ يُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ

हुए, तुम्हारी निगाहों में तुम्हें कम दिखा रहा था और तुम्हें कम दिखा रहा था उन की निगाहों में

لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

ताके अल्लाह एक काम का फैसला कर दे जो मुक़र्रर हो चुका था। और अल्लाह ही की तरफ

تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ؏ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً

तमाम उमूर लौटाए जाएंगे। ऐ ईमान वालो! जब तुम किसी लश्कर के मुक़ाबिल हो

فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۚ﴿٤٥﴾

तो साबित क़दम रहो और अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करो ताके फलाह पाओ।

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا

और अल्लाह और उस के रसूल का खुशी से केहना मानो और आपस में मत झगड़ो, वरना तुम हिम्मत हार जाओगे

وَ تَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۚ﴿٤٦﴾

और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र करो। यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ

और उन लोगों की तरह मत बनो जो अपने घरों से निकले थे

بَطَرًا وَّ رِئَآءَ النَّاسِ وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ

इतराते हुए और लोगों के दिखावे के लिए और अल्लाह के रास्ते से

اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾ وَاِذْ زَيَّنَ

रोकते थे। और अल्लाह उन के आमाल का इहाता किए हुए है। और जब उन के लिए

لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ

शैतान ने उन के आमाल मुज़य्यन किए और शैतान ने कहा के आज तुम पर इन्सानों में से

الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ

कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और मैं तुम्हारा मददगार हूँ। फिर जब दोनों लश्कर एक दूसरे के

الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ

मुक़ाबिल हुए तो शैतान अपनी ऐड़ियों के बल पलट गया और केहने लगा के मैं तुम से

مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ

बरी हूँ के मैं देख रहा हूँ वो (फरिश्ते) जो तुम नहीं देख रहे, इस लिए मैं अल्लाह से डरता हूँ।

وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٤٨ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ
और अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं। जब मुनाफिक़ीन और वो लोग

وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ
जिन के दिलों में मर्ज़ है केह रहे थे के उन लोगों को उन के दीन ने मग़रूर बना रखा है।

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٤٩
और जो अल्लाह पर तवक्कुल करेगा तो यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ
और काश के आप देखते जब के काफिरों की जान निकाल रहे होंगे फरिश्ते,

يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا
मार रहे होंगे उन के चेहरों पर और उन की पीठों पर। और (केहते होंगे के)

عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٥٠ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ
आग का अज़ाब चखो। ये अज़ाब उन गुनाहों की वजह से है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे

وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝٥١ كَدَاْبِ اٰلِ
और ये बात साबित है के अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करने वाला नहीं है। उन का हाल आले फिरऔन

فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
के हाल की तरह और उन लोगों के हाल की तरह है जो उन से पेहले थे। जिन्हों ने अल्लाह की आयात के साथ कुफ्र किया,

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ
फिर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। यक़ीनन अल्लाह कुव्वत वाला है, सख्त सज़ा देने

الْعِقَابِ ۝٥٢ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً
वाला है। ये इस वजह से के अल्लाह किसी नेअमत को बदलता नहीं जिस का उस ने

اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ
किसी क़ौम पर इन्आम किया हो यहाँ तक के वो खुद न बदल लें उस को जो उन के दिलों में है।

وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٥٣ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ
और ये के अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है। उन का हाल आले फिरऔन के हाल की तरह

وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
और उन लोगों के हाल की तरह है जो उन से भी पेहले थे। जिन्हों ने अपने रब की आयात को झुठलाया

فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ج

फिर हम ने उन्हें हलाक किया उन के गुनाहों की वजह से और हम ने आले फिरऔन को ग़र्क़ किया।

وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ

और सब के सब ज़ालिम थे। यक़ीनन बदतरीन मखलूक़ अल्लाह के

عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَلَّذِيْنَ

नज़दीक वो लोग हैं जो काफिर हैं, फिर वो ईमान नहीं लाते। उन में से

عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ

वो जिन से आप ने अहद कर रखा है, फिर वो अपने अहद को तोड़ते हैं

فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ

हर मर्तबा में और वो डरते नहीं हैं। फिर अगर आप उन पर क़ाबू पाएं

فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

जंग में तो उन के ज़रिए से मुन्तशिर कर दीजिए उन को जो उन के पीछे हैं, शायद वो नसीहत हासिल करें।

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ

और अगर तुम्हें डर हो किसी क़ौम की तरफ से खयानत का तो उन की तरफ बराबर सराबर

عَلٰى سَوَآءٍ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ ع

मुआहदे को फैंक दो। यक़ीनन अल्लाह खयानत करने वालों से महब्बत नहीं करते।

ع٧ ٣

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ط اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾

और काफिर लोग ये न समझें के वो भाग कर आगे निकल गए हैं। यक़ीनन वो (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकते।

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ

और तुम तय्यारी रखो उन के लिए उस सामान की जिस की तुम इस्तिताअत रखते हो

وَّ مِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ

और घोड़ों को बांध कर के भी जिस के ज़रिए तुम डराओ अल्लाह के दुश्मन को और अपने दुश्मन को

وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ج لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ج اَللّٰهُ

और उन के अलावा दूसरों को जिन को तुम जानते नहीं हो। अल्लाह

يَعْلَمُهُمْ ط وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

उन्हें जानते हैं। और जो चीज़ भी खर्च करोगे अल्लाह के रास्ते में

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝٦٠ وَاِنْ جَنَحُوْا

तो वो तुम्हें पूरी पूरी दी जाएगी और तुम्हें कम कर के नहीं दी जाएगी। और अगर वो सुल्ह की तरफ

لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

झुकें तो आप भी सुल्ह की तरफ झुकिए और अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। यक़ीनन अल्लाह

السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦١ وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ

सुनने वाले, इल्म वाले हैं। और अगर वो चाहें के वो आप को धोका दें

فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ

तो यक़ीनन अल्लाह आप को काफी है। वही अल्लाह है जिस ने अपनी नुसरत और ईमान वालों के ज़रिए

وَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٢ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ

आप को क़ूव्वत दी। और जिस ने उन के दिलों को जोड़ दिया। अगर आप खर्च कर देते

مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ

वो दौलत जो ज़मीन में है सारी की सारी तो भी उन के दिलों को जोड़ नहीं सकते थे,

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٦٣

लेकिन अल्लाह ने उन के दिलों को जोड़ दिया। यक़ीनन वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप को अल्लाह काफी है और वो मोमिनीन काफी हैं

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٤ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ

जो आप के पीछे चल रहे हैं। ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! ईमान वालों को क़िताल

عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ

पर उभारिए। अगर तुम में से बीस साबित क़दम रेहने वाले होंगे

يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ

तो वो ग़ालिब आ जाएंगे दो सौ पर। और अगर तुम में से सौ होंगे

يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ

तो एक हज़ार काफिरों पर ग़ालिब आ जाएंगे इस वजह से के वो ऐसी

لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝٦٥ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ

क़ौम है जो कुछ समझती नहीं। अब अल्लाह ने तुम से तखफीफ कर दी और अल्लाह ने

اَنَّ فِيۡكُمۡ ضَعۡفًا ؕ فَاِنۡ يَّكُنۡ مِّنۡكُمۡ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ

जान लिया के तुम में कमज़ोरी है। तो अगर तुम में से सौ साबित क़दम रेहने वाले होंगे

يَّغۡلِبُوۡا مِائَتَيۡنِ‌ۚ وَاِنۡ يَّكُنۡ مِّنۡكُمۡ اَلۡفٌ يَّغۡلِبُوۡۤا

तो वो ग़ालिब आ जाएंगे दो सौ पर। और अगर तुम में से एक हज़ार होंगे तो ग़ालिब आएंगे

اَلۡفَيۡنِ بِاِذۡنِ اللّٰهِ‌ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيۡنَ ۞ مَا كَانَ

दो हज़ार पर अल्लाह के हुक्म से। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। नबी के लिए

لِنَبِىٍّ اَنۡ يَّكُوۡنَ لَهٗۤ اَسۡرٰى حَتّٰى يُثۡخِنَ

मुनासिब नहीं है के उस के पास कै़दी हों यहां तक के वो अच्छी तरह खून बहा दे

فِى الۡاَرۡضِ‌ ؕ تُرِيۡدُوۡنَ عَرَضَ الدُّنۡيَا ‌ۖ وَاللّٰهُ يُرِيۡدُ

ज़मीन में। तुम दुन्या का सामान चाहते हो, और अल्लाह आखिरत

الۡاٰخِرَةَ‌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ حَكِيۡمٌ ۞ لَوۡلَا كِتٰبٌ

चाहते हैं। और अल्लाह ज़बर्दस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। अगर अल्लाह की तरफ से पेहले से लिखी हुई तहरीर

مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمۡ فِيۡمَاۤ اَخَذۡتُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ۞

न होती तो तुम्हें भारी अज़ाब पहोंचता उस फिदये की वजह से जो तुम ने लिया।

فَكُلُوۡا مِمَّا غَنِمۡتُمۡ حَلٰلًا طَيِّبًا ‌ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ‌ ؕ

अब तुम खाओ उस में से जो तुम ने ग़नीमत के तौर पर हासिल किया हलाल पाकीज़ा समझ कर और अल्लाह से डरो।

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۞ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلۡ لِّمَنۡ

यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप फरमा दीजिए उन कै़दियों

فِىۡۤ اَيۡدِيۡكُمۡ مِّنَ الۡاَسۡرٰٓى ۙ اِنۡ يَّعۡلَمِ اللّٰهُ فِىۡ قُلُوۡبِكُمۡ

से जो तुम्हारे हाथों में हैं के अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में भलाई मालूम

خَيۡرًا يُّؤۡتِكُمۡ خَيۡرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنۡكُمۡ وَ يَغۡفِرۡ لَكُمۡ‌ ؕ

करेगा तो अल्लाह तुम्हें उस से बेहतर देगा जो तुम से लिया गया और तुम्हारी मग़फिरत कर देगा।

وَاللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۞ وَاِنۡ يُّرِيۡدُوۡا خِيَانَتَكَ

और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और अगर वो आप से खयानत करना चाहते हैं

فَقَدۡ خَانُوا اللّٰهَ مِنۡ قَبۡلُ فَاَمۡكَنَ مِنۡهُمۡ‌ ؕ

तो यक़ीनन वो अल्लाह से इस से पेहले खयानत कर चुके हैं, फिर अल्लाह ने उन पर कुदरत दी।

وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ۝٧١ اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए

وَ هَاجَرُوۡا وَ جٰهَدُوۡا بِاَمۡوَالِهِمۡ وَ اَنۡفُسِهِمۡ
और जिन्हों ने हिजरत की और जिहाद किया अपने मालों और जानों के ज़रिए

فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَالَّذِيۡنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوۡۤا
अल्लाह के रास्ते में और जिन्हों ने ठिकाना दिया और नुसरत की

اُولٰٓئِكَ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ‌ؕ وَالَّذِيۡنَ
उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं। और वो लोग

اٰمَنُوۡا وَلَمۡ يُهَاجِرُوۡا مَا لَـكُمۡ مِّنۡ وَّلَايَتِهِمۡ
जो ईमान लाए और जिन्हों ने हिजरत नहीं की तो तुम्हारे लिए उन की किसी भी चीज़ की विलायत नहीं है

مِّنۡ شَىۡءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوۡا‌ ۚ وَاِنِ اسۡتَنۡصَرُوۡكُمۡ
(न इर्स की, न ग़नीमत की) जब तक के वो हिजरत न करें। और अगर वो तुम से दीन

فِى الدِّيۡنِ فَعَلَيۡكُمُ النَّصۡرُ اِلَّا عَلٰى قَوۡمٍ ۢ بَيۡنَكُمۡ
में मदद तलब करें तो तुम पर मदद करना ज़रूरी है मगर ऐसी क़ौम के खिलाफ के तुम्हारे

وَ بَيۡنَهُمۡ مِّيۡثَاقٌ‌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ۝٧٢
और उन के दरमियान मुआहदा हो। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहे हैं।

وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ‌ؕ
और वो जो काफिर हैं, वो उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं।

اِلَّا تَفۡعَلُوۡهُ تَكُنۡ فِتۡنَةٌ فِى الۡاَرۡضِ وَ فَسَادٌ
अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो ज़मीन में फितना हो जाएगा और बड़ा

كَبِيۡرٌ ۝٧٣ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ هَاجَرُوۡا وَجٰهَدُوۡا
फसाद होगा। और वो लोग जो ईमान लाए और जिन्हों ने हिजरत की और जिहाद किया

فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَالَّذِيۡنَ اٰوَوْا وَّ نَصَرُوۡۤا اُولٰٓئِكَ
अल्लाह के रास्ते में और जिन्हों ने ठिकाना दिया और नुसरत की, यही

هُمُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ حَقًّا‌ ؕ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّرِزۡقٌ كَرِيۡمٌ ۝٧٤
हक़ीक़ी मोमिन हैं। उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली रोज़ी है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ
और वो जो ईमान लाए उस के बाद और हिजरत की और तुम्हारे साथ जिहाद किया

فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَ اُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى
तो ये लोग तुम ही में से हैं। और क़रीबी रिश्तेदार उन में से एक दूसरे

بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾
के ज़्यादा हक़दार हैं अल्लाह की किताब में। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

اٰيَاتُهَا ١٢٩ (٩) سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ (١١٣) رُكُوْعَاتُهَا ١٦
उस में १२९ आयतें हैं सूरह तौबा मदीना में नाज़िल हुई और १६ रूकूअ हैं

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ
अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से बराअत का ऐलान है उन मुशरिकीन की तरफ जिन

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١﴾ فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ
से तुम ने मुआहदा किया था। के (मुशरिको!) तुम ज़मीन में चलो फिरो चार

اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ
महीने तक और तुम जान लो के तुम अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकोगे,

وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾ وَ اَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ
और ये के अल्लाह काफिरों को रूस्वा करने वाले हैं। और अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से तमाम

وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ
इन्सानों की तरफ आम ऐलान है हज्जे अकबर के दिन के अल्लाह

بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ۬ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ
बरी है मुशरिकीन से और उस का रसूल भी बरी है। फिर अगर तुम तौबा करो

فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ
तो ये तुम्हारे लिए बेहतर है। और अगर रूगरदानी करो तो जान लो के अल्लाह को (भाग कर)

مُعْجِزِي اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ
तुम आजिज़ नहीं कर सकते। और आप काफिरों को दर्दनाक अज़ाब की बशारत

اَلِيْمٍ ﴿٣﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ
सुना दीजिए। मगर उन को जिन मुशरिकीन से तुम ने मुआहदा कर रखा था

ثُمَّ لَمۡ يَنۡقُصُوۡكُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَمۡ يُظَاهِرُوۡا عَلَيۡكُمۡ

फिर उन्हों ने तुम से किसी चीज़ की कमी नहीं की और उन्हों ने तुम्हारे खिलाफ किसी की मदद

اَحَدًا فَاَتِمُّوۡۤا اِلَيۡهِمۡ عَهۡدَهُمۡ اِلٰى مُدَّتِهِمۡ ؕ

नहीं की, तो तुम उन के साथ उन के मुआहदे को पूरा करो उस की मुद्दत तक।

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ۝٤ فَاِذَا انۡسَلَخَ الۡاَشۡهُرُ

यक़ीनन अल्लाह मुत्तकियों से महब्बत करते हैं। फिर जब हुरमत वाले महीने गुज़र

الۡحُرُمُ فَاقۡتُلُوا الۡمُشۡرِكِيۡنَ حَيۡثُ وَجَدۡتُّمُوۡهُمۡ

जाएं तो मुशरिकीन को क़त्ल करो जहाँ उन को पाओ

وَ خُذُوۡهُمۡ وَاحۡصُرُوۡهُمۡ وَاقۡعُدُوۡا لَهُمۡ كُلَّ مَرۡصَدٍ ۚ

और उन को पकड़ो और उन को क़ैद करो और तुम उन के लिए हर ताकने की जगह में बैठो।

فَاِنۡ تَابُوۡا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ

फिर अगर वो तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें

فَخَلُّوۡا سَبِيۡلَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝٥

तो उन का रास्ता छोड़ दो। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

وَاِنۡ اَحَدٌ مِّنَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ اسۡتَجَارَكَ فَاَجِرۡهُ حَتّٰى يَسۡمَعَ

और अगर मुशरिकीन में से कोई आप से पनाह तलब करे तो आप उस को पनाह दे दीजिए यहाँ तक के वो अल्लाह

كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبۡلِغۡهُ مَاۡمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ

के कलाम को सुने, फिर उस को उस के अमन की जगह तक पहोंचा दीजिए। ये इस वजह से के ये ऐसी क़ौम है

قَوۡمٌ لَّا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٦ ع كَيۡفَ يَكُوۡنُ لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ

जो जानती नहीं। मुशरिकीन के लिए कैसे मुआहदा बाक़ी रेह

عَهۡدٌ عِنۡدَ اللّٰهِ وَ عِنۡدَ رَسُوۡلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيۡنَ

सकता है अल्लाह और उस के रसूल के पास मगर हाँ, जिन से

عٰهَدۡتُّمۡ عِنۡدَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ ۚ فَمَا اسۡتَقَامُوۡا

तुम ने मस्जिदे हराम के पास मुआहदा किया था। फिर वो तुम्हारे लिए जब तक सीधे

لَكُمۡ فَاسۡتَقِيۡمُوۡا لَهُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الۡمُتَّقِيۡنَ ۝٧

रहें तुम भी उन के लिए सीधे रहो। यक़ीनन अल्लाह मुत्तक़ियों से महब्बत फरमाते हैं।

كَيۡفَ وَاِنۡ يَّظۡهَرُوۡا عَلَيۡكُمۡ لَا يَرۡقُبُوۡا فِيۡكُمۡ

कैसे (मुआहदा बाक़ी रेह सकता है) हालांके अगर वो तुम पर ग़ालिब आ जाएं तो तुम्हारे बारे में वो परवाह न करें

اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرۡضُوۡنَكُمۡ بِاَفۡوَاهِهِمۡ وَ تَاۡبٰى

रिश्तेदारी और अहद की। वो तुम्हें अपने मुंह से खुश करते हैं हालांके उन के दिल इन्कार

قُلُوۡبُهُمۡ ۚ وَ اَكۡثَرُهُمۡ فٰسِقُوۡنَ ۞٨ اِشۡتَرَوۡا بِاٰيٰتِ

करते हैं। और उन में से अक्सर नाफरमान हैं। उन्हों ने अल्लाह की आयात

اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيۡلًا فَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِهٖ ؕ اِنَّهُمۡ

के बदले थोड़ी क़ीमत ली, फिर उन्हों ने अल्लाह के रास्ते से रोका। यक़ीनन

سَآءَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۞٩ لَا يَرۡقُبُوۡنَ

बुरे हैं वो काम जो वो कर रहे हैं। वो परवाह नहीं करते

فِىۡ مُؤۡمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُعۡتَدُوۡنَ ۞١٠

किसी मोमिन के बारे में रिश्तेदारी और ज़िम्मे की। और वही लोग ज़्यादती करने वाले हैं।

فَاِنۡ تَابُوۡا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ

फिर अगर वो तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें

فَاِخۡوَانُكُمۡ فِى الدِّيۡنِ ؕ وَ نُفَصِّلُ الۡاٰيٰتِ لِقَوۡمٍ

तो वो दीन में तुम्हारे भाई हैं। और हम आयतों को तफसील से बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए

يَّعۡلَمُوۡنَ ۞١١ وَاِنۡ نَّكَثُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ

जो जानती है। और अगर वो अपनी क़स्में तोड़ें अपने मुआहदे

عَهۡدِهِمۡ وَ طَعَنُوۡا فِىۡ دِيۡنِكُمۡ فَقَاتِلُوۡۤا اَئِمَّةَ

के बाद और तुम्हारे दीन में तानाज़नी करें तो तुम कुफ्र के सरग़नों से

الۡكُفۡرِ ۙ اِنَّهُمۡ لَاۤ اَيۡمَانَ لَهُمۡ لَعَلَّهُمۡ يَنۡتَهُوۡنَ ۞١٢

क़िताल करो, इस लिए के उन को क़स्मों की कोई परवाह नहीं, (उन से क़िताल करो) ताके वो बाज़ आ जाएं।

اَلَا تُقَاتِلُوۡنَ قَوۡمًا نَّكَثُوۡۤا اَيۡمَانَهُمۡ وَ هَمُّوۡا

तुम क़िताल क्यूं नहीं करते ऐसी क़ौम से जिन्हों ने अपनी क़स्मों को तोड़ा और जिन्हों ने रसूल को

بِاِخۡرَاجِ الرَّسُوۡلِ وَهُمۡ بَدَءُوۡكُمۡ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ

निकालने का इरादा किया और उन्हों ने तुम से (नक़्ज़े अहद में) पेहल की।

اَتَخۡشَوۡنَهُمۡ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنۡ تَخۡشَوۡهُ اِنۡ كُنۡتُمۡ

क्या तुम उन से डरते हो? हालांके अल्लाह उस का ज़्यादा हक़दार है के उस से डरो अगर तुम

مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۳﴾ قَاتِلُوۡهُمۡ يُعَذِّبۡهُمُ اللّٰهُ بِاَيۡدِيۡكُمۡ

मोमिन हो। उन से क़िताल करो ताके अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें अज़ाब दे

وَ يُخۡزِهِمۡ وَ يَنۡصُرۡكُمۡ عَلَيۡهِمۡ وَيَشۡفِ صُدُوۡرَ

और उन्हें रूस्वा करे और उन के खिलाफ तुम्हारी नुसरत करे और ईमान वाली क़ौम

قَوۡمٍ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۴﴾ وَ يُذۡهِبۡ غَيۡظَ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ

के दिलों को शिफा दे। और उन के दिलों के ग़ैज़ को दूर करे।

وَ يَتُوۡبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ

और अल्लाह तौबा क़बूल करे जिस की चाहे। और अल्लाह इल्म वाले,

حَكِيۡمٌ ﴿۱۵﴾ اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تُتۡرَكُوۡا وَلَمَّا يَعۡلَمِ

हिक्मत वाले हैं। क्या तुम ने ये गुमान कर रखा है के तुम छूट जाओगे हालांके अब तक

اللّٰهُ الَّذِيۡنَ جٰهَدُوۡا مِنۡكُمۡ وَلَمۡ يَتَّخِذُوۡا

अल्लाह ने मालूम नहीं किया उन को जो तुम में से मुजाहिद हैं और उन्हों ने

مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوۡلِهٖ وَلَا الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَلِيۡجَةً ؕ

अल्लाह के अलावा और उस के रसूल और ईमान वालों के अलावा किसी को राज़दार नहीं बनाया।

وَاللّٰهُ خَبِيۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ مَا كَانَ لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ

और अल्लाह को खबर है उन कामों की जो तुम करते हो। मुशरिकीन का काम नहीं है

اَنۡ يَّعۡمُرُوۡا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيۡنَ عَلٰٓى اَنۡفُسِهِمۡ

के वो अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें इस हाल में के वो अपने खिलाफ कुफ्र की गवाही देने

بِالۡكُفۡرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ ۖۚ وَفِى النَّارِ

वाले हैं। यही लोग हैं के उन के आमाल हब्त हो गए। और वही दोज़ख में हमेशा

هُمۡ خٰلِدُوۡنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّمَا يَعۡمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنۡ اٰمَنَ

रेहने वाले हैं। अल्लाह की मसाजिद को सिर्फ वही लोग आबाद करते हैं जो ईमान लाए हैं

بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं

وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ قف فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا
और नहीं डरते मगर अल्लाह से, तो उम्मीद है के ये लोग हिदायतयाफ्ता

مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ١٨ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ
लोगों में से हों। क्या तुम ने हाजियों के पानी पिलाने

وَ عِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
और मस्जिदे हराम के आबाद करने को उस शख्स की तरह बना दिया जो अल्लाह पर ईमान रखता है और आखिरी

الْاٰخِرِ وَ جَاهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط لَا يَسْتَوٗنَ
दिन पर और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है। अल्लाह के नज़दीक

عِنْدَ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ١٩ اَلَّذِيْنَ
ये सब बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते। वो लोग

وقف لازم

اٰمَنُوْا وَ هَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
जो ईमान लाए और जिन्हों ने हिजरत की और जिहाद किया अल्लाह के रास्ते में

بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ لا اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ط
अपने मालों और जानों के ज़रिए, ये अल्लाह के नज़दीक दरजे के ऐतेबार से ज़्यादा बढ़े हुए हैं।

وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ٢٠ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ
और यही लोग कामयाब हैं। उन का रब उन्हें बशारत देता है

بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ
अपनी रहमत की और खुशनूदी की और ऐसी जन्नतों की के उन के लिए उन में दाइमी नेअमतें

مُّقِيْمٌ ٢١ لا خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ط اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ
होंगी। वो उन में हमेशा रहेंगे। यक़ीनन अल्लाह के पास

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ٢٢ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا
भारी अज्र है। ऐ ईमान वालो! तुम अपने

اٰبَآءَكُمْ وَ اِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
बाप दादा और अपने भाइयों को दोस्त मत बनाओ अगर वो ईमान के मुक़ाबले में

عَلَى الْاِيْمَانِ ط وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ
कुफ्र को पसन्द करें। और जो तुम में से उन से दोस्ती रखेगा तो वही

هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ

लोग गुनेहगार हैं। आप फरमा दीजिए के अगर तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बेटे

وَاِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ

और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारा क़बीला और वो माल जो तुम

اِقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا

ने कमाए हैं और वो तिजारत जिस के घाटे से तुम डरते हो

وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

और वो मकानात जिन को तुम पसन्द करते हो, (अगर ये तमाम चीज़ें) तुम्हें अल्लाह और

وَرَسُوْلِهٖ وَ جِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ

उस के रसूल और उस के रास्ते में जिहाद करने से ज़्यादा महबूब हैं, तो तुम मुन्तज़िर रहो यहां तक के अल्लाह

اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾

अपना अज़ाब ले आए। और अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत नहीं देते।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ

यक़ीनन अल्लाह ने तुम्हारी नुसरत फरमाई बहोत से मैदानों में, (खास तौर पर)

حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ

जंगे हुनैन में, जब के तुम्हारी कस्रत ने तुम्हें उज्ब में मुबतला किया, फिर ये कस्रत तुम्हारे

شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ

कुछ भी काम नहीं आई और तुम पर ज़मीन तंग हो गई अपनी वुसअत के बावजूद,

ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

फिर तुम पीठ फेर कर भागे। फिर अल्लाह ने अपनी तसल्ली उतारी

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا

अपने रसूल पर और ईमान वालों पर और फौजें उतारीं

لَّمْ تَرَوْهَا وَ عَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ

जो तुम ने नहीं देखीं और अल्लाह ने काफिरों को अज़ाब दिया। और ये काफिरों

الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

की सज़ा है। फिर अल्लाह उस के बाद तौबा क़बूल करेंगे

عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

जिस की चाहें। और अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। ऐ ईमान

اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ

वालो! मुशरिकीन तो सरापा नजासत हैं, इस लिए वो मस्जिदे हराम के क़रीब

الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً

इस साल के बाद न जाने पाएं। और अगर तुम फ़क्र से डरते हो

فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ

तो अनक़रीब अल्लाह तुम्हें ग़नी कर देंगे अपने फ़ज़्ल से अगर चाहेंगे।

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٢٨ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। तुम क़िताल करो उन लोगों से जो एहले किताब में से

بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ

ईमान नहीं रखते अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और जो हराम नहीं क़रार देते उन चीज़ों को

اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ

जो अल्लाह और उस के रसूल ने हराम क़रार दी हैं और दीने हक़ को अपना दीन नहीं बनाते,

اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ

(क़िताल करो) यहां तक के वो जिज़्या दें अपने हाथ से इस हाल में के वो

صٰغِرُوْنَ ۝٢٩ وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ٰابْنُ اللّٰهِ

ज़लील भी हों। यहूद ने कहा के उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं

وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ

और नसारा ने कहा के मसीह अल्लाह के बेटे हैं। ये उन की अपने मुंह से कही हुई

بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

बातें हैं। ये उन लोगों जैसी बातें करते हैं जो उन से पेहले

مِنْ قَبْلُ ؕ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٣٠ اِتَّخَذُوْۤا

काफिर हो चुके। उन पर अल्लाह की मार हो। ये किधर उल्टे जा रहे हैं? उन्हों ने

اَحْبَارَهُمْ وَ رُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अपने उलमा और अपने राहिबों को रब बना लिया अल्लाह को छोड़ कर के

وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا

और रब बना लिया मसीह इब्ने मरयम को। हालांके खुद उन्हें हुक्म नहीं दिया गया मगर इसी का के वो इबादत करेंगे

اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

एक ही माबूद की। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो पाक है उन चीज़ों से जिन को वो शरीक ठेहरा रहे हैं।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى

वो चाहते हैं के अल्लाह के नूर को अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह इन्कार

اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾

करते हैं मगर ये के वो अपने नूर को इतमाम तक पहोंचाएं अगर्चे काफिर लोग नापसन्द करें।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ

वही अल्लाह है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

ताके उसे ग़ालिब कर दे तमाम अदयान पर अगर्चे मुशरिक नापसन्द करें।

النصف

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ

ऐ ईमान वालो! यक़ीनन बहोत से उलमा

وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ

और राहिब लोगों के माल बातिल तरीक़े से खाते हैं

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ

और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। और जो भी सौना और चाँदी को

الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ

खज़ाना कर के रखते हैं और उसे खर्च नहीं करते अल्लाह के रास्ते में

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا

तो आप उन्हें बशारत सुना दीजिए दर्दनाक अज़ाब की। जिस दिन जहन्नम की आग में

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ

उसे गर्म किया जाएगा, फिर उस के ज़रिए उन की पेशानी और उन के पेहलुओं और उन की

وَ ظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا

पीठों को दाग़ा जाएगा। (कहा जाएगा के) ये वो है जो तुम ने अपने लिए जमा किया था, तो अपने जमा करने का

مَا كُنۡتُمۡ تَكۡنِزُوۡنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوۡرِ
मज़ा चखो। यक़ीनन महीनों की तादाद

عِنۡدَ اللّٰهِ اثۡنَا عَشَرَ شَهۡرًا فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوۡمَ خَلَقَ
अल्लाह के नज़दीक बारा महीने हैं अल्लाह की किताब में उस दिन से जिस दिन

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ مِنۡهَاۤ اَرۡبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ
अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, उन में से चार हुरमत वाले महीने हैं। ये

الدِّيۡنُ الۡقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظۡلِمُوۡا فِيۡهِنَّ اَنۡفُسَكُمۡ
सीधा दीन है। इस लिए तुम उन में अपनी जानों पर ज़ुल्म न करो

وَ قَاتِلُوا الۡمُشۡرِكِيۡنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوۡنَكُمۡ
और तमाम मुशरिकीन से क़िताल करो जैसा के वो तुम सब से क़िताल

كَآفَّةً ؕ وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٣٦﴾
करते हैं। और तुम जान लो के अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है।

اِنَّمَا النَّسِىۡٓءُ زِيَادَةٌ فِى الۡكُفۡرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
महीनों की तक़दीम व ताखीर ये कुफ्र में ज़्यादती है, उस के ज़रिए गुमराह किया जाता है उन लोगों को जो काफिर हैं

يُحِلُّوۡنَهٗ عَامًا وَّ يُحَرِّمُوۡنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوۡا عِدَّةَ
के उसे एक साल हलाल महीना बनाते हैं और अगले साल उसे हराम महीना बनाते हैं ताके वो उस तादाद के मुवाफिक़

مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوۡا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمۡ سُوۡٓءُ
बना दें जिसे अल्लाह ने हुरमत वाला बनाया के फिर वो हलाल कर लें उसे जिस को अल्लाह ने हुरमत वाला बनाया। उन के लिए उन की

اَعۡمَالِهِمۡ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٣٧﴾ ع
बदअमली मुज़य्यन की गई। और अल्लाह काफिर क़ौम को हिदायत नहीं देते।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَا لَكُمۡ اِذَا قِيۡلَ لَكُمُ
ऐ ईमान वालो! तुम्हें क्या हुवा जब तुम से कहा जाता है के

انۡفِرُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اثَّاقَلۡتُمۡ اِلَى الۡاَرۡضِ ؕ
तुम निकलो अल्लाह के रास्ते में तो तुम ज़मीन को लगे जाते हो।

اَرَضِيۡتُمۡ بِالۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا مِنَ الۡاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ
क्या तुम आखिरत के मुक़ाबले में दुन्यवी ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए? जब के दुन्यवी ज़िन्दगी

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّا تَنْفِرُوْا
का फाइदा उठाना आखिरत के मुक़ाबले में नहीं है मगर थोड़ा। अगर तुम (अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए) नहीं निकलोगे
يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ
तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा और तुम्हारे अलावा दूसरी क़ौम को बदले में ले आएगा
وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾
और तुम अल्लाह को ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकोगे। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाले हैं।
اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ
अगर तुम आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नुसरत नहीं करोगे तो यक़ीनन अल्लाह आप की नुसरत कर चुका है जब आप को काफिरों ने
كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ
वतन से निकाला इस हाल में के आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दो में से दूसरे थे, जब के वो दोनों ग़ार में थे
لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ
जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने साथी से फरमा रहे थे के ग़म न करो, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह
سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَ اَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا
ने अपना सकीना उन पर उतारा और उन की मदद की ऐसे लश्करों के ज़रिए जिन को तुम ने देखा नहीं
وَ جَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ
और अल्लाह ने काफिरों के कलिमे को नीचे वाला बना दिया। और
اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٠﴾ اِنْفِرُوْا
अल्लाह का कलिमा ही बुलन्द है। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। निकलो
خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّ جَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
हलके होने की हालत में और बोझल होने की हालत में और तुम जिहाद करो मालों और जानों के ज़रिए
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
अल्लाह के रास्ते में। ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम
تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّ سَفَرًا قَاصِدًا
जानते हो। अगर क़रीब ही माल हो और दरमियाना सफर हो
لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ
तो ज़रूर वो आप के पीछे हो लेते, लेकिन उन्हें सफर मशक़्क़त भरा, दूर मालूम हुवा।

وَ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ج

और अब वो (मुनाफ़िक़ीन) अल्लाह की क़स्में खाएंगे के अगर हमें इस्तिताअत होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते।

يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ج وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾

वो अपने आप को हलाक कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है के यक़ीनन वो झूठे हैं।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ج لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ

अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मुआफ कर दिया। आप ने उन मुनाफ़िक़ीन को इजाज़त क्यूं दी यहां तक

لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ تَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾

के आप के सामने अलग हो जाते वो जो सच्चे हैं और आप झूठों को जान लेते।

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

आप से इजाज़त नहीं मांगते वो लोग जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और अखिरी दिन पर

اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

के वो जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से। और अल्लाह मुत्तक़ियों को

بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

खूब जानते हैं। आप से तो वही लोग इजाज़त तलब करते हैं जो ईमान नहीं रखते

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ

अल्लाह पर और आखिरी दिन पर और उन के दिल शक करते हैं, फिर वो

فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ

अपने शक में हैरान हैं। और अगर वो निकलने का इरादा करते

لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّ لٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ

तो ज़रूर उस के लिए तय्यारी भी करते लेकिन अल्लाह ने नापसन्द फरमाया उन का उठना,

فَثَبَّطَهُمْ وَ قِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

इस लिए उन को पड़ा रेहने दिया और कहा गया के तुम बैठे रहो बैठे रेहने वालों के साथ।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَا اَوْضَعُوْا

अगर वो तुम में शामिल हो कर निकलते भी तो वो तुम्हारा नुक़सान ही ज़्यादा करते और अलबत्ता तेज़ दौड़ते

خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ج وَ فِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ

फिरते तुम्हारे दरमियान फितने की गर्ज़ से। और तुम में उन के लिए कुछ कान लगाने वाले

لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٤٧ لَقَدِ ابْتَغَوُا

(जासूस) हैं। और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं। यक़ीनन उन्हों ने इस से पेहले भी

الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَ قَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ

फितना बरपा करना चाहा और आप के सामने उमूर को उलट पलट कर के पेश किया यहां तक के हक़्

الْحَقُّ وَ ظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝٤٨ وَمِنْهُمْ

आ गया और अल्लाह का अम्र वाज़ेह हो गया इस हाल में के वो नापसन्द कर रहे थे। और उन में से वो भी हैं

مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ

जो केह रहे थे के आप मुझे इजाज़त दीजिए और मुझे फितने में न डालिए। सुनो! फितने में तो वो

سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝٤٩

गिर चुके हैं। और यक़ीनन जहन्नम काफिरों को घेरे हुए है।

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ

अगर आप को भलाई पहोंचे तो उन्हें बुरी लगती है। और अगर आप को मुसीबत पहोंचे

يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَ يَتَوَلَّوْا

तो केहते हैं के हम ने इस से पेहले हमारे मुआमले में एहतेयात को ले लिया था और वो लौटते हैं

وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ۝٥٠ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ

इस हाल में के वो खुश होते हैं। आप फरमा दीजिए के हरगिज़ हमें नहीं पहोंचेगा मगर वही जो अल्लाह ने हमारे

اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

लिए लिख दिया है। वही हमारा मौला है। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल

الْمُؤْمِنُوْنَ ۝٥١ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى

करना चाहिए। आप फरमा दीजिए के तुम हमारे बारे में मुन्तज़िर नहीं हो मगर दो भलाइयों में

الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ

से एक के। और हम भी तुम्हारे लिए मुन्तज़िर हैं इस के के अल्लाह

اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْٓا

तुम्हें अपनी तरफ से या हमारे हाथ से अज़ाब पहोंचाए। तो तुम मुन्तज़िर रहो,

اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ۝٥٢ قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا

यक़ीनन हम तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। आप फरमा दीजिए के तुम खुशी से खर्च करो

اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا

या ज़बर्दस्ती, हरगिज़ तुम्हारी तरफ से क़बूल नहीं किया जाएगा। इस लिए के तुम नाफरमान

فٰسِقِيْنَ ۝٥٣ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ

लोग हो। और उन को मानेअ नहीं हुवा इस से के उन की तरफ से उन के सदक़ात क़बूल किए जाएं

اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَ بِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ

मगर ये के उन्हों ने कुफ्र किया अल्लाह और उस के रसूल के साथ और वो नमाज़ में नहीं

الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ

आते मगर इस हाल में के वो सुस्त होते हैं और वो खर्च नहीं करते मगर इस हाल में के वो

كٰرِهُوْنَ ۝٥٤ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ

नापसन्द करते हैं। इस लिए आप को उन के माल और उन की औलाद अच्छी न लगे।

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

अल्लाह तो सिर्फ ये चाहता है के उन्हें इस के ज़रिए अज़ाब दे दुन्यवी ज़िन्दगी में

وَ تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٥٥ وَيَحْلِفُوْنَ

और उन की जान निकले इस हाल में के वो काफिर हों। और वो अल्लाह की

بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ

क़सम खाते हैं के यक़ीनन वो तुम में से हैं, हालांके वो तुम में से नहीं हैं, लेकिन वो

قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝٥٦ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ

ऐसी क़ौम है जो डरती है। अगर वो पाएं कोई पनाह लेने की जगह या कोई ग़ार

اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝٥٧ وَ مِنْهُمْ

या कोई घुसने की जगह तो वो ज़रूर उस की तरफ भागेंगे इस हाल में के वो सरों को ऊँचा किए हुए होंगे। और उन

مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا

में से कुछ लोग वो हैं जो आप को सदक़ात के बारे में ताना देते हैं। फिर अगर उन्हें सदक़ात में से कुछ दिया

رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝٥٨

जाए तो राज़ी हो जाते हैं और अगर उन्हें सदक़ात में से कुछ न दिया जाए तो नाराज़ हो जाते हैं।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ ۙ

और अगर वो राज़ी रेहते उस पर जो अल्लाह और उस का रसूल उन को देते हैं

وَ قَالُوۡا حَسۡبُنَا اللّٰهُ سَيُؤۡتِيۡنَا اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ

और वो केहते के अल्लाह हमें काफी है, अल्लाह हमें अपने फ़ज़्ल से अनक़रीब देगा

وَرَسُوۡلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوۡنَ ۝٥٩ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ

और उस का रसूल भी देगा। यक़ीनन हम तो अल्लाह की तरफ रग़बत करने वाले हैं (तो अच्छा होता)। सदकात तो

لِلۡفُقَرَآءِ وَالۡمَسٰكِيۡنِ وَالۡعٰمِلِيۡنَ عَلَيۡهَا

सिर्फ फुक़रा और मसाकीन और सदक़ात पर काम करने वालों

وَالۡمُؤَلَّفَةِ قُلُوۡبُهُمۡ وَفِى الرِّقَابِ وَالۡغٰرِمِيۡنَ

और जिन की तालीफे क़ल्ब मक़सूद हो उन का हक़ है और सदक़ात गुलामों की गर्दन आज़ाद कराने में और जो मक़रूज़

وَفِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَابۡنِ السَّبِيۡلِ ؕ فَرِيۡضَةً

हों उन में और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफिरों के लिए हैं। अल्लाह की तरफ से फरीज़े के तौर पर।

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ۝٦٠ وَ مِنۡهُمُ الَّذِيۡنَ

और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और उन लोगों में से वो भी हैं जो नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

يُؤۡذُوۡنَ النَّبِىَّ وَ يَقُوۡلُوۡنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلۡ اُذُنُ

को ईज़ा पहोंचाते हैं और केहते हैं के ये तो कान हैं। आप फरमा दीजिए के तुम्हारे भले के लिए कान हैं जो

خَيۡرٍ لَّكُمۡ يُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَ يُؤۡمِنُ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ

ईमान रखते हैं अल्लाह पर और तसदीक़ करते हैं ईमान वालों की

وَرَحۡمَةٌ لِّلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡكُمۡ ؕ وَالَّذِيۡنَ

और रहमत हैं तुम में से मोमिनीन के लिए, और जो

يُؤۡذُوۡنَ رَسُوۡلَ اللّٰهِ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝٦١

अल्लाह के रसूल को ईज़ा पहोंचाएंगे उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

يَحۡلِفُوۡنَ بِاللّٰهِ لَكُمۡ لِيُرۡضُوۡكُمۡ ۚ وَاللّٰهُ وَ رَسُوۡلُهٗۤ

वो अल्लाह की क़स्में खाते हैं तुम्हारे सामने ताके तुम्हें राज़ी कर दें। हालांके अल्लाह और उस का रसूल

اَحَقُّ اَنۡ يُّرۡضُوۡهُ اِنۡ كَانُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ۝٦٢

इस के ज़्यादा हक़दार हैं के वो उन को राज़ी करें अगर वो ईमान वालें हैं।

اَلَمۡ يَعۡلَمُوۡۤا اَنَّهٗ مَنۡ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَاَنَّ

क्या उन्हें मालूम नहीं के जो भी अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफत करेगा तो यक़ीनन

لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ

उस के लिए जहन्नम की आग है जिस में वो हमेशा रहेगा। ये भारी

الْعَظِيْمُ ۝٦٣ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ

रूस्वाई है। मुनाफिक़ इस से डरते हैं के उन पर कोई सूरत उतारी

سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ

जाए जो खबर देती हो उन को उन चीज़ों की जो उन के दिलों में है। आप फरमा दीजिए के तुम मज़ाक़ उड़ाते रहो।

اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ۝٦٤ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

यक़ीनन अल्लाह उसे ज़ाहिर करेगा जिस से तुम डरते हो। और अगर आप उन से सवाल करें

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَ نَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ

तो ज़रूर कहेंगे के हम तो सिर्फ दिल्लगी और खेल कर रहे थे। आप फरमा दीजिए के क्या अल्लाह के साथ

وَاٰيٰتِهٖ وَ رَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦٥

और उस की आयतों और उस के रसूल के साथ तुम मज़ाक़ करते हो?

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ نَّعْفُ

तुम उज़्र पेश मत करो, यक़ीनन तुम काफिर हो गए तुम्हारे ईमान लाने के बाद। अगर हम तुम में से

عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ

एक जमाअत को मुआफ करेंगे तो एक जमाअत को अज़ाब देंगे इस बिना पर

كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝٦٦ اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ

कि वो मुजरिम थे। मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें उन में से

مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَ يَنْهَوْنَ

एक दूसरे से हैं। वो बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से

عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَ يَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ

रोकते हैं और अपने हाथों को बन्द रखते हैं। उन्हों ने भुला दिया अल्लाह को,

فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٦٧ وَعَدَ

फिर अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। यक़ीनन मुनाफिक़ वही नाफरमान हैं। अल्लाह ने

اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ

वादा किया है मुनाफिक़ मर्दों और औरतों और काफिरों से जहन्नम की

جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ هِىَ حَسۡبُهُمۡ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ

आग का जिस में वो हमेशा रहेंगे। ये उन को काफी है। और अल्लाह ने उन पर लानत की है।

وَلَهُمۡ عَذَابٌ مُّقِيۡمٌ ۙ ﴿٦٨﴾ كَالَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ

और उन के लिए दाइमी अज़ाब है। तुम्हारा हाल उन के हाल की तरह है जो तुम से पेहले थे

كَانُوۡۤا اَشَدَّ مِنۡكُمۡ قُوَّةً وَّاَكۡثَرَ اَمۡوَالًا وَّ اَوۡلَادًا ؕ

जो तुम से ज़्यादा कुव्वत वाले थे और तुम से ज़्यादा माल और औलाद वाले थे।

فَاسۡتَمۡتَعُوۡا بِخَلَاقِهِمۡ فَاسۡتَمۡتَعۡتُمۡ بِخَلَاقِكُمۡ

फिर उन्हों ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया, फिर तुम ने भी फाइदा उठा लिया तुम्हारे हिस्से से

كَمَا اسۡتَمۡتَعَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ بِخَلَاقِهِمۡ

जैसा के उन लोगों ने अपने हिस्से से फाइदा उठाया जो तुम से पेहले थे।

وَ خُضۡتُمۡ كَالَّذِىۡ خَاضُوۡا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتۡ

और तुम मज़ाक़ उड़ाने में लगे रहे जैसा के वो मज़ाक़ उड़ाते थे। उन के आमाल

اَعۡمَالُهُمۡ فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

हब्त हो गए दुन्या और आखिरत में। और यही लोग खसारा

الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمۡ يَاۡتِهِمۡ نَبَاُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ

उठाने वाले हैं। क्या उन के पास उन लोगों की खबर नहीं आई जो उन से पेहले थे

قَوۡمِ نُوۡحٍ وَّعَادٍ وَّ ثَمُوۡدَ ۙ وَ قَوۡمِ اِبۡرٰهِيۡمَ

क़ौमे नूह और क़ौमे आद और क़ौम समूद और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की क़ौम

وَاَصۡحٰبِ مَدۡيَنَ وَالۡمُؤۡتَفِكٰتِ ؕ اَتَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ

और मदयन वाले और उलट दी जाने वाली बस्तियों की। जिन के पास उन के पैग़म्बर

بِالۡبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظۡلِمَهُمۡ وَلٰـكِنۡ كَانُوۡۤا

रोशन मोअजिज़ात ले कर आए। फिर अल्लाह ऐसा नहीं था के उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन वो

اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿٧٠﴾ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتُ

खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें

بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ ۘ يَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ

उन में से एक दूसरे के दोस्त हैं। वो नेकी का हुक्म देते हैं

وقف لازم

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं

وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ يُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

और ज़कात देते हैं और अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करते हैं।

اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

उन लोगों पर अल्लाह जल्द ही रहम करेगा। यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ

अल्लाह ने वादा किया है ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों से जन्नतों का

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जिन में वो हमेशा रहेंगे

وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ

और (उस ने वादा किया है) उम्दा रेहने की जगहों का जन्नाते अद्न में। और अल्लाह की तरफ से

مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾ ع

खुशनूदी सब से बड़ी नेअमत है। ये भारी कामयाबी है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप जिहाद कीजिए काफिरों से और मुनाफिक़ीन से

وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾

और उन के बारे में सख्ती बरतिए। और उन का ठिकाना जहन्नम है। और वो बुरी जगह है।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا

वो अल्लाह की कस्में खाते हैं के ये बात उन्हों ने नहीं कही। यक़ीनन उन्हों ने

كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَ هَمُّوْا

कुफ्र का कलिमा कहा और वो उन के इस्लाम के बाद काफिर हो गए और उन्हों ने इरादा किया ऐसी चीज़ का जिस को वो

بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰهُمُ

हासिल न कर सके। और उन्हें बुरी नहीं लगी मगर ये बात के अल्लाह और उस के रसूल

اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ

ने उन्हें ग़नी कर दिया अपने फज़्ल से। फिर अगर वो तौबा करेंगे तो ये

خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ

उन के लिए बेहतर होगा। और अगर वो ऐराज़ करेंगे तो अल्लाह उन्हें अज़ाब देंगे

عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ

दर्दनाक अज़ाब दुन्या और आखिरत में। और उन का

فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ

ज़मीन में कोई हिमायती और मददगार न होगा। और उन में से

مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهٖ

कुछ लोग वो हैं जिन्हों ने अल्लाह से अहद किया था के अगर वो हमें अपने फ़ज़्ल से देगा

لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

तो हम ज़रूर सदक़ा करेंगे और हम सुलहा में से बन जाएंगे।

فَلَمَّآ اٰتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَ تَوَلَّوْا وَّ هُمْ

फिर जब अल्लाह ने उन को अपने फ़ज़्ल से दिया तो उन्हों ने उस में बुख्ल किया और वो लौटते हैं ऐराज़

مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ

करते हुए। फिर अल्लाह ने सज़ा के तौर पर उन के दिलों में निफाक़ डाल दिया

اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ

उस दिन तक जिस दिन वो अल्लाह से मिलेंगे इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह से

مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا

वादाखिलाफी की और इस वजह से के वो झूठ बोलते हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَ نَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ

के अल्लाह जानता है उन के दिल की बात को और उन की सरगोशी भी और ये के अल्लाह

عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ

तमाम पोशीदा चीज़ों को खूब जानने वाला है। वो लोग जो ताना देते है सदक़ात के

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ

बारे में ईमान वालों में से सदक़ा करने वालों को और उन लोगों को जो नहीं पाते

اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ۗ سَخِرَ اللّٰهُ

मगर अपनी ताक़त भर, फिर वो उन से मज़ाक़ करते हैं। अल्लाह भी उन से मज़ाक़ करता है।

مِنۡهُمۡ ؕ وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝٧٩ اِسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ

और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। आप उन के लिए

اَوۡ لَا تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ ؕ اِنۡ تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ سَبۡعِيۡنَ

इस्तिग़फार करें या न करें। अगर आप उन के लिए सत्तर मरतबा भी इस्तिग़फार

مَرَّةً فَلَنۡ يَّغۡفِرَ اللّٰهُ لَهُمۡ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ

करेंगे, फिर भी हरगिज़ अल्लाह उन की मग़फिरत नहीं करेगा। ये इस वजह से के उन्हों ने

كَفَرُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ

कुफ्र किया अल्लाह के साथ और उस के रसूल के साथ। और अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत

الۡفٰسِقِيۡنَ ۝٨٠ فَرِحَ الۡمُخَلَّفُوۡنَ بِمَقۡعَدِهِمۡ خِلٰفَ

नहीं देते। जिहाद से पीछे रेहने वाले खुश हो गए अपने बैठे रेहने पर

رَسُوۡلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوۡۤا اَنۡ يُّجَاهِدُوۡا بِاَمۡوَالِهِمۡ

अल्लाह के रसूल के पीछे और उन्हों ने नापसन्द किया के वो जिहाद करें अपने मालों

وَاَنۡفُسِهِمۡ فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ وَقَالُوۡا لَا تَنۡفِرُوۡا فِى الۡحَرِّ ؕ

और जानों के ज़रिए अल्लाह के रास्ते में और उन्हों ने कहा तुम भी इस गर्मी में मत निकलो।

قُلۡ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوۡ كَانُوۡا يَفۡقَهُوۡنَ ۝٨١

आप फरमा दीजिए के जहन्नम की आग इस से भी ज़्यादा गर्म है। काश के वो समझते।

فَلۡيَضۡحَكُوۡا قَلِيۡلًا وَّلۡيَبۡكُوۡا كَثِيۡرًا ۚ جَزَآءً ۢ

फिर उन्हें चाहिए के वो कम हंसें और ज़्यादा रोएं। उन आमाल की सज़ा

بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ۝٨٢ فَاِنۡ رَّجَعَكَ اللّٰهُ

के तौर पर जो वो करते थे। फिर अगर आप को अल्लाह लौटाए

اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنۡهُمۡ فَاسۡتَاۡذَنُوۡكَ لِلۡخُرُوۡجِ فَقُلۡ

उन में से एक जमाअत की तरफ, फिर वो आप से इजाज़त तलब करें निकलने की तो आप केह दीजिए

لَّنۡ تَخۡرُجُوۡا مَعِىَ اَبَدًا وَّلَنۡ تُقَاتِلُوۡا مَعِىَ عَدُوًّا ؕ

के तुम मेरे साथ हरगिज़ कभी भी मत निकलो और हरगिज़ क़िताल मत करो मेरे साथ रेह कर कभी भी किसी दुशमन से।

اِنَّكُمۡ رَضِيۡتُمۡ بِالۡقُعُوۡدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقۡعُدُوۡا مَعَ

इस लिए के तुम बैठे रेहने पर राज़ी हो गए पेहली मरतबा में, तो अब तुम बैठे रहो

الۡخٰلِفِيۡنَ۝٨٣ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنۡهُمۡ مَّاتَ

पीछे रेहने वालों के साथ। और उन में से किसी ऐक की जो मर जाए न कभी नमाज़े जनाज़ा

اَبَدًا وَّلَا تَقُمۡ عَلٰى قَبۡرِهٖ ؕ اِنَّهُمۡ كَفَرُوۡا بِاللّٰهِ

पढ़िए, न उस की क़ब्र पर खड़े रहिए। इस लिए के उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ

وَرَسُوۡلِهٖ وَمَاتُوۡا وَهُمۡ فٰسِقُوۡنَ۝٨٤ وَلَا تُعۡجِبۡكَ

कुफ्र किया और वो मरे इस हाल में के वो फासिक़ थे। और उन के माल और उन की औलाद

اَمۡوَالُهُمۡ وَاَوۡلَادُهُمۡ ؕ اِنَّمَا يُرِيۡدُ اللّٰهُ اَنۡ يُّعَذِّبَهُمۡ

आप को अच्छे न लगें। अल्लाह तो सिर्फ ये चाहते हैं के उन्हें

بِهَا فِى الدُّنۡيَا وَتَزۡهَقَ اَنۡفُسُهُمۡ وَهُمۡ كٰفِرُوۡنَ۝٨٥

अज़ाब दें उस के ज़रिए दुन्या में और उन की जान निकले इस हाल में के वो काफिर हों।

وَاِذَاۤ اُنۡزِلَتۡ سُوۡرَةٌ اَنۡ اٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوۡا

और जब कोई सूरत उतारी जाती है के ईमान लाओ अल्लाह पर और तुम जिहाद करो

مَعَ رَسُوۡلِهِ اسۡتَاۡذَنَكَ اُولُوا الطَّوۡلِ مِنۡهُمۡ وَ قَالُوۡا

अल्लाह के रसूल के साथ मिल कर तो उन में से इस्तिताअत वाले आप से इजाज़त तलब करते हैं और केहते हैं

ذَرۡنَا نَكُنۡ مَّعَ الۡقٰعِدِيۡنَ۝٨٦ رَضُوۡا بِاَنۡ يَّكُوۡنُوۡا

के आप हमें छोड़ दीजिए के हम बैठे रेहने वालों के साथ रहें। वो पसन्द करते हैं इस को के वो

مَعَ الۡخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ فَهُمۡ لَا يَفۡقَهُوۡنَ۝٨٧

पीछे रेहने वालियों के साथ हों, और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई, फिर वो समझते नहीं।

لٰكِنِ الرَّسُوۡلُ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَعَهٗ جٰهَدُوۡا

लेकिन रसूल और वो लोग जो रसूल के साथ ईमान लाए हैं, उन्हों ने जिहाद किया

بِاَمۡوَالِهِمۡ وَاَنۡفُسِهِمۡ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الۡخَيۡرٰتُ ۚ

अपने मालों और जानों के ज़रिए। उन ही के लिए भलाइयाँ हैं।

وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ۝٨٨ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمۡ جَنّٰتٍ

और यही फलाह पाने वाले हैं। अल्लाह ने उन के लिए जन्नतें तय्यार कर रखी हैं

تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ

जिन के नीचे से नेहरें बेहती हैं, जिन में वो हमेशा रहेंगे।

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ وَ جَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ

ये भारी कामयाबी है। और अअराब में से उज़्र पेश करने वाले

مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَ قَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا

आए ताके उन्हें इजाज़त दी जाए और बैठे रेह गए वो जिन्हों ने अल्लाह

اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ

और उस के रसूल से झूठ बोला। अनक़रीब उन में से काफिरों को दर्दनाक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى

अज़ाब पहोंचेगा। ज़ुअफा पर और बीमारों पर और उन पर कोई हर्ज नहीं

وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ

जो नहीं पाते वो माल जिसे वो खर्च करें

اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ

जब के वो अल्लाह और उस के रसूल के खैरख्वाह हों। नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम

مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ

नहीं है। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और न उन पर कोई हर्ज है के

اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ

जब वो आप के पास आते हैं के आप उन्हें सवारी दें तो आप फरमाते हैं के मैं नहीं पाता

مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ص تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ

वो सवारी जिस पर मैं तुम्हें सवार कराऊँ। तो वो वापस लौटते हैं इस हाल में के उन की आँखों से आंसू

مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا

बेह रहे होते हैं ग़म के मारे इस वजह से के वो नहीं पाते वो माल जिसे वो खर्च करें। इल्ज़ाम

السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ

तो सिर्फ उन लोगों पर है जो आप से इजाज़त तलब करते हैं इस हाल में के

اَغْنِيَآءُ ج رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ

वो मालदार हैं। वो पसन्द करते हैं के वो पीछे रेहने वालियों के साथ रहें।

وَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है, फिर उन्हें मालूम भी नहीं।

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ

वो तुम्हारी तरफ उज़्र पेश करेंगे जब उन की तरफ लौट कर जाओगे। आप फरमा दीजिए के तुम

لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ

उज़्र मत पेश करो, हम तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे, इस लिए के अल्लाह ने हमें तुम्हारी पोशीदा बातों की खबर दे दी है।

وَ سَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ

अनक़रीब अल्लाह और उस का रसूल तुम्हारा अमल देखेगा, फिर तुम लौटाए जाओगे

اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले अल्लाह की तरफ, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जो तुम

تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾ سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ

करते थे। अनक़रीब वो अल्लाह की कस्में खाएंगे तुम्हारे सामने जब तुम उन की तरफ पलट कर

اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ

जाओगे ताके तुम उन से ऐराज़ करो। इस लिए तुम उन से ऐराज़ करो। इस लिए के वो

رِجْسٌ ز وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۹۵﴾

सरापा गन्दगी हैं। और उन का ठिकाना उन के कर्तूत की सज़ा में जहन्नम है।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ

वो तुम्हारे सामने कस्में खाते हैं ताके तुम उन से राज़ी हो जाओ। फिर अगर तुम उन से राज़ी हो भी जाओगे

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۹۶﴾ اَلْاَعْرَابُ

तब भी यक़ीनन अल्लाह नाफरमान क़ौम से राज़ी नहीं होंगे। अअराब

اَشَدُّ كُفْرًا وَّ نِفَاقًا وَّ اَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ

ज़्यादा सख्त कुफ्र वाले और ज़्यादा सख्त निफाक़ वाले हैं और इस के ज़्यादा लाइक़ हैं के वो न समझें उस की हुदूद

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۹۷﴾

को जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी हैं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ يَتَرَبَّصُ

और अअराब में से कुछ लोग वो हैं के जिसे वो खर्च करते हैं उसे तावान क़रार देते हैं और मुन्तज़िर रेहते

بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ

हैं तुम पर ज़माने की गर्दिशों के। बुरा वक़्त उन्ही पर पड़ने वाला है। और अल्लाह सुनने वाले,

عَلِيۡمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الۡاَعۡرَابِ مَنۡ يُّؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ

इल्म वाले हैं। और अअराब में से कुछ वो हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आखिरी दिन

الۡاٰخِرِ وَ يَتَّخِذُ مَا يُنۡفِقُ قُرُبٰتٍ عِنۡدَ اللّٰهِ وَ صَلَوٰتِ

पर और उन चीज़ों को जिसे वो खर्च करते हैं अल्लाह के यहाँ कुर्ब का ज़रिया समझते हैं और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

الرَّسُوۡلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرۡبَةٌ لَّهُمۡ ؕ سَيُدۡخِلُهُمُ اللّٰهُ

की दुआ का ज़रिया समझते हैं। सुनो! यक़ीनन ये उन के लिए कुर्बत है। अनक़रीब अल्लाह उन्हें अपनी

فِىۡ رَحۡمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٩٩﴾ؑ وَالسّٰبِقُوۡنَ

रहमत में दाखिल करेंगे। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और पेहेल कर के

الۡاَوَّلُوۡنَ مِنَ الۡمُهٰجِرِيۡنَ وَالۡاَنۡصَارِ وَالَّذِيۡنَ

सबक़त करने वाले मुहाजिरीन और अन्सार में से और उन में से

اتَّبَعُوۡهُمۡ بِاِحۡسَانٍ ۙ رَّضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُوۡا

जिन्हों ने उन का इत्तिबा किया नेकी में। अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से राज़ी

عَنۡهُ وَ اَعَدَّ لَهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ تَحۡتَهَا الۡاَنۡهٰرُ

हुए और अल्लाह ने उन के लिए जन्नतें तय्यार कर रखी हैं जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنۡ

जिन में वो हमेशा रहेंगे। ये भारी कामयाबी है। और उन अअराब में से भी

حَوۡلَكُمۡ مِّنَ الۡاَعۡرَابِ مُنٰفِقُوۡنَ ۛؕ وَمِنۡ اَهۡلِ الۡمَدِيۡنَةِ ۛؔ

जो तुम्हारे इर्द गिर्द हैं उन में से भी मुनाफ़िक़ हैं और एहले मदीना में से।

مَرَدُوۡا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعۡلَمُهُمۡ ؕ نَحۡنُ نَعۡلَمُهُمۡ ؕ

कुछ निफाक़ में बहोत आगे निकल गए हैं, जिन को आप नहीं जानते। हम उन्हें जानते हैं।

سَنُعَذِّبُهُمۡ مَّرَّتَيۡنِ ثُمَّ يُرَدُّوۡنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيۡمٍ ﴿١٠١﴾ۚ

अनक़रीब हम उन्हें दुगनी सज़ा देंगे, फिर वो भारी अज़ाब की तरफ लौटाए जाएंगे।

وَاٰخَرُوۡنَ اعۡتَرَفُوۡا بِذُنُوۡبِهِمۡ خَلَطُوۡا عَمَلًا صَالِحًا

और दूसरे वो हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों का ऐतेराफ किया जिन्हों ने आमाले सालिहा और दूसरे बुरे

وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنۡ يَّتُوۡبَ عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

कामों को खलत मलत कर दिया। उम्मीद है के अल्लाह उन की तौबा क़बूल करेंगे। यक़ीनन अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ

बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। आप उन के माल में से सदक़ा लीजिए जो उन्हें पाक करे

وَ تُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ

और उन का तज़किया करे और आप उन के लिए दुआए रहमत कीजिए। यक़ीनन आप की दुआ उन के लिए सुकून का

لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

बाइस है। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। क्या वो जानते नहीं के अल्लाह

هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ

आप अपने बन्दों की तरफ से तौबा क़बूल करते हैं और सदक़ात क़बूल फरमाते हैं

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى

और ये के अल्लाह ही तौबा क़बूल करने वाले, निहायत रहम वाले हैं। और आप केह दीजिए के तुम अमल करते रहो,

اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَ سَتُرَدُّوْنَ

अनक़रीब तुम्हारा अमल अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले देखेंगे। और अनक़रीब तुम लौटाए जाओगे

اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले की तरफ, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ

जो तुम करते थे। और दूसरे वो हैं जिन का मुआमला अल्लाह का हुक्म आने तक मुल्तवी है,

اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ

या अल्लाह उन को अज़ाब दे या उन की तौबा क़बूल करे। और अल्लाह इल्म वाले,

حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا

हिक्मत वाले हैं। और वो लोग जिन्हों ने मस्जिद बनाई इस्लाम को नुक़सान पहोंचाने के लिए और कुफ्र के लिए

وَّتَفْرِيْقًاۢ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ

और ईमान वालों के दरमियान तफरक़ा डालने के लिए और उस शख्स के घात लगाने में जो अल्लाह और उस के

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ

रसूल के साथ पेहले से जंग कर रहा है। और ये लोग कस्में खा कर केहते हैं के हम ने तो सिर्फ

اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾ لَا تَقُمْ

भलाई का इरादा किया है। हालांके अल्लाह गवाही देते हैं के यक़ीनन ये झूठे हैं। आप उस मस्जिद में

فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ

कभी भी खड़े न हों। अलबत्ता वो मस्जिद जिस की बुन्याद तक़्वा पर रखी गई है पेहले

يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ

दिन से वो इस की ज़्यादा मुस्तहिक़ है के आप उस में खड़े हों। (इस लिए के) उस में ऐसे मर्द हैं

اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝١٠٨ اَفَمَنْ اَسَّسَ

जो पाक रेहना पसन्द करते हैं। और अल्लाह भी पाक रेहने वालों को पसन्द करते हैं। क्या फिर वो शख्स जिस ने

بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ

मस्जिद की बुन्याद अल्लाह की खशीयत और उस की रिज़ा पर रखी है वो ज़्यादा बेहतर है या वो

اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ

जिस ने उस की बुन्याद गिरने वाली खाई के किनारे पर रखी हो जो उसे ले कर

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠٩

जहन्नम की आग में गिर जाए। और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا رِيْبَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ

उन की बनाई हुई तामीर बराबर उन के दिलों में शक (का कांटा) बनी रहेगी

اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١١٠ اِنَّ اللّٰهَ

यहां तक के उन के दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। यक़ीनन अल्लाह

اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ

ने ईमान वालों से खरीद लीं उन की जानें और उन के माल

بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ

इस के इवज़ के उन के लिए जन्नत है। वो अल्लाह के रास्ते में क़िताल करते हैं, फिर क़त्ल करते हैं

وَ يُقْتَلُوْنَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ

और क़त्ल होते हैं। ये अल्लाह के ज़िम्मे सच्चा वादा है तौरात और इन्जील

وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا

और कुरआन में। और कौन है अल्लाह से बढ़ कर अपने अहद को पूरा करने वाला? तो तुम खुश हो जाओ

بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

अपने उस सौदे पर जो तुम ने किया है। और ये भारी

الۡعَظِيۡمُ ﴿۱۱۱﴾ اَلتَّآئِبُوۡنَ الۡعٰبِدُوۡنَ الۡحٰمِدُوۡنَ

कामयाबी है। जो तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, हम्द करने वाले हैं,

السّآئِحُوۡنَ الرّٰكِعُوۡنَ السّٰجِدُوۡنَ الۡاٰمِرُوۡنَ

जिहाद करने वाले हैं, रूकूअ करने वाले हैं, सज्दा करने वाले हैं, अम्र

بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَالنَّاهُوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ وَالۡحٰفِظُوۡنَ

बिल मारूफ और नही अनिल मुन्कर करने वाले हैं और अल्लाह की हुदूद की

لِحُدُوۡدِ اللّٰهِ ؕ وَ بَشِّرِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۱۲﴾ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ

हिफाज़त करने वाले हैं। और ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। नबी के लिए

وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ يَّسۡتَغۡفِرُوۡا لِلۡمُشۡرِكِيۡنَ وَلَوۡ كَانُوۡۤا

और ईमान वालों के लिए मुनासिब नहीं हैं के वो इस्तिग़फार करें मुशरिकीन के लिए अगर्चे वो

اُولِىۡ قُرۡبٰى مِنۡۢ بَعۡدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُمۡ اَصۡحٰبُ

रिश्तेदार क्यूं न हों इस के बाद के उन के लिए वाज़ेह हो गया के वो दोज़खी

الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۱۳﴾ وَمَا كَانَ اسۡتِغۡفَارُ اِبۡرٰهِيۡمَ لِاَبِيۡهِ

हैं। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का इस्तिग़फार अपने अब्बा के लिए नहीं था मगर एक वादे की वजह

اِلَّا عَنۡ مَّوۡعِدَةٍ وَّعَدَهَاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗۤ اَنَّهٗ

से जो उन्हों ने उन से किया था। लेकिन जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सामने वाज़ेह हो गया के ये अल्लाह का दुश्मन है तो

عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنۡهُ ؕ اِنَّ اِبۡرٰهِيۡمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيۡمٌ ﴿۱۱۴﴾

उस से उन्हों ने बराअत कर ली। यक़ीनन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) बहोत ज़्यादा अल्लाह की तरफ रूजूअ होने वाले, हिल्म वाले थे।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوۡمًاۢ بَعۡدَ اِذۡ هَدٰٮهُمۡ

और अल्लाह ऐसा नहीं है के किसी क़ौम को गुमराह करे उन्हें हिदायत देने के बाद

حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمۡ مَّا يَتَّقُوۡنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۱۱۵﴾

जब तक उन पर वाज़ेह न कर दे के किन बातों से उन्हें बचना है। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ؕ

यक़ीनन अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीनों की सलतनत है। वो ज़िन्दा करता है और मौत देता है।

وَمَا لَـكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ﴿۱۱۶﴾ لَقَدۡ

और तुम्हारे लिए अल्लाह के अलावा कोई कारसाज़ और मददगार नहीं है। यक़ीनन

لَقَدۡ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالۡمُهٰجِرِيۡنَ وَالۡاَنۡصَارِ الَّذِيۡنَ
अल्लाह ने तवज्जुह फरमाई नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और मुहाजिरीन और अन्सार पर जिन्हों ने
اتَّبَعُوۡهُ فِىۡ سَاعَةِ الۡعُسۡرَةِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا كَادَ يَزِيۡغُ
आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का साथ दिया तंगी की घड़ी में इस के बाद के उन में से एक जमाअत
قُلُوۡبُ فَرِيۡقٍ مِّنۡهُمۡ ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ‌ؕ اِنَّهٗ بِهِمۡ رَءُوۡفٌ
के दिल मुतज़लज़िल होने लगे, फिर अल्लाह उन पर महरबान हुवा। यक़ीनन वो उन पर महरबान,
رَّحِيۡمٌ ۙ‏ ١١٧ وَّ عَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيۡنَ خُلِّفُوۡا ؕ
निहायत रहम वाला है। और (यक़ीनन तौबा क़बूल की) उन तीन सहाबा की जिन का मुआमला मुल्तवी छोड़ दिया गया।
حَتّٰٓى اِذَا ضَاقَتۡ عَلَيۡهِمُ الۡاَرۡضُ بِمَا رَحُبَتۡ وَضَاقَتۡ
यहां तक के जब उन पर ज़मीन तंग हो गई अपनी वुस्अत के बावजूद और उन पर
عَلَيۡهِمۡ اَنۡفُسُهُمۡ وَظَنُّوۡۤا اَنۡ لَّا مَلۡجَاَ مِنَ اللّٰهِ
उन की जानें तंग हो गईं और उन्हों ने समझा के अल्लाह से कोई छुपने की जगह नहीं
اِلَّاۤ اِلَيۡهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ لِيَتُوۡبُوۡا‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ
मगर उसी के पास। फिर अल्लाह ने उन की तौबा क़बूल की ताके वो तौबा करते रहें। यक़ीनन अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला
الرَّحِيۡمُ ١١٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوۡنُوۡا
निहायत रहम वाला है। ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चों
مَعَ الصّٰدِقِيۡنَ ١١٩ مَا كَانَ لِاَهۡلِ الۡمَدِيۡنَةِ وَمَنۡ
के साथ रहो। एहले मदीना के लिए और उन अअराब के लिए जो उन के
حَوۡلَهُمۡ مِّنَ الۡاَعۡرَابِ اَنۡ يَّتَخَلَّفُوۡا عَنۡ رَّسُوۡلِ اللّٰهِ
इर्द गिर्द हैं ये मुनासिब नहीं है के वो अल्लाह के रसूल से पीछे रहें
وَلَا يَرۡغَبُوۡا بِاَنۡفُسِهِمۡ عَنۡ نَّفۡسِهٖ‌ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ
और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़ाते आली को छोड़ कर के अपनी जानों से रग़बत रखें। ये इस वजह से के
لَا يُصِيۡبُهُمۡ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخۡمَصَةٌ فِىۡ سَبِيۡلِ
उन्हें लगती नहीं प्यास और थकावट और भूक अल्लाह के
اللّٰهِ وَلَا يَطَئُوۡنَ مَوۡطِئًا يَّغِيۡظُ الۡكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوۡنَ
रास्ते में और वो नहीं रौंदते किसी चलने की जगह को जो कुफ्फार को गुस्सा दिलाती हो और वो नहीं छीनते

مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ

दुश्मन से कोई चीज़ मगर उन के लिए उस के इवज़ अमले सालेह लिखा जाता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا يُنْفِقُوْنَ

यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं करते। और वो खर्च नहीं करते

نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا

कोई छोटा खर्च और न बड़ा खर्च और न किसी वादी को क़तअ करते हैं

اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾

मगर उन के लिए वो लिखा जाता है ताके अल्लाह उन्हें बदला दे उन अच्छे कामों का जो वो करते थे।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ

और ईमान वालों के लिए मुनासिब नहीं है के वो सारे के सारे निकल खड़े हों। फिर ऐसा क्यूं नहीं करते

مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ

के उन की हर बड़ी जमाअत में से एक गिरोह निकले ताके दीन की समझ हासिल करे

وَ لِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ

और ताके अपनी क़ौम को डराए जब उन की तरफ वापस लौटे, हो सकता है के वो

يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ

मुतनब्बेह हो जाएं। ऐ ईमान वालो! तुम क़िताल करो उन

يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا

कुफ्फार से जो तुम्हारे क़रीब हैं और चाहिए के वो तुम में शिद्दत को महसूस करें। और तुम जान लो

اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ

के अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है। और जब भी कोई सूरत उतारी जाती है तो उन में से कुछ लोग

مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ

ऐसे हैं जो केहते हैं के तुम में से किस के ईमान को इस सूरत ने ज़्यादा कर दिया? फिर अलबत्ता जो

اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

ईमान वाले हैं तो ये सूरत उन्हें ईमान में बढ़ाती है और वो उस से खुश होते हैं।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلَى

और अलबत्ता जिन के दिलों में मर्ज़ है, तो इस सूरत ने उन की गन्दगी के साथ गन्दगी

رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾ اَوَلَا يَرَوْنَ

और बढ़ा दी और वो मरते हैं इस हाल में के वो काफिर होते हैं। क्या वो देखते नहीं हैं

اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ

के उन्हें आज़माइश में डाला जाता है हर साल एक मरतबा या दो मरतबा, फिर भी

لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ

न वो तौबा करते हैं और न नसीहत पकड़ते हैं। और जब कोई सूरत उतारी जाती है

نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ

तो उन में से एक दूसरे की तरफ देखते हैं के क्या तुम्हें किसी ने देखा तो नहीं?

ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ

फिर वो सरक जाते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को फेर दिया इस वजह से के वो ऐसी क़ौम है

لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾ لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ

जो समझती नहीं। यक़ीनन तुम्हारे पास रसूल आए तुम ही में से जिन पर भारी है वो

عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ

चीज़ जो तुम्हें मशक़्क़त में डाले, वो तुम पर हरीस हैं, ईमान वालों के साथ बहोत ज़्यादा महरबान, निहायत

رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ

रहम वाले हैं। फिर अगर वो ऐराज़ करें तो आप फरमा दीजिए के मुझे अल्लाह काफी है। उस के सिवा कोई

اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

माबूद नहीं। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया और वो अर्शे अज़ीम का रब है।

اٰيَاتُهَا ١٠٩ (١٠) سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ (٥١) رُكُوْعَاتُهَا ١١

उस में १०९ आयतें हैं — सूरह यूनुस मक्का में नाज़िल हुई — और ११ रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اَكَانَ لِلنَّاسِ

अलिफ लाम रॉ। ये हिकमत वाली किताब की आयतें हैं। क्या लोगों के लिए ये बात

عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ

बाइसे तअज्जुब हुई के हम ने उन्ही में से एक शख़्स की तरफ वही की के लोगों को डराओ

وَ بَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ

और ईमान वालों को बशारत सुनाओ इस बात की के उन के लिए उन के रब के पास पूरा

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

मरतबा है। काफिरों ने कहा के यक़ीनन ये साफ जादूगर है।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

यक़ीनन तुम्हारा रब वो अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ

छे दिन में, फिर वो अर्श मर मुस्तवी हुवा, वही तमाम उमूर की तदबीर करता है।

مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ

कोई सिफारिश करने वाला नहीं मगर उस की इजाज़त के बाद। यही अल्लाह तुम्हारा रब है,

فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ

तो उसी की इबादत करो। क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? उसी की तरफ तुम सब को लौट कर जाना है।

وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ

ये अल्लाह का बरहक़ वादा है। यक़ीनन वही मखलूक़ को पेहली मरतबा पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा ताके

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ

वो इन्साफ से बदला दे उन लोगों को जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे। और

كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّ عَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا

काफिरों के लिए खौलता हुवा पानी पीने को मिलेगा और दर्दनाक अज़ाब होगा इस वजह से के वो

يَكْفُرُوْنَ ۝٤ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ

कुफ्र करते थे। वही अल्लाह है जिस ने सूरज को रोशन बनाया और चाँद को

نُوْرًا وَّ قَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ

नूरानी बनाया और उसी ने उस की मन्ज़िलों की मिक़दार मुतअय्यन की ताके तुम सालों की गिन्ती और हिसाब

وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ

मालूम करो। उस को अल्लाह ने नहीं बनाया मगर फाइदे के साथ। वो तमाम आयतों की

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥ اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ

तफसील करता है ऐसी क़ौम के लिए जो समझ रखती है। यक़ीनन रात और दिन के आने

وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ

जाने में और उन चीज़ों के पैदा करने में जिस को अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया अलबत्ता निशानियाँ

لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا

हैं ऐसी क़ौम के लिए जो डरती है। यक़ीनन वो लोग जो हमारे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और जिन्हों ने दुन्यवी

بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا

ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया है और उस पर मुतमइन हैं और जो हमारी आयतों से

غٰفِلُوْنَ ۝٧ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨

ग़ाफिल हैं। उन का ठिकाना दोज़ख है उन आमाल की वजह से जो वो कर रहे हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ

यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे उन को उन का रब उन के ईमान की वजह से

بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ

हिदायत देगा। उन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जन्नाते नईम

النَّعِيْمِ ۝٩ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ تَحِيَّتُهُمْ

में। उन की पुकार उन में होगी "سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ" (ऐ अल्लाह! तेरी ज़ात पाक है) और उन का तहीय्या

فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

उन में सलाम होगा। और उन की आखिरी दुआ उन में ये होगी के "الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ

الْعٰلَمِيْنَ"। और अगर अल्लाह इन्सानों के लिए बुराई (अज़ाब) में जल्दी करे, उन के भलाई में जल्दी

بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۭ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ

करने की तरह तो उन की अजल आ चुकी होती। इस लिए हम उन लोगों को जो हम से

لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١١ وَاِذَا مَسَّ

मिलने की उम्मीद नहीं रखते उन को उन की सरकशी में सरगरदाँ छोड़ रहे हैं। और जब इन्सान

الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ

को तकलीफ पहोंचती है तो वो हमें पुकारता है अपने पेहलू पर लेटे या बैठे हुए या खड़े हो कर।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى

फिर जब हम उस से उस की तकलीफ दूर कर देते हैं तो ऐसे आगे बढ़ जाता है जैसा के उस ने हमें पुकारा ही नहीं था किसी तकलीफ

ع

ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلۡمُسۡرِفِيۡنَ مَا كَانُوۡا يَعۡمَلُوۡنَ ۝١٢
की वजह से जो उसे पहोंची थी। इसी तरह इसराफ करने वालों के लिए मुज़य्यन किए गए वो आमाल जो वो कर रहे हैं।

وَلَقَدۡ اَهۡلَكۡنَا الۡقُرُوۡنَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ لَمَّا ظَلَمُوۡا ۙ
और यक़ीनन हम ने तुम से पेहली क़ौमों को हलाक किया जब उन्हों ने ज़ुल्म किया,

وَجَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوۡا لِيُؤۡمِنُوۡا ؕ
हालांके उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए थे लेकिन वो ईमान नहीं लाते थे।

كَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡقَوۡمَ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ۝١٣ ثُمَّ جَعَلۡنٰكُمۡ
इसी तरह हम मुजरिम क़ौम को सज़ा देंगे। फिर हम ने तुम्हें

خَلٰٓئِفَ فِى الۡاَرۡضِ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ لِنَنۡظُرَ كَيۡفَ
ज़मीन में उन के बाद जानशीन बनाया ताके हम देखें के तुम कैसे

تَعۡمَلُوۡنَ ۝١٤ وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ
अमल करते हो। और जब उन पर हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं तो वो लोग केहते हैं

الَّذِيۡنَ لَا يَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا ائۡتِ بِقُرۡاٰنٍ غَيۡرِ هٰذَآ
जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते के तुम उस के अलावा कुरआन ले आओ

اَوۡ بَدِّلۡهُ ؕ قُلۡ مَا يَكُوۡنُ لِىۡۤ اَنۡ اُبَدِّلَهٗ مِنۡ تِلۡقَآئِ
या उसे बदल दो। आप फरमा दीजिए के मेरी ये मजाल नहीं के मैं उसे बदल दूँ अपनी

نَفۡسِىۡ ۚ اِنۡ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوۡحٰٓى اِلَىَّ ۚ اِنِّىۡۤ اَخَافُ
तरफ से। मैं तो सिर्फ उस का इत्तिबा करता हूँ जो मेरी तरफ वही किया जा रहा है। यक़ीनन मैं डरता हूँ

اِنۡ عَصَيۡتُ رَبِّىۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ۝١٥ قُلۡ لَّوۡ شَآءَ
भारी दिन के अज़ाब से अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ। आप फरमा दीजिए के अगर

اللّٰهُ مَا تَلَوۡتُهٗ عَلَيۡكُمۡ وَلَاۤ اَدۡرٰىكُمۡ بِهٖ ۖ فَقَدۡ
अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर तिलावत न करता और मैं तुम्हें उस की खबर न देता। यक़ीनन

لَبِثۡتُ فِيۡكُمۡ عُمُرًا مِّنۡ قَبۡلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ۝١٦ فَمَنۡ
मैं तुम्हारे साथ इस से पेहले उम्र के कई साल रहा। क्या फिर तुम्हें अक़्ल नहीं है? फिर उस से

اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوۡ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ
ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या अल्लाह की आयतों को झुठलाए?

اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ يَعْبُدُوْنَ

यक़ीनन मुजरिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और ये अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ

इबादत करते हैं जो उन्हें न ज़रर पहोंचा सकती हैं, न नफा पहोंचा सकती हैं, और ये केहते हैं के

هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ

ये हमारे सिफारिशी हैं अल्लाह के यहाँ। आप फरमा दीजिए के क्या तुम अल्लाह को खबर देते हो

بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى

ऐसी चीज़ की जो अल्लाह नहीं जानता आसमानों में और ज़मीन में। अल्लाह पाक है और बरतर है

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً

उन चीज़ों से जिसे वो शरीक ठेहरा रहे हैं। और तमाम इन्सान नहीं थे मगर एक ही उम्मत,

فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ

फिर वो अलग अलग हो गए। और अगर एक बात तेरे रब की तरफ से पेहले से हो चुकी न होती तो उन के

بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ

दरमियान फैसला कर दिया जाता उस में जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं। और ये केहते हैं के

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ

उस पर उस के रब की तरफ से कोई आयत क्यूं नहीं उतारी गई? आप फरमा दीजिए के ग़ैब तो सिर्फ

لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾

अल्लाह के लिए है, तो तुम मुन्तज़िर रहो। यक़ीनन मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ।

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ

और जब इन्सानों को हम रहमत का मज़ा चखाते हैं किसी तकलीफ के बाद जो उन्हें पहोंची हो

اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ

तो अचानक हमारी आयतों में उन का मक्र शुरू हो जाता है। आप फरमा दीजिए के अल्लाह जल्द तदबीर वाला है।

اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ الَّذِيْ

यक़ीनन हमारे भेजे हुए फरिशते लिख रहे हैं उसे जो तुम मक्र करते हो। वही अल्लाह

يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِي

तुम्हें सफर कराता है खुशकी में और समन्दर में। यहां तक के जब तुम कशती में

الْفُلْكِ ۚ وَ جَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّ فَرِحُوْا بِهَا
होते हो और वो कशतियाँ उन्हें ले कर चलती हैं उम्दा हवा के साथ और वो उस पर खुश होते हैं
جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّ جَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ
तो कशती पर तूफानी हवा आ जाती है और उन पर मौज आ जाती है हर तरफ से
مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
और वो समझते हैं के उन्हें घेर लिया गया। तो वो अल्लाह को पुकारने लगते हैं उसी के लिए इबादत को खालिस
لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ
करते हुए के अगर तू हमें इस से नजात देगा तो हम शुक्र अदा करने वालों में से
مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ اَنْجٰهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ
बन जाएंगे। फिर जब अल्लाह उन्हें बचा लेता है तो अचानक वो नाहक़ ज़मीन में सरकशी
بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ
करने लगते हैं। ऐ इन्सानो! तुम्हारी सरकशी का वबाल तुम्हारी जानों ही के खिलाफ पड़ेगा।
مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ
ये दुन्यवी ज़िन्दगी का नफा उठाना है। फिर हमारी तरफ तुम्हें वापस आना है, फिर हम तुम्हें खबर देंगे
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
उन कामों की जो तुम करते थे। दुन्यवी ज़िन्दगी का हाल तो
كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ
उस पानी की तरह है जिसे हम ने आसमान से बरसाया, फिर उस के साथ ज़मीन का सबज़ा
الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى
मिल गया उस चीज़ में से जिस को इन्सान और चौपाए खाते हैं। यहां तक के
اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ
जब ज़मीन ने अपनी ज़ीनत ले ली और मुज़य्यन हो गई और ज़मीन वालों ने समझा
اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا
के वो उस पर क़ादिर हैं, तो उस पर हमारा हुक्म आ गया रात के वक्त या दिन के वक्त,
فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ
फिर हम ने उस को कटी हुई खेती बना दी गोया के वो कल को आबाद ही नहीं हुई थी। इसी तरह

نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا

हम आयतों को तफसील से बयान करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह दारूस्सलाम की तरफ

اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

बुलाते हैं। और सीधे रास्ते की तरफ हिदायत देते हैं उस शख्स को जिसे वो चाहते हैं।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَ زِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ

उन लोगों के लिए जिन्हों ने भलाइयाँ कीं अच्छा बदला है और मज़ीद भी मिलेगा। और उन के चेहरों पर न

قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا

(शरमिन्दगी की) सियाही होगी, न ज़िल्लत। ये लोग जन्नती हैं। वो उस में हमेशा

خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍۭ

रहेंगे। और जिन लोगों ने बुराई कमाई तो उन के लिए उसी जैसी बुराई का

بِمِثْلِهَا ۙ وَ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ

बदला मिलेगा। और उन को ज़िल्लत ढांप लेगी। कोई उन को अल्लाह से बचाने वाला न होगा।

كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ

गोया के उन के चेहरे ढांप दिए गए होंगे तारीक रात के टुकड़ों से।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ

ये दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। और जिस दिन

نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا

हम उन तमाम को इकट्ठा करेंगे, फिर मुशरिकीन से कहेंगे के

مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَ شُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَ قَالَ

तुम और तुम्हारे शुरका अपनी जगह पर रहो। फिर हम उन के दरमियान जुदाई कर देंगे और उन के शुरका

شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ

कहेंगे के तुम हमारी इबादत नहीं करते थे। फिर अल्लाह हमारे

شَهِيْدًاۢ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ

और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है के यक़ीनन हम तुम्हारी इबादत से

لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ

बेखबर थे। वहां हर शख्स मालूम कर लेगा उन आमाल को जो उस ने आगे भेजे

وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ

और वो लौटाए जाएंगे अल्लाह की तरफ जो उन का हक़ीक़ी मौला है और उन से खो जाएंगे

مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٣٠ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ

जिसे वो झूठ गढ़ते थे। आप फरमा दीजिए कौन तुम्हें रोज़ी देता है आसमान से

وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ

और ज़मीन से? या कौन सिमाअत और बसारत पर क़ादिर है? और कौन

يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ

ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है? और मुर्दा को ज़िन्दा से

مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ

निकालता है? और कौन तमाम उमूर की तदबीर करता है? तो अनक़रीब वो कहेंगे अल्लाह। फिर आप फरमा दीजिए

اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٣١ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ

के तुम डरते क्यूं नहीं हो? फिर यही अल्लाह तुम्हारा हक़ीक़ी रब है। फिर हक़ के

الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٣٢ كَذٰلِكَ حَقَّتْ

बाद सिवाए गुमराही के क्या है? फिर तुम कहाँ फेरे जा रहे हो? इसी तरह आप के रब के कलिमात

كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٣٣

साबित हो गए उन पर जो नाफरमान हैं के वो ईमान नहीं लाएंगे।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ

आप फरमा दीजिए क्या तुम्हारे शुरका में से कोई है जो मखलूक़ को पेहली मरतबा पैदा करे, फिर उस को

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى

दोबारा पैदा करे? आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही मखलूक़ को पेहली मरतबा पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा। फिर

تُؤْفَكُوْنَ ۝٣٤ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ

तुम कहाँ उलटे फिरे जा रहे हो? आप फरमा दीजिए तुम्हारे शुरका में से कोई है जो हक़ की तरफ रहनुमाई

اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ

करे? आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही हक़ की तरफ रहनुमाई करता है। फिर जो हक़ की तरफ रहनुमाई करता है

اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ

वो इस के ज़्यादा लाइक़ है के उस का इत्तिबा किया जाए या वो जो रास्ता नहीं पाता मगर ये के उसी की रहनुमाई की जाए।

فَمَا لَكُمۡ ۟ كَيۡفَ تَحۡكُمُوۡنَ ۝۳۵ وَمَا يَتَّبِعُ اَكۡثَرُهُمۡ

फिर तुम्हें क्या हुवा? तुम कैसे फैसले करते हो? और उन में से अक्सर नहीं चलते मगर गुमान के

اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغۡنِىۡ مِنَ الۡحَـقِّ شَيۡـئًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

पीछे। यक़ीनन गुमान हक़ के मुक़ाबले में कोई भी काम नहीं देता। यक़ीनन अल्लाह

عَلِيۡمٌۢ بِمَا يَفۡعَلُوۡنَ ۝۳۶ وَمَا كَانَ هٰذَا الۡقُرۡاٰنُ

खूब जानता है उन कामों को जो वो कर रहे हैं। और ये कुरआन ऐसा नहीं है

اَنۡ يُّفۡتَرٰى مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلٰـكِنۡ تَصۡدِيۡقَ الَّذِىۡ بَيۡنَ

के उस का घड़ लिया जाए अल्लाह के सिवा (किसी और की तरफ से) लेकिन (ये कुरआन) उस को सच्चा बताता है जो पेहले

يَدَيۡهِ وَ تَفۡصِيۡلَ الۡـكِتٰبِ لَا رَيۡبَ فِيۡهِ مِنۡ رَّبِّ

से था और तमाम किताबों की तफसील करने वाला है, इस में कोई शक नहीं, ये रब्बुल आलमीन

الۡعٰلَمِيۡنَ ۝۳۷ ۟ اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ افۡتَرٰٮهُ ؕ قُلۡ فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ

की तरफ से है। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने उस को घड़ लिया है? आप फरमा दीजिए के फिर तुम उस के

مِّثۡلِهٖ وَادۡعُوۡا مَنِ اسۡتَطَعۡتُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ

जैसी एक सूरत ले आओ और बुलाओ उन सब को जिन की ताक़त रखते हो अल्लाह के अलावा

اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۝۳۸ بَلۡ كَذَّبُوۡا بِمَا لَمۡ يُحِيۡطُوۡا بِعِلۡمِهٖ

अगर तुम सच्चे हो। बल्के उन्हों ने झुठलाया उस चीज़ को जिस के इल्म का उन्हों ने इहाता नहीं किया

وَلَمَّا يَاۡتِهِمۡ تَاۡوِيۡلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيۡنَ

और अब तक उन के पास उस की हक़ीक़त नहीं आई। इसी तरह उन लोगों ने झुठलाया जो

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيۡنَ ۝۳۹

उन से पेहले थे, फिर आप देखिए के ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुवा?

وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يُّؤۡمِنُ بِهٖ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ لَّا يُؤۡمِنُ بِهٖ ؕ

फिर उन में से कुछ लोग वो हैं जो उस पर ईमान रखते हैं और उन में से कुछ लोग वो हैं जो उस पर ईमान नहीं लाते।

وَرَبُّكَ اَعۡلَمُ بِالۡمُفۡسِدِيۡنَ ۝۴۰ ع وَاِنۡ كَذَّبُوۡكَ فَقُلۡ

और आप का रब फसाद फैलाने वालों को खूब जानता है। और अगर ये आप को झुठलाएं तो आप फरमा दीजिए

لِّىۡ عَمَلِىۡ وَلَـكُمۡ عَمَلُكُمۡ ۚ اَنۡتُمۡ بَرِيۡٓـــُٔوۡنَ مِمَّاۤ اَعۡمَلُ

के मेरे लिए मेरा अमल है और तुम्हारे लिए तुम्हारा अमल है। तुम बरी हो मेरे अमल से

وَاَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٤١ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ

और मैं बरी हूँ तुम्हारे अमल से। और उन में से कुछ लोग वो हैं जो आप की तरफ कान

اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٤٢

लगाते हैं। क्या फिर आप बेहरों को सुना सकते हैं अगर्चे उन्हें अक़्ल भी न हो?

وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِی الْعُمْیَ

और उन में कुछ लोग वो हैं जो आप की तरफ देखते हैं। क्या फिर आप अन्धे को रास्ता दिखा सकते हैं

وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ۝٤٣ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ

अगर्चे वो देख न सकते हों? यक़ीनन अल्लाह इन्सानों पर कुछ भी ज़ुल्म

شَيْئًا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٤٤ وَيَوْمَ

नहीं करता, लेकिन लोग अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं। और जिस दिन

يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ

अल्लाह उन को इकट्ठा करेगा तो गोया के वो ठेहरे ही नहीं थे मगर दिन की एक घड़ी।

يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ

वो आपस में एक दूसरे को पेहचानते होंगे। यक़ीनन नुक़सान उठाया उन लोगों ने जिन्हों ने झुठलाया

اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ۝٤٥ وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ

अल्लाह की मुलाक़ात को और वो हिदायतयाफ्ता नहीं हुए। और अगर हम आप को दिखाएं उस का कुछ हिस्सा

الَّذِیْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ

जिस से हम उन को डरा रहे हैं या हम आप को वफात दें, फिर हमारी तरफ उन्हें वापस आना है,

ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰی مَا يَفْعَلُوْنَ ۝٤٦ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ

फिर अल्लाह गवाह है उन कामों पर जो वो कर रहे हैं। और हर एक उम्मत के लिए एक

رَّسُوْلٌ ج فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِیَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ

रसूल है। फिर जब उन का रसूल आ जाता है तो उन के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाता है

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٤٧ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ

और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाता। और ये कहते हैं के ये वादा कब पूरा होगा

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤٨ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ ضَرًّا

अगर तुम सच्चे हो? आप फरमा दीजिए के मैं खुद अपने लिए नफा और ज़रर

وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ

का मालिक नहीं मगर जितना अल्लाह चाहे। हर एक उम्मत के लिए एक आखिरी मुक़र्रर किया हुवा वक्त है। जब उन का

اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾

आखिरी वक्त आ जाता है तो वो एक घड़ी न पीछे हट सकते हैं और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

आप फरमा दीजिए तुम्हारी क्या राए है अगर तुम्हारे पास अल्लाह का अज़ाब रात के वक्त आए या दिन के वक्त,

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾ اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ

तो मुजरिम लोग किस चीज़ की जल्दी मचा रहे हैं? क्या फिर जब वो अज़ाब वाकेअ हो जाएगा तब तुम

اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْئٰنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾

उस पर ईमान लाओगे? (तब तो कहा जाएगा के) अब (ईमान लाते हो?) हालांके तुम उस को जल्दी तलब कर रहे थे।

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ

फिर ज़ालिमों से कहा जाएगा के तुम हमेशा का अज़ाब चखो।

هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ

तुम्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उन्ही कामों की जो तुम करते थे। और ये आप से मालूम करते हैं के

اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِیْ وَرَبِّیْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۚؔ وَمَاۤ اَنْتُمْ

क्या ये हक़ है? आप फरमा दीजिए के जी हां! मेरे रब की क़सम! यक़ीनन ये हक़ है। और तुम अल्लाह को (भाग कर)

بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ

आजिज़ नहीं बना सकते। और अगर हर ज़ालिम शख्स को दुन्या की तमाम चीज़ें मिल जाएं जो ज़मीन में

مَا فِی الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ

हैं, तो यक़ीनन वो उन सब को फिदये में दे देगा। और वो नदामत को छुपाएंगे

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِیَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ

जब अज़ाब को देखेंगे। और उन के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर

لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

जुल्म नहीं किया जाएगा। सुनो! यक़ीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं।

اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا

सुनो! यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, लेकिन उन में से अक्सर

وقف النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ع ٥

يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾

जानते नहीं। वही ज़िन्दगी देता है और मौत देता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

ऐ इन्सानो! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आई है

وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ

और दिलों की बीमारियों के लिए शिफा और हिदायत और ईमान वालों के लिए

لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ

रहमत आई है। आप फरमा दीजिए के ये अल्लाह के फज़्ल और उस की रहमत की बिना पर है, फिर उस पर

فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

उन्हें खुश होना चाहिए। ये बेहतर है उन तमाम चीज़ों से जो वो इकट्ठी कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम

مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ

ग़ौर नहीं करते जो रिज़्क़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारा, फिर उस में से कुछ तुम

حَرَامًا وَّ حَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ

ने हलाल और कुछ हराम बना दिया। आप फरमा दीजिए क्या अल्लाह ने तुम्हें खबर दी

اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ

या तुम अल्लाह पर झूठ घड़ते हो? और उन लोगों का गुमान जो अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ

झूठ घड़ते हैं क़यामत के दिन क्या होगा? यक़ीनन अल्लाह इन्सानों

فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾

पर फज़्ल वाले हैं, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र अदा नहीं करते।

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ

और आप जिस हाल में होते हैं और जो कुरआन तिलावत कर रहे

مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ

होते हैं और तुम जो अमल भी कर रहे होते हैं मगर हम तुम्हें देख रहे

شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ

होते हैं जब तुम उस में मसरूफ होते हैं। और आप के रब से ग़ाइब

رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا

नहीं है ज़र्रा भर कोई चीज़, न ज़मीन में और न

فِى السَّمَآءِ وَلَآ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ

आसमान में और न उस से छोटी और न उस से बड़ी चीज़ मगर वो साफ साफ बयान करने वाली किताब

اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦١ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ

(लौहे महफूज़) में लिखी हुई है। सुनो! यक़ीनन अल्लाह के दोस्त,

لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٦٢ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

उन पर न खौफ होगा और न वो ग़मगीन होंगे। वो जो ईमान लाए

وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝٦٣ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

और जो मुत्तक़ी रहे। उन के लिए बशारत है दुन्यवी ज़िन्दगी में

وَفِى الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

और आखिरत में। अल्लाह के कलिमात को बदला नहीं जा सकता। ये

هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٦٤ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ

बड़ी कामयाबी है। और आप को ग़मगीन न करे उन की बात।

وقف لازم

اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦٥

यक़ीनन इज़्ज़त सारी की सारी अल्लाह के लिए है। वही सुनने वाला, इल्म वाला है।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ ؕ

सुनो! यक़ीनन अल्लाह ही की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और ये जो पीछे चल रहे हैं वो लोग जो अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हैं

شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ

शुरका को, ये सिर्फ गुमान ही के पीछे चल रहे हैं और ये सिर्फ अटकल से

اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۝٦٦ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ

बातें करते हैं। वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई

لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

ताके तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन को रोशन बनाया। यक़ीनन उस में सुनने वाली क़ौम के

لِّقَوۡمٍ يَّسۡمَعُوۡنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبۡحٰنَهٗ ؕ

लिए निशानियाँ हैं। ये केहते हैं के अल्लाह औलाद रखता है, अल्लाह उस से पाक है।

هُوَ الۡغَنِىُّ ؕ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ

वो बेनियाज़ है। उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

اِنۡ عِنۡدَكُمۡ مِّنۡ سُلۡطٰنٍۢ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوۡلُوۡنَ

तुम्हारे पास इस की कोई दलील नहीं हैं। क्या तुम अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٦٨﴾ قُلۡ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَفۡتَرُوۡنَ

ऐसी बातें केहते हो जो तुम जानते नहीं हो। आप फरमा दीजिए यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह पर

عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ لَا يُفۡلِحُوۡنَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِى الدُّنۡيَا

झूठ घड़ते हैं वो कामयाब नहीं होंगे। दुन्या में थोड़ा नफा उठाना है,

ثُمَّ اِلَيۡنَا مَرۡجِعُهُمۡ ثُمَّ نُذِيۡقُهُمُ الۡعَذَابَ الشَّدِيۡدَ

फिर हमारी तरफ उन्हें वापस आना है, फिर हम उन्हें सख्ततरीन अज़ाब चखाएँगे

بِمَا كَانُوۡا يَكۡفُرُوۡنَ ﴿٧٠﴾ وَاتۡلُ عَلَيۡهِمۡ نَبَاَ نُوۡحٍ ۘ اِذۡ قَالَ

इस वजह से के वो कुफ्र करते थे। और आप उन को नूह (अलैहिस्सलाम) का वाक़िआ बयान कीजिए। जब उन्हों ने

لِقَوۡمِهٖ يٰقَوۡمِ اِنۡ كَانَ كَبُرَ عَلَيۡكُمۡ مَّقَامِىۡ

अपनी क़ौम से फरमाया ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम पर गिरां है मेरा (इस काम के लिए) खड़ा होना

وَتَذۡكِيۡرِىۡ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلۡتُ فَاَجۡمِعُوۡۤا

और अल्लाह की आयात के ज़रिए नसीहत करना, तो मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया, तो अपने काम

اَمۡرَكُمۡ وَ شُرَكَآءَكُمۡ ثُمَّ لَا يَكُنۡ اَمۡرُكُمۡ عَلَيۡكُمۡ

और शुरका को इकट्ठा कर लो, फिर तुम्हारा मुआमला तुम्हारे लिए घुटन का बाइस

غُمَّةً ثُمَّ اقۡضُوۡۤا اِلَىَّ وَلَا تُنۡظِرُوۡنِ ﴿٧١﴾ فَاِنۡ تَوَلَّيۡتُمۡ

न रहे, फिर तुम मुझ पर हमला करो और मुझे मोहलत भी न दो। फिर अगर तुम ऐराज़ करो

فَمَا سَاَلۡتُكُمۡ مِّنۡ اَجۡرٍ ؕ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ

तो मैं ने तुम से किसी अज्र का सवाल नहीं किया। मेरा अज्र सिर्फ अल्लाह के ज़िम्मे है।

وَاُمِرۡتُ اَنۡ اَكُوۡنَ مِنَ الۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوۡهُ

और मुझे इस का हुक्म दिया गया है के मैं मुसलमानों में से हूँ। फिर उन्हों ने नूह (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया,

فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ وَ جَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ

फिर हम ने उन्हें नजात दी और उन लोगों को भी जो उन के साथ कशती में थे और हम ने उन्हें जानशीन बनाया और हम

وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

ने उन को गर्क़ किया जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया। फिर आप देखिए के डराए जाने

عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا

वालों का अन्जाम कैसा हुवा? फिर उन के बाद हम ने पैग़म्बर भेजे

اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا

उन की क़ौम की तरफ, फिर वो उन के पास रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर भी वो ईमान नहीं लाते थे

بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ

इस वजह से के इस से पेहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से आगे बढ़ने वालों के दिलों

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَ هٰرُوْنَ

पर मुहर लगा देते हैं। फिर हम ने उन के बाद मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) को

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا

फिरऔन और उस की क़ौम की तरफ अपनी आयात दे कर भेजा, फिर उन्हों ने बड़ा बनना चाहा और वो

قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا

मुजरिम क़ौम थी। फिर जब उन के पास हक़ आया हमारी तरफ से,

قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ مُوْسٰٓى

तो उन्हों ने कहा के यक़ीनन ये खुला जादू है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ

क्या तुम ये हक़ के मुतअल्लिक़ केहते हो जब वो तुम्हारे पास आया? क्या ये जादू है? और जादूगर तो कामयाब

السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ

नहीं होते। तो उन्हों ने कहा के क्या आप हमारे पास आए हो ताके हमें फेर दो उस से जिस पर हम

اٰبَآءَنَا وَ تَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ

ने अपने बाप दादा को पाया और इस मुल्क में तुम दोनों को सरदारी मिल जाए।

وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِىْ

और हम तुम दोनों पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। और फिरऔन ने कहा के तुम मेरे

بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ
पास हर माहिर जादूगर को ले आओ। फिर जब जादूगर आए तो उन से मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّآ اَلْقَوْا
डालो जो तुम डालने वाले हो। फिर जब उन्हों ने डाला

قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया जो तुम लाए हो वो जादू है। यक़ीनन अल्लाह

سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾
अनक़रीब उस को बातिल कर देगा। यक़ीनन अल्लाह फसाद फैलाने वालों के अमल को चलने नहीं देता।

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾
और अल्लाह हक़ को अपने कलिमात के ज़रिए हक़ साबित करेगा अगर्चे मुजरिम नापसन्द करें।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ
फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) पर ईमान नहीं लाई मगर थोड़ी सी जमाअत आप की क़ौम में से फिरऔन और उस की

مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ
जमाअत के खौफ की वजह से के वो उन को अज़ाब में मुबतला करेंगे। और यक़ीनन फिरऔन

لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَ قَالَ
उस मुल्क में बरतरी वाला था। और यक़ीनन वो हद से आगे बढ़ने वालों में से था। और मूसा (अलैहिस्सलाम)

مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا
ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर तो उसी पर तवक्कुल करो

اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
अगर तुम मुसलमान हो। तो उन्हों ने कहा के अल्लाह पर हम ने तवक्कुल किया।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا
ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिम क़ौम का तख्तए मश्क़ न बना। और तू अपनी

بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاَوْحَيْنَآ
रहमत से काफिर क़ौम से हमें नजात दे। और हम ने वही की मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन के भाई

اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ
की तरफ के तुम दोनों ठिकाना बनाओ अपनी क़ौम के लिए मिस्र में

بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا

घरों को और अपने घर क़िबलारूख बनाओ और नमाज़

الصَّلٰوةَ ۭ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨٧ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ

क़ाइम करो। और आप ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ हमारे रब!

اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ مَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّ اَمْوَالًا

यक़ीनन तू ने फिरऔन और उस की क़ौम को ज़ीनत दी और माल दिया

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ

दुन्यवी ज़िन्दगी में। ऐ हमारे रब! इस लिए ताके वो तेरे रास्ते से गुमराह करें?

رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ

ऐ हमारे रब! उन के मालों को मिटा दे और उन के दिलों को

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٨٨

सख्त कर दे के वो ईमान न लाएं यहां तक के दर्दनाक अज़ाब देखें।

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا

अल्लाह ने फरमाया यक़ीनन तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई, तो तुम इस्तिक़ामत से रहो

وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨٩ وَجٰوَزْنَا

और उन लोगों के रास्ते पर न चलना जो जानते नहीं। और हम ने

بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ

बनी इस्राईल को समन्दर पार करा दिया, फिर फिरऔन और उस का लशकर उन के पीछे आया

وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ

सरकशी करता हुवा और हद से तजावुज़ करता हुवा। यहां तक के जब फिरऔन डूबने लगा

قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ

तो केहने लगा के मैं ईमान ले आया ये के कोई माबूद नहीं मगर वही जिस पर

بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٩٠ آٰلْئٰنَ

बनू इस्राईल ईमान लाए हैं और मैं मुसलमानों में से हूँ। (फरिश्ते ने कहा) क्या अब (ईमान लाया)

وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٩١

हालांके तू इस से पेहले नाफरमान था और तू फसाद फैलाने वालों में से रहा।

فَالۡيَوۡمَ نُنَجِّيۡكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوۡنَ لِمَنۡ خَلۡفَكَ

तो आज हम तेरे बदन को बचा लेंगे ताके तेरे पीछे आने वालों के लिए वो इब्रत

اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيۡرًا مِّنَ النَّاسِ عَنۡ اٰيٰتِنَا

बने। और यक़ीनन इन्सानों में से बहोत से हमारी आयतों से

لَغٰفِلُوۡنَ ۝٩٢ وَلَقَدۡ بَوَّاۡنَا بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مُبَوَّاَ

ग़ाफिल हैं। और तहक़ीक़ के हम ने बनी इस्राईल को ठिकाना दिया सच्चाई के

صِدۡقٍ وَّرَزَقۡنٰهُمۡ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخۡتَلَفُوۡا

रेहने की जगह और हम ने उन्हें उम्दा चीज़ों में से रोज़ी दी। फिर उन्हों ने इखतिलाफ नहीं किया

حَتّٰى جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقۡضِىۡ بَيۡنَهُمۡ

यहां तक के उन के पास इल्म आया। यक़ीनन तेरा रब उन के दरमियान क़यामत

يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فِيۡمَا كَانُوۡا فِيۡهِ يَخۡتَلِفُوۡنَ ۝٩٣

के दिन फैसला करेगा उन चीज़ों में जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं।

فَاِنۡ كُنۡتَ فِىۡ شَكٍّ مِّمَّاۤ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَيۡكَ فَسۡـئَلِ الَّذِيۡنَ

फिर अगर आप शक में हैं उस की तरफ से जो हम ने आप की तरफ उतारा तो आप सवाल कीजिए

يَقۡرَءُوۡنَ الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۚ لَقَدۡ جَآءَكَ

उन से जो किताब पढ़ते हैं आप से भी पेहले। यक़ीनन आप के पास

الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡمُمۡتَرِيۡنَ ۝٩٤ۙ

हक़ आया आप के रब की तरफ से, इस लिए आप शक करने वालों में से न हों।

وَلَا تَكُوۡنَنَّ مِنَ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

और आप उन लोगों में से न हों जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया,

فَتَكُوۡنَ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ۝٩٥ اِنَّ الَّذِيۡنَ حَقَّتۡ

फिर आप खसारा उठाने वालों में से हो जाएंगे। यक़ीनन वो लोग जिन के

عَلَيۡهِمۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝٩٦ۙ وَلَوۡ جَآءَتۡهُمۡ

ऊपर तेरे रब के कलिमात साबित हो गए, वो ईमान नहीं लाएंगे। अगर्चे उन के पास

كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الۡعَذَابَ الۡاَلِيۡمَ ۝٩٧ فَلَوۡلَا

तमाम मोअजिज़ात भी आ जाएं, (वो ईमान नहीं लाएंगे) यहां तक के दर्दनाक अज़ाब देख लें। फिर कोई

كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ

बस्ती जो ईमान लाई हो, फिर उस के ईमान लाने ने उस को नफा दिया हो, कोई बस्ती नहीं हुई सिवाए यूनुस

يُوْنُسَ ط لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ

(अलैहिस्सलाम) की क़ौम के। जब वो ईमान लाए तो उन से हम ने रूस्वाई के अज़ाब को हटा दिया

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ مَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

दुन्यवी ज़िन्दगी में और उन को हम ने एक वक्त तक मुतमत्तेअ किया।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِى الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ط

और अगर आप का रब चाहता तो वो सारे के सारे जो ज़मीन में हैं इकट्ठे ईमान ले आते।

اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

क्या फिर आप इन्सानों को मजबूर कर सकते हो के वो ईमान ले आएं?

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ط

और किसी शख्स की ये ताक़त नहीं है के वो ईमान लाए मगर अल्लाह की इजाज़त से।

وَ يَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾

और अल्लाह गन्दगी रखते हैं उन पर जो अक़्ल नहीं रखते।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط

आप फरमा दीजिए के तुम देखो के क्या चीज़ें हैं आसमानों में और ज़मीन में?

وَمَا تُغْنِى الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾

और मोअजिज़ात और डराने वाले कुछ काम नहीं आते ऐसी क़ौम से जो ईमान नहीं लाती।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا

फिर वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर उन लोगों के जैसे दिनों के जो उन

مِنْ قَبْلِهِمْ ط قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّىْ مَعَكُمْ

से पेहले गुज़र चुके। आप फरमा दीजिए फिर तुम मुन्तज़िर रहो, यक़ीनन मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार

مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّىْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ج

करने वालों में से हूँ। फिर हम अपने पैग़म्बरों को बचा लेंगे और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं, इसी तरह।

حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ع قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ

हमारे ज़िम्मे लाज़िम है के हम ईमान वालों को नजात दें। आप फरमा दीजिए ऐ इन्सानो! अगर

ع ١٥

كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ

तुम शक में हो मेरे दीन की तरफ से तो मैं इबादत नहीं करूंगा उन की

تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ

जिन की तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो, लेकिन मैं तो इबादत करता हूँ उस अल्लाह की जो तुम्हें

يَتَوَفّٰىكُمْ ۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾

वफात देगा। और मुझे हुक्म दिया गया है के मैं ईमान वालों में से रहूँ।

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ

और ये के आप अपना चेहरा सीधा रखिए इस दीन के लिए हर तरफ से कट कर। और मुशरिकीन

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

में से मत बनिए। और अल्लाह के अलावा ऐसी चीज़ों को मत पुकारिए जो

مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ

आप को न नफा दे सकती हैं और न ज़रर पहोंचा सकती हैं। फिर अगर आप ऐसा करेंगे तो यक़ीनन आप

اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ

कुसूरवारों में से हो जाएंगे। और अगर आप को अल्लाह नुक़सान पहोंचाए

فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ

तो उस के सिवा कोई भी उसे दूर करने वाला नहीं। और अगर वो तुम्हारी भलाई का इरादा करे तो अल्लाह के फ़ज़्ल को

لِفَضْلِهٖ ۭ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ

कोई रोक नहीं सकता। वो अपने बन्दों में से जिसे अपना फ़ज़्ल पहोंचाना चाहे पहोंचा देता है। और वो

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। आप फरमा दीजिए ऐ इन्सानो! यक़ीनन तुम्हारे पास

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ

तुम्हारे रब की तरफ से हक़ आ चुका। अब जो हिदायत चाहे, तो उस की हिदायत अपनी ज़ात ही के

لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ

लिए है। और जो गुमराही इखतियार करे तो उस का वबाल खुद उसी पर है।

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ

और मैं तुम पर मुसल्लत नहीं हूँ। और आप उस के पीछे चलिए जो आप की तरफ वही किया जा रहा है

وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

और आप सब्र कीजिए यहां तक के अल्लाह फैसला कर दे। और वो बेहतरीन फैसला करने वाला है।

اٰيَاتُهَا ١٢٣ (١١) سُوْرَةُ هُوْدٍ مَّكِّيَّةٌ (٥٢) رُكُوْعَاتُهَا ١٠

उस में १२३ आयतें हैं सूरह हूद मक्का में नाज़िल हुई और १० रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ

अलिफ लाम रॉ। ये किताब है जिस की आयतें मुहकम की गई हैं, फिर उन की तफसील की गई है

حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ

हिक्मत वाले, बाखबर अल्लाह की तरफ से। के इबादत मत करो मगर अल्लाह ही की। यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए

مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّ بَشِيْرٌ ﴿٢﴾ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ

उस की तरफ से डराने वाला और बशारत सुनाने वाला हूँ। और ये के अपने रब से इस्तिग़फार करो,

ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ

फिर तुम उस की तरफ तौबा करो तो वो तुम्हें मुतमत्तेअ करेगा अच्छी तरह मुतमत्तेअ करना

مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ

मुक़र्रर किए हुए वक्त तक और हर एक साहिबे फ़ज़्ल को अपना फ़ज़्ल (जज़ा) देगा।

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿٣﴾

और अगर तुम ऐराज़ करो तो मुझे तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अज़ाब का खौफ है।

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤﴾

अल्लाह की तरफ तुम्हें वापस जाना है। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ

सुनो! यक़ीनन वो अपने सीनों को अल्लाह से छुपने के लिए मोड़ते हैं।

اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ

सुनो! जिस वक्त वो अपने कपड़े ओढ़े हुए होते हैं, तब भी अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जिन्हें वो

وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٥﴾

छुपाते हैं और जिन्हें वो ज़ाहिर करते हैं। यक़ीनन वो दिलों के हाल को खूब जानने वाला है।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ
और ज़मीन में कोई चौपाया नहीं मगर अल्लाह के ज़िम्मे उस की रोज़ी है और वो उस के दाइमी

مُسْتَقَرَّهَا وَ مُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦﴾
ठिकाने और आरज़ी ठिकाने को जानता है। सब कुछ साफ साफ बयान करने वाली किताब (लौहे महफूज़) में है।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ
और वही अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया छे दिन में

اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ
और उस का अर्श पानी पर था ताके वो तुम्हें आज़माए के तुम में से कौन

اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ
अच्छे अमल वाला है। और अगर आप केहते हैं के यक़ीनन तुम ज़िन्दा कर के उठाए

مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ
जाओगे मौत के बाद तो ज़रूर काफिर कहेंगे के ये नहीं है

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧﴾ وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ
मगर खुला जादू। और अगर हम उन से अज़ाब मुअख्खर कर दें

اِلٰٓى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ
एक मालूम वक्त तक के लिए तब भी वो यक़ीनन कहेंगे के किस ने अज़ाब को रोक रखा है? सुनो! जिस दिन

يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا
वो अज़ाब उन के पास आएगा तो उन से हटाया नहीं जाएगा और उन्हें घेर लेगा वो अज़ाब जिस का

بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨﴾ع وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً
वो मज़ाक़ उड़ा रहे थे। और अगर इन्सान को हम अपनी तरफ से रहमत चखाएं

ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ﴿٩﴾
फिर उस से उस को छीन लें, तो यक़ीनन वो मायूस नाशुकरा बन जाता है।

وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ
और अगर हम उसे नेअमत चखाएं किसी तकलीफ के बाद जो उसे पहोंची हो तो ज़रूर वो कहेगा के मुझ से

السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ؕ اِنَّهٗ لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ﴿١٠﴾ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ
बराइयाँ दूर हो गईं। यक़ीनन वो इतराने वाला, फख्र करने वाला है। मगर वो लोग

ع ٨

صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ

जिन्हों ने सब्र किया और नेक अमल करते रहे। उन के लिए मग़फिरत है

وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١١﴾ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى

और बड़ा अज्र है। शायद आप छोड़ दें उस के बाज़ हिस्से को जो आप की तरफ वही किया जा रहा

اِلَيْكَ وَ ضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ اَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ

है और आप का सीना उस की वजह से तंग हो रहा है, ये इस वजह से के वो केहते हैं के इस पर कोई खज़ाना

عَلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ نَذِيْرٌ ؕ

क्यूं नहीं उतारा गया या उस के साथ कोई फरिशता क्यूं नहीं आया? आप तो सिर्फ डराने वाले हैं।

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٢﴾ؕ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ

और अल्लाह हर चीज़ पर कारसाज़ है। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने इस को घड़ लिया?

قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا

आप फरमा दीजिए के तुम उस के जैसी घड़ी हुई दस सूरतें ले आओ और तुम

مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾

उन को भी बुला लो जिन की तुम ताक़त रखते हो अल्लाह के अलावा अगर तुम सच्चे हो।

فَاِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اُنْزِلَ بِعِلْمِ

फिर अगर वो तुम्हारी बात का जवाब न दे सकें तो जान लो के जो आप की तरफ उतारा गया है वो अल्लाह के इल्म से है

اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

और ये के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। फिर क्या तुम इस्लाम लाते हो?

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا نُوَفِّ

जो दुन्यवी ज़िन्दगी चाहेगा और उस की ज़ीनत, तो हम उन को उन के आमाल का दुन्या में

اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾

पूरा पूरा बदला देंगे और उन के लिए उस में कमी नहीं की जाएगी।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ

उन लोगों के लिए आखिरत में सिवाए आग के कुछ नहीं होगा।

وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا

और बेकार हो जाएंगे वो अमल जो उन्हों ने दुन्या में किए और बातिल होंगे वो जो वो

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ

करते थे। क्या फिर वो शख्स जो अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते पर है और अल्लाह की तरफ से

شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ

एक शाहिद उस के साथ साथ है और उस से पेहले मूसा (अलैहिस्सलाम) की किताब पेशवा और रहमत थी।

اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ

ये लोग उस पर ईमान रखते हैं। और जो उस के साथ कुफ्र करेगा गिरोहों में से

فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۗ اِنَّهُ

तो दोज़ख उस की वादे की जगह है। फिर आप उस की तरफ से शक में न रहिए। यक़ीनन ये

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾

हक़ है आप के रब की तरफ से लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ

और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े। ये लोग

يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَ يَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ

अपने रब के सामने पेश किए जाएंगे और गवाही देने वाले कहेंगे के ये वो हैं

الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ

जिन्हों ने अपने रब पर झूठ बोला। सुनो! अल्लाह की लानत है

عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٨﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

ज़ालिमों पर। उन पर जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं

وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٩﴾

और उस में कजी तलाश करते हैं। और वो अखिरत के भी मुन्किर हैं।

اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ

ये लोग ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ

और उन के लिए अल्लाह के अलावा कोई हिमायती नहीं होगा। उन के लिए

لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا

अज़ाब दुगना किया जाएगा। वो सुनने की ताकत नहीं रखते थे और न

وقف لازم

كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ۝٢٠ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
देख सकते थे। यही हैं जिन्हों ने अपनी जानों को खसारे में डाला

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٢١ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ
और उन से खो गए वो जो वो घड़ा करते थे। यक़ीनन ये

فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٢٢ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
आखिरत में सब से ज़्यादा खसारा वाले हैं। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
और नेक काम करते रहे और अपने रब की तरफ आजिज़ी की। ये लोग

الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٢٣ مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ
जन्नती हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। दोनों जमाअतों का हाल ऐसा है

كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ
जैसा के अन्धा और बेहरा और देखने वाला और सुनने वाला। क्या दोनों मिसाल के ऐतेबार से बराबर

مَثَلًا ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٢٤ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا
हो सकते है? क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और यक़ीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को भेजा

اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۡ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢٥ اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ
उन की क़ौम की तरफ के मैं तुम्हारे लिए साफ साफ डराने वाला हूँ। ये के इबादत मत करो मगर अल्लाह की।

اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ۝٢٦ فَقَالَ
यक़ीनन मैं तुम पर एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ। फिर आप

الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ
की क़ौम में से काफिर सरदारों ने कहा के हम आप को नहीं देखते

اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ
मगर अपने जैसा इन्सान और हम आप को नहीं देखते के आप का इत्तिबा किया मगर उन लोगों ने जो

اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا
हम में सब से ज़्यादा ज़लील हैं सरसरी नज़र में। और हम तुम्हारे लिए अपने पर कोई फज़ीलत भी

مِنْ فَضْلٍ ۢ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ۝٢٧ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ
नहीं देखते, बल्के हम तुम्हें झूठा गुमान करते हैं। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ए मेरी क़ौम! तुम्हारी

اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَاٰتٰىنِىْ رَحْمَةً

क्या राए है अगर मैं अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ से

مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ

रहमत अता की हो, और वो रोशन रास्ता तुम पर छुपा दिया जाए। तो क्या हम तुम से इस हिदायत को ज़बर्दस्ती चिपका दें इस हाल

لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝۲۸ وَ يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ

में के तुम उस को नापसन्द करते हो? और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम से इस पर किसी माल का सवाल नहीं करता।

اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ

मेरा अज्र तो अल्लाह के ज़िम्मे है और मैं उन को धुतकारने वाला नहीं हूँ जो ईमान

اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّىْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

लाए हैं। यक़ीनन वो अपने रब से मिलने वाले हैं लेकिन मैं तुम्हें ऐसी क़ौम देख रहा हूँ

تَجْهَلُوْنَ ۝۲۹ وَ يٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ

जो जहालत की बातें करते हो। और ऐ मेरी क़ौम! कौन बचाएगा मुझ को अल्लाह की गिरिफ्त से

اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝۳۰ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىْ

अगर मैं उन्हें धुतकार दूँ? क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और मैं तुम से नहीं केहता के मेरे पास

خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّىْ

अल्लाह के खज़ाने हैं और न मैं ग़ैब जानता हूँ और न मैं ये केहता हूँ के मैं

مَلَكٌ وَّلَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِىْۤ اَعْيُنُكُمْ

फरिश्ता हूँ और न मैं ये केहता हूँ उन लोगों के मुतअल्लिक़ जिन को तुम्हारी निगाहें हक़ीर समझती हैं के

لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ

अल्लाह उन को हरगिज़ कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह खूब जानता है उस को जो उन के दिलों में है।

اِنِّىْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۳۱ قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا

यक़ीनन तब तो मैं ज़ालिमों में से बन जाऊँगा। उन्हों ने कहा ऐ नूह! यक़ीनन आप ने हम से झगड़ा किया, फिर

فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ

आप ने हम से बहोत ज़्यादा झगड़ा कर लिया, इस लिए आप हमारे पास ले आइए वो अज़ाब जिस से आप हमें डरा रहे

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۳۲ قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ

हैं अगर आप सच्चों में से हैं। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के वो अज़ाब तो तुम्हारे पास सिर्फ अल्लाह ही लाएगा

شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْۤ

अगर वो चाहेगा और तुम उस वक्त अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकोगे। और तुम्हें मेरी नसीहत फाइदा नहीं देगी

اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ

अगर मैं चाहूं के मैं तुम्हारे लिए खैरख्वाही करूं अगर अल्लाह तुम्हें गुमराह करने का

اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ قف وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٤﴾ؕ

इरादा करे। वही तुम्हारा रब है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ

क्या वो केहते हैं के इस नबी ने उस को घड़ लिया है? आप फरमा दीजिए के अगर मैं ने उस को घड़ा है तो मेरे ऊपर मेरा जुर्म है

وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿٣٥﴾ؑ وَ اُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ

और मैं तुम्हारे जुर्मों से बरी हूँ। और नूह (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की गई के

اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ

आप की क़ौम में से हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे मगर वो जो ईमान ला चुके

فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ۚۖ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ

इस लिए आप मायूस न हों उन हरकतों की वजह से जो वो कर रहे हैं। और आप कशती बनाइए

بِاَعْيُنِنَا وَ وَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ

हमारी आँखों के सामने और हमारे हुक्म से और आप हम से गुफतगू न कीजिए उन के बारे में

ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ قف

जो ज़ालिम हैं। इस लिए के ये गर्क़ किए जाएंगे। और कशती बना रहे थे नूह (अलैहिस्सलाम)।

وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ؕ قَالَ

और जब कभी आप पर आप की क़ौम में से कोई रईस जमाअत गुज़रती तो वो आप से मज़ाक़ करती। नूह

اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ

(अलैहिस्सलाम) फरमाते के अगर तुम हम से मज़ाक़ करते हो, तो यक़ीनन हम भी तुम से मज़ाक़ करेंगे

كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ؕ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ

जिस तरह तुम मज़ाक़ करते हो। अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के किस पर ऐसा अज़ाब आता है

يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾ حَتّٰۤى اِذَا

जो उसे रूस्वा कर देगा और किस पर दाइमी अज़ाब उतरता है। यहां तक के जब

ع ٣

جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا

हमारा (अज़ाब का) हुक्म आया और तन्नूर जोश मारने लगा तो हम ने कहा के इस में आप सवार करा लीजिए हर

مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَ اَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ

क़िस्म से जोड़ा (यानी) दो दो (नर और मादा) और अपने एहल को मगर वो जिन के मुतअल्लिक़ पेहले बात हो

الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝٤٠

चुकी है और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं। और आप के साथ ईमान नहीं लाए थे मगर थोड़े।

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَ مُرْسٰىهَا ؕ

और नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इस का चलना है और इस का ठेहेरना है।

اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٤١ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ

यक़ीनन मेरा रब बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और ये कशती उन को ले कर चलती रही

كَالْجِبَالِ ۠ وَنَادٰى نُوْحُ ۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ

ऐसी मौजों में जो पहाड़ों की तरह थीं। नूह (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटे को पुकारा और वो किनारे में था,

يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٤٢

ऐ मेरे बेटे! तू हमारे साथ सवार हो जा और तू काफिरों के साथ मत रेह।

قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ

बेटे ने कहा अनक़रीब मैं पनाह लूंगा इस पहाड़ पर जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَ حَالَ

के आज अल्लाह के अज़ाब से कोई बचा नहीं सकता मगर वो जिस पर अल्लाह रहम करे। और उन दोनों के

بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ۝٤٣ وَ قِيْلَ يٰٓاَرْضُ

दरमियान मौज हाइल हो गई, फिर वो डूबने वालों में से हो गया। और हुक्म आया के ऐ ज़मीन!

ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَ غِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ

तू अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान! तू थम जा, और पानी खुश्क हो गया और मुआमला

الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ

खत्म हो गया और कश्ती ठेहेर गई जूदी पहाड़ पर और कहा गया के ज़ालिम क़ौम का

الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٤ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ

नास हो। और नूह (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब को पुकारा, फिर कहा ऐ मेरे रब! मेरा बेटा

مِنْ اَهْلِىْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ

मेरे एहल में से था और यक़ीनन तेरा वादा सच्चा है और तू तमाम फैसला करने वालों में बेहतरीन फैसला

الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ

करने वाला है। अल्लाह ने फरमाया ऐ नूह! यक़ीनन वो आप के एहल में से नहीं था। इस लिए के उस का

عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ

अमल ग़ैर सालेह था। इस लिए आप मुझ से ऐसा सवाल न करें जिस का आप को इल्म नहीं।

اِنِّىْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ

मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ इस की के तुम जहालत करने वालों में से न हो जाओ। नूह (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़

اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِىْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ

किया ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस से के मैं तुझ से सवाल करूं ऐसी चीज़ का जिस का मुझे इल्म नहीं।

وَاِلَّا تَغْفِرْ لِىْ وَتَرْحَمْنِىْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٤٧﴾

और अगर तू मेरी मग़फिरत नहीं करेगा और मुझ पर रहम नहीं करेगा तो मैं खसारा उठाने वालों में से बन जाऊँगा।

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ

कहा गया ऐ नूह! आप हमारी तरफ से सलामती और बरकतों के साथ उतर जाइए, आप पर भी

وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ

और उन उम्मतों पर भी जो आप के साथ हैं। और बहोत सी उम्मतें हैं अनक़रीब हम उन्हें फाइदा उठाने देंगे,

ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ

फिर उन्हें हमारी तरफ से दर्दनाक अज़ाब पहोंचेगा। ये ग़ैब की खबरों में से

الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ

है जिसे हम आप की तरफ वही कर रहे हैं, जो आप और आप की क़ौम

وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛؕ فَاصْبِرْ ۛؕ اِنَّ الْعَاقِبَةَ

इस से पेहले जानती नहीं थी। इस लिए आप सब्र कीजिए। यक़ीनन अच्छा अन्जाम

لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ

मुत्तक़ियों के लिए है। और क़ौमे आद की तरफ भेजा उन के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को। हूद (अलैहिस्सलाम)

اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا

ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। तुम तो सिर्फ

معانقة ٩ عند المتأخرين ١٢ الوقف على فاصبر احسن والله اعلم ١٢

مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ

झूठ घड़ते हो। ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम से इस पर किसी अज्र का सवाल नहीं करता। मेरा अज्र तो

اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾ وَيٰقَوْمِ

सिर्फ उस अल्लाह के ज़िम्मे है जिस ने मुझे पैदा किया। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? और ऐ मेरी क़ौम!

اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ

तुम अपने रब से इस्तिग़फार करो, फिर उस की तरफ तौबा करो, तो वो तुम पर आसमान को बरसता हुवा

مِّدْرَارًا وَّ يَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا

छोड़ेगा और तुम्हारी मौजूदा कुव्वत में और कुव्वत का इज़ाफा करेगा और मुजरिम बन कर

مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ

पुश्त मत फेरो। उन्हों ने कहा ऐ हूद! तुम हमारे पास कोई मोअजिज़ा नहीं लाए और हम अपने माबूदों को

بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

तुम्हारे केहने की वजह से छोड़ने वाले नहीं हैं और हम आप पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ

हम नहीं केहते मगर ये के हमारे माबूदों में से किसी ने आप को कोई बुराई लगा दी है।

قَالَ اِنِّيْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّيْ بَرِيْٓءٌ

हूद (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो के मैं बरी हूँ

مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ

उन चीज़ों से जिन को तुम शरीक ठेहराते हो। अल्लाह के अलावा। फिर तुम इकट्ठे हो कर मेरे खिलाफ तदबीर कर लो, फिर

لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾ اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ

मुझे मोहलत भी मत दो। यक़ीनन मैं ने अल्लाह पर तवक्कुल किया जो मेरा और तुम्हारा रब है।

مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ

कोई चौपाया नहीं मगर वो (अल्लाह) उस की चोटी पकड़े हुए है। यक़ीनन मेरा रब

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ

सीधे रास्ते पर है। फिर अगर तुम ऐराज़ करो तो मैं ने तुम्हें पहोंचा दिया

مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ

वो जिस को दे कर मैं तुम्हारी तरफ भेजा गया हूँ। और मेरा रब तुम्हारे अलावा किसी और क़ौम को जानशीन बनाएगा।

وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝۵۷
और तुम उस को ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकोगे। यक़ीनन मेरा रब हर चीज़ की हिफाज़त करने वाला है।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
और जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आया तो हम ने हूद (अलैहिस्सलाम) को और उन लोगों को जो उन के साथ ईमान

بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَ نَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝۵۸
लाए थे अपनी रहमत से नजात दी। और हम ने उन्हें सख्त अज़ाब से नजात दी।

وَتِلْكَ عَادٌ ۗ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ
और ये क़ौमे आद है, जिन्हों ने अपने रब की आयात का इन्कार किया और अल्लाह के पैग़म्बरों की नाफरमानी की

وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝۵۹ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ
और वो हर ज़ालिम सरकश के हुक्म के पीछे चले। और इस दुन्या में उन के पीछे

الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا
लानत कर दी गई और क़यामत के दिन भी। सुनो! यक़ीनन क़ौमे आद ने अपने रब से

رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝۶۰ ع وَاِلٰى ثَمُوْدَ
कुफ्र किया। सुनो! क़ौमे आद का नास हो, हूद (अलैहिस्सलाम) की क़ौम का। और क़ौमे समूद की तरफ भेजा

اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो,

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ
तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। उसी ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया

وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ
और उस ने तुम्हें ज़मीन में आबाद किया तो तुम उस से इस्तिग़फार करो, फिर उस की तरफ तौबा करो।

اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝۶۱ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ
यक़ीनन मेरा रब क़रीब, तौबा क़बूल करने वाला है। उन्हों ने कहा के ऐ सालेह! यक़ीनन आप

فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ
हमारे अन्दर क़ाबिले उम्मीद थे इस से पेहले। क्या आप हमें रोकते हो इस से के हम इबादत करें उन चीज़ों की

اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ
जिन की हमारे बाप दादा इबादत करते थे? और यक़ीनन हम उस की तरफ से गेहरे शक में हैं जिस की तरफ

اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٢﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ

तुम हमें दावत देते हो। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारी क्या राए है अगर मैं

عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَ اٰتٰنِىْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ

अपने रब की तरफ से रोशन रास्ते पर हूँ और उस ने मुझे अपनी तरफ से रहमत अता की हो,

يَّنْصُرُنِىْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ قف فَمَا تَزِيْدُوْنَنِىْ

फिर मुझे अल्लाह की गिरिफ्त से कौन बचाएगा अगर मैं अल्लाह की नाफरमानी करूं? फिर तुम मुझे नहीं बढ़ाते

غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾ وَ يٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ

सिवाए खसारे के। और ऐ मेरी क़ौम! ये अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए

اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِىْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا

निशानी है, तो तुम उस को छोड़ दो के अल्लाह की ज़मीन में खाए और तुम उसे बुराई के साथ

بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾ فَعَقَرُوْهَا

मत छुओ, वरना तुम्हें क़रीबी अज़ाब पकड़ लेगा। फिर उन्हों ने ऊँटनी के पैर काट दिए

فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِىْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ط ذٰلِكَ

तो सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मज़े उड़ा लो अपने घरों में तीन दिन। ये ऐसा

وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا

वादा है जो झुठलाया नहीं जा सकता। फिर जब हमारा (अज़ाब का) हुक्म आया तो हम ने सालेह (अलैहिस्सलाम) को

صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا

और उन लोगों को जो आप के साथ ईमान लाए थे हमारी रहमत से

وَ مِنْ خِزْىِ يَوْمِئِذٍ ط اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

और उस दिन की रूस्वाई से नजात दी। यक़ीनन तेरा रब वो कुव्वत वाला, ज़बर्दस्त है।

وَ اَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا

और ज़ालिमों को चीख ने पकड़ लिया, फिर वो अपने घरों में

فِىْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾ كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ط اَلَآ

घुटनों के बल पड़े रेह गए। गोया के वो उस में बसे ही नहीं थे। सुनो!

اِنَّ ثَمُوْدَاۡ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ط اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾ ع

यक़ीनन क़ौमे समूद ने कुफ्र किया अपने रब के साथ। सुनो! नास हो क़ौमे समूद के लिए।

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا

और यक़ीनन हमारे भेजे हुए फरिश्ते इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास बशारत ले कर आए तो उन्हों ने कहा

سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

अस्सलामु अलैकुम। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अस्सलामु अलैकुम, फिर वो नहीं ठेहरे के भुना हुवा बछड़ा ले आए।

فَلَمَّا رَآ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ

फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उन के हाथ देखे के उस (खाने) तक नहीं पहोंचते तो उन को अजनबी महसूस किया

مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ

और उन की तरफ से खौफ महसूस किया। फरिश्तों ने कहा के आप खौफ न कीजिए, यक़ीनन हम तो क़ौमे लूत की तरफ भेजे

لُوْطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا

गए हैं। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की बीवी खड़ी हुई थी, फिर वो हंस पड़ी तो हम ने उन्हें बशारत दी

بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ

इसहाक़ की। और इसहाक़ के पीछे याकूब की। वो केहने लगी

يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ

हाए अफसोस! क्या मैं औलाद जनूंगी हालांके मैं बूढ़ी हूँ और ये मेरे शौहर बूढ़े हैं।

اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ

यक़ीनन ये क़ाबिले तअज्जुब चीज़ है। उन्हों ने कहा के क्या तुम तअज्जुब करती हो

مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ

अल्लाह के हुक्म से? अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें तुम एहले बैत पर हैं।

اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ

यक़ीनन वो अल्लाह क़ाबिले तारीफ, बुज़ुर्ग है। फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से खौफ दूर

الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ

हो गया और उन के पास बशारत आई, तो वो हम से क़ौमे लूत के बारे में झगड़ने

لُوْطٍ ﴿٧٤﴾ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾

लगे। यक़ीनन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) निहायत बुर्दबार, आहें भरने वाले, तौबा करने वाले थे।

يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ

ऐ इब्राहीम! इस से आप ऐराज़ कीजिए, यक़ीनन आप के रब का हुक्म

رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾
आ गया। और यक़ीनन उन के पास ऐसा अज़ाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जाएगा।
وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ
और जब हमारे भेजे हुए फरिश्ते लूत (अलैहिस्सलाम) के पास आए तो वो उन की वजह से ग़मगीन हुए और उन की
بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَآءَهٗ
वजह से तंगदिल हुए और लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ये बड़ा सख्त दिन है। और लूत (अलैहिस्सलाम) के
قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ
पास उन की क़ौम आई उन की तरफ तेज़ दौड़ती हुई। और वो पेहले से बुराइयाँ करते
السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ
थे। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! ये मेरी बेटियाँ ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़ा
لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ
हैं, फिर तुम अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के बारे में रूस्वा मत करो। क्या तुम में
مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا
से कोई हिदायतयाफ्ता शख्स नहीं? वो केहने लगे यक़ीनन आप को मालूम है के हमें
فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَ اِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾
आप की बेटियों में कोई रग़बत नहीं है। और यक़ीनन आप जानते हैं वो जो हम चाहते हैं।
قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ
लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया काश के मुझे तुम पर कुव्वत होती या मैं किसी मज़बूत क़बीले की तरफ
شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا
पनाह लेता। उन्हों ने कहा के ऐ लूत! यक़ीनन हम तेरे रब के भेजे हुए फरिश्ते हैं, वो हरगिज़ आप तक
اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ
नहीं पहोंच सकेंगे, इस लिए आप अपने घर वालों को ले कर रात के किसी हिस्से में सफर कर जाइए
وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا
और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे मगर आप की बीवी, के उसे वो अज़ाब पहोंचने वाला है
مَآ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ
जो उन को पहोंचेगा। यक़ीनन उन के अज़ाब के वादे का वक़्त सुब्ह का वक़्त है। क्या सुब्ह

بِقَرِيْبٍ ﴿۸۱﴾ فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

क़रीब नहीं है? फिर जब हमारे अज़ाब का हुक्म आ गया तो हम ने उस के ऊपर वाले हिस्से को उस के नीचे वाला हिस्सा बना दिया

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿۸۲﴾

और हम ने उन के ऊपर मिट्टी के पथ्थर बरसाए, जो लगातार बरस रहे थे।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

जो निशानज़दा थे तेरे रब के पास। और ये बस्ती ज़ालिमों से कुछ दूर

بِبَعِيْدٍ ﴿۸۳﴾ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ

नहीं है। और मदयन वालों की तरफ उन के भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा। शुऐब (अलैहिस्सलाम)

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ

ने फरमाया के ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं।

وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ

और तुम नाप और तोल में कमी न करो, इस लिए के मैं तुम्हें अच्छी हालत में देख रहा हूँ

وَّاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿۸۴﴾ وَيٰقَوْمِ

और मैं तुम पर एक घेरने वाले दिन के अज़ाब का खौफ करता हूँ। और ऐ मेरी क़ौम!

اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا

नाप और तोल को इन्साफ के साथ पूरा पूरा दो और लोगों को उन की

النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿۸۵﴾

चीज़ें कम कर के मत दो और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो।

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ

अल्लाह की बकीय्या चीज़ें तुम्हारे लिए बेहतर हैं अगर तुम ईमान वाले हो।

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿۸۶﴾ قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ

और मैं तुम पर मुहाफिज़ नहीं हूँ। वो केहने लगे ऐ शुऐब! क्या आप की नमाज़ आप को

تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ

इस का हुक्म देती है के हम छोड़ दें उन को जिन की हमारे बाप दादा इबादत करते थे या ये के हम अपने

فِيْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿۸۷﴾

मालों में करना छोड़ दें जो हम चाहें? यक़ीनन तुम हिल्म वाले, हिदायतयाफता हो।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ
शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ऐ मेरी क़ौम! बतलाओ अगर मैं अपने रब की तरफ से वाज़ेह रास्ते पर हूँ
وَرَزَقَنِىْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ
और उस ने मुझे अपनी तरफ से अच्छी रोज़ी दी हो। और मैं नहीं चाहता के तुम्हारी मुखालफत करूँ
اِلٰى مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ
उन चीज़ों को कर के जिन से मैं तुम्हें रोकता हूँ। मैं तो सिर्फ इस्लाह चाहता हूँ
مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِىْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
जितनी मैं ताक़त रखूं। और मेरी तौफीक़ नहीं है मगर अल्लाह की तरफ से। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया
وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾ وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِىْٓ
और उसी की तरफ मैं रूजूअ करता हूँ। और ऐ मेरी क़ौम! मेरी मुखालफत तुम्हें इस बात की तरफ न ले जाए
اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ
के तुम्हें पहोंच जाए उस जैसा अज़ाब जो क़ौमे नूह या क़ौमे हूद
اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾ وَاسْتَغْفِرُوْا
या क़ौमे सालेह को पहोंचा। और क़ौमे लूत तुम से कुछ दूर नहीं हैं। और तुम अपने रब से इस्तिग़फार
رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّىْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا
करो, फिर तुम उस की तरफ तौबा करो। यक़ीनन मेरा रब बहोत ज़्यादा रहम करने वाला, महब्बत करने वाला है।
يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ
उन्हों ने कहा के ऐ शुऐब! हम बहोत सी बातें नहीं समझते उस में से जो तुम केहते हो और यक़ीनन हम तुम्हें अपने
فِيْنَا ضَعِيْفًا ج وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ز وَمَآ اَنْتَ
दरमियान कमज़ोर देख रहे हैं। और अगर आप का क़बीला न होता, तो हम आप को रज्म कर देते। और आप
عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِىْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ
हम पर कुछ भारी नहीं हो। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा क़बीला तुम पर अल्लाह से
مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّىْ
ज़्यादा भारी है? और तुम ने उस को अपनी पीठ पीछे डाल दिया है। यक़ीनन मेरा रब
بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾ وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ
तुम्हारे आमाल को घेरे हुए है। और ऐ मेरी क़ौम! अपनी जगह पर रेह कर अमल करते रहो,

إِنِّىْ عَامِلٌ ۭ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ

मैं भी अमल कर रहा हूँ। अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के किस पर ऐसा अज़ाब आता है जो

يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۭ وَارْتَقِبُوْٓا إِنِّىْ مَعَكُمْ

उस को रूस्वा कर दे और कौन झूठा है। और तुम मुन्तज़िर रहो, मैं तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने

رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ

वाला हूँ। और जब के हमारा अज़ाब आया तो हम ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को और उन लोगों को जो आप के

اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَأَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا

साथ ईमान लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया। और उन ज़ालिमों को चीख ने

الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩٤﴾ كَأَنْ

पकड़ लिया, फिर वो अपने घरों में घुटने के बल पड़े रेह गए। गोया के वो

لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾

उस में बसे ही नहीं थे। सुनो! नास हो मदयन के लिए जिस तरह के क़ौमे समूद का नास हुवा।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٦﴾

यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा अपने मोअजिज़ात दे कर और वाज़ेह दलील दे कर।

إِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ

फिरऔन और उस की क़ौम की तरफ़, फिर भी वो लोग फिरऔन के हुक्म पर चले।

وَمَآ أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

और फिरऔन का हुक्म अच्छा नहीं था। वो अपनी क़ौम के आगे आगे क़यामत के दिन चल रहा होगा,

فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۭ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿٩٨﴾ وَأُتْبِعُوْا

फिर उन को दोज़ख में दाखिल करेगा। और वो उतरने का बुरा घाट है। और इस

فِىْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ بِئْسَ الرِّفْدُ

दुन्या में उन के पीछे लानत कर दी गई और क़यामत के दिन भी। बहोत बुरी मदद है जो

الْمَرْفُوْدُ ﴿٩٩﴾ ذٰلِكَ مِنْ أَنْبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ

उन को दी गई। ये उन बस्तियों के क़िस्सों में से कुछ हम आप के सामने तिलावत करते हैं

مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿١٠٠﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ

जिन में से कुछ खड़ी हुई हैं और कुछ कटी हुई हैं। और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन

ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِیْ

वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे, फिर उन के कुछ काम नहीं आए उन के वो माबूद जिन को

یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ

वो अल्लाह को छोड़ कर पुकारते थे जब के आप के रब का अज़ाब

رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوْهُمْ غَیْرَ تَتْبِیْبٍ ﴿۱۰۱﴾ وَكَذٰلِكَ اَخْذُ

आया। और उन (मुशरिकीन) को सिवाए नुक़सान के उन्हों (माबूदों) ने नहीं बढ़ाया। इसी तरह आप के

رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِیَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗٓ

रब की पकड़ होती है जब वो बस्तियों को पकड़ता है जब के वो ज़ालिम होती हैं। यक़ीनन उस की पकड़

اَلِیْمٌ شَدِیْدٌ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّمَنْ خَافَ

दर्दनाक, सख्त है। यक़ीनन उस में निशानी है उस शख्स के लिए जो आखिरत के

عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ یَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ

अज़ाब से डरे। ये वो दिन है के जिस के लिए इन्सानों को जमा किया जाएगा

وَ ذٰلِكَ یَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿۱۰۳﴾ وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ

और ये वो दिन है जिस में गवाहों को हाज़िर किया जाएगा। और हम उस को मुअख्खर नहीं कर रहे मगर मुक़र्रर किए हुए

مَّعْدُوْدٍ ﴿۱۰۴﴾ یَوْمَ یَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ

वक़्त के लिए। जिस दिन वो आएगा तो कोई शख्स बात नहीं कर सकेगा मगर अल्लाह की इजाज़त से।

فَمِنْهُمْ شَقِیٌّ وَّسَعِیْدٌ ﴿۱۰۵﴾ فَاَمَّا الَّذِیْنَ شَقُوْا

फिर उन में से कुछ बदबख्त होंगे और कुछ नेकबख्त होंगे। अलबत्ता जो बदबख्त होंगे

فَفِی النَّارِ لَهُمْ فِیْهَا زَفِیْرٌ وَّ شَهِیْقٌ ﴿۱۰۶﴾ ۙ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا

वो दोज़ख में होंगे, उन के लिए उस में चिल्लाना और सिसकियाँ होंगी। जिस में वो हमेशा रहेंगे

مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ

जब तक के आसमान और ज़मीन बाक़ी हैं, मगर जितना आप का रब चाहे।

اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ ﴿۱۰۷﴾ وَاَمَّا الَّذِیْنَ سُعِدُوْا

यक़ीनन आप का रब वही करता है जिस का वो इरादा करता है। अलबत्ता जो नेकबख्त होंगे

فَفِی الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ

वो जन्नत में होंगे जिस में वो हमेशा रहेंगे जब तक आसमान

وَالۡاَرۡضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيۡرَ مَجۡذُوۡذٍ ﴿١٠٨﴾
और ज़मीन क़ाइम हैं, मगर जितना आप का रब चाहे। ऐसी अता के तौर पर जो बन्द नहीं की जाएगी।
فَلَا تَكُ فِىۡ مِرۡيَةٍ مِّمَّا يَعۡبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعۡبُدُوۡنَ
फिर आप शक में न रहिए उस की तरफ से जिन की ये लोग इबादत करते हैं। ये इबादत नहीं करते हैं
اِلَّا كَمَا يَعۡبُدُ اٰبَآؤُهُمۡ مِّنۡ قَبۡلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوۡهُمۡ
मगर उसी तरह जिस तरह के इस से पेहले उन के बाप दादा इबादत करते थे। और यक़ीनन हम उन को उन का
نَصِيۡبَهُمۡ غَيۡرَ مَنۡقُوۡصٍ ﴿١٠٩﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى
हिस्सा पूरा पूरा देने वाले हैं इस हाल में के वो कम नहीं किया जाएगा। और यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम)
الۡكِتٰبَ فَاخۡتُلِفَ فِيۡهِ ؕ وَلَوۡلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتۡ
को किताब दी, फिर उस में इखतिलाफ किया गया। और अगर एक बात आप के रब की तरफ से पेहले हो चुकी
مِنۡ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّهُمۡ لَفِىۡ شَكٍّ مِّنۡهُ
न होती तो उन के दरमियान फैसला कर दिया जाता। और यक़ीनन वो उस की तरफ से बड़े शक
مُرِيۡبٍ ﴿١١٠﴾ وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمۡ رَبُّكَ
में हैं। और बेशक सब को आप का रब उन के आमाल पूरे पूरे
اَعۡمَالَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ ﴿١١١﴾ فَاسۡتَقِمۡ
देगा। इस लिए के वो उन के आमाल से पूरी तरह बाखबर है। इस लिए आप इस्तिक़ामत इखतियार कीजिए
كَمَآ اُمِرۡتَ وَمَنۡ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطۡغَوۡا ؕ اِنَّهٗ
जैसा आप को हुक्म दिया गया है, और वो लोग भी जिन्हों ने आप के साथ तौबा की है, और तुम दाइरे से न निकलो। यक़ीनन वो
بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ﴿١١٢﴾ وَلَا تَرۡكَنُوۡۤا اِلَى الَّذِيۡنَ
तुम्हारे आमाल को देख रहा है। और तुम उन ज़ालिमों की तरफ ज़रा भी मैलान
ظَلَمُوۡا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ
न करना, वरना तुम्हें आग पहोंच कर रहेगी। और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई हिमायती
مِنۡ اَوۡلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنۡصَرُوۡنَ ﴿١١٣﴾ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَىِ
नहीं होंगे, फिर तुम्हारी नुसरत नहीं की जा सकेगी। और आप दिन के दोनों किनारों
النَّهَارِ وَ زُلَفًا مِّنَ الَّيۡلِ ؕ اِنَّ الۡحَسَنٰتِ يُذۡهِبۡنَ
में और रात की इब्तिदाई घड़ियों में नमाज़ क़ाइम कीजिए। यक़ीनन नेकियाँ बुराइयों को

السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَاصْبِرْ

खत्म कर देती हैं। ये याद रखने वालों के लिए याददिहानी है। और आप सब्र कीजिए,

فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۱۵﴾

फिर यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं करते।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ

फिर उन क़ौमों में से जो तुम से पेहले थीं अक़्ल वाले लोग क्यूं न हुए

يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِى الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ

जो ज़मीन में फसाद से रोकते सिवाए थोड़े लोगों के उन में से

اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَاۤ اُتْرِفُوْا فِيْهِ

जिन को हम ने नजात दी? और ज़ालिम लोग उस के पीछे पड़े जिस में उन्हें ऐश मिला,

وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ

और वो मुजरिम थे। और आप का रब ऐसा नहीं के बस्तियों

الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَلَوْ شَآءَ

को ज़ुल्म से हलाक कर दे जब के वहाँ वाले इस्लाह कर रहे हों। और अगर आप का

رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ

रब चाहता तो तमाम इन्सानों को एक उम्मत बना देता। और ये बराबर इख़तिलाफ

مُخْتَلِفِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ

करते रेहते हैं। मगर जिन पर आप के रब ने रहम किया। और इसी वजह से अल्लाह ने उन को पैदा किया है।

وَ تَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ

और आप के रब का कलिमा ताम्म हो कर रहा के मैं इन्सानों और जिन्नात सब से जहन्नम को

وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ

ज़रूर भरूंगा। और हम पैग़म्बरों के क़िस्सों में से आप के सामने

مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ

बयान करते हैं के हम इस से आप के दिल को मज़बूत करें। और इन क़िस्सों में आप के

فِىْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَقُلْ

पास हक़ और नसीहत और ईमान वालों के लिए याददिहानी आई है। और आप फरमा दीजिए

لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا

उन से जो ईमान नहीं लाते के तुम अपनी जगह पर रेह कर अमल करते रहो, हम भी

عٰمِلُوْنَ ۝١٢١ وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝١٢٢ وَلِلّٰهِ غَيْبُ

अमल कर रहे हैं। और तुम इन्तिज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं। और अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की छुपी

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ

हुई चीज़ों का इल्म है और उसी की तरफ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे, तो आप उसी की इबादत कीजिए

وَ تَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝١٢٣

और उसी पर तवक्कुल कीजिए। और आप का रब तुम्हारे अमल से बेखबर नहीं है।

اٰيَاتُهَا ١١١ (١٢) سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ (٥٣) رُكُوْعَاتُهَا ١٢

उस में १११ आयतें हैं सूरह यूसुफ मक्का में नाज़िल हुई और १२ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝١ ۫ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ

अलिफ लाम रॉ। ये साफ साफ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं। यक़ीनन हम ने उसे

قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢ نَحْنُ نَقُصُّ

अरबी कुरआन बना कर उतारा है ताके तुम समझ सको। हम आप के सामने

عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا

बेहतरीन क़िस्सा बयान करते हैं इस कुरआन के ज़रिए जो हम ने आप की तरफ

الْقُرْاٰنَ ۖۗ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝٣

वही किया। और यक़ीनन इस से पेहले आप बेखबर लोगों में से थे।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ

जब के यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने अब्बा से कहा ऐ मेरे अब्बा! मैं ने ग्यारा

كَوْكَبًا وَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝٤

सितारे और सूरज और चाँद को देखा, मैं ने उन्हें देखा के मुझे सज्दा कर रहे हैं।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰٓى اِخْوَتِكَ

याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे बेटे! अपना ख्वाब अपने भाइयों के सामने बयान मत करना

فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ

वरना वो तेरे खिलाफ तदबीर करेंगे। यक़ीनन शैतान इन्सान का खुला

مُّبِيْنٌ ۝٥ وَ كَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ

दुशमन है। और इसी तरह तेरा रब तुझे मुन्तखब करेगा और तुझे

مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ

ख्वाबों की ताबीर का इल्म देगा और अपनी नेअमत तुझ पर इत्माम तक पहोंचाएगा

وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ اَتَمَّهَا عَلٰٓى اَبَوَيْكَ

और आले याकूब पर भी जैसा के उसे इत्माम तक पहोंचाया इस से पेहले तेरे अजदाद

مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦

इब्राहीम और इसहाक़ (अलैहिमस्सलाम) पर। यक़ीनन तेरा रब इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝٧

यक़ीनन यूसुफ (अलैहिस्सलाम) और उन के भाइयों में सवाल करने वालों के लिए बहोत सी निशानियाँ थीं।

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰٓى اَبِيْنَا مِنَّا

और वो वक़्त क़ाबिले ज़िक्र है जब के उन्हों ने कहा के यूसुफ और उन का भाई हमारे अब्बा को हम से ज़्यादा महबूब हैं

وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۝٨ اقْتُلُوْا

हालांके हम मज़बूत जमाअत हैं। यक़ीनन हमारे अब्बा अलबत्ता खुली ग़लती में हैं। तुम यूसुफ

يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ

को क़त्ल कर दो या उसे किसी ज़मीन में फैंक दो तो तुम्हारे लिए तुम्हारे अब्बा की तवज्जुह खालिस रेह जाएगी

وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ۝٩ قَالَ قَآئِلٌ

और उस के बाद तुम अच्छे लोग बन जाना। उन में से किसी केहने वाले

مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ

ने कहा के तुम यूसुफ को क़त्ल मत करो बल्के उसे कुवें की तारीकियों में फैंक दो

يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝١٠

के उसे गुज़रने वाले काफलों में से कोई उठा लेगा, अगर तुम ऐसा करने वाले हो।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا

उन्हों ने कहा के ऐ हमारे अब्बा! आप को क्या हुवा के आप हम पर मुतमइन नहीं यूसुफ के बारे में हालांके हम यक़ीनन

لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ﴿١١﴾ اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَ يَلْعَبْ

उस के खैरख्वाह हैं। आप उसे हमारे साथ कल को भेज दीजिए के वो खाए और खेले

وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿١٢﴾ قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ اَنْ تَذْهَبُوْا

और यक़ीनन हम उस की हिफाज़त करेंगे। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन मुझे ये बात ग़मगीन करती

بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ

है के तुम उसे ले जाओ और मैं डरता हूँ इस से के उसे भेड़िया खा जाए इस हाल में के तुम उस से

غٰفِلُوْنَ ﴿١٣﴾ قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّآ

बेखबर हो। उन्हों ने कहा के अगर उस को भेड़िया खा जाए इस हाल में के हम मज़बूत नौजवान हैं, यक़ीनन तब तो हम

اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْٓا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ

उस वक़्त खसारे वाले होंगे। फिर जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को ले कर गए और उन्हों ने इत्तिफाक़ कर लिया इस

فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ

बात पर के यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को कुंवें की तारीकियों में डाल दें। और हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की तरफ

هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾ وَ جَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً

वही की के ज़रूर आप उन को जतलाओगे उन की ये हरकत इस हाल में के उन को पता भी नहीं होगा। और वो अपने अब्बा के पास

يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾ قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَ تَرَكْنَا

इशा के वक़्त रोते हुए आए। केहने लगे के ऐ हमारे अब्बा! यक़ीनन हम दौड़ने लगे थे और हम ने

يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ

छोड़ दिया था यूसुफ को अपने सामान के पास, फिर उसे भेड़िया खा गया। और आप हम पर यकीन करने वाले

لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ

नहीं हैं अगर्चे हम सच्चे हों। और वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की क़मीस पर झूठा खून ले कर

كَذِبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ

आए। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया बल्के तुम्हारे लिए तुम्हारे नफ्सों ने एक अम्र को मुज़य्यन किया है। अब तो सब्र

جَمِيْلٌ ۭ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ

ही बेहतर है। और अल्लाह मददगार है उस बात पर जो तुम बयान करते हो। और एक क़ाफला

سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ يٰبُشْرٰى

आया, फिर उन्हों ने अपने पानी लाने वाले को भेजा तो उस ने अपना डोल लटकाया। तो वो केहने लगा ओ खुशखबरी हो!

الثلثة

هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

ये तो लड़का है। और उनहों ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को सामान बना कर छुपा दिया, और अल्लाह खूब जानते हैं उस हरकत को जो वो करते थे।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ

और उन्हों ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को बेच दिया मामूली क़ीमत के बदले में, गिने चुने चन्द दराहिम के बदले में। और वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ

में बेरग़बती करने वालों में से थे। और उस शख्स ने जिस ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को खरीदा मिस्र से उस

لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ

ने अपनी बीवी से कहा के तू इन का ठिकाना अच्छा रख, हो सकता है के वो हमें नफा दे

اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ز

या हम उसे लड़का ही बना लें। और इस तरह हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को उस मुल्क में क़ुदरत दी।

وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ

और इस लिए ताके हम उन्हें ख्वाबों की ताबीर सिखलाएं। और अल्लाह अपने हुक्म पर ग़ालिब

عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ

हैं लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। और जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) अपनी जवानी को पहोंच

اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

गए, तो हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को हिक्मत और इल्म दिया। और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ

और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की तलबगार हुई वो औरत जिस के कमरे में यूसुफ (अलैहिस्सलाम) थे और तमाम

الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ

दरवाज़े उस ने बन्द कर लिए और केहने लगी जल्दी आ जाओ। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अल्लाह की पनाह! अज़ीज़े मिस्र

رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ

मेरे मुरब्बी ने बहोत अच्छी तरह मुझे रखा है। यक़ीनन ज़ालिम फलाह नहीं पाते। यक़ीनन उस औरत ने

هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) का इरादा कर ही लिया था। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) भी उस का इरादा कर लेते अगर अपने रब के बुरहान को न देखते।

كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ

इसी तरह (हम ने किया) ताके हम यूसुफ (अलैहिस्सलाम) से फेर दें बुराई और बेहयाई को। यक़ीनन यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ
हमारे खालिस किए हुए बन्दों में से थे। और दोनों दरवाज़े की तरफ दौड़े और औरत (जुलैखा) ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ
की कमीस पीछे से फाड़ दी और दोनों ने जुलैखा के शौहर को पाया दरवाज़े के पास। जुलैखा केहने लगी के उस

مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ
शख्स की सज़ा क्या है जो आप की बीवी के साथ बुराई का इरादा करे सिवाए इस के के उस को क़ैद कर दिया जाए या उसे

اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَ شَهِدَ شَاهِدٌ
दर्दनाक सज़ा दी जाए? यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये औरत तो खुद मुझ से मेरी तालिब हुई थी और जुलैखा

مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ
के घर वालों में से एक गवाही देने वाले ने गवाही दी के अगर उस का कुर्ता आगे से फटा हुवा है तो जुलैखा सच्ची

وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾ وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ
है और यूसुफ झूठों में से है। और अगर उन का कुर्ता पीछे से फटा हुवा

مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ
है तो जुलैखा झूठी है और यूसुफ सच्चों में से है। फिर जब अज़ीज़े मिस्र ने उन का कुर्ता देखा जो

قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ
फटा हुवा था पीछे से तो उस ने कहा के यक़ीनन ये तुम्हारी मक्कारियों में से है। यक़ीनन तुम्हारा मक्र

عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا سكتة وَاسْتَغْفِرِيْ
बड़ा भारी होता है। ऐ यूसुफ! तुम इस से ऐराज़ करो। और (ऐ जुलैखा!) तू अपने गुनाह के लिए

لِذَنْۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿٢٩﴾ وَ قَالَ نِسْوَةٌ
इस्तिग़फार कर। यक़ीनन तू ही कुसूरवार है। और शेहर की औरतों

فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ
ने कहा के अज़ीज़े मिस्र की बीवी अपने गुलाम से उसी का मुतालबा करती है।

قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾
यक़ीनन उस की महब्बत उस के दिल के अन्दर घुस गई है। यक़ीनन हम उसे खुली ग़लती में देख रही हैं।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ
फिर जब उस ने उन का मक्र सुना तो उस ने उन को बुलाने के लिए आदमी भेजा और उन के लिए एक बैठक

لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا
(मजलिस) तय्यार की और उन औरतों में से हर एक को छुरी दी

وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ
और कहा के यूसुफ! तुम उन के सामने निकल कर आओ। फिर जब उन औरतों ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को देखा तो शशदर रेह

اَيْدِيَهُنَّ وَ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَاۤ
गईं और उन्हों ने अपने हाथ काट लिए और केहने लगीं अल्लाह की पनाह! ये इन्सान नहीं है। ये नहीं है

اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ؕ
मगर एक बुज़ुर्ग फरिशता। जुलैखा केहने लगी फिर यही तो वो है जिस के बारे में तुम मुझे मलामत करती थीं।

وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ
यक़ीनन मैं उस की तालिब हुई, लेकिन उस ने मासूम रेहना चाहा। और अगर वो

لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾
नहीं करेगा वो जिस का मैं उसे हुक्म दे रही हूँ तो यक़ीनन उसे कैद कर दिया जाएगा और वो ज़लील लोगों में से हो जाएगा।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَىَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِىْۤ اِلَيْهِ ۚ
यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब! क़ैदखाना मुझे ज़्यादा महबूब है उस काम से जिस की तरफ ये मुझे बुला रही हैं।

وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّىْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ
और अगर तू मुझ से उन की मक्कारी को नहीं फेरेगा तो मैं उन की तरफ माइल हो जाऊँगा और मैं जाहिलों में

مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾ فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ
से बन जाऊँगा। उस के रब ने उस की दुआ क़बूल की, फिर यूसुफ (अलैहिस्सलाम) से उन के मक्र को फेर दिया।

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا
यक़ीनन वो सुनने वाला, इल्म वाला है। फिर उन्हें खयाल आया इस के बाद के उन्हों ने बहोत सी निशानियाँ

الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾ وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ
देख लीं के यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को एक वक्त तक के लिए क़ैद कर दें। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के साथ क़ैदखाने में दाखिल

فَتَيٰنِ ؕ قَالَ اَحَدُهُمَاۤ اِنِّىْۤ اَرٰىنِىْۤ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ
हुए दो नौजवान। उन में से एक ने कहा के यक़ीनन मैं ख्वाब देख रहा हूँ के मैं शराब निचोड़ रहा हूँ।

وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّىْۤ اَرٰىنِىْۤ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِىْ خُبْزًا تَاْكُلُ
और दूसरे ने कहा के मैं ख्वाब देख रहा हूँ के मैं अपने सर पर रोटियाँ उठाए हुए हूँ जिस में से

الطَّيْرُ مِنْهُ ؕ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٦﴾

परिन्दे खा रहे हैं। ऐ यूसुफ! आप हमें इस की ताबीर दीजिए। यक़ीनन हम आप को नेक लोगों में से देख रहे हैं।

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖۤ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम्हारे पास नहीं आएगा वो खाना जो तुम्हें खाने को दिया जाता है मगर मैं तुम्हें उस की ताबीर

قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ؕ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ؕ اِنِّيْ

बतलाऊँगा इस से पेहले के वो तुम्हारे पास आए। ये उन उलूम में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखलाए हैं। यक़ीनन

تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

मैं ने उस क़ौम का मज़हब छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती और जो आखिरत का इन्कार करने

كٰفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ

वाली है। और मैं ने अपने बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) की मिल्लत का इत्तिबा

وَيَعْقُوْبَ ؕ مَا كَانَ لَنَاۤ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ

किया है। हमारे लिए जाइज़ नहीं है के हम अल्लाह का शरीक ठेहराएं किसी भी चीज़ को।

ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

ये अल्लाह का हम पर फज़्ल है और तमाम इन्सानों पर भी, लेकिन अक्सर

النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٨﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ

लोग शुक्र अदा नहीं करते। ऐ क़ैदखाने के साथियो! क्या अलग अलग

مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾ مَا تَعْبُدُوْنَ

रब बेहतर हैं या यकता ग़ालिब अल्लाह बेहतर है? तुम अल्लाह को छोड़ कर के

مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ

इबादत नहीं करते मगर चन्द नामों की जो तुम और तुम्हारे बाप दादा ने रख रखे हैं, अल्लाह ने

اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ

उस पर कोई दलील नहीं उतारी। हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का चलता है। जिस ने हुक्म दिया है

اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

के इबादत मत करो मगर उसी की। यही सीधा दीन है, लेकिन लोगों

النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾ يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّاۤ اَحَدُكُمَا

में से अक्सर जानते नहीं हैं। ऐ क़ैदखाने के साथियो! अलबत्ता तुम में से एक

فَيَسْقِىْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ

वो अपने बादशाह को शराब पिलाएगा। और अलबत्ता दूसरा उसे सूली दी जाएगी, फिर उस के सर में से

مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِىَ الْاَمْرُ الَّذِىْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿٤١﴾

परिन्दे खाएंगे। उस मुआमले का फैसला हो चुका जिस के बारे में तुम पूछ रहे हो।

وَقَالَ لِلَّذِىْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِىْ

और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उस शख्स से फरमाया के जिस के मुतअल्लिक़ आप ने गुमान किया के वो उन दोनों में से नजात पाने वाला

عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِى السِّجْنِ

है के तू मुझे अपने बादशाह के यहाँ याद रखना। फिर शैतान ने उसे भुला दिया यूसुफ (अलैहिस्सलाम) का बादशाह से तज़किरा करना, फिर

بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّىْۤ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) क़ैदखाने में कई साल ठेहरे रहे। और बादशाह ने कहा के यक़ीनन मैं सात मोटी गाएं देख रहा

سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ

हूँ जिन को खा रही हैं सात दुबली गाएं और सात सब्ज़ खोशों को देख रहा हूँ और दूसरे सात खुश्क खोशों

وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِىْ فِىْ رُءْيَاىَ

को देख रहा हूँ। ऐ दरबारियो! तुम मुझे बताओ मेरे ख्वाब के बारे में

اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ

अगर तुम ख्वाब की ताबीर जानते हो। उन्हों ने कहा के ये तो ज़ेहनी तसव्वुरात ही के ख्वाब हैं।

وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَقَالَ الَّذِىْ

और हम ऐसे ख्वाबों की ताबीर नहीं जानते। और उस शख्स ने कहा जिस ने दो आदमियों में से

نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ

नजात पाई थी और उस को याद आया एक तवील ज़माने के बाद, उस ने कहा के मैं तुम्हें इस ख्वाब की ताबीर बतलाऊँगा,

فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾ يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِىْ سَبْعِ

इस लिए तुम मुझे भेजो। ऐ यूसुफ! ऐ सिद्दीक़! आप हमें ताबीर दीजिए सात मोटी

بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ

गायों के बारे में जिन को खा रही हैं सात दुबली गाएं और सात सब्ज़ खोशों

سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّىْۤ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ

के बारे में और दूसरे सात खुश्क खोशों के बारे में, ताके मैं उन लोगों के पास वापस जाऊँ

ع ٥/٧ ١٥

لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٤٦ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ

ताके उन्हें इल्म हो। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम खेती करोगे लगातार सात साल।

فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا

फिर जो तुम खेती करो उसे छोड़ दो उस के खोशे में मगर थोड़ा उस में से

مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ۝٤٧ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ

जो तुम खाओ। फिर उस के बाद सात सख्त साल आएंगे

يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ۝٤٨

जो खा जाएंगे उसे जो तुम ने उन के लिए पेहले से तय्यार किया है मगर थोड़ा उस में से जो तुम महफ़ूज़ रखो।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ

फिर उस के बाद एक साल आएगा जिस में लोगों पर बारिश बरसाई जाएगी

وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۝٤٩ ع وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ

और उस में वो फल निचोड़ेंगे। और बादशाह ने कहा के तुम उसे मेरे पास ले आओ।

فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْئَلْهُ مَا بَالُ

चुनांचे जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास क़ासिद आया, तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तू अपने बादशाह के पास वापस जा,

النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ

फिर उस से पूछ के उन औरतों का क्या हाल है जिन्हों ने अपने हाथ काट दिए थे। यक़ीनन मेरा रब उन के मक्र को खूब

عَلِيْمٌ ۝٥٠ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ

जानता है। अज़ीज़े मिस्र ने पूछा के तुम्हारा क्या वाकिआ है जब तुम ने यूसुफ को उस की ज़ात से वरग़लाया?

عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ

उन्हों ने कहा के अल्लाह की पनाह! हम उन के बारे में कोई बुराई नहीं जानते। अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने कहा के अब हक़ वाज़ेह

قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ز اَنَا رَاوَدْتُّهٗ

हो गया। मैं ने उस को वरग़लाया था (मुतालबा किया था उस की ज़ात का, न किसी खिदमत का) उस की ज़ात से और यक़ीनन वो सच्चों में से

عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٥١ ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ

है। (यूसुफ अलैहिस्सलाम ने फरमाया ये मैं ने अपनी बराअत के लिए सब कुछ बर्दाश्त किया) ये इस लिए ताके वो (अज़ीज़े मिस्र)

لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ۝٥٢

जान ले के मैं ने उस से खयानत नहीं की उस की ग़ैबत में और ये के अल्लाह खयानत करने वालों के मक्र को चलने नहीं देते।

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفۡسِىۡ ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوۡٓءِ

और मैं अपने नफ्स की बराअत नहीं करता। यक़ीनन नफ्स तो बहोत ज़्यादा बुराई का हुक्म देने वाला है

اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىۡ ؕ اِنَّ رَبِّىۡ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۵۳﴾ وَقَالَ

मगर वो जिस पर मेरा रब रहम करे। यक़ीनन मेरा रब बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और बादशाह ने कहा के

الۡمَلِكُ ائۡتُوۡنِىۡ بِهٖۤ اَسۡتَخۡلِصۡهُ لِنَفۡسِىۡ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ

तुम उसे मेरे पास ले आओ, मैं उसे अपनी ज़ात के लिए खालिस रखना चाहता हूँ। फिर जब बादशाह ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

قَالَ اِنَّكَ الۡيَوۡمَ لَدَيۡنَا مَكِيۡنٌ اَمِيۡنٌ ﴿۵۴﴾ قَالَ

से बात की तो बादशाह ने कहा के यक़ीनन आप आज से हमारे नज़दीक अमानतदार इज़्ज़त के मरतबे पर हो। यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

اجۡعَلۡنِىۡ عَلٰى خَزَآٮِٕنِ الۡاَرۡضِ ۚ اِنِّىۡ حَفِيۡظٌ عَلِيۡمٌ ﴿۵۵﴾

ने फरमाया के आप मुझे ज़मीन के खज़ानों पर मुक़र्रर कर दीजिए। यक़ीनन मैं हिफाज़त करने वाला, जानने वाला हूँ।

وَ كَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوۡسُفَ فِى الۡاَرۡضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنۡهَا

और इसी तरह हम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को उस मुल्क में हुकूमत दी। वो ठिकाना बनाते थे उस मुल्क में

حَيۡثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيۡبُ بِرَحۡمَتِنَا مَنۡ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيۡعُ

जहाँ चाहते। हमारी रहमत हम पहोंचाते हैं जिसे चाहते हैं और हम नेकी करने वालों का अज्र

اَجۡرَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۵۶﴾ وَلَاَجۡرُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ

ज़ायेअ नहीं करते। और अलबत्ता आखिरत का अज्र बेहतर है उन के लिए जो

اٰمَنُوۡا وَ كَانُوۡا يَتَّقُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَجَآءَ اِخۡوَةُ يُوۡسُفَ

ईमान वाले हैं और जो मुत्तक़ी हैं। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के भाई आए, फिर वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम)

فَدَخَلُوۡا عَلَيۡهِ فَعَرَفَهُمۡ وَهُمۡ لَهٗ مُنۡكِرُوۡنَ ﴿۵۸﴾

के पास पहोंचे तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन को पेहचान लिया और वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को पेहचानते नहीं थे।

وَلَمَّا جَهَّزَهُمۡ بِجَهَازِهِمۡ قَالَ ائۡتُوۡنِىۡ بِاَخٍ لَّكُمۡ

और जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन को उन का सामान तय्यार कर के दिया तो फरमाया के तुम मेरे पास अपने उस भाई को भी ले आओ

مِّنۡ اَبِيۡكُمۡ ۚ اَلَا تَرَوۡنَ اَنِّىۡۤ اُوۡفِى الۡكَيۡلَ وَاَنَا

जो तुम्हारे बाप की तरफ से है। क्या तुम देखते नहीं के मैं अनाज पूरा पूरा देता हूँ और मैं

خَيۡرُ الۡمُنۡزِلِيۡنَ ﴿۵۹﴾ فَاِنۡ لَّمۡ تَاۡتُوۡنِىۡ بِهٖ فَلَا كَيۡلَ لَكُمۡ

बेहतरीन मेज़बानी करने वाला हूँ। फिर अगर तुम उस को मेरे पास नहीं लाओगे तो तुम्हें ग़ल्ला नहीं मिलेगा

عِنۡدِیۡ وَلَا تَقۡرَبُوۡنِ ﴿۶۰﴾ قَالُوۡا سَنُرَاوِدُ عَنۡهُ اَبَاهُ

मेरे पास और तुम मेरे क़रीब भी मत आना। उन्हों ने कहा के हम उसे उस के अब्बा से इसरार के साथ

وَاِنَّا لَفٰعِلُوۡنَ ﴿۶۱﴾ وَقَالَ لِفِتۡیٰنِهِ اجۡعَلُوۡا بِضَاعَتَهُمۡ

तलब करेंगे और यक़ीनन हम ऐसा करेंगे। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने खादिमों से फरमाया के तुम उन

فِیۡ رِحَالِهِمۡ لَعَلَّهُمۡ یَعۡرِفُوۡنَهَاۤ اِذَا انۡقَلَبُوۡۤا

की पूंजी उन के सामान में रख दो ताके वो उस को पेहचान लें जब वो पलट कर जाएं

اِلٰۤی اَهۡلِهِمۡ لَعَلَّهُمۡ یَرۡجِعُوۡنَ ﴿۶۲﴾ فَلَمَّا رَجَعُوۡۤا

अपने घर वालों के पास ताके वापस आएं। फिर जब वो अपने अब्बा के पास वापस पहोंचे

اِلٰۤی اَبِیۡهِمۡ قَالُوۡا یٰۤاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الۡکَیۡلُ فَاَرۡسِلۡ

तो उन्हों ने कहा के ऐ हमारे अब्बा! हम से ग़ल्ला रोक दिया गया, इस लिए हमारे साथ हमारे भाई

مَعَنَاۤ اَخَانَا نَکۡتَلۡ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ ﴿۶۳﴾ قَالَ

(बिनयामीन) को भेजिए के हम ग़ल्ला लाएं और हम यक़ीनन उस की हिफाज़त करेंगे। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के क्या

هَلۡ اٰمَنُکُمۡ عَلَیۡهِ اِلَّا کَمَاۤ اَمِنۡتُکُمۡ عَلٰۤی اَخِیۡهِ مِنۡ قَبۡلُ ؕ

मैं तुम्हें उस के बारे में अमीन समझूं जैसा के मैं ने उस के भाई के बारे में इस से पेहले तुम्हें अमीन समझा था?

فَاللّٰهُ خَیۡرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِیۡنَ ﴿۶۴﴾

फिर अल्लाह बेहतरीन हिफाज़त करने वाला है। और वो अरहमुर्राहिमीन है।

وَلَمَّا فَتَحُوۡا مَتَاعَهُمۡ وَجَدُوۡا بِضَاعَتَهُمۡ رُدَّتۡ اِلَیۡهِمۡ ؕ

और जब उन्हों ने अपना सामान खोला तो अपनी पूंजी को पाया के जो उन की तरफ वापस लौटा दी गई थी।

قَالُوۡا یٰۤاَبَانَا مَا نَبۡغِیۡ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتۡ اِلَیۡنَا ۚ

उन्हों ने कहा हमारे अब्बा! हमें क्या चाहिए? ये हमारी पूंजी हमें वापस लौटा दी गई है।

وَنَمِیۡرُ اَهۡلَنَا وَ نَحۡفَظُ اَخَانَا وَنَزۡدَادُ کَیۡلَ بَعِیۡرٍ ؕ

और हम अपने घर वालों का ग़ल्ला लाएंगे और हम अपने भाई की हिफाज़त करेंगे और हमें एक ऊँट का ग़ल्ला ज़्यादा मिलेगा।

ذٰلِکَ کَیۡلٌ یَّسِیۡرٌ ﴿۶۵﴾ قَالَ لَنۡ اُرۡسِلَهٗ مَعَکُمۡ

ये ग़ल्ले (का हुसूल) आसान है। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं उस को तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेजूँगा

حَتّٰی تُؤۡتُوۡنِ مَوۡثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاۡتُنَّنِیۡ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ

जब तक के तुम मुझे अल्लाह की तरफ से पुख्ता अहद न दो के तुम ज़रूर उसे मेरे पास लाओगे, मगर ये के

يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ

तुम्हें घेर लिया जाए। फिर जब उन्हों ने याकूब (अलैहिस्सलाम) को अपना पुख्ता अहद दिया, तो याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾ وَ قَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا

अल्लाह उस पर वकील है जो हम केह रहे हैं। और याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे बेटो! तुम एक

مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ

दरवाज़े से दाखिल न होना और अलग अलग दरवाज़ों से दाखिल होना।

وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ

और मैं तुम्हें अल्लाह के हुक्म से कुछ भी बचा नहीं सकता। हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का

اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَ عَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٦٧﴾

चलता है। उसी पर मैं ने भरोसा किया। और उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए।

وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ

और जब वो दाखिल हुए उस तरह जैसे उन्हें उन के अब्बा ने हुक्म दिया था, तो ये बात

يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً

उन्हें अल्लाह के हुक्म से ज़रा भी बचा न सकी मगर एक ख्वाहिश थी याकूब (अलैहिस्सलाम) के

فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ

दिल की जो उन्हों ने पूरी कर ली। और यक़ीनन वो इल्म वाले थे, उसी को जानते थे जो हम ने उन्हें सिखलाया था

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوْا

लेकिन अक्सर लोग (हक़ीक़त का) इल्म नहीं रखते। और जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास

عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا

दाखिल हुए तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने पास अपने भाई को जगह दी। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

यक़ीनन मैं तेरा भाई हूँ, इस लिए तू अफसोस मत कर उन हरकतों पर जो ये कर रहे हैं।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ

फिर जब यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने उन को उन का सामान तय्यार कर के दिया तो अपने भाई के थैले में

فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ

प्याला रख दिया, फिर एक ऐलान करने वाले ने ऐलान किया के ऐ क़ाफले वालो! यक़ीनन तुम

لَسٰرِقُوْنَ۝٧٠ قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّا ذَا تَفْقِدُوْنَ۝٧١

तो चोर हो। ये केहते हुए वो उन के सामने आए के तुम क्या चीज़ गुम पाते हो?

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ

उन्हों ने कहा के हम बादशाह का प्याला गुम पाते हैं और उस शख़्स के लिए जो उस को ले कर आएगा एक ऊँट का ग़ल्ला

بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ۝٧٢ قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ

मिलेगा और मैं उस का ज़िम्मेदार हूँ। उन्हों ने कहा के अल्लाह की क़सम! यक़ीनन तुम्हें मालूम है के

مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ۝٧٣ قَالُوْا

हम इस मुल्क में इस लिए नहीं आए के हम फसाद फैलाएं और हम चोर नहीं हैं। उन्हों ने कहा

فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ۝٧٤ قَالُوْا جَزَآؤُهٗ

के फिर उस शख़्स की क्या सज़ा है अगर तुम झूठे हो? तो उन्हों ने कहा उस की सज़ा

مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ط كَذٰلِكَ

वही शख़्स है जिस के थैले में वो प्याला पाया जाए, फिर वही उस की सज़ा है। इसी तरह

نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ۝٧٥ فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ

हम ज़ालिमों को सज़ा देते हैं। फिर यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने उन के थैलों से इब्तिदा की अपने भाई के

اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ط كَذٰلِكَ

थैले से पेहले, फिर उस को निकाला अपने भाई के थैले से। इसी तरह

كِدْنَا لِيُوْسُفَ ط مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ

हम ने तदबीर की यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के लिए। वो अपने भाई को नहीं ले सकते थे बादशाह के

الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ط نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ط

मज़हब में मगर ये के अल्लाह चाहे। हम दरजात बुलन्द करते हैं जिस के चाहते हैं।

وَ فَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ۝٧٦ قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ

और हर इल्म वाले से बढ़ कर इल्म वाला है। उन्हों ने कहा के अगर उस ने चोरी की

فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ج فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ

तो यक़ीनन इस से पेहले उस के भाई ने भी चोरी की थी। फिर यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने

فِىْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ج قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ

उस को अपने जी में छुपाया और उस को उन के सामने ज़ाहिर नहीं किया। (दिल में) कहा तुम बुरी

مَّكَانًا ج وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝٧٧ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا

जगह में हो। और अल्लाह खूब जानता है उस को जो तुम बयान कर रहे हो। उन्हों ने कहा के ऐ

الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا

अज़ीज़े मिस्र! यक़ीनन इस के बहोत बूढ़े अब्बा हैं, इस लिए आप हम में से किसी एक को उस की जगह पर

مَكَانَهٗ ج اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٧٨ قَالَ مَعَاذَ

रख लीजिए। यक़ीनन हम आप को एहसान करने वालों में से देख रहे हैं। यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने

اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ

फरमाया के अल्लाह की पनाह है इस से के हम लें मगर उसी शख्स को जिस के पास हम ने अपने सामान को पाया।

اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝٧٩ فَلَمَّا اسْتَيْئَسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا

यक़ीनन तब तो हम ज़ालिम होंगे। फिर जब वो उन से मायूस हो गए तो अलग हो कर उन्हों ने तन्हाई में

نَجِيًّا ط قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ

सरगोशी की। उन में से बड़े ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं के तुम्हारे अब्बा ने

قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ

तुम से अल्लाह का पुख्ता अहद लिया है और तुम्हें मालूम नहीं इस से पेहले वो कोताही (ज़्यादती)

مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ج فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ

जो तुम ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के बारे में की? मैं अब हरगिज़ इस ज़मीन से नहीं टलूँगा

حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ج وَهُوَ خَيْرُ

जब तक के मेरे अब्बा मुझे इजाज़त न दें या अल्लाह मेरा फैसला कर दें। और वो बेहतरीन

الْحٰكِمِيْنَ ۝٨٠ اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ

फेसला करने वाला है। तुम अपने अब्बा के पास वापस जाओ, फिर कहो ऐ हमारे अब्बा!

اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ج وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا

यक़ीनन आप के बेटे ने चोरी की। और हम ने गवाही नहीं दी थी मगर उसी के मुताबिक़ जो हमें मालूम था

وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝٨١ وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ

और हम ग़ैब को जानने वाले नहीं थे। और आप उस बस्ती वालों से पूछ लीजिए

كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ط وَاِنَّا

जिस में हम थे और उन क़ाफले वालों से भी जिस में शामिल हो कर हम आए हैं। और यक़ीनन हम

لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ

सच्चे हैं। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के बल्के तुम्हारे लिए तुम्हारे नफ्सों ने एक मुआमले को मुज़य्यन किया है।

فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ

अब तो सब्र ही बेहतर है। उम्मीद है के अल्लाह मेरे पास उन को इकट्ठा ले आए।

اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾ وَ تَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ

यक़ीनन वो इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और याकूब (अलैहिस्सलाम) ने उन की तरफ से मुंह फेरा और कहा

يٰۤاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ

हाए अफसोस यूसुफ पर! इस हाल में के उन की आँखें ग़म की वजह से सफेद हो चुकी थीं,

فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾ قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ

फिर वो बमुशकिल ग़म को ज़ब्त कर रहे थे। उन्हों ने कहा अल्लाह की क़सम! आप तो यूसुफ को याद करते रहोगे

حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

यहां तक के क़रीबुल मौत हो जाओ या हलाक होने वालों में से हो जाओगे।

قَالَ اِنَّمَاۤ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى اللّٰهِ وَ اَعْلَمُ

याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं तो फरयाद करता हूँ अपनी बेक़रारी और अपने ग़म की सिर्फ अल्लाह से और

مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا

मैं जानता हूँ अल्लाह की तरफ से वो बातें जो तुम जानते नहीं हो। ऐ मेरे बेटो! तुम जाओ, फिर तुम तहक़ीक़ करो

مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْئَسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ

यूसुफ और उस के भाई के मुतअल्लिक़ और तुम मायूस मत हो अल्लाह की रहमत से। यक़ीनन अल्लाह

لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

की रहमत से मायूस नहीं होते मगर काफिर लोग।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا

फिर जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास पहोंचे तो कहा के ऐ अज़ीज़े मिस्र! हमें और हमारे घर वालों को

الضُّرُّ وَ جِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ

क़हतसाली पहोंची है और हम नाक़िस पूंजी ले कर आए हैं, इस लिए आप हमारे लिए ग़ल्ला पूरा पूरा दे दीजिए

وَ تَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾

और हमें मज़ीद भी दीजिए। यक़ीनन अल्लाह सदक़ा करने वालों को बदला देंगे।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम्हें मालूम है वो हरकत जो तुम ने यूसुफ और उन के भाई के साथ की

جٰهِلُوْنَ ﴿۸۹﴾ قَالُوْٓا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا

जब के तुम जाहिल थे? उन्हों ने कहा के क्या आप ही यूसुफ हो? यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं ही

يُوْسُفُ وَهٰذَآ اَخِيْ ز قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ

यूसुफ हूँ और ये मेरा भाई है। यक़ीनन अल्लाह ने हम पर एहसान फरमाया। यक़ीनन जो भी

يَّتَّقِ وَ يَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۰﴾

तक़वा इखतियार करता है और सब्र करता है तो यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं करते।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿۹۱﴾

उन्हों ने कहा के अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने आप को हम पर तरजीह दी और यक़ीनन हम कुसूरवार हैं।

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ز

यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के आज तुम पर कोई गिरिफ्त नहीं है। अल्लाह तुम्हें मुआफ करे।

وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾ اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا

और वो रहम करने वालों में सब से बेहतरीन रहम करने वाला है। तुम मेरे कुरते को ले कर जाओ,

فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ج وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ

फिर उस को मेरे अब्बा के चेहरे पर डाल दो, तो वो बीना हो जाएंगे। और तुम अपने तमाम घर वालों को

اَجْمَعِيْنَ ﴿۹۳﴾ ع وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ

मेरे पास ले आओ। और जब ये काफ़ला मिस्र से चला तो उन के अब्बा ने कहा के

اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿۹۴﴾

मैं यूसुफ की खुशबू पा रहा हूँ, अगर तुम मुझ में बुढ़ापे की अक़्ल की कमी का शुबह न करो।

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿۹۵﴾ فَلَمَّآ

उन्हों ने कहा के अल्लाह की क़सम! आप तो बदस्तूर अपनी पुरानी ग़लतफहमी में हो। फिर जब

اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ج

बशारत देने वाला आया तो कुरते को आप के चेहरे पर डाल दिया, तो आप बीना हो गए।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا

याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था के मैं अल्लाह की तरफ से जानता हूँ वो जो तुम

تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوۡا يٰۤاَبَانَا اسۡتَغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا
जानते नहीं हो। उन्हों ने कहा के ऐ हमारे अब्बा! आप हमारे लिए हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत तलब कीजिए, यक़ीनन हम
خٰطِئِيۡنَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوۡفَ اَسۡتَغۡفِرُ لَكُمۡ رَبِّىۡ ؕ اِنَّهٗ هُوَ
कुसूरवार हैं। याकूब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के अनक़रीब मैं तुम्हारे लिए अपने रब से इस्तिग़फार करूंगा। यक़ीनन वो
الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ﴿٩٨﴾ فَلَمَّا دَخَلُوۡا عَلٰى يُوۡسُفَ اٰوٰٓى
बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। फिर जब वो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के पास पहोंचे, तो यूसुफ (अलैहिस्सलाम)
اِلَيۡهِ اَبَوَيۡهِ وَ قَالَ ادۡخُلُوۡا مِصۡرَ اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ
ने अपने पास अपने वालिदैन को जगह दी और कहा के तुम मिस्र में अमन से दाखिल हो जाओ अगर अल्लाह
اٰمِنِيۡنَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ اَبَوَيۡهِ عَلَى الۡعَرۡشِ وَخَرُّوۡا لَهٗ
ने चाहा। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने वालिदैन को तख्त पर बुलन्द जगह बिठाया और सब लोग यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के
سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاۡوِيۡلُ رُءۡيَاىَ
सामने सज्दे में गिर गए। और यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने कहा के ऐ मेरे अब्बा! ये मेरे इस से पेहले वाले
مِنۡ قَبۡلُ ز قَدۡ جَعَلَهَا رَبِّىۡ حَقًّا ؕ وَقَدۡ اَحۡسَنَ بِىۡۤ
ख्वाब की ताबीर है। यक़ीनन मेरे रब ने उसे सच कर दिखलाया। और उस ने मेरे साथ एहसान किया
اِذۡ اَخۡرَجَنِىۡ مِنَ السِّجۡنِ وَجَآءَ بِكُمۡ مِّنَ الۡبَدۡوِ
जब के मुझे जेलखाने से निकाला और तुम्हें देहात से ले आया
مِنۡۢ بَعۡدِ اَنۡ نَّزَغَ الشَّيۡطٰنُ بَيۡنِىۡ وَ بَيۡنَ اِخۡوَتِىۡ ؕ
इस के बाद के शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान झगड़ा डाला था।
اِنَّ رَبِّىۡ لَطِيۡفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَلِيۡمُ الۡحَكِيۡمُ ﴿١٠٠﴾
यक़ीनन मेरा रब बारीक तदबीर करने वाला है जिस काम के लिए चाहता है। यक़ीनन वो इल्म वाला, हिक्मत वाला है।
رَبِّ قَدۡ اٰتَيۡتَنِىۡ مِنَ الۡمُلۡكِ وَعَلَّمۡتَنِىۡ
ऐ मेरे रब! यक़ीनन तू ने मुझे सलतनत अता की और तू ने मुझे
مِنۡ تَاۡوِيۡلِ الۡاَحَادِيۡثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ قف
ख्वाबों की ताबीर का इल्म दिया। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले!
اَنۡتَ وَلِىّٖ فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِىۡ مُسۡلِمًا
तू ही मेरा दुन्या और आखिरत में कारसाज़ है। तू मुझे मुसलमान होने की हालत में वफात दे

وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ

और मुझे सुलहा के साथ मिला दे। ये ग़ैब की खबरों में से है जिस को हम

نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ج وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ

आप की तरफ वही कर रहे हैं। और आप उन के पास मौजूद नहीं थे जब उन्हों ने अपने मुआमले पर इत्तिफाक़ किया

وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ

इस हाल में के वो मक्र कर रहे थे। और लोगों में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं अगर्चे आप

بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ط

कितने ही हरीस हों। हालांके आप उन से इस पर किसी अज्र का सवाल नहीं करते।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ

ये तो सिर्फ तमाम जहान वालों के लिए नसीहत है। और बहोत सी निशानियाँ हैं

ع ١١

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا

ज़मीन और आसमानों में जिन पर वो गुज़रते हैं इस हाल में के वो उस से

مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾ وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ

मुंह मोड़ते हैं। और उन में से अक्सर अल्लाह पर ईमान नहीं रखते मगर इस तरह के वो

مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾ اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ

शिर्क भी करते जाते हैं। क्या फिर वो इस से मामून हैं के उन के पास अल्लाह के अज़ाब में से

مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ

ढांपने वाला अज़ाब आ जाए या उन के पास क़यामत अचानक आ जाए इस हाल में के उन्हें

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ قف

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

पता न हो? आप फरमा दीजिए ये मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ बसीरत के साथ

عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ط وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ

दावत देता हूँ, मैं भी और वो भी जिन्हों ने मेरा इत्तिबा किया। और अल्लाह पाक है

وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٨﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ

और मैं मुशरिकीन में से नहीं हूँ। और हम ने आप से पेहले रसूल नहीं भेजे

اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ط اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا

मगर मर्दों को बस्तियों वालों में से जिन की तरफ हम वही भेजते थे। क्या फिर वो ज़मीन

فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

में चले फिरे नहीं के देखते के उन का अन्जाम कैसा हुवा जो

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ

उन से पेहले थे। और अलबत्ता आखिरत का घर बेहतर है उन के लिए जो मुत्तक़ी हैं।

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۹﴾ حَتّٰۤى اِذَا اسْتَيْئَسَ الرُّسُلُ

क्या फिर तुम्हें अक़्ल नहीं? यहां तक के जब पैग़म्बर मायूस हो गए

وَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ

और उन्हों ने गुमान किया के उन्हें झुठलाया गया तो उन के पास हमारी नुसरत आ गई, फिर उन्हें नजात दे दी गई

مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۰﴾

जिन्हें हम ने चाहा। और हमारा अज़ाब लौटाया नहीं जाता मुजरिम क़ौम से।

لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ؕ

यक़ीनन उन के क़िस्सों में अक़्ल वालों के लिए इबरत है।

مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ

ये कोई ऐसी बात नहीं है जिस को घड़ लिया जाए, लेकिन उन किताबों की तस्दीक़ है जो

بَيْنَ يَدَيْهِ وَ تَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى

इस से पेहले थीं और हर चीज़ की तफसील है और हिदायत

وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ ع

और रहमत है ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाए।

رکوعاتها ۶ (۹۶) سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ (۱۳) اٰياتها ۴۳

और ६ रूकूअ हैं सूरह रअद मदीना में नाज़िल हुई उस में ४३ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيْۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

अलिफ लाम मीम रॉ। ये इस किताब की आयतें हैं। और जो कुरआन आप की तरफ आप के रब की तरफ से

مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱﴾

उतारा गया वो हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا

अल्लाह ही है जिस ने आसमानों को बुलन्द किया ऐसे सुतून के बग़ैर जिस को तुम देखो,

ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा और उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है।

كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ یُفَصِّلُ

सब के सब चलते रहेंगे मुक़र्ररा वक़्त तक के लिए। वो तमाम उमूर की तदबीर करता है, आयात को तफ़सील

الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝٢ وَهُوَ الَّذِیْ

से बयान करता है ताके तुम अपने रब की मुलाक़ात पर यक़ीन रखो। और वही अल्लाह है जिस ने

مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِیْهَا رَوَاسِیَ وَاَنْهٰرًا ؕ

ज़मीन को फैलाया और उस में पहाड़ रख दिए और नेहरों को बनाया।

وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیْهَا زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ یُغْشِی

और तमाम फलों के उस ने ज़मीन में जोड़े (नर और मादा) बनाए, वो रात को दिन पर

الَّیْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٣

ढांपता है। यक़ीनन उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है।

وَفِی الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ

और ज़मीन में मिले जुले टुकड़े हैं और अंगूर के बाग़ात हैं और खेतियाँ हैं और खजूर के बाग़ात हैं, कुछ

وَّزَرْعٌ وَّ نَخِیْلٌ صِنْوَانٌ وَّ غَیْرُ صِنْوَانٍ یُّسْقٰی بِمَآءٍ

शाखों वाले होते हैं और कुछ शाखों वाले नहीं होते, हालांके एक ही पानी से उन्हें सैराब किया

وَّاحِدٍ ۫ وَ نُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰی بَعْضٍ فِی الْاُكُلِ ؕ

जाता है। और हम उन में से एक को दूसरे से बढ़ा देते हैं मज़ों में।

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ۝٤ وَاِنْ تَعْجَبْ

यक़ीनन इस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती है। और अगर आप तअज्जुब करें

فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِیْ خَلْقٍ

तो उन की ये बात क़ाबिले तअज्जुब है के क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम अज़ सरे नौ ज़िन्दा किए

جَدِیْدٍ ؕ۬ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ

जाएंगे? उन्हों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया। और उन की

الْاَغْلٰلُ فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ गरदनों में तौक़ होंगे। और यही लोग दोज़ख़ी हैं।
هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۵﴾ وَ یَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّیِّئَةِ वो उस में हमेशा रहेंगे। और ये आप से बुराई को जल्दी तलब कर रहे हैं
قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ भलाई से पेहले, हालांके उन से पेहले भी अज़ाब गुज़र चुके हैं।
وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता इन्सानों की उन के ज़ुल्म के बावजूद मग़फिरत करने वाला है।
وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۶﴾ وَ یَقُوْلُ الَّذِیْنَ और यक़ीनन तेरा रब सख्त सज़ा देने वाला है। और काफिरों ने
كَفَرُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَاۤ कहा के इस नबी पर उस के रब की तरफ से कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं उतारा गया? आप तो सिर्फ
اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿۷﴾ اَللّٰهُ یَعْلَمُ डराने वाले हैं और हर क़ौम के लिए एक हादी होता है। अल्लाह जानता है
مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِیْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ उसे जो हर मादा हामिला होती है और उसे भी जिसे बच्चादानियाँ खुश्क कर देती हैं और उसे भी जो बढ़ाती हैं।
وَكُلُّ شَیْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿۸﴾ عٰلِمُ الْغَیْبِ और हर चीज़ अल्लाह के पास एक मिक़दार के साथ है। वो पोशीदा और ज़ाहिर का जानने
وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِیْرُ الْمُتَعَالِ ﴿۹﴾ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ वाला है, बड़ा है, बरतर है। तुम में से बराबर हैं वो सब जो बात को चुपके से
الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّیْلِ कहें और जो ज़ोर से कहें और जो रात में छुपना चाहें
وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ﴿۱۰﴾ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ और जो दिन में खुल्लम खुल्ला चलने वाले हों। इन्सान के लिए बारी बारी आने जाने वाले फरिश्ते हैं
وَمِنْ خَلْفِهٖ یَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ उस के आगे से और उस के पीछे से जो उस की हिफाज़त करते हैं अल्लाह के अम्र से। यक़ीनन अल्लाह

ع

لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ

बदलता नहीं उस हालत को जो किसी क़ौम के साथ है यहां तक के वो खुद न बदलें उस को जो उन के अन्दरून में है।

وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ

और जब अल्लाह किसी क़ौम के साथ बुराई का इरादा करते हैं तो उसे लौटाया नहीं जा सकता। और उन के लिए

مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿۱۱﴾ هُوَ الَّذِىْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا

अल्लाह के सिवा कोई बचाने वाला नहीं। वही अल्लाह तुम्हें बिजली दिखाता है खौफ

وَّ طَمَعًا وَّ يُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿۱۲﴾ ۚ وَ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ

और लालच के लिए और वो भारी बादलों को उठाता है। और रअद फरिशता अल्लाह की हम्द के साथ

بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ

तस्बीह पढ़ता है, और फरिशते भी तस्बीह पढ़ते हैं अल्लाह के खौफ से। और अल्लाह

الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ

बिजलियों को भेजता है, फिर उसे पहोंचाता है जिस पर चाहता है इस हाल में के वो अल्लाह के बारे में

فِى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿۱۳﴾ ؕ لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ

झगड़ रहे होते हैं। और वो मज़बूत तदबीर वाला है। उसी के लिए हक़ की पुकार है।

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ

और जिन को अल्लाह के अलावा ये पुकारते हैं वो उन की किसी पुकार का जवाब नहीं दे

بِشَىْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ

सकते मगर अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाने वाले की तरह, ताके वो पानी उस के मुंह में पहोंच जाए,

وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾

हालांके वो उस के मुंह में पहोंचने वाला नहीं है। और काफिरों की पुकार जो भी है वो सिर्फ गुमराही है।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا

और अल्लाह को सज्दा करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं खुशी से और ज़बर्दस्ती

وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۱۵﴾ السجدة قُلْ مَنْ رَّبُّ

और उन के साए भी, सुब्ह और शाम के वक़्त में। आप पूछिए के आसमानों

السجدة ٢

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ

और ज़मीन का रब कौन है? आप फरमा दीजिए के अल्लाह। आप कहिए क्या तुम ने अल्लाह के सिवा

دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ
ऐसे हिमायती बना लिए हैं जो अपने लिए किसी नफे और नुक़सान के मालिक नहीं हैं?
قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِى
आप पूछिए क्या अन्धा और बीना बराबर हो सकते हैं? या क्या तारीकियाँ
الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا
और नूर बराबर हो सकते हैं? या उन्हों ने अल्लाह के जो शुरका बनाए हैं उन्हों ने कोई चीज़ पैदा की है
كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ
अल्लाह के मखलूक़ पैदा करने की तरह के फिर उन कुफ्फार पर मखलूक़ मुश्तबह हो गई है? आप फरमा दीजिए के अल्लाह हर
كُلِّ شَىْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝١٦ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
चीज़ को पैदा करने वाला है और वो यकता है, ग़ालिब है। उस ने आसमान से पानी
مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ
उतारा, फिर वादियाँ अपनी (वुस्अते) मिक़दार के ऐतेबार से बेह पड़ीं, फिर सैलाब उभरे हुए
زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِى النَّارِ
झाग को उठा कर लाता है। और उन चीज़ों का भी उसी जैसा झाग होता है जिसे ये
ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ
ज़ेवर या सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं। इस तरह अल्लाह
اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ
हक़ और बातिल की मिसालें बयान करता है। फिर अलबत्ता झाग तो खुश्क हो कर खत्म हो जाता है।
وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ
और अलबत्ता जो चीज़ इन्सानों को नफा देती है वो ज़मीन में ठेहेर जाती है। इसी तरह
يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۝١٧ لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ
अल्लाह मिसालें बयान करते हैं। उन लोगों के लिए जिन्हों ने अपने रब का केहना माना
الْحُسْنٰى ؔ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ
उन के लिए भलाई है। और जिन्हों ने अपने रब का केहना नहीं माना अगर उन की मिल्क बन जाएं वो तमाम चीज़ें जो ज़मीन
مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ
में हैं सारी की सारी और उस के जैसी उस के साथ और भी हो जाएं तो भी यक़ीनन वो उस को फिदये में दे देंगे।

وَقْفُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

أُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ

उन के लिए बदतरीन हिसाब होगा और उन का ठिकाना जहन्नम होगा।

وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

और वो बुरी आराम की जगह है। क्या फिर वो शख़्स जो ये जानता है के जो आप की तरफ आप के रब की

مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ

तरफ से उतारा गया वो हक़ है वो उस शख़्स की तरह हो सकता है जो अन्धा है? नसीहत तो सिर्फ

اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۹﴾ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ

अक़्ल वाले ही हासिल करते हैं। वो लोग जो अल्लाह के अहद को पूरा करें

وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿۲۰﴾ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ

और पुख़्ता अहद न तोड़ें। और जो जोड़ें उन तअल्लुक़ात को जिन के जोड़े रखने का

بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ يَخَافُوْنَ سُوْٓءَ

अल्लाह ने हुक्म दिया और जो अपने रब से डरें और जो हिसाब की सख़्ती

الْحِسَابِ ﴿۲۱﴾ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا

से डरें। और वो लोग जिन्हों ने सब्र किया अपने रब की रज़ा तलब करने के लिए और जिन्हों ने नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً

क़ाइम की और खर्च किया उन चीज़ों में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दी चुपके और अलानिया

وَّ يَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى

और जो भलाई के ज़रिए बुराई को दफा करते हैं, उन के लिए पिछला (आखिरत का)

الدَّارِ ﴿۲۲﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ

घर है। जो जन्नाते अद्न हैं जिन में वो दाखिल होंगे, वो भी और वो लोग भी जो लाइक़ होंगे

مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ

उन के आबा व अजदाद में से और उन की बीवियों में से और उन की औलाद में से और फरिश्ते उन पर

عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿۲۳﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ

हर दरवाज़े से दाखिल होते होंगे। (कहेंगे) अस्सलामु अलैकुम,(तुम पर सलामती हो) उस सब्र के बदले में जो तुम ने

عُقْبَى الدَّارِ ﴿۲۴﴾ وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ

किया, फिर ये आखिरत का घर कितना अच्छा है। और जो अल्लाह के अहद को तोड़ते हैं उस के पुख़्ता करने

مِيْثَاقِهٖ وَ يَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ
के बाद और उन तअल्लुक़ात को तोड़ते हैं जिन के जोड़े रखने का अल्लाह ने हुक्म दिया

وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ
और जो ज़मीन में फसाद फैलाते हैं, उन के लिए लानत है और उन के लिए मुसीबत का

سُوْٓءُ الدَّارِ ۝۲۵ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ
घर है। अल्लाह रोज़ी कुशादा करते हैं जिस के लिए चाहते हैं और तंग करते हैं जिस के लिए चाहते हैं।

وَ فَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا
और ये लोग दुन्यवी ज़िन्दगी पर खुश हैं। और दुन्यवी ज़िन्दगी आखिरत के

فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ۝۲۶ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
मुक़ाबले में नहीं है मगर थोड़ा सा फाइदा उठाना। और काफिर लोग केहते हैं के

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ
इस नबी पर उस के रब की तरफ से कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं उतारा गया? आप फरमा दीजिए के यक़ीनन अल्लाह गुमराह करते हैं

يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ۝۲۷ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
जिसे चाहते हैं और हिदायत देते हैं अपनी तरफ उसे जो मुतवज्जेह होता है। वो लोग जो ईमान लाए

وَ تَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ
और जिन के दिल अल्लाह की याद से मुतमइन हैं। सुनो! अल्लाह की याद ही से

تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۝۲۸ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
दिल इतमिनान पाते हैं। वो लोग जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे

طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ ۝۲۹ كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ
उन के लिए तूबा है और अच्छा अन्जाम है। इसी तरह हम ने आप को रसूल बना कर भेजा

فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَاْ عَلَيْهِمُ
उस उम्मत में जिस से पेहले बहोत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताके आप उन पर तिलावत करें

الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ
वो जो हम ने आप की तरफ वही की, और ये रहमान के साथ कुफ्र कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए के

هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ
वो मेरा रब है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैं ने तवक्कुल किया और उसी की तरफ

مَتَابِ ﴿٣٠﴾ وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ

मेरा लौटना है। और अगर कुरआन ऐसा होता के जिस के ज़रिए पहाड़ों को चलाया जाता

اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ

या उस के ज़रिए ज़मीन को काटा जाता, या उस के ज़रिए मुर्दों से बुलवाया जाता (तब भी ये ईमान न लाते)। बल्के अल्लाह ही

الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ

के लिए तमाम उमूर हैं। क्या फिर वो लोग जो ईमान लाए हैं इस से मायूस नहीं हुए के

لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ

अगर अल्लाह चाहता तो तमाम इन्सानों को हिदायत दे देता। और काफिरों को उन

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ

हरकतों की वजह से जो उन्हों ने की हैं बराबर मुसीबत पहोंचती रहेगी या उन के घर के क़रीब में

قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

उतरती रहेगी यहाँ तक के अल्लाह का वादा आ पहोंचे। यक़ीनन अल्लाह

لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ

वादे के खिलाफ नहीं करेंगे। यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बरों के साथ भी

مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ قف

इस्तिहज़ा किया गया, फिर मैं ने काफिरों को ढील दी, फिर मैं ने उन को पकड़ा।

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ

फिर मेरा अज़ाब कैसा रहा? क्या फिर वो ज़ात जो हर शख्स पर निगराँ है उन आमाल की जो उस ने किए (वो ज़ात और शुरका

بِمَا كَسَبَتْ ج وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ

बराबर हैं? नहीं!) उन्हों ने अल्लाह के लिए शुरका बना लिए हैं। आप पूछिए के तुम उन के नाम बतलाओ।

اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ

क्या तुम अल्लाह को खबर देते हो ऐसी चीज़ की जिस को वो ज़मीन में नहीं जानता या बातों में से

مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا

सरसरी बात तुम करते हो? बल्के काफिरों के लिए उन का मक्र मुज़य्यन किया गया और उन्हें

عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

रास्ते से रोका गया। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

ع ٥

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ
उन के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में अज़ाब है और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब ज़्यादा मशक़्क़त वाला है।

وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ
और उन के लिए अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं। उस जन्नत का हाल जिस का

وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا
मुत्तक़ियों से वादा किया गया है, ये है के उस के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। उस के मज़े

دَآئِمٌ وَّ ظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى
दाइमी होंगे और उस के साए (भी दाइमी होंगे)। ये मुत्तक़ियों का अन्जाम है। और काफिरों

الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ
का अन्जाम दोज़ख है। और वो लोग जिन को हम ने किताब दी वो खुश हैं

بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ
उस की वजह से जो आप की तरफ उतारा गया है और गिरोहों में से बाज़ इस कुरआन के बाज़ हिस्से का इन्कार करते हैं।

قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ
आप फरमा दीजिए के मुझे तो सिर्फ ये हुक्म दिया गया है के मैं अल्लाह की इबादत करूँ और मैं उस के साथ शरीक न ठेहराऊँ।

اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ
उसी की तरफ मैं दावत देता हूँ और उसी की तरफ मुझे वापस जाना है। और इसी तरह हम ने इस को अरबी वाला हक़ और

حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ
बातिल के दरमियान फैसला करने वाला कुरआन बना कर उतारा। और अगर आप भी उन की ख्वाहिशात का इत्तिबा करेंगे

مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ
इस के बाद के आप के पास इल्म आया तो आप को अल्लाह से कोई बचाने वाला और कोई

وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا
मददगार नहीं होगा। यक़ीनन हम ने आप से पेहले पैग़म्बर भेजे और हम ने

لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ
उन के लिए बीवियाँ और औलाद बनाईं। और किसी रसूल की ये ताक़त नहीं है के

اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾
वो कोई मोअजिज़ा ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से। हर मुक़र्ररा वक़्त के लिए लिखी हुई तहरीर है।

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ وَ عِنْدَهٗۤ اُمُّ
और अल्लाह मिटाते हैं जिसे चाहते हैं और बाक़ी रखते हैं (जिसे चाहते हैं)। और अल्लाह ही के पास उम्मुल किताब

الْكِتٰبِ ﴿۳۹﴾ وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ
(यानी लौहे महफ़ूज़) है। और अगर हम आप को दिखा दें उस अज़ाब का कुछ हिस्सा

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا
जिस से हम उन्हें डरा रहे हैं या हम आप को वफात दे दें तो आप के ज़िम्मे तो सिर्फ पहोंचाना है और हमारे ज़िम्मे

الْحِسَابُ ﴿۴۰﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا
हिसाब लेना है। क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम ज़मीन को उस के चारों तरफ से कम करते

مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ
हुए आ रहे हैं? और अल्लाह फैसला करता है, अल्लाह के फैसले को कोई पीछे नहीं कर सकता।

وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۴۱﴾ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ
और वो तेज़ हिसाब लेने वाला है। यक़ीनन मक्र कर चुके वो जो

مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ
उन से पेहले थे, फिर अल्लाह के पास तमाम तदाबीर हैं। उसे मालूम है जो कोई जो कुछ

نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿۴۲﴾ وَيَقُوْلُ
करता है। और अनक़रीब कुफ्फार जान लेंगे किस के लिए आखिरत का घर है। और काफिर

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ
केहते हैं के आप भेजे हुए पैग़म्बर नहीं हो। आप फरमा दीजिए के अल्लाह मेरे

بَيْنِىْ وَ بَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿۴۳﴾
और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है। और वो भी गवाह हैं जिन के पास किताब का इल्म है।

آياتها ۵۲ (۱۴) سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ (۷۲) رکوعاتها ۷

उस में ५२ आयतें हैं सूरह इब्राहीम मक्का में नाज़िल हुई और ७ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ
अलिफ लाम रॉ। ये किताब है जिसे हम ने आप की तरफ उतारा है ताके आप इन्सानों को निकालें

اِلَى النُّوْرِ ۙ۬ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ

तारीकियों से नूर की तरफ। उन के रब के हुक्म से ग़ालिब क़ाबिले तारीफ अल्लाह के रास्ते

الْحَمِيْدِ ۙ﴿۱﴾ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

की तरफ। वो अल्लाह के जिस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो

فِي الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ﴿۲﴾

ज़मीन में हैं। और काफिरों के लिए सख्त अज़ाब से हलाकत है।

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ

उन के लिए जो दुन्या से महब्बत रखते हैं आखिरत के मुक़ाबले में

وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ

और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उस में कजी तलाश करते हैं।

اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ﴿۳﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ

ये (हक़ से बहोत ही) दूर वाली गुमराही में हैं। और हम ने कोई रसूल नहीं भेजा

اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ

मगर उस की क़ौम की ज़बान दे कर ताके उन के सामने साफ साफ बयान करे। फिर अल्लाह जिसे चाहते हैं गुमराह करते हैं

وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۴﴾ وَلَقَدْ

और जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं। और वो ग़ालिब है, हिक्मत वाला है। यक़ीनन

اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ

हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को भेजा अपने मोअजिज़ात दे कर के अपनी क़ौम को तारीकियों से नूर की तरफ

اِلَى النُّوْرِ ۙ۬ وَ ذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

निकालिए। और उन्हें अल्लाह की नेअमतें याद दिलाइए। यक़ीनन उस में हर सब्र करने

لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۵﴾ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ

वाले, शुक्र करने वाले के लिए निशानियां हैं। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम से फरमाया के

اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ

तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है जब के अल्लाह ने तुम्हें नजात दी आले फिरऔन से

فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَ يُذَبِّحُوْنَ

जो तुम्हें बदतरीन अज़ाब से तकलीफ देते थे और तुम्हारे बेटों को ज़बह

اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

करते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रेहने देते थे। और उस में तुम्हारे रब की तरफ से

مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝٦ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ

भारी इम्तिहान था। और जब तुम्हारे रब ने ऐलान किया के अगर तुम शुक्र करोगे

لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝٧

तो मैं तुम्हें मज़ीद दूंगा और अगर तुम नाशुकरी करोगे तो यक़ीनन मेरा अज़ाब अलबत्ता सख्त है।

وَقَالَ مُوْسٰۤى اِنْ تَكْفُرُوْۤا اَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमया के अगर तुम और वो जो ज़मीन में हैं सारे के सारे काफिर

جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٨ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا

बन जाओ, तो यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। क्या तुम्हारे पास उन लोगों की

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ۛ

खबर नहीं आई जो तुम से पेहले थे क़ौमे नूह और क़ौमे आद और क़ौमे समूद

وَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ

और वो जो उन के बाद हुए जिन को सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जानता।

جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ

जिन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर उन्हों ने अपने हाथ रख दिए

فِيْۤ اَفْوَاهِهِمْ وَ قَالُوْۤا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا

अपने मुंह में और कहा यक़ीनन हम तो कुफ्र करते हैं उस के साथ जिस को दे कर तुम भेजे गए हो और यक़ीनन हम

لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝٩ قَالَتْ

अलबत्ता बहोत ज़्यादा शक में हैं उस की तरफ से जिस की तरफ तुम हमें दावत देते हो। उन के पैग़म्बरों

رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

ने कहा के क्या अल्लाह के बारे में शक जो आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है?

يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرَكُمْ

जो तुम्हें बुलाता है ताके वो तुम्हारी मग़फिरत करे तुम्हारे गुनाहों की और तुम्हें मोहलत दे

اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ

एक वक्ते मुक़र्ररा तक के लिए। उन्हों ने कहा के तुम नहीं हो मगर हम जैसे इन्सान।

تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا
तुम ये चाहते हो के हमें रोक दो उस से जिस की हमारे बाप दादा इबादत करते थे

فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۰﴾ قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ
तो तुम हमारे पास रोशन मोअजिज़ा ले आओ। उन से उन के पैग़म्बर ने कहा के हम तो

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ
सिर्फ तुम जैसे इन्सान हैं, लेकिन अल्लाह एहसान करता है जिस पर चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ
अपने बन्दों में से। और हमारी ताक़त नहीं है के हम तुम्हारे पास कोई मोअजिज़ा लाएं

اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱﴾
मगर अल्लाह के हुक्म से। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए।

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ
और हमें क्या हुवा के हम अल्लाह पर तवक्कुल न करें हालांके उस ने हमें हमारे रास्तों की हिदायत दी।

وَ لَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
और अलबत्ता हम ज़रूर सब्र करेंगे उस पर जो तुम हमें ईज़ा दोगे। और अल्लाह ही पर तवक्कुल करने वालों को

الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۱۲﴾ ع وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ
तवक्कुल करना चाहिए। और काफिरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा के

لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ
हम तुम्हें ज़रूर निकाल देंगे अपने मुल्क से या ये के तुम हमारे मज़हब में आ जाओ।

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۳﴾
फिर उन के रब ने उन की तरफ वही की के हम इन ज़ालिमों को ज़रूर हलाक करेंगे।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ
और तुम्हें इस मुल्क में उन के बाद ज़रूर ठेहराएंगे। ये उस शख्स के लिए है जो मेरे सामने

مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿۱۴﴾ وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ
खड़े होने से डरे और मेरे अज़ाब की वईद से डरे। और उन्हों ने फतह तलब की और हर ज़ालिम

جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿۱۵﴾ مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَ يُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ
सरकश नाकाम हुवा। उस के आगे जहन्नम है और उसे पीप वाला पानी पीने को

صَدِيۡدٍ ۝۱۶ يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيۡغُهٗ وَيَاۡتِيۡهِ

दिया जाएगा। जिस को वो घूँट घूँट कर के पिएगा और उस को हलक़ से नीचे उतार नहीं सकेगा और उसे

الۡمَوۡتُ مِنۡ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ

मौत आ लेगी हर तरफ से हालांके वो मरने वाला नहीं है।

وَمِنۡ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيۡظٌ ۝۱۷ مَثَلُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا

और उस के बाद भी सख्त अज़ाब होगा। उन लोगों का हाल जिन्हों ने अपने रब के साथ

بِرَبِّهِمۡ اَعۡمَالُهُمۡ كَرَمَادِ اِۨشۡتَدَّتۡ بِهِ الرِّيۡحُ

कुफ्र किया उन के आमाल ऐसे हैं जैसा के राख, जिस को तूफानी हवा ने तेज़ उड़ाया हो

فِيۡ يَوۡمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقۡدِرُوۡنَ مِمَّا كَسَبُوۡا عَلٰى شَيۡءٍ ؕ

सख्त हवा वाले दिन में के वो अपने आमाल में से किसी चीज़ पर भी कादिर नहीं हैं।

ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الۡبَعِيۡدُ ۝۱۸ اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ

ये (हक़ से बहोत) दूर वाली गुमराही है। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَقِّ ؕ اِنۡ يَّشَاۡ يُذۡهِبۡكُمۡ

आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया। अगर वो चाहे तो तुम्हें हलाक कर दे

وَيَاۡتِ بِخَلۡقٍ جَدِيۡدٍ ۝۱۹ وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ

और नई मख़लूक़ को ले आए। ये अल्लाह पर कुछ मुशकिल

بِعَزِيۡزٍ ۝۲۰ وَبَرَزُوۡا لِلّٰهِ جَمِيۡعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيۡنَ

नहीं। और वो सारे के सारे इकट्ठे अल्लाह के सामने पेश होंगे, फिर ज़ुअफा उन से कहेंगे जो

اسۡتَكۡبَرُوۡۤا اِنَّا كُنَّا لَـكُمۡ تَبَعًا فَهَلۡ اَنۡـتُمۡ مُّغۡنُوۡنَ

बड़ा बनना चाहते थे के यक़ीनन हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, फिर क्या तुम हमारे कुछ काम

عَنَّا مِنۡ عَذَابِ اللّٰهِ مِنۡ شَيۡءٍ ؕ قَالُوۡا لَوۡ هَدٰٮنَا

आओगे अल्लाह के अज़ाब से? वो कहेंगे के अगर अल्लाह ने हमें हिदायत दी होती

اللّٰهُ لَهَدَيۡنٰكُمۡ ؕ سَوَآءٌ عَلَيۡنَاۤ اَجَزِعۡنَاۤ اَمۡ صَبَرۡنَا

तो हम तुम्हें हिदायत देते। हम पर बराबर है, चाहे हम फरयाद करें या हम सब्र करें,

مَا لَنَا مِنۡ مَّحِيۡصٍ ۝۲۱ وَقَالَ الشَّيۡطٰنُ لَمَّا قُضِىَ

हमारे लिए किसी तरह छुटकारा नहीं है। और जब तमाम उमूर का फैसला कर दिया जाएगा तो शैतान

الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ وَعَدْتُّكُمْ
कहेगा के यक़ीनन अल्लाह ने तुम से वादा किया था सच्चा वादा और मैं ने भी तुम से वादा किया था,

فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ لِیَ عَلَیْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ
फिर मैं ने तुम से वादाखिलाफी की। और मेरा तुम पर कोई ज़ोर नहीं था

اِلَّاۤ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِیْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِیْ وَ لُوْمُوْۤا
सिवाए इस के के मैं ने तुम्हें दावत दी, फिर तुम ने मेरी दावत क़बूल कर ली। इस लिए तुम मुझे मलामत मत करो बल्के

اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِیَّ ؕ اِنِّیْ
अपने आप को मलामत करो। न मैं तुम्हारी फरयादरसी कर सकता हूँ और न तुम मेरी फरयाद को पहोंच सकते हो। यक़ीनन मैं

كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ
इन्कार करता हूँ शिर्क का जो तुम इस से पेहले मुझे शरीक ठेहराते रहे। यक़ीनन ज़ालिमों

لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۲۲﴾ وَاُدْخِلَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा। और वो लोग जो ईमान लाए और जो नेक काम

الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ
करते रहे वो अपने रब के हुक्म से दाखिल किए जाएंगे ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे से नेहरें बेहती

فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا سَلٰمٌ ﴿۲۳﴾ اَلَمْ تَرَ
होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। उन का तहीय्या उस में अस्सलामु अलैकुम होगा। क्या आप ने देखा नहीं के

كَیْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَیِّبَةً كَشَجَرَةٍ
अल्लाह ने कैसे मिसाल बयान की पाकीज़ा कलिमे की पाकीज़ा दरख्त

طَیِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّ فَرْعُهَا فِی السَّمَآءِ ﴿۲۴﴾
की तरह जिस की जड़ें मज़बूत हों और जिस की शाखें आसमान में हों।

تُؤْتِیْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِیْنٍۭ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَیَضْرِبُ اللّٰهُ
जो हर वक्त अपने रब के हुक्म से अपना फल देता हो। और अल्लाह मिसालें बयान

الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَ مَثَلُ
करते हैं इन्सानों के लिए ताके वो नसीहत हासिल करें। और बुरे

كَلِمَةٍ خَبِیْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِیْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ
कलिमे की मिसाल ऐसी है जैसा के बुरा दरख्त, जो ज़मीन के ऊपर ही

فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾ يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

से उखाड़ लिया गया हो जिस के लिए कोई क़रार न हो। अल्लाह ईमान वालों को

اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ

क़ौले साबित के ज़रिए दुन्यवी ज़िन्दगी में और आखिरत में जमाते हैं।

ع ٤ / ١٤

وَ يُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ۫ وَ يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾

और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह करते हैं। और अल्लाह करते वही हैं जो वो चाहते हैं।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا

क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन्हों ने अल्लाह की नेअमत को कुफ्र से बदल दिया

وَّ اَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾ ۙ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ

और जिन्हों ने अपनी क़ौम को हलाकत के घर में उतारा। यानी जहन्नम में, जिस में वो दाखिल होंगे।

وَ بِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا

और वो बुरी ठेहेरने की जगह है। और उन्हों ने अल्लाह के लिए शरीक ठेहराए ताके वो अल्लाह के रास्ते से

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾ قُلْ

गुमराह करें। आप फरमा दीजिए के तुम मज़े उड़ा लो, फिर यक़ीनन तुम्हारा लौटना जहन्नम की तरफ है। आप फरमा दीजिए

لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ يُنْفِقُوْا

मेरे उन बन्दों से जो ईमान लाए के वो नमाज़ क़ाइम करें और खर्च करें

مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ

उन चीज़ों में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दी, चुपके और अलानिया, इस से पेहले के वो दिन

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿٣١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ

आ जाए के जिस में न खरीद व फरोख्त और न दोस्ती होगी। अल्लाह ही है जिस ने आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ

और ज़मीन को पैदा किया और जिस ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस

بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ

के ज़रिए तुम्हारे खाने के लिए फल निकाले। और उस ने तुम्हारे लिए कशती को मुसख्खर किया

لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾

ताके वो चले समन्दर में अल्लाह के हुक्म से। और उस ने तुम्हारे लिए नेहरों को भी काम में लगा रखा है।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ

और उस ने तुम्हारे लिए चाँद और सूरज को काम में लगा रखा है जो लगातार हरकत में हैं। और उस ने तुम्हारे

الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾ وَاٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ

लिए रात और दिन को काम में लगा रखा है। और उस ने तुम्हें हर चीज़ में से दिया जिस का तुम ने उस से सवाल किया।

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ

और अगर तुम अल्लाह की नेअमत को शुमार करो तो उस को गिन नहीं सकते। यक़ीनन इन्सान बहोत ज़्यादा ज़ालिम

كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ

और बहोत ज़्यादा नाशुकरा है। और जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! इस शेहर को अमन वाला

اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَ بَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ رَبِّ

बनाइए और मुझे और मेरे बेटे को इस से बचाइए के हम बुतों की इबादत करें। ऐ मेरे रब!

اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ

यक़ीनन इन बुतों ने बहोत से इन्सानों को गुमराह किया। फिर जो मेरा इत्तिबा करे

فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾

तो वो मुझ से है। और जो मेरी नाफरमानी करे तो यक़ीनन आप बख्शने वाले, निहायत रहम करने वाले हैं।

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ

ऐ हमारे रब! यक़ीनन मैं ने अपनी औलाद में से बाज़ को ऐसी वादी में जो खेती वाली नहीं

عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ

तेरे इज़्ज़त वाले घर के पास ठेहराया है, ऐ हमारे रब! इस लिए ताके वो नमाज़ क़ाइम करें, फिर

اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ

लोगों के दिलों को आप कर दीजिए के उन की तरफ माइल हों और उन्हें रोज़ी दीजिए

مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ

फलों की ताके वो शुक्र अदा करें। ऐ हमारे रब! यक़ीनन आप जानते हैं

مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ؕ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ

वो जिसे हम छुपाते हैं और जिसे हम ज़ाहिर करते हैं। और अल्लाह पर कोई चीज़ मख्फी नहीं है

فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

न ज़मीन में और न आसमान में। तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने

وَهَبَ لِیۡ عَلَی الۡکِبَرِ اِسۡمٰعِیۡلَ وَاِسۡحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّیۡ

मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ दिए। यक़ीनन मेरा रब

لَسَمِیۡعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۹﴾ رَبِّ اجۡعَلۡنِیۡ مُقِیۡمَ الصَّلٰوۃِ

अलबत्ता दुआ सुनने वाला है। ऐ मेरे रब! आप मुझे नमाज़ क़ाइम करने वाला बनाइए

وَمِنۡ ذُرِّیَّتِیۡ ٭ۖ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلۡ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ رَبَّنَا اغۡفِرۡ لِیۡ

और मेरी औलाद में से भी। ऐ हमारे रब! और मेरी दुआ को क़बूल कर लीजिए। ऐ हमारे रब! मेरी

وَلِوَالِدَیَّ وَلِلۡمُؤۡمِنِیۡنَ یَوۡمَ یَقُوۡمُ الۡحِسَابُ ﴿۴۱﴾

और मेरे वालिदैन की और तमाम ईमान वालों की मग़फिरत कर दीजिए उस दिन जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा।

وَلَا تَحۡسَبَنَّ اللّٰہَ غَافِلًا عَمَّا یَعۡمَلُ الظّٰلِمُوۡنَ ۬ؕ اِنَّمَا

और तुम अल्लाह को ग़ाफिल मत समझो उस से जो ये ज़ालिम लोग कर रहे हैं। अल्लाह तो सिर्फ

یُؤَخِّرُہُمۡ لِیَوۡمٍ تَشۡخَصُ فِیۡہِ الۡاَبۡصَارُ ﴿۴۲﴾ مُہۡطِعِیۡنَ

उन्हें ढील दे रहा है ऐसे दिन के लिए जिस में निगाहें फटी रेह जाएंगी। वो तेज़ दौड़ रहे होंगे,

مُقۡنِعِیۡ رُءُوۡسِہِمۡ لَا یَرۡتَدُّ اِلَیۡہِمۡ طَرۡفُہُمۡ ۚ وَاَفۡـِٕدَتُہُمۡ

अपने सरों को ऊँचे किए हुवे होंगे, उन की तरफ उन की निगाह वापस नहीं लौटेगी। और उन के दिल

ہَوَآءٌ ﴿۴۳﴾ وَ اَنۡذِرِ النَّاسَ یَوۡمَ یَاۡتِیۡہِمُ الۡعَذَابُ

तमाम खयालात से खाली होंगे। और आप इन्सानों को डराइए उस दिन से जिस दिन वो अज़ाब आएगा

فَیَقُوۡلُ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا رَبَّنَاۤ اَخِّرۡنَاۤ اِلٰۤی اَجَلٍ

तो ज़ालिम लोग कहेंगे के ऐ हमारे रब! आप हमें मोहलत दीजिए क़रीबी वक्त तक

قَرِیۡبٍ ۙ نُّجِبۡ دَعۡوَتَکَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمۡ تَکُوۡنُوۡۤا

के हम आप की दावत को क़बूल कर लें और रसूलों का इत्तिबा करें। क्या तुम ने इस से पेहले

اَقۡسَمۡتُمۡ مِّنۡ قَبۡلُ مَا لَکُمۡ مِّنۡ زَوَالٍ ﴿۴۴﴾ وَّ سَکَنۡتُمۡ

क़समें नहीं खाई थीं के तुम्हारे लिए ज़वाल नहीं है? हालांके तुम रहे थे

فِیۡ مَسٰکِنِ الَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡۤا اَنۡفُسَہُمۡ وَ تَبَیَّنَ لَکُمۡ کَیۡفَ

उन लोगों के मकानात में जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और तुम्हारे सामने वाज़ेह हो चुका था के हम ने

فَعَلۡنَا بِہِمۡ وَ ضَرَبۡنَا لَکُمُ الۡاَمۡثَالَ ﴿۴۵﴾ وَقَدۡ مَکَرُوۡا

उन के साथ क्या किया और हम ने तुम्हारे लिए मिसालें भी बयान की थीं। और उन्हों ने अपना

مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ۭ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ

मक्र किया और अल्लाह के पास उन का मक्र है। और उन का मक्र ऐसा नहीं था के उस से

لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝٤٦ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ

पहाड़ (पहाड़ से मुराद शरीअत है) टल जाते। इस लिए आप अल्लाह को अपने रसूलों से किए हुए वादे

وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝٤٧ يَوْمَ

के खिलाफ करने वाला मत समझो। यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है, इन्तिक़ाम लेने वाला है। उस दिन

تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَ بَرَزُوْا

ये ज़मीन इस के अलावा ज़मीन से बदल दी जाएगी और आसमान (दूसरे आसमान से बदल दिए जाएंगे) और तमाम

لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝٤٨ وَ تَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىِٕذٍ

के तमाम ग़ालिब यकता अल्लाह के सामने पेश होंगे। और आप मुजरिमों को देखोगे उस दिन के

مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝٤٩ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ

वो बेड़ियों में जकड़े हुए होंगे। उन का लिबास तारकोल का होगा।

وَّ تَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝٥٠ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ

और उन के चेहरों को आग ढांपे हुए होगी। ताके अल्लाह सज़ा दे हर

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٥١

शख्स को उन आमाल की जो उस ने किए हैं। यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

ये आम ऐलान है इन्सानों के लिए और इस लिए ताके उन्हें उस से डराया जाए और ताके वो जान लें के वही

هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ لِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٥٢ ع

अल्लाह यकता माबूद है और ताके अक़्ल वाले नसीहत हासिल करें।

اٰيَاتُهَا ٩٩ (١٥) سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ (٥٤) رُكُوْعَاتُهَا ٦

उस में ६६ आयतें हैं सूरह हिज्र मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١

अलिफ लाम रॉ। ये साफ साफ बयान करने वाले कुरआन और इस किताब की आयतें हैं।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَوۡ كَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ۝٢

किसी वक़्त तमन्ना करेंगे कुफ्फार के काश वो मुसलमान होते।

ذَرۡهُمۡ يَاۡكُلُوۡا وَ يَتَمَتَّعُوۡا وَ يُلۡهِهِمُ الۡاَمَلُ فَسَوۡفَ

आप उन्हें छोड़ दीजिए के वो खाएं और मज़े उड़ाएं और उम्मीद ने उन्हें ग़ाफिल बना रखा है, फिर अनक़रीब

يَعۡلَمُوۡنَ ۝٣ وَمَاۤ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍ اِلَّا وَلَهَا

उन्हें मालूम हो जाएगा। और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया मगर इस हाल में के उस

كِتَابٌ مَّعۡلُوۡمٌ ۝٤ مَا تَسۡبِقُ مِنۡ اُمَّةٍ اَجَلَهَا

के लिए मालूम तहरीर थी। कोई उम्मत अपने मुक़र्ररा वक़्त से न आगे जा सकती है

وَمَا يَسۡتَاۡخِرُوۡنَ ۝٥ وَقَالُوۡا يٰۤاَيُّهَا الَّذِىۡ نُزِّلَ عَلَيۡهِ

और न पीछे रेह सकती हैं। और ये लोग केहते हैं के ऐ वो शख्स जिस पर ये ज़िक्र उतारा

الذِّكۡرُ اِنَّكَ لَمَجۡنُوۡنٌ ۝٦ لَوۡ مَا تَاۡتِيۡنَا بِالۡمَلٰٓـئِكَةِ

गया, यक़ीनन तुम तो मजनून हो। तू हमारे पास फरिश्तों को क्यूं नहीं ले आता

اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ۝٧ مَا نُنَزِّلُ الۡمَلٰٓـئِكَةَ

अगर तू सच्चा है। हम फरिश्तों को नहीं उतारते

اِلَّا بِالۡحَقِّ وَمَا كَانُوۡۤا اِذًا مُّنۡظَرِيۡنَ ۝٨ اِنَّا نَحۡنُ

मगर हक़ के साथ और तब तो उन्हें मोहलत भी नहीं दी जाएगी। यक़ीनन हम ने ही

نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ ۝٩ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا

ये ज़िक्र (क़ुरआन) उतारा है और हम ही उस की हिफाज़त करने वाले हैं। यक़ीनन हम ने आप

مِنۡ قَبۡلِكَ فِىۡ شِيَعِ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝١٠ وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ

से पेहले रसूल भेजे पिछली उम्मतों में। और उन के पास कोई रसूल नहीं

مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝١١ كَذٰلِكَ نَسۡلُكُهٗ

आता था मगर वो उस के साथ इस्तिहज़ा करते थे। इसी तरह हम इस्तिहज़ा मुजरिमों के

فِىۡ قُلُوۡبِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ۝١٢ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ وَقَدۡ خَلَتۡ

दिलों में दाखिल करते हैं। के वो उस पर ईमान नहीं लाते और पिछले लोगों का

سُنَّةُ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝١٣ وَلَوۡ فَتَحۡنَا عَلَيۡهِمۡ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ

तरीक़ा गुज़र चुका है। और अगर हम उन पर आसमान का दरवाज़ा खोल दें,

فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝۱۴ لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ

फिर वो उस में चढ़ भी जाएं, तब भी कहेंगे के हमारी निगाहें मदहोश

اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝۱۵ وَلَقَدْ

कर दी गईं, बल्के हम ऐसी क़ौम हैं के जिन पर जादू कर दिया गया है। हम ने

جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝۱٦

ही आसमान में बुर्ज बनाए हैं और उसे देखने वालों के लिए मुज़य्यन किया है।

وَ حَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝۱۷ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ

और हम ने उसे हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ बना दिया है। सिवाए उस के के जो चुपके से

السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ۝۱۸ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا

सुन भागे तो एक चमकता हुवा अंगारा उस का पीछा करता है। और ज़मीन को हमीं ने फैलाया

وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ

और हम ने ही ज़मीन में पहाड़ डाल दिए और हम ने ही ज़मीन में हर चीज़ को एक मिक़्दार के

مَّوْزُوْنٍ ۝۱۹ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ

साथ उगाया। और हम ने ही उस में ज़िन्दगी के असबाब रख दिए तुम्हारे लिए और उन के

لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ۝۲۰ وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا

लिए भी जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते। और कोई चीज़ नहीं है मगर हमारे पास

خَزَآئِنُهٗ ز وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝۲۱ وَاَرْسَلْنَا

उस के खज़ाने हैं। और हम उसे सिर्फ मुक़र्ररा मिक़्दार में उतारते हैं। और हम ने ही हवाएं

الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ج

भेजीं जो पानी से भरी हुई होती हैं, फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर हम वो पानी तुम्हें पिलाते हैं,

وَمَآ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ۝۲۲ وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ

इस हाल में के तुम पानी को खज़ाना कर के नहीं रख सकते। और हम ही ज़िन्दगी देते हैं

وَ نُمِيْتُ وَ نَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ۝۲۳ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

और हम ही मौत देते हैं और हम बाक़ी रेहने वाले हैं। यक़ीनन हमें मालूम हैं

الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ۝۲۴

तुम में से आगे बढ़ने वाले और यक़ीनन हमें मालूम हैं पीछे आने वाले।

وَ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۟﴿۲۵﴾ وَ لَقَدْ
यक़ीनन तेरा रब ही उन्हें इकट्ठा करेगा। यक़ीनन वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है। यक़ीनन

خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۟﴿۲۶﴾
हम ने ही इन्सान को पैदा किया सड़े हुए गारे की खन खन बजने वाली मिट्टी से।

وَ الْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾
और जिन्नात को हम ने इन्तिहाई गर्म आग से उस से पेहले पैदा किया।

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ خَالِقٌۢ بَشَرًا
और जब के तेरे रब ने फरिश्तों से कहा यक़ीनन मैं सड़े हुए गारे की

مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿۲۸﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَ نَفَخْتُ
खन खन बजने वाली मिट्टी से इन्सान को पैदा करने वाला हूँ। फिर जब मैं उसे बना लूं और मैं

فِيْهِ مِنْ رُّوْحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ
उस में अपनी रूह फूंक दूँ तो तुम उस के सामने सजदे में गिर जाना। फिर तमाम फरिश्तों ने सजदा

كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿۳۰﴾ۙ اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ
किया इकट्ठे, मगर इबलीस ने। इन्कार किया इस से के वो सजदा करने वालों

مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ يٰۤاِبْلِيْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ
के साथ हो। अल्लाह ने पूछा ऐ इबलीस! तुझे क्या हुवा के तू सजदा करने वालों

مَعَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ
के साथ नहीं हुवा? इबलीस ने कहा के मैं सजदा नहीं करूंगा ऐसे बशर को जिसे तू ने

مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿۳۳﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
पैदा किया है सड़े हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से। अल्लाह ने फरमाया फिर तू यहाँ से निकल जा,

فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿۳۴﴾ۙ وَّ اِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ
यक़ीनन तू मरदूद है। और तुझ पर लानत है क़यामत के दिन

الدِّيْنِ ﴿۳۵﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِیْۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۳۶﴾
तक। इबलीस ने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक जिस दिन मुर्दे क़बरों से उठाए जाएंगे।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿۳۷﴾ۙ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ
अल्लाह ने फरमाया यक़ीनन तुझे मोहलत दी गई। मालूम वक़्त के

الْمَعْلُوْمِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَا اَغْوَيْتَنِیْ لَاُزَیِّنَنَّ لَهُمْ

दिन तक। इबलीस ने कहा ऐ मेरे रब! इस वजह से के तू ने मुझे गुमराह किया, मैं उन के लिए

فِی الْاَرْضِ وَلَاُغْوِیَنَّهُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَكَ

ज़मीन में ज़ीनतें क़ाइम करूंगा और मैं उन तमाम को गुमराह करूंगा। मगर उन में से तेरे

مِنْهُمُ الْمُخْلَصِیْنَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَیَّ مُسْتَقِیْمٌ ﴿٤١﴾

खालिस किए हुए बन्दे। अल्लाह ने फरमाया के ये रास्ता मुझ तक सीधा आता है।

اِنَّ عِبَادِیْ لَیْسَ لَكَ عَلَیْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ

यक़ीनन मेरे बन्दे तेरा उन के ऊपर कोई ज़ोर नहीं चलेगा मगर वो जो

اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِیْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ

गुमराह लोगों में से तेरे पीछे चलें। और यक़ीनन उन तमाम के वादे की जगह

اَجْمَعِیْنَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ

जहन्नम है। उस के सात दरवाज़े हैं। उन में से हर दरवाज़े के लिए एक

جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿٤٤﴾ اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿٤٥﴾

गिरोह तक़सीम किया जाएगा। यक़ीनन मुत्तक़ी लोग जन्नतों और चशमों में होंगे।

اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِیْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِیْ صُدُوْرِهِمْ

(कहा जाएगा के) तुम उन में सलामती के साथ अमन से दाखिल हो जाओ। और हम निकाल देंगे उस कीने को जो उन के

مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰی سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِیْنَ ﴿٤٧﴾ لَا یَمَسُّهُمْ

सीनों में है, वो भाई भाई बन कर रहेंगे तख्तों पर आमने सामने बैठे हुए होंगे। उन को उस में

فِیْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِیْنَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِیْۤ

न थकावट पहोंचेगी और न वो वहां से निकाले जाएंगे। आप मेरे बन्दों को खबर कर दीजिए

اَنِّیْۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿٤٩﴾ وَاَنَّ عَذَابِیْ هُوَ الْعَذَابُ

के यक़ीनन मैं बख्शने वाला, निहायत रहम वाला हूँ। और ये के मेरा अज़ाब वो दर्दनाक

الْاَلِیْمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَیْفِ اِبْرٰهِیْمَ ﴿٥١﴾ اِذْ دَخَلُوْا

अज़ाब है। और आप उन को इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मेहमानों की खबर दीजिए। जब वो दाखिल हुए

عَلَیْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا

उन पर तो उन्हों ने कहा अस्सलामु अलैकुम। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन हम तुम से डरते हैं। उन्हों ने

لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝٥٣ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ

कहा के आप न डरिए, यक़ीनन हम आप को एक इल्म वाले लड़के की बशारत देते हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ۝٥٤ قَالُوْا

क्या तुम मुझे बशारत देते हो इस हालत में के मुझे बुढ़ापा पहोंच चुका है, फिर तुम किस चीज की बशारत देते हो? उन्हों ने

بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ۝٥٥ قَالَ وَمَنْ

कहा के हम आप को हक़ की बशारत देते हैं इस लिए आप मायूस लोगों में से न हों। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ۝٥٦ قَالَ

ने फरमाया सिवाए गुमराहों के और कौन अपने रब की रहमत से मायूस होता है? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने पूछा

فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝٥٧ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ

फिर तुम्हारे (ज़िम्मे) क्या काम (ड्यूटी) है, ऐ भेजे हुए फरिश्तो? उन्हों ने कहा के यक़ीनन हम एक

اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝٥٨ اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ

मुजरिम क़ौम की तरफ भेजे गए हैं, मगर लूत (अलैहिस्सलाम) के मानने वाले। यक़ीनन हम उन तमाम को नजात

اَجْمَعِيْنَ ۝٥٩ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٦٠

देंगे। मगर उन की बीवी के हम ने मुक़द्दर कर दिया है के वो हलाक होने वालों में से होगी।

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٦١ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ

फिर जब लूत (अलैहिस्सलाम) के घर वालों के पास भेजे हुए फरिश्ते आए, तो लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम ऐसे लोग

مُّنْكَرُوْنَ ۝٦٢ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ

हो जो अजनबी मालूम होते हो। उन्हों ने कहा बल्के हम आप के पास वो अज़ाब ले कर आए हैं जिस में ये

يَمْتَرُوْنَ ۝٦٣ وَ اَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٦٤

शक करते थे। और हम आप के पास हक़ ले कर आए हैं और यक़ीनन हम सच्चे हैं।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ

इस लिए आप अपने मानने वालों को ले कर के सफर कर जाइए रात के किसी हिस्से में और आप उन के पीछे पीछे चलिए

وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ۝٦٥

और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर न देखे और तुम चलते रहो उस जगह तक जहां का तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है।

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ

और हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) की तरफ उस हुक्म की वही कर दी के उन लोगों की जड़

مَقۡطُوۡعٌ مُّصۡبِحِيۡنَ ۝۶۶ وَجَآءَ اَهۡلُ الۡمَدِيۡنَةِ

सुब्ह होते हुए काट दी जाएगी। और शेहर वाले आए एक दूसरे को खुशखबरी

يَسۡتَبۡشِرُوۡنَ ۝۶۷ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيۡفِىۡ

सुनाते हुए। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये मेरे मेहमान हैं,

فَلَا تَفۡضَحُوۡنِ ۝۶۸ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخۡزُوۡنِ ۝۶۹ قَالُوۡۤا

इस लिए तुम मुझे रूस्वा मत करो। और अल्लाह से डरो और मुझे तुम बेआबरू न करो। उन्हों ने कहा

اَوَلَمۡ نَنۡهَكَ عَنِ الۡعٰلَمِيۡنَ ۝۷۰ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِىۡۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ

क्या हम ने आप को तमाम जहान वालों (की हिमायत) से रोका नहीं? लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये मेरी बेटियाँ हैं

فٰعِلِيۡنَ ۝۷۱ لَعَمۡرُكَ اِنَّهُمۡ لَفِىۡ سَكۡرَتِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ۝۷۲

अगर तुम्हें ऐसा करना ही है। आप की ज़िन्दगी की क़सम! यक़ीनन वो अपने नशे में मदहोश थे।

فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُشۡرِقِيۡنَ ۝۷۳ فَجَعَلۡنَا عَالِيَهَا

फिर सूरज निकलते हुए उन्हें एक चीख ने पकड़ लिया। फिर हम ने उस बस्ती के ऊपर वाले हिस्से को उस का नीचे वाला

سَافِلَهَا وَ اَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ حِجَارَةً مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ۝۷۴

हिस्सा बना दिया और हम ने उन के ऊपर कंकर के पथ्थर बरसाए।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلۡمُتَوَسِّمِيۡنَ ۝۷۵ وَاِنَّهَا لَبِسَبِيۡلٍ

यक़ीनन उस में ग़ौर से देखने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और यक़ीनन ये बस्ती ऐसे रास्ते पर है जो अभी

مُّقِيۡمٍ ۝۷۶ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝۷۷

मौजूद है। यक़ीनन उस में ईमान वालों के लिए निशानी है।

وَاِنۡ كَانَ اَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ لَظٰلِمِيۡنَ ۝۷۸ فَانۡتَقَمۡنَا

और यक़ीनन ऐका वाले भी ज़ालिम थे। फिर हम ने उन से

مِنۡهُمۡ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ۝۷۹ وَلَقَدۡ كَذَّبَ

इनतिक़ाम लिया। और यक़ीनन ये दोनों बस्तियाँ मारूफ रास्ते पर हैं। यक़ीनन हिज्र

اَصۡحٰبُ الۡحِجۡرِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۝۸۰ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ اٰيٰتِنَا

वालों ने भी पैग़म्बर को झुठलाया। और हम ने उन्हें दीं अपनी निशानियाँ,

فَكَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ۝۸۱ وَكَانُوۡا يَنۡحِتُوۡنَ

फिर वो उस से ऐराज़ करते थे। और वो पहाड़ों को

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ
तराश कर अमन से घर बनाते थे। फिर उन्हें एक चीख ने पकड़ लिया

مُصْبِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾
सुब्ह होते हुए। फिर उन के कुछ काम नहीं आए वो जो वो बनाते थे।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ
और हम ने आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं पैदा नहीं किया

اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ
मगर हक़ के साथ। और यक़ीनन क़यामत ज़रूर आने वाली है, इस लिए आप अच्छे तरीक़े से दरगुज़र

الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ
कीजिए। यक़ीनन तेरा रब वही पैदा करने वाला, खूब जानने वाला है। यक़ीनन

اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾
हम ने आप को सबअे मसानी और कुरआने अज़ीम दिया है।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ
आप अपनी निगाहें न उठाएं उस सामान की तरफ जिस के ज़रिए हम ने उन की चन्द क़िस्मों को मुतमत्तेअ कर रखा है

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾
और उन पर ग़म न कीजिए और अपना पेहलू ईमान वालों के सामने झुकाए रखिए।

وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَآ اَنْزَلْنَا
और आप फरमा दीजिए के मैं तो साफ साफ डराने वाला हूँ। जैसा हम ने उन तक़सीम

عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾
करने वालों पर (अज़ाब) उतारा। जो कुरआन को टुकड़े टुकड़े करते थे।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا
फिर आप के रब की क़सम! यक़ीनन हम उन तमाम से ज़रूर सवाल करेंगे। उन आमाल के मुतअल्लिक़ जो

يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ
वो करते थे। इस लिए आप साफ साफ बयान कर दीजिए वो जिस का आप को हुक्म दिया जा रहा है और मुशरिकीन

عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾
से ऐराज़ कीजिए। यक़ीनन हम आप की तरफ से उन इस्तिहज़ा करने वालों के लिए काफी हैं।

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۹۶﴾

उन के लिए जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद क़रार देते हैं। फिर उन्हें अनक़रीब मालूम हो जाएगा।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿۹۷﴾

यक़ीनन हम जानते हैं के आप का सीना तंग होता है उन बातों की वजह से जो वो केहते हैं।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۹۸﴾

फिर आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए और सज्दा करने वालों में से रहिए।

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿۹۹﴾

और अपने रब की इबादत कीजिए यहां तक के आप को मौत आ जाए।

ركوعاتها ۱۶ (۱۶) سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ (۷۰) اٰياتها ۱۲۸

और १६ रूकूअ हैं सूरह नहल मक्का में नाज़िल हुई उस में १२८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَتٰٓى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى

अल्लाह का हुक्म आ पहोंचा, फिर तुम उस को जल्दी तलब मत करो। अल्लाह पाक है और बरतर है

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱﴾ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ

उन चीज़ों से जिसे वो शरीक ठेहराते हैं। वो फरिश्ते उतारता है वही के साथ अपने

اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا

हुक्म से जिस पर चाहता है अपने बन्दों में से, ये के तुम डराओ

اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿۲﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

के कोई माबूद नहीं मगर मैं ही, तो तुम मुझ से डरो। उस ने आसमानों और

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۳﴾ خَلَقَ

ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया। वो बरतर है उन चीज़ों से जिसे वो शरीक ठेहराते हैं। उस ने

الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿۴﴾

इन्सान को पैदा किया नुत्फे से, फिर अचानक वो खुला झगड़ालू बन गया।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ

और उस ने चौपाए पैदा किए। तुम्हारे लिए उन चौपाओं में गर्मी हासिल करने का सामान है और दूसरे मनाफेअ भी

وَمِنۡهَا تَاۡكُلُوۡنَ ۝ وَلَكُمۡ فِيۡهَا جَمَالٌ حِيۡنَ تُرِيۡحُوۡنَ

हैं और उन में से बाज़ों को तुम खाते भी हो। और तुम्हारे लिए उन चौपाओं में खूबसूरती है जिस वक़्त के तुम शाम को

وَحِيۡنَ تَسۡرَحُوۡنَ ۝ وَ تَحۡمِلُ اَثۡقَالَكُمۡ اِلٰى بَلَدٍ

चरागाह से वापस लाते हो और जब के तुम जानवर चराने के लिए ले जाते हो। और ये जानवर तुम्हारे बोझ उठा ले

لَّمۡ تَكُوۡنُوۡا بٰلِغِيۡهِ اِلَّا بِشِقِّ الۡاَنۡفُسِ‌ؕ اِنَّ رَبَّكُمۡ

जाते हैं ऐसे इलाक़े तक के तुम वहाँ तक नहीं पहोंच सकते मगर जानों की मशक़्क़त से। यक़ीनन तुम्हारा रब

لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ۝ وَّالۡخَيۡلَ وَالۡبِغَالَ وَالۡحَمِيۡرَ

अलबत्ता निहायत मेहरबान, बड़ा रहम वाला है। और (उस ने) घोड़े और खच्चर और गधे (पैदा किए)

لِتَرۡكَبُوۡهَا وَزِيۡنَةً‌ؕ وَ يَخۡلُقُ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝

ताके तुम उन पर सवारी करो और ज़ीनत (के लिए पैदा किए)। और पैदा करता है वो जो तुम नहीं जानते।

وَعَلَى اللّٰهِ قَصۡدُ السَّبِيۡلِ وَ مِنۡهَا جَآئِرٌ‌ؕ وَلَوۡ شَآءَ

और अल्लाह ही के ज़िम्मे है दरमियानी रास्ता बयान करना और उन रास्तों में से कुछ टेढ़े हैं। और अगर वो चाहता

لَهَدٰٮكُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ۝ هُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

तो तुम सब को हिदायत दे देता। वही अल्लाह है जिस ने आसमान से तुम्हारे लिए

مَآءً لَّـكُمۡ مِّنۡهُ شَرَابٌ وَّمِنۡهُ شَجَرٌ فِيۡهِ تُسِيۡمُوۡنَ ۝

पानी बरसाया, उस में से पीने के लिए है और उसी पानी से दरख़्त उगते हैं जिन में तुम जानवर चराते हो।

يُنۡۢبِتُ لَـكُمۡ بِهِ الزَّرۡعَ وَالزَّيۡتُوۡنَ وَالنَّخِيۡلَ

वो तुम्हारे लिए उस पानी के ज़रिए उगाता है खेती और ज़ैतून और खजूर

وَالۡاَعۡنَابَ وَمِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ‌ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

और अंगूर और तमाम फलों को। यक़ीनन उस में निशानी है

لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ۝ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَۙ

ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और उस ने तुम्हारे लिए रात और दिन को काम में लगा रखा है

وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ‌ؕ وَالنُّجُوۡمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمۡرِهٖ‌ؕ

और सूरज और चाँद को भी। और सितारे उस के हुक्म से काम में लगे हुए हैं।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۝ وَمَا ذَرَاَ لَكُمۡ

यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती है। और जो चीज़ें उस ने तुम्हारे लिए

فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً

ज़मीन में पैदा कीं जिन के रंग मुखतलिफ हैं। यक़ीनन उस में निशानी है

لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ

ऐसी क़ौम के लिए जो नसीहत हासिल करती है। और वही अल्लाह है जिस ने समन्दर को काम में लगा रखा है

لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ

ताके तुम उस में से ताज़ा गोश्त खाओ और उस से ज़ेवर

حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ

निकालो जिसे तुम पेहनो। और तू कशतियों को देखेगा के उस में मौजें चीरती हुई चलती हैं

وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾ وَاَلْقٰى

और ताके अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और ताके तुम शुक्र अदा करो। और उस

فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا

ने ज़मीन में पहाड़ डाल दिए के कहीं वो तुम्हारी वजह से हिलने न लगे और उस ने नेहेर और रास्ते बनाए

لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ لا وَ عَلٰمٰتٍ ؕ وَ بِالنَّجْمِ هُمْ

ताके तुम राह पाओ। और अलामतें बनाईं। और सितारों से भी वो राह

يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ

पाते हैं। क्या फिर वो अल्लाह जो मखलूक़ पैदा करता है उस की तरह हो सकता है जो पैदा नहीं कर सकता?

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ

क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते हो? और अगर तुम अल्लाह की नेअमत को गिनो तो तुम उस का इहसा नहीं कर सकते।

اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ

यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और अल्लाह जानता है उसे जो तुम छुपाते हो

وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और उसे जो तुम ज़ाहिर करते हो। और जिन को वो पुकारते हैं अल्लाह के अलावा

لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْوَاتٌ

वो कोई चीज़ पैदा नहीं कर सकते बल्के वो तो मखलूक़ हैं। मुर्दे हैं,

غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾ ع

बेजान हैं। और उन्हें पता भी नहीं के किस वक़्त मुर्दे क़ब्र से उठाए जाएंगे?

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

तुम्हारा माबूद यकता माबूद है। फिर जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا جَرَمَ

उन के कुलूब मुन्किर हैं और वो बड़ाई चाहते हैं। यक़ीनन

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ

अल्लाह जानता है उसे जो वो छुपाते हैं और जिसे वो ज़ाहिर करते हैं। यक़ीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ

तकब्बुर करने वालों को पसन्द नहीं करता। और जब उन से कहा जाता है

مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ لِيَحْمِلُوْٓا

के तुम्हारे रब ने क्या उतारा तो केहते हैं के पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। ताके वो

اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ

अपने सारे गुनाह उठाएं क़यामत के दिन और उन लोगों के गुनाहों में से भी जिन्हें

يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾

ये इल्म के बग़ैर गुमराह कर रहे हैं। सुनो! बुरा है वो जिसे वो बोझ बना रहे हैं।

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ

यक़ीनन उन लोगों ने भी मक्र किया जो उन से पेहले थे, फिर अल्लाह (का हुक्म) उन की इमारत पर आया

مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ

बुन्यादों की जानिब से और उन पर छत गिर पड़ी उन के ऊपर से

وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ

और उन के पास अज़ाब आया जिधर से उन्हें खयाल भी नहीं था। फिर क़यामत

الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ

के दिन अल्लाह उन्हें रूस्वा करेगा और कहेगा के मेरे वो शुरका कहाँ हैं जिन के

كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

बारे में तुम झगड़ते थे? वो कहेंगे जिन्हें इल्म दिया गया है के

اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾

यक़ीनन आज रूस्वाई और बुराई काफिरों पर है।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ص

उन पर जिन की फरिशते जान निकालते हैं इस हाल में के वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले होते हैं।

فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ط

फिर वो सुलह को डालेंगे के हम तो कोई बुराई नहीं करते थे।

بَلٰىٓ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوْٓا

क्यूं नहीं? यक़ीनन अल्लाह को खूब मालूम हैं वो अमल जो तुम करते थे। इस लिए

اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط فَلَبِئْسَ مَثْوَى

तुम जहन्नम के दरवाज़ों से उस में हमेशा रेहने के लिए दाखिल हो जाओ। फिर वो तकब्बुर करने वालों का

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ

बुरा ठिकाना है। और पूछा जाएगा उन से जो मुत्तक़ी हैं के तुम्हारे रब ने क्या

رَبُّكُمْ ط قَالُوْا خَيْرًا ط لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا

उतारा? तो वो कहेंगे के भलाई। उन के लिए जिन्हों ने इस दुन्या में नेकियाँ कीं

حَسَنَةٌ ط وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ط وَلَنِعْمَ دَارُ

भलाई है। और अलबत्ता आखिरत का घर वो बेहतर है। और यक़ीनन मुत्तक़ियों का घर कितना

الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٠﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ

अच्छा है? वो जन्नाते अद्न हैं जिन में वो दाखिल होंगे, जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ط كَذٰلِكَ

नेहरें बेहती होंगी, जिन में उन के लिए वो तमाम चीज़ें होंगी जो वो चाहेंगे। इसी तरह

يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

अल्लाह मुत्तक़ियों को बदला देंगे। उन को जिन की फरिशते जान निकालेंगे

طَيِّبِيْنَ لا يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ لا ادْخُلُوا الْجَنَّةَ

पाकीज़ा होने की हालत में, वो कहेंगे 'अस्सलामु अलैकुम'। तुम जन्नत में दाखिल हो जाओ

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ

उन आमाल के बदले में जो तुम करते थे। वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर इस के के उन के पास

الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ط كَذٰلِكَ فَعَلَ

फरिशते आ जाएं या तेरे रब का (अज़ाब का) हुक्म आ जाए। इसी तरह उन लोगों

ٱلَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ
ने भी किया जो उन से पेहले थे। और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया लेकिन

وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ
वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। फिर उन्हें उन की बदअमली की सज़ाएं मिलीं

مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾
जो उन्हों ने की और उन्हें उस अज़ाब ने घेर लिया जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ
और मुशरिकीन ने कहा के अगर अल्लाह चाहता तो हम अल्लाह के सिवा किसी चीज़ की इबादत

مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ
न करते, न हम और न हमारे बाप दादा, और न हम (उस के हुक्म) के बग़ैर कोई चीज़

مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
हराम ठेहराते। इसी तरह उन लोगों ने भी किया जो उन से पेहले थे।

فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا
तो पैग़म्बरों के ज़िम्मे तो सिर्फ साफ साफ पहोंचा देना है। यक़ीनन हम

فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا
ने हर उम्मत में रसूल भेजे के तुम अल्लाह की इबादत करो और शैतान

الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ
से बचो। फिर उन में से बाज़ को अल्लाह ने हिदायत दी और उन में से बाज़ पर

حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
गुमराही साबित हो गई। तो तुम ज़मीन में चलो फिरो,

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾
फिर देखो के झुठलाने वालों का अन्जाम कैसा हुवा?

اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ
अगर आप उन की हिदायत पर हरीस हैं, तो यक़ीनन अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे

يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ
अल्लाह गुमराह करता है और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा। और ये अपनी क़स्मों पर ज़ोर दे कर अल्लाह की

اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا

क़स्में खाते हैं के अल्लाह ज़िन्दा कर के नहीं उठाएगा उन्हें जो मर जाते हैं। क्यूं नहीं? अल्लाह के ज़िम्मे

عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾ ۙ

सच्चे वादे के तौर पर लाज़िम है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ

(अल्लाह ज़िन्दा करेगा) ताके उन के सामने बयान करे वो जिस में वो इखतिलाफ करते थे और ताके काफिर लोग जान

كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَیْءٍ

लें के यक़ीनन वो झूठे थे। हमारा तो किसी चीज़ को सिर्फ केहना होता है जब

اِذَاۤ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٠﴾ ع وَالَّذِيْنَ

हम उस का इरादा करते हैं के हम उस को केहते हैं के 'كُنْ' (हो जा) तो वो हो जाती है। और वो लोग

ع ٥

هَاجَرُوْا فِی اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ

जिन्हों ने अल्लाह की वजह से हिजरत की इस के बाद के उन पर ज़ुल्म किया गया तो हम उन्हें

فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا

दुन्या में अच्छा ठिकाना देंगे। और आखिरत का अज्र तो बहोत बड़ा है। काश के वो

وقف لازم

يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ ۙ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَ عَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٤٢﴾

जानते होते। वो जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیْۤ اِلَيْهِمْ

और हम ने आप से पेहले रसूल नहीं भेजे मगर मर्द ही, जिन की तरफ हम वही भेजा करते थे,

فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٣﴾ ۙ

तो तुम ज़िक्र वालों से पूछ लो अगर तुम जानते नहीं हो।

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ

(रसूल भेजे) मोअजिज़ात और किताबें दे कर। और हम ने आप की तरफ ये ज़िक्र (किताब) उतारा ताके आप

النصف

لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٤﴾

लोगों के सामने बयान करें वो जो उन की तरफ उतारा गया और शायद वो सोचें।

اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّخْسِفَ اللّٰهُ

क्या फिर वो जिन्हों ने बुरा मक्र किया वो मामून हैं इस से के अल्लाह उन्हें ज़मीन में

بِهِمُ الۡاَرۡضَ اَوۡ يَاۡتِيَهُمُ الۡعَذَابُ مِنۡ حَيۡثُ
धंसा दे या उन पर अज़ाब ले आए जहां से उन्हें

لَا يَشۡعُرُوۡنَ ۝٤٥ اَوۡ يَاۡخُذَهُمۡ فِىۡ تَقَلُّبِهِمۡ فَمَا هُمۡ
गुमान भी न हो। या उन को पकड़ ले चलते फिरते, फिर वो (अल्लाह को)

بِمُعۡجِزِيۡنَ ۝٤٦ اَوۡ يَاۡخُذَهُمۡ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمۡ
आजिज़ नहीं कर सकते। या उन को डरा कर पकड़ ले। फिर यक़ीनन तेरा रब

لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ۝٤٧ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ
अलबत्ता शफक़त वाला, निहायत रहम वाला है। क्या उन्हों ने देखा नहीं अल्लाह की पैदा की हुई

مِنۡ شَىۡءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الۡيَمِيۡنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا
चीज़ों को जिन के साए दाएं और बाएं ढलते हैं अल्लाह ही को सजदा

لِّلّٰهِ وَهُمۡ دٰخِرُوۡنَ ۝٤٨ وَلِلّٰهِ يَسۡجُدُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
करते हुए और वो आजिज़ी करने वाले हैं। और अल्लाह ही को सजदा करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों

وَمَا فِى الۡاَرۡضِ مِنۡ دَآبَّةٍ وَّالۡمَلٰٓئِكَةُ وَهُمۡ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ ۝٤٩
में हैं और जो ज़मीन में हैं जानदारों में से और फरिशते भी और वो तकब्बुर नहीं करते।

يَخَافُوۡنَ رَبَّهُمۡ مِّنۡ فَوۡقِهِمۡ وَ يَفۡعَلُوۡنَ مَا يُؤۡمَرُوۡنَ ۝٥٠ ۩
वो अपने रब से डरते हैं अपने ऊपर से और करते हैं वही जिस का उन्हें हुक्म दिया जाता है।

وَ قَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوۡۤا اِلٰهَيۡنِ اثۡنَيۡنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ
और अल्लाह ने फरमाया के तुम दो माबूद मत बनाओ। वो तो सिर्फ यकता

وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّاىَ فَارۡهَبُوۡنِ ۝٥١ وَلَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
माबूद है। तो तुम मुझ ही से डरो। और उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों

وَالۡاَرۡضِ وَلَهُ الدِّيۡنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيۡرَ اللّٰهِ تَتَّقُوۡنَ ۝٥٢
और ज़मीन में हैं और उसी के लिए खालिस इबादत है। क्या अल्लाह के अलावा से तुम डरते हो?

وَمَا بِكُمۡ مِّنۡ نِّعۡمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ
और जो नेअमत भी तुम्हारे पास है तो वो अल्लाह की तरफ से है, फिर जब तुम्हें ज़रर पहोंचता है

فَاِلَيۡهِ تَجۡـَٔرُوۡنَ ۝٥٣ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنۡكُمۡ اِذَا
तो उसी की तरफ तुम आजिज़ी करते हो। फिर जब वो तुम से ज़रर दूर करता है तो अचानक

فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۴﴾ لِيَكْفُرُوْا

तुम में से एक जमाअत अपने रब के साथ शिर्क करने लगती है। ताके वो नाशुक्री करें उस (नेअमत) की

بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ٙ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ يَجْعَلُوْنَ

जो हम ने उन्हें दी, तो मज़े उड़ा लो। फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा। और ये लोग हिस्सा मुक़र्रर करते हैं

لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْئَلُنَّ

हमारी दी हुई रोज़ी में से उन बुतों के लिए जिन के बारे में उन्हें कुछ मालूम नहीं। अल्लाह की क़सम! ज़रूर तुम से

عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿۵۶﴾ وَ يَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ

सवाल होगा उस झूठ के मुतअल्लिक़ जो तुम घड़ते हो। और वो अल्लाह के लिए बेटियाँ क़रार देते हैं,

سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ

अल्लाह इस से पाक है, और अपने लिए वो (लड़के) जिन की उन्हें चाहत है। हालांके जब उन में से किसी एक को

بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿۵۸﴾

बशारत दी जाती है लड़की की तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है और ग़म (व गुस्से) से भर जाता है।

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ

वो छुपता (फिरता) है लोगों से उस की बुराई की वजह से जिस की बशारत उसे दी गई। अब आया उसे ज़िल्लत

عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ

के साथ रोके रखे या उस को मिट्टी में दबा दे। सुनो! बुरा है

مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۵۹﴾ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

जिस का वो फैसला कर रहे हैं। उन लोगों की जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

बुरी मिसाल है। और अल्लाह के लिए बरतर मिसाल है। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿۶۰﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ

हिक्मत वाला है। और अगर अल्लाह इन्सानों को पकड़ ले उन के ज़ुल्म की वजह से

مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ

तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़े, लेकिन अल्लाह उन्हें मोहलत देता है

اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا

एक वक़्ते मुक़र्ररा तक। फिर जब उन का वक़्ते मुक़र्ररा आ जाता है तो

ع ١٤

يَسْتَأْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَ يَجْعَلُوْنَ

एक घड़ी न पीछे रेह सकते हैं और न एक घड़ी आगे जा सकते हैं। और ये अल्लाह के

لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَ تَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ

लिए वो मुक़र्रर करते हैं जिसे खुद नापसन्द करते हैं और उन की ज़बानें झूठ घड़ती हैं

اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ

के उन के लिए भलाई है। यक़ीनन उन के लिए दोज़ख है और यही

مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ

आगे आगे होंगे। अल्लाह की क़सम! यक़ीनन हम ने रसूल भेजे आप से पेहली उम्मतों की तरफ

فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ

फिर शैतान ने उन के लिए उन के अमल मुज़य्यन किए, फिर वो

وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

आज उन का साथी है और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى

और हम ने आप पर ये किताब सिर्फ इस लिए उतारी है ताके आप उन के सामने साफ साफ बयान करें वो

اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं, और (ये किताब) ईमान लाने वाली क़ौम के लिए हिदायत और रहमत है।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۤءِ مَاۤءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रिए ज़मीन को ज़िन्दा किया

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ

उस के खुश्क हो जाने के बाद। यक़ीनन उस में निशानी है ऐसी क़ौम के लिए

يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ

जो सुनती है। और यक़ीनन तुम्हारे लिए चौपाओं में इबरत है।

نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ

के हम तुम्हें पिलाते हैं उस से जो उन के पेटों में है गोबर और खून के दरमियान से

لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمِنْ ثَمَرٰتِ

खालिस दूध, जो पीने वालों के लिए खुशगवार होता है। और खजूर और

النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا
अंगूर के फलों से तुम नशाआवर चीज़ें बनाते हो

وَّرِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾
और अच्छी खाने की चीज़ें। यक़ीनन उस में निशानी है ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती हो।

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ
और तेरे रब ने शहद मक्खी को हुक्म दिया के तू पहाड़ों

مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَ مِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾
में घर बना और दरख़्तों में और उन के छप्परों में।

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ
फिर तू खा तमाम फलों से, फिर अपने रब के बनाए हुए

رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ
रास्तों पर चल। उस के पेट से निकलती है ऐसी पीने की चीज़ जिस के रंग मुखतलिफ

اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
होते हैं, जिस में इन्सानों के लिए शिफा है। यक़ीनन उस में निशानी है

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ
ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफात देगा।

وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ
और तुम में कुछ वो हैं जो लौटाए जाते हैं निकम्मी उम्र तक ताके वो सब कुछ

بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾
जानने के बाद कुछ भी न जानें। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, कुदरत वाला है।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۚ
और अल्लाह ने तुम में से एक को दूसरे पर फज़ीलत दी रोज़ी में

فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى
फिर जिन्हें फज़ीलत दी गई है वो अपनी रोज़ी नहीं देते अपने

مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ
गुलामों को इस तरह के ये आक़ा और वो गुलाम उस में बराबर हो जाएं। क्या फिर अल्लाह की नेअमत

يَجۡحَدُوۡنَ۝۷۱ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ

का वो इन्कार करते हैं? और अल्लाह ने तुम्हारी अपनी जानों से जोड़े

اَزۡوَاجًا وَّ جَعَلَ لَكُمۡ مِّنۡ اَزۡوَاجِكُمۡ بَنِيۡنَ

बनाए और तुम्हारी बीवियों से तुम्हें बेटे

وَ حَفَدَةً وَّ رَزَقَكُمۡ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالۡبَاطِلِ

और पोते दिए और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं। क्या फिर ये बातिल पर

يُؤۡمِنُوۡنَ وَ بِنِعۡمَتِ اللّٰهِ هُمۡ يَكۡفُرُوۡنَ۝۷۲ۙ

ईमान रखते हैं और अल्लाह की नेअमत की नाशुक्री करते हैं?

وَ يَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمۡلِكُ لَهُمۡ رِزۡقًا

और इबादत करते हैं अल्लाह के अलावा ऐसी चीज़ों की जो उन को आसमानों

مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ شَيۡـًٔا وَّلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ۝۷۳ۚ

और ज़मीन से कोई खाने की चीज़ देने पर क़ादिर नहीं हैं और न उस की ताक़त रखते हैं।

فَلَا تَضۡرِبُوۡا لِلّٰهِ الۡاَمۡثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ

इस लिए तुम अल्लाह के लिए मिसालें मत बयान करो। यक़ीनन अल्लाह जानता है

وَ اَنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ۝۷۴ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبۡدًا

और तुम जानते नहीं हो। अल्लाह ने एक मिसाल बयान की के एक वो

مَّمۡلُوۡكًا لَّا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّمَنۡ رَّزَقۡنٰهُ مِنَّا

ममलूक गुलाम है जो किसी चीज़ पर कादिर नहीं है और एक वो है जिसे हम ने हमारी तरफ से अच्छी रोज़ी

رِزۡقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنۡفِقُ مِنۡهُ سِرًّا وَّ جَهۡرًا ؕ

दी है, फिर वो उस में से खर्च करता है चुपके से और अलानिया तौर पर।

هَلۡ يَسۡتَوٗنَ ؕ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ ؕ بَلۡ اَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ۝۷۵

क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं? तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं। बल्के उन में अक्सर जानते नहीं।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيۡنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبۡكَمُ

और अल्लाह ने मिसाल बयान की दो आदमियों की जिन में से एक गूंगा है,

لَا يَقۡدِرُ عَلٰى شَىۡءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوۡلٰٮهُ ۙ اَيۡنَمَا

किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं, बल्के वो बोझ है अपने आक़ा पर। जहां वो

يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ
उसे भेजे तो कोई भलाई ले कर नहीं आता। तो क्या ये और वो शख्स बराबर हो सकता है जो

يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۟ وَلِلّٰهِ
इन्साफ का हुक्म करता है और वो सीधे रास्ते पर है? और अल्लाह

غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ اَمْرُ السَّاعَةِ
के लिए आसमानों और ज़मीन का ग़ैब है। और क़यामत का मुआमला नहीं है

اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
मगर एक पलक झपकने की तरह, बल्के उस से भी ज़्यादा क़रीब। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत

قَدِيْرٌ ۟ وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ
वाला है। और अल्लाह ने तुम्हें निकाला तुम्हारी माओं के पेट से,

لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
तुम कुछ भी जानते नहीं थे। और उस ने तुम्हारे लिए कान और आँख

وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۟ اَلَمْ يَرَوْا
और दिल बनाए ताके तुम शुक्र अदा करो। क्या उन्हों ने देखा नहीं

اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ
परिन्दों को जो (अध्धर) लटके हुए होते हैं आसमानी फिज़ा में। उन को सिवाए अल्लाह के

اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۟ وَاللّٰهُ
कोई रोके हुए नहीं है। यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान रखती है। और अल्लाह

جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ
ने तुम्हारे घरों में रेहने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए

مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ
चौपाओं की खालों से घर बनाए जिन को तुम हलका समझते हो तुम्हारे सफर के

ظَعْنِكُمْ وَ يَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا
वक्त और तुम्हारी इक़ामत के दौरान। और उन के ऊन और उन के

وَ اَوْبَارِهَا وَ اَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّ مَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۟
बबरियों और उन के बालों से तुम सामान बनाते हो और एक वक्त तक नफा उठाने की चीज़ें बनाते हो।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمۡ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّ جَعَلَ لَكُمۡ

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी मखलूक़ के साए बनाए और तुम्हारे लिए

مِّنَ الۡجِبَالِ اَكۡنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمۡ سَرَابِيۡلَ تَقِيۡكُمُ

पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए लिबास बनाया जो तुम्हें बचाता है

الۡحَرَّ وَ سَرَابِيۡلَ تَقِيۡكُمۡ بَاۡسَكُمۡ‌ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ

गर्मी से और लिबास बनाया जो तुम्हें तुम्हारी लड़ाई में बचाता है। इसी तरह अल्लाह अपनी

نِعۡمَتَهٗ عَلَيۡكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُسۡلِمُوۡنَ ۝٨١ فَاِنۡ تَوَلَّوۡا

नेअमतें तुम पर इतमाम तक पहोंचाते हैं ताके तुम ताबेदार हो जाओ। फिर अगर वो ऐराज़ करें

فَاِنَّمَا عَلَيۡكَ الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ۝٨٢ يَعۡرِفُوۡنَ نِعۡمَتَ

तो आप के ज़िम्मे सिर्फ साफ साफ पहोंचा देना है। वो अल्लाह की नेअमत को

اللّٰهِ ثُمَّ يُنۡكِرُوۡنَهَا وَاَكۡثَرُهُمُ الۡكٰفِرُوۡنَ ۝٨٣ وَ يَوۡمَ

पेहचानते हैं, फिर उस का इन्कार करते हैं और उन में से अक्सर नाशुकरे हैं। और जिस दिन

نَبۡعَثُ مِنۡ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيۡدًا ثُمَّ لَا يُؤۡذَنُ لِلَّذِيۡنَ

हम हर उम्मत में से एक गवाह को उठाएंगे, फिर काफिरों को इजाज़त नहीं दी

كَفَرُوۡا وَلَا هُمۡ يُسۡتَعۡتَبُوۡنَ ۝٨٤ وَاِذَا رَاَ الَّذِيۡنَ ظَلَمُوا

जाएगी और न उन से मुआफी मांगने को कहा जाएगा। और जब ज़ालिम अज़ाब

الۡعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمۡ وَلَا هُمۡ يُنۡظَرُوۡنَ ۝٨٥

देखेंगे तो उन से हलका नहीं किया जाएगा और न उन को मोहलत दी जाएगी।

وَاِذَا رَاَ الَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡا شُرَكَآءَهُمۡ قَالُوۡا رَبَّنَا

और जब मुशरिकीन अपने शुरका को देखेंगे तो कहेंगे ऐ हमारे रब!

هٰۤؤُلَاۤءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيۡنَ كُنَّا نَدۡعُوۡا مِنۡ دُوۡنِكَ‌ۚ

ये हमारे शुरका हैं जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे।

فَاَلۡقَوۡا اِلَيۡهِمُ الۡقَوۡلَ اِنَّكُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ۝٨٦ وَاَلۡقَوۡا

तो वो उन की तरफ बात को डालेंगे के तुम झूठ बोलते हो। और वो

اِلَى اللّٰهِ يَوۡمَئِذِ اِلسَّلَمَ وَضَلَّ عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا

अल्लाह की तरफ उस दिन सुलह को डालेंगे और उन से खो जाएंगे वो जिसे वो

يَفۡتَرُوۡنَ ﴿٨٧﴾ اَلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِ

घड़ा करते थे। वो लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से

اللّٰهِ زِدۡنٰهُمۡ عَذَابًا فَوۡقَ الۡعَذَابِ بِمَا كَانُوۡا

रोका उन को हम एक से बढ़ कर एक अज़ाब देंगे इस वजह से के वो फसाद

يُفۡسِدُوۡنَ ﴿٨٨﴾ وَ يَوۡمَ نَبۡعَثُ فِىۡ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيۡدًا

फेलाते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गवाह उन के

عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِهِمۡ وَجِئۡنَا بِكَ شَهِيۡدًا

खिलाफ उन्ही में से खड़ा करेंगे, फिर हम आप को उन तमाम पर गवाह के तौर पर

عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَ نَزَّلۡنَا عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ تِبۡيَانًا لِّكُلِّ

लाएंगे। और हम ने आप पर ये किताब उतारी हर चीज़ के बयान

شَىۡءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحۡمَةً وَّ بُشۡرٰى لِلۡمُسۡلِمِيۡنَ ﴿٨٩﴾

के लिए और मुसलमानों के लिए हिदायत और रहमत और बशारत के तौर पर।

اِنَّ اللّٰهَ يَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَالۡاِحۡسَانِ وَاِيۡتَآئِ ذِى

यक़ीनन अल्लाह हुक्म देते हैं इन्साफ का और नेकी का और रिश्तेदारों को

الۡقُرۡبٰى وَ يَنۡهٰى عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡكَرِ وَالۡبَغۡىِ ۚ

देने का और मना फरमाते हैं बेहयाई से और बुराई से और ज़ुल्म से।

يَعِظُكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُوۡنَ ﴿٩٠﴾ وَاَوۡفُوۡا بِعَهۡدِ اللّٰهِ

वो तुम्हें नसीहत करता है ताके तुम नसीहत हासिल करो। और तुम अल्लाह का अहद पूरा करो

اِذَا عٰهَدۡتُّمۡ وَلَا تَنۡقُضُوا الۡاَيۡمَانَ بَعۡدَ تَوۡكِيۡدِهَا

जब तुम आपस में मुआहदा करो और तुम क़स्मों को उन के पक्का करने के बाद मत तोड़ो

وَقَدۡ جَعَلۡتُمُ اللّٰهَ عَلَيۡكُمۡ كَفِيۡلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ

इस हाल में के तुम ने अल्लाह को अपने ऊपर कफील बना लिया है। यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे

مَا تَفۡعَلُوۡنَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُوۡنُوۡا كَالَّتِىۡ نَقَضَتۡ غَزۡلَهَا

अफआल जानता है। और तुम उस औरत की तरह मत बनो जिस ने मेहनत कर के

مِنۡۢ بَعۡدِ قُوَّةٍ اَنۡكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوۡنَ اَيۡمَانَكُمۡ دَخَلًاۢ

अपना काता हुवा सूत टुकड़े टुकड़े कर के तोड़ डाला, के तुम अपनी क़स्मों को आपस में दखल देने का

بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ
ज़रिया बनाओ ताके एक जमाअत दूसरी जमाअत से बढ़ जाए।

اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَ لَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ
अल्लाह तो इस के ज़रिए तुम्हें आज़माते हैं। और अल्लाह तुम्हारे सामने क़यामत के

الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
दिन उस को बयान करेंगे जिस में तुम इखतिलाफ करते थे। और अगर अल्लाह चाहता

لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ
तो तुम्हें एक उम्मत बना देता लेकिन अल्लाह गुमराह करते हैं जिसे चाहते हैं

وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ لَتُسْئَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾
और हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं। और तुम से तुम्हारे आमाल का ज़रूर सवाल होगा।

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ
और तुम अपनी क़स्मों को आपस में दखल देने का ज़रिया मत बनाओ, वरना क़दम फिसल जाएगा

بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَ تَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ
उस के जमने के बाद और तुम सज़ा चखोगे इस वजह से के तुम ने अल्लाह के

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوْا
रास्ते से रोका। और तुम्हारे लिए भारी अज़ाब होगा। और तुम अल्लाह के अहद के

بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ
इवज़ मामूली सा फाइदा मत खरीदो। जो अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिए बेहतर

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ
है अगर तुम जानते हो। जो तुम्हारे पास है वो खत्म हो जाएगा

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَ لَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا
और जो अल्लाह के पास है वो बाक़ी रेहने वाला है। और हम ज़रूर बदला देंगे सब्र करने वालों को

اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ
उन का सवाब, उन अच्छे आमाल का जो वो करते थे। जो आमाले सालिहा

صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ
करेगा मर्दों में से हो या औरतों में से बशर्तेके वो मोमिन हो, तो हम उसे

حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَ لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ
उम्दा ज़िन्दगी देंगे। और हम ज़रूर उन्हें उन का सवाब देंगे, उन अच्छे

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ
आमाल का जो वो करते थे। फिर जब तुम कुरआन पढ़ो तो

بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ
अल्लाह की शैतान मरदूद से पनाह मांगो। यक़ीनन उस का ज़ोर

سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾
उन पर नहीं है जो ईमान लाते हैं और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।

اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ
उस का ज़ोर तो सिर्फ उन पर होता है जो उस से दोस्ती रखते हैं और जो

بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾ ع وَاِذَا بَدَّلْنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ
अल्लाह के साथ शरीक ठेहराते हैं। और जब हम एक आयत के बदले दूसरी आयत लाते हैं,

وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُفْتَرٍ ؕ
और अल्लाह खूब जानता है उसे जिसे वो उतारता है, तो ये कुफ्फार केहते हैं के आप तो सिर्फ झूठ घड़ते हैं।

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ
बल्के उन में से अक्सर जानते नहीं। आप फरमा दीजिए के उस को रूहुल कुदुस

الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
ने तेरे रब की तरफ से हक़ के साथ उतारा है ताके वो ईमान वालों को मज़बूत करे

وَ هُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ
और हिदायत और बशारत बने मानने वालों के लिए। यक़ीनन हम जानते हैं

اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِيْ
के ये कुफ्फार केहते हैं के इस नबी को तो एक इन्सान सिखा रहा है। उस शख्स की ज़बान जिस की

يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّ هٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ
तरफ ये मन्सूब करते हैं अजमी है और ये कुरआन तो साफ अरबी ज़बान

مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ
वाला है। यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते

لَا يَهْدِيهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾
अल्लाह उन को हिदायत नहीं देंगे और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा।

اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
झूठ वही लोग घड़ते हैं जो अल्लाह की आयात पर

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٥﴾
ईमान नहीं रखाते। और यही लोग झूठे हैं।

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ
जो अल्लाह के साथ कुफ्र करे ईमान लाने के बाद मगर जो मजबूर किया जाए

وَ قَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ
इस हाल में के उस का दिल मुतमइन हो ईमान पर, लेकिन वो जिसे

بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ
कुफ्र का शर्हे सद्र हो, तो उन पर अल्लाह की तरफ से गज़ब होगा। और उन के लिए

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ
भारी अज़ाब होगा। ये इस वजह से के उन्हों ने दुन्यवी ज़िन्दगी को आखिरत

الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ
के मुक़ाबले में पसन्द किया, और ये के अल्लाह काफिर क़ौम को हिदायत

الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ
नहीं देते। उन के दिलों और उन के कानों और

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَ سَمْعِهِمْ وَ اَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
उन की आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है। और यही लोग

الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ
ग़ाफिल हैं। बिलाशुबा यही लोग आखिरत में खसारे

الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا
वाले हैं। फिर यक़ीनन तेरा रब उन के लिए जिन्हों ने हिजरत की

مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ
मसाइब झेलने के बाद, फिर जिहाद करते रहे और साबिर रहे, तो यक़ीनन तेरा रब इस

بَعۡدِهَا لَغَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١١٠﴾ يَوۡمَ تَاۡتِىۡ كُلُّ
के बाद बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। जिस दिन हर शख़्स आएगा

نَفۡسٍ تُجَادِلُ عَنۡ نَّفۡسِهَا وَ تُوَفّٰى كُلُّ نَفۡسٍ
झगड़ा करते हुए अपनी ज़ात की तरफ से और हर शख़्स को पूरे पूरे दिए जाएंगे

مَّا عَمِلَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿١١١﴾ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ
वो अमल जो उस ने किए और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और अल्लाह ने मिसाल

مَثَلًا قَرۡيَةً كَانَتۡ اٰمِنَةً مُّطۡمَٮِٕنَّةً يَّاۡتِيۡهَا
बयान की एक बस्ती की जो अमन वाली थी, इतमिनान वाली थी, उस की रोज़ी

رِزۡقُهَا رَغَدًا مِّنۡ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتۡ بِاَنۡعُمِ
फरावानी के साथ आती थी हर तरफ से, फिर उस ने कुफ्र किया अल्लाह की नेअमतों

اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الۡجُوۡعِ وَالۡخَوۡفِ
के साथ, तो अल्लाह ने उसे भूक और खौफ के लिबास का मज़ा चखाया

بِمَا كَانُوۡا يَصۡنَعُوۡنَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدۡ جَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡهُمۡ
उन आमाल की वजह से जो वो करते थे। यक़ीनन उन के पास उन्ही में से एक पैग़म्बर आए,

فَكَذَّبُوۡهُ فَاَخَذَهُمُ الۡعَذَابُ وَهُمۡ ظٰلِمُوۡنَ ﴿١١٣﴾
फिर उन्हों ने उन्हें झुठलाया, फिर उन को अज़ाब ने पकड़ लिया इस हाल में के वो ज़ालिम थे।

فَكُلُوۡا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاشۡكُرُوۡا
तो खाओ उन चीज़ों में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दी हैं हलाल पाकीज़ा को। और अल्लाह की

نِعۡمَتَ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ اِيَّاهُ تَعۡبُدُوۡنَ ﴿١١٤﴾ اِنَّمَا
नेअमत का शुक्र अदा करो अगर तुम उसी की इबादत करते हो। उस ने

حَرَّمَ عَلَيۡكُمُ الۡمَيۡتَةَ وَالدَّمَ وَ لَحۡمَ الۡخِنۡزِيۡرِ
तुम पर सिर्फ मुर्दार और खून और खिन्ज़ीर का गोश्त हराम किया है और वो जानवर जिन पर अल्लाह

وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيۡرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضۡطُرَّ غَيۡرَ بَاغٍ
के अलावा का नाम लिया गया हो। फिर जो शख़्स मजबूर हो जाए इस हाल में के वो लज़्ज़त को तलाश करने वाला

وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿١١٥﴾ وَلَا تَقُوۡلُوۡا
न हो और जान बचाने की मिक़्दार से ज़्यादा खाने वाला न हो, तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और

لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ
तुम्हारी ज़बानों की किज़्बबयानी की बिना पर ये मत कहो के ये हलाल है
وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ
और ये हराम है ताके तुम अल्लाह पर झूठ घड़ो।
اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
यक़ीनन जो अल्लाह पर झूठ घड़ते हैं
لَا يُفْلِحُوْنَ ؕ۝۱۱۶ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ
वो फलाह नहीं पाएंगे। थोड़ा नफा उठाना है। और उन के लिए दर्दनाक
اَلِيْمٌ ۝۱۱۷ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا
अज़ाब है। और यहूदियों पर हम ने हराम की वो चीज़ें
مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ
जो हम ने इस से पेहले आप के सामने बयान की हैं। और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝۱۱۸ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ
लेकिन वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। फिर तेरा रब
لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا
उन के लिए जिन्हों ने बुरे अमल किए नावाक़िफ़ीयत से, फिर उस के बाद
مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا
तौबा कर ली और इस्लाह कर ली, तो यक़ीनन तेरा रब इस के बाद अलबत्ता
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۱۱۹ؑ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا
बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। यक़ीनन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) वो एक उम्मत थे, अल्लाह के सामने आजिज़ी
لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ؕ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝۱۲۰ۙ شَاكِرًا
करने वाले थे, सिर्फ अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे। अल्लाह की नेअमतों
لِّاَنْعُمِهٖ ؕ اِجْتَبٰهُ وَ هَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝۱۲۱
का शुक्र अदा करने वाले थे। उन को अल्लाह ने मुन्तखब किया था और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत दी थी।
وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ
और हम ने उन्हें दुन्या में भलाई अता की थी। और यक़ीनन वो आखिरत में

ع ١٥

لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٢٢ ثُمَّ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ

सुलहा में से हैं। फिर हम ने आप की तरफ वही की के आप इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत का इत्तिबा

مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٢٣

कीजिए, जो सिर्फ अल्लाह के हो कर रेहने वाले थे। और मुशरिकीन में से नहीं थे।

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ

सनीचर तो उन पर मुक़र्रर किया गया था जिन्हों ने उस के बारे में इखतिलाफ किया था।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝١٢٤ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ

उस में जिस में वो इखतिलाफ करते थे। आप अपने रब के रास्ते की तरफ दावत दीजिए

بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ

हिक्मत के ज़रिए और अच्छी नसीहत से और उन से बहस कीजिए उस तरीक़े से

هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

जो बेहतर हो। आप का रब वो खूब जानता है उस शख्स को जो अल्लाह के रास्ते से भटक गया

عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝١٢٥ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ

और वो हिदायत पाने वालों को खूब जानता है। और अगर तुम बदला लो

فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ

तो उतना ही लो जितनी तुम्हें तकलीफ दी जाए। और अगर तुम सब्र करो

لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ۝١٢٦ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ

तो अलबत्ता सब्र करने वालों के लिए ये सब्र बेहतर है। और आप सब्र कीजिए और आप का सब्र

اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ

सिर्फ अल्लाह की तौफीक़ ही से है और उन पर ग़म न कीजिए और आप उन के मक्र की वजह से

مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝١٢٧ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا

तंगदिल न हों। यक़ीनन अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है

وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝١٢٨

और उन के साथ है जो नेकी करने वाले हैं।

ع ١٦ ٢٢

اٰیَاتُهَا ۱۱۱ (۱۷) سُوۡرَةُ بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ مَکِّیَّةٌ (۵۰) رُکُوۡعَاتُهَا ۱۲

उस में १११ आयतें हैं सूरह बनी इस्राईल मक्का में नाज़िल हुई और १२ रूकूअ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِهٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ

पाक है वो ज़ात जिस ने अपने बन्दे को रात के वक्त मस्जिदे हराम से

اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَهٗ لِنُرِیَهٗ

मस्जिदे अक्सा तक सफर कराया, जिस के इर्द गिर्द हम ने बरकतें रखी हैं ताके हम उन्हें अपनी

مِنۡ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیۡعُ الۡبَصِیۡرُ ۝۱ وَ اٰتَیۡنَا مُوۡسَی الۡکِتٰبَ

बाज़ निशानियाँ दिखाएं। यक़ीनन वो सुनने वाला, देखने वाला है। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी

وَ جَعَلۡنٰهُ هُدًی لِّبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ اَلَّا تَتَّخِذُوۡا

और हम ने उसे हिदायत का ज़रिया बनाया बनी इस्राईल के लिए के तुम मुझे छोड़ कर किसी को

مِنۡ دُوۡنِیۡ وَکِیۡلًا ۝۲ ذُرِّیَّةَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ ؕ اِنَّهٗ کَانَ

कारसाज़ मत बनाओ। हम ने तुम्हें उन की ज़ुर्रीयत बनाया है जिन को हम ने सवार कराया था नूह (अलैहिस्सलाम) के साथ। यक़ीनन वो

عَبۡدًا شَکُوۡرًا ۝۳ وَ قَضَیۡنَاۤ اِلٰی بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ

शुक्रगुज़ार बन्दे थे। और हम ने बनी इस्राईल के लिए उस किताब में फ़ैसला

فِی الۡکِتٰبِ لَتُفۡسِدُنَّ فِی الۡاَرۡضِ مَرَّتَیۡنِ وَ لَتَعۡلُنَّ

कर दिया के तुम ज़मीन में ज़रूर फसाद मचाओगे दो मर्तबा और ज़रूर तुम

عُلُوًّا کَبِیۡرًا ۝۴ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰىهُمَا بَعَثۡنَا عَلَیۡکُمۡ

बड़ी सरकशी करोगे। फिर जब उन में से पेहली मर्तबा का वक़्त आएगा तो हम तुम पर

عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِیۡ بَاۡسٍ شَدِیۡدٍ فَجَاسُوۡا خِلٰلَ الدِّیَارِ ؕ

अपने सख्त जंग करने वाले बन्दों को भेजेंगे, फिर वो घरों में घुस जाएंगे।

وَ کَانَ وَعۡدًا مَّفۡعُوۡلًا ۝۵ ثُمَّ رَدَدۡنَا لَکُمُ الۡکَرَّةَ عَلَیۡهِمۡ

और ये वादा बिल्कुल पूरा हो कर रहा। फिर हम तुम्हें उन पर ग़लबा देंगे

وَ اَمۡدَدۡنٰکُمۡ بِاَمۡوَالٍ وَّ بَنِیۡنَ وَ جَعَلۡنٰکُمۡ اَکۡثَرَ نَفِیۡرًا ۝۶

और हम तुम्हारी इमदाद करेंगे मालों और बेटों के ज़रिए और हम तुम्हें ज़्यादा लशकर देंगे।

اِنۡ اَحۡسَنۡتُمۡ اَحۡسَنۡتُمۡ لِاَنۡفُسِکُمۡ ۟ وَ اِنۡ اَسَاۡتُمۡ فَلَهَا ؕ
अगर तुम अच्छे बनोगे तो अपने लिए अच्छे बनोगे। और अगर तुम बुरे बनोगे तो अपने लिए।

فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ الۡاٰخِرَةِ لِیَسُوۡٓءٗا وُجُوۡهَکُمۡ وَ لِیَدۡخُلُوا
फिर जब दूसरी मर्तबा का वक्त आएगा ताके वो तुम्हारी सूरतें बिगाड़ दें और वो मस्जिद में

الۡمَسۡجِدَ کَمَا دَخَلُوۡهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ لِیُتَبِّرُوۡا مَا عَلَوۡا
दाखिल हो जाएं जैसा के वो उस में पेहली मर्तबा में दाखिल हुए थे और ताके वो बरबाद कर दें उन तमाम चीज़ों को

تَتۡبِیۡرًا ۝۷ عَسٰی رَبُّکُمۡ اَنۡ یَّرۡحَمَکُمۡ ۚ وَ اِنۡ عُدۡتُّمۡ
जिन पर वो ग़ालिब आ जाएं। हो सकता है के तुम्हारा रब तुम पर रहम करे। अगर तुम दोबारा वही करोगे

عُدۡنَا ۘ وَ جَعَلۡنَا جَهَنَّمَ لِلۡکٰفِرِیۡنَ حَصِیۡرًا ۝۸ اِنَّ هٰذَا
तो हम भी दोबारा वही करेंगे। और हम ने जहन्नम काफिरों को घेरने वाली बनाई है। यक़ीनन ये

الۡقُرۡاٰنَ یَهۡدِیۡ لِلَّتِیۡ هِیَ اَقۡوَمُ وَ یُبَشِّرُ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ
कुरआन हिदायत देता है उस रास्ते की जो ज़्यादा सीधा है और बशारत देता है ईमान वाले उन लोगों को

الَّذِیۡنَ یَعۡمَلُوۡنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمۡ اَجۡرًا کَبِیۡرًا ۝۹ۙ
जो नेक अमल करते हैं इस बात की के उन के लिए बड़ा अज्र है।

وَّ اَنَّ الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ اَعۡتَدۡنَا لَهُمۡ عَذَابًا
और ये के जो आखिरत पर ईमान नहीं लाते उन के लिए हम ने दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर

اَلِیۡمًا ۝۱۰ؑ وَ یَدۡعُ الۡاِنۡسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالۡخَیۡرِ ؕ
रखा है। और कुछ लोग खुद मसाइब की दुआ उन के भलाई मांगने की तरह करते हैं।

وَ کَانَ الۡاِنۡسَانُ عَجُوۡلًا ۝۱۱ وَ جَعَلۡنَا الَّیۡلَ وَ النَّهَارَ
और इन्सान जल्दबाज़ वाकेअ हुवा है। और हम ने रात और दिन दो निशानियाँ

اٰیَتَیۡنِ فَمَحَوۡنَاۤ اٰیَةَ الَّیۡلِ وَ جَعَلۡنَاۤ اٰیَةَ النَّهَارِ مُبۡصِرَةً
बनाईं, फिर हम ने रात की निशानी को तारीक बनाया और दिन की निशानी को हम ने रोशन बनाया

لِّتَبۡتَغُوۡا فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّکُمۡ وَ لِتَعۡلَمُوۡا عَدَدَ السِّنِیۡنَ
ताके तुम अपने रब के फज़्ल (रोज़ी) को तलाश करो और ताके तुम सालों की गिनती और हिसाब को

وَ الۡحِسَابَ ؕ وَ کُلَّ شَیۡءٍ فَصَّلۡنٰهُ تَفۡصِیۡلًا ۝۱۲ وَ کُلَّ
जान लो। और हर चीज़ हम ने तफसील से बयान की है। और हर

وقف لازم

ع ۱

اِنۡسَانٍ اَلۡزَمۡنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِیۡ عُنُقِهٖ ؕ وَ نُخۡرِجُ لَهٗ یَوۡمَ
इन्सान के साथ उस के नामाए आमाल को हम उस की गर्दन में चिपका देंगे। और उस के लिए क़यामत के

الۡقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلۡقٰىهُ مَنۡشُوۡرًا ﴿۱۳﴾ اِقۡرَاۡ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰی
दिन लिखा हुवा निकालेंगे जिसे वो खुला हुवा पाएगा। (कहा जाएगा के) तेरा नामाए आमाल पढ़ ले। तू आज खुद

بِنَفۡسِكَ الۡیَوۡمَ عَلَیۡكَ حَسِیۡبًا ﴿ؕ۱۴﴾ مَنِ اهۡتَدٰی فَاِنَّمَا
ही अपना हिसाब लेने के लिए काफी है। जो हिदायत पाएगा तो वो सिर्फ

یَهۡتَدِیۡ لِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیۡهَا ؕ
अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाएगा। और जो गुमराह होगा तो सिर्फ उसी पर गुमराही का वबाल पड़ेगा।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزۡرَ اُخۡرٰی ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِیۡنَ
और कोई गुनाह उठाने वाला दूसरे का गुनाह नहीं उठाएगा। और हम अज़ाब नहीं देते

حَتّٰی نَبۡعَثَ رَسُوۡلًا ﴿۱۵﴾ وَاِذَاۤ اَرَدۡنَاۤ اَنۡ نُّهۡلِكَ قَرۡیَةً
जब तक के हम रसूल नहीं भेज देते। और जब हम इरादा करते हैं के किसी बस्ती को हलाक करें तो हम

اَمَرۡنَا مُتۡرَفِیۡهَا فَفَسَقُوۡا فِیۡهَا فَحَقَّ عَلَیۡهَا الۡقَوۡلُ
वहाँ के खुशहाल लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वो उस में फिस्क़ करते हैं, फिर उन पर अज़ाब का कलिमा साबित हो जाता है,

فَدَمَّرۡنٰهَا تَدۡمِیۡرًا ﴿۱۶﴾ وَكَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنَ الۡقُرُوۡنِ
फिर हम उसे तबाह कर देते हैं। और कितनी बस्तियाँ हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) के बाद

مِنۡۢ بَعۡدِ نُوۡحٍ ؕ وَكَفٰی بِرَبِّكَ بِذُنُوۡبِ عِبَادِهٖ خَبِیۡرًۢا
तबाह व बरबाद कीं? और आप का रब अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला

بَصِیۡرًا ﴿۱۷﴾ مَنۡ كَانَ یُرِیۡدُ الۡعَاجِلَةَ عَجَّلۡنَا لَهٗ
काफी है। जो दुन्या चाहेगा तो हम उसे दुन्या में जल्दी दे देंगे

فِیۡهَا مَا نَشَآءُ لِمَنۡ نُّرِیۡدُ ثُمَّ جَعَلۡنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ
वो जो हम चाहेंगे, जिस के लिए चाहेंगे, फिर उस के लिए जहन्नम मुक़र्रर कर देंगे,

یَصۡلٰىهَا مَذۡمُوۡمًا مَّدۡحُوۡرًا ﴿۱۸﴾ وَمَنۡ اَرَادَ الۡاٰخِرَةَ
जिस में वो दाखिल होगा मज़म्मत किया हुवा, धुतकारा हुवा। और जो आखिरत चाहेगा

وَ سَعٰی لَهَا سَعۡیَهَا وَهُوَ مُؤۡمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعۡیُهُمۡ
और उस के लिए कोशिश करेगा वो कोशिश जो उस के लाइक़ है बशर्तेके वो मोमिन हो, तो उन की कोशिश की क़द्र की

مَّشۡكُوۡرًا ﴿۱۹﴾ كُلًّا نُّمِدُّ هٰۤؤُلَآءِ وَهٰۤؤُلَآءِ مِنۡ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ

जाएगी। तमाम को हम इमदाद दे रहे हैं, इन को भी और उन को भी तेरे रब की अता में से।

وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحۡظُوۡرًا ﴿۲۰﴾ اُنۡظُرۡ كَيۡفَ فَضَّلۡنَا

और तेरे रब की अता बन्द नहीं है। आप देखिए के कैसे हम में उन में से एक को दूसरे पर

بَعۡضَهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ ؕ وَلَلۡاٰخِرَةُ اَكۡبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكۡبَرُ

फ़ज़ीलत दी है। और यक़ीनन आखिरत दरजात के ऐतेबार से ज़्यादा बड़ी है और फ़ज़ीलत में भी

تَفۡضِيۡلًا ﴿۲۱﴾ لَا تَجۡعَلۡ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقۡعُدَ مَذۡمُوۡمًا

बढ़ी हुई है। तुम अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद मत बनाओ, वरना तुम बैठे रहोगे मज़म्मत किए हुए,

مَّخۡذُوۡلًا ﴿۲۲﴾ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعۡبُدُوۡۤا اِلَّاۤ اِيَّاهُ وَبِالۡوَالِدَيۡنِ

ع ۲

बेकसी की हालत में। तेरे रब ने हुक्म दिया है के इबादत मत करो मगर उसी की और वालिदैन के साथ

اِحۡسَانًا ؕ اِمَّا يَبۡلُغَنَّ عِنۡدَكَ الۡكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوۡ كِلٰهُمَا

हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है। अगर तेरे सामने उन में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहोंच जाएं

فَلَا تَقُلۡ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنۡهَرۡهُمَا وَقُلۡ لَّهُمَا قَوۡلًا

तो उन से उफ भी मत कहो और उन को मत झिड़को, बल्के उन से ताज़ीम वाले लेहजे में

كَرِيۡمًا ﴿۲۳﴾ وَاخۡفِضۡ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحۡمَةِ

बात करो। और उन के सामने नरमी से आजिज़ी के साथ कन्धे झुकाए रखो

وَقُلۡ رَّبِّ ارۡحَمۡهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِىۡ صَغِيۡرًا ؕ﴿۲۴﴾ رَبُّكُمۡ اَعۡلَمُ

और यूं कहो ऐ मेरे रब! तू उन दोनों पर रहम फरमा जैसा के उन्हों ने मेरी बचपन में परवरिश की। तुम्हारा रब खूब

بِمَا فِىۡ نُفُوۡسِكُمۡ ؕ اِنۡ تَكُوۡنُوۡا صٰلِحِيۡنَ فَاِنَّهٗ كَانَ

जानता है उसे जो तुम्हारे दिलों में है। अगर तुम नेक रहोगे तो यक़ीनन वो

لِلۡاَوَّابِيۡنَ غَفُوۡرًا ﴿۲۵﴾ وَاٰتِ ذَا الۡقُرۡبٰى حَقَّهٗ وَالۡمِسۡكِيۡنَ

तौबा करने वालों की बखशिश करने वाला है। और रिश्तेदार को उस का हक़ दो और मिस्कीन

وَابۡنَ السَّبِيۡلِ وَلَا تُبَذِّرۡ تَبۡذِيۡرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الۡمُبَذِّرِيۡنَ

और मुसाफ़िर को और फ़ुज़ूलखर्ची मत करो। इस लिए के फ़ुज़ूलखर्च

كَانُوۡۤا اِخۡوَانَ الشَّيٰطِيۡنِ ؕ وَكَانَ الشَّيۡطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوۡرًا ﴿۲۷﴾

शैतान के भाई हैं। और शैतान उपने रब का नाशुकरा है।

وَاِمَّا تُعۡرِضَنَّ عَنۡهُمُ ابۡتِغَآءَ رَحۡمَةٍ مِّنۡ رَّبِّكَ تَرۡجُوۡهَا

और अगर तू उन से ऐराज़ करे अपने रब की रहमत तलब करने के लिए जिस की तू उम्मीद रखता है

فَقُلۡ لَّهُمۡ قَوۡلًا مَّيۡسُوۡرًا ﴿۲۸﴾ وَلَا تَجۡعَلۡ يَدَكَ مَغۡلُوۡلَةً

तब भी उन से नर्म बात केह। और तू अपना हाथ गर्दन से बन्धा हुवा

اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبۡسُطۡهَا كُلَّ الۡبَسۡطِ فَتَقۡعُدَ مَلُوۡمًا

मत रख और न उसे पूरे तौर पर खोल दे, वरना तू मलामत किया हुवा, हार कर बैठा

مَّحۡسُوۡرًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ رَبَّكَ يَبۡسُطُ الرِّزۡقَ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيَقۡدِرُ ؕ

रहेगा। यक़ीनन तेरा रब रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है और तंग करता है (जिस के लिए चाहता

اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيۡرًاۢ بَصِيۡرًا ﴿۳۰﴾ وَلَا تَقۡتُلُوۡۤا اَوۡلَادَكُمۡ

है)। यक़ीनन वो अपने बन्दों की खबर रखने वाला, देखने वाला है। और अपनी औलाद को फक्र के खौफ

خَشۡيَةَ اِمۡلَاقٍ ؕ نَحۡنُ نَرۡزُقُهُمۡ وَاِيَّاكُمۡ ؕ اِنَّ قَتۡلَهُمۡ

से क़त्ल मत करो। हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी। यक़ीनन उन का क़त्ल

كَانَ خِطۡاً كَبِيۡرًا ﴿۳۱﴾ وَلَا تَقۡرَبُوا الزِّنٰۤى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ

बहोत बड़ा गुनाह है। और ज़िना के क़रीब मत जाओ, यक़ीनन वो बेहयाई है।

وَسَآءَ سَبِيۡلًا ﴿۳۲﴾ وَلَا تَقۡتُلُوا النَّفۡسَ الَّتِىۡ حَرَّمَ اللّٰهُ

और बुरा रास्ता है। और उस जान को क़त्ल मत करो जिस को अल्लाह ने हराम क़रार दिया

اِلَّا بِالۡحَقِّ ؕ وَمَنۡ قُتِلَ مَظۡلُوۡمًا فَقَدۡ جَعَلۡنَا لِوَلِيِّهٖ

मगर हक़ की वजह से। और जिसे मज़लूम क़त्ल किया जाए तो हम ने उस के वारिस को इखतियार

سُلۡطٰنًا فَلَا يُسۡرِفۡ فِّى الۡقَتۡلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنۡصُوۡرًا ﴿۳۳﴾

दिया है, इस लिए वो क़त्ल में ज़्यादती न करे। इस लिए के उस की नुसरत की गई है।

وَلَا تَقۡرَبُوۡا مَالَ الۡيَتِيۡمِ اِلَّا بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ

और यतीम के माल के क़रीब मत जाओ मगर उस तरीक़े से जो बेहतर हो,

حَتّٰى يَبۡلُغَ اَشُدَّهٗ ۖ وَاَوۡفُوۡا بِالۡعَهۡدِ ۚ اِنَّ الۡعَهۡدَ كَانَ

यहां तक के वो अपनी जवानी को पहोंच जाए। और अहद पूरा करो। इस लिए के अहद का भी सवाल

مَسۡـُٔوۡلًا ﴿۳۴﴾ وَاَوۡفُوا الۡكَيۡلَ اِذَا كِلۡتُمۡ وَزِنُوۡا بِالۡقِسۡطَاسِ

किया जाएगा। और पैमाना भर भर कर दो जब नापो और सीधी तराज़ू से

الۡمُسۡتَقِیۡمِ ؕ ذٰلِكَ خَیۡرٌ وَّ اَحۡسَنُ تَاۡوِیۡلًا ﴿۳۵﴾ وَلَا تَقۡفُ

वज़न करो। ये बेहतर है और अन्जाम के ऐतेबार से अच्छा है। और उस के पीछे

مَا لَیۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ ؕ اِنَّ السَّمۡعَ وَالۡبَصَرَ وَالۡفُؤَادَ

मत पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं। इस लिए के कान और आँखें और दिल

كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنۡهُ مَسۡـُٔوۡلًا ﴿۳۶﴾ وَلَا تَمۡشِ

उन तमाम के मुतअल्लिक़ सवाल किया जाएगा। और तू ज़मीन में अकड़ता

فِی الۡاَرۡضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنۡ تَخۡرِقَ الۡاَرۡضَ وَلَنۡ تَبۡلُغَ

हुवा मत चल। इस लिए के तू ज़मीन को हरगिज़ फाड़ नहीं सकता और लम्बा हो कर पहाड़ों

الۡجِبَالَ طُوۡلًا ﴿۳۷﴾ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَیِّئُهٗ عِنۡدَ رَبِّكَ

(की बराबरी) को हरगिज़ नहीं पहोंच सकता। ये सब बुरे खसाइल तेरे रब के नज़दीक

مَكۡرُوۡهًا ﴿۳۸﴾ ذٰلِكَ مِمَّاۤ اَوۡحٰۤی اِلَیۡكَ رَبُّكَ مِنَ الۡحِكۡمَةِ ؕ

नापसन्द हैं। ये हिक्मत की उन बातों में से है जिन की आप के रब ने आप की तरफ़ वही की है।

وَلَا تَجۡعَلۡ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلۡقٰی فِیۡ جَهَنَّمَ مَلُوۡمًا

और तू अल्लाह के साथ दूसरे माबूद मत क़रार दे, वरना जहन्नम में मलामत किया हुवा धुतकारा हुवा

مَّدۡحُوۡرًا ﴿۳۹﴾ اَفَاَصۡفٰىكُمۡ رَبُّكُمۡ بِالۡبَنِیۡنَ وَاتَّخَذَ

डाल दिया जाएगा। क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुन कर दिए और खुद उस ने

مِنَ الۡمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمۡ لَتَقُوۡلُوۡنَ قَوۡلًا عَظِیۡمًا ﴿۴۰﴾ ع وَلَقَدۡ

फ़रिशतों में से बेटियाँ लीं? यक़ीनन तुम बड़ी भारी बात केहते हो। यक़ीनन हम ने इस

صَرَّفۡنَا فِیۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لِیَذَّكَّرُوۡا ؕ وَمَا یَزِیۡدُهُمۡ

कुरआन में फेर फेर कर बयान किया ताके वो नसीहत हासिल करें। और ये कुरआन उन को नहीं बढ़ाता

اِلَّا نُفُوۡرًا ﴿۴۱﴾ قُلۡ لَّوۡ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا یَقُوۡلُوۡنَ

मगर नफरत में। आप पूछिए के अगर अल्लाह के साथ और माबूद भी होते जैसा के वो केहते हैं, तब

اِذًا لَّابۡتَغَوۡا اِلٰی ذِی الۡعَرۡشِ سَبِیۡلًا ﴿۴۲﴾ سُبۡحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰی

तो वो सब के सब अर्श वाले माबूद की तरफ रास्ता तलाश करते। अल्लाह पाक है और बरतर है

عَمَّا یَقُوۡلُوۡنَ عُلُوًّا كَبِیۡرًا ﴿۴۳﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ

उन बातों से जो वो केहते हैं, बहोत ज़्यादा बरतर है। उस के लिए तो सातों आसमान और ज़मीन और वो

السَّبۡعُ وَالۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِیۡهِنَّ ؕ وَاِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ
तमाम चीज़ें जो उन में हैं, वो तस्बीह करती हैं। और कोई चीज़ नहीं है मगर वो अल्लाह की हम्द के साथ

بِحَمۡدِهٖ وَلٰکِنۡ لَّا تَفۡقَهُوۡنَ تَسۡبِیۡحَهُمۡ ؕ اِنَّهٗ کَانَ
तस्बीह करती है, लेकिन तुम उस की तस्बीह समझते नहीं हो। यक़ीनन अल्लाह

حَلِیۡمًا غَفُوۡرًا ﴿۴۴﴾ وَاِذَا قَرَاۡتَ الۡقُرۡاٰنَ جَعَلۡنَا بَیۡنَکَ
हिल्म वाला, बख्शने वाला है। और जब आप कुरआन पढ़ते हो तो हम आप के दरमियान

وَ بَیۡنَ الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسۡتُوۡرًا ﴿۴۵﴾
और उन लोगों के दरमियान जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते एक पोशीदा पर्दा रख देते हैं।

وَّجَعَلۡنَا عَلٰی قُلُوۡبِهِمۡ اَکِنَّةً اَنۡ یَّفۡقَهُوۡهُ وَفِیۡۤ اٰذَانِهِمۡ
और हम ने उन के दिलों पर पर्दे रख दिए हैं इस से के वो कुरआन को समझें और उन के कानों में डाट

وَقۡرًا ؕ وَاِذَا ذَکَرۡتَ رَبَّکَ فِی الۡقُرۡاٰنِ وَحۡدَهٗ وَلَّوۡا عَلٰی
रख दी है। और जब आप अपने रब का तन्हा कुरआन में ज़िक्र करते हो तो वो अपनी पीठ फेर कर नफ़रत

اَدۡبَارِهِمۡ نُفُوۡرًا ﴿۴۶﴾ نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَا یَسۡتَمِعُوۡنَ بِهٖۤ
करते हुए भागते हैं। हम खूब जानते हैं उस ग़र्ज़ को जिस के लिए वो कान लगा कर सुनते हैं

اِذۡ یَسۡتَمِعُوۡنَ اِلَیۡکَ وَاِذۡ هُمۡ نَجۡوٰۤی اِذۡ یَقُوۡلُ الظّٰلِمُوۡنَ
जब के वो आप की तरफ कान लगाते हैं और जब के वो सरगोशी करते हैं, जब के ज़ालिम लोग केहते हैं के

اِنۡ تَتَّبِعُوۡنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسۡحُوۡرًا ﴿۴۷﴾ اُنۡظُرۡ کَیۡفَ ضَرَبُوۡا
तुम तो पीछे नहीं चलते मगर ऐसे शख्स के जिस पर जादू कर दिया गया है। आप देखिए के वो आप के लिए

لَکَ الۡاَمۡثَالَ فَضَلُّوۡا فَلَا یَسۡتَطِیۡعُوۡنَ سَبِیۡلًا ﴿۴۸﴾
कैसी मिसालें बयान करते हैं, फिर वो रास्ते से भटक गए हैं, फिर रास्ते की ताक़त नहीं रखते।

وَ قَالُوۡۤا ءَاِذَا کُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ
और वो केहते हैं के क्या जब हम हड्डियाँ हो जाएंगे और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे तब हम अज़ सरे नौ

خَلۡقًا جَدِیۡدًا ﴿۴۹﴾ قُلۡ کُوۡنُوۡا حِجَارَةً اَوۡ حَدِیۡدًا ﴿۵۰﴾
ज़िन्दा किए जाएंगे? आप फरमा दीजिए के तुम पथ्थर बन जाओ या लोहा बन जाओ। या कोई मख़लूक़ बन जाओ

اَوۡ خَلۡقًا مِّمَّا یَکۡبُرُ فِیۡ صُدُوۡرِکُمۡ ۚ فَسَیَقُوۡلُوۡنَ مَنۡ یُّعِیۡدُنَا ؕ
उस में से जिस को तुम अपने दिलों में बड़ा समझते हो। फिर भी अनक़रीब ये लोग कहेंगे के हमें दोबारा कौन

قُلِ الَّذِیۡ فَطَرَکُمۡ اَوَّلَ مَرَّۃٍ ۚ فَسَیُنۡغِضُوۡنَ اِلَیۡکَ

पैदा करेगा? आप फरमा दीजिए के वही अल्लाह जिस ने तुम्हें पेहली मर्तबा में पैदा किया। तो वो अनक़रीब

رُءُوۡسَہُمۡ وَ یَقُوۡلُوۡنَ مَتٰی ہُوَ ؕ قُلۡ عَسٰۤی اَنۡ یَّکُوۡنَ

आप के सामने अपने सर हिलाएंगे और कहेंगे के वो कब है? आप फरमा दीजिए के हो सकता है के वो

قَرِیۡبًا ﴿۵۱﴾ یَوۡمَ یَدۡعُوۡکُمۡ فَتَسۡتَجِیۡبُوۡنَ بِحَمۡدِہٖ وَ تَظُنُّوۡنَ

क़रीब ही हो। जिस दिन वो तुम्हें पुकारेगा तो तुम अल्लाह की हम्द के साथ पुकार को क़बूल कर लोगे और तुम गुमान

اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا قَلِیۡلًا ﴿۵۲﴾ وَ قُلۡ لِّعِبَادِیۡ یَقُوۡلُوا الَّتِیۡ

करोगे के तुम (क़ब्र में) नहीं ठेहरे मगर बहोत थोड़ा। और मेरे बन्दों से केह दीजिए के वो कहें वो बात जो

ہِیَ اَحۡسَنُ ؕ اِنَّ الشَّیۡطٰنَ یَنۡزَغُ بَیۡنَہُمۡ ؕ اِنَّ الشَّیۡطٰنَ

अच्छी हो। यक़ीनन शैतान उन के दरमियान झगड़ा डालता है। यक़ीनन शैतान

کَانَ لِلۡاِنۡسَانِ عَدُوًّا مُّبِیۡنًا ﴿۵۳﴾ رَبُّکُمۡ اَعۡلَمُ بِکُمۡ ؕ

इन्सान का खुला दुशमन है। तुम्हारा रब तुम्हें खूब जानता है।

اِنۡ یَّشَاۡ یَرۡحَمۡکُمۡ اَوۡ اِنۡ یَّشَاۡ یُعَذِّبۡکُمۡ ؕ وَ مَاۤ اَرۡسَلۡنٰکَ

अगर वो चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे। और हम ने आप को उन पर निगरां

عَلَیۡہِمۡ وَکِیۡلًا ﴿۵۴﴾ وَ رَبُّکَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ فِی السَّمٰوٰتِ

बना कर नहीं भेजा। और आप का रब खूब जानता है उन को जो आसमानों में हैं

وَ الۡاَرۡضِ ؕ وَ لَقَدۡ فَضَّلۡنَا بَعۡضَ النَّبِیّٖنَ عَلٰی بَعۡضٍ

और जो ज़मीन में हैं। यक़ीनन हम ने अम्बिया में से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी और हम ने

وَّ اٰتَیۡنَا دَاوٗدَ زَبُوۡرًا ﴿۵۵﴾ قُلِ ادۡعُوا الَّذِیۡنَ زَعَمۡتُمۡ

दावूद (अलैहिस्सलाम) को ज़बूर दी। आप फरमा दीजिए के तुम पुकारो उन को जिन को तुम अल्लाह के सिवा (माबूद)

مِّنۡ دُوۡنِہٖ فَلَا یَمۡلِکُوۡنَ کَشۡفَ الضُّرِّ عَنۡکُمۡ وَ لَا تَحۡوِیۡلًا ﴿۵۶﴾

समझते हो, फिर वो तुम से ज़रर दूर करने के मालिक नहीं हैं और न ज़रर तबदील करने के मालिक हैं।

اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ یَدۡعُوۡنَ یَبۡتَغُوۡنَ اِلٰی رَبِّہِمُ

जिन को पुकारते हैं ये कुफ्फार वो खुद अपने रब की तरफ वसीला तलाश करते हैं

الۡوَسِیۡلَۃَ اَیُّہُمۡ اَقۡرَبُ وَ یَرۡجُوۡنَ رَحۡمَتَہٗ وَ یَخَافُوۡنَ

के उन में कौन ज़्यादा मुक़र्रब है और वो उस की रहमत के उम्मीदवार हैं और उस के अज़ाब से

عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿۵۷﴾ وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

डरते हैं। यक़ीनन तेरे रब का अज़ाब डरने की चीज़ है। और कोई बस्ती नहीं

اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا

मगर हम उस को क़यामत के दिन से पेहले हलाक करने वाले हैं या उसे हम सख्त अज़ाब

عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۵۸﴾

देने वाले हैं। ये किताब में लिखा हुवा है।

وَمَا مَنَعَنَاۤ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّاۤ اَنْ كَذَّبَ بِهَا

और हमें मानेअ नहीं हुवा इस से के हम मोअजिज़ात भेजें मगर ये के उस को पेहलों ने

الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ

झुठलाया। और हम ने क़ौमे समूद को नाक़ा (ऊँटनी) दी जो रोशन मोअजिज़ा थी, फिर भी उन्हों ने उस के साथ ज़ुल्म

وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿۵۹﴾ وَاِذْ قُلْنَا لَكَ

किया। और हम मोअजिज़ात नहीं भेजते मगर डराने के लिए। और जब हम आप से केहते हैं के यक़ीनन आप के

اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِىْۤ اَرَيْنٰكَ

रब ने उन लोगों का इहाता कर रखा है। और बेदारी में जो मन्ज़र आप को हम ने दिखाया, उसे हम ने नहीं बनाया

اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِى الْقُرْاٰنِ ؕ

मगर उन लोगों के लिए फ़ितना (इम्तिहान) और उस दरख्त को भी जिस पर क़ुरआन में लानत की गई है।

وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿۶۰﴾ وَاِذْ قُلْنَا

और हम उन्हें डराते हैं, फिर ये उन को नहीं बढ़ाता मगर बड़ी सरकशी में। और जब हम ने फरिश्तों से

لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ

कहा के आदम (अलैहिस्सलाम) को सज्दा करो, तो सिवाए इबलीस के उन तमाम ने सज्दा किया। इबलीस ने कहा

ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿۶۱﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِىْ

क्या मैं सज्दा करूँ उस को जिसे आप ने मिट्टी से बनाया है? इबलीस ने कहा भला देख! ये इन्सान जिसे

كَرَّمْتَ عَلَىَّ ز لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ

तू ने मुझ से बढ़ा दिया। अगर तू मुझे क़यामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं उस की औलाद

ذُرِّيَّتَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

को गुमराह कर दूँ सिवाए चन्द लोगों के। अल्लाह ने फ़रमाया के तू जा! फिर जो उन में से तेरे पीछे चलेगा

فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمۡ جَزَآءً مَّوۡفُوۡرًا ۝۶۳ وَاسۡتَفۡزِزۡ مَنِ

तो जहन्नम तुम्हारी पूरी पूरी सज़ा है। और तू डरा उन में से

اسۡتَطَعۡتَ مِنۡهُمۡ بِصَوۡتِكَ وَاَجۡلِبۡ عَلَيۡهِمۡ بِخَيۡلِكَ

जिस पर तू ताक़त रख सके तेरी आवाज़ के ज़रिए और तू उन पर खींच कर ला तेरी सवार फौज को

وَرَجِلِكَ وَشَارِكۡهُمۡ فِى الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَوۡلَادِ وَعِدۡهُمۡ ؕ

और तेरी प्यादा फौज को और तू उन के साथ शरीक हो जा मालों में और औलाद में और तू उन को वादा दिला।

وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيۡطٰنُ اِلَّا غُرُوۡرًا ۝۶۴ اِنَّ عِبَادِىۡ لَيۡسَ لَكَ

और शैतान उन को वादा नहीं दिलाता मगर धोके का। अल्बत्ता मेरे बन्दों पर तेरा कोई

عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيۡلًا ۝۶۵ رَبُّكُمُ الَّذِىۡ يُزۡجِىۡ

बस नहीं चलेगा। और तेरा रब काफी कारसाज़ है। तुम्हारा रब वो है जो तुम्हारे लिए कशती को

لَكُمُ الۡفُلۡكَ فِى الۡبَحۡرِ لِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

तेज़ चलाता है समन्दर में ताके तुम उस के फ़ज़्ल को तलाश करो। यक़ीनन वो

بِكُمۡ رَحِيۡمًا ۝۶۶ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الۡبَحۡرِ ضَلَّ مَنۡ

तुम्हारे साथ मेहरबान है। और जब तुम्हें ज़रर पहोंचता है समन्दर में तो खो जाते हैं वो जिन को

تَدۡعُوۡنَ اِلَّاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰٮكُمۡ اِلَى الۡبَـرِّ اَعۡرَضۡتُمۡ ؕ

तुम पुकारते हो सिवाए अल्लाह के। फिर जब वो तुम्हें बचा कर ले आता है खुश्की तक तो तुम ऐराज़ करते हो।

وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ كَفُوۡرًا ۝۶۷ اَفَاَمِنۡتُمۡ اَنۡ يَّخۡسِفَ بِكُمۡ جَانِبَ

और इन्सान बहोत नाशुकरा है। क्या तुम मामून हो गए इस से के वो तुम्हारे साथ खुश्की के किनारे को ज़मीन

الۡبَـرِّ اَوۡ يُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا لَـكُمۡ

में धंसा दे या तुम्हारे ऊपर तेज़ हवा को छोड़ दे? फिर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ भी

وَكِيۡلًا ۝۶۸ اَمۡ اَمِنۡتُمۡ اَنۡ يُّعِيۡدَكُمۡ فِيۡهِ تَارَةً اُخۡرٰى

न पाओ। या तुम मामून हो गए इस से के वो तुम्हें दूसरी मर्तबा उस में लौटा दे,

فَيُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيۡحِ فَيُغۡرِقَكُمۡ بِمَا كَفَرۡتُمۡ ۙ

फिर तुम पर तूफानी हवा छोड़ दे, फिर वो तुम्हें ग़र्क़ कर दे तुम्हारी नाशुकरी की वजह से।

ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا لَـكُمۡ عَلَيۡنَا بِهٖ تَبِيۡعًا ۝۶۹ وَلَقَدۡ كَرَّمۡنَا

फिर तुम अपने लिए उस पर कोई हमारा पीछा करने वाला भी न पाओ? यक़ीनन हम ने

بَنِیۡۤ اٰدَمَ وَ حَمَلۡنٰہُمۡ فِی الۡبَرِّ وَ الۡبَحۡرِ وَ رَزَقۡنٰہُمۡ

इन्सान को इज़्ज़त दी और हम ने उन्हें सवारी दी खुश्की और समन्दर में और हम ने उन्हें रोज़ी दी

مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَ فَضَّلۡنٰہُمۡ عَلٰی کَثِیۡرٍ مِّمَّنۡ خَلَقۡنَا

उम्दा चीज़ों की और हम ने उन्हें अपनी मखलूक़ में से बहोत सी मखलूक़ पर

تَفۡضِیۡلًا ﴿۷۰﴾ یَوۡمَ نَدۡعُوۡا کُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِہِمۡ ۚ فَمَنۡ

फ़ज़ीलत दी। जिस दिन हम तमाम इन्सानों को उन के पेशवा के साथ बुलाएंगे। फिर जिस का

اُوۡتِیَ کِتٰبَہٗ بِیَمِیۡنِہٖ فَاُولٰٓئِکَ یَقۡرَءُوۡنَ کِتٰبَہُمۡ

नामाए आमाल उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वो अपना आमालनामा पढ़ेंगे और उन पर खजूर

وَ لَا یُظۡلَمُوۡنَ فَتِیۡلًا ﴿۷۱﴾ وَ مَنۡ کَانَ فِیۡ ہٰذِہٖۤ اَعۡمٰی فَہُوَ

की गुठली के तागे के बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और जो इस दुन्या में अन्धा होगा तो वो आखिरत

فِی الۡاٰخِرَۃِ اَعۡمٰی وَ اَضَلُّ سَبِیۡلًا ﴿۷۲﴾ وَ اِنۡ کَادُوۡا لَیَفۡتِنُوۡنَکَ

में भी अन्धा होगा और ज़्यादा रास्ता भटका हुवा होगा। और यक़ीनन वो क़रीब थे के आप को फ़ितने में मुबतला

عَنِ الَّذِیۡۤ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلَیۡکَ لِتَفۡتَرِیَ عَلَیۡنَا غَیۡرَہٗ ٭ۖ

कर दें उस क़ुरआन की तरफ से जिसे हम ने आप की तरफ़ वही की ताके उस के अलावा को आप हम पर घड़ लें।

وَ اِذًا لَّاتَّخَذُوۡکَ خَلِیۡلًا ﴿۷۳﴾ وَ لَوۡ لَاۤ اَنۡ ثَبَّتۡنٰکَ لَقَدۡ کِدۡتَّ

और तब तो वो आप को दोस्त बना लेते। और अगर ये बात न होती के हम ने आप को साबितक़दम रखा है तो यक़ीनन आप

تَرۡکَنُ اِلَیۡہِمۡ شَیۡئًا قَلِیۡلًا ﴿۷۴﴾ٙ اِذًا لَّاَذَقۡنٰکَ ضِعۡفَ

उन की तरफ थोड़ा सा माइल हो जाते। तब तो हम आप को दुन्यवी ज़िन्दगी में दुगना अज़ाब चखाते

الۡحَیٰوۃِ وَ ضِعۡفَ الۡمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَکَ عَلَیۡنَا نَصِیۡرًا ﴿۷۵﴾

और मरने के बाद का दुगना अज़ाब चखाते, फिर आप अपने लिए हमारे खिलाफ़ कोई मददगार भी न पाते।

وَ اِنۡ کَادُوۡا لَیَسۡتَفِزُّوۡنَکَ مِنَ الۡاَرۡضِ لِیُخۡرِجُوۡکَ

और यक़ीनन ये क़रीब थे के आप को डरा घबरा कर निकाल दें उस सरज़मीन

مِنۡہَا وَ اِذًا لَّا یَلۡبَثُوۡنَ خِلٰفَکَ اِلَّا قَلِیۡلًا ﴿۷۶﴾ سُنَّۃَ

से और तब तो वो आप के पीछे न ठेहेर पाते मगर थोड़ा। यही दस्तूर उन का

مَنۡ قَدۡ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَکَ مِنۡ رُّسُلِنَا وَ لَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا

भी रहा जिन को हम ने आप से पेहले रसूल बना कर भेजा और आप हमारे दस्तूर में तबदीली

تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ

नहीं पाएंगे। आप नमाज़ क़ाइम कीजिए सूरज ढलने के वक़्त से ले कर रात की तारीकी तक

وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾

और फज्र में कुरआन पढ़ने को क़ाइम कीजिए। यक़ीनन फ़ज्र की क़िराअत में फ़रिशतों की हाज़िरी होती है।

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖۗ عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ

और रात के किसी वक़्त में तहज्जुद पढ़िए, ये आप के लिए ज़ाइद है। हो सकता है के आप को

رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ

आप का रब मक़ामे महमूद में पहोंचाए। और आप यूँ कहिए के ऐ मेरे रब! तू मुझे दाखिल कर सच्चा

صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّیْ

दाखिल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना और तू मेरे लिए अपनी तरफ

مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾ وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ

से मददगार कुव्वत अता फरमा। और आप कहिए के हक़ आ गया और बातिल

الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾ وَنُنَزِّلُ

मिट गया। यक़ीनन बातिल मिटने ही वाला था। और हम कुरआन में से

مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ

वो उतारते हैं जो ईमान वालों के लिए शिफा है और रहमत है। और ये ज़ालिमों को

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ

नहीं बढ़ाता मगर खसारे में। और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वो

اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوْسًا ﴿٨٣﴾

ऐराज़ करता है और अपना पेहलू दूर हटाता है। और जब उसे तकलीफ पहोंचती है तो मायूस हो जाता है।

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ

आप फरमा दीजिए के सब के सब अमल अपने तरीक़े पर कर रहे हैं। फिर आप का रब खूब जानता है उसे

هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾ وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ

जो ज़्यादा सीधे रास्ते वाला है। और ये आप से रूह के मुतअल्लिक़ पूछते हैं। आप फरमा दीजिए के

الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾

रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें इल्म नहीं दिया गया मगर थोड़ा सा।

وَلَئِنۡ شِئۡنَا لَنَذۡهَبَنَّ بِالَّذِیۡۤ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلَیۡكَ ثُمَّ

और अगर हम चाहें तो सल्ब कर लें जो हम ने आप की तरफ वही की है, फिर आप अपने लिए

لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَیۡنَا وَكِیۡلًا ﴿۸۶﴾ اِلَّا رَحۡمَةً

उस के (वापस लाने के) लिए हमारे खिलाफ कोई कारसाज़ भी न पाओ। मगर आप के रब की रहमत

مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضۡلَهٗ كَانَ عَلَیۡكَ كَبِیۡرًا ﴿۸۷﴾ قُلۡ

की वजह से (सल्ब नहीं किया)। यक़ीनन उस का फ़ज़्ल आप पर बहोत ज़्यादा है। आप फरमा दीजिए के

لَّئِنِ اجۡتَمَعَتِ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلٰۤی اَنۡ یَّاۡتُوۡا بِمِثۡلِ هٰذَا

अगर तमाम इन्सान और जिन्नात जमा हो जाएं इस पर के इस जैसा क़ुरआन

الۡقُرۡاٰنِ لَا یَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِهٖ وَلَوۡ كَانَ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ

ले आएं, तब भी इस जैसा क़ुरआन नहीं ला सकते अगर्चे उन में से एक दूसरे के मददगार

ظَهِیۡرًا ﴿۸۸﴾ وَلَقَدۡ صَرَّفۡنَا لِلنَّاسِ فِیۡ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ

बन जाएं। यक़ीनन हम ने इन्सानों के लिए इस क़ुरआन में हर मिसाल को

مِنۡ كُلِّ مَثَلٍ ۫ فَاَبٰۤی اَكۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿۸۹﴾

फेर फेर कर बयान किया। फिर भी इन्सानों की अकसरीयत ने इन्कार किया, मगर कुफ़्र में (बढ़ते गए)।

وَقَالُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتّٰی تَفۡجُرَ لَنَا مِنَ الۡاَرۡضِ

और कहा के हम हरगिज़ आप पर ईमान नहीं लाएंगे यहां तक के आप हमारे लिए इस ज़मीन में चशमा

یَنۡۢبُوۡعًا ﴿۹۰﴾ اَوۡ تَكُوۡنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنۡ نَّخِیۡلٍ وَّعِنَبٍ

जारी कर दें। या आप के लिए खजूर और अंगूर का बाग़ हो,

فَتُفَجِّرَ الۡاَنۡهٰرَ خِلٰلَهَا تَفۡجِیۡرًا ﴿۹۱﴾ اَوۡ تُسۡقِطَ السَّمَآءَ

फिर उस के दरमियान में आप नेहरें जारी कर दें। या आप आसमान हम पर टुकड़े कर के गिरा दें

كَمَا زَعَمۡتَ عَلَیۡنَا كِسَفًا اَوۡ تَاۡتِیَ بِاللّٰهِ وَالۡمَلٰٓئِكَةِ

जैसा के आप दावा करते हैं या अल्लाह और फरिशतों को आमने सामने

قَبِیۡلًا ﴿۹۲﴾ اَوۡ یَكُوۡنَ لَكَ بَیۡتٌ مِّنۡ زُخۡرُفٍ اَوۡ تَرۡقٰی

ले आएं। या आप के लिए सौने का मकान हो या आप आसमान में

فِی السَّمَآءِ ؕ وَلَنۡ نُّؤۡمِنَ لِرُقِیِّكَ حَتّٰی تُنَزِّلَ عَلَیۡنَا

चढ़ जाएं, और हम आप के चढ़ने को भी हरगिज़ नहीं मानेंगे यहां तक के आप हम पर किताब उतार कर

كِتٰبًا نَّقۡرَؤُهٗ ؕ قُلۡ سُبۡحَانَ رَبِّیۡ هَلۡ كُنۡتُ اِلَّا بَشَرًا

ले आएं जिस को हम पढ़ भी लें। आप फरमा दीजिए के “سُبۡحَانَ اللّٰهِ” (मेरा रब पाक है), मैं तो नहीं हूँ मगर

رَّسُوۡلًا ۝۹۳ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنۡ يُّؤۡمِنُوۡۤا اِذۡ جَآءَهُمُ

एक भेजा हुवा इन्सान। और इन्सानों को ईमान लाने से मानेअ नहीं हुई जब उन के पास हिदायत

الۡهُدٰۤى اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوۡۤا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوۡلًا ۝۹۴ قُلۡ

आई मगर ये बात के उन्हों ने कहा क्या अल्लाह ने एक बशर को रसूल बना कर भेजा? आप फ़रमा दीजिए

لَّوۡ كَانَ فِى الۡاَرۡضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمۡشُوۡنَ مُطۡمَئِنِّيۡنَ

के अगर ज़मीन में फरिशते चलते होते इतमिनान से

لَنَزَّلۡنَا عَلَيۡهِمۡ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوۡلًا ۝۹۵ قُلۡ كَفٰى

तो हम उन पर आसमान से फरिशता रसूल बना कर उतारते। आप फरमा दीजिए के

بِاللّٰهِ شَهِيۡدًۢا بَيۡنِىۡ وَ بَيۡنَكُمۡ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ

अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान काफी गवाह है। यक़ीनन वो अपने बन्दों की

خَبِيۡرًۢا بَصِيۡرًا ۝۹۶ وَمَنۡ يَّهۡدِ اللّٰهُ فَهُوَ الۡمُهۡتَدِ ۚ وَمَنۡ

खबर रखने वाला, देखने वाला है। और जिस को अल्लाह हिदायत दे वो हिदायतयाफता है। और जिसे अल्लाह

يُّضۡلِلۡ فَلَنۡ تَجِدَ لَهُمۡ اَوۡلِيَآءَ مِنۡ دُوۡنِهٖ ؕ وَنَحۡشُرُهُمۡ

गुमराह कर दे तो आप उन के लिए अल्लाह के अलावा कोई हिमायती हरगिज़ नहीं पाएंगे। और हम उन्हें क़यामत के

يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوۡهِهِمۡ عُمۡيًا وَّبُكۡمًا وَّصُمًّا ؕ مَاۡوٰهُمۡ

दिन उन के चेहरों के बल चला कर अन्धा, गूंगा और बेहरा होने की हालत में इकट्ठा करेंगे। उन का ठिकाना

جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتۡ زِدۡنٰهُمۡ سَعِيۡرًا ۝۹۷ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمۡ

जहन्नम है। जो अगर ज़रा ठंडी होगी हम उसे उन के लिए और ज़्यादा भड़काएंगे। ये उन की सज़ा है इस वजह से

بِاَنَّهُمۡ كَفَرُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَ قَالُوۡۤا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا

के उन्हों ने कुफ्र किया हमारी आयतों के साथ और उन्हों ने कहा के क्या जब हम हड्डियाँ हो जाएंगे और रेज़ा रेज़ा हो

ءَاِنَّا لَمَبۡعُوۡثُوۡنَ خَلۡقًا جَدِيۡدًا ۝۹۸ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّ اللّٰهَ

जाएंगे तब फिर नए सिरे से पैदा किए जाएंगे। क्या उन्हों ने देखा नहीं के अल्लाह ने

الَّذِىۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنۡ يَّخۡلُقَ

आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, वो क़ादिर है इस पर के उन के जैसे

ع ۱۰ | النصف

مِّثۡلَهُمۡ وَجَعَلَ لَهُمۡ اَجَلًا لَّا رَيۡبَ فِيۡهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوۡنَ

पैदा करे और अल्लाह ने उन के लिए एक आखिरी मुद्दत मुक़र्रर कर दी है जिस में शक नहीं। फिर भी ज़ालिम लोग इन्कार

اِلَّا كُفُوۡرًا ﴿۹۹﴾ قُلۡ لَّوۡ اَنۡتُمۡ تَمۡلِكُوۡنَ خَزَآئِنَ رَحۡمَةِ رَبِّىۡۤ

करते हैं मगर कुफ्र में (बढ़ते हैं)। आप फरमा दीजिए के अगर तुम मालिक होते मेरे रब की रहमत के खज़ानों के

اِذًا لَّاَمۡسَكۡتُمۡ خَشۡيَةَ الۡاِنۡفَاقِ ؕ وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ قَتُوۡرًا ﴿۱۰۰﴾

तब तो तुम खर्च हो जाने के खौफ से रोक लेते। और इन्सान बड़ा बखील वाकेअ हुवा है।

وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسٰى تِسۡعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسۡـَٔلۡ بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को नौ मोअजिज़ात दिए, फिर आप बनी इस्राईल से पूछिए जब

اِذۡ جَآءَهُمۡ فَقَالَ لَهٗ فِرۡعَوۡنُ اِنِّىۡ لَاَظُنُّكَ يٰمُوۡسٰى

मूसा (अलैहिस्सलाम) उन के पास आए तो फ़िरऔन ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से कहा के यक़ीनन मैं तुम्हें ऐ मूसा! जादू किया

مَسۡحُوۡرًا ﴿۱۰۱﴾ قَالَ لَقَدۡ عَلِمۡتَ مَاۤ اَنۡزَلَ هٰٓؤُلَاۤءِ اِلَّا رَبُّ

हुवा गुमान करता हूँ। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन तू जानता है के उन को नहीं उतारा मगर आसमानों और

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ بَصَآئِرَ ۚ وَاِنِّىۡ لَاَظُنُّكَ يٰفِرۡعَوۡنُ

ज़मीन के रब ने आँखें खोल देने वाले (दलाइल) बना कर। और यक़ीनन मैं तुझे ऐ फिरऔन! हलाक होने वाला

مَثۡبُوۡرًا ﴿۱۰۲﴾ فَاَرَادَ اَنۡ يَّسۡتَفِزَّهُمۡ مِّنَ الۡاَرۡضِ فَاَغۡرَقۡنٰهُ

गुमान कर रहा हूँ। फिर फिरऔन ने चाहा के उन को उस मुल्क से परेशान कर के निकाल दे, तो हम ने फ़िरऔन और

وَمَنۡ مَّعَهٗ جَمِيۡعًا ﴿۱۰۳﴾ وَّقُلۡنَا مِنۡۢ بَعۡدِهٖ لِبَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

उन तमाम को जो फ़िरऔन के साथ थे सब को ग़र्क़ कर दिया। और हम ने उस के बाद बनी इस्राईल से कहा के

اسۡكُنُوا الۡاَرۡضَ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ الۡاٰخِرَةِ جِئۡنَا بِكُمۡ لَفِيۡفًا ﴿۱۰۴﴾

इस मुल्क में रहो, फिर जब आखिरत का वादा आएगा तो हम तुम्हें समेट कर ले आएंगे।

وَبِالۡحَقِّ اَنۡزَلۡنٰهُ وَبِالۡحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا

और हक़ ही के साथ हम ने उस को उतारा और हक़ ही के साथ वो उतरा। और हम ने आप को रसूल बना कर नहीं भेजा मगर बशारत

وَّ نَذِيۡرًا ﴿۱۰۵﴾ وَقُرۡاٰنًا فَرَقۡنٰهُ لِتَقۡرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ

देने वाला और डराने वाला बना कर। और कुरआन को हम ने अलग अलग कर के उतारा ताके आप इन्सानों के सामने उस को

عَلٰى مُكۡثٍ وَّ نَزَّلۡنٰهُ تَنۡزِيۡلًا ﴿۱۰۶﴾ قُلۡ اٰمِنُوۡا بِهٖۤ اَوۡ لَا تُؤۡمِنُوۡا ؕ

पढ़ें ठेहेर ठेहेर कर और हम ने उस को थोड़ा थोड़ा उतारा है। आप फ़रमा दीजिए के तुम उस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ।

إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ

यक़ीनन वो जिन्हें इल्म दिया गया इस से पेहले, उन पर तो जब ये तिलावत किया जाता है

يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ۩ ﴿١٠٧﴾ وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا

तो वो अपनी ठोड़ियों के बल सजदे में गिर जाते हैं। और केहते हैं के हमारा रब पाक है,

إِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ

यक़ीनन हमारे रब का वादा अलबत्ता पूरा हो कर रहा। और वो ठोड़ियों के बल गिर जाते हैं

يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۩ ﴿١٠٩﴾ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ

रोते हुए और ये उन के खुशूअ को और ज़्यादा करता है। आप फ़रमा दीजिए के तुम अल्लाह को पुकारो

أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَٰنَ ۖ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ

या रहमान को पुकारो। जौनसे को भी तुम पुकारो तो उस के लिए सब से अच्छे नाम हैं।

وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ

और आप अपनी नमाज़ में न ज़्यादा ज़ोर से पढ़िए और न बिल्कुल आहिस्ता पढ़िए और उस के दरमियान

ذَٰلِكَ سَبِيلًا ﴿١١٠﴾ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ

रास्ता इखतियार कीजिए। और आप फरमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो न

وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ

औलाद रखता है और न उस का कोई शरीक है सलतनत में और न कोई

لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذُّلِّ ۖ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ﴿١١١﴾

उस का कमज़ोरी की वजह से मददगार है और उसी की आप खूब बड़ाई बयान कीजिए।

السجدة ٣ ع ١٢

ركوعاتها ١٢ (١٨) سُورَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ (٦٩) اٰياتها ١١٠

और १२ रूकूअ हैं सूरह कहफ मक्का में नाज़िल हुई उस में ११० आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَىٰ عَبْدِهِ الْكِتَابَ

तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे पर ये किताब उतारी

وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۜ ﴿١﴾ قَيِّمًا لِيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِنْ

और उस में कोई कजी नहीं रखी। (इस किताब को उतारा) तसदीक़ करने वाला बना कर ताके डराए सख्त अज़ाब

لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ

से अल्लाह की तरफ से और ईमान वालों को बशारत दे जो आमाले सालिहा करते हैं

اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ﴿۲﴾ مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ﴿۳﴾

इस बात की के उन के लिए अच्छा सवाब है। जिस में वो हमेशा ठेहरेंगे।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ﴿۴﴾ مَا لَهُمْ بِهٖ

और डराए उन को जो यूँ केहते हैं के अल्लाह ने औलाद बनाई है। उन के पास और उन

مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ

के बाप दादा के पास उस पर कोई दलील नहीं। बहोत बड़ा कलिमा है जो उन के

مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿۵﴾ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ

मुंह से निकलता है। वो सिर्फ़ झूठ केहते हैं। फिर शायद आप अपनी जान

نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ

निकाल देंगे उन के पीछे अफ़सोस के मारे अगर वो इस कुरआन पर ईमान नहीं

اَسَفًا ﴿۶﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا

लाते। यक़ीनन हम ने उसे जो ज़मीन के ऊपर है ज़मीन की ज़ीनत बनाया है

لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿۷﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ

ताके हम उन्हें आज़माएं के कौन उन में से अच्छा अमल करने वाला है। और यक़ीनन हम उस को जो ज़मीन के

مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ؕ﴿۸﴾ اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ

ऊपर है साफ चटयल मैदान बना कर छोड़ने वाले हैं। क्या आप ने गुमान किया के असहाबे कहफ (ग़ार वाले)

وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ

और तख़्ती वाले वो हमारी अजीब निशानियों में से थे? जब के चन्द नौजवानों ने

اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ

ग़ार में पनाह ली, और उन्हों ने कहा के ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी तरफ़ से रहमत

رَحْمَةً وَّ هَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾ فَضَرَبْنَا

अता कर और हमारे लिए हमारे मुआमले में रहनुमाई मुहय्या फ़रमा। फिर हम

عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ ثُمَّ

ने उन के कानों पर उस ग़ार में चन्द साल तक थपकी दी। फिर हम ने उन को

بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْۤا

नींद से उठाया ताके हम मालूम करें के कौन सी जमाअत अपने ठेहेरने की मुद्दत को ज़्यादा याद रखने

اَمَدًا ﴿١٢﴾ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ

वाली है? हम आप के सामने उन का क़िस्सा तहक़ीक़ से बयान करते हैं। यक़ीनन वो चन्द

فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ زِدْنٰهُمْ هُدًی ﴿١٣﴾ وَّ رَبَطْنَا

नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए थे और हम ने उन को ज़्यादा हिदायत दी थी। और हम ने उन के

عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ

दिलों को मज़बूत कर दिया था जब वो खड़े हुए और उन्हों ने कहा के हमारा रब आसमानों और ज़मीन का

وَ الْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ

रब है, हम उस के अलावा किसी माबूद को हरगिज़ नहीं पुकारेंगे, यक़ीनन तब तो हम ने

اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ

हक़ से दूर वाली बात कही। ये हमारी क़ौम है जिन्हों ने अल्लाह के अलावा कई माबूद बना

اٰلِهَةً ؕ لَوْ لَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ

लिए हैं। उस पर कोई रोशन दलील क्यूं नहीं लाते? फिर उस से

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾

ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े।

وَ اِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَ مَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ

और जब तुम उन से और अल्लाह के अलावा उन के माबूदों से अलग हो गए हो तो तुम ग़ार में पनाह लो,

یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ یُهَیِّئْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए तुम्हारा रब अपनी रहमत निछावर करेगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे मुआमले में

مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾ وَ تَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ

आसानी मुहय्या करेगा। और तू सूरज को देखेगा, जब वो तुलूअ होता है तो उन

عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَ اِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ

के ग़ार से दाईं तरफ़ को हटता है और जब ग़ुरूब होता है तो उन को बाईं तरफ़

ذَاتَ الشِّمَالِ وَ هُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ

काट देता है हालांके वो उस के खुले मैदान में हैं। ये अल्लाह की

اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ

आयात में से है। जिस को अल्लाह हिदायत दे वो हिदायतयाफता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो

فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾ وَ تَحْسَبُهُمْ اَیْقَاظًا

आप उस के लिए कोई दोस्त रास्ता बताने वाला हरगिज़ नहीं पाओगे। और आप उन्हें बेदार गुमान करेंगे

وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖۗ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَ ذَاتَ الشِّمَالِ ۖۗ

हालांके वो सोए हुए हैं। और हम उन्हें दाईं और बाईं तरफ़ उलट पलट करते हैं।

وَ كَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ

और उन का कुत्ता अपनी बाहें चौखट पर फैलाए हुए है। अगर आप उन की

عَلَیْهِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

तरफ़ झाकें तो उन से पीठ फेर कर भागें और आप उन की तरफ से मरऊब हो जाएं।

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِیَتَسَآءَلُوْا بَیْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ

और इसी तरह हम ने उन को जगा दिया ताके वो आपस में सवाल करें। उन में से एक केहने वाले

مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا یَوْمًا اَوْ بَعْضَ یَوْمٍ ؕ

ने कहा के तुम कितना ठेहरे रहे? तो उन्हों ने कहा के हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठेहरे रहे।

قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ

उन्हों ने कहा के तुम्हारा रब तुम्हारे ठेहेरने की मुद्दत खूब जानता है। अब तुम अपने में से किसी एक को

بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِیْنَةِ فَلْیَنْظُرْ اَیُّهَاۤ اَزْكٰى

तुम्हारा चाँदी का ये दिरहम दे कर शेहर की तरफ भेजो, फिर उसे चाहिए के वो देखे के कौन सा खाना

طَعَامًا فَلْیَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْیَتَلَطَّفْ

ज़्यादा पाकीज़ा है, फिर वो तुम्हारे पास उस में से खाना लाए और उसे चाहिए के वो नर्म बात करे

وَلَا یُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾ اِنَّهُمْ اِنْ یَّظْهَرُوْا عَلَیْكُمْ

और किसी को तुम्हारा पता न बतलाए। इस लिए के वो अगर तुम पर मुत्तलेअ हो जाएंगे

یَرْجُمُوْكُمْ اَوْ یُعِیْدُوْكُمْ فِیْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْۤا

तो तुम्हें रज्म कर देंगे या तुम्हें अपने मज़हब में लौटा देंगे और तुम उस वक्त कभी भी हरगिज़

اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَیْهِمْ لِیَعْلَمُوْۤا اَنَّ وَعْدَ

कामयाब न हो सकोगे। और इसी तरह हम ने उन पर मुत्तलेअ किया ताके वो जान लें के अल्लाह का

اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ

वादा सच्चा है और ये के क़यामत में कोई शक नहीं। जब के वो आपस में झगड़ रहे थे उन (असहाबे

بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ

कहफ़) के मुआमले में, तो बाज़ ने कहा के उन पर इमारत बना लो। उन का रब उन्हें खूब

اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰۤى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ

जानता है। उन लोगों ने कहा जो उन के मुआमले में ज़्यादा बाइखतियार थे के हम ज़रूर उन के ऊपर

عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿۲۱﴾ سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ

मस्जिद बनाएंगे। अब वो कहेंगे के असहाबे कहफ़ तीन थे, उन में चौथा

كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًاۢ

उन का कुत्ता था। और कहेंगे के पाँच थे, उन में छठ्ठा उन का कुत्ता था, बेदेखे पथ्थर

بِالْغَيْبِ ۚ وَ يَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ

फेंकते हुए। और वो कहेंगे के सात थे, और आठवां उन का कुत्ता था।

قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ قف

आप फरमा दीजिए के मेरा रब उन की तादाद खूब जानता है, थोड़े लोगों के सिवा किसी को उन की तादाद का इल्म नहीं।

فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ

इस लिए आप उन के बारे में सिवाए सरसरी बहस के ज़्यादा बहस न कीजिए। और आप उन के बारे

مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿۲۲﴾ وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَایْءٍ اِنِّیْ فَاعِلٌ

में उन में से किसी से न पूछिए। और किसी चीज़ के मुतअल्लिक़ यूँ न कहिए के मैं उस को

ذٰلِكَ غَدًا ﴿۲۳﴾ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۫ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ

कल करूँगा। मगर ये के अल्लाह चाहे (तो करूंगा)। और अपने रब को याद कीजिए

اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰۤى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّیْ لِاَقْرَبَ

जब आप भूल जाएं और आप यूँ कहिए के हो सकता है के मेरा रब इस से अक़रब

مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿۲۴﴾ وَلَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ

रूश्द व हिदायत की राह पर मुझे लगा दे। और वो अपने ग़ार में तीन सौ बरस

سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا

और मज़ीद नौ साल ठेहरे। आप फरमा दीजिए के अल्लाह उन के ठेहरने की मुद्दत खूब

ع ۵ ۱۵

لَبِثُوۡا ۚ لَہٗ غَیۡبُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ اَبۡصِرۡ بِہٖ

जानता है। उस के पास आसमानों और ज़मीन का ग़ैब है। क्या अजब उस का देखना

وَ اَسۡمِعۡ ؕ مَا لَہُمۡ مِّنۡ دُوۡنِہٖ مِنۡ وَّلِیٍّ ۫ وَّ لَا یُشۡرِکُ

और सुनना है। बन्दों के लिए अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं। और वो अपनी हुकूमत

فِیۡ حُکۡمِہٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ وَ اتۡلُ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیۡکَ

में किसी को शरीक नहीं करता। और आप तिलावत कीजिए उसे जो आप की तरफ आप के रब की किताब में

مِنۡ کِتَابِ رَبِّکَ ؕ لَا مُبَدِّلَ لِکَلِمٰتِہٖ ۚ۟ وَ لَنۡ تَجِدَ

से वही किया गया है। उस के कलिमात को कोई बदल नहीं सकता। और आप उस के अलावा कोई पनाह की

مِنۡ دُوۡنِہٖ مُلۡتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَ اصۡبِرۡ نَفۡسَکَ مَعَ الَّذِیۡنَ

जगह हरगिज़ नहीं पाओगे। और आप अपने को रोके रखिए उन के साथ जो

یَدۡعُوۡنَ رَبَّہُمۡ بِالۡغَدٰوۃِ وَ الۡعَشِیِّ یُرِیۡدُوۡنَ

अपने रब को सुबह व शाम पुकारते हैं, उस की

وَجۡہَہٗ وَ لَا تَعۡدُ عَیۡنٰکَ عَنۡہُمۡ ۚ تُرِیۡدُ زِیۡنَۃَ الۡحَیٰوۃِ

रज़ा के तालिब हैं और अपनी निगाह उन से न हटाइए। दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़ीनत आप चाहते

الدُّنۡیَا ۚ وَ لَا تُطِعۡ مَنۡ اَغۡفَلۡنَا قَلۡبَہٗ عَنۡ ذِکۡرِنَا

हैं? और उस शख्स का केहना न मानिए जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफिल कर रखा है और वो

وَ اتَّبَعَ ہَوٰىہُ وَ کَانَ اَمۡرُہٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَ قُلِ الۡحَقُّ

अपनी ख्वाहिश के पीछे पड़ गया है और उस का मुआमला हद से आगे बढ़ गया है। और आप यूँ कहिए के हक़

مِنۡ رَّبِّکُمۡ ۟ فَمَنۡ شَآءَ فَلۡیُؤۡمِنۡ وَّ مَنۡ شَآءَ فَلۡیَکۡفُرۡ ۙ

तुम्हारे रब की तरफ से है। तो जो चाहे वो ईमान लाए और जो चाहे वो कुफ्र करे।

اِنَّاۤ اَعۡتَدۡنَا لِلظّٰلِمِیۡنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِہِمۡ سُرَادِقُہَا ؕ

यक़ीनन हम ने ज़ालिमों के लिए आग तय्यार कर रखी है, आग की क़नातें उन्हें घेरे हुए हैं।

وَ اِنۡ یَّسۡتَغِیۡثُوۡا یُغَاثُوۡا بِمَآءٍ کَالۡمُہۡلِ یَشۡوِی الۡوُجُوۡہَ ؕ

और अगर वो मदद मांगेंगे तो उन की मदद की जाएगी ऐसे पानी से जो पिघले हुए तांबे की तरह होगा, जो

بِئۡسَ الشَّرَابُ ؕ وَ سَآءَتۡ مُرۡتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ

चेहरों को भून देगा। कितनी बुरी शराब। और (जहन्नम) कितनी बुरी जगह है। यक़ीनन जो

الثلاثۃ

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ

ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे, यक़ीनन उस का अज्र हम ज़ायेअ नहीं करेंगे जिस ने

عَمَلًا ﴿۳۰﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ

अच्छा अमल किया। उन के लिए जन्नाते अद्न होंगी, जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ یُحَلَّوْنَ فِیْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ

नेहरें बेहती होंगी, उन्हें उन में कंगन पेहनाए जाएंगे सौने के

وَّیَلْبَسُوْنَ ثِیَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ

और वो सब्ज़ लिबास पेहनेंगे बारीक रेशम के और मोटे रेशम के,

مُّتَّكِـِٕیْنَ فِیْهَا عَلَی الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ

उन में वो तख्तों पर टेक लगाए होंगे। कितना अच्छा बदला है। और कितनी अच्छी

مُرْتَفَقًا ﴿۳۱﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَیْنِ جَعَلْنَا

राहत की जगह है। और आप उन के सामने मिसाल बयान कीजिए दो आदमियों की के उन में से एक

لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَیْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ

के लिए हम ने अंगूर के दो बाग़ बनाए और हम ने उन दोनों बाग़ों को चारों तरफ से घेर लिया खजूर के दरख्तों से

وَّجَعَلْنَا بَیْنَهُمَا زَرْعًا ﴿۳۲﴾ كِلْتَا الْجَنَّتَیْنِ اٰتَتْ

और उन दोनों के दरमियान हम ने खेत बना दिए। ये दोनों बाग़ अपने फल

اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَیْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا

देते थे और उस में से कुछ कम नहीं करते थे। और हम ने उन दोनों बाग़ों के दरमियान नहर जारी

نَهَرًا ﴿۳۳﴾ وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ یُحَاوِرُهٗٓ

कर दी थी। और बराबर फल उसे मिल रहे थे। तो वो अपने साथी से केहने लगा उस से गुफतगू के दौरान

اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿۳۴﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ

के मैं तुझ से ज़्यादा माल वाला हूँ और तुझ से ज़्यादा भारी नफरी वाला हूँ। और वो अपने बाग़ में दाख़िल हुवा

وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِیْدَ هٰذِهٖٓ

इस हाल में के वो अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला था। वो केहने लगा के मेरा ये गुमान नहीं के ये बाग

اَبَدًا ﴿۳۵﴾ وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ

कभी बरबाद होगा। और मैं क़यामत के आने का अक़ीदा नहीं रखता, और अगर मैं मेरे

ع ۵ / ۱۶

اِلٰى رَبِّىۡ لَاَجِدَنَّ خَيۡرًا مِّنۡهَا مُنۡقَلَبًا ۝۳۶ قَالَ

रब की तरफ लौटा भी दिया गया तो मैं उस से बेहतर जगह पाऊँगा। उस के

لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرۡتَ بِالَّذِىۡ

साथी ने उसे कहा गुफतगू के दौरान, क्या तू कुफ्र करता है उस ज़ात के साथ जिस ने

خَلَقَكَ مِنۡ تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ نُّطۡفَةٍ ثُمَّ سَوّٰٮكَ

तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फे से, फिर तुझे पूरा इन्सान

رَجُلًا ؕ ۝۳۷ لٰـكِنَّا۟ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىۡ وَلَاۤ اُشۡرِكُ بِرَبِّىۡۤ

बनाया? लेकिन वही अल्लाह मेरा रब है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं

اَحَدًا ۝۳۸ وَلَوۡلَاۤ اِذۡ دَخَلۡتَ جَنَّتَكَ قُلۡتَ

ठेहराता। और जब तू अपने बाग़ में दाखिल हुवा तो तू ने यूँ क्यूं नहीं कहा "مَا شَآءَ اللّٰهُ"

مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنۡ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ

"لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" (जो अल्लाह ने चाहा (वही होगा) ताक़त नहीं मगर अल्लाह की तरफ़ से) अगर तू मुझे देख

مِنۡكَ مَالًا وَّ وَلَدًا ۚ ۝۳۹ فَعَسٰى رَبِّىۡۤ اَنۡ يُّؤۡتِيَنِ

रहा है के मैं तुझ से कम माल और कम औलाद वाला हूँ। तो हो सकता है के मेरा रब मुझे तेरे बाग़

خَيۡرًا مِّنۡ جَنَّتِكَ وَيُرۡسِلَ عَلَيۡهَا حُسۡبَانًا

से बेहतर दे दे और इस बाग़ पर आसमान से अज़ाब

مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصۡبِحَ صَعِيۡدًا زَلَقًا ۙ ۝۴۰ اَوۡ يُصۡبِحَ مَآؤُهَا

भेज दे, और ये फिसलन वाला मैदान बन जाए। या उस का पानी ज़मीन में नीचे

غَوۡرًا فَلَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ لَهٗ طَلَبًا ۝۴۱ وَاُحِيۡطَ بِثَمَرِهٖ

चला जाए, किसी तरह तू उसे तलाश भी न कर सकेगा। और उस के फलों पर आफत आ गई,

فَاَصۡبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيۡهِ عَلٰى مَاۤ اَنۡفَقَ فِيۡهَا وَهِىَ

और वो अपने दोनों हाथ मलता रेह गया उस माल पर जो उस ने बाग़ में खर्च किया था और वो बाग़

خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوۡشِهَا وَيَقُوۡلُ يٰلَيۡتَنِىۡ لَمۡ اُشۡرِكۡ

गिरा पड़ा हुवा था उस के छप्परों पर, इधर ये केह रहा था के काश मैं अपने रब के साथ किसी को

بِرَبِّىۡۤ اَحَدًا ۝۴۲ وَلَمۡ تَكُنۡ لَّهٗ فِئَةٌ يَّـنۡصُرُوۡنَهٗ

शरीक न ठेहराता। और उस की कोई जमाअत भी न हुई जो उस की नुसरत करती

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ

अल्लाह के अलावा और वो खुद भी अपनी मदद न कर सका। वहाँ पर

الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾

हक़ीक़ी हुकूमत अल्लाह ही के लिए है। वही बेहतर सवाब और बेहतर बदला देने वाला है।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ

और आप उन के सामने दुन्यवी ज़िन्दगी की मिसाल बयान कीजिए उस पानी की तरह जो हम ने आसमान से

مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ

उतारा, फिर उस के साथ ज़मीन का सब्ज़ा मिल गया, फिर वो कूड़ा करकट

هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हो जाता है जिस को हवाएं उड़ाती हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत

مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

वाला है। माल और बेटे दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं।

وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ

और बाक़ी रेहने वाली नेकियाँ बेहतर हैं तेरे रब के यहाँ सवाब के ऐतेबार से और उम्मीद के ऐतेबार से

اَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ

बेहतर हैं। और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तू ज़मीन हमवार देखेगा।

وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾ وَعُرِضُوْا

और हम उन को इकट्ठा करेंगे, फिर हम उन में से किसी एक को भी नहीं छोड़ेंगे। और वो तेरे रब के सामने

عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ

सफ बसफ पेश किए जाएंगे। (कहा जाएगा) के यक़ीनन तुम हमारे पास आ गए हो, जैसा हम ने तुम्हें

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۟ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

पेहली बार पैदा किया था। बल्के तुम ने तो ये गुमान किया था के हम तुम्हारे लिए वादे की जगह हरगिज़ नहीं बनाएंगे।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ

और नामाए आमाल रख दिया जाएगा, फिर मुजरिमों को आप देखेंगे के डरे हुए हैं

مِمَّا فِيْهِ وَ يَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ

उस से जो आमालनामे में है और वो कहेंगे के हाए हमारी हलाकत! इस नामाए आमाल को क्या हुवा

لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰهَا ۚ

के न सग़ीरा गुनाह को छोड़ा है, न कबीरा मगर सब को इस ने महफ़ूज़ रखा है।

وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ۭ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ

और वो अपने आमाल सामने पाएंगे। और तेरा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं

اَحَدًا ۝۴۹ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ

करता। और जब हम ने फरिश्तों से कहा के आदम को सज्दा करो

فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ

तो सिवाए इबलीस के सब ने सज्दा किया। वो जिन्नात में से था, फिर उस ने नाफरमानी की

عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ۭ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَ ذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَاۗءَ

अपने रब के हुक्म की। क्या फिर तुम मुझे छोड़ कर के उसे और उस की औलाद को

مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ۭ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ

दोस्त बनाते हो हालांके वो तुम्हारे दुशमन हैं? ज़ालिमों को बुरा

بَدَلًا ۝۵۰ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

बदल मिला। मैं ने उन्हें मौजूद नहीं रखा आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के वक्त

وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۠ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ

और न खुद उन के पैदा करने के वक्त। और मैं गुमराह करने वालों को मददगार नहीं

عَضُدًا ۝۵۱ وَ يَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَاۗءِيَ

बनाता। और जिस दिन वो कहेगा के तुम पुकारो मेरे उन शुरका को

الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ

जिन का तुम दावा करते थे, तो वो उन को पुकारेंगे, फिर वो उन की पुकार का जवाब नहीं देंगे

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۝۵۲ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ

और हम उन के दरमियान में हलाकतगाह क़ाइम कर देंगे। और मुजरिम जहन्नम को देखेंगे,

فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا

फिर समझेंगे के वो उस में गिरने वाले हैं और उस से बचने की जगह नहीं

مَصْرِفًا ۝۵۳ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ

पाएंगे। यक़ीनन हम ने इस कुरआन में इन्सानों के लिए फेर फेर कर

مِنۡ كُلِّ مَثَلٍ‌ؕ وَكَانَ الۡاِنۡسَانُ اَكۡثَرَ شَىۡءٍ

तमाम मिसालें बयान की हैं। और इन्सान सब चीज़ से ज़्यादा

جَدَلًا ۝٥٤ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنۡ يُّؤۡمِنُوۡۤا اِذۡ جَآءَهُمُ

झगड़ालू है। और इन्सानों को ईमान लाने से मानेअ नहीं हुई जब उन के पास

الۡهُدٰى وَيَسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّهُمۡ اِلَّاۤ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ

हिदायत आई और अपने रब से मग़फिरत तलब करने से मानेअ नहीं हुई मगर ये बात के उन के पास

سُنَّةُ الۡاَوَّلِيۡنَ اَوۡ يَاۡتِيَهُمُ الۡعَذَابُ قُبُلًا ۝٥٥

पेहले लोगों का तरीक़ा आ जाए या उन के पास अज़ाब सामने आ पहोंचे।

وَمَا نُرۡسِلُ الۡمُرۡسَلِيۡنَ اِلَّا مُبَشِّرِيۡنَ وَ مُنۡذِرِيۡنَ‌ۚ

और हम रसूल नहीं भेजते मगर बशारत देने वाले और डराने वाले बना कर।

وَ يُجَادِلُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِالۡبَاطِلِ لِيُدۡحِضُوۡا

और काफिर बातिल के ज़रिए झगड़ा करते हैं ताके उस के ज़रिए

بِهِ الۡحَقَّ وَاتَّخَذُوۡۤا اٰيٰتِىۡ وَمَاۤ اُنۡذِرُوۡا هُزُوًا ۝٥٦

हक़ को मिटा दें और वो मेरी आयतों को और उस को जिस से उन को डराया गया उसे मज़ाक़ बनाते हैं।

وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنۡ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعۡرَضَ

और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाए, फिर वो उस से

عَنۡهَا وَنَسِىَ مَا قَدَّمَتۡ يَدٰهُ‌ؕ اِنَّا جَعَلۡنَا

ऐराज़ करे और भुला दे उसे जो उस के हाथों ने आगे भेजा है। यक़ीनन हम ने उन के दिलों पर

عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ اَكِنَّةً اَنۡ يَّفۡقَهُوۡهُ وَفِىۡۤ اٰذَانِهِمۡ وَقۡرًا‌ ؕ

परदे रख दिए हैं इस से के वो उसे समझें और उन के कानों में डाट रख दी है।

وَاِنۡ تَدۡعُهُمۡ اِلَى الۡهُدٰى فَلَنۡ يَّهۡتَدُوۡۤا اِذًا اَبَدًا ۝٥٧

और अगर आप उन्हें हिदायत की तरफ बुलाएंगे तब भी हरगिज़ हिदायत नहीं पाएंगे कभी भी।

وَرَبُّكَ الۡغَفُوۡرُ ذُو الرَّحۡمَةِ‌ؕ لَوۡ يُؤَاخِذُهُمۡ

और आप का रब बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, रहम वाला है। अगर अल्लाह उन को पकड़े उन के आमाल

بِمَا كَسَبُوۡا لَعَجَّلَ لَهُمُ الۡعَذَابَ‌ؕ بَلۡ لَّهُمۡ مَّوۡعِدٌ

की वजह से तो उन के लिए अज़ाब जल्दी ले आए। बल्के उन के लिए मुक़र्ररा वक़्त है,

لَّنْ یَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ۝۵۸ وَتِلْكَ الْقُرٰۤى

उस से पनाह की जगह वो हरगिज़ नहीं पाएंगे। और ये बस्तियाँ हैं

اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ

जिन को हम ने हलाक किया जब उन्हों ने जुल्म किया और हम ने उन की हलाकत का वक्त

مَّوْعِدًا ۝۵۹ وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَاۤ اَبْرَحُ

मुक़र्रर कर रखा था। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने खादिम से फरमाया के मैं बराबर चलता रहूँगा

حَتّٰۤى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَیْنِ اَوْ اَمْضِیَ حُقُبًا ۝۶۰ فَلَمَّا بَلَغَا

यहां तक के मैं पहोंच जाऊँ दो समन्दरों के बाहम मिलने की जगह पर या मैं मुद्दतों चलता रहूँगा। फिर जब वो

مَجْمَعَ بَیْنِهِمَا نَسِیَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِیْلَهٗ

दोनों पहोंचे दो समन्दरों के बाहम मिलने की जगह पर तो दोनों अपनी मछली भूल गए, फिर मछली ने समन्दर में

فِی الْبَحْرِ سَرَبًا ۝۶۱ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا

सुराख कर के अपना रास्ता बना लिया। फिर जब वो दोनों आगे निकल गए, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने खादिम

غَدَآءَنَا ز لَقَدْ لَقِیْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝۶۲

से फ़रमाया के हमारे पास हमारा नाशता लाइए। यक़ीनन हमारे इस सफर से हमें थकावट पहोंची है।

قَالَ اَرَءَیْتَ اِذْ اَوَیْنَاۤ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّیْ نَسِیْتُ

खादिम ने अर्ज़ किया क्या आप ने देखा जब हम ने पनाह ली चटान के पास तो मैं मछली

الْحُوْتَ ز وَمَاۤ اَنْسٰىنِیْهُ اِلَّا الشَّیْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ج

भूल गया। और उस की याद शैतान ही ने मुझे भुला दी।

وَاتَّخَذَ سَبِیْلَهٗ فِی الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ۝۶۳ قَالَ ذٰلِكَ

और मछली ने अपना रास्ता अजीब तरीक़े से समन्दर में बना लिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये वही

مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۝۶۴

तो है जिसे हम तलाश कर रहे थे। फिर वो दोनों अपने निशानाते क़दम को तलाश करते हुए वापस लौटे।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَاۤ اٰتَیْنٰهُ رَحْمَةً

फिर दोनों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसे हम ने हमारी तरफ से रहमत

مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۝۶۵ قَالَ لَهٗ

अता की थी और जिसे हम ने हमारी तरफ़ से इल्म दिया था। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन से फरमाया

مُوْسٰی هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤی اَنْ تُعَلِّمَنِ

क्या मैं आप के साथ चल सकता हूँ इस शर्त पर के आप मुझे सिखलाएं उन उलूम में से जो आप को

مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿۶۶﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ

दिए गए हैं रूश्द (व हिदायत) के लिए। उन्हों (खिज़र) ने कहा यक़ीनन आप मेरे साथ रेह कर हरगिज़

مَعِیَ صَبْرًا ﴿۶۷﴾ وَ كَیْفَ تَصْبِرُ عَلٰی مَا لَمْ تُحِطْ

सब्र नहीं कर सकोगे। और आप कैसे सब्र कर सकते हो उस पर जिस की मुकम्मल हक़ीक़त आप को

بِهٖ خُبْرًا ﴿۶۸﴾ قَالَ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا

मालूम नहीं? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अनक़रीब अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे

وَّلَاۤ اَعْصِیْ لَكَ اَمْرًا ﴿۶۹﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِیْ

और मैं आप की किसी मुआमले में नाफरमानी नहीं करूंगा। उन्हों (खिज़र) ने कहा फिर अगर आप मेरे साथ चलते हो

فَلَا تَسْـَٔلْنِیْ عَنْ شَیْءٍ حَتّٰۤی اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ

तो मुझ से किसी चीज़ से मुतअल्लिक़ सवाल न कीजिए जब तक के मैं खुद आप के सामने उस को बयान

ذِكْرًا ﴿۷۰﴾ فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤی اِذَا رَكِبَا فِی السَّفِیْنَةِ

न करूं। फिर वो दोनों चले। यहां तक के जब वो सवार हुए कशती में तो उन्हों (खिज़र) ने

خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ

उस को फाड़ दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम ने कशती फाड़ दी ताके कशती वालों को ग़र्क़ कर दो?

لَقَدْ جِئْتَ شَیْـًٔا اِمْرًا ﴿۷۱﴾ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ

यक़ीनन आप ने बहोत बुरी हरकत की है। उन्हों (खिज़र) ने कहा क्या मैं ने कहा नहीं था के आप

لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿۷۲﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِیْ

हरगिज़ मेरे साथ रेह कर सब्र नहीं कर सकोगे? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के आप मेरा मुआखज़ा न कीजिए

بِمَا نَسِیْتُ وَلَا تُرْهِقْنِیْ مِنْ اَمْرِیْ عُسْرًا ﴿۷۳﴾

उस में जो मैं भूल गया और मेरे मुआमले में मुझे तंगी के क़रीब न कीजिए।

فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤی اِذَا لَقِیَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ

फिर दोनों चले। यहां तक के जब दोनों एक लड़के से मिले तो उन्हों (खिज़र) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम)

نَفْسًا زَكِیَّةًۢ بِغَیْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَیْـًٔا نُّكْرًا ﴿۷۴﴾

ने फरमाया क्या तुम ने एक पाकीज़ा जान को किसी नफ़्स के बग़ैर क़त्ल किया? यक़ीनन आप ने बहोत बुरी हरकत की।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ

उन्हों (खिज़र) ने कहा क्या मैं ने आप से कहा नहीं था के आप मेरे साथ रेह कर हरगिज़ सब्र नहीं

صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا

कर सकोगे। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अगर मैं आप से किसी चीज़ के मुतअल्लिक़ इस के बाद सवाल करूँ

فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۬ وقفة

तो आप मुझे अपने साथ न रखिए। बेशक आप मेरी तरफ से उज़्र की इन्तिहा को पहोंच गए हो। फिर वो दोनों

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَيَآ اَهْلَ قَرْيَةِ ۣاسْتَطْعَمَآ اَهْلَهَا فَاَبَوْا

चले। यहां तक के जब वो दोनों एक गाँव वालों के पास पहोंचे तो दोनों ने बस्ती वालों से खाना मांगा, तो

اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ

बस्ती वालों ने उन दोनों की ज़ियाफ़्त करने से इन्कार कर दिया। फिर दोनों ने उस बस्ती में दीवार को पाया जो गिरना

اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ۭ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ

चाह रही थी, तो उन्हों (खिज़र) ने उसे सीधा कर दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अगर तुम चाहते तो इस पर उजरत

اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَ بَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ

ले लेते। उन्हों (खिज़र) ने कहा के ये मेरे और आप के दरमियान जुदाई (का वक़्त) है। मैं आप को अभी बतलाता

بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِيْنَةُ

हूँ हक़ीक़त उन बातों की जिन पर सब्र की आप ताक़त न रख सके। अल्बत्ता कश्ती,

فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ

तो वो चन्द मिस्कीनों की थी जो समन्दर में काम करते थे, तो मैं ने चाहा के मैं उसे

اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ

ऐबदार कर दूँ, और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) कश्ती को ज़बर्दस्ती कर के ले लेता

غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ

था। और अल्बत्ता लड़का, तो उस के वालिदैन मोमिन थे

فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَاَرَدْنَآ

तो हम डरे इस से के वो उन दोनों को भी सरकशी और कुफ्र के क़रीब कर दे। तो हम ने इरादा किया के

اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

उन का रब उन्हें बदले में (ऐसी औलाद) दे जो पाकीज़गी में उस से बेहतर और सिलारहमी में उस से बढ़ कर हो।

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ
और अल्बत्ता दीवार, तो वो दो यतीम लड़कों की थी उस शेहर में और

تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ
उस दीवार के नीचे उन का खज़ाना था और उन के बाप नेक थे। तो तेरे रब ने चाहा

اَنْ يَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖۗ رَحْمَةً
के वो दोनों अपनी जवानी को पहोंचें और अपना खज़ाना खुद निकालें। ये आप के

مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ
रब की रहमत की वजह से हुवा। और मैं ने उस को अपनी तरफ से नहीं किया। ये उस चीज़ का मतलब है जिस

مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ؕ ۝٨٢ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ؕ
पर आप सब्र की ताक़त न रख सके। और ये आप से ज़ुलक़रनैन के मुतअल्लिक़ सवाल करते हैं। आप फरमा

قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ؕ ۝٨٣ اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ
दीजिए के अनक़रीब मैं तुम्हारे सामने उस का कुछ तज़किरा करूंगा। यक़ीनन हम ने उसे ज़मीन में हुकूमत

فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ۙ ۝٨٤ فَاَتْبَعَ
दी थी और हम ने उसे हर चीज़ के असबाब दिए थे। फिर वो असबाब

سَبَبًا ۝٨٥ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ
ले कर चले। यहां तक के जब सूरज के डूबने की जगह तक पहोंचे तो उसे पाया के वो डूब रहा है

فِىْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا
कीचड़ वाले चशमे में और उस के पास एक क़ौम को पाया। हम ने कहा के ऐ

الْقَرْنَيْنِ اِمَّاۤ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّاۤ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ
ज़ुलक़रनैन! या तो आप अज़ाब दें या उन में भलाई

حُسْنًا ۝٨٦ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ
करें। ज़ुलक़रनैन ने कहा अल्बत्ता जो ज़ुल्म करेगा, तो हम उसे अज़ाब देंगे, फिर उसे लौटाया जाएगा

اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ۝٨٧ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ
अपने रब की तरफ, फिर वो भी उसे बदतरीन अज़ाब देगा। और अल्बत्ता जो ईमान लाएगा

وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ
और आमाले सालिहा करेगा तो उस के लिए अच्छा बदला होगा। और हम उस से अपने मुआमले में

اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ

आसानी वाली बात कहेंगे। फिर वो सामान ले कर चले। यहां तक के जब वो सूरज के तुलूअ होने की

الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ

जगह पर पहोंचे, तो उसे पाया के वो तुलूअ हो रहा है एक क़ौम पर जिन के लिए हम ने सूरज से आड़

مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

नहीं बनाई। इसी तरह, और हम ने उस का भी इहाता कर रखा है इल्म के ऐतेबार से जो उन के पास था। फिर

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ

वो असबाब ले कर चले। यहां तक के जब वो दो बन्द तक पहोंच गए तो उन्हों ने दोनों बन्द के पीछे एक

مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا يٰذَا

क़ौम को पाया, जो बात समझने के भी क़रीब नहीं थी। उन्हों ने कहा के ऐ

الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ

ज़ुलक़रनैन! यक़ीनन याजूज माजूज ज़मीन में फसाद फेला रहे हैं,

فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ

तो क्या हम आप के लिए कोई खर्च मुतअय्यन कर दें इस शर्त पर के आप हमारे और उन के दरमियान बन्द

سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ

बना दें? ज़ुलक़रनैन ने कहा के जिस की मेरे रब ने मुझे क़ुदरत दी है, वो बेहतर है, इस लिए तुम मेरी इआनत

بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ

करो क़ूव्वत से, तो मैं तुम्हारे और उन के दरमियान में एक मज़बूत दीवार बना दूंगा। तुम मेरे पास लोहे की तखतियाँ

حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ

लाओ। यहां तक के जब उन्हों ने दोनों किनारों को बराबर कर दिया, तो कहा के आग फूंको। यहां तक के जब

حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾ؕ

उस को सरापा आग बना दिया, तो ज़ुलक़रनैन ने कहा के तुम मेरे पास पिघला हुवा तांबा लाओ के मैं उस पर बहा दूँ।

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾

फिर वो उस पर चढ़ने की ताक़त नहीं रख सकेंगे और न उस में सूराख करने की ताक़त रख सकेंगे।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ

ज़ुलक़रनैन ने कहा ये मेरे रब की रहमत है। फिर जब मेरे रब का वादा आ जाएगा तो वो उसे

دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ

रेज़ा रेज़ा कर देगा। और मेरे रब का वादा सच्चा है। और हम छोड़ देंगे उन को उस दिन

يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّ نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ

इस हाल में के बाज़ बाज़ से गुड़मुड़ होंगे और सूर में फूंक मारी जाएगी, फिर हम उन सब को इकट्ठा

جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّ عَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾

करेंगे। और हम जहन्नम को उस दिन काफिरों के सामने पेश करेंगे।

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا

जिन की आँखें मेरे ज़िक्र (कुरआन) से (ग़फलत के) परदे में थीं और जो

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

सुनने की ताक़त नहीं रखते थे। क्या फिर काफिरों ने ये समझ रखा है के

اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا

वो मुझे छोड़ कर मेरे बन्दों को हिमायती बना लेंगे? यक़ीनन हम ने काफिरों की ज़ियाफत

جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ

के लिए जहन्नम तय्यार कर रखी है। आप फरमा दीजिए क्या हम तुम्हें बतलाएं उन लोगों के बारे में

اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ

जो आमाल के ऐतेबार से सब से ज़्यादा खसारे वाले हैं? वो लोग हैं के जिन की कोशिशें दुन्यवी ज़िन्दगी में बेकार

يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

हो गईं और वो ये समझते रहे के वो अच्छे काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्हों ने अपने रब की

كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَ لِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ

आयात के साथ कुफ्र किया और उस की मुलाक़ात का (इन्कार किया), फिर उन के आमाल अकारत हो गए

فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ

फिर हम उन के लिए क़यामत के दिन वज़न क़ाइम नहीं करेंगे। ये उन की सज़ा जहन्नम है

جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾

उन के कुफ्र की वजह से और मेरी आयतों और मेरे पैग़म्बरों को मज़ाक़ बनाने की वजह से।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ

यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे उन की ज़ियाफत के लिए जन्नातुल

الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝١٠٧ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا

फ़िरदौस होंगी। जिन में वो हमेशा रहेंगे, जिस से वो हटना नहीं

حِوَلًا ۝١٠٨ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ

चाहेंगे। आप फरमा दीजिए के अगर समन्दर रोशनाई बन जाए मेरे रब के कलिमात के लिए, तो समन्दर खत्म

الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ

हो जाएगा इस से पेहले के मेरे रब के कलिमात खत्म हों, अगर्चे हम उसी जैसी मदद के तौर पर और भी ले

مَدَدًا ۝١٠٩ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ

आएं। आप फरमा दीजिए के मैं तो सिर्फ तुम जैसा एक इन्सान हूँ, मेरी तरफ़ वही की जा रही है

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ

ये के तुम्हारा माबूद यकता माबूद है। फिर जो अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता है, तो उसे

عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝١١٠

चाहिए के वो आमाले सालिहा करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठेहराए।

رُكُوْعَاتُهَا ٦ (٤٤) سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ (١٩) اٰيَاتُهَا ٩٨

और ६ रूकूअ हैं सूरह मरयम मक्का में नाज़िल हुई उस में ९८ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

كٓهٰيٰعٓصٓ ۝١ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۝٢

काफ हा या ऐन साद। ये तेरे रब की उस के बन्दे ज़करीया (अलैहिस्सलाम) पर रहमत का तज़किरा है।

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ۝٣ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ

जब उन्हों ने अपने रब को चुपके चुपके पुकारा। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! यक़ीनन मेरी

الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ

हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं और सर में बुढ़ापा फैल चुका है और मैं तुझ से मांगने

بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝٤ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ

में ऐ मेरे रब! नाकाम नहीं रहा। और यक़ीनन मैं अपने पीछे वारिसों से डरता

مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ

हूँ और मेरी बीवी बांझ है, तो तू अपनी तरफ़ से मेरे लिए वारिस अता

وَلِيًّا ۝٥ يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ

फरमा। जो मेरा वारिस बने और आले याकूब का वारिस बने। और उसे ऐ मेरे रब! तू

رَضِيًّا ۝٦ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ

पसन्दीदा बना। ऐ ज़करीया! यक़ीनन हम आप को एक लड़के की बशारत दे रहे हैं जिस का नाम यहया होगा,

لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝٧ قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ

जिस का इस से पेहले हम ने कोई हमनाम नहीं बनाया। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे

لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ

लिए लड़का कहाँ से होगा हालांके मेरी बीवी बांझ है और मैं बुढ़ापे की इन्तिहा को

مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝٨ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ

पहोंच चुका हूँ? अल्लाह ने फरमाया के इसी तरह होगा। तेरे रब ने कहा है के वो मुझ पर

هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ۝٩ قَالَ

आसान है और मैं ने तुझे इस से पेहले पैदा किया हालांके तू कुछ भी नहीं था। ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने कहा

رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ

ऐ मेरे रब! मेरे लिए निशानी मुक़र्रर कर दीजिए। अल्लाह ने फरमाया के तेरी निशानी ये है के तुम इन्सानों से

ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝١٠ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ

बात नहीं करोगे तंदुरूस्त होने के बावजूद तीन रात तक। फिर वो अपनी क़ौम के सामने मेहराब से निकले

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝١١ يٰيَحْيٰى خُذِ

तो ज़करीया (अलैहिस्सलाम) ने उन को भी इशारे से कहा के तुम अल्लाह की सुबह व शाम तसबीह करो। ऐ यहया! किताब

الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝١٢ وَّ حَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا

को मज़बूती से पकड़ लो। और हम ने उन्हें बचपन ही में दानाई अता कर दी थी। और हमारी तरफ़ से शफ़क़त

وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ۝١٣ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا

और पाकीज़गी अता की। और वो मुत्तक़ी थे। और अपने वालिदैन के फरमांबरदार थे और ज़बर्दस्ती करने वाले

عَصِيًّا ۝١٤ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ

नाफरमान नहीं थे। और उन पर सलामती हो जिस दिन वो पैदा हुए और जिस दिन वो मरेंगे और जिस दिन

يُبْعَثُ حَيًّا ۝١٥ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ

वो ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। और इस किताब में मरयम का तज़किरा कीजिए। जब वो अपने

مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۟ۙ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ

घर वालों से अलग हो कर मशरिक़ी किनारे में चली गई। और उन से

حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا

परदा कर लिया, फिर हम ने उन की तरफ हमारी रूह को भेजा जो उन के सामने पूरा इन्सान बन कर मुतमस्सिल

سَوِيًّا ۟ قَالَتْ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ

हुवा। मरयम (अलैहस्सलाम) ने कहा के यक़ीनन मैं तुझ से रहमान की पनाह मांगती हूँ अगर तू अल्लाह से

تَقِيًّا ۟ قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖۗ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا

डरता है। तो रूह ने कहा मैं तो सिर्फ तेरे रब का भेजा हुवा फरिशता हूँ। ताके मैं तुझे पाकीज़ा लड़का

زَكِيًّا ۟ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ

दूँ। मरयम (अलैहस्सलाम) ने कहा के मुझे लड़का कहाँ से होगा हालांके मुझे किसी इन्सान ने छूवा नहीं है

وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۟ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ

और मैं ज़िनाकार नहीं हूँ? फरिशते ने कहा के इसी तरह होगा। तेरे रब ने कहा है के ये मुझ पर आसान है।

وَلِنَجْعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا

और इस लिए होगा ताके हम उसे इन्सानों के लिए निशानी बनाएं और हमारी तरफ से रहमत बनाएं। और इस मुआमले

مَّقْضِيًّا ۟ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۟

का फ़ैसला कर दिया गया है। फिर मरयम (अलैहस्सलाम) लड़के से हामिला हो गई, फिर उस को ले कर दूर जगह में अलग चली गई।

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ

फिर उन को दर्दे ज़ेह आया खजूर के तने के पास। मरयम (अलैहस्सलाम) केहने लगी ऐ काश के

مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۟ فَنَادٰىهَا

मैं इस से पेहले मर जाती और मैं भुला कर फरामोश कर दी जाती। फिर मरयम (अलैहस्सलाम) को उन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَاۤ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۟

आवाज़ दी के तू ग़म न कर, यक़ीनन तेरे रब ने तेरे नीचे नेहेर जारी कर दी है।

وَهُزِّيْۤ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا

और तू अपनी तरफ इस खजूर के तने को हिला, खुद टूट कर तुझ पर ताज़ा खजूरें

جَنِيًّا ۟ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ

गिरेंगी। फिर तू खा और पी और आँखें ठन्डी रख। फिर अगर तू इन्सानों में

الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا

से किसी को देखे, तो यूँ केहना के मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़र मानी है,

فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۚ﴿٢٦﴾ فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۭ قَالُوْا

के मैं आज किसी इन्सान से हरगिज़ गुफतगू नहीं करूंगी। फिर वो उस लड़के को उठा कर अपनी क़ौम के पास आई। वो

يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾ يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ

केहने लगे ऐ मरयम! यक़ीनन तू ने बहोत गन्दी हरकत की है। ऐ हारून की बेहेन! तेरा बाप भी बुरा

اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۚ﴿٢٨﴾ فَاَشَارَتْ

इन्सान नहीं था और न तेरी माँ ज़िनाकार थी। तो मरयम (अलैहस्सलाम) ने उस लड़के की तरफ

اِلَيْهِ ۭ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾ قَالَ

इशारा किया। वो केहने लगे हम कैसे कलाम करें उस से जो गेहवारे में बच्चा है? तो बच्चा बोला

اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۣ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾ ۙ وَّجَعَلَنِيْ

यक़ीनन मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उस ने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है। और मुझे मुबारक

مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ

बनाया है जहाँ मैं रहूँ। और उस ने मुझे हुक्म दिया है नमाज़ का और ज़कात का जब तक

مَا دُمْتُ حَيًّا ۠ ﴿٣١﴾ وَّبَرًّا ۢبِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا

मैं ज़िन्दा रहूं। और मुझे अपनी वालिदा का फरमांबरदार बनाया है। और मुझे सरकश, बदबख्त नहीं

شَقِيًّا ﴿٣٢﴾ وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ

बनाया। और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुवा और जिस दिन मैं मरूंगा

وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾ ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ

और जिस दिन मैं ज़िन्दा कर के उठाया जाऊँगा। ये ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) हैं। ये सच्ची बात है

الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾ مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ

जिस में ये झगड़ा कर रहे हैं। अल्लाह के लिए मुनासिब नहीं के वो औलाद

مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ

बनाए, अल्लाह तो औलाद से पाक है। जब वो किसी मुआमले का फैसला करता है तो उस से केहता है के हो जा,

فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا

तो वो हो जाता है। और यक़ीनन मेरा रब और तुम्हारा रब अल्लाह है, तो तुम उसी की इबादत करो। ये

صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ

सीधा रास्ता है। फिर गिरोह आपस में अलग अलग हो गए।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٣٧﴾ اَسْمِعْ

फिर काफिरों के लिए एक भारी दिन की हाज़िरी से हलाकत है। वो कितना अच्छी तरह सुनने वाले

بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ

और कितना अच्छी तरह देखने वाले होंगे, जिस दिन वो हमारे पास आएंगे। लेकिन ज़ालिम लोग आज

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ

खुली गुमराही में हैं। और आप उन्हें डराइए हसरत वाले दिन से जब मुआमले का फ़ैसला कर दिया

الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّا نَحْنُ

जाएगा, अभी वो ग़फ़लत में हैं और ईमान नहीं लाते। यक़ीनन हम ही इस ज़मीन

نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ

के वारिस होंगे और उन के भी जो ज़मीन पर हैं और हमारी तरफ़ वो सब लौटाए जाएंगे। और आप

فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ۬ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٤١﴾

किताब में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए। यक़ीनन वो सिद्दीक़ थे, नबी थे।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ

जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने अब्बा से कहा के ऐ मेरे अब्बा! तुम क्यूं इबादत करते हो ऐसी चीज़ों की जो न सुनती

وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـًٔا ﴿٤٢﴾ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ

हैं और न देखती हैं और आप के कुछ भी काम नहीं आतीं। ऐ मेरे अब्बा! यक़ीनन मेरे पास वो इल्म

مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾

आया है जो आप के पास नहीं आया इस लिए आप मेरे पीछे चलिए, मैं आप को सीधे रास्ते की रहनुमाई करूंगा।

يٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ

ऐ मेरे अब्बा! आप शैतान की इबादत मत कीजिए। यक़ीनन शैतान रहमान का

عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يٰٓاَبَتِ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ

नाफरमान है। ऐ मेरे अब्बा! यक़ीनन मैं डरता हूँ इस से के आप को रहमान की तरफ़ से अज़ाब

الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ

पहोंचे, फिर तुम शैतान के दोस्त बन जाओ। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बाप ने कहा क्या तुम ऐराज़

عَنْ اٰلِهَتِیْ یٰۤاِبْرٰهِیْمُ ۚ لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ
करते हो मेरे माबूदों से, ऐ इब्राहीम? अगर तुम बाज़ नहीं आओगे तो मैं तुम्हें रज्म कर दूँगा और तू दूर हो जा

وَاهْجُرْنِیْ مَلِیًّا ﴿٤٦﴾ قَالَ سَلٰمٌ عَلَیْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّیْ ؕ
मुझ से मुद्दते दराज़ तक। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अस्सलामु अलैकुम! अनक़रीब मैं तुम्हारे लिए अपने रब से

اِنَّهٗ كَانَ بِیْ حَفِیًّا ﴿٤٧﴾ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ
इस्तिग़फार करूँगा। यक़ीनन वो मुझ पर महरबान है। और मैं छोड़ रहा हूँ तुम्हें और उन को जिन की तुम

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّیْ ۖ عَسٰۤى اَلَّاۤ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ
अल्लाह के अलावा इबादत करते हो और मैं अपने रब को पुकारता हूँ। उम्मीद है के मैं मेरे रब से दुआ

رَبِّیْ شَقِیًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
करने में नामुराद नहीं रहूंगा। फिर जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) अलग हो गए उन से और उन से भी जिन की वो अल्लाह

اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِیًّا ﴿٤٩﴾
के अलावा इबादत करते थे, तो हम ने उन्हें इसहाक़ और याकूब (अलैहिमस्सलाम) दिए। और तमाम को हम ने नबी बनाया।

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ
और हम ने उन्हें हमारी रहमत में से हिस्सा दिया और हम ने उन के उलूव्वे मन्ज़िलत, सच्चाई को बयान करने वाली ज़बानें

عَلِیًّا ﴿٥٠﴾ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ مُوْسٰۤى ۚ اِنَّهٗ كَانَ
(तमाम अदयान में) बना दीं। और इस किताब में मूसा (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए। यक़ीनन वो

مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ﴿٥١﴾ وَنَادَیْنٰهُ مِنْ جَانِبِ
खालिस किए हुए और रसूल थे, नबी थे। और हम ने उन्हें पुकारा कोहे तूर की दाईं

الطُّوْرِ الْاَیْمَنِ وَ قَرَّبْنٰهُ نَجِیًّا ﴿٥٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَاۤ
जानिब से और हम ने उन्हें सरगोशी के लिए क़रीब किया। और हम ने उन्हें अपनी रहमत से उन के भाई

اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِیًّا ﴿٥٣﴾ وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِسْمٰعِیْلَ ۚ
हारून को नबी बना कर अता किया। और इस किताब में इस्माईल (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए।

اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا ﴿٥٤﴾ وَكَانَ
यक़ीनन वो सच्चे वादे वाले थे और रसूल थे, नबी थे। और वो

یَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ
अपने घर वालों को नमाज़ का और ज़कात का हुक्म देते थे। और वो अपने रब के नज़दीक

مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾ وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ز اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا

पसन्दीदा थे। और इस किताब में इदरीस (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए। यक़ीनन वो सिद्दीक़ थे,

نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

नबी थे। और हम ने उन्हें बुलन्द जगह पर उठा लिया। यही लोग हैं जिन पर

اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ز

अल्लाह ने इन्आम फरमाया अम्बिया में से, आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद में से।

وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ز وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ

और उन में से जिन को हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) के साथ सवार कराया। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

وَاِسْرَآءِيْلَ ز وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ط اِذَا تُتْلٰى

और याकूब (अलैहिस्सलाम) की ज़ुर्रीयत में से। और उन में से जिन को हम ने हिदायत दी और जिन को हम ने मुन्तखब किया। जब

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِيًّا ﴿٥٨﴾ السجدة فَخَلَفَ

उन पर रहमान की आयतें तिलावत की जाती हैं तो वो सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते हैं। फिर

مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا

उन के बाद ऐसे नाख़लफ आए जिन्हों ने नमाज़ ज़ायेअ की और ख्वाहिशात के

الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ

पीछे पड़े, फिर वो अनक़रीब खराबी पाएंगे। मगर जो तौबा करे और ईमान लाए

وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ

और नेक काम करता रहे तो ये जन्नत में दाखिल होंगे और उन पर ज़रा भी

شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ط

ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। जन्नाते अद्न में दाख़िल होंगे, जिन का रहमान ने वादा किया है अपने बन्दों से बग़ैर देखे।

اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا

यक़ीनन उस का वादा पूरा हो कर रहेगा। उस में वो सिवाए सलाम के कोई लग्व बात

اِلَّا سَلٰمًا ط وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّ عَشِيًّا ﴿٦٢﴾ تِلْكَ

नहीं सुनेंगे। और उन को उस में खाना सुबह व शाम मिलेगा। ये

الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

वो जन्नत है जिन का हम वारिस बनाएंगे अपने बन्दों में से उन्हें जो मुत्तक़ी हैं।

السجدة ٥

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا

और हम नहीं उतरते मगर तेरे रब के हुक्म से। उसी की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो हमारे आगे हैं

وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾ رَبُّ

और जो हमारे पीछे हैं और जो उन के दरमियान में हैं। और तेरा रब भूलने वाला नहीं है। वो आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ

और ज़मीन का रब है और उन चीज़ों का रब है जो उन के दरमियान में हैं, तो आप उसी की इबादत कीजिए और

لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾ وَ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ

उस की इबादत पर जमे रहिए। क्या आप उस का कोई हमनाम जानते हैं? और इन्सान केहता है के

ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ

क्या जब मैं मर जाऊँगा तब मैं ज़िन्दा कर के निकाला जाऊँगा? क्या इन्सान याद नहीं रखता के

اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ﴿٦٧﴾ فَوَرَبِّكَ

हम ने उसे इस से पेहले पैदा किया हालांके वो कुछ भी नहीं था? फिर तेरे रब की क़सम! ज़रूर हम उन्हें

لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ

और शयातीन को इकट्ठा करेंगे, फिर हम उन्हें जहन्नम के इर्द गिर्द घुटने के बल बैठा हुवा होने की हालत में

جِثِيًّا ﴿٦٨﴾ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ

हाज़िर करेंगे। फिर हम निकालेंगे हर जमाअत में से उसे जो उन में से रहमान पर ज़्यादा

عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا

सख्त सरकश था। फिर हम खूब जानते हैं उन्हें जो जहन्नम में दाखिल होने के

صِلِيًّا ﴿٧٠﴾ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا

लाइक़ हैं। और तुम में से हर एक ज़रूर जहन्नम पर वारिद होने वाला है। ये तेरे रब पर लाज़िम है,

مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ نَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ

इस का फ़ैसला कर दिया गया है। फिर हम मुत्तक़ियों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में

فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ

घुटनों के बल पड़ा हुवा छोड़ देंगे। और जब उन पर हमारी आयतें तिलावत की जाती हैं साफ साफ,

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ

तो काफिर लोग ईमान वालों से केहते हैं के दोनों फ़रीक़ में से किस का

مَّقَامًا وَّاَحۡسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾ وَكَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ

मकान बेहतर है और किस की मजलिस अच्छी है? और उन से पेहले कितनी क़ौमों को हम ने हलाक किया

هُمۡ اَحۡسَنُ اَثَاثًا وَّرِءۡيًا ﴿٧٤﴾ قُلۡ مَنۡ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ

जो ज़्यादा अच्छे सामान वाली और ज़्यादा अच्छी रौनक़ वाली थीं। आप फ़रमा दीजिए जो गुमराही में हैं

فَلۡيَمۡدُدۡ لَهُ الرَّحۡمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوۡا مَا يُوۡعَدُوۡنَ

तो उन को रहमान तआला ढील दे रहे हैं। यहां तक के जब वो देखेंगे उस अज़ाब को

اِمَّا الۡعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعۡلَمُوۡنَ مَنۡ هُوَ

जिस से उन्हें डराया जा रहा है या अज़ाब या क़यामत, तो अनक़रीब उन्हें मालूम हो जाएगा के कौन

شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضۡعَفُ جُنۡدًا ﴿٧٥﴾ وَ يَزِيۡدُ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ

ज़्यादा बुरी जगह वाला है और कौन कमज़ोर जमाअत वाला है। और अल्लाह हिदायत में बढ़ाते हैं उन्हें

اهۡتَدَوۡا هُدًى ؕ وَالۡبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيۡرٌ عِنۡدَ

जो हिदायतयाफ्ता हैं। और बाक़ी रेहने वाले अच्छे आमाल बेहतर हैं तेरे रब के नज़दीक

رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيۡرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾ اَفَرَءَيۡتَ الَّذِىۡ كَفَرَ

सवाब के ऐतेबार से और ज़्यादा अच्छे हैं अन्जाम के ऐतेबार से। क्या फिर आप ने देखा वो शख्स जिस ने

بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوۡتَيَنَّ مَالًا وَّ وَلَدًا ﴿٧٧﴾ اَطَّلَعَ الۡغَيۡبَ

हमारी आयतों के साथ कुफ्र किया और उस ने कहा के ज़रूर मुझे माल और औलाद मिलेगी? क्या वो ग़ैब पर

اَمِ اتَّخَذَ عِنۡدَ الرَّحۡمٰنِ عَهۡدًا ﴿٧٨﴾ كَلَّا ؕ سَنَكۡتُبُ

मुत्तलेअ हुवा या उस ने रहमान तआला के पास कोई अहद ले रखा है? हरगिज़ नहीं! अनक़रीब हम लिख रहे हैं उसे

مَا يَقُوۡلُ وَ نَمُدُّ لَهٗ مِنَ الۡعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾ وَّ نَرِثُهٗ

जो वो केह रहा है और हम उस के लिए अज़ाब को लम्बा करेंगे। और हम उस के वारिस बनेंगे उन चीज़ों में

مَا يَقُوۡلُ وَيَاۡتِيۡنَا فَرۡدًا ﴿٨٠﴾ وَاتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً

जिन्हें वो केह रहा है और वो हमारे पास तन्हा आएगा। और उन्हों ने अल्लाह को छोड़ कर कई माबूद बना लिए हैं

لِّيَكُوۡنُوۡا لَهُمۡ عِزًّا ﴿٨١﴾ كَلَّا ؕ سَيَكۡفُرُوۡنَ بِعِبَادَتِهِمۡ

ताके वो उन के लिए कूव्वत का ज़रिया बनें। हरगिज़ नहीं! अनक़रीब वो उन की इबादत का इन्कार करेंगे

وَيَكُوۡنُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ ضِدًّا ﴿٨٢﴾ اَلَمۡ تَرَ اَنَّاۤ اَرۡسَلۡنَا

और वो उन के मुखालिफ बन जाएंगे। क्या आप ने देखा नहीं के हम ने

الشَّيٰطِيۡنَ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ تَؤُزُّهُمۡ اَزًّا ۙ﴿٨٣﴾ فَلَا تَعۡجَلۡ

शयातीन को काफिरों पर छोड़ रखा है, वो उन को खूब भड़का रहे हैं। इस लिए आप उन के बारे में

عَلَيۡهِمۡ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمۡ عَدًّا ۚ﴿٨٤﴾ يَوۡمَ نَحۡشُرُ الۡمُتَّقِيۡنَ

जल्दी न करें। हम उन के लिए गिन्ती गिन रहे हैं। जिस दिन हम मुत्तक़ियों को इकट्ठा करेंगे रहमान तआला

اِلَى الرَّحۡمٰنِ وَفۡدًا ۙ﴿٨٥﴾ وَّنَسُوۡقُ الۡمُجۡرِمِيۡنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرۡدًا ۘ﴿٨٦﴾

की तरफ़ जमाअत दर जमाअत। और हम मुजरिमों को हांकेंगे जहन्नम की तरफ प्यासा होने की हालत में।

وقف لازم

لَا يَمۡلِكُوۡنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنۡدَ الرَّحۡمٰنِ

वो शफ़ाअत के मालिक नहीं होंगे मगर वो जिस ने रहमान तआला के पास कोई अहद ले

عَهۡدًا ۘ﴿٨٧﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحۡمٰنُ وَلَدًا ؕ﴿٨٨﴾ لَقَدۡ جِئۡتُمۡ

वक़्फ़ लाज़िम

وقف لازم

रखा हो। और वो केहते हैं के रहमान तआला ने औलाद बनाई है। यक़ीनन तुम ने बड़ी भारी

شَيۡـئًا اِدًّا ۙ﴿٨٩﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرۡنَ مِنۡهُ وَ تَنۡشَقُّ

बात कही है। के क़रीब है के आसमान भी उस से फट जाएं और ज़मीन भी

الۡاَرۡضُ وَتَخِرُّ الۡجِبَالُ هَدًّا ۙ﴿٩٠﴾ اَنۡ دَعَوۡا لِلرَّحۡمٰنِ وَلَدًا ۚ﴿٩١﴾

फट पड़े और पहाड़ रेज़ा हो कर गिर पड़ें। इस वजह से के वो रहमान तआला के लिए औलाद का दावा करते हैं।

وَمَا يَنۡۢبَغِىۡ لِلرَّحۡمٰنِ اَنۡ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ؕ﴿٩٢﴾ اِنۡ كُلُّ مَنۡ

और रहमान तआला के लिए मुनासिब नहीं हैं के औलाद बनाए। यक़ीनन सारे के सारे वो जो आसमानों

فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ اِلَّاۤ اٰتِى الرَّحۡمٰنِ عَبۡدًا ؕ﴿٩٣﴾ لَقَدۡ اَحۡصٰٮهُمۡ

और ज़मीन में हैं वो रहमान तआला के पास सिर्फ बन्दे की हैसियत से हाज़िर होने वाले हैं। यक़ीनन अल्लाह ने

وَعَدَّهُمۡ عَدًّا ؕ﴿٩٤﴾ وَكُلُّهُمۡ اٰتِيۡهِ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فَرۡدًا ﴿٩٥﴾

उन का इहाता कर रखा है और उन की गिनती गिन रहा है। और सब के सब उस के पास क़यामत के दिन तन्हा आएंगे।

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجۡعَلُ لَهُمُ الرَّحۡمٰنُ

यक़ीनन वो जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे, अनक़रीब रहमान तआला उन के लिए महबूबीयत रख

وُدًّا ﴿٩٦﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرۡنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الۡمُتَّقِيۡنَ

देगा। फिर हम ने ही इस क़ुरआन को आप की ज़बान में आसान किया है, ताके आप उस के ज़रिए मुत्तक़ियों को

وَتُنۡذِرَ بِهٖ قَوۡمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾ وَكَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ ؕ

बशारत दें और उस के ज़रिए आप झगड़ालू क़ौम को डराएं। और उन से पेहले कितनी उम्मतों को हम ने हलाक किया।

هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿۹۸﴾
क्या आप उन में से किसी को महसूस करते हैं या उन की कोई आहट सुनते हैं?

اٰيَاتُهَا ۱۳۵ (۲۰) سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ (۴۵) رُكُوْعَاتُهَا ۸
उस में १३५ आयतें हैं सूरह ताहा मक्का में नाज़िल हुई और ८ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طٰهٰ ﴿۱﴾ مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ﴿۲﴾ اِلَّا تَذْكِرَةً
ता हा। हम ने ये कुरआन आप पर इस लिए नहीं उतारा ताके आप मशक़्क़त उठाएं। मगर उतारा है उस शख़्स को

لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿۳﴾ تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ
नसीहत देने के लिए जो डरे। ये उतारा गया है उस अल्लाह की तरफ से जिस ने ज़मीन और बुलन्द आसमानों

الْعُلٰى ﴿۴﴾ اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ﴿۵﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
को पैदा किया। रहमान तआला अर्श पर जलवाअफरोज़ है। उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में

وَمَا فِي الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ﴿۶﴾
हैं और जो ज़मीन में हैं और जो उन के दरमियान में हैं और जो गीली मिट्टी के नीचे हैं। और अगर आप बात को

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ﴿۷﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ
ज़ोर से कहें तो यक़ीनन चुपके से कही हुई बात को और सब से ज़्यादा छुपाई हुई बात को वो जानता है। अल्लाह के

اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ﴿۸﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿۹﴾
सिवा कोई माबूद नहीं। उस के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं। क्या आप के पास मूसा (अलैहिस्सलाम) का क़िस्सा आया?

اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا
जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने आग देखी, फिर अपने घर वालों से कहा के तुम ठेहरो! यक़ीनन मैं ने आग देखी है,

لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ﴿۱۰﴾
शायद मैं तुम्हारे पास उस में से कोई शौला ले आऊँ या आग पर रहनुमाई पा लूँ। फिर जब

فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ﴿۱۱﴾ اِنِّيْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ
मूसा (अलैहिस्सलाम) आग के पास पहोंचे तो आवाज़ दी गई ऐ मूसा! यक़ीनन मैं तुम्हारा रब हूँ, इस लिए

نَعْلَيْكَ اِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿۱۲﴾ وَاَنَا اخْتَرْتُكَ
अपने चप्पल उतार लीजिए। यक़ीनन आप पाक वादिए तुवा में हैं। और मैं ने आप को मुन्तख़ब किया,

فَاسۡتَمِعۡ لِمَا يُوۡحٰى ﴿١٣﴾ اِنَّنِىۡۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا

इस लिए आप कान लगा कर सुनिए उसे जो आप की तरफ़ वही की जा रही है। यक़ीनन मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई

فَاعۡبُدۡنِىۡ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكۡرِىۡ ﴿١٤﴾ اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ

माबूद नहीं, इस लिए आप मेरी इबादत कीजिए और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ाइम कीजिए। यक़ीनन क़यामत आने

اَكَادُ اُخۡفِيۡهَا لِتُجۡزٰى كُلُّ نَفۡسٍۢ بِمَا تَسۡعٰى ﴿١٥﴾

वाली है, मैं उसे छुपाना चाहता हूँ ताके हर शख़्स को बदला दिया जाए उन आमाल का जो उस ने किए।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنۡهَا مَنۡ لَّا يُؤۡمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰٮهُ فَتَرۡدٰى ﴿١٦﴾

इस लिए आप को हरगिज़ उस से न रोके वो शख़्स जो क़यामत पर ईमान नहीं रखता और जो अपनी ख़्वाहिश के पीछे

وَمَا تِلۡكَ بِيَمِيۡنِكَ يٰمُوۡسٰى ﴿١٧﴾ قَالَ هِىَ عَصَاىَ ۚ اَتَوَكَّؤُا

चल पड़ा है, फिर कहीं आप हलाक हो जाएं। और ऐ मूसा! आप के दाएं हाथ में क्या है? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया ये मेरी

عَلَيۡهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِىۡ وَلِىَ فِيۡهَا مَاٰرِبُ

लाठी है। उस पर मैं टेक लगाता हूँ और उस के ज़रिए मैं पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर और मेरी उस में दूसरी भी

اُخۡرٰى ﴿١٨﴾ قَالَ اَلۡقِهَا يٰمُوۡسٰى ﴿١٩﴾ فَاَلۡقٰٮهَا فَاِذَا هِىَ حَيَّةٌ

हाजतें हैं। अल्लाह ने फरमाया ऐ मूसा! उस को डाल दीजिए। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस को डाल दिया तो अचानक वो साँप

تَسۡعٰى ﴿٢٠﴾ قَالَ خُذۡهَا وَلَا تَخَفۡ ٚ وقفة سَنُعِيۡدُهَا سِيۡرَتَهَا

बन गया दौड़ता हुवा। अल्लाह ने फरमाया के उस को पकड़ लीजिए और न डरिए। अनक़रीब हम उसे उस की पेहली

الۡاُوۡلٰى ﴿٢١﴾ وَاضۡمُمۡ يَدَكَ اِلٰى جَنَاحِكَ تَخۡرُجۡ بَيۡضَآءَ

हालत पर लौटा देंगे। और अपना हाथ अपनी बग़ल में दबा दीजिए, वो बग़ैर किसी बुराई के सफ़ेद हो कर

مِنۡ غَيۡرِ سُوۡٓءٍ اٰيَةً اُخۡرٰى ۙ ﴿٢٢﴾ لِنُرِيَكَ مِنۡ اٰيٰتِنَا الۡكُبۡرٰى ۚ ﴿٢٣﴾

निकलेगा। ये दूसरे मोअजिज़े के तौर पर (दे रहे हैं)। ताके हम आप को दिखाएं हमारी बड़ी निशानियों में से।

اِذۡهَبۡ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۠ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ اشۡرَحۡ

आप जाइए फिरऔन के पास, यक़ीनन उस ने सरकशी की है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब!

لِىۡ صَدۡرِىۡ ۙ ﴿٢٥﴾ وَيَسِّرۡلِىۡۤ اَمۡرِىۡ ۙ ﴿٢٦﴾ وَاحۡلُلۡ عُقۡدَةً مِّنۡ لِّسَانِىۡ ۙ ﴿٢٧﴾

मेरे लिए मेरा सीना खोल दीजिए। और मेरे लिए मेरे मुआमले में आसानी कर दीजिए। और मेरी ज़बान की गिरह खोल दीजिए।

يَفۡقَهُوۡا قَوۡلِىۡ ۖ ﴿٢٨﴾ وَاجۡعَلۡ لِّىۡ وَزِيۡرًا مِّنۡ اَهۡلِىۡ ۙ ﴿٢٩﴾

ताके वो मेरी बात को समझ सकें। और मेरे लिए मेरे घर वालों में से मददगार मुक़र्रर कर दीजिए।

ع ١٢

هٰرُوْنَ اَخِیۙ۝۳۰ اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِیۙ۝۳۱ وَاَشْرِكْهُ

(यानी) मेरे भाई हारून को (मददगार मुक़र्रर कर दीजिए)। उस के ज़रिए मेरी कूव्वत को और बढ़ा दीजिए। और उस को

فِیْۤ اَمْرِیۙ۝۳۲ كَیْ نُسَبِّحَكَ كَثِیْرًاۙ۝۳۳ وَّنَذْكُرَكَ كَثِیْرًاؕ۝۳۴ اِنَّكَ

मेरे मुआमले में शरीक बना दीजिए। ताके हम आप की तस्बीह करें बहोत ज़्यादा। और बहोत ज़्यादा आप को याद करें।

كُنْتَ بِنَا بَصِیْرًا۝۳۵ قَالَ قَدْ اُوْتِیْتَ سُؤْلَكَ یٰمُوْسٰی۝۳۶

यक़ीनन आप हमें देख रहे हैं। अल्लाह ने फरमाया ऐ मूसा! आप को आप का सवाल यक़ीनन दे दिया गया।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَیْكَ مَرَّةً اُخْرٰۤیۙ۝۳۷ اِذْ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤی اُمِّكَ

यक़ीनन हम ने आप पर एक दूसरी मरतबा भी एहसान किया है। जब हम ने आप की माँ की तरफ वही की,

مَا یُوْحٰۤیۙ۝۳۸ اَنِ اقْذِفِیْهِ فِی التَّابُوْتِ فَاقْذِفِیْهِ

जो अब वही की जा रही है। के तुम मूसा को डाल दो सन्दूक़ में, फिर उस को समन्दर में

فِی الْیَمِّ فَلْیُلْقِهِ الْیَمُّ بِالسَّاحِلِ یَاْخُذْهُ عَدُوٌّ

फेंक दो, फिर समन्दर उस को किनारे पर फैंक देगा, उस को मेरा और उस का दुशमन ले

لِّیْ وَ عَدُوٌّ لَّهٗؕ وَاَلْقَیْتُ عَلَیْكَ مَحَبَّةً مِّنِّیْ۬ۚ وَلِتُصْنَعَ

लेगा। और मैं ने आप पर अपनी तरफ से महब्बत डाल दी। और इस लिए ताके आप की परवरिश मेरी हिफाज़त

عَلٰی عَیْنِیْۘ۝۳۹ اِذْ تَمْشِیْۤ اُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰی مَنْ

में हो। जब आप की बेहेन चल रही थी, और वो केह रही थी, क्या मैं तुम्हें पता बतलाऊँ ऐसे घर वालों का जो

وقف لازم

یَّكْفُلُهٗؕ فَرَجَعْنٰكَ اِلٰۤی اُمِّكَ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا

उस की परवरिश करें? फिर हम ने आप को लौटाया आप की माँ की तरफ ताके उन की आँखें ठन्डी हों

وَلَا تَحْزَنَ۬ؕ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّیْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ

और वो ग़मगीन न हों। और आप ने एक शख्स को क़त्ल किया, फिर हम ने आप को नजात दी ग़म से और हम ने

فُتُوْنًا۬ۚ فَلَبِثْتَ سِنِیْنَ فِیْۤ اَهْلِ مَدْیَنَ۬ۙ ثُمَّ جِئْتَ

आप को कई इम्तिहानों से गुज़ारा। फिर आप मदयन वालों में कई साल रहे। फिर ऐ मूसा!

عَلٰی قَدَرٍ یّٰمُوْسٰی۝۴۰ وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِیْۚ۝۴۱ اِذْهَبْ

मुक़र्ररा वक़्त पर आप आ गए। और मैं ने आप को खास अपने लिए मुन्तखब किया। आप और आप का

اَنْتَ وَاَخُوْكَ بِاٰیٰتِیْ وَلَا تَنِیَا فِیْ ذِكْرِیْۚ۝۴۲ اِذْهَبَاۤ

भाई मेरे मोअजिज़ात को ले कर जाइए, और मेरी याद में कोताही न कीजिए। तुम दोनों जाओ

اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝۴۳ فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ

फ़िरऔन के पास इस लिए के उस ने सरकशी की है। फिर उस से नरम बात कहो, शायद वो

يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ۝۴۴ قَالَا رَبَّنَآ اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ يَّفْرُطَ

नसीहत हासिल करे या डरे। वो दोनों केहने लगे ऐ हमारे रब! यक़ीनन हम डरते है इस से के वो हम पर

عَلَيْنَآ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ۝۴۵ قَالَ لَا تَخَافَآ اِنَّنِىْ مَعَكُمَآ

ज़्यादती करे या ज़ुल्म करे। अल्लाह ने फ़रमाया के मत डरो, इस लिए के मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुन भी रहा

اَسْمَعُ وَاَرٰى ۝۴۶ فَاْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ

हूँ और देख भी रहा हूँ। फिर तुम उस के पास जाओ, फिर उस से कहो के यक़ीनन हम तेरे रब के भेजे हुए पैग़म्बर हैं,

مَعَنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ۬ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ

इस लिए तू बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे और तू उन्हें अज़ाब न दे। यक़ीनन हम तेरे पास तेरे रब की

مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ۝۴۷ اِنَّا قَدْ

तरफ़ से मोअजिज़ा ले कर आए हैं। और सलामती है उस पर जो हिदायत के पीछे चले। यक़ीनन हमारी तरफ

اُوْحِىَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَ تَوَلّٰى ۝۴۸ قَالَ

वही की गई है के अज़ाब (नाज़िल होगा) उस पर जो झुठलाए और ऐराज़ करे। फिरऔन ने पूछा

فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۝۴۹ قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ

के तुम्हारा कौन रब है ऐ मूसा? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया हमारा रब वो है जिस ने हर चीज़ को उस का

خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ۝۵۰ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ۝۵۱

वुजूद अता किया, फिर उस ने रहनुमाई की। फिरऔन ने कहा फिर पेहली क़ौमों का क्या हाल हुवा?

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ فِىْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّىْ وَلَا يَنْسَى ۝۵۲

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया उस का इल्म मेरे रब के पास है किताब में। मेरा रब न भटकता है और न भूलता है।

الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا

वो अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को गेहवारा बनाया और जिस ने ज़मीन में तुम्हारे लिए रास्ते

سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا

बनाए और जिस ने आसमानों से पानी उतारा। फिर हम ने उस के ज़रिए मुख़तलिफ़

مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ۝۵۳ كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ

नबातात के जोड़ों को निकाला। के तुम खाओ और अपने चौपाओं को चराओ। यक़ीनन इस में

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿٥٤﴾ مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا

अक़्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं। मिट्टी ही से हम ने तुम्हें पैदा किया है और उसी में

نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿٥٥﴾

हम तुम्हें दोबारा लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दूसरी मरतबा निकालेंगे। यक़ीनन हम ने

وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ﴿٥٦﴾ قَالَ

फ़िरऔन को अपने सारे मोअजिज़ात दिखलाए, फिर भी उस ने झुठलाया और इन्कार किया। फ़िरऔन ने कहा

اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٥٧﴾

क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो ताके हमें हमारे मुल्क से निकाल दो अपने जादू के ज़ोर से ऐ मूसा?

فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

फिर हम ज़रूर आप के पास उसी जैसा जादू लाएंगे, फिर हमारे और आप के दरमियान एक मुक़र्ररा वक़्त

مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

तै कीजिए के न हम उस से पीछे रहें और न तुम, (ये मुक़ाबला) एक हमवार मैदान में (होना चाहिए)।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम्हारा मुक़र्ररा वक़्त ईद का दिन है और ये के चाश्त के वक़्त तमाम लोग जमा

ضُحًى ﴿٥٩﴾ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ﴿٦٠﴾

हो जाएं। फिर फिरऔन वापस लौटा, फिर उस ने अपने मक्र व फरेब को जमा किया, फिर वो आया।

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन से कहा के तुम्हारा नास हो! अल्लाह पर झूठ मत घड़ो वरना वो तुम्हें

فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾

अज़ाब के ज़रिए हलाक कर देगा। और यक़ीनन नाकाम होता है वो शख़्स जो झूठ घड़ता है।

فَتَنَازَعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾

फिर उन्हों ने अपने मुआमले में आपस में इख़्तिलाफ किया और चुपके से सरगोशी की।

قَالُوْۤا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ

उन्हों ने कहा के बेशक ये दोनों जादूगर हैं, ये चाहते हैं के तुम्हें अपने मुल्क से

مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ

अपने जादू के ज़ोर से निकाल दें और तुम्हारे अच्छे तरीक़े को ख़त्म

الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾ فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ

कर दें। इस लिए अपनी तदबीर इकट्ठी करो, फिर तुम सफ़ बना कर आओ। और यक़ीनन

اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰى اِمَّآ

कामयाब होगा वही शख़्स जो आज ग़ालिब रहेगा। उन्हों ने कहा ऐ मूसा! या

اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾ قَالَ

तुम डालो या हम पेहले डालें। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया बल्के तुम

بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَ عِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ

डालो! फिर अचानक उन की रस्सियाँ और उन की लाठियाँ उन के सामने उन के जादू के ज़ोर से मुतखय्यल

مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾ فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ

होने लगीं के वो दौड़ रही हैं। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने जी में

خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾ قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾

खौफ़ महसूस किया। हम ने कहा आप न डरिए, यक़ीनन तुम ही बुलन्द रहोगे।

وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۭ اِنَّمَا

और आप डाल दें उसे जो आप के दाएं हाथ में है, वो निगल लेगा उन चीज़ों को जो वो बना कर लाए हैं। वो

صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۭ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾

जो बना कर लाए हैं वो सिर्फ जादूगर का मक्र है। और जादूगर कामयाब नहीं होता जहाँ वो जाए।

فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ

फिर जादूगर सजदे में गिर गए, वो केहने लगे के हम मूसा और हारून के रब पर ईमान

وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ اِنَّهٗ

ले आए। फ़िरऔन ने कहा क्या तुम उस पर ईमान ले आए इस से पेहले के मैं तुम्हें इजाज़त दूँ? यक़ीनन ये

لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ

मूसा तुम में से बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखलाया है। तो मैं तुम्हारे हाथ और

وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ

पैर जानिबे मुखालिफ से काट दूँगा, फिर मैं तुम्हें खजूर के तनों में सूली पर चढ़ाऊँगा। और तुम्हें

النَّخْلِ ۫ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾ قَالُوْا

मालूम हो जाएगा के कौन ज़्यादा सख्त अज़ाब वाला है और कौन ज़्यादा बाक़ी रेहने वाला है। उन्हों ने

لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَ الَّذِىْ

कहा के हम तुझे हरगिज़ तरजीह़ नहीं देंगे उन रोशन मोअजिज़ात पर जो हमारे पास आए और उस अल्लाह पर

فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِىْ هٰذِهِ

जिस ने हमें पैदा किया, इस लिए तू कर ले जो तुझे करना हो। तू तो सिर्फ इस दुन्यवी ज़िन्दगी को

الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۞ اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا

ख़त्म कर सकता है। हम तो ईमान ले आए हैं हमारे रब पर ताके वो हमारी ख़ताएं मुआफ कर दे

وَمَآ اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ

और उस को मुआफ़ कर दे जिस जादू पर तू ने हमें मजबूर किया। और अल्लाह बेहतर है

وَّاَبْقٰى ۞ اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ

और बाक़ी रेहने वाला है। यक़ीनन जो भी अपने रब के पास मुजरिम बन कर आएगा तो यक़ीनन उस के लिए

جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۞ وَمَنْ يَّاْتِهٖ

जहन्नम है, जिस में न वो मरेगा और न जिएगा। और जो उस के पास मोमिन बन कर

مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ

आएगा, जिस ने आमाले सालिहा भी किए होंगे तो उन के लिए बुलन्द दरजात

الْعُلٰى ۞ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

होंगे। जन्नाते अद्न होंगी, जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी,

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۞

जिन में वो हमेशा रहेंगे। और ये उस शख्स का बदला है जो पाक साफ रहा।

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِىْ

यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की के मेरे बन्दों को ले कर रात के वक़्त निकल जाइए,

فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِى الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ

फिर उन के लिए समन्दर में खुश्क रास्ता बनाने के लिए (असा) मारिए, पकड़े जाने

دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۞ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ

का न आप को खौफ़ होगा, न डर। फिर फ़िरऔन अपना लशकर ले कर उन के पीछे चला,

فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۞ وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ

फिर उन को डुबो दिया समन्दर ने जैसा के डुबोया। और फिरऔन ने अपनी क़ौम को

قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾ يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ

गुमराह किया और उस ने रास्ता नहीं दिखाया। ऐ बनी इस्राईल! यक़ीनन हम ने तुम्हें नजात दी

مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ

तुम्हारे दुशमन से और हम ने तुम से वादा किया कोहे तूर की दाईं जानिब का,

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾ كُلُوْا

और हम ने तुम पर मन्न व सल्वा उतारा। खाओ उन पाकीज़ा

مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ

चीज़ों में से जो हम ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दी हैं और उन में सरकशी मत करो, वरना तुम

عَلَيْكُمْ غَضَبِىْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِىْ فَقَدْ

पर मेरा ग़ज़ब उतरेगा। और जिस पर मेरा गुस्सा उतरेगा तो यक़ीनन वो (जहन्नम में)

هَوٰى ﴿٨١﴾ وَاِنِّىْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ

गिर गया। और यक़ीनन मैं बख्शने वाला हूँ उस शख्स को जिस ने तौबा की, और जो ईमान लाया और जिस ने

صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾ وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ

आमाले सालिहा किए, फिर उस ने हिदायत पाई। और आप को अपनी क़ौम से क्या चीज़ जल्दी लाई,

يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِىْ وَعَجِلْتُ

ऐ मूसा? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया के ये लोग मेरे पीछे हैं और मैं आप के पास जल्दी

اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ

आया, ऐ मेरे रब! ताके आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह ने फरमाया के यक़ीनन हम ने आप की क़ौम को आप के

مِنْۢ بَعْدِكَ وَ اَضَلَّهُمُ السَّامِرِىُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ

बाद बला में मुब्तला किया है और उन को सामिरी ने गुमराह कर दिया है। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी

مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ

क़ौम की तरफ वापस लौटे गुस्सा होते हुए, अफ़सोस करते हुए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ

اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۚ اَفَطَالَ

मेरी क़ौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या फिर

عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ

तुम पर लम्बा ज़माना गुज़र गया या तुम ने इरादा किया के तुम पर अपने रब की

غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِیْ ﴿٨٦﴾ قَالُوْا
तरफ से ग़ज़ब उतरे, फिर तुम ने मेरे वादे के ख़िलाफ़ किया? वो बोले

مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا
हम ने अपने इखतियार से आप के वादे के ख़िलाफ़ नहीं किया, लेकिन हम पर बोझ डाल दिया गया था

مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى
क़ौम के ज़ेवरात का, फिर हम ने वो ज़ेवरात डाल दिए, और इसी तरह सामिरी ने भी

السَّامِرِیُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ
डाले। फिर सामिरी ने उन के लिए एक गाए के बछड़े का जिस्म बना कर निकाला जिस के लिए गाए की आवाज़ थी,

فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ە فَنَسِیَ ﴿٨٨﴾
तो वो बोले के ये तुम्हारा माबूद है और मूसा का माबूद है, फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) भूल गए हैं।

اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ە وَّلَا يَمْلِكُ
क्या फिर वो समझते नहीं के वो उन की बात का जवाब भी नहीं दे सकता और न उन के

لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ
लिए नफ़ा और ज़रर का मालिक है? और उन से हारून (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया उस से पेहले ऐ

مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ج وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ
मेरी क़ौम! तुम तो सिर्फ़ इस के ज़रिए बला में डाले गए हो। यक़ीनन तुम्हारा रब रहमान तआला है, तो तुम

فَاتَّبِعُوْنِیْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِیْ ﴿٩٠﴾ قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ
मेरे पीछे चलो और मेरे हुक्म की इताअत करो। उन्हों ने कहा के हम हरगिज़ हटेंगे नहीं, इसी पर जमे

عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾ قَالَ يٰهٰرُوْنُ
रहेंगे, यहां तक के हमारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम) वापस आएं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ हारून! तुझे

مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾ اَلَّا تَتَّبِعَنِ ط اَفَعَصَيْتَ
क्या मानेअ था जब तू ने उन को देखा के वो गुमराह हो गए हैं, इस से के तू मेरे पीछे आ जाता, क्या तू ने मेरे

اَمْرِیْ ﴿٩٣﴾ قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِیْ وَلَا بِرَاْسِیْ ج
हुक्म के ख़िलाफ किया? हारून (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया के ऐ मेरी माँ के बेटे! मेरी दाढ़ी और मेरे सर के बालों को

اِنِّیْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِیْٓ اِسْرَآءِيْلَ
मत पकड़िए। यक़ीनन मैं डरा इस से के आप ये कहो के तू ने बनी इस्राईल के दरमियान जुदाई डाली

وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

और तू ने मेरी बात का लिहाज़ नहीं किया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने पूछा फिर तेरा क्या हाल है, ऐ सामिरी?

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً

सामिरी ने कहा के मैं ने देखा वो जिस को उन्हों ने नहीं देखा, तो मैं ने एक मुट्ठी भर ली थी अल्लाह के भेजे हुए

مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَ كَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ

फ़रिशते के निशाने क़दम की, फिर मैं ने उस को डाल दिया और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे ये बात

نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾ قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ

समझाई। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के फिर तू जा! यक़ीनन तेरे लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में ये सज़ा है के

اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ وَ اِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ

तू केहता फिरे के ‘‘لَا مِسَاسَ’’ (मुझे मत छूना!) और यक़ीनन तेरे लिए वादे का वक़्त मुक़र्रर है, जिस के तू

وَانْظُرْ اِلٰۤى اِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ؕ

आगे पीछे नहीं हो सकेगा। और देख अपने उस माबूद की तरफ जिस पर तू जमा बैठा था।

لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾ اِنَّمَاۤ اِلٰهُكُمُ

के हम उसे जला देते हैं, फिर उसे रेज़ा रेज़ा कर के समन्दर में फैंक देते हैं। तुम्हारा माबूद तो वही

اللّٰهُ الَّذِيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। जो हर चीज़ पर इल्म के ऐतेबार से वसीअ है।

كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ

इसी तरह हम आप के सामने बयान करते हैं उन चीज़ों की ख़बरों में से जो गुज़र चुकी हैं। और यक़ीनन

اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ۖ ﴿٩٩﴾ مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ

हम ने आप को अपने पास से एक नसीहतनामा दिया है। जो भी उस से ऐराज़ करेगा तो यक़ीनन

يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وِزْرًا ۙ ﴿١٠٠﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ؕ وَسَآءَ لَهُمْ

वो क़यामत के दिन बोझ उठाएगा। जिस में वो हमेशा रहेंगे। और उन के लिए क़यामत के दिन

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حِمْلًا ۙ ﴿١٠١﴾ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ

वो बहोत बुरा बोझ होगा। जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और हम मुजरिमों को

الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۖ ﴿١٠٢﴾ يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ

उस दिन नीली आँखों वाले होने की हालत में इकट्ठा करेंगे। वो आपस में सरगोशी करेंगे के तुम

لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ

नहीं ठेहरे मगर दस (दिन)। हम खूब जानते हैं उसे जो वो केह रहे हैं

اِذْ يَقُوْلُ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

जब के उन में से ज़्यादा बेहतर राए वाला कहेगा के तुम नहीं ठेहरे मगर एक दिन।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾

और ये आप से पूछते हैं पहाड़ों के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के मेरा रब उन को रेज़ा रेज़ा कर देगा।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا

फिर उन को चटयल मैदान कर छोड़ेगा। जिस में तुम न कजी देखोगे और

وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ

न कोई टीला। उस दिन वो एक पुकारने वाले के पीछे चलते होंगे जिस के सामने कोई कजी नहीं होगी।

وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

और आवाज़ें रहमान तआला के सामने पस्त होंगी, फिर तुम नहीं सुन सकोगे सिवाए हल्की आवाज़ के।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ

उस दिन सिफ़ारिश नफ़ा नहीं देगी मगर उस को जिस को रहमान तआला इजाज़त दे

وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ

और जिस का बोलना पसन्द करे। वो जानता है उन चीज़ों को जो उन के आगे हैं और जो उन के

وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ

पीछे हैं और वो उस का इल्म के ऐतेबार से इहाता नहीं कर सकते। और तमाम चेहरे ज़िन्दा रेहने वाले,

لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ؕ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

थामने वाले के सामने आजिज़ होंगे। और यक़ीनन नाकाम हुवा वो जो ज़ुल्म उठा कर लाया।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ

और जो आमाले सालिहा करेगा बशर्तेके वो मोमिन हो तो उसे न ज़ुल्म का

ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

अन्देशा होगा, न हक़्तलफी का। और इसी तरह हम ने इसे अरबी वाला क़ुरआन बना कर उतारा है

وَّ صَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ

और उस में हम ने वईद बार बार बयान की है ताके वो मुत्तक़ी बनें

اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

या ये कुरआन उन में सोच पैदा करे। फिर अल्लाह बरतर है, जो बरहक़ बादशाह है।

وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰى اِلَيْكَ

और आप कुरआन में जल्दी न कीजिए आप की तरफ़ उस की वही ख़त्म होने से पेहले।

وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ

और यूं कहिए "رَبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا" (ऐ मेरे रब! मुझे ज़्यादा इल्म दे!) और यक़ीनन हम ने इस से पेहले

اِلٰۤى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِىَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾

आदम (अलैहिस्सलाम) से अहद लिया था, फिर वो भूल गए और हम ने उन में अज़्म नहीं पाया।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा के तुम आदम को सज्दा करो तो उन तमाम ने सज्दा किया मगर

اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾ فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ

इबलीस ने। उस ने इन्कार किया। फिर हम ने कहा के ऐ आदम! यक़ीनन ये तुम्हारा और तुम्हारी

وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾

बीवी का दुशमन है, तो वो कहीं तुम दोनों को जन्नत से न निकाल दे, वरना तुम मशक़्क़त उठाओगे।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾ وَاَنَّكَ

यक़ीनन तुम्हारे लिए ये (नेअमत) है के जन्नत में न तुम्हें भूक लगती है और न तुम नंगे होते हो। और ये के

لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ

न तुम्हें जन्नत में प्यास लगती है और न धूप लगती है। फिर उन की तरफ़ शैतान ने

الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ

वसवसा डाला, इबलीस ने कहा के ऐ आदम! क्या मैं तुम्हें हमेशा रेहने का दरख़्त बतलाऊँ और

الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾ فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ

ऐसी सल्तनत जिसे कभी ज़वाल न आए? फिर उन दोनों ने उस दरख़्त से खा लिया, फिर उन के

لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا

सामने उन के पोशीदा सतर खुल गए और वो दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते

مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ۫ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾ ثُمَّ

चिपकाने लगे। और आदम (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब के हुक्म के खिलाफ़ किया, और ग़लती कर ली। फिर

ع ١٥

اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿۱۲۲﴾ قَالَ اهْبِطَا

उन के रब ने उन्हें मुन्तख़ब किया, फिर उन की तौबा क़बूल की और हिदायत दी। अल्लाह ने फ़रमाया के तुम सब के

مِنْهَا جَمِيْعًاۢ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ

सब यहां से नीचे उतर जाओ, तुम में से एक दूसरे के दुशमन बन कर रहोगे। फिर अगर तुम्हारे पास

مِّنِّىْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَاىَ فَلَا يَضِلُّ

मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो जो मेरी हिदायत के पीछे चलेगा तो वो न गुमराह होगा

وَلَا يَشْقٰى ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً

और न बदबख़्त। और जो मेरी नसीहत (कुरआन) से ऐराज़ करेगा तो यक़ीनन उस के लिए तंग

ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿۱۲۴﴾ قَالَ رَبِّ

ज़िन्दगी होगी और हम उसे क़यामत के दिन अन्धा उठाएंगे। वो कहेगा के ऐ मेरे रब!

لِمَ حَشَرْتَنِىْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿۱۲۵﴾ قَالَ كَذٰلِكَ

तू ने मुझे अन्धा क्यूं उठाया हालांके मैं बसारत वाला था। अल्लाह फ़रमाएंगे के इसी तरह तेरे पास हमारी

اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿۱۲۶﴾

आयतें आई थीं, तो तू ने उन को भुला दिया था। और इसी तरह आज तुझे भुला दिया जाएगा।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ

और इसी तरह हम सज़ा देंगे उस शख्स को जिस ने ज़्यादती की और जो अपने रब की आयतों पर ईमान नहीं लाया।

وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿۱۲۷﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

और अल्बत्ता आख़िरत का अज़ाब वो ज़्यादा सख्त है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाला है। क्या फिर उन के लिए हिदायत

كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ

का बाइस नहीं हुई ये बात के हम ने उन से पेहले कितनी क़ौमों को हलाक किया जिन के घरों में

فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿۱۲۸﴾

ع ۷ / ۱۳

ये चलते हैं? यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं अक़्ल वालों के लिए। और अगर एक

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا

बात जो तेरे रब की तरफ़ से पेहले से हो चुकी है, वो और मुक़र्रर किया हुवा वक़्त न होता तो अज़ाब

وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿۱۲۹﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

लाज़िम हो जाता। इस लिए आप सब्र कीजिए उन बातों पर जो वो केहते हैं और अपने रब की हम्द के साथ

بِحَمۡدِ رَبِّكَ قَبۡلَ طُلُوۡعِ الشَّمۡسِ وَ قَبۡلَ غُرُوۡبِهَا ۚ
तस्बीह कीजिए सूरज के तुलूअ होने से पेहले और सूरज के गुरूब होने से पेहले।

وَمِنۡ اٰنَآئِ الَّيۡلِ فَسَبِّحۡ وَاَطۡرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ
और रात के औक़ात में भी आप तस्बीह कीजिए और दिन के किनारों में भी ताके आप

تَرۡضٰى ﴿١٣٠﴾ وَلَا تَمُدَّنَّ عَيۡنَيۡكَ اِلٰى مَا مَتَّعۡنَا بِهٖۤ
राज़ी हो जाएं। अपनी निगाह भी आप न उठाएं उन चीज़ों की तरफ जिन के ज़रिए उन की जमाअतों

اَزۡوَاجًا مِّنۡهُمۡ زَهۡرَةَ الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۙ لِنَفۡتِنَهُمۡ
को हम ने मुतमत्तेअ कर रखा है दुन्यवी ज़िन्दगी की रौनक़ से, ताके हम उन्हें आज़माएं

فِيۡهِ ؕ وَرِزۡقُ رَبِّكَ خَيۡرٌ وَّاَبۡقٰى ﴿١٣١﴾ وَاۡمُرۡ اَهۡلَكَ
उस में। और तेरे रब की रोज़ी बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाली है। और अपने घर वालों को हुक्म

بِالصَّلٰوةِ وَاصۡطَبِرۡ عَلَيۡهَا ؕ لَا نَسۡـَٔـلُكَ رِزۡقًا ؕ نَحۡنُ
दीजिए नमाज़ का और उस पर आप भी पाबन्दी कीजिए। हम आप से रोज़ी नहीं मांगते। हम

نَرۡزُقُكَ ؕ وَالۡعَاقِبَةُ لِلتَّقۡوٰى ﴿١٣٢﴾ وَقَالُوۡا
आप को रोज़ी देते हैं। और अच्छा अन्जाम तक़्वा का है। और उन्हों ने कहा के

لَوۡلَا يَاۡتِيۡنَا بِاٰيَةٍ مِّنۡ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمۡ تَاۡتِهِمۡ بَيِّنَةُ
उस के रब की तरफ से हमारे पास कोई मोअजिज़ा क्यूं नहीं आता? क्या उन के पास नहीं आए उन में

مَا فِى الصُّحُفِ الۡاُوۡلٰى ﴿١٣٣﴾ وَلَوۡ اَنَّاۤ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ بِعَذَابٍ
से रोशन मोअजिज़ात जो पेहले सहीफ़ों में हैं? और अगर हम उन्हें इस से पेहले अज़ाब से

مِّنۡ قَبۡلِهٖ لَقَالُوۡا رَبَّنَا لَوۡلَاۤ اَرۡسَلۡتَ اِلَيۡنَا رَسُوۡلًا
हलाक कर दें तो वो केहते के ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ कोई रसूल क्यूं नहीं भेजा

فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ نَّذِلَّ وَنَخۡزٰى ﴿١٣٤﴾
के हम तेरी आयतों का इत्तिबा करते इस से पेहले के हम ज़लील और रूस्वा हों।

قُلۡ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوۡا ۚ فَسَتَعۡلَمُوۡنَ مَنۡ
आप फ़रमा दीजिए के सब मुन्तज़िर हैं, तो तुम भी मुन्तज़िर रहो। फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा

اَصۡحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِىِّ وَمَنِ اهۡتَدٰى ﴿١٣٥﴾
के कौन सीधी राह वाले हैं और कौन हिदायतयाफता हैं।

ركوع ٨

ايَاتُهَا ١١٢ (٢١) سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ (٧٣) رُكُوْعَاتُهَا ٧

उस में ११२ आयतें हैं सूरह अम्बिया मक्का में नाज़िल हुई और ७ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۝١

इन्सानों के लिए उन के हिसाब का वक़्त क़रीब आ गया, और वो ग़फलत में पड़े ऐराज़ कर रहे हैं।

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ

उन के पास उन के रब की तरफ़ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वो उधर कान लगाते हैं

وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٢ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ

इस हाल में के वो खेल रहे होते हैं। उन के दिल ग़ाफिल होते हैं। और वो ज़ालिम चुपके चुपके

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ

सरगोशी करते हैं के ये नबी नहीं है मगर तुम जैसा एक इन्सान है। क्या फिर तुम जादू के पास

السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٣ قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ

जाते हो इस हाल में के तुम आँखों से देख रहे हो? नबी ने कहा के मेरा रब जानता है हर बात

فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۡ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٤

जो आसमान में और ज़मीन में है। और वो सुनने वाला है, जानने वाला है।

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۢ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ

बल्के उन्हों ने कहा के ये तो परेशान ख़यालात हैं, बल्के ये कुरआन इस नबी ने घड़ लिया है, बल्के वो तो

شَاعِرٌ ۖ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٥

शाइर है। इस लिए उसे चाहिए के हमारे पास मोअजिज़ा ले आए जैसा पेहले पैग़म्बर मोअजिज़ा दे कर भेजे गए थे।

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

उन से पेहले कोई बस्ती ईमान नहीं लाई जिसे हम ने हलाक किया है। क्या फिर ये ईमान लाएंगे?

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ

और हम ने आप से पेहले रसूल नहीं भेजे मगर मर्दों को जिन की तरफ हम वही करते थे,

فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧

इस लिए तुम एहले किताब से पूछो अगर तुम जानते नहीं हो।

وَمَا جَعَلۡنٰهُمۡ جَسَدًا لَّا يَاۡكُلُوۡنَ الطَّعَامَ
और हम ने उन अमबिया को ऐसा जिस्म नहीं बनाया के वो खाना न खाते हों

وَمَا كَانُوۡا خٰلِدِيۡنَ ۝٨ ثُمَّ صَدَقۡنٰهُمُ الۡوَعۡدَ فَاَنۡجَيۡنٰهُمۡ
और न वो हमेशा रेहने वाले थे। फिर हम ने उन से वादा सच कर दिखाया, फिर हम ने उन को

وَمَنۡ نَّشَآءُ وَاَهۡلَكۡنَا الۡمُسۡرِفِيۡنَ ۝٩ لَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ
और जिन को हम ने चाहा नजात दी और ज़्यादती करने वालों को हम ने हलाक किया। यक़ीनन हम ने तुम्हारी

اِلَيۡكُمۡ كِتٰبًا فِيۡهِ ذِكۡرُكُمۡ‌ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ۝١٠ وَكَمۡ
तरफ किताब उतारी है, जिस में तुम्हारी नसीहत है। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? और कितनी

قَصَمۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍ كَانَتۡ ظَالِمَةً وَّاَنۡشَاۡنَا
बस्तियाँ हम ने तबाह कीं जो ज़ालिम थीं और हम ने उन के बाद

بَعۡدَهَا قَوۡمًا اٰخَرِيۡنَ ۝١١ فَلَمَّاۤ اَحَسُّوۡا بَاۡسَنَاۤ
दूसरी क़ौमों को पैदा किया। फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब महसूस किया

اِذَا هُمۡ مِّنۡهَا يَرۡكُضُوۡنَ ۝١٢ؕ لَا تَرۡكُضُوۡا وَارۡجِعُوۡۤا اِلٰى
तो फ़ौरन वहाँ से वो भागने लगे। (तो हम ने कहा के) भागो मत, बल्के वापस जाओ उधर जिस में

مَاۤ اُتۡرِفۡتُمۡ فِيۡهِ وَمَسٰكِنِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُسۡـَٔلُوۡنَ ۝١٣ قَالُوۡا
तुम ऐश कर रहे थे और अपने मकानात में, शायद तुम्हारी पूछ हो। वो केहने लगे

يٰوَيۡلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيۡنَ ۝١٤ فَمَا زَالَتۡ تِّلۡكَ
हाए हमारी कमबख्ती! यक़ीनन हम ही कुसूरवार थे। फिर यही उन की

دَعۡوٰٮهُمۡ حَتّٰى جَعَلۡنٰهُمۡ حَصِيۡدًا خٰمِدِيۡنَ ۝١٥
पुकार रही यहां तक के हम ने उन को कटा हुवा, बुझा हुवा बना दिया। और हम ने

وَمَا خَلَقۡنَا السَّمَآءَ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا لٰعِبِيۡنَ ۝١٦
आसमान और ज़मीन और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं खेल करते हुए पैदा नहीं किया।

لَوۡ اَرَدۡنَاۤ اَنۡ نَّتَّخِذَ لَهۡوًا لَّاتَّخَذۡنٰهُ مِنۡ لَّدُنَّاۤ ۖ
अगर हम चाहते के दिल बेहलाने के लिए कुछ बनाएं तो हमारे पास की चीज़ों (मलाइका, हूर) में से बनाते (न मसीह

اِنۡ كُنَّا فٰعِلِيۡنَ ۝١٧ بَلۡ نَقۡذِفُ بِالۡحَقِّ عَلَى
व मरयम को), अगर हमें ऐसा करना होता। बल्के हम हक़ को बातिल पर दे

الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ؕ وَلَكُمُ الْوَيْلُ

मारते हैं, फिर हक़ बातिल का सर कुचल देता है, फिर वो फौरन मिट जाता है। और तुम पर अफ़सोस है

مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

उन बातों से जो तुम बयान करते हो। और अल्लाह ही का है वो सब जो आसमान व ज़मीन में है।

وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ

और वो फरिशते जो उस के पास हैं, वो अल्लाह की इबादत से तकब्बुर नहीं करते

وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ

और न वो थकते हैं। वो तस्बीह़ करते रेहते हैं रात और दिन,

لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ

सुस्ती नहीं करते। क्या उन्हों ने माबूद बना लिए हैं ज़मीन से

هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ

जो मुर्दा ज़िन्दा कर सकते हैं? अगर ज़मीन व आसमान में कई माबूद होते अल्लाह के सिवा

لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ

तो ज़मीन व आसमान ज़रूर तबाह हो जाते। फिर पाक है अल्लाह, जो अर्श का रब है, उन बातों से जो वो

عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾

केह रहे हैं। उस से सवाल नहीं किया जा सकता उन बातों के मुतअल्लिक़ जो वो करता है, बल्के उन से सवाल

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ

किया जाएगा। क्या उन्हों ने अल्लाह के अलावा माबूद बना लिए हैं? आप फरमा दीजिए के तुम दलील लाओ।

هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِیَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِیْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

ये उन की किताब है जो मेरे साथ हैं और ये उन की किताब है जो मुझ से पेहले थे। बल्के उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا

हक़ को जानते नहीं, फिर वो उस से ऐराज़ कर रहे हैं। और हम ने

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِیْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ

आप से पेहले कोई रसूल नहीं भेजा मगर हम उस की तरफ वही करते थे इस बात की के मेरे सिवा कोई

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ

माबूद नहीं, तो तुम मेरी ही इबादत करो। और उन्हों ने कहा के रहमान तआला ने औलाद

وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ
बनाई है, अल्लाह इस से पाक है। बल्के वो मुअज़्ज़ज़ बन्दे हैं। वो किसी बात में अल्लाह से सबक़त

بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ
नहीं कर सकते, बल्के वो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ काम करते हैं। अल्लाह जानता है जो

مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ
उन के आगे और पीछे है और वो सिफ़ारिश नहीं करते मगर

اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَمَنْ
उस की जो अल्लाह का पसन्दीदा हो और वो अल्लाह के खौफ से सेहमे रेहते हैं। और जो भी

يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ
उन में से ये कहेगा के मैं माबूद हूँ अल्लाह के सिवा तो उस को हम जहन्नम की

جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع اَوَلَمْ يَرَ
सज़ा देंगे। इसी तरह ज़ालिमों को हम सज़ा देते हैं। क्या काफिरों

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا
ने देखा नहीं के आसमान और ज़मीन दोनों

رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ
मिले हुए थे, फ़िर हम ने उन दोनों को अलग किया। और हम ने पानी से हर ज़िन्दा चीज़ को

حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ
बनाया। क्या फिर ये ईमान नहीं लाते? और हम ने ज़मीन में पहाड़ रख दिए

اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ص وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا
के कहीं वो उन को ले कर न हिले। और हम ने ज़मीन में कुशादा रास्ते बना दिए

لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا
ताके वो राह पाएं। और हम ने आसमान को महफ़ूज़

مَّحْفُوْظًا ۚ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾
छत बनाया। और वो आसमान की निशानियों से ऐराज़ कर रहे हैं।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ
और वही अल्लाह है जिस ने रात और दिन पैदा किए और सूरज और चाँद पैदा किए।

كُلٌّ فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ۝٣٣ وَمَا جَعَلۡنَا لِبَشَرٍ

सब के सब आसमान में तैर रहे हैं। और हम ने किसी इन्सान के लिए आप से

مِّنۡ قَبۡلِكَ الۡخُلۡدَ ؕ اَفَاۡئِنۡ مِّتَّ فَهُمُ الۡخٰلِدُوۡنَ ۝٣٤

पेहले हमेशा रेहना नहीं बनाया। क्या फिर अगर आप मर जाओगे तो ये हमेशा रेहने वाले हैं?

كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ ؕ وَنَبۡلُوۡكُمۡ بِالشَّرِّ

हर जानदार मौत का मज़ा चखने वाला है। और बुराई और भलाई के ज़रिए

وَالۡخَيۡرِ فِتۡنَةً ؕ وَاِلَيۡنَا تُرۡجَعُوۡنَ ۝٣٥

हम तुम्हारी आज़माइश व इमतिहान लेते हैं। और हमारी ही तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ يَّتَّخِذُوۡنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ

और जब काफिर लोग आप को देखते हैं तो आप ही को मज़ाक़ बना लेते हैं। के क्या ये वो आदमी

اَهٰذَا الَّذِىۡ يَذۡكُرُ اٰلِهَتَكُمۡ ۚ وَهُمۡ بِذِكۡرِ الرَّحۡمٰنِ

है जो तुम्हारे माबूदों का तज़किरा करता रेहता है? और वो खुद रहमान तआला की याद के

هُمۡ كٰفِرُوۡنَ ۝٣٦ خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ مِنۡ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيۡكُمۡ

मुन्किर हैं। इन्सान जल्दबाज़ी की ख़सलत के साथ पैदा किया गया है। अनक़रीब मैं तुम्हें अपनी

اٰيٰتِىۡ فَلَا تَسۡتَعۡجِلُوۡنِ ۝٣٧ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا

आयतें दिखलाऊँगा। फिर तुम मुझ से जल्दी का मुतालबा मत करो। और ये केहते हैं के ये

الۡوَعۡدُ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۝٣٨ لَوۡ يَعۡلَمُ الَّذِيۡنَ

वादा कब है अगर तुम सच्चे हो? काश ये काफ़िर जानते

كَفَرُوۡا حِيۡنَ لَا يَكُفُّوۡنَ عَنۡ وُّجُوۡهِهِمُ النَّارَ

उस वक़्त को जब वो अपने चेहरों से आग रोक नहीं सकेंगे

وَلَا عَنۡ ظُهُوۡرِهِمۡ وَلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ۝٣٩ بَلۡ تَاۡتِيۡهِمۡ

और न अपनी पीठों से और उन की नुसरत नहीं की जाएगी। बल्के वो उन के पास अचानक आ जाएगी,

بَغۡتَةً فَتَبۡهَتُهُمۡ فَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ رَدَّهَا وَلَا هُمۡ

फिर वो उन को मबहूत कर देगी, फिर वो उस को लौटाने की ताक़त नहीं रख सकेंगे और न

يُنۡظَرُوۡنَ ۝٤٠ وَلَقَدِ اسۡتُهۡزِئَ بِرُسُلٍ مِّنۡ

उन्हें मुहलत दी जाएगी। यक़ीनन आप से पेहले पैग़म्बरों के साथ इस्तिहज़ा

قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا

किया गया, फिर उन में से इस्तिहज़ा करने वालों को उसी अज़ाब ने घेर लिया जिस का

بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٤١ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ

वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे। आप फ़रमा दीजिए के कौन तुम्हारी हिफाज़त करता है रात में

وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ

और दिन में रहमान तआला से। बल्के वो अपने रब की याद से

مُّعْرِضُوْنَ ۝٤٢ اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ

मुंह मोड़ते हैं। क्या उन के लिए माबूद हैं हमारे अलावा जो उन को हम से बचा सकेंगे? वो तो खुद अपने

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ۝٤٣

आप की मदद करने की ताक़त नहीं रखते और उन को हम से बचाने वाला साथी मुयस्सर नहीं आ सकता।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ

बल्के हम ने उन्हें और उन के बाप दादा को मुतमत्तेअ किया यहां तक के उन की उमरें तवील हो गईं।

اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ

क्या फिर वो देखते नहीं के हम ज़मीन को उस के अतराफ से कम करते हुए आ रहे हैं?

اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝٤٤ قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ

क्या फिर ये ग़ालिब हो सकते हैं? आप फ़रमा दीजिए के मैं तो सिर्फ तुम्हें वही के ज़रिए डराता हूँ।

وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ۝٤٥

और बेहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें डराया जाए।

وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ

और अगर तेरे रब के अज़ाब का कोई झौंका उन को छू ले तो ज़रूर कहेंगे

يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٤٦ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ

के हाए हमारी खराबी! यक़ीनन हम ही कुसूरवार थे। और मीज़ाने अद्ल (इन्साफ के

الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ

तराजू) हम क़ाइम करेंगे क़यामत के दिन, फिर किसी शख्स पर ज़रा भी जुल्म नहीं किया जाएगा।

وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى

और अगर राई के दाने के बराबर भी कोई अमल होगा तो हम उसे ले आएंगे। और हम

بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ

हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) को दी हक़ और बातिल के दरमियान

وَ ضِيَآءً وَّ ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ

फ़ेसला करने वाली किताब और रोशनी वाली किताब और नसीहत दिलाने वाली किताब उन मुत्तक़ियों के लिए।

رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

जो अपने रब से बेदेखे डरते हैं और वो क़यामत से भी डरते हैं।

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾

और ये मुबारक तज़किरा है जो हम ने उतारा है। क्या फिर तुम उस का इन्कार करते हो?

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ

यक़ीनन हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को उन की हिदायत दी इस से पेहले और हम उन को खूब जानने

عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ

वाले थे। जब के उन्हों ने अपने अब्बा और अपनी क़ौम से फरमाया के ये क्या मूरतियाँ हैं

الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا

जिन पर तुम जमे हुए हो? उन्हों ने कहा के हम ने अपने बाप दादा को उन की

لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ

इबादत करते हुए पाया। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन तुम और तुम्हारे बाप दादा

فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ

भी गुमराही में थे। उन्हों ने कहा क्या तुम हमारे पास हक़ लाए हो

اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ

या तुम दिल्लगी कर रहे हो? इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया बल्के तुम्हारा रब आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا

और ज़मीन का रब है, वो जिस ने उन को पैदा किया। और मैं उस

عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَ تَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ

पर गवाहों में से हूँ। और अल्लाह की क़सम! ज़रूर मैं

اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾ فَجَعَلَهُمْ

तुम्हारे बूतों के लिए तदबीर करूंगा इस के बाद के तुम वापस चले जाओगे। फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

ने उन को टुकड़े टुकड़े कर दिया, मगर उन में से बड़े को, शायद वो उस की तरफ़ रूजूअ करें।

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾

उन्हों ने कहा जिस ने ये हरकत की हमारे माबूदों के साथ यक़ीनन वो ज़ालिमों में से है।

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾ قَالُوْا

उन्हों ने कहा के हम ने सुना है के एक नौजवान उन की बातें करता है जिसे इब्राहीम कहा जाता है। उन्हों ने कहा

فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾

के उसे लोगों के सामने लाओ ताके सब लोग गवाह रहें।

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾

उन्हों ने कहा के तू ने ये हरकत की है हमारे माबूदों के साथ, ऐ इब्राहीम?

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया बल्के उन के इस बड़े ने ये हरकत की है, तो तुम उन से पूछो अगर ये

يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾ فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ

बोलते हों। फिर वो खुद अपने दिल में केहने लगे के यक़ीनन तुम

اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ

खुद ही कुसूरवार हो। फिर उन्हों ने अपने सर झुका लिए के यक़ीनन

عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ

तुम्हें मालूम है के ये तो बोल नहीं सकते। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के क्या तुम इबादत करते

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

हो अल्लाह के अलावा ऐसी चीज़ों की जो तुम्हें न कुछ नफ़ा दे सकती हैं और न ज़रर पहोंचा सकती हैं?

اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ

अफ़सोस है तुम पर भी और उन माबूदों पर भी जिन की तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते हो।

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ

क्या फिर तुम्हें अक़्ल नहीं? उन्हों ने कहा के तुम इब्राहीम को जला दो और अपने माबूदों की मदद करो

اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا

अगर तुम्हें करना है। हम ने कहा के ऐ आग! तू इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के

وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وَ اَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا

के लिए ठंडी और सलामती वाली बन जा। और उन्हों ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के साथ मक्र का इरादा किया

فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾ وَ نَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا

तो हम ने उन्हें खसारा उठाने वाले बना दिया। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को और लूत (अलैहिस्सलाम) को नजात दी

اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَوَهَبْنَا

उस ज़मीन की तरफ जिस में हम ने जहान वालों के लिए बरकतें रखी हैं। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

لَهٗۤ اِسْحٰقَ ؕ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا

को इसहाक़ अता किए और मज़ीद याकूब भी। और सब को हम ने नेक

صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا

बनाया। और हम ने उन्हें पेशवा बनाया, वो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे

وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ

और हम ने उन की तरफ वही की नेकी के काम के करने की और नमाज़ क़ाइम करने की

وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَلُوْطًا

और ज़कात देने की। और वो सब हमारी इबादत करने वाले थे। और लूत (अलैहिस्सलाम) को

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّ نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ

हम ने नुबूव्वत और इल्म दिया और हम ने उन्हें नजात दी उस बस्ती से जो

كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ

गन्दे काम करती थी। यक़ीनन वो बुरी नाफरमान क़ौम

فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

थी। और हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) को अपनी रहमत में दाखिल किया। यक़ीनन वो नेक लोगों में से थे।

وَ نُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ

और नूह (अलैहिस्सलाम) का (क़िस्सा सुनिए) जब के उन्हों ने पुकारा इस से पेहले, फिर हम ने उन की दुआ क़बूल की, फिर हम ने

وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَنَصَرْنٰهُ

उन्हें और उन के मानने वालों को उस बड़ी मुसीबत से नजात दी। और हम ने उन की

مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا

नुसरत की उस क़ौम के खिलाफ जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया। यक़ीनन वो

قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٧٧ وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ

बुरी क़ौम थी, फिर हम ने उन सब को ग़र्क़ कर दिया। और दावूद और सुलैमान (अलैहिमस्सलाम) को (याद कीजिए) जब के

اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ

वो दोनों फ़ैसला कर रहे थे खेती के बारे में जब के उस में एक क़ौम की बकरियाँ (भेड़) रात को

الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۝٧٨ فَفَهَّمْنٰهَا

चर गईं। और हम उन का फैसला देख रहे थे। फिर हम ने उस फ़ैसले की सुलैमान (अलैहिस्सलाम)

سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّ عِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا

को समझ दी। और हम ने सब को नुबूव्वत और इल्म दिया। और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) के साथ

مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝٧٩

पहाड़ों और परिन्दों को ताबेअ किया था जो तस्बीह पढ़ते थे। और हम ही करने वाले थे।

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ

और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को ज़िरह बनाना सिखाया तुम्हारे लिए ताके वो तुम्हारी लड़ाई से तुम्हारी

مِّنْ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ۝٨٠ وَلِسُلَيْمٰنَ

हिफाज़त करे। क्या फिर तुम शुक्र अदा करते हो? और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए

الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖٓ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ

तेज़ हवा को ताबेअ किया जो चलती थी उन के हुक्म से उस ज़मीन की तरफ जिस में

بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ۝٨١

हम ने बरकतें रखी हैं। और हम हर चीज़ जानते हैं।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَ يَعْمَلُوْنَ عَمَلًا

और शयातीन में से वो भी थे जो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए ग़ोता लगाते थे और उस के अलावा दूसरे

دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَ كُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۝٨٢ وَاَيُّوْبَ

काम भी करते थे। और हम ही उन को संभाल रहे थे। और अय्यूब (अलैहिस्सलाम) को जब के उन्हों ने

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ

अपने रब को पुकारा के मुझे तकलीफ़ पहोंची है और तू रहम करने वालों में सब से ज़्यादा रहम

الرّٰحِمِيْنَ ۝٨٣ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ

करने वाला है। फिर हम ने उन की दुआ क़बूल की और हम ने दूर कर दी वो तकलीफ जो उन्हें

ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً

थी और हम ने उन्हें दे दी उन की औलाद और उन के साथ उन के मानिन्द और भी दिए रहमत के तौर पर

مِّنْ عِنْدِنَا وَ ذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ

हमारी तरफ़ से और यादगार इबादत करने वालों के लिए। और

وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾ ۚۖ

और इदरीस और जुल किफ्ल (अलैहिमुस्सलाम) को। ये तमाम सब्र करने वालों में से थे।

وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾

और हम ने उन्हें अपनी रहमत में दाखिल किया। यक़ीनन वो सुलहा में से थे।

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ

और मछली वाले पैग़म्बर (यूनुस अलैहिस्सलाम) को जब के वो गुस्सा हो कर चले गए, तो उन्हों ने समझा के

لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ

हम उन पर गिरिफ़्त हरगिज़ नहीं करेंगे, फिर उन्हों ने दुआ की तारीकियों में के कोई माबूद नहीं

اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖۗ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾ ۚۖ

मगर तू ही, तू पाक है। यक़ीनन मैं कुसूरवारों में से हूँ।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَ نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ

तो हम ने उन की दुआ क़बूल की और हम ने उन्हें ग़म से नजात दी। और इसी तरह हम

نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَ زَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

ईमान वालों को नजात देते हैं। और ज़करीया (अलैहिस्सलाम) को जब के उन्हों ने अपने रब को पुकारा

رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾ ۚۖ

ऐ मेरे रब! तू मुझे तन्हा मत छोड़ और तू बेहतरीन वारिस है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۫ وَ وَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَ اَصْلَحْنَا

तो हम ने उन की दुआ क़बूल की। और हम ने उन्हें यहया अता किए और हम ने उन के लिए उन की बीवी को

لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ

अच्छा कर दिया। यक़ीनन वो सबक़त करते थे नेकियों में

وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾

और हमें शौक़ और डर से पुकारते थे। और वो हम से डरने वाले थे।

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا

और उस मरयम को जिस ने अपनी शर्मगाह की हिफाज़त की, तो हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी

وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٩١ اِنَّ هٰذِهٖٓ

और हम ने उन्हें और उन के बेटे को जहान वालों के लिए मोअजिज़ा बनाया। यक़ीनन ये

اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝٩٢

तुम्हारी उम्मत एक उम्मत है। और मैं तुम्हारा माबूद हूँ, तो तुम मेरी इबादत करो।

وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۭ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ۝٩٣

और उन के मुआमले में आपस में वो मुख्तलिफ गिरोह हो गए। सब को हमारी तरफ़ लौट कर आना है।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ

फिर जो आमाले सालिहा करेगा बशर्तेके वो मोमिन हो तो उस की कोशिश की नाक़दरी

لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ۝٩٤ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ

नहीं की जाएगी। यक़ीनन हम उस को लिख रहे हैं। और जिस बस्ती (वालों) को भी हम ने हलाक किया

اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝٩٥ حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ

नामुमकिन है के वो लौट कर हमारे पास न आएं। यहां तक के जब याजूज और

يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ۝٩٦

माजूज खोल दिए जाएंगे और वो हर ढलवान जगह से तेज़ी से सरक रहे होंगे।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ

और सच्चा वादा क़रीब आ जाएगा, तो एक दम उन की निगाहें फटी रेह

اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا

जाएंगी जिन्हों ने कुफ्र किया। (वो कहेंगे) हाए हमारी कमबख्ती! यक़ीनन हम

فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٩٧ اِنَّكُمْ

ग़फ़लत में पड़े रहे इस से, बल्के हम मुजरिम थे। यक़ीनन तुम

وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا

और वो जिन की तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते हो सब जहन्नम का ईंधन हैं। तुम उस जहन्नम में

وٰرِدُوْنَ ۝٩٨ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ

दाखिल होने वाले हो। अगर वो माबूद होते तो उस जहन्नम में दाखिल न होते।

وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ

और सब के सब उस में हमेशा रहेंगे। उन का उस में चिल्ला कर रोना होगा और इतना के उस में

فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا

कोई आवाज़ भी सुन नहीं पाएंगे। यक़ीनन वो जिन के लिए हमारी तरफ से अच्छा फैसला पेहले

الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ

हो चुका है, तो ये जहन्नम से दूर रखे जाएंगे। वो जहन्नम की आहट भी नहीं सुन

حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾

सकेंगे। और वो उन नेअमतों में जो उन के जी चाहेंगे हमेशा रहेंगे।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰىهُمُ

उन को बड़ी घबराहट ग़मगीन नहीं करेगी और फरिशते उन का

الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

इस्तिक़बाल करेंगे। (ये केहते हुए) के ये वो दिन है जिस का तुम्हें वादा किया जा रहा था।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ

जिस दिन हम आसमान को लपेटेंगे लिखे हुए काग़ज़ात दफतर में लपेटने की तरह। जैसा के हम ने पेहली

كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا

दफा मखलूक़ पैदा की तो हम दोबारा उस को पैदा करेंगे। ये हम पर वादे के तौर पर लाज़िम है। यक़ीनन हम

فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ

ऐसा करने वाले हैं। यक़ीनन हम ने ज़बूर में ज़िक्र के बाद ये बात लिख दी है

اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ

के ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे। यक़ीनन

فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ

इस में इबादतगुज़ार क़ौम का मतलब पूरा पूरा है। और आप को जो हम ने भेजा तो तमाम

اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ

जहानों के लिए रहमत बना कर ही भेजा है। आप फ़रमा दीजिए मेरी तरफ तो यही वही आती है के

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾

तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, क्या अब तुम मानते हो?

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ
फिर अगर वो ऐराज़ करें तो आप फरमा दीजिए के मैं ने तो तुम्हें पूरी खबर दे दी।

وَاِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾ اِنَّهٗ
और मैं नहीं जानता के वो क़रीब है या दूर है जिस का तुम से वादा किया जा रहा है। यक़ीनन वो

يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾
अल्लाह बातों में से ज़ोर से कही हुई बात भी जानता है और जानता है जो तुम छुपाते हो।

وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَ مَتَاعٌ
और मैं नहीं जानता, शायद ये तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक वक़्त तक नफा

اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾ قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ
पहोंचाना हो। पैग़म्बर ने कहा के ऐ मेरे रब! तू हक़ के साथ फ़ैसला कर दे। और हमारे रब रहमान तआला

الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾
ही से मदद चाहते हैं उन बातों पर जो तुम बयान करते हो।

اٰيَاتُهَا ٧٨ (٢٢) سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ (١٠٣) رُكُوْعَاتُهَا ١٠
उस में ७८ आयतें हैं सूरह हज मदीना में नाज़िल हुई और १० रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ
ऐ इन्सानो! तुम अपने रब से डरो। यक़ीनन क़यामत का ज़लज़ला

شَيْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ
बड़ी भारी चीज़ है। जिस दिन तुम उस को देखोगे तो हर दूध पिलाने वाली औरत

عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हर हमल वाली गिरा देगी अपने हमल को

وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى
और तू इन्सानों को नशे में देखेगा हालांके वो नशे में नहीं होंगे

وَ لٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿٢﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ
लेकिन अल्लाह का अज़ाब ही सख्त होगा। और कुछ लोग वो हैं जो जाने

النصف

فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝٣
बग़ैर अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हैं और हर सरकश शैतान के पीछे चलते हैं।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ
जिस की निसबत ये लिख दिया गया है के जो उस से दोस्ती रखेगा तो वो उसे गुमराह कर देगा

وَ يَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝٤ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ
और जहन्नम के अज़ाब की तरफ उस की रहनुमाई करेगा। ऐ इन्सानो!

اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ
अगर तुम शक में हो दोबारा ज़िन्दा किए जाने की तरफ से, तो यक़ीनन हम ने तुम्हें पेहले पैदा किया

مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ
मिट्टी से, फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए खून से, फिर गोश्त के लोथड़े

مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ
से जिस में सूरत बनाई जाती है और (कभी) सूरत नहीं बनाई जाती, ताके हम तुम्हारे लिए बयान करें।

وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
और हम बच्चादानी में ठेहराते हैं जो हम चाहते हैं वक़्ते मुक़र्ररा तक,

ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ
फिर हम तुम्हें बच्चा बना कर निकालते हैं ताके तुम अपनी जवानी को पहोंचो।

وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ
और तुम में से बाज़ की रूह कब्ज़ कर ली जाती है और तुम में से बाज़ लौटाए जाते हैं

اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ
निकम्मी उम्र की तरफ ताके वो बहोत कुछ जानने के बाद कुछ भी न जानें।

وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
और तू ज़मीन को खुश्क देखता है, फिर जब हम उस के ऊपर पानी बरसाते

الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ
हैं तो हिलने और उभरने लगती है और हर खुशनुमा जोड़े को

بَهِيْجٍ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ
उगाती है। ये इस वजह से के अल्लाह हक़ है और वही मुर्दों को

الۡمَوۡتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۙ﴿۶﴾ وَّاَنَّ السَّاعَةَ

ज़िन्दा करेगा और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। और ये के क़यामत

اٰتِيَةٌ لَّا رَيۡبَ فِيۡهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبۡعَثُ مَنۡ

आने वाली है उस में कोई शक ही नहीं, और ये के अल्लाह ज़िन्दा कर के उठाएगा उन को भी

فِى الۡقُبُوۡرِ ﴿۷﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ

जो क़बरों में हैं। और लोगों में से वो है जो झगड़ा करता है अल्लाह के बारे में

بِغَيۡرِ عِلۡمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيۡرٍ ۙ﴿۸﴾ ثَانِىَ

जाने बग़ैर और हिदायत और रोशन किताब के बग़ैर। अपना पेहलू

عِطۡفِهٖ لِيُضِلَّ عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِى الدُّنۡيَا

मोड़ कर ताके अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे। और उस के लिए दुन्यवी ज़िन्दगी में

خِزۡىٌ وَّ نُذِيۡقُهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ عَذَابَ الۡحَرِيۡقِ ﴿۹﴾

रूस्वाई है और हम उसे क़यामत के दिन आग का अज़ाब चखाएंगे।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتۡ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيۡسَ بِظَلَّامٍ

(कहा जाएगा के) ये उस का बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा और ये के अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी

لِّلۡعَبِيۡدِ ﴿۱۰﴾ ع وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ يَّعۡبُدُ اللّٰهَ

ज़ुल्म नहीं करता। और इन्सानों में से वो शख्स भी है जो अल्लाह की इबादत करता है

عَلٰى حَرۡفٍ ۚ فَاِنۡ اَصَابَهٗ خَيۡرُ ۨاطۡمَاَنَّ بِهٖ ۚ

किनारे पर। फिर अगर उसे भलाई पहोंचे तो उस से मुतमइन हो जाता है।

وَاِنۡ اَصَابَتۡهُ فِتۡنَةُ ۨانۡقَلَبَ عَلٰى وَجۡهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنۡيَا

और अगर उसे आज़माइश पहोंचे तो मुंह फेर कर पलट जाता है। दुन्या और आख़िरत में

وَالۡاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الۡخُسۡرَانُ الۡمُبِيۡنُ ﴿۱۱﴾ يَدۡعُوۡا

उस ने खसारा उठाया। यही सरीह घाटा है। वो अल्लाह

مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنۡفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ

के सिवा पुकारता है ऐसी चीज़ को जो उसे न ज़रर पहोंचा सकती है और न नफ़ा दे सकती है। यही

هُوَ الضَّلٰلُ الۡبَعِيۡدُ ﴿۱۲﴾ ۚ يَدۡعُوۡا لَمَنۡ ضَرُّهٗۤ اَقۡرَبُ

है परले दरजे की गुमराही। वो पुकारता है उस को जिस का ज़रर उस के नफे से ज़्यादा

مِنۡ نَّفۡعِهٖ‌ؕ لَبِئۡسَ الۡمَوۡلٰى وَلَبِئۡسَ الۡعَشِيۡرُ‏ ﴿۱۳﴾
क़रीब है। अलबत्ता बहोत बुरा दोस्त है और बहोत बुरा साथी है।

اِنَّ اللّٰهَ يُدۡخِلُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ
यक़ीनन अल्लाह ईमान वालों को और जो नेक काम करते रहे उन्हें जन्नतों में दाखिल करेगा

تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفۡعَلُ
जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। यक़ीनन अल्लाह करता है

مَا يُرِيۡدُ‏ ﴿۱۴﴾ مَنۡ كَانَ يَظُنُّ اَنۡ لَّنۡ يَّنۡصُرَهُ اللّٰهُ
वही जिस का वो इरादा करता है। जो ये समझता है के अल्लाह इस नबी की हरगिज़ नुसरत नहीं करेगा

فِى الدُّنۡيَا وَالۡاٰخِرَةِ فَلۡيَمۡدُدۡ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ
दुन्या और आखिरत में तो उसे चाहिए के एक रस्सी लम्बी कर ले आसमान तक,

ثُمَّ لۡيَقۡطَعۡ فَلۡيَنۡظُرۡ هَلۡ يُذۡهِبَنَّ كَيۡدُهٗ مَا يَغِيۡظُ‏ ﴿۱۵﴾
फिर उसे काट दे, फिर देखे के क्या उस की ये तदबीर उस को खत्म कर देती है जो उसे गुस्सा दिलाती है?

وَكَذٰلِكَ اَنۡزَلۡنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهۡدِىۡ
और इसी तरह हम ने कुरआन को रोशन आयतें बना कर उतारा, और ये के अल्लाह हिदायत देता है

مَنۡ يُّرِيۡدُ‏ ﴿۱۶﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَالَّذِيۡنَ هَادُوۡا
उसी को जिसे वो चाहता है। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और जो यहूदी

وَالصّٰبِـِٕيۡنَ وَالنَّصٰرٰى وَالۡمَجُوۡسَ وَالَّذِيۡنَ اَشۡرَكُوۡٓا ‌ۖ
और साबी और नसारा और आतिशपरस्त हैं और जो मुशरिक हैं।

اِنَّ اللّٰهَ يَفۡصِلُ بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ‌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
यक़ीनन अल्लाह उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा। यक़ीनन अल्लाह

عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ شَهِيۡدٌ‏ ﴿۱۷﴾ اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسۡجُدُ
हर चीज़ को देख रहा है। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह को सजदा करते हैं वो

لَهٗ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ وَالشَّمۡسُ
जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और सूरज

وَالۡقَمَرُ وَالنُّجُوۡمُ وَالۡجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ
और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख्त और जानवर भी

وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ
और बहोत से इन्सान भी। और बहोत सों पर अज़ाब साबित हो चुका है।

وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ
और जिसे अल्लाह रूस्वा कर दे तो उसे कोई इज़्ज़त दे नहीं सकता। यक़ीनन अल्लाह करता है

مَا يَشَآءُ ۩ ١٨ هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ز
वही जो वो चाहता है। ये दो मुद्दई हैं जिन्हों ने अपने रब के बारे में झगड़ा किया।

السجدة ٦

فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ
फिर जो काफिर हैं उन के लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे।

يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ١٩ يُصْهَرُ
उन के सरों के ऊपर से गर्म पानी डाला जाएगा। जिस से गल

بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ٢٠ وَلَهُمْ مَّقَامِعُ
जाएगा जो उन के पेट में है और खालें भी। और उन के लिए लोहे के

مِنْ حَدِيْدٍ ٢١ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا
गुर्ज़ तय्यार हैं। जब वो जहन्नम से ग़म के मारे निकलने का इरादा

مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ق وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ٢٢ ع
करेंगे तो उन्हें दोबारा उस में लौटा दिया जाएगा। और कहा जाएगा के आग का अज़ाब चखो।

ع ١٢

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
यक़ीनन अल्लाह दाखिल करेगा उन को जो ईमान लाए और जो नेक काम करते रहे

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا
ऐसी जन्नतों में जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, उन में उन्हें

مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ؕ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا
सौने के कंगन पेहनाए जाएंगे और मोती पेहनाए जाएंगे। और उन का लिबास उन में

حَرِيْرٌ ٢٣ وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا
रेशम का होगा। और उन्हें हिदायत दी गई है कलिमात में से सब से उम्दा कलिमे की (ला इलाहा इल्लल्लाह की)।

اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ٢٤ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
और उन्हें हिदायत दी गई है क़ाबिले तारीफ़ अल्लाह के रास्ते की। यक़ीनन जो काफ़िर हैं

وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ और अल्लाह के रास्ते से और उस मस्जिदे हराम से रोकते हैं
الَّذِىْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨالْعَاكِفُ فِيْهِ जो हम ने तमाम लोगों के लिए बनाई है के बराबर है उस में वहां का रेहने वाला
وَالْبَادِ ؕ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ और बाहर से आने वाला। और जो उस में शरारत से बेदीनी का इरादा करेगा तो हम उसे
مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٥﴾ وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ दर्दनाक अज़ाब चखाएंगे। और जब हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को तय्यार कर के दी
الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِىْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِىَ बैतुल्लाह की जगह के मेरे साथ किसी चीज़ को तुम शरीक न ठेहराओ और मेरे घर को पाक करो
لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾ तवाफ करने वालों और क़याम और रूकूअ और सजदा करने वालों के लिए।
وَاَذِّنْ فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا और आप ऐलान कर दीजिए इन्सानों में हज का तो वो आप के पास आएंगे पैदल
وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾ और हर दुबली ऊँटनी पर (सवार हो कर) आएंगे जो दूर दराज़ इलाक़ों से आ रही होंगी।
لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ ताके वो अपने मनाफेअ के लिए हाज़िर हो जाएं और अल्लाह का नाम लें
فِىْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ मखसूस दिनों में उन चौपाओं पर जो अल्लाह ने उन्हें रोज़ी के तौर पर
الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾ दिए हैं। तो तुम उस से खाओ और मोहताज फक़ीर को खिलाओ।
ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا फिर उन्हें चाहिए के अपना मैल कुचैल दूर करें और अपनी नज़रें पूरी करें और पुराने
بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ घर का वो तवाफ करें। ये हुक्म तो है। और जो अल्लाह की इज़्ज़त दी हुई चीज़ों की

اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَ اُحِلَّتْ لَكُمُ
ताज़ीम करेगा तो ये उस के लिए बेहतर है उस के रब के नज़दीक। और तुम्हारे लिए चौपाए
الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ
हलाल किए गए हैं मगर वो जो तुम पर तिलावत किए जाते हैं, इस लिए तुम बुतों की
مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۙ۝۳۰ حُنَفَآءَ
गन्दगी से बचो और झूठ बोलने से बचो। एक अल्लाह के
لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ
हो कर रहो, उस के साथ शरीक न करने वाले बनो। और जो अल्लाह के साथ शरीक ठेहराएगा
فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ
तो गोया वो आसमान से गिरा, फिर उसे परिन्दे उचक ले जाते हैं
اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝۳۱ ذٰلِكَ ٙ
या तूफ़ानी हवा किसी दूर जगह में उसे फैंक रही है। ये हुक्म तो है।
وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝۳۲
और जो अल्लाह की तरफ से मिले अफ़आले हज की ताज़ीम करेगा तो यक़ीनन ये दिलों के तक़्वे से है।
لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ
तुम्हारे लिए उन चौपाओं में एक वक़्ते मुक़र्ररा तक नफा उठाना है, फिर उन के ज़बह की जगह
اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝۳۳ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا
पुराने घर के पास है। और हर उम्मत के लिए हम ने क़ुरबानी का एक तरीक़ा बनाया है
لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ
ताके वो अल्लाह का नाम लें उन चौपाओं पर जो अल्लाह ने उन्हें खाने के
الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ
लिए दिए। फिर तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, तो तुम उसी के फरमांबरदार बनो।
وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۝۳۴ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ
और आप बशारत सुना दीजिए उन आजिज़ी करने वालों को, के जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है
وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَا اَصَابَهُمْ
तो उन के दिल डर जाते हैं और मसाइब पर सब्र करने वालों को

ع ۴

وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

और नमाज़ क़ाइम करने वालों को। और उन चीज़ों में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दी वो खर्च करते हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ

और हदी के जानवरों को हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह के शआइर में से बनाया है तुम्हारे लिए

فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ

उन में भलाई है। फिर तुम उन पर अल्लाह का नाम लो उन को खड़ा कर के।

فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا

फिर जब उन के पेहलू ज़मीन पर गिर पड़ें तो तुम उन में से खाओ और तुम न मांगने वालों

الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ

और मांगने वालों को खिलाओ। इसी तरह हम ने मुसख्खर किया है उन जानवरों को तुम्हारे लिए

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا

ताके तुम शुक्र अदा करो। अल्लाह को न उन का गोश्त हरगिज़ पहोंचता है

وَلَا دِمَآؤُهَا وَ لٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ

न खून, लेकिन अल्लाह को तुम्हारा तक़्वा पहोंचता है।

كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى

इसी तरह हम ने उन जानवरों पर तुम्हें क़ाबू दिया ताके तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो इस पर के अल्लाह

مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ

ने तुम्हें हिदायत दी। और बशारत सुना दीजिए नेकी करने वालों को। यक़ीनन अल्लाह ईमान वालों की

عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ

तरफ से मुदाफअत करता है। यक़ीनन अल्लाह हर ख़यानत करने वाले नाशुकरे से महब्बत

كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾ اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ

नहीं करता। उन लोगों के लिए जिन से किताल किया जाता है उन को इजाज़त दी गई है इस वजह से के वो मज़लूम

وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ﴿٣٩﴾ ۙ الَّذِيْنَ

हैं। और ये के यक़ीनन अल्लाह उन की नुसरत पर कुदरत रखने वाला है। उन लोगों की

اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا

जिन्हें अपने घरों से नाहक़ निकाल दिया गया सिर्फ इस लिए के उन्होंने ने कहा

رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ

के हमारा रब अल्लाह है। और अगर अल्लाह का इन्सानों को उन में से एक को दूसरे के ज़रिए दफ़्र करना न होता

بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ

तो अल्बत्ता मुन्हदिम कर दी जाती राहिबों की खलवतगाहें और नसारा की इबादतगाहें और यहूदियों की

وَّ مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ

इबादतगाहें और वो मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम बहोत ज़्यादा लिया जाता है।

وَ لَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ

और ज़रूर अल्लाह उस की नुसरत करेगा जो अल्लाह की नुसरत करेगा। यक़ीनन अल्लाह क़ूव्वत वाला,

عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾ اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ

इज़्ज़त वाला है। वो लोग ऐसे हैं के अगर हम उन्हें ज़मीन में हुकूमत दें

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا

तो वो नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और अम्र

بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ

बिल मारूफ और नही अनिल मुन्कर करें। और अल्लाह के इखतियार में तमाम उमूर

الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ

का अन्जाम है। और अगर वो आप को झुठलाएं तो यक़ीनन उन से

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿۴۲﴾ وَقَوْمُ

पेहले क़ौमे नूह और क़ौमे आद और क़ौमे समूद और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اِبْرٰهِيْمَ وَ قَوْمُ لُوْطٍ ﴿۴۳﴾ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ

की क़ौम और क़ौमे लूत और मदयन वाले भी झुठला चुके हैं। और मूसा (अलैहिस्सलाम)

مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ

की तकज़ीब की गई, फिर मैं ने काफिरों को मुहलत दी, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया।

فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۴﴾ فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

फिर मेरी पकड़ कैसी रही? फिर बहोत सी बस्तियाँ हैं

اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى

जिन को हम ने हलाक किया इस हाल में के वो ज़ालिम थीं, फिर अब वो अपनी छतों पर

عُرُوۡشِهَا وَبِئۡرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصۡرٍ مَّشِيۡدٍ ﴿۴۵﴾
और बेकार पड़े कुवें पर और ऊंचे पक्के महल पर गिरी पड़ी हैं।

اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَتَكُوۡنَ لَهُمۡ قُلُوۡبٌ
क्या फिर वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के उन के पास दिल होते

يَّعۡقِلُوۡنَ بِهَاۤ اَوۡ اٰذَانٌ يَّسۡمَعُوۡنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا
जिन से वो समझते या कान होते जिन से वो सुनते? इस लिए के

لَا تَعۡمَى الۡاَبۡصَارُ وَلٰـكِنۡ تَعۡمَى الۡقُلُوۡبُ الَّتِىۡ
आँखें अन्धी नहीं हुवा करतीं, लेकिन वो दिल अन्धे हो जाया करते हैं जो

فِى الصُّدُوۡرِ ﴿۴۶﴾ وَيَسۡتَعۡجِلُوۡنَكَ بِالۡعَذَابِ
सीनों में हैं। और ये आप से अज़ाब जल्दी तलब कर रहे हैं

وَلَنۡ يُّخۡلِفَ اللّٰهُ وَعۡدَهٗ ؕ وَاِنَّ يَوۡمًا عِنۡدَ
और अल्लाह अपने वादे के खिलाफ हरगिज़ नहीं करेगा। और यक़ीनन एक दिन तेरे रब

رَبِّكَ كَاَلۡفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ ﴿۴۷﴾ وَ كَاَيِّنۡ
के यहाँ का तुम्हारी गिन्ती के ऐतेबार से एक हज़ार साल के बराबर है। और कितनी

مِّنۡ قَرۡيَةٍ اَمۡلَيۡتُ لَهَا وَهِىَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ
बस्तियाँ हैं जिन को मैं ने मुहलत दी और वो ज़ालिम थीं, फिर

اَخَذۡتُهَا ۚ وَاِلَىَّ الۡمَصِيۡرُ ﴿۴۸﴾ قُلۡ يٰۤاَيُّهَا
मैं ने उन को पकड़ लिया। और मेरी तरफ लौटना है। और फ़रमा दीजिए ऐ

النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَـكُمۡ نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۴۹﴾ فَالَّذِيۡنَ
लोगो! मैं तो सिर्फ तुम्हारे लिए साफ साफ डराने वाला हूँ। फिर जो

اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّرِزۡقٌ
ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली

كَرِيۡمٌ ﴿۵۰﴾ وَالَّذِيۡنَ سَعَوۡا فِىۡۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيۡنَ
रोज़ी है। और जो हमारी आयतों के बारे में कोशिश करेंगे मुक़ाबला करने की

اُولٰۤـئِكَ اَصۡحٰبُ الۡجَحِيۡمِ ﴿۵۱﴾ وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ
तो ये दोज़खी हैं। और हम ने आप से पेहले

قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى
कोई रसूल और नबी नहीं भेजे मगर जब उन्हों ने क़िराअत की तो शैतान ने
الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى
उन की क़िराअत में (खलल) डाला। फिर अल्लाह मन्सूख कर देता है शैतान के डाले
الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
हुए को और अल्लाह अपनी आयतों को मुहकम रखता है। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत
حَكِيْمٌ ۝٥٢ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً
वाले हैं। ताके अल्लाह शैतान के डाले हुए को आज़माइश बनाएं
لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۗ
उन के लिए जिन के दिलों में बीमारी है और उन के लिए जिन के दिल सख्त हैं।
وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ۝٥٣ وَّلِيَعْلَمَ
और यक़ीनन ये ज़ालिम अलबत्ता लम्बी मुखालफत में हैं। और ताके
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ
वो लोग जिन को इल्म दिया गया वो जान लें के ये हक़ है आप के रब की तरफ से,
فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ
फिर वो उस पर ईमान लाएं, फिर उन के दिल उस के सामने झुक जाएं। और यक़ीनन अल्लाह
لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٥٤
ज़रूर सीधी राह की हिदायत देगा उन लोगों को जो ईमान लाए।
وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ
और काफिर तो उस की तरफ से हमेशा शक ही में रहेंगे
حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ
यहां तक के क़यामत अचानक आ जाए या उन के पास मनहूस
يَوْمٍ عَقِيْمٍ ۝٥٥ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۗ يَحْكُمُ
दिन का अज़ाब आ जाए। सल्तनत उस दिन अल्लाह के लिए ही होगी। अल्लाह उन के दरमियान
بَيْنَهُمْ ۗ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ
फेसला करेगा। फिर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे वो

جَنّٰتِ النَّعِيۡمِ ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَكَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا

जन्नाते नईम में होंगे। और जो काफिर हैं, जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया

فَاُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ﴿۵۷﴾ وَالَّذِيۡنَ

उन के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब होगा। और जिन्हों ने

هَاجَرُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوۡۤا اَوۡ مَاتُوۡا

हिजरत की अल्लाह के रास्ते में, फिर वो क़त्ल किए गए या अपनी मौत मर गए

لَيَرۡزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزۡقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ

तो ज़रूर अल्लाह उन्हें अच्छी रोज़ी देगा। और यक़ीनन अल्लाह बेहतरीन

خَيۡرُ الرّٰزِقِيۡنَ ﴿۵۸﴾ لَيُدۡخِلَنَّهُمۡ مُّدۡخَلًا يَّرۡضَوۡنَهٗ ؕ

रोज़ी देने वाला है। अल्लाह ज़रूर उन्हें दाखिल करेगा ऐसी जगह में जिस को वो पसन्द करेंगे।

وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيۡمٌ حَلِيۡمٌ ﴿۵۹﴾ ذٰلِكَ ۚ وَمَنۡ

और यक़ीनन अल्लाह इल्म वाले, हिल्म वाले हैं। ये तो हुवा। और जो

عَاقَبَ بِمِثۡلِ مَا عُوۡقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِىَ عَلَيۡهِ

बदला ले उसी क़दर जो उसे सताया गया था, फिर उस पर ज़्यादती की गई तो अल्लाह

لَيَنۡصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوۡرٌ ﴿۶۰﴾ ذٰلِكَ

ज़रूर उस की नुसरत करेगा। यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ करने वाला, बख्शने वाला है। ये इस वजह

بِاَنَّ اللّٰهَ يُوۡلِجُ الَّيۡلَ فِى النَّهَارِ وَيُوۡلِجُ النَّهَارَ

से के अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में

فِى الَّيۡلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيۡعٌۢ بَصِيۡرٌ ﴿۶۱﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ

दाखिल करता है और ये के अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। ये इस वजह से के

اللّٰهَ هُوَ الۡحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهٖ هُوَ

अल्लाह ही हक़ है और ये के अल्लाह के सिवा जिस को ये काफिर पुकारते हैं वो

الۡبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡعَلِىُّ الۡكَبِيۡرُ ﴿۶۲﴾

बातिल है और ये के अल्लाह वो बरतर है, बड़ा है।

اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۫ فَتُصۡبِحُ

क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा? फिर ज़मीन

الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾ لَهٗ
सरसब्ज़ हो गई। यक़ीनन अल्लाह महरबान है, बाखबर है। उस की मिल्क हैं

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ
वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और ये के अल्लाह

الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ
बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने तुम्हारे ताबेअ कर दी

مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ
वो चीज़ें जो ज़मीन में हैं और कशती जो चलती है समन्दर में अल्लाह के हुक्म से?

وَ يُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ
और अल्लाह आसमान को थामे हुए है इस से के वो ज़मीन पर गिर जाए

اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾
मगर अल्लाह के हुक्म से (एक दिन गिर जाएगा)। यक़ीनन अल्लाह इन्सानों पर बहोत ज़्यादा शफीक़ है, महरबान है।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ز ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ
और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें ज़िन्दा किया। फिर वो तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें दोबारा ज़िन्दा करेगा।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا
यक़ीनन इन्सान अलबत्ता नाशुकरा है। हर उम्मत के लिए हम ने एक इबादत का तरीक़ा मुक़र्रर किया है

مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ
जिस के मुताबिक़ वो इबादत करते हैं, इस लिए ये आप से झगड़ा न करें इस मुआमले में

وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٦٧﴾
और अपने रब की तरफ़ बुलाते रहिए। यक़ीनन आप ज़रूर हिदायत और सीधे रास्ते पर हैं।

وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٨﴾
और अगर ये आप से बहस करें तो आप केह दीजिए के अल्लाह तुम्हारे आमाल खूब जानता है।

اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ
अल्लाह तुम्हारे दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा जिस में तुम इखतिलाफ

تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي
कर रहे हो। क्या तुझे मालूम नहीं के अल्लाह जानता है वो चीज़ें जो

السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِىْ كِتٰبٍ ؕ
आसमान और ज़मीन में हैं? बेशक ये सब कुछ लौहे महफ़ूज़ में है।

اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٧٠﴾ وَ يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
यक़ीनन ये अल्लाह पर आसान है। और ये अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं

اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ
ऐसी चीज़ की जिस पर अल्लाह ने कोई हुज्जत नहीं उतारी और उन के पास इस की कोई

بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٧١﴾ وَاِذَا تُتْلٰى
दलील भी नहीं। और उन ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं होगा। और जब उन पर हमारी साफ साफ

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِىْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ
आयतें तिलावत की जाती हैं तो आप काफिरों के चेहरों में

كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ
इन्कार देख सकोगे। क़रीब है के ये हमला कर दें उन पर जो

يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ
उन पर हमारी आयतें तिलावत करते हैं। आप फ़रमा दीजिए क्या मैं तुम्हें इस से बुरी

مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ
चीज़ की खबर दूँ? वो दोज़ख है, जिस का अल्लाह ने काफिरों से वादा किया है।

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٢﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ
और वो बुरी जगह है। ऐ इन्सानो! एक मिसाल बयान की गई है,

فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
तुम उस को ग़ौर से सुनो। यक़ीनन वो जिन को तुम अल्लाह के अलावा पुकारते

اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ
हो वो एक मक्खी भी हरगिज़ पैदा नहीं कर सकते अगर्चे वो सब उस के लिए इकट्ठे हो जाएं।

وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ
और अगर उन से मक्खी कोई चीज़ छीन कर ले जाए तो मक्खी से वो चीज़ ये छुड़ा

مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾ مَا قَدَرُوا
नहीं सकते। तालिब भी कमज़ोर और मतलूब भी। अल्लाह की उन्हों ने क़दर

اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِیٌّ عَزِیْزٌ ﴿٧٤﴾ اَللّٰهُ

नहीं की जैसा के अल्लाह की क़दर का हक़ है। यक़ीनन अल्लाह क़ूव्वत वाला, इज़्ज़त वाला है। अल्लाह

یَصْطَفِیْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ

मुन्तख़ब करता है फ़रिशतों में से और इन्सानों में से पैग़ाम पहोंचाने वाले।

اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌۢ بَصِیْرٌ ﴿٧٥﴾ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ

यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। अल्लाह जानता है वो चीज़ें जो उन के आगे

وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٧٦﴾

और उन के पीछे हैं। और अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا

ऐ ईमान वालो! रूकूअ करो और सज्दा करो और इबादत करो

رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَیْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَجَاهِدُوْا

अपने रब की और नेकी के काम करो ताके तुम फलाह पाओ। और मुजाहदा करो

فِی اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ

अल्लाह के रास्ते में जैसा उस में मेहनत का हक़ है। उस ने तुम्हें मुन्तखब किया और उस ने

عَلَیْكُمْ فِی الدِّیْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ مِلَّةَ اَبِیْكُمْ

दीन में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी। तुम अपने बाप इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिल्लत का

اِبْرٰهِیْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِیْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ

इत्तिबा करो। उसी अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है इस से पेहले

وَفِیْ هٰذَا لِیَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِیْدًا عَلَیْكُمْ

और इस कुरआन में भी ताके रसूल तुम पर गवाह रहें

وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚۖ فَاَقِیْمُوا

और तुम गवाह रहो लोगों पर। और नमाज़ क़ाइम

الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ

करो और ज़कात दो और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थामे रहो। वो

مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِیْرُ ﴿٧٨﴾

तुम्हारा मालिक है। फिर वो कितना अच्छा मालिक है, और कितना अच्छा मददगार है।

السجدة عند الامام الشافعي رحمه الله تعالى

اٰيَاتُهَا ١١٨ (٢٣) سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ مَكِّيَّةٌ (٧٤) رُكُوْعَاتُهَا ٦

उस में ११८ आयतें हैं सूरह मोमिनून मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ

यक़ीनन कामयाब हैं वो जो ईमान लाए। जो अपनी नमाज़ में खुशूअ करने

خٰشِعُوْنَ ۝٢ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝٣

वाले हैं। और जो लग़वियात से ऐराज़ करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝٤ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ

और जो ज़कात देने वाले हैं। और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने

حٰفِظُوْنَ ۝٥ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ

वाले हैं। मगर अपनी बीवियों के साथ या अपनी बाँदियों के साथ

فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝٦ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ

इस लिए के उन पर (उन में) कुछ मलामत नहीं। फिर जो उस के अलावा तलाश करेगा

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝٧ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ

तो यक़ीनन वो ज़्यादती करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद की देख भाल करने

رٰعُوْنَ ۝٨ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝٩

वाले हैं। और जो अपनी नमाज़ की पाबन्दी करते हैं।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝١٠ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ

यही लोग वारिस हैं। वो लोग जो वारिस होंगे जन्नतुल फिरदौस के।

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١١ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ

वो उस में हमेशा रहेंगे। यक़ीनन हम ने इन्सान को पैदा किया

مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ۝١٢ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ

मिट्टी के खुलासे से। फिर हम ने उस को नुत्फ़ा बना कर रखा एक महफ़ूज़

مَّكِيْنٍ ۝١٣ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا

जगह में। फिर हम ने नुत्फ़े को जमा हुवा खून बनाया, फिर हम ने जमे हुए

الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ

खून को गोश्त का टुकड़ा बनाया, फिर गोश्त के टुकड़े से हम ने हड्डियाँ पैदा कीं, फिर हम ने हड्डियों के ऊपर

لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ

गोश्त चढ़ाया। फिर हम ने उस को एक दूसरी शकल में बनाया। फिर अल्लाह कितना अच्छा पैदा करने वाला,

الْخٰلِقِيْنَ ؕ﴿١٤﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ؕ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ

बाबरकत है। फिर तुम उस के बाद ज़रूर मरने वाले हो। फिर यक़ीनन तुम

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖۗ

क़यामत के दिन ज़िन्दा कर के उठाए जाओगे। यक़ीनन हम ने तुम्हारे ऊपर सात आसमान पैदा किए।

وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ

और हम मख़लूक़ से ग़ाफ़िल नहीं। और हम ने आसमान से पानी एक मिक़दार से

بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ۖۗ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ

उतारा, फिर हम ने उसे ज़मीन में ठेहराया। और यक़ीनन हम उस के ले जाने पर भी

لَقٰدِرُوْنَ ۚ﴿١٨﴾ فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ

क़ादिर हैं। फिर हम ने तुम्हारे लिए उस पानी के ज़रिए खजूर और अंगूर के बाग़ात

وَّ اَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ﴿١٩﴾

वक़्फ़ लाज़िम

उगाए। तुम्हारे लिए उन में बहोत सारे मेवे हैं और उन में से तुम खाते भी हो।

وَ شَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ

और उस दरख़्त को (भी पैदा किया) जो तूरे सीना से खाने वालों के लिए तेल और सालन ले कर

لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ

उगता है। और यक़ीनन तुम्हारे लिए चौपाओं में इबरत है, के हम तुम्हें पिलाते हैं

مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا

उस चीज़ से जो उन के पेटों में हैं और तुम्हारे लिए उन में और दूसरे बहोत से फाइदे भी हैं और उन में

تَاْكُلُوْنَ ۙ﴿٢١﴾ وَ عَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۠﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ

ع ٤

से बाज़ों को तुम खाते भी हो। और तुम उन चौपाओं पर और कशतियों पर सवारी करते हो। यक़ीनन हम ने

اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

रसूल बना कर भेजा नूह (अलैहिस्सलाम) को उन की क़ौम की तरफ़, फिर नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ

इबादत करो, तुम्हारे लिए उस के अलावा कोई माबूद नहीं। क्या फिर तुम डरते नहीं हो? तो सरदारों ने कहा

كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ

जो काफिर थे आप की क़ौम में से के ये नूह नहीं है मगर तुम जैसा इन्सान। वो ये चाहता है

اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚۖ

के तुम पर फज़ीलत पाए। और अगर अल्लाह चाहता तो फ़रिशतों को उतारता। हम

مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾ ۚ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ

ने ये बात हमारे पेहले बाप दादाओं में नहीं सुनी। यक़ीनन ये नूह तो सिर्फ़ एक ऐसा आदमी है जिसे

بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ

जुनून है, तो तुम उस के मुतअल्लिक़ इन्तिज़ार करो एक वक़्त तक। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे रब! तू मेरी

بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا

नुसरत फ़रमा उस पर जो उन्हों ने मुझे झुठलाया। तो हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) की तरफ़ वही की के आप कशती बनाएं हमारी

وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا

आँखों के सामने और हमारे हुक्म से, फिर जब हमारा हुक्म आ जाए और तन्नूर जोश मारने लगे, तो उस में दाखिल

مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ

कर लो हर चीज़ का जोड़ा (यानी) दो दो और अपने मानने वालों को मगर वो जिन के बारे

عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ

में पेहले से बात साबित हो चुकी है। और तुम मुझ से बात न करो उन लोगों के बारे में जो मुशरिक हैं।

اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ

इस लिए के ये ग़र्क़ किए जाएंगे। फिर जब आप और वो जो आप के साथ हैं कशती पर बराबर सवार

عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ

हो जाएं तो यूं कहिए तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें ज़ालिम क़ौम से

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ

नजात दी। और यूं कहिए ऐ मेरे रब! तू मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू

خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا

बेहतरीन उतारने वाला है। यक़ीनन इस में निशानियाँ हैं और यक़ीनन

لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾

हम आज़माने वाले हैं। फिर उन के बाद हम ने दूसरी क़ौमें पैदा कीं।

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ

फिर हम ने उन में भी उन्ही में से रसूल भेजा के तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए

مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ

उस के अलावा कोई माबूद नहीं। क्या फिर तुम डरते नहीं हो? और उन की क़ौम के सरदारों ने कहा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ

जो काफ़िर थे और जिन्हों ने आखिरत की मुलाक़ात को झुठलाया था और हम ने उन्हें दुन्यवी ज़िन्दगी में

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ

आसूदा बना रखा था। उन्हों ने कहा के ये तो नहीं है मगर तुम जैसा एक इन्सान। वो खाता है

مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾

उस में से जो तुम खाते हो और पीता है उस में से जो तुम पीते हो।

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَيَعِدُكُمْ

और अगर तुम केहना मान लोगे अपने जैसे एक इन्सान का तो यक़ीनन तुम खसारा उठाने वाले हो। क्या वो तुम से

اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾

वादा करता है के तुम जब मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे और हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम ज़िन्दा कर के निकाले

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا

जाओगे। दूर है दूर है वो जिस का तुम्हें वादा किया जा रहा है। ये ज़िन्दगी नहीं है मगर हमारी दुन्यवी ज़िन्दगी के

الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنْ هُوَ

हम मरते हैं और हम ज़िन्दा होते हैं और हम दोबारा ज़िन्दा कर के क़बरों से उठाए नहीं जाएंगे। ये नबी

اِلَّا رَجُلُ ۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾

नहीं है मगर एक शख्स जिस ने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है और हम उस पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ

नबी ने कहा के ऐ मेरे रब! तू मेरी नुसरत फरमा इस वजह से के उन्हों ने मुझे झुठलाया। अल्लाह ने फरमाया के

لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ

थोड़े ही दिनों में ये ज़रूर नादिम होंगे। फिर उन को एक चीख ने पकड़ लिया सच्चे वादे पर, फिर हम ने उन्हें

غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾ ثُمَّ اَنْشَاْنَا

कूड़ा करकट बना दिया। फिर नास हो ज़ालिम क़ौम के लिए। फिर हम ने

مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا

उन के बाद दूसरी क़ौमें पैदा कीं। कोई उम्मत अपने मुक़र्ररा वक़्त से न आगे जा सकती है

وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّمَا

और न पीछे हट सकती है। फिर हम ने अपने रसूल लगातार भेजे। जब कभी किसी उम्मत के

جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا

पास उन का रसूल आता तो वो उसे झुठलाते, फिर हम भी उन में से एक के बाद दूसरे को हलाक करते

وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾

चले गए, और हम ने उन को कहानियाँ बना दिया। फिर नास हो ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान नहीं लाती।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ

फिर हम ने मूसा और उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा अपने मोअजिज़ात दे कर और रोशन

مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا

दलील दे कर। फ़िरऔन और उस की जमाअत की तरफ़, तो उन्हों ने तकब्बुर किया और वो बड़ाई मारने वाले

عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَ قَوْمُهُمَا

लोग थे। फिर उन्हों ने कहा क्या हम ईमान लाएं अपने जैसे दो इन्सानों पर हालांके उन की क़ौम

لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾

हमारी गुलाम है। फिर उन्हों ने उन दोनों को झुठलाया, चुनांचे वो हलाक किए जाने वालों में से हो गए।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी, शायद वो लोग हिदायत पाएं।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ

और हम ने मरयम (अलैहस्सलाम) के बेटे और उन की माँ को मोअजिज़ा बनाया और हम ने उन दोनों को ठिकाना दिया एक

ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا

टीले के पास जो ठेहेरने के लाइक़ और चशमे वाला था। ऐ पैग़म्बरो! तुम खाओ

مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۖ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾

पाकीज़ा चीज़ों में से और आमाले सालिहा करो। यक़ीनन मैं तुम्हारे आमाल खूब जानता हूँ।

وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾

और यक़ीनन ये तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं तुम्हारा रब हूँ, तो तुम मुझ से डरो।

فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍ ۢبِمَا لَدَيْهِمْ

फिर वो अपने (दीन के) मुआमले में जमाअतें बन कर टुकड़े टुकड़े हो गए। हर गिरोह उस पर खुश है

فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٥٤﴾ اَيَحْسَبُوْنَ

जो उन के पास है। इस लिए आप उन को उन की गुमराही में एक वक़्त तक छोड़ दीजिए। क्या ये गुमान कर रहे हैं

اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾ۙ نُسَارِعُ لَهُمْ

के जो हम माल और बेटे उन्हें दे रहे हैं, तो हम उन के लिए भलाइयों में जल्दी कर रहे हैं? बल्के

فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ

ये लोग समझते नहीं, यक़ीनन वो जो अपने रब के ख़ौफ़ से

رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾ۙ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾ۙ

डरते हैं। और जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾ۙ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ

और जो अपने रब के साथ शरीक नहीं करते। और देते हैं वो जो भी देते हैं इस हाल में के

مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾ۙ

उन के दिल डर रहे होते हैं के उन्हें अपने रब की तरफ लौट कर जाना है।

اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾

यही लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और वही उस की तरफ सबक़त करने वाले हैं।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ

हम किसी शख्स पर बोझ नहीं डालते मगर उस की ताक़त के मुताबिक़ और हमारे पास किताब (आमालनामा) है जो

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾ بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ

सच्चाई के साथ (हर बात) बतला देगी और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा। बल्के उन के दिल इस से ग़फलत

مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

में हैं और उन के इस के अलावा और भी आमाल हैं जो वो कर रहे हैं।

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾ؕ

यहां तक के जब हम उन के खुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे, तो फौरन वो चिल्लाने लगेंगे।

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ ۫ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ

(कहा जाएगा के) आज मत चिल्लाओ। यक़ीनन तुम्हारी हम से (बचाने के लिए) मदद नहीं की जाएगी। इस लिए

اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾

के हमारी आयतें तुम पर तिलावत की जाती थीं, तो तुम अपनी एड़ियों के बल उल्टे भागते थे।

مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا

तकब्बुर करते हुए, रात में कुरआन के खिलाफ क़िस्सागोई करते, उस को छोड़ते हुए। क्या उन्हों ने इस

الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

बात में ग़ौर नहीं किया या उन के पास आई वो चीज़ जो उन के पेहले बाप दादा के पास नहीं आई?

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

या उन्हों ने अपने रसूल को पेहचाना नहीं, फिर वो उसे अजनबी समझते हैं?

اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَ اَكْثَرُهُمْ

या वो केहते हैं के इस नबी को जुनून है? बल्के वो उन के पास हक़ ले कर आया है और उन में से अक्सर

لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ

हक़ को नापसन्द करते हैं। और अगर हक़ उन की ख्वाहिशात के ताबेअ होता तो आसमान

السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ۭ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ

और ज़मीन और जो उन में हैं सब तबाह हो जाते। बल्के हम उन के पास उन की नसीहत लाए हैं,

فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا

फिर वो अपनी नसीहत से ऐराज़ कर रहे हैं। क्या आप उन से खर्च का सवाल करते हैं?

فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ

फिर आप के रब का दिया हुवा खर्च बेहतर है। और वो बेहतरीन रोज़ी देने वाला है।

لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ الَّذِيْنَ

और यक़ीनन आप उन्हें बुलाते हैं सीधे रास्ते की तरफ। और जो

الربع

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾

आखिरत पर ईमान नहीं रखते वो सीधे रास्ते से मुंह मोड़ रहे हैं।

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَ كَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ

और अगर हम उन पर रहम करें और उन से उस तकलीफ को दूर कर दें जो उन को है तो ज़रूर वो लगे रहेंगे अपनी

يَعْمَهُوْنَ ۞ وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا
शरारत में बेहेकते हुए। यक़ीनन हम ने उन को अज़ाब में पकड़ा, फिर उन्हों ने अपने रब के सामने
لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۞ حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا
न आजिज़ी की और न गिड़गिड़ाए। यहां तक के जब हम ने उन पर सख्त अज़ाब के
ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۞ وَهُوَ الَّذِيْٓ
दरवाज़े खोल दिए तो अचानक वो उस में मायूस हो कर रेह गए। और वही अल्लाह है
اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا
जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। बहोत कम
مَّا تَشْكُرُوْنَ ۞ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ
तुम शुक्र अदा करते हो। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया
وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۞ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَلَهُ
और उसी की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। और वही ज़िन्दा करता है और मारता है और उसी के लिए
اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۞ بَلْ قَالُوْا
रात और दिन का आना जाना है। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? बल्के उन्हों ने कही
مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۞ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا
उसी जैसी बात जो पेहलों ने कही थी। उन्हों ने कहा के क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे और
وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۞ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا
हड्डियाँ हो जाएंगे, तब हम क़बरों से उठाए जाएंगे? यक़ीनन हम से और हमारे बाप दादाओं से भी इस का
هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۞ قُلْ
इस से पेहले वादा किया गया, यक़ीनन ये पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। आप फरमा दीजिए के किस
لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۞ سَيَقُوْلُوْنَ
की मिल्क है ज़मीन और वो चीज़ें जो ज़मीन में हैं अगर तुम्हें मालूम है? अनक़रीब वो कहेंगे के अल्लाह
لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۞ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ
की। आप फ़रमा दीजिए क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? आप फ़रमा दीजिए कौन सातों आसमानों का
وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۞ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا
रब है और अर्शे अज़ीम का रब है? अनक़रीब वो कहेंगे के अल्लाह। आप फरमा दीजिए के क्या फिर तुम

تَتَّقُوۡنَ ﴿٨٧﴾ قُلۡ مَنۡۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوۡتُ كُلِّ شَىۡءٍ وَّهُوَ يُجِيۡرُ

डरते नहीं हो? आप फरमा दीजिए के किस के कब्ज़े में है हर चीज़ की सल्तनत और जो पनाह देता है

وَلَا يُجَارُ عَلَيۡهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوۡلُوۡنَ لِلّٰهِ‌ؕ

और उस पर किसी को पनाह नहीं दी जा सकती अगर तुम्हें मालूम है? अनक़रीब वो कहेंगे के अल्लाह के लिए।

قُلۡ فَاَنّٰى تُسۡحَرُوۡنَ ﴿٨٩﴾ بَلۡ اَتَيۡنٰهُمۡ بِالۡحَقِّ وَاِنَّهُمۡ

आप फ़रमा दीजिए के फिर तुम कहाँ से जादूज़दा हो जाते हो? बल्के हम उन के पास हक़ को लाए हैं और यक़ीनन

لَكٰذِبُوۡنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنۡ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ

वो झूठे हैं। अल्लाह ने औलाद नहीं बनाई और उस के साथ कोई

مِنۡ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعۡضُهُمۡ

माबूद नहीं। तब तो हर माबूद अपनी मखलूक़ को ले कर अलग हो जाता और उन में से एक

عَلٰى بَعۡضٍ‌ؕ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۙ﴿٩١﴾ عٰلِمِ الۡغَيۡبِ

दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह पाक है उन बातों से जो वो बयान कर रहे हैं। जो पोशीदा और ज़ाहिर को

وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿٩٢﴾ قُلۡ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّىۡ

जानने वाला है, फिर बरतर है इस से जो ये शरीक बनाते हैं। आप फरमा दीजिए ऐ मेरे रब! अगर तू मुझे

مَا يُوۡعَدُوۡنَ ۙ﴿٩٣﴾ رَبِّ فَلَا تَجۡعَلۡنِىۡ فِى الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٩٤﴾

दिखाए वो जिस से उन्हें डराया जा रहा है। ऐ मेरे रब! तू मुझे ज़ालिम लोगों में शामिल मत करना।

وَاِنَّا عَلٰٓى اَنۡ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمۡ لَقٰدِرُوۡنَ ﴿٩٥﴾ اِدۡفَعۡ بِالَّتِىۡ

और यक़ीनन हम इस पर क़ादिर हैं के आप को दिखा दें वो अज़ाब जिस से हम उन्हें डरा रहे हैं। आप दफा कीजिए

هِىَ اَحۡسَنُ السَّيِّئَةَ‌ؕ نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَا يَصِفُوۡنَ ﴿٩٦﴾

बुराई को उस तरीक़े से जो बेहतर हो। हम खूब जानते हैं जो कुछ वो बयान कर रहे हैं।

وَقُلۡ رَّبِّ اَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيۡنِ ۙ﴿٩٧﴾ وَاَعُوۡذُ

और आप फरमा दीजिए ऐ मेरे रब! मैं शैतान के वसाविस से तेरी पनाह मांगता हूँ। और मैं तेरी पनाह मांगता

بِكَ رَبِّ اَنۡ يَّحۡضُرُوۡنِ ﴿٩٨﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الۡمَوۡتُ

हूँ इस से के वो मेरे पास हाज़िर हों। यहां तक के जब उन में से किसी एक की मौत आएगी वो कहेगा ऐ

قَالَ رَبِّ ارۡجِعُوۡنِ ۙ﴿٩٩﴾ لَعَلِّىۡۤ اَعۡمَلُ صَالِحًا فِيۡمَا تَرَكۡتُ

मेरे रब! तू मुझे (दुन्या में) वापस लौटा दे। शायद मैं नेक अमल करूँ उस दुन्या में जिस को मैं छोड़ कर आया हूँ।

كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ
हरगिज़ नहीं। यक़ीनन ये (बे मअना) कलाम है जो वो कहे जा रहा है। और उन के पीछे

بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝١٠٠ فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ
बरज़ख है उस दिन तक जिस दिन (क़बरों से) मुर्दे उठाए जाएंगे। फिर जब सूर में फूंक मारी जाएगी

فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝١٠١ فَمَنْ
तो उन के दरमियान उस दिन न रिश्तेदारियाँ होंगी और न वो एक दूसरे को पूछेंगे। फिर जिन के

ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٠٢ وَمَنْ
वज़न के पलड़े भारी होंगे तो ये फ़लाह पाने वाले हैं। और जिन के

خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا
वज़न के पलड़े हलके होंगे ये वो लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों को

اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۝١٠٣ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ
खसारे में डाला, वो जहन्नम में हमेशा रहेंगे। आग उन के चेहरे झुलसा

النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ۝١٠٤ اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى
देगी और वो उस में बदशकल हो कर पड़े रहेंगे। (कहा जाएगा) क्या मेरी आयतें तुम पर तिलावत नहीं

عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝١٠٥ قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ
की जाती थीं, फिर तुम उन आयतों को झुठलाते थे? वो कहेंगे ऐ हमारे रब! हम पर

عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ۝١٠٦ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا
हमारी बदबख्ती ग़ालिब आ गई और हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब! तू हमें जहन्नम से निकाल,

مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ۝١٠٧ قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا
फिर अगर हम दोबारा ऐसा करें तो यक़ीनन हम कुसूरवार हैं। अल्लाह फरमाएंगे के तुम उस में ज़लील हो कर

وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ۝١٠٨ اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِىْ
पड़े रहो और तुम मुझ से बात मत करो। इस लिए के मेरे बन्दों की एक जमाअत केहती

يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ
थी के ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, तू हमारी मग़फिरत कर दे और तू हम पर रहम फरमा और तू बेहतरीन

الرّٰحِمِيْنَ ۝١٠٩ فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ
रहम करने वाला है। तो तुम ने उन्हें मज़ाक़ बनाया था यहां तक के उन्हों ने तुम से मेरी

ذِكْرِىْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿۱۱۰﴾ اِنِّىْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ
याद को भुला दिया था और तुम उन से हंसते रहे। यक़ीनन मैं ने आज उन्हें बदला दिया

بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ
उन के सब्र का के वही कामयाब हैं। अल्लाह पूछेंगे के तुम ज़मीन

فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا
में सालों की गिन्ती के ऐतेबार से कितना रहे? वो कहेंगे के एक दिन

اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿۱۱۳﴾ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا
या एक दिन से भी कम, फिर आप गिनने वालों से पूछ लीजिए। अल्लाह फ़रमाएंगे के तुम नहीं रहे मगर थोड़ा,

لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ
काश के तुम जानते। या फिर तुम ने ये गुमान कर रखा है के हम ने तुम्हें बेकार

عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱۵﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ
पैदा किया है और ये के तुम हमारी तरफ वापस नहीं लाए जाओगे? फिर अल्लाह जो बरहक़ बादशाह है,

الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿۱۱۶﴾ وَمَنْ
वो बरतर है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो अर्शे अज़ीम का रब है। और जो

يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا
अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को पुकारे जिस की उस के पास कोई दलील नहीं, तो उस का हिसाब सिर्फ

حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾
उस के रब के यहां होगा। यक़ीनन काफिर लोग फलाह नहीं पाएंगे।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ ع
और आप केह दीजिए ऐ मेरे रब! तू मग़फिरत फरमा और रहम कर और तू बेहतरीन रहम करने वाला है।

ركوعاتها ۹ (۲۴) سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ (۱۰۲) اٰياتها ۶۴

और ९ रूकूअ हैं सूरह नूर मदीना में नाज़िल हुई उस में ६४ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَ اَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ
ये एक सूरत है जिस को हम ने उतारा है और जिस को हम ने फर्ज़ किया है और इस सूरत में हम ने रोशन आयतें

لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١﴾ اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ

उतारी हैं ताके तुम नसीहत हासिल करो। ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाला मर्द, तो तुम उन में से

وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۪ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ

हर एक को सौ कोड़े मारो। और तुम्हें उन पर रहम न आए

فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ

अल्लाह के हुक्म की तामील में अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और आखिरी दिन पर।

وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اَلزَّانِيْ

और चाहिए के उन को सज़ा देते वक़्त ईमान वालों की एक जमाअत मौजूद रहे। ज़िना करने वाला मर्द

لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ

निकाह नहीं करता मगर ज़िनाकार औरत से या मुशरिक औरत से। और ज़िनाकार औरत से निकाह नहीं करता

اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾

मगर ज़िना करने वाला मर्द या मुशरिक। और ये ईमान वालों पर हराम कर दिया गया है।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ

और जो पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाएं, फिर वो चार गवाह

شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ

न लाएं, तो तुम उन को अस्सी कोड़े मारो और उन की गवाही कभी भी

شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۴﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ

क़बूल न करो। और ये लोग नाफरमान हैं। मगर वो लोग

تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

जिन्हों ने तौबा की उस के बाद और इस्लाह कर ली। तो यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाला,

رَّحِيْمٌ ﴿۵﴾ وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ

निहायत रहम वाला है। और जो अपनी बीवियों पर तोहमत लगाएं और उन के पास गवाह

شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۢ

न हों सिवाए अपने आप के तो उन में से एक की गवाही चार मरतबा अल्लाह की क़सम खा कर गवाही

بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾ وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ

देना है के यक़ीनन वो सच्चा है। और पांचवीं (गवाही में ये कहे) के अल्लाह की

اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٧ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا

लानत है मेरे ऊपर अगर मैं झूठों में से हूँ। और औरत से सज़ा

الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ

टल सकती है के वो चार मरतबा अल्लाह की क़सम खा कर गवाही दे के यक़ीनन ये मर्द

لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٨ ۙ وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ

झूठों में से है। और पांचवीं गवाही (में यूं कहे) के मेरे ऊपर अल्लाह का गज़ब हो

اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٩ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ

अगर वो मर्द सच्चों में से है। और अगर अल्लाह का तुम पर फ़ज़्ल और उस की महरबानी न होती (तो

ع ٢

وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ۝١٠ ع اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ

अज़ाब आ जाता) और ये के अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, हिक्मत वाला है। यक़ीनन वो लोग जो बदतरीन

بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ

झूठ लाए हैं वो तुम ही में से एक जमाअत है। तुम उस को अपने हक़ में बुरा मत समझो। बल्के वो

خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ

तुम्हारे लिए बेहतर है। उन में से हर शख़्स के लिए वो गुनाह है जो उस ने कमाया।

وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١١

और उन में से जो इस झूठ के बड़े हिस्से का ज़िम्मेदार है उस के लिए भारी अज़ाब है।

لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ

जब तुम ने उस को सुना तो ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों ने अपने आप के मुतअल्लिक़ अच्छा गुमान

خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ۝١٢ لَوْلَا جَآءُوْ

क्यूं नहीं किया? और यूँ क्यूं नहीं कहा के ये तो साफ़ झूठ है? वो उस पर

عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ

चार गवाह क्यूं न लाए? फिर जब वो गवाह नहीं लाए

فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝١٣ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ

तो यही लोग अल्लाह के नज़दीक झूठे हैं। और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِىْ مَآ

और उस की महरबानी न होती दुन्या और आखिरत में तो तुम्हें उस की वजह से जिस

اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ
में तुम लगे रहे भारी अज़ाब पहोंचता। जब के तुम उसे अपनी ज़बानों से नक़्ल करते थे

وَ تَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّ تَحْسَبُوْنَهٗ
और तुम अपने मुंह से ऐसी बात केहते थे जिस की तुम्हारे पास कोई दलील नहीं और तुम उसे हल्का

هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾ وَلَوْ لَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ
समझते थे। हालांके वो अल्लाह के नज़दीक बहोत भारी है। और जब तुम ने उस को सुना तो तुम ने यूँ

قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا
क्यूं नहीं कहा के हमारे लिए मुनासिब नहीं के हम ये बात ज़बान पर लाएं। ऐ अल्लाह! तू पाक है, ये

بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا
तो भारी बुहतान है। अल्लाह तुम्हें इस की नसीहत करता है के तुम दोबारा ऐसी हरकत न करना कभी भी

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ
अगर तुम ईमान वाले हो। और अल्लाह तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ आयतें बयान करता है। और अल्लाह

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ
इल्म वाला, हिक्मत वाला है। यक़ीनन वो लोग जो ये चाहते हैं के ईमान वालों में

فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۗ
बेहयाई फैले, उन के लिए दुन्या और आखिरत में दर्दनाक अज़ाब है।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ
और अल्लाह जानता है और तुम जानते नहीं हो। और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की महरबानी

عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ يٰٓاَيُّهَا
तुम पर न होती (तो अज़ाब आता) और ये के अल्लाह निहायत शफ़क़त वाला, रहमत वाला है। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۗ وَمَنْ يَّتَّبِعْ
ईमान वालो! तुम शैतान के क़दम बक़दम मत चलो। और जो शैतान

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ۗ
के क़दम बक़दम चलेगा तो यक़ीनन शैतान बेहयाई और बुरी बातों का हुक्म देता है।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ
और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की महरबानी तुम पर न होती तो तुम में से कोई कभी भी पाक न होता

اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ

(तौबा कर के), लेकिन अल्लाह पाक बना देता है जिसे चाहता है (तौबा क़बूल कर के)। और अल्लाह सुनने वाला,

عَلِيْمٌ ۝٢١ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ

इल्म वाला है। और तुम में से बुज़ुर्गी वाले और वुस्अत वाले इस की क़सम न खाएं

اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ

के वो माल नहीं देंगे रिश्तेदारों को और मिस्कीनों को और अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ

वालों को। बल्के उन्हें चाहिए के वो मुआफ करें और दरगुज़र करें। क्या तुम पसन्द नहीं करते के अल्लाह

اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٢٢ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ

तुम्हारी मग़फिरत कर दे। और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। यक़ीनन वो लोग जो तोहमत

الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۠

लगाते हैं पाकदामन बेखबर ईमान वाली औरतों पर, उन पर लानत है दुन्या और आखिरत में।

وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝٢٣ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ

और उन के लिए भारी अज़ाब है। उस दिन जिस दिन उन के ख़िलाफ़ गवाही देंगी उन की ज़बानें

وَ اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٤ يَوْمَئِذٍ

और उन के हाथ और उन के पैर उन आमाल की जो वो करते थे। जिस दिन

يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ

अल्लाह उन्हें इन्साफ के तक़ाज़े के मुताबिक़ पूरी सज़ा देगा और वो जान लेंगे के अल्लाह

الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ۝٢٥ اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ

बरहक़ है, साफ साफ बयान करने वाला है। बुरी औरतें बुरे मर्दों के लिए हैं और बुरे मर्द

لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ

बुरी औरतों के लिए हैं। और अच्छी औरतें अच्छे मर्दों के लिए हैं और अच्छे मर्द अच्छी औरतों के लिए हैं।

اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ

ये लोग बरी हैं उन बातों से जो वो केह रहे हैं। उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली

كَرِيْمٌ ۝٢٦ ع يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ

रोज़ी है। ऐ ईमान वालो! तुम अपने घरों के अलावा घरों में दाखिल

بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ
मत हो जब तक के तुम इजाज़त न ले लो और वहाँ वालों को सलाम न कर लो। ये

خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ
तुम्हारे लिए बेहतर है ताके तुम नसीहत हासिल करो। फिर अगर तुम उन घरों में किसी को

اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ
न पाओ तो उस में दाखिल मत हो यहां तक के तुम्हें इजाज़त दी जाए। और अगर तुम से कहा जाए

لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
के तुम वापस लौट जाओ तो तुम वापस लौट जाओ, ये तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीज़गी वाला है। और अल्लाह

بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا
तुम्हारे आमाल जानते हैं। तुम पर कोई गुनाह नहीं इस में के तुम दाखिल हो

بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
ऐसे घरों में जिस में रिहाइश न हो, जिस में तुम्हारा सामान हो। और अल्लाह जानता है उन बातों को

مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا
जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। आप फरमा दीजिए ईमान वालों को के वो अपनी निगाहें

مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى
पस्त रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें। ये उन के लिए पाकीज़गी वाला

لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ
है। यक़ीनन अल्लाह बाखबर है उन कामों से जो वो कर रहे हैं। और आप ईमान वाली औरतों से

يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ
केह दीजिए के वो अपनी निगाहें पस्त रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें और अपनी ज़ीनत

وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ
ज़ाहिर न करें मगर वो जो उस में से ज़ाहिर हो जाती हो, और उन्हें चाहिए के अपनी ओढ़नियों के

بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۖ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ
आँचल अपने गिरेबान पर डाल लिया करें। और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें

اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ
मगर अपने शौहरों के सामने या अपने बाप दादा के सामने या अपने शौहरों के बाप दादा के सामने या

اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ

अपने बेटों के सामने या अपने शौहरों के बेटों के सामने या अपने भाइयों के सामने या अपने भाइयों

اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ

के बेटों के सामने या अपनी बेहनों के बेटों के सामने या अपनी औरतों के सामने

اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ

या अपनी ममलूका बांदियों के सामने या उन खादिमों के सामने जो हाजत वाले

مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ

नहीं हैं, (ये फ़ेहरिस्त बालिग़) मर्दों में से (है), या उन बच्चों में से जो अब तक औरतों की छुपी हुई चीज़ों पर

النِّسَآءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ

मुत्तलेअ नहीं हुए। और उन औरतों को चाहिए के वो अपने पैर ज़ोर से न मारें ताके मालूम हो जाए उन की वो

مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ

ज़ीनत जिसे वो छुपा रही हैं। और सब अल्लाह की तरफ़ तौबा करो, ऐ ईमान वालो!

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾ وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ

ताके तुम फ़लाह पाओ। और अपने में से बेनिकाहों का निकाह करा दो और तुम्हारे ग़ुलाम

مِنْ عِبَادِكُمْ وَ اِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ

और तुम्हारी बांदियों में से जो नेक हों उन का निकाह करा दो। अगर वो फ़क़ीर हैं तो अल्लाह

اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٢﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ

उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा। और अल्लाह वुस्अत वाले, इल्म वाले हैं। और चाहिए के पाकदामन

الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ

रहें वो जो निकाह की कुदरत नहीं पाते यहां तक के अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से

مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ

ग़नी कर दे। और जो मुकातब बनना चाहते हैं तुम्हारे ग़ुलाम बांदियों

اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ

में से तो उन्हें मुकातब बना लो अगर तुम उन में भलाई जानो। और उन को दो

مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ

अल्लाह के उस माल में से जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है। और तुम अपनी बांदियों को ज़िना पर

عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ

मजबूर मत करो ताके तुम दुन्यवी ज़िन्दगी का सामान तलाश करो अगर वो पाकदामन रेहना

الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ

चाहें। और जो उन को मजबूर करेगा तो यक़ीनन अल्लाह उन के मजबूर किए जाने के बाद

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ

बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। यक़ीनन हम ने तुम्हारी तरफ़ साफ़ साफ़ आयतें उतारी हैं

وَّ مَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً

और उन लोगों की मिसाल उतारी है जो तुम से पेहले गुज़र चुके और मुत्तक़ियों के लिए नसीहत

لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۴﴾ اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ

उतारी है। अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है। उस के नूर

ركوع ۴

نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ

की मिसाल ऐसी है जैसा के एक ताक़चा जिस में चिराग़ हो। चिराग़ एक शीशे में हो।

اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ

शीशा ऐसा जैसा के चमकता हुवा सितारा, उसे ईंधन दिया जाता है बाबरकत ज़ैतून के

زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ

दरख़्त से जो न मशरिक़ी है और न मग़रिबी। उस का तेल क़रीब है के रोशनी दे दे

وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ

अगर्चे उसे आग न छुई हो। नूर के ऊपर नूर। अल्लाह अपने नूर की तरफ रहनुमाई देता है जिसे

يَّشَآءُ ؕ وَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ

चाहता है। और अल्लाह इन्सानों के लिए मिसालें बयान करते हैं। और अल्लाह हर चीज़ को

شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۳۵﴾ ۙ فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَ يُذْكَرَ

ख़ूब जानने वाले हैं। उन घरों में जिन के बुलन्द किए जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया और जिस में अल्लाह का नाम

فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿۳۶﴾ ۙ

लिए जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया। उन घरों में सुबह व शाम उस की तस्बीह पढ़ते हैं

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ

ऐसे मर्द जिन को न तिजारत ग़ाफ़िल करती है अल्लाह की याद से, न ख़रीद व फ़रोख़्त,

اِقَامِ الصَّلٰوۃِ وَاِیْتَآءِ الزَّکٰوۃِ ۙۛ یَخَافُوْنَ یَوْمًا تَتَقَلَّبُ

न नमाज़ के क़ाइम करने से और न ज़कात देने से ग़ाफिल करती है। वो डरते हैं ऐसे दिन से जिस में

فِیْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿۳۷﴾ لِیَجْزِیَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ

दिल और निगाहें उलट पलट हो जाएंगी। ताके अल्लाह उन को बदला दे उन अच्छे कामों का जो

مَا عَمِلُوْا وَ یَزِیْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ یَرْزُقُ مَنْ

उन्हों ने किए और अपने फज़्ल से उन को मज़ीद दे। और अल्लाह बेहिसाब रोज़ी

یَّشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِیْنَ کَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ

देता है जिसे चाहता है। और वो लोग जो काफिर हैं उन के आमाल ऐसे हैं

کَسَرَابٍۭ بِقِیْعَةٍ یَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓی اِذَا جَآءَهٗ

जैसा के रेगिस्तान की सराब जिसे प्यासा पानी समझता है। यहां तक के जब वो उस के पास आता है

لَمْ یَجِدْهُ شَیْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ

तो उसे कुछ भी नहीं पाता और अल्लाह को उस के पास पाएगा फिर अल्लाह उसे उस का हिसाब पूरा पूरा देगा।

وَاللّٰهُ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ﴿۳۹﴾ اَوْ کَظُلُمٰتٍ فِیْ بَحْرٍ لُّجِّیٍّ

और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। या (काफ़िरों के आमाल का हाल ऐसा है) जैसा के गेहरे समन्दर की

یَّغْشٰهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ

तारीकियाँ जिन को मौज ढांपे हुए है, उस के ऊपर भी मौज, उस मौज के ऊपर बादल।

ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ یَدَهٗ

कई तारीकियाँ उन में से एक दूसरे के ऊपर। जब वो अपना हाथ निकालता है

لَمْ یَکَدْ یَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ یَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ

तो क़रीब भी नहीं है के उस को देख सके। और जिस के लिए अल्लाह ने नूर नहीं बनाया उस के लिए

مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ یُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ

कोई नूर नहीं। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह की तस्बीह करते हैं वो सब ही जो आसमानों में हैं

وَالْاَرْضِ وَالطَّیْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ کُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ

और ज़मीन में हैं और परिन्दे भी सफ बांध कर। हर एक ने अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह को मालूम

وَتَسْبِیْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌۢ بِمَا یَفْعَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَلِلّٰهِ مُلْکُ

कर रखा है। और अल्लाह खूब जानता है वो काम जो वो कर रहे हैं। और अल्लाह के लिए आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝٤٢ اَلَمْ تَرَ

और ज़मीन की सल्तनत है। और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है। क्या आप ने देखा नहीं

اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ

के अल्लाह बादलों को चलाते हैं, फिर उन को जोड़ते हैं, फिर उसे तेह बतेह

رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ

करते हैं? फिर तू देखेगा बारिश को के उस के दरमियान से निकलती है। और वो

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ

आसमान से पहाड़ों को उतारता है जिन में ओला होता है, फिर उसे पहोंचाता है

مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۭ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ

जिसे चाहता है और हटाता है उस को जिस से चाहता है। क़रीब है के उस की बिजली की चमक

يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ۝٤٣ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ

बीनाई को भी सल्ब कर ले। अल्लाह रात और दिन को पलटते हैं।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ۝٤٤ وَاللّٰهُ

यक़ीनन उस में बसीरत वालों के लिए इबरत है। और अल्लाह ने

خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ

हर चलने वाले जानवर को पैदा किया पानी से। फिर उन में से कुछ चलते हैं

عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ

अपने पेट के बल। और उन में से कुछ चलते हैं दो पैरों पर। और उन में से कुछ

مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۭ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

चलते हैं चार पैरों पर। अल्लाह पैदा करता है जिसे चाहता है। यक़ीनन अल्लाह

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٤٥ لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ۭ

हर चीज़ पर कुदरत वाला है। यक़ीनन हम ने साफ़ साफ़ आयतें उतारी हैं।

وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٤٦

और अल्लाह हिदायत देता है जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़।

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى

और ये लोग केहते हैं के हम ईमान लाए अल्लाह पर और रसूल पर और हम ने इताअत की, फिर उन में

فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾

से एक जमाअत उस के बाद ऐराज़ करती है। और ये मोमिन नहीं हैं।

وَإِذَا دُعُوْٓا إِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

और जब उन्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताके वो उन के दरमियान फैसला करे

إِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَإِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ

तो अचानक उन में से एक जमाअत ऐराज़ करती है। और अगर उन का हक़ हो

يَأْتُوْٓا إِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿۴۹﴾ ؕ أَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

तो वो उस की तरफ़ तेज़ दौड़ते हुए आएंगे। क्या उन के दिलों में मर्ज़ है

أَمِ ارْتَابُوْٓا أَمْ يَخَافُوْنَ أَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ؕ

या वो शक करते हैं या वो डरते हैं इस से के अल्लाह और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे?

بَلْ أُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۵۰﴾ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ

बल्के यही लोग ज़ालिम हैं। ईमान वालों का तो केहना ये होता है

إِذَا دُعُوْٓا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ

जब उन्हें अल्लाह और उस के रसूल की तरफ बुलाया जाए ताके वो उन के दरमियान फैसला करे के वो

أَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ؕ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵۱﴾

कहें के “ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ” (हम ने सुन लिया और खुशी से मान भी लिया)। और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَ يَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولٰٓئِكَ

और जो अल्लाह और उस के रसूल की बात खुशी से मानेगा और अल्लाह से डरेगा और तक़्वा इखतियार करेगा

هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَأَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ

तो यही लोग कामयाब होंगे। और ये अल्लाह की क़स्में खाते हैं अपनी क़स्मों को मुअक्कद कर के

لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ

के अगर आप उन को हुक्म दोगे तो ज़रूर वो निकलेंगे। आप फ़रमा दीजिए के तुम क़स्में मत खाओ। तुम्हारी

مَّعْرُوْفَةٌ ؕ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۳﴾ قُلْ

इताअत जानी पेहचानी है। यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है। आप फ़रमा दीजिए

أَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ أَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا

के तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर वो ऐराज़ करें तो उस के ज़िम्मे

عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَ عَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ

वही है जो उस पर बोझ रखा गया है और तुम पर वो है जिस का तुम्हें मुकल्लफ बनाया गया है। और अगर तुम

تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝٥٤

उस की इताअत करोगे तो राह पा जाओगे। और रसूल के ज़िम्मे सिवाए साफ साफ पहोंचा देने के कुछ भी नहीं।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

अल्लाह ने वादा किया है उन लोगों से जो तुम में से ईमान लाए और नेक अमल किए

لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ

के ज़रूर अल्लाह उन्हें ज़मीन में खलीफा बनाएगा जैसा के उन से पेहले वालों को

مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ

खलीफ़ा बनाया। और ज़रूर उन के लिए उन का दीन मज़बूत कर देगा जो उन के लिए अल्लाह ने पसन्द किया है

وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ

और उन के खौफ के बाद उन्हें अमन बदले में देगा। इस लिए के वो मेरी इबादत करते हैं

لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ

और मेरे साथ कोई चीज़ शरीक नहीं ठेहराते। और जो उस के बाद कुफ्र करेंगा तो यही

هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٥٥ وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ

लोग नाफ़रमान हैं। और तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٥٦ لَا تَحْسَبَنَّ

और रसूल का केहना मानो ताके तुम पर रहम किया जाए। तू मत समझ काफिरों को

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ

के ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ कर देंगे। और उन का ठिकाना जहन्नम है।

وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٥٧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ

और वो बुरी जगह है। ऐ ईमान वालो! चाहिए के तुम से (दाखिल होते वक़्त) इजाज़त तलब करें

الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ

तुम्हारे ममलूक (गुलाम बांदियाँ) और वो बच्चे जो तुम में से बुलूग़ की उम्र को नहीं पहोंचे

ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ

तीन मरतबा (इजाज़त तलब करें)। फज्र की नमाज़ से पेहले और जिस वक़्त तुम अपने

ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۗ ثَلٰثُ

कपड़े उतारते हो दोपहर के वक़्त और इशा की नमाज़ के बाद। ये तीन

عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ

तुम्हारे सतर के औक़ात हैं। तुम पर और उन पर इन तीन औक़ात के बाद कोई गुनाह नहीं है।

طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ

इस लिए के वो तुम्हारे पास बार बार आने जाने वाले हैं, तुम में से एक दूसरे के पास। इसी तरह

يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

तुम्हारे लिए अल्लाह आयतों को साफ़ साफ़ बयान करते हैं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं।

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا

और जब तुम में से बच्चे बुलूग़ की उम्र को पहोंच जाएं, तो उन्हें भी चाहिए के इजाज़त लें

كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ

जिस तरह के वो इजाज़त लेते थे जो उन से पेहले थे। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी

اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ

आयतें साफ़ साफ़ बयान करते हैं। और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और औरतों में से

مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ

वो बैठी हुई औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं तो उन पर कोई गुनाह

جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۢ بِزِيْنَةٍ ؕ

नहीं है के वो अपने कपड़े उतारें इस हाल में के वो ज़ीनत को ज़ाहिर करने वाली न हों।

وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾

और ये के वो पाकदामन बन कर रहें ये उन के लिए बेहतर है। और अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ

अन्धे पर कोई हरज नहीं और लंगड़े पर कोई हरज नहीं

وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ

और बीमार पर कोई हरज नहीं और तुम्हारे अपने ऊपर कोई हरज नहीं इस में

اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ

के तुम खाओ अपने घरों से या अपने बाप दादाओं के घरों से या अपनी माओं के

اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ
घरों से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बेहनों के घरों से
اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के
اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ
घरों से या अपनी खालाओं के घरों से या उन घरों से जिन की कुन्जियों के तुम मालिक हो
اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا
या अपने दोस्तों के घरों से। तुम पर कोई गुनाह नहीं है इस में के तुम खाओ
جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا
इकट्ठे या अलग अलग। फिर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो तुम
عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً
अपने आप पर सलाम करो अल्लाह की तरफ से बरकत वाले उम्दा तहीय्ये
طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ
के तौर पर। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें साफ़ साफ़ बयान करते हैं ताके तुम
تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
समझो। ईमान वाले तो वही हैं के जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर
وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ
और उस के रसूल पर, और जब वो रसूल के साथ होते हैं किसी इज्तिमाई काम पर
لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ
तो वो नहीं जाते जब तक के वो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इजाज़त न मांग लें। यक़ीनन जो आप से इजाज़त मांगते
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ
हैं, यही हैं जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस के रसूल पर। फिर जब वो आप से इजाज़त
فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ
तलब करें अपने किसी काम के लिए तो आप इजाज़त दे दीजिए उन में से जिसे आप चाहें,
مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾
और उन के लिए अल्लाह से मग़फिरत तलब कीजिए। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

ع ٨

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ
तुम अपने दरमियान रसूल के बुलाने को तुम्हारे एक दूसरे के बुलाने की तरह

بَعْضًا ۭ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ
मत बनाओ। यक़ीनन अल्लाह जानता है उन लोगों को जो तुम में से चुपके से सरक कर

لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ
निकल जाते हैं। तो जो अल्लाह के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हैं उन्हें डरना चाहिए

اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٦٣
इस से के उन पर कोई आफ़त आ जाए या उन्हें दर्दनाक अज़ाब पहोंचे।

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قَدْ يَعْلَمُ
सुनो! यक़ीनन अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। यक़ीनन अल्लाह जानता है

مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ۭ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ
उस को जिस पर तुम हो। और जिस दिन वो उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे तो वो उन्हें उन के आमाल की ख़बर देगा

بِمَا عَمِلُوْا ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٦٤
जो उन्होंने ने किए। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

ع ٥/١٥

اٰيَاتُهَا ٧٧ (٢٥) سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ (٤٢) رُكُوْعَاتُهَا ٦

उस में ७७ आयतें हैं सूरह फुरक़ान मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ
बुलन्द शान वाला है वो अल्लाह जिस ने हक़ और बातिल के दरमियान फैसला करने वाली किताब उतारी अपने बन्दे

لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ۝١ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
पर ताके वो तमाम जहान वालों के लिए डराने वाला बने। वो अल्लाह जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की

وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ
सल्तनत है और उस ने कोई औलाद नहीं बनाई और उस का सल्तनत में कोई

فِى الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝٢
शरीक नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की, फिर सब की मिक़दार मुतअय्यन कर रखी है।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا

और ये अल्लाह के सिवा कई माबूद क़रार देते हैं, जिन्हों ने कुछ भी पैदा नहीं किया

وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا

बल्के वो खुद पैदा किए गए हैं और अपने जानों के लिए भी किसी नफ़ा नुक़सान के

وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً

मालिक नहीं हैं और मौत और हयात के भी मालिक नहीं हैं

وَّلَا نُشُوْرًا ۝٣ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ

और न ज़िन्दा हो कर उठने के मालिक हैं। और काफ़िर लोग केहते हैं के ये तो नहीं है

اِلَّاۤ اِفْكُ اِفْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚۛ

मगर झूठ जिस को इस नबी ने घड़ लिया है और उस पर दूसरे लोगों ने उस की मदद की है।

فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ۝٤ۚ وَقَالُوْۤا اَسَاطِيْرُ

यक़ीनन वो जुल्म और झूठी बात लाए हैं। और ये लोग केहते हैं के ये तो अगलों की घड़ी हुई

الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً

कहानियाँ हैं जिन्हें इस नबी ने लिख लिया है, फिर वही उस पर सुबह व शाम पढ़ी

وَّاَصِيْلًا ۝٥ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ

जाती हैं। आप फरमा दीजिए के ये उस ने उतारा है जो छुपे हुए भेद जानता है

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا

आसमानों में और ज़मीन में। यक़ीनन वो बख़्शने वाला, निहायत रहम

رَّحِيْمًا ۝٦ وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ

वाला है। और ये कुफ़्फ़ार केहते हैं के ये कैसा रसूल है के वो खाना

الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْلَاۤ اُنْزِلَ

भी खाता है और बाज़ारों में भी चलता है? उस पर कोई फ़रिशता

اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝٧ۙ اَوْ يُلْقٰۤى

क्यूं नहीं उतारा गया जो उस के साथ डराने वाला होता? या उस की

اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ

तरफ खज़ाना डाल दिया जाता या उस के लिए कोई बाग़ होता जिस में से वो खाता।

معانقة ١٠ عند المتأخرين ١٢

وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝٨
और ज़ालिमों ने कहा के तुम तो एक मसहूर शख़्स के पीछे चल पड़े हो।
اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا
आप देखिए के उन्हों ने आप के लिए कैसी मिसालें बयान की हैं, फिर वो गुमराह हो गए,
فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝٩ تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ
अब राह नहीं पा सकते। ऊँची शान वाला है वो अल्लाह
اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ
अगर वो चाहे तो आप के लिए इस से बेहतर बाग़ात बना दे
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَ يَجْعَلْ لَّكَ
जिन के नीचे से नेहरें बेहती हों और आप के लिए महल
قُصُوْرًا ۝١٠ بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۣ وَاَعْتَدْنَا
बना दे। बल्के उन्हों ने क़यामत को झुठलाया। और हम ने
لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝١١ اِذَا رَاَتْهُمْ
उस शख़्स के लिए जो क़यामत को झुठलाए आग तय्यार कर रखी है। जब ये आग
مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا
उन को दूर जगह से देखेगी, तो वो उस आग का ग़ुस्सा और चिल्लाना
وَّ زَفِيْرًا ۝١٢ وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ
सुनेंगे। और जब वो उस जहन्नम में तंग जगह में डाले जाएंगे हाथ पैर जकड़े हुए
دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝١٣ؕ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
तो वहां मौत की दुआ करेंगे। तो (फ़रिशते कहेंगे के) तुम आज एक मौत
وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝١٤ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ
को न पुकारो, बल्के बहोत सी मौतों को पुकारो। आप फ़रमा दीजिए क्या ये बेहतर है
اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ
या हमेशा की वो जन्नत बेहतर है जिस का मुत्तक़ियों से वादा किया गया है? जो
لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا ۝١٥ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ
उन का बदला और ठिकाना है। उन के लिए उस जन्नत में वो तमाम चीज़ें होंगी जो वो चाहेंगे

خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ۝١٦

हमेशा रहेंगे। अल्लाह के ज़िम्मे ये लाज़िम है ऐसे वादे के तौर पर जिस का सवाल किया जा सकता है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

और जिस दिन अल्लाह उन्हें और जिन चीज़ों की ये इबादत करते हैं अल्लाह को छोड़ कर उन को इकट्ठा करेगा

فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِىْ هٰٓؤُلَآءِ

फिर अल्लाह कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह कर रखा था

اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ۝١٧ؕ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ

या वो खुद रास्ते से भटक गए थे? माबूद कहेंगे के आप पाक हैं! हमारे लिए

يَنْۢبَغِىْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ

मुनासिब नहीं था के हम आप के अलावा कोई हिमायती

مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا

बनाते, लेकिन आप ने उन को और उन के बाप दादा को आसूदगी अता की यहां तक के वो ये

الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًاۢ بُوْرًا ۝١٨ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ

ज़िक्र भुला बैठे। और वो हलाक होने वाली क़ौम थी। अब इन माबूदों ने तुम्हारी बातों में तुम्हें झूठा

بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ

ठेहराया, इस लिए अज़ाब हटाने और अपनी नुसरत करने की तुम ताक़त नहीं रख सकोगे।

وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ۝١٩

और जो तुम में से ज़ुल्म करेगा तो हम उसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ

और हम ने आप से पेहले जितने रसूल भेजे

اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ يَمْشُوْنَ

वो सब खाना खाते थे और बाज़ारों में

فِى الْاَسْوَاقِ ؕ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ

चलते थे। और हम ने तुम में से एक को दूसरे के लिए आज़माइश (का ज़रिया) बनाया है।

اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ۝٢٠ ع

क्या तुम सब्र करते हो? और आप का रब सब देख रहा है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا

और उन लोगों ने कहा जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते के हम पर फरिशते क्यूं नहीं उतारे जाते

الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

या (फिर ऐसा क्यूं नहीं होता) के हम खुद अपने रब को देख लेते? यक़ीनन उन्हों ने अपने आप को बहोत बड़ा समझा

وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى

और बहोत बड़ी सरकशी की। जिस दिन वो फरिशतों को देखेंगे तो उस दिन मुजरिमों को खुशी

يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَ يَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾ وَقَدِمْنَآ

नहीं होगी बल्के वो कहेंगे के (खुदाया!) हमें ऐसी पनाह दे के ये हम से दूर हो जाएं। और हम मुतवज्जेह होंगे

اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾ اَصْحٰبُ

उन आमाल की तरफ जो उन्हों ने किए, फिर हम उस को उड़ता हुवा गुबार (की तरह बेकीमत) बना देंगे। जन्नत

الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّ اَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾ وَيَوْمَ

वाले उस दिन अच्छे होंगे ठिकाने के ऐतेबार से और ख्वाबगाह के ऐतेबार से भी अच्छे होंगे। और जिस दिन

تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾

आसमान बादल पर से फट जाएगा और लगातार फ़रिशते उतारे जाएंगे।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِۨالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا

हक़ीक़ी हुकूमत उस दिन रहमान तआला के लिए होगी। और वो दिन काफिरों

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ

पर बड़ा सख्त होगा। और उस दिन ज़ालिम अपने हाथ काटेगा

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾ يٰوَيْلَتٰى

कहेगा के काश के मैं रसूल के साथ (दीन की) राह पर लग जाता। हाए अफसोस!

لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِىْ

काश के फुलाँ को मैं दोस्त न बनाता। उस ने तो मुझ को नसीहत के

عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ

मेरे पास पहोंच चुकने के बाद उस से बेहका दिया। और शैतान तो है ही इन्सान को वक़्त पर

خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا

दग़ा देने वाला। और रसूल कहेंगे ऐ मेरे रब! यक़ीनन मेरी क़ौम इस

هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

कुरआन को बिल्कुल ही छोड़ बैठी थी। और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए

عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ط وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّ نَصِيْرًا ﴿٣١﴾

मुजरिम लोगों को दुशमन बनाया है। और आप का रब हिदायत देने और मदद करने के लिए काफी है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً

और काफिरों ने कहा के इस नबी पर कुरआन इकट्ठा एक ही मरतबा क्यूं नहीं उतारा

وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ

गया? इसी तरह (हम ने उतारा है) ताके हम उस के ज़रिए आप के दिल को मज़बूत करें और हम ने उस को

تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ

ठेहेर ठेहेर कर पढ़वाया है। और वो आप के पास कोई मिसाल नहीं लाते मगर हम आप को उस का ठीक ठीक जवाब

وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾ ط اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ

और ज़्यादा वज़ाहत के साथ इनायत कर देते हैं। वो लोग जिन को अपने चेहरों के बल जहन्नम की तरफ़

اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾ ع وَلَقَدْ

ले जाया जाएगा। ये लोग जगह में भी बदतर और रास्ते से भी ज़्यादा भटके हुए हैं। यक़ीनन

اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ جَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ

हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी और हम ने उन के साथ उन के भाई हारून को मददगार

وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾ ج فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

बनाया था। फिर हम ने कहा के तुम दोनों जाओ उस क़ौम की तरफ जिन्हों ने हमारी आयतों को

بِاٰيٰتِنَا ط فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾ ط وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا

झुठलाया है। फिर हम ने उन्हें मलयामेट कर दिया। और क़ौमे नूह को जब उन्हों ने पैग़म्बरों को

الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ط وَاَعْتَدْنَا

झुठलाया, तो हम ने उन को ग़र्क़ कर दिया और हम ने उन को इन्सानों के लिए एक निशाने (इबरत) बना दिया। और हम ने

لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾ ج وَّعَادًا وَّثَمُوْدَاْ وَاَصْحٰبَ

ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। और क़ौमे आद और समूद और रस वालों को और

الرَّسِّ وَ قُرُوْنًاۢ بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

उस के दरमियान बहोत सी क़ौमों को हलाक किया। और हम ने उन में से हर एक को समझाने के लिए मिसालें

مع عند المتقدمين ١٢

ع ٣

الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝٣٩ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ

बयान कीं। और (जब वो न माने तो) हम ने सब को बिल्कुल ही बरबाद कर दिया। और ये (कुफ़्फ़ारे मक्का) उस बस्ती पर

الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ

गुज़रते रहे हैं जिस पर बहोत बुरी तरह (पथ्थरों की) बारिश बरसाई गई थी। क्या फिर ये उस को देखते नहीं रहे?

بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝٤٠ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ

बल्के ये क़बरों से ज़िन्दा हो कर उठने की उम्मीद नहीं रखते। और जब ये आप को देखते हैं तो आप का मज़ाक़ ही

اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝٤١ اِنْ كَادَ

बनाते हैं। (और केहते हैं) क्या यही वो शख़्स है जिस को अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है? ये शख़्स तो क़रीब था

لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ

के हमें हमारे माबूदों से गुमराह कर देता अगर हम उस पर मज़बूत न रेहते। और अनक़रीब

يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٤٢

उन्हें मालूम हो जाएगा जब वो अज़ाब देखेंगे के कौन ज़्यादा गुमराह है?

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ

क्या आप ने देखा उस शख़्स को जिस ने अपना माबूद अपनी ख़्वाहिश को बना लिया है? क्या फिर आप उस के

وَكِيْلًا ۝٤٣ۙ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ

ज़िम्मेदार रेह सकते हैं? क्या आप ये समझते हैं के उन में से अक्सर सुनते या समझते हैं?

اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٤٤ۧ اَلَمْ تَرَ

ये तो सिर्फ चौपाओं की तरह हैं, बल्के उन से भी ज़्यादा गुमराह हैं। क्या आप ने देखा नहीं अपने रब को

اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَاۗءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ

के उस ने साए को कैसे लम्बा किया? अगर वो चाहता तो उस को एक हालत पर ठेहराया हुवा रखता।

ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝٤٥ۙ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا

फिर हम ने उस का रहनुमा सूरज बनाया। फिर हम ने उस को अपनी तरफ

قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝٤٦ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا

आहिस्ता आहिस्ता समेट लिया। और वही अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिए रात को लिबास (परदे की चीज़)

وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۝٤٧ وَهُوَ الَّذِيْٓ

और नींद को आराम की चीज़ बनाया और दिन को दोबारा उठ खड़े होने का ज़रिया बनाया। और वही अल्लाह है जो

ع ٢

اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَیْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا
खुशख़बरी देने के लिए अपनी रहमत (की बारिश) से पेहले हवाएं भेजता है। और हम ने आसमान

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۝۴۸ لِّنُحْیِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّ نُسْقِيَهٗ
से पाक करने वाला पानी उतारा। ताके हम उस के ज़रिए मुर्दा इलाक़ा ज़िन्दा कर दें और वो पानी हम पिलाते हैं

مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِیَّ كَثِيْرًا ۝۴۹ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ
अपनी मखलूक़ में से चौपाओं को और बहोत से इन्सानों को। यक़ीनन वो पानी कई तरीक़ों से उन के दरमियान

بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝۵۰
हम ने तक़सीम किया ताके वो नसीहत पकड़ें। फिर भी अक्सर लोग नाशुकरी किए बग़ैर न रहे।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِیْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝۵۱ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ
और अगर हम चाहते तो हम हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। तो आप काफिरों का केहना न मानिए

وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝۵۲ وَهُوَ الَّذِیْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
और उन के साथ आप बड़ा जिहाद कीजिए। और वही अल्लाह है जिस ने दो समन्दर मिला कर चलाए,

هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا
ये मीठा प्यास बुझाने वाला है और ये नमकीन कड़वा है। और हम ने उन दोनों के दरमियान

بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝۵۳ وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ
एक आड़ बना दी है और एक मज़बूत रोक रख दी है। और वही अल्लाह है जिस ने पानी से

بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ۝۵۴
इन्सान पैदा किया, फिर उस को खानदान वाला और सुसराल वाला बनाया। और तेरा रब कुदरत वाला है।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ
और ये अल्लाह के अलावा ऐसी चीज़ें पूजते हैं जो उन को न नफा दे सकती हैं और न उन को ज़रर पहोंचा सकती हैं।

الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ۝۵۵ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا
और काफ़िर अपने रब के खिलाफ मदद करने वाला है। और हम ने आप को सिर्फ़ बशारत देने वाला और डराने

وَّنَذِيْرًا ۝۵۶ قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ
वाला बना कर भेजा है। आप फ़रमा दीजिए के मैं तुम से इस पर कोई उजरत नहीं मांगता मगर वो जो चाहे

اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝۵۷ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَیِّ الَّذِیْ
के अपने रब की तरफ़ रास्ता पकड़ ले। और आप तवक्कुल कीजिए उस ज़िन्दा ज़ात पर जिसे

لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرَا ۚ﴿۵٨﴾

मौत नहीं आएगी और उस की हम्द के साथ तस्बीह बयान कीजिए। और वो अपने बन्दों के गुनाहों की खबर रखने

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ

वाला काफी है। वो अल्लाह है जिस ने आसमानों और ज़मीन और वो चीज़ें जो उन के दरमियान में हैं छे दिन में

اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ

पैदा कीं, फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा। जो रहमान है, इस लिए उस के मुतअल्लिक़ किसी बाखबर से

خَبِيْرًا ﴿۵٩﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا

पूछ लें। और जब उन से कहा जाता है के रहमान को सज्दा करो तो वो केहते हैं के रहमान क्या चीज़

وَمَا الرَّحْمٰنُ ق اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿٦٠﴾ تَبٰرَكَ

है? क्या हम सज्दा करें उसे जिस का आप हमें हुक्म दें और ये चीज़ उन्हें नफ़रत में और बढ़ाती है। बरतर है

الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا

वो अल्लाह जिस ने आसमान में बुर्ज बनाए और जिस ने आसमान में सूरज

وَّ قَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً

और रोशन चाँद बनाया। और अल्लाह ही ने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया

لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ

उस के लिए जो ग़ौर करना चाहे या शुक्र अदा करना चाहे। और रहमान तआला के बन्दे

الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ

वो हैं जो ज़मीन पर चलते हैं आहिस्तगी से और जब उन से जाहिल लोग मुखातब

الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ

होते हैं तो वो केह देते हैं अस्सलामु अलैकुम। और जो अपने रब के सामने सज्दा और क़याम की हालत

سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا

में रात गुज़ारते हैं। और जो यूँ केहते हैं के ऐ हमारे रब! हम से जहन्नम का

عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦۵﴾ اِنَّهَا سَآءَتْ

अज़ाब हटा दे। यक़ीनन उस का अज़ाब चिमट जाने वाला है। यक़ीनन जहन्नम ठेहेरने और

مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا

रेहने की बुरी जगह है। और (रहमान तआला के बन्दे वो हैं के) जब वो खर्च करते हैं तो इसराफ नहीं करते

وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ

और तंगी नहीं करते और उन का खर्च उस के दरमियान ऐतेदाल से होता है। और जो

لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ

अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद नहीं पुकारते और उस जान को क़त्ल नहीं करते जिसे

حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ

अल्लाह ने हराम क़रार दिया मगर हक़ में और जो ज़िना नहीं करते। और जो ऐसा करेगा तो वो गुनाह

اَثَامًا ۙ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ

पाएगा। उस के लिए अज़ाब क़यामत के दिन दुगना किया जाएगा और वो उस अज़ाब में

فِيْهٖ مُهَانًا ۖ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا

ज़लील हो कर पड़ा रहेगा। मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए

فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

तो अल्लाह उन की बुराइयाँ नेकियों से बदल देगा। और अल्लाह बहोत ज़्यादा

غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और जो तौबा करे और नेक अमल करे तो यक़ीनन वो अल्लाह

اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا

की तरफ़ तौबा कर रहा है। और (रहमान के बन्दे वो हैं) जो बुराई में शरीक नहीं होते और जब वो लग़वीय्यात पर

بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ

गुज़रते हैं तो वक़ार के साथ गुज़र जाते हैं। और जब उन्हें अपने रब की आयतों के साथ नसीहत की जाती है

لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ

तो उस पर बेहरे और अन्धे हो कर नहीं गिरते। और जो केहते हैं के

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ

ऐ हमारे रब! हमारे लिए अपनी बीवियों और अपनी औलाद की तरफ से आँखों की ठन्डक अता फ़रमा

وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ

और हमें मुत्तक़ियों का पेशवा बना। ये वो हैं जिन्हें उन के सब्र के इवज़ (जन्नत की) बालाई मन्ज़िलें

بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۙ﴿٧٥﴾ خٰلِدِيْنَ

मिलेंगी और वहाँ तहीय्या और सलाम के साथ सब उन्हें मिलने आएंगे। वो उन में हमेशा

فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٧٦ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ

रहेंगे। वो जन्नत ठेहेरने और रेहने कि लिए कितनी अच्छी है। आप फ़रमा दीजिए के मेरे रब को तुम्हारी कोई

لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝٧٧

परवाह नहीं अगर तुम न भी पुकारो। अब तुम तो झुठला चुके, फिर अनक़रीब ये अज़ाब चिपक कर रहेगा।

اٰيَاتُهَا ٢٢٧ (٢٦) سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ (٤٧) رُكُوْعَاتُهَا ١١

उस में २२७ आयतें हैं सूरह शुअरा मक्का में नाज़िल हुई और ११ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طٰسٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ

ता सीन मीम। ये साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं। शायद आप अपने को हलाक

نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٣ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ

कर बैठें इस वजह से के वो ईमान नहीं लाते। अगर हम चाहें तो उन पर

مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ۝٤

आसमान से कोई मोअजिज़ा उतार दें, फिर उन की गर्दनें उस के सामने झुकी रेह जाएं।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ

और उन के पास रहमान की तरफ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वो उस से

مُعْرِضِيْنَ ۝٥ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

ऐराज़ करते हैं। फिर उन्हों ने झुठलाया, फिर उन के पास उस की हक़ीक़त आ जाएगी जिस का वो इस्तिहज़ा

يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا

किया करते थे। क्या उन्हों ने देखा नहीं ज़मीन की तरफ़ के हम ने ज़मीन

فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝٧ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا

में कितने खूबसूरत जोड़े उगाए। यक़ीनन उस में निशानी है। और

كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ

उन में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। और यक़ीनन आप का रब वो ज़बर्दस्त है,

الرَّحِيْمُ ۝٩ ع وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ

निहायत रहम वाला है। और जब आप के रब ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को पुकारा के आप ज़ालिम क़ौम के पास

الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿۱۰﴾ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿۱۱﴾ قَالَ رَبِّ

जाइए। फिरऔन की क़ौम के पास। क्या वो डरते नहीं हैं? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब!

اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ؕ﴿۱۲﴾ وَ يَضِيْقُ صَدْرِيْ

यक़ीनन मैं डरता हूँ इस से के वो मुझे झुठलाएं। और मेरा सीना तंग होता है

وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَلَهُمْ عَلَيَّ

और मेरी ज़बान चलती नहीं, इस लिए हारून की तरफ रिसालत भेजिए। और उन का मुझ पर

ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۚ﴿۱۴﴾ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا

एक गुनाह है, तो मैं डरता हूँ के वो मुझे क़त्ल कर देंगे। अल्लाह ने फरमाया के हरगिज़ नहीं। फिर आप दोनों

بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿۱۵﴾ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ

जाओ हमारे मोअजिज़ात ले कर, यक़ीनन हम तुम्हारे साथ सुन रहे हैं। फिर तुम जाओ फिरऔन के पास, फिर उस से

اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱۶﴾ اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ

कहो के हम रब्बुल आलमीन के भेजे हुए पैग़म्बर हैं। तो तू हमारे साथ बनी इस्राईल को

اِسْرَآءِيْلَ ؕ﴿۱۷﴾ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ

भेज दे। फ़िरऔन बोला क्या हम ने तुझे अपने यहाँ बचपन में नहीं पाला और तू

فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۙ﴿۱۸﴾ وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ

हमारे अन्दर अपनी उम्र के कई साल नहीं रहा? और तू ने की वो हरकत जो

فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹﴾ قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا

की और तू नाशुकरी करने वालों में से था? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के मैं ने वो हरकत की उस वक्त

مِنَ الضَّآلِّيْنَ ؕ﴿۲۰﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ

जब के मैं नावाक़िफ था। फिर मैं तुम से भाग गया जब मैं तुम से डरा तो मुझे

لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّ جَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۲۱﴾ وَ تِلْكَ

मेरे रब ने नुबूव्वत अता की और मुझे रसूलों में से बना दिया। और ये कोई

نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ؕ﴿۲۲﴾

एहसान है जो तू मुझ पर जतला रहा है उस के मुक़ाबले में के तू ने बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा है?

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ﴿۲۳﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

फिरऔन पूछने लगा और तमाम जहानों की परवरिश करने वाली चीज़ क्या है? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के वो आसमानों

وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ۝٢٤ قَالَ لِمَنْ

और ज़मीन और उन चीज़ों का रब है जो उन के दरमियान में हैं, अगर तुम यक़ीन रखते हो। फ़िरऔन ने उन से

حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ۝٢٥ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ

कहा जो उस के इर्द गिर्द थे, क्या तुम सुनते नहीं हो? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया वो तुम्हारा और तुम्हारे पेहले

الْاَوَّلِيْنَ۝٢٦ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ

बाप दादाओं का रब है। फिरऔन बोला के यक़ीनन तुम्हारा ये पैग़म्बर जो तुम्हारी तरफ रसूल बना कर भेजा गया है

لَمَجْنُوْنٌ۝٢٧ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ

पागल है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के वो तो मशरिक़ और मग़रिब और उन दो के दरमियान की तमाम चीज़ों का

اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ۝٢٨ قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ

रब है, अगर तुम अक़्ल रखते हो। फिरऔन बोला के अगर तुम मेरे अलावा किसी को माबूद बनाओगे तो

لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ۝٢٩ قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ

मैं तुम्हें क़ैदियों में से बना दूंगा। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के क्या अगर्चे मैं तेरे पास कोई रोशन दलील

مُّبِيْنٍ۝٣٠ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ۝٣١

लाऊँ, तब भी? फ़िरऔन बोला के फिर तू उस को पेश कर अगर तू सच्चा है।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ۝٣٢ وَّ نَزَعَ يَدَهٗ

फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना असा डाला, तो फौरन वो साफ़ अज़दहा बन गया। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना हाथ खींचा

فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ۝٣٣ قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ

तो उसी वक़्त वो देखने वालों के सामने रोशन बन गया। फ़िरऔन ने दरबारियों से कहा जो उस के इर्द गिर्द थे,

اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ۝٣٤ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ

यक़ीनन ये शख़्स ज़रूर माहिर जादूगर है। जो चाहता है के तुम्हें तुम्हारे मुल्क से अपने जादू के ज़ोर से निकाल

بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ۝٣٥ قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ

दे। फिर तुम क्या मशवरा देते हो? दरबारियों ने कहा के उसे और उस के भाई को मुहलत दो और शेहरों

فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ۝٣٦ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ۝٣٧

में जादूगरों को इकट्ठा करने वाले भेज दो। जो तुम्हारे पास हर माहिर जादूगर को ले आएं।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ۝٣٨ وَّقِيْلَ

फिर जादूगर जमा किए गए मुक़र्ररा दिन के मुक़र्ररा वक़्त पर। और लोगों से

لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ

कहा गया, क्या तुम जमा हो गए? ताके हम जादूगरों का इत्तिबा करें

اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا

अगर वो ग़ालिब रहें। फिर जब जादूगर आए तो उन्हों ने

لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾

फ़िरऔन से कहा क्या हमें मज़दूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब रहेंगे?

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى

फ़िरऔन बोला के जी हाँ! और तुम उस वक़्त मुक़र्रबीन में शामिल कर दिए जाओगे। उन से मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया

اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ

के तुम डालो जो तुम डालने वाले हो। तो उन्हों ने अपनी रस्सियों और अपनी लाठियों को डाला

وَ قَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى

और उन्हों ने कहा के फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम! यक़ीनन हम ही ग़ालिब रहेंगे। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना

مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾ فَاُلْقِيَ

असा डाला, तो अचानक वो निगलने लगा उन चीज़ों को जो वो झूठ बना कर लाए थे। फिर

السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿٤٦﴾ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

जादूगर सज्दे में गिर गए। केहने लगे, हम ईमान लाए तमाम जहानों के रब पर।

رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ

मूसा और हारून के रब पर। फिरऔन ने पूछा क्या तुम उस पर ईमान लाए इस से पेहले के मैं तुम्हें

اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ

इजाज़त दूं? यक़ीनन मूसा तुम में सब से बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखलाया।

فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۬ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ

तो अनक़रीब तुम्हें पता चल जाएगा। मैं तुम्हारे हाथ और पैर जानिबे मुख़ालिफ़ से काट

مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ز

दूंगा और तुम सब को सूली पर चढ़ाऊँगा। उन्हों ने कहा के नुक़सान कोई नहीं।

اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا

यक़ीनन हम तो अपने रब की तरफ पलट कर जाएंगे। यक़ीनन हम तो इस का लालच रखते हैं के हमारा रब हमारी

رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾ وَاَوْحَيْنَآ

ख़ताएं बख़्श दे के हम सब से पेहले ईमान लाने वाले हैं। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम)

اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾

को हुक्म दिया के मेरे बन्दों को ले कर रात के वक़्त निकल जाइए, इस लिए के तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ

चुनांचे फ़िरऔन ने शेहरों में जमा करने वालों को भेजा। के यक़ीनन ये तो

لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾

एक छोटा सा गिरोह है। और उन्हों ने हमें गुस्सा दिलाया है।

وَ اِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ

और यक़ीनन हम इकट्ठे हो कर ही डरा देंगे। फिर हम ने उन्हें बाग़ात से और चशमों

وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّكُنُوْزٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ

से निकाला। और ख़ज़ानों से और उम्दा रेहने की जगहों से। इसी तरह। और हम

وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾

ने उन चीज़ों का वारिस बनी इस्राईल को बनाया। फिर फ़िरऔनियों ने उन का पीछा किया सूरज निकलते हुए।

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾

फिर जब दोनों जमाअतों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अलैहिस्सलाम) के साथी केहने लगे यक़ीनन हम तो पकड़ लिए गए।

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया हरगिज़ नहीं। यक़ीनन मेरे साथ मेरा रब है, अनक़रीब वो मुझे रास्ता दिखाएगा। तो हम ने

اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ

मूसा (अलैहिस्सलाम) को हुक्म दिया के अपना असा समन्दर पर मारिए। तो समन्दर फट गया और हर

كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾

हिस्सा अज़ीम पहाड़ की तरह हो गया। और हम ने वहाँ दूसरों को क़रीब पहोंचा दिया।

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا

और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन तमाम को जो आप के साथ थे नजात दी। फिर हम ने दूसरों को

الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

ग़र्क़ कर दिया। यक़ीनन उस में इबरत है। और उन में से अक्सर ईमान लाने वाले

مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾ وَاتْلُ

नहीं थे। और यक़ीनन तेरा रब वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। और उन के सामने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾

का क़िस्सा तिलावत कीजिए। जब इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने अब्बा और अपनी क़ौम से पूछा किन चीज़ों की तुम इबादत

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ

करते हो? वो बोले के हम इबादत करते हैं बुतों की, फिर हम उस पर जमे रेहते हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया

يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾

क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो? या तुम्हें नफा दे सकते हैं या ज़रर पहोंचा सकते हैं?

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ

वो बोले बल्के हम ने हमारे बाप दादा को इसी तरह करते पाया। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ

ने देखा जिन चीज़ों की इबादत करते थे। तुम और तुम्हारे गुज़श्ता

الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾

आबा व अजदाद। तो यक़ीनन ये मेरे दुशमन हैं सिवाए तमाम जहानों के रब के।

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ

जिस ने मुझे पैदा किया, वो मुझे रास्ता दिखाता है। और वही अल्लाह मुझे खाना

وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِيْ

पीना देता है। और जब मैं बीमार होता हूँ तो वो मुझे शिफ़ा देता है। और वही मुझे मौत

يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ

देगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा। और वही अल्लाह है जिस से मुझे तवक्कुअ है के वो मेरी ख़ताएं

خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ

हिसाब के दिन बख़्श देगा। ऐ मेरे रब! मुझे हुक्म अता फ़रमा और मुझे सुलहा

بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ

के साथ मिला दे। और मेरा ज़िक्रे ख़ैर पीछे आने वालों में

فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾

रख दे। और मुझे जन्नते नईम के वुरसा में से बना दे।

ع ٤ وقف لازم

وَاغۡفِرۡ لِاَبِىۡۤ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيۡنَ ۙ‏ ﴿۸۶﴾ وَلَا تُخۡزِنِىۡ يَوۡمَ

और तू मेरे अब्बा की मग़फिरत कर दे, यक़ीनन वो गुमराह लोगों में से था। और तू मुझे उस दिन रूस्वा न करना

يُبۡعَثُوۡنَ ۙ‏ ﴿۸۷﴾ يَوۡمَ لَا يَنۡفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوۡنَ ۙ‏ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنۡ

जिस दिन मुर्दे क़बरों से ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। जिस दिन माल और बेटे नफा नहीं देंगे। मगर वो शख्स

اَتَى اللّٰهَ بِقَلۡبٍ سَلِيۡمٍ ؕ‏ ﴿۸۹﴾ وَاُزۡلِفَتِ الۡجَـنَّةُ لِلۡمُتَّقِيۡنَ ۙ‏ ﴿۹۰﴾

जो अल्लाह के पास क़ल्बे सलीम ले कर आया। और जन्नत मुत्तक़ियों के क़रीब कर दी जाएगी।

وَبُرِّزَتِ الۡجَحِيۡمُ لِلۡغٰوِيۡنَ ۙ‏ ﴿۹۱﴾ وَقِيۡلَ لَهُمۡ اَيۡنَمَا كُنۡتُمۡ

और जहन्नम गुमराहों के सामने कर दी जाएगी। और उन से कहा जाएगा के कहाँ हैं वो माबूद

تَعۡبُدُوۡنَ ۙ‏ ﴿۹۲﴾ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ هَلۡ يَنۡصُرُوۡنَكُمۡ

जिन की तुम अल्लाह के अलावा इबादत करते थे? क्या वो तुम्हारी मदद या अपना बचाव कर

اَوۡ يَنۡتَصِرُوۡنَ ؕ‏ ﴿۹۳﴾ فَكُبۡكِبُوۡا فِيۡهَا هُمۡ وَالۡغَاوٗنَ ۙ‏ ﴿۹۴﴾ وَجُنُوۡدُ

सकते हैं? फिर उस में औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे, वो भी और तमाम सरकश भी। और इबलीस

اِبۡلِيۡسَ اَجۡمَعُوۡنَ ؕ‏ ﴿۹۵﴾ قَالُوۡا وَهُمۡ فِيۡهَا يَخۡتَصِمُوۡنَ ۙ‏ ﴿۹۶﴾

के तमाम लशकर भी। वो कहेंगे इस हाल में के वो जहन्नम में आपस में झगड़ रहे होंगे।

تَاللّٰهِ اِنۡ كُنَّا لَفِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ۙ‏ ﴿۹۷﴾ اِذۡ نُسَوِّيۡكُمۡ بِرَبِّ

अल्लाह की क़सम! यक़ीनन हम खुली गुमराही में थे। जब के हम रब्बुल आलमीन के साथ (शुरका को) बराबर

الۡعٰلَمِيۡنَ‏ ﴿۹۸﴾ وَمَاۤ اَضَلَّنَاۤ اِلَّا الۡمُجۡرِمُوۡنَ‏ ﴿۹۹﴾ فَمَا لَنَا

क़रार देते थे। और हमें तो उन मुजरिमों ने ही गुमराह किया है। फिर हमारा न कोई

مِنۡ شَافِعِيۡنَ ۙ‏ ﴿۱۰۰﴾ وَلَا صَدِيۡقٍ حَمِيۡمٍ‏ ﴿۱۰۱﴾ فَلَوۡ اَنَّ لَنَا

सिफारिश करने वाला है। और न कोई ग़मख्वार दोस्त है। तो काश के हमारे लिए दुन्या में पलट कर

كَرَّةً فَنَكُوۡنَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ‏ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰ لِكَ لَاٰيَةً ؕ

जाना हो तो हम ईमान लाने वालों में से हो जाएं। यक़ीनन उस में इबरत है।

وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ‏ ﴿۱۰۳﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ

और उन (कुफ़्फ़ार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं। और यक़ीनन तेरा रब वो ज़बर्दस्त है,

الرَّحِيۡمُ ‏﴿۱۰۴﴾ كَذَّبَتۡ قَوۡمُ نُوۡحِ اۨلۡمُرۡسَلِيۡنَ ۖۚ‏ ﴿۱۰۵﴾ اِذۡ قَالَ

निहायत रहम वाला है। इसी तरह नूह (अलैहिस्सलाम) की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया। जब उन से

لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٠٦ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ
उन के भाई नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं हो? यक़ीनन मैं तुम्हारा अमानतदार

اَمِيْنٌ ۝١٠٧ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝١٠٨ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ
रसूल हूँ। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा केहना मानो। और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का

مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٩ فَاتَّقُوا
सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो सिर्फ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। तो तुम अल्लाह

اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝١١٠ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ
से डरो और मेरा केहना मानो। वो बोले क्या हम आप पर ईमान लाएं हालांके रज़ील लोगों ने आप का

الْاَرْذَلُوْنَ ۝١١١ قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١١٢
इत्तिबा किया है? नूह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के और मुझे क्या मालूम वो काम जो वो करते थे।

اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ۝١١٣ وَمَآ اَنَا
उन का हिसाब तो सिर्फ़ मेरे रब के ज़िम्मे है, काश तुम समझो। और मैं ईमान लाने वालों

بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١١٤ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١١٥ قَالُوْا
को धुतकारने वाला नहीं हूँ। मैं तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। उन्हों ने कहा

لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ۝١١٦ قَالَ
के ऐ नूह! अगर तुम बाज़ न आए, तो तुम्हें पथ्थर मार मार कर हलाक कर दिया जाएगा। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया

رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ۝١١٧ فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا
ऐ मेरे रब! यक़ीनन मेरी क़ौम ने मुझे झुठलाया। अब तू मेरे और उन के दरमियान फ़ैसला कर दे

النصف

وَّ نَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١١٨ فَاَنْجَيْنٰهُ
और बचा ले मुझे और उन को जो मेरे साथ ईमान लाए हैं। फिर हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को नजात दी

وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝١١٩ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ
और उन लोगों को जो आप के साथ भरी हुई कशती में थे। फिर हम ने बाक़ी लोगों को उस के बाद

الْبٰقِيْنَ ۝١٢٠ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
ग़र्क़ कर दिया। यक़ीनन उस में इबरत है। और उन (कुफ्फार) में से अक्सर ईमान लाने

مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٢١ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٢٢ كَذَّبَتْ
वाले नहीं हैं। और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। क़ौमे आद

ع ٦ / ١٠

عَادُ ۨ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٢٣ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ

ने पैग़म्बरों को झुठलाया। जब उन के भाई हूद (अलैहिस्सलाम) ने उन से फरमाया

اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٢٤ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٢٥ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

क्या तुम डरते नहीं हो? यक़ीनन मैं तुम्हारा अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो

وَاَطِيْعُوْنِ ۝١٢٦ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ

और मेरा केहना मानो। और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो

اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٢٧ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً

सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। क्या तुम हर टीले पर निशान तामीर करते हो अबस काम करते

تَعْبَثُوْنَ ۝١٢٨ وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۝١٢٩

हुए? और तुम कारख़ाने बनाते हो, शायद तुम्हें हमेशा रेहना है।

وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۝١٣٠ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

और जब किसी को पकड़ते हो तो ज़ालिम बन कर पकड़ते हो। अब अल्लाह से डरो

وَاَطِيْعُوْنِ ۝١٣١ وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۝١٣٢

और मेरा केहना मानो। और उस अल्लाह से डरो जिस ने तुम्हारी इमदाद की उन चीज़ों से जो तुम जानते हो।

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ۝١٣٣ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝١٣٤ اِنِّيْٓ

उस ने तुम्हारी चौपाओं और बेटों, और बाग़ात और चशमों के ज़रिए इमदाद की। यक़ीनन मैं

اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٣٥ قَالُوْا سَوَآءٌ

तुम पर एक भारी दिन के अज़ाब से डरता हूँ। वो बोले हम पर

عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ۝١٣٦ اِنْ هٰذَآ

बराबर है आप हमें नसीहत करें या न करें। ये तो

اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣٧ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝١٣٨ فَكَذَّبُوْهُ

सिर्फ़ पेहले लोगों की आदतें हैं। और हम पर तो अज़ाब आएगा नहीं। तो उन्हों ने हूद (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया,

فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ

फिर हम ने उन्हें हलाक कर दिया। यक़ीनन उस में इबरत है। और उन (कुफ़्फ़ार) में से अक्सर ईमान लाने

مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٣٩ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٤٠ كَذَّبَتْ

वाले नहीं हैं। और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। क़ौमे समूद

ع ٨

ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ

ने पैग़म्बरों को झुठलाया। जब उन से उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया

اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٤٣﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

क्या तुम डरते नहीं हो? यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो

وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ

और मेरी इताअत करो। और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता।

اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٥﴾ اَتُتْرَكُوْنَ فِىْ

मेरी उजरत तो सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। क्या तुम छोड़ दिए जाओगे

مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ﴿١٤٦﴾ فِىْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٤٧﴾ وَّ زُرُوْعٍ

यहाँ की नेअमतों में अमन से? बाग़ात और चशमों में। और खेतियों

وَّ نَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا

और खजूर के दरख्तों में जिन के ताज़ा फल मुलायम (नर्म) हैं। और तुम महारत से पहाड़ तराश कर

فٰرِهِيْنَ ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾ وَلَا تُطِيْعُوْٓا

घर बनाते हो। फिर अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। और हद से तजावुज़ करने

اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ

वालों का केहना मत मानो। जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं और इस्लाह

وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَآ اَنْتَ

नहीं करते। वो बोले के तुम पर तो जादू कर दिया गया है। तुम नहीं हो

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾

मगर हम जैसे एक इन्सान। इस लिए तुम मोअजिज़ा ले आओ अगर तुम सच्चों में से हो। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾

के ये ऊँटनी है, इस के लिए एक पीने की बारी है और तुम्हारे लिए एक मुक़र्ररा दिन की पीने की बारी है।

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

और उसे बुराई से मत छूना, वरना तुम्हें भारी दिन का अज़ाब पकड़ लेगा।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ

फिर उन्हों ने उस के पैर काट दिए, फिर वो नादिम हुए। फिर उन को अज़ाब ने पकड़ लिया।

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۵۸﴾

यक़ीनन उस में इबरत है। और उन (कुफ्फार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۵۹﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ

और यक़ीनन आप का रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। क़ौमे लूत ने पैग़म्बरों को

الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۶۰﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۱﴾

झुठलाया। जब उन से उन के भाई लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो?

اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿۱۶۲﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ﴿۱۶۳﴾

यक़ीनन मैं तुम्हारा अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ

और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो सिर्फ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे

الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶۴﴾ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶۵﴾

है। क्या तुम मर्दों के पास आते हो? तमाम जहान वालों में से (किसी को ऐसा करते देखा?)

وَ تَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ

अपनी बीवियाँ छोड़ कर, जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए पैदा की हैं। बल्के तुम

قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿۱۶۶﴾ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ یٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ

ऐसी क़ौम हो जो हद से तजावुज़ करती है। वो बोले ऐ लूत! अगर तुम बाज़ न आए तो निकाल दिए

مِنَ الْمُخْرَجِیْنَ ﴿۱۶۷﴾ قَالَ اِنِّیْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِیْنَ ﴿۱۶۸﴾ رَبِّ

जाओगे। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन मैं तुम्हारे इस अमल से शदीद नफरत रखने वालों में से हूँ। ऐ मेरे

نَجِّنِیْ وَ اَهْلِیْ مِمَّا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ فَنَجَّیْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۷۰﴾

रब! तू नजात दे मुझे और मेरे मानने वालों को इस हरकत से जो वो कर रहे हैं। फिर हम ने उन्हें और उन के

اِلَّا عَجُوْزًا فِی الْغٰبِرِیْنَ ﴿۱۷۱﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِیْنَ ﴿۱۷۲﴾

मानने वालों को, सब को नजात दी। मगर बुढ़िया जो हलाक होने वालों में रेह गई। फिर हम ने दूसरों को मलयामेट

وَ اَمْطَرْنَا عَلَیْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِیْنَ ﴿۱۷۳﴾

कर दिया। और हम ने उन पर पथ्थर बरसाए। फिर उन की बारिश बुरी थी जिन को डराया गया था।

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۷۴﴾ وَ اِنَّ

यक़ीनन इस में इबरत है। और उन (कुफ्फार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं। और यक़ीनन

رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ

तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। अयका वालों ने पैग़म्बरों को

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾ اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

झुठलाया। जब उन से शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो?

اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾

यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल हूँ। तो अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ

और मैं तुम से इस पर किसी उजरत का सवाल नहीं करता। मेरी उजरत तो सिर्फ़ रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾

है। कैल (व साअ) पूरा भर कर दो और खसारा पहोंचाने वालों में से मत बनो।

وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

और सीधी तराज़ू से तोलो। और लोगों को उन की चीज़ें कम कर के

اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾ وَاتَّقُوا

मत दो और ज़मीन में फसाद फैलाते हुए मत फिरो। और डरो तुम

الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ

उस अल्लाह से जिस ने तुम्हें और पेहली क़ौमों को पैदा किया। वो बोले बस

اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾ وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

तुम पर तो जादू कर दिया गया है। और तुम भी तो हम जैसे एक इन्सान ही हो

وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا

और यक़ीनन हम तुम्हें झूठों में से समझते हैं। इस लिए हम पर आसमान के टुकड़े

مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾ قَالَ رَبِّىْٓ

आप गिरा दीजिए अगर तुम सच्चों में से हो। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के मेरा रब

اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ

ख़ूब जानता है जो तुम करते हो। फिर उन्हों ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया, तो उन को सायबान के दिन

يَوْمِ الظُّلَّةِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾ اِنَّ

के अज़ाब ने आ पकड़ा। यक़ीनन वो भारी दिन का अज़ाब था। यक़ीनन

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٠﴾

उस में इबरत है। और उन (कुफ्फार) में से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٩١﴾ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ

और यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता वो ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। और यक़ीनन ये कुरआन रब्बुल आलमीन

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿١٩٣﴾

की तरफ़ से उतारा गया है। उस को ले कर रूहुल अमीन उतरे हैं।

عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ

आप के दिल पर (उतारा) ताके आप डराने वालों में से हों। जो सलीस अरबी ज़बान

مُّبِيْنٍ ﴿١٩٥﴾ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٩٦﴾ اَوَلَمْ يَكُنْ

में है। और यक़ीनन ये पेहलों की किताबों में भी था। क्या उन के लिए ये

لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٧﴾

निशानी नहीं है के उसे बनी इस्राईल के उलमा भी जानते हैं?

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿١٩٨﴾ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ

और अगर हम इसे अजमियों में से किसी एक पर उतारते, फिर वो उसे उन के सामने पढ़ता,

مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٩﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ

तब भी वो उस पर ईमान न लाते। इसी तरह ये इन्कार मुजरिमों के दिलों में हम ने

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٠٠﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ

दाख़िल कर दिया। के वो उस पर ईमान नहीं लाते यहां तक के दर्दनाक अज़ाब देख

الْاَلِيْمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

लेते हैं। फिर अज़ाब इस तरह अचानक उन्हें आ लेता है के उन्हें पता भी नहीं होता।

فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾ اَفَبِعَذَابِنَا

फिर वो कहेंगे के क्या हमें मुहलत मिलेगी? क्या ये हमारा अज़ाब जल्दी

يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿٢٠٥﴾

तलब कर रहे हैं? क्या राए है अगर हम उन्हें सालहा साल सामाने ऐश देते रहें।

ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا

फिर उन पर वो अज़ाब आ जाए जिस से उन्हें डराया जा रहा है। तो जिन नेअमतों से वो लुत्फ़ उठा रहें हैं वो उन्हें

يُمَتَّعُوْنَ ﴿۲۰۷﴾ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿۲۰۸﴾

अज़ाब से बचाने में काम आ सकेंगे? और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया मगर उस के डराने वाले ज़रूर थे।

ذِكْرٰى وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۲۰۹﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿۲۱۰﴾

नसीहत के लिए। और हम ज़ालिम नहीं हैं। और शयातीन ये कुरआन ले कर नहीं उतरे।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۲۱۱﴾ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ

और न उन के मुनासिबे (हाल) है और न वो कर सकते हैं। यक़ीनन वो तो उस के सुनने से दूर

لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿۲۱۲﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ

रखे जाते हैं। इस लिए आप अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को न पुकारिए, वरना आप

مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿۲۱۳﴾ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿۲۱۴﴾

मुअज़्ज़बीन में से हो जाओगे। और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइए।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۱۵﴾

और अपना बाज़ू पस्त रखिए उन ईमान वालों के सामने जिन्होंने आप का इत्तिबा किया। फिर अगर ये

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۱۶﴾ وَتَوَكَّلْ

आप की मुख़ालफ़त करें तो आप फरमा दीजिए के मैं बरी हूँ उन कामों से जो तुम करते हो। और आप

عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿۲۱۷﴾ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿۲۱۸﴾

तवक्कुल कीजिए ज़बर्दस्त, निहायत रहम वाले अल्लाह पर। जो आप को देखता है जिस वक़्त आप क़याम करते हो।

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿۲۱۹﴾ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۲۰﴾

और देखता है आप के चलने फिरने को सज्दा करने वालों के दरमियान। यक़ीनन वो सुनने वाला, इल्म वाला है।

هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿۲۲۱﴾ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ

क्या मैं तुम्हें ख़बर दूँ उस शख़्स की जिस पर शयातीन उतरते हैं? शयातीन हर झूठे

اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿۲۲۲﴾ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿۲۲۳﴾

गुनेहगार पर उतरते हैं। वो सुनी हुई बात को डालते हैं और उन में से अक्सर झूठे हैं।

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿۲۲۴﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ

और गुमराह लोग शुअरा का इत्तिबा करते हैं। क्या आप ने देखा नहीं के वो हर वादी में

وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿۲۲۵﴾ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۲۲۶﴾

हैरान घूमते हैं? और वो केहते हैं वो बात जो वो खुद करते नहीं हैं।

مع
عند المتقدمين ١٢

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ
मगर जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे और अल्लाह को बहोत ज़्यादा

كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْاؕ وَسَيَعْلَمُ
याद किया और जिन्हों ने बदला लिया इस के बाद के उन पर ज़ुल्म किया गया। और अनक़रीब

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾
ज़ालिम जान लेंगे के वो कैसी जगह पलट कर जाते हैं।

رکوعاتها ٧ (٢٧) سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ (٤٨) اٰياتها ٩٣
और ७ रूकूअ हैं सूरह नम्ल मक्का में नाज़िल हुई उस में ९३ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طٰسٓ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَ كِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾
तॉ सीन। ये कुरआन और साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं।

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
हिदायत और बशारत के तौर पर ईमान वालों के लिए। जो नमाज़ क़ाइम करते हैं

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٣﴾
और ज़कात देते हैं और जो आखिरत का भी यक़ीन रखते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ
यक़ीनन जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते हम ने उन के सामने उन के आमाल मुज़य्यन बना दिए हैं, फिर

يَعْمَهُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
वो हैरान हैं। यही हैं जिन के लिए बदतरीन अज़ाब है और

فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٥﴾ وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ
आख़िरत में सब से ज़्यादा ख़सारे वाले वही हैं। और यक़ीनन आप को ये कुरआन हिक्मत वाले,

مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿٦﴾ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖۤ
जानने वाले अल्लाह की तरफ से दिया जा रहा है। जब के मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी बीवी से फ़रमाया के

اِنِّىْۤ اٰنَسْتُ نَارًاؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ
यक़ीनन मैं ने आग देखी है। मैं अभी तुम्हारे पास आग की ख़बर या सुलगता

بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهَا

अंगारा लाता हूँ ताके तुम तापो। फिर जब मूस (अलैहिस्सलाम) आग के पास आए

نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ

तो आवाज़ दी गई के बाबरकत है वो ज़ात जो आग में है और जो उस आग के इर्द गिर्द है।

وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨﴾ يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ

और अल्लाह रब्बुल आलमीन पाक है। ऐ मूसा! यक़ीनन मैं ही अल्लाह हूँ,

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ

ज़बर्दस्त, हिकमत वाला। और आप अपना असा डाल दीजिए। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस को देखा के वो

كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى

हरकत कर रहा है गोया के बारीक सांप है, तो पुश्त फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा। (कहा गया) ऐ मूसा!

لَا تَخَفْ ۫ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٠﴾

आप न डरिए। इस लिए के मेरे पास पैग़म्बर डरा नहीं करते।

اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًاۢ بَعْدَ سُوْٓءٍ فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ

मगर जो ज़्यादती कर बैठे, फिर बुराई के बदले में नेकी करे तो यक़ीनन मैं बख़्शने वाला,

رَّحِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ

निहायत रहम वाला हूँ। और अपना हाथ अपने गिरेबान में दाख़िल कीजिए, जो बग़ैर किसी बुराई के चमकता हुवा

مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ

निकलेगा। (ये मोअजिज़े के तौर पर है) नौ मोअजिज़ात में शामिल कर के ले जाइए फ़िरऔन और उस की क़ौम की तरफ़।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا

इस लिए के वो नाफरमान क़ौम है। फ़िर जब उन के पास हमारे रोशन

مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾ وَجَحَدُوْا بِهَا

मोअजिज़ात आए तो बोले के ये तो साफ़ जादू है। और उन्हों ने उन

وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ

मोअजिज़ात का इन्कार किया ज़ुल्म और तकब्बुर की बिना पर हालांके उन के दिल यक़ीन कर चुके थे। फिर आप

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ

देखिए के फ़साद फैलाने वालों का अन्जाम कैसा हुवा। यक़ीनन हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम)

وَ سُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَ قَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ فَضَّلَنَا

और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) को इल्म दिया। और उन दोनों ने कहा के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने

عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾ وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ

हमें अपने मोमिन बन्दों में से बहोत सों पर फ़ज़ीलत दी। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दावूद (अलैहिस्सलाम)

دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ

के वारिस हुए और उन्हों ने कहा के ऐ इन्सानो! हमें परिन्दों की बोली का इल्म दिया गया है

وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَىْءٍ ۖ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ

और हमें हर चीज़ में से दिया गया है। यक़ीनन ये खुला फ़ज़्ल

الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ

है। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए उन के लशकर इकट्ठे किए गए जिन्नात

وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا

और इन्सानों और परिन्दों में से, फिर उन की जमाअतें बनाई जा रही थीं। यहां तक के जब वो

عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا

गुज़रे च्यूंटियों के मैदान पर, तो एक च्यूंटी ने कहा ऐ च्यूंटियो! अपने घरों

مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ

में घुस जाओ, कहीं तुम्हें सुलैमान और उन के लशकर कुचल न डालें इस हाल में के उन को

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ

पता न हो। तो च्यूंटी की बात से सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने हंसते हुए तबस्सुम फरमाया और कहा के

رَبِّ اَوْزِعْنِىْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِىْۤ اَنْعَمْتَ

ऐ मेरे रब! तू मुझे इस की तौफ़ीक़ दे के तेरी नेअमत का शुक्र अदा करूँ जो तू ने मुझ पर

عَلَىَّ وَعَلٰى وَالِدَىَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ

और मेरे वालिदैन पर की है और इस की के मैं नेक अमल करूं जिसे तू पसन्द कर ले

وَاَدْخِلْنِىْ بِرَحْمَتِكَ فِىْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ

और मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर दे। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने

الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِىَ لَاۤ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ

परिन्दों की ख़बर ली तो फ़रमाया के क्या बात है के मैं हुदहुद को नहीं देख रहा। या वो ग़ैरहाज़िर

الْغَآئِبِيْنَ ۝٢٠ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاْذْبَحَنَّهٗۤ
है? ज़रूर मैं उसे सख़्त सज़ा दूंगा या ज़बह कर डालूंगा

اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٢١ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ
या वो मेरे सामने वाज़ेह दलील पेश करे। थोड़ी ही देर बाद हुदहुद ने

فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ
कहा के मैं ने ऐसी चीज़ मालूम की है जो आप को मालूम नहीं और मैं आप के पास सबा से यक़ीनी ख़बर ले कर

يَّقِيْنٍ ۝٢٢ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ
आया हूँ। ये के मैं ने एक औरत को पाया है जो उन पर हुकमरान है और उसे हर

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ۝٢٣ وَجَدْتُّهَا وَ قَوْمَهَا
चीज़ मिली है और उस के पास एक अज़ीम तख़्त है। मैं ने उसे और उस की क़ौम को पाया के

يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ
अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उन के आमाल उन्हें उम्दा

اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝٢٤
बताए हैं, और रास्ते से उन्हें रोक दिया है, इस लिए वो हिदायत पर नहीं चलते।

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ
के सज्दा नहीं करते उस अल्लाह को जो निकालता है आसमानों और ज़मीन में छुपी हुई

وَالْاَرْضِ وَ يَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝٢٥ اَللّٰهُ
चीज़ और जानता है जो तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो। अल्लाह के सिवा

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝٢٦ السجدة قَالَ سَنَنْظُرُ
कोई माबूद नहीं, वो अर्शे अज़ीम का रब है। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अभी हम देखेंगे

السجدة ٨

اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٢٧ اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ
तू सच्चा है या झूठा। मेरा ये ख़त ले कर

هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ
जा और उसे उन की तरफ डाल दे, फिर तू उन से हट कर देख

مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ۝٢٨ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ
के वो क्या जवाब देते हैं? बिलक़ीस बोली के ऐ दरबारियो! यक़ीनन मेरी तरफ़ एक क़ाबिले तकरीम ख़त

كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ

डाला गया है। ये ख़त सुलैमान की तरफ़ से है और ये के अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरमान, निहायत

الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ

रहम वाला है। ये के मुझ पर बरतरी की कोशिश न करो और मेरे पास ताबेदार बन कर आ जाओ। बिलक़ीस केहने लगी

يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً

के दरबारियो! मुझे मशवरा दो मेरे मुआमले में। मैं किसी मुआमले का क़तई फैसला नहीं

اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّ اُولُوْا

करती जब तक के तुम मौजूद न हो। उन्हों ने कहा के हम कूव्वत वाले और सख़्त

بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾

जंगजू हैं और मुआमला आप के सुपुर्द है, आप ग़ौर कीजिए जो हुक्म देना हो।

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا

बिलक़ीस ने कहा के यक़ीनन बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे वीरान कर देते हैं

وَ جَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَ كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾

और उस के मुअज़्ज़ज़ बाशिन्दों को ज़लील बना देते हैं। और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे।

وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ

और मैं उन की तरफ हदीया दे कर भेज रही हूँ, फिर देखती हूँ के एलची क्या जवाब ले कर

الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ

आते हैं। फिर जब सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के पास क़ासिद पहोंचा, सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया क्या तुम माल से

بِمَالٍ ؗ فَمَاۤ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ

मेरी इमदाद करते हो? फिर अल्लाह ने जो मुझे दिया है वो बेहतर है उस से जो तुम्हें दिया है। बल्के तुम्हें

بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ

अपने हदिये पर खुशी है? (नियाज़मन्दी नहीं)। (क़ासिद!) तू उन की तरफ वापस जा, फिर हम उन के पास आएंगे

بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً

ऐसे लशकर ले कर के जिन का उन से मुक़ाबला नहीं हो सकेगा और हम उन्हें वहां से ज़लील व ख्वार

وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ

कर के निकाल देंगे। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ दरबारियो! तुम में से कौन

يَأْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّأْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝٣٨ قَالَ

मेरे पास बिलक़ीस का अर्श लाता है इस से पेहले के वो मेरे पास मुसलमान हो कर आएं। जिन्नात

عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ

में से एक बड़े जिन ने कहा के मैं आप के पास उसे ले आऊँगा इस से पेहले के आप

مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ۝٣٩ قَالَ

अपनी जगह से उठें। और मैं यक़ीनन उस पर अमानतदार, कुव्वत वाला हूँ। उस ने कहा

الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ

के जिस के पास किताब का इल्म था के मैं उस अर्श को आप के पास लाता हूँ इस से पेहले के आप की

اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ

नज़र आप की तरफ वापस लौटे। फिर जब सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने अर्श अपने सामने रखा हुवा देखा

قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۣ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ

तो फ़रमाया के ये मेरे रब का फ़ज़्ल है। ताके मुझे आज़माए के क्या मैं शुक्र करता हूँ या

اَمْ اَكْفُرُ ۭ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ

नाशुकरी? और जो शुक्र अदा करेगा तो सिर्फ अपनी ज़ात के फ़ाइदे के लिए करेगा। और जो नाशुकरी करेगा

فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ۝٤٠ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ

तो यक़ीनन मेरा रब बेनियाज़ है, इज़्ज़त वाला है। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के तुम उस के लिए अर्श की

اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝٤١

सूरत बदल दो, देखें उसे पता लगता है या नहीं?

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۭ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ

फिर जब बिलक़ीस आई तो कहा गया के क्या तेरा अर्श ऐसा ही है? बिलक़ीस ने कहा ये तो गोया वही है।

وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ۝٤٢ وَصَدَّهَا

और हमें इस से पेहले इल्म दिया गया था और हम इस्लाम ले आए थे। और उसे रोक रखा था

مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ

उन चीज़ों ने जिन की अल्लाह के सिवा वो इबादत करती थी। यक़ीनन बिलक़ीस काफ़िर क़ौम

كٰفِرِيْنَ ۝٤٣ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ

में से थी। उस से कहा गया के तुम महल में चली जाओ। फिर जब उस ने महल देखा

حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ اِنَّهٗ

तो उसे पानी से भरा हुवा पाया और अपनी पिंडलियाँ खोल दीं। सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के यक़ीनन ये

صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ

ऐसा महल है जो शीशे से बनाया गया है। बिलक़ीस केहने लगी ऐ मेरे रब! यक़ीनन मैं ने अपनी जान

ع ٣ ١٨

نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٤

पर ज़ुल्म किया और मैं सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के साथ अल्लाह रब्बुल आलमीन पर इस्लाम ले आई।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا

यक़ीनन हम ने क़ौमे समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह (अलैहिस्सलाम) को भेजा

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ۝٤٥

के तुम अल्लाह की इबादत करो, तो अचानक वो दो जमाअतें बन गईं, आपस में झगड़ने लगीं।

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम बुराई को क्यूं जल्दी तलब कर रहे हो भलाई

الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٤٦

से पेहले? तुम अल्लाह से मग़फ़िरत क्यूं तलब नहीं करते ताके तुम पर रहम किया जाए?

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۭ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ

उन्हों ने कहा के हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को मनहूस समझते हैं। सालेह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के

عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ۝٤٧ وَكَانَ

तुम्हारी नहूसत अल्लाह के पास है, बल्के तुम ऐसी क़ौम हो जो अज़ाब में मुबतला किए जाओगे। और

فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ

शहर में एक जमाअत के नौ आदमी थे जो उस इलाक़े में फ़साद फैलाते थे

وَلَا يُصْلِحُوْنَ ۝٤٨ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ

और इस्लाह नहीं करते थे। वो बोले सब अल्लाह की क़सम खाओ के ज़रूर हम रात को सालेह (अलैहिस्सलाम)

وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ

और उन के मानने वालों पर हमला करेंगे, फिर हम उन के वारिस से केह देंगे के हम उन के घर वालों की हलाकत

اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٤٩ وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا

के वक़्त मौजूद नहीं थे और यक़ीनन हम सच्चे हैं। और उन्हों ने एक मक्र किया और हम ने भी एक तदबीर

مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

की और उन्हें पता नहीं था। फिर आप देखिए के उन के मक्र का

عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾

अन्जाम क्या हुवा? ये के हम ने उन्हें भी और उन की क़ौम सब को मलयामेट कर दिया।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً ۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

फिर ये उन के मकानात उन के ज़ुल्म की वजह से वीरान पड़े हुए हैं। यक़ीनन उस में

لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

इबरत है ऐसी क़ौम के लिए जो जानती है। और हम ने नजात दी उन लोगों को जो ईमान लाए थे

وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ

और मुत्तक़ी थे। और लूत (अलैहिस्सलाम) को भेजा जब उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया क्या तुम बेहयाई का इरतिक़ाब

الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

करते हो और तुम देखते भी हो? क्या शहवत के लिए तुम औरतों

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

को छोड़ कर के मर्दों के पास आते हो? बल्के तुम ऐसी क़ौम हो जो जहालत के काम करते हो।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ

फिर उन की क़ौम का जवाब नहीं था मगर ये के उन्हों ने कहा के तुम आले लूत को तुम्हारी बस्ती से

مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

निकाल दो। इस लिए के ये ऐसे लोग हैं जो पाकबाज़ बनना चाहते हैं। फिर हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) को और

وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

उन के मानने वालों को नजात दी मगर उन की बीवी। जिस को हम ने मुक़द्दर कर दिया था हलाक होने वालों में से।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾ ع

और हम ने उन पर बारिश बरसाई। फिर उन लोगों की बारिश कितनी बुरी थी जिन्हें डराया गया था?

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ

आप फ़रमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और सलामती हो अल्लाह के उन बन्दों पर जो उस ने

اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

मुन्तख़ब किए। क्या अल्लाह बेहतर है या वो जिन को ये लोग शरीक ठेहराते हैं?

اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ لَكُمْ

भला किस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और किस ने तुम्हारे लिए आसमान

مِّنَ السَّمَآءِ مَآءًۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍۚ مَا كَانَ

से पानी उतारा, फिर उस से रौनक़ वाले बाग़ात को उगाया? तुम्हारी ताक़त

لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَاؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ

नहीं थी के उस के दरख़्त तुम उगाते। क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? बल्के वो ऐसी क़ौम है जो अल्लाह

يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَاۤ

के साथ शरीक ठेहराती है। भला किस ने ज़मीन को ठेहेरने की जगह बनाया और उस के दरमियान नेहरें

اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ

बनाईं और ज़मीन के लिए लंगर रख दिए और दो समन्दर के दरमियान आड़

حَاجِزًاؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ اَمَّنْ

बना दी? क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? बल्के उन में से अक्सर जानते नहीं। भला कौन

يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَ يَجْعَلُكُمْ

परेशानहाल की दुआ को क़बूल करता है जब वो उस से दुआ करता है और तकलीफ़ दूर करता है और तुम्हें

خُلَفَآءَ الْاَرْضِؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

ज़मीन में जानशीन बनाता है? क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं? बहोत कम तुम नसीहत हासिल करते हो।

اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ

भला कौन है जो तुम्हें रास्ता दिखाता है खुशकी और समन्दर की तारीकियों में और कौन

يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖؕ ءَاِلٰهٌ

हवाओं को बशारत देने के लिए अपनी रहमत से आगे भेजता है? क्या अल्लाह के साथ और भी माबूद हैं?

مَّعَ اللّٰهِؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ

बरतर है अल्लाह उन चीज़ों से जिन्हें ये शरीक ठेहराते हैं। भला कौन है जो मख़लूक़ को पेहली मरतबा

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِؕ ءَاِلٰهٌ

पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा और कौन तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह

مَّعَ اللّٰهِؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

के साथ और भी माबूद हैं? आप फरमा दीजिए के तुम अपनी दलील लाओ अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ

आप फ़रमा दीजिए जो आसमानों और ज़मीन में हैं वो ग़ैब नहीं जानते सिवाए

اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ

अल्लाह के। और उन्हें ये भी पता नहीं के कब (कब्रों से मुर्दे) उठाए जाएंगे? बल्के उन का इल्म आखिरत

فِي الْاٰخِرَةِ ۣ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

का हाल जानने से आजिज़ है। बल्के वो उस से शक में हैं। बल्के वो उस से अन्धे हैं।

ع ٥

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّ اٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا

और काफिर लोग केहते हैं के क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे हम और हमारे बाप दादा, तब हम ज़िन्दा कर के

لَمُخْرَجُوْنَ ﴿٦٧﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ

निकाले जाएंगे। यक़ीनन हम से और हमारे बाप दादा से इस से पेहले इस का वादा किया गया,

اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ

ये तो पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। आप फ़रमा दीजिए के तुम ज़मीन में चलो फिरो,

فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ

फिर देखो के मुजरिमों का अन्जाम कैसा हुवा? और आप उन पर ग़म न कीजिए

وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا

और उन की मक्कारियों से तंगी में न रहिए। और ये केहते हैं के ये वादा

الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ

कब है अगर तुम सच्चे हो? आप फ़रमा दीजिए शायद तुम्हारे क़रीब आ पहोंचा हो

لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ

उस का कुछ हिस्सा जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे हो। और यक़ीनन तुम्हारा रब तो इन्सानों पर

عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ

फ़ज़्ल वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र अदा नहीं करते। और यक़ीनन तुम्हारा रब तो

لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ

जानता है वो चीज़ें जो उन के सीने छुपाते हैं और जिन्हें वो ज़ाहिर करते हैं। और आसमान और ज़मीन

فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾ اِنَّ هٰذَا

की हर मख़फ़ी चीज़ साफ़ बयान करने वाली किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। यक़ीनन ये

الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ

कुरआन बनी इस्राईल के सामने बयान करता है वो अक्सर बातें जिन में वो इखतिलाफ

يَخْتَلِفُوْنَ ۝٧٦ وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٧٧

कर रहे हैं। और यक़ीनन ये ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत है।

اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝٧٨

यक़ीनन तेरा रब अपने हुक्म से उन के दरमियान फ़ैसला करेगा। और वो ज़बर्दस्त है, इल्म वाला है।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ۝٧٩ اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ

इस लिए आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। यक़ीनन आप वाज़ेह हक़ पर हो। यक़ीनन आप मुर्दों को नहीं

الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٨٠

सुना सकते और आप बेहरों को पुकार नहीं सुना सकते जब के वो पुश्त फेर कर भागते भी हों।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ

और आप अन्धों को रास्ता नहीं दिखा सकते उन की गुमराही से। आप तो सिर्फ़ उसी को सुना सकते हैं

اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝٨١ وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ

जो हमारी आयतों पर ईमान रखते है और ताबेदारी करते हैं। और जब (क़यामत का) अम्र उन पर वाक़ेअ

عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ

होने वाला होगा, तो हम उन के लिए ज़मीन से एक चौपाया निकालेंगे जो उन से बात करेगा,

اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ۝٨٢ ع وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ

के ये लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं रखते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से

اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝٨٣

उस जमाअत को इकट्ठा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाती थी, फिर उन्हें तक़सीम किया जाएगा।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا

यहां तक के जब वो हाज़िर होंगे, तो अल्लाह पूछेंगे क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठलाया हालांके उन आयात का तुम ने

اَمَّا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨٤ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ

इल्म से इहाता नहीं किया था, या तुम क्या अमल करते थे? और उन पर बात साबित हो जाएगी

بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝٨٥ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ

उन के ज़ुल्म की वजह से, फिर वो बोल नहीं सकेंगे। क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम ने रात बनाई

لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
ताके वो उस में आराम करें और दिन को रोशन बनाया। यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٨٦ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ
ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। और जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो घबरा जाएंगे वो जो

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ
आसमानों और ज़मीन में हैं मगर जिन को अल्लाह चाहे।

وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ۝٨٧ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً
और सब के सब आजिज़ बन कर उस के पास चले आएंगे। और तू पहाड़ों को देखता है तो खयाल करता है के जमे

وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ
हुए हैं और यही पहाड़ बादल के चलने की तरह तेज़ चलेंगे। ये अल्लाह की कारीगरी है जिस ने हर चीज़ मज़बूत

شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ۝٨٨ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ
बनाई। यक़ीनन वो बाखबर है उन कामों से जो तुम करते हो। जो नेकी ले कर आएगा

فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ۝٨٩
तो उस के लिए उस से बेहतर मिलेगा। और वो उस दिन की घबराहट से अमन में होंगे।

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ
और जो बुराई को ले कर आएंगे, तो औंधे मुंह वो दोज़ख में डाले जाएंगे।

هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٩٠ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ
तुम्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उन ही कामों की जो तुम करते थे। मुझे तो सिर्फ यही हुक्म है के मैं इबादत करूँ

رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫
इस शेहर के पैदा करने वाले की जिस ने उस को हरम बनाया और हर चीज़ उस की मिल्क है।

وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٩١ وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ
और मुझे इस का हुक्म है के मैं मुसलमानों में से रहूँ। और ये के मैं कुरआन की तिलावत करूँ। तो जो

فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ
हिदायत पाएगा तो सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए हिदायत पाएगा। और जो गुमराह होगा तो आप फ़रमा दीजिए

اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝٩٢ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ
के मैं तो सिर्फ डराने वालों में से हूँ। और आप फ़रमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जल्द ही वो

اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा, तो तुम उन को पेहचान लोगे। और तेरा रब बेख़बर नहीं है उन कामों से जो तुम करते हो।

اٰيَاتُهَا ٨٨ (٢٨) سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ (٤٩) رُكُوْعَاتُهَا ٩

उस में ८८ आयतें हैं सूरह क़सस मक्का में नाज़िल हुई और ९ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ نَتْلُوْا عَلَيْكَ

ता सीम मीम। ये साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं। हम आप के सामने

مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾

मूसा (अलैहिस्सलाम) और फिरऔन का कुछ हाल हक़ाइक़ समेत तिलावत करते हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाए।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا

यक़ीनन फिरऔन को बरतरी हासिल थी उस मुल्क में और उस ने वहां वालों के कई गिरोह बना दिए थे, उन में से

يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ؕ

एक जमाअत को वो कमज़ोर करना चाहता था के उन के बेटों को ज़बह करता था और उन की औरतों को ज़िन्दा

اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤﴾ وَ نُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ

रेहने देता था। यक़ीनन वो फ़साद फैलाने वालों में से था। और हम चाहते थे के हम एहसान करें

عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ

उन पर जिन को उस मुल्क में कमज़ोर बना कर रखा गया था और उन्हें पेशवा बनाएं और हम उन्हें

الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥﴾ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ

वारिस बनाएं। और हम उन्हें उस मुल्क में हुकूमत दें और हम दिखाएं फिरऔन

وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ﴿٦﴾

और हामान और उन के लशकरों को उन की तरफ से वो जिस से वो डरते थे।

وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ

और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की माँ की तरफ वही की के तुम उस को दूध पिलाती रहो। फिर जब तुम उस के

عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ۚ اِنَّا

बारे में ख़ौफ़ करो तो उसे समन्दर में डाल देना और न ख़ौफ करना, न ग़म। यक़ीनन हम

رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ ٧ فَالْتَقَطَهٗٓ

उसे आप की तरफ वापस लौटाएंगे और हम उसे पैग़म्बरों में से बना देंगे। फिर उस को आले फिरऔन

اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۭ اِنَّ فِرْعَوْنَ

ने उचक लिया ताके वो उन का दुशमन और ग़म का बाइस बने। यक़ीनन फिरऔन और

وَ هَامٰنَ وَ جُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِئِيْنَ ۝ ٨ وَ قَالَتِ امْرَاَتُ

हामान और उन का लशकर ग़लती पर थे। और फिरऔन की बीवी

فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ۭ لَا تَقْتُلُوْهُ ڰ عَسٰٓى

ने कहा के ये मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है। तुम उसे क़त्ल मत करो। हो सकता है

اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ ٩ وَاَصْبَحَ

वो हमें नफा दे या हम उसे बेटा बना लें और वो (अन्जाम से) बेखबर थे। और मूसा

فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ۭ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ

(अलैहिस्सलाम) की माँ का दिल बेक़रार हो गया। क़रीब थी के बेक़रारी ज़ाहिर कर देती

لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ١٠

अगर हम उस के दिल को (सब्र से) मज़बूत न करते ताके वो वादे के तसदीक़ करने वालियों में से रहे।

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۡ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) की माँ ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की बेहेन से कहा के तू उस के पीछे पीछे जा। फिर वो दूर से मूसा (अलैहिस्सलाम) को देख

لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ ١١ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

रही थी इस हाल में के फिरऔनियों को पता नहीं था। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) पर दूध पिलाने वालियों को हराम कर दिया

فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ

इस से पहले, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) की बेहेन ने कहा क्या मैं तुम्हें पता बतलाऊँ ऐसे घराने का जो उस की किफालत करें तुम्हारे

وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝ ١٢ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ

लिए और वो सब उस के खैरख्वाह हों। चुनांचे हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को उस की माँ की तरफ़ वापस लौटा दिया

عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

ताके उस की आँखें ठन्डी रहें और ग़मगीन न रहे और ये जान ले के अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन उन में से

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ ١٣ وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى

अक्सर जानते नहीं। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अपनी जवानी को पहोंचे और (जिस्म व अक़्ल के ऐतेबार से)

اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤﴾

मुकम्मल हो गए तो हम ने उन्हें नुबूव्वत (शरीअत) दी और इल्म दिया। और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) शेहर में वहां वालों की ग़फ़लत के वक़्त में दाख़िल हुए, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस में दो

فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۬ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا

आदमियों को पाया जो आपस में लड़ रहे थे। ये मूसा (अलैहिस्सलाम) की जमाअत में से था और ये उन के दुशमनों में से

مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ

था। तो मूसा (अलैहिस्सलाम) से मदद तलब की उस ने जो आप की जमाअत में से था उस के ख़िलाफ़ जो आप के

مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۬ قَالَ هٰذَا

दुशमनों में से था। तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उस को एक घूंसा मारा तो उस को मार दिया। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ये शैतानी

مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ قَالَ رَبِّ

हरकत से हुवा। यक़ीनन वो खुला गुमराह करने वाला दुशमन है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की के ऐ मेरे रब!

اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

यक़ीनन मैं ने मेरी जान पर ज़ुल्म किया, इस लिए तू मेरी मग़फिरत कर दे, तो अल्लाह ने उन्हें मुआफ़ कर दिया। यक़ीनन वो

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब! इस वजह से के तू ने मुझ पर इन्आम फरमाया है,

فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾ فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ

तो मैं मुजरिमों का मददगार हरगिज़ नहीं बनूंगा। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने शेहर में डरते हुए (पकड़े जाने के)

خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ

इन्तिज़ार में सुबह की, तो अचानक वही शख़्स जिस ने आप से कल को मदद तलब की थी वो आप से फिर

يَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾

मदद का तालिब है। उस से मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया यक़ीनन तू ही खुला गुमराह है।

فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ

फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने इरादा किया के पकड़ें उसे जो उन दोनों का दुशमन है,

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا

तो वो बोला ऐ मूसा! क्या तुम चाहते हो के तुम मुझे क़त्ल कर दो जैसा तुम ने कल एक शख़्स को क़त्ल

بِالْاَمْسِ ۖ اِنْ تُرِيْدُ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِى الْاَرْضِ

कर दिया था। तुम नहीं चाहते मगर ये के दूसरों पर ज़बर्दस्त बन कर इस इलाक़े में रहो

وَمَا تُرِيْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۹﴾ وَجَآءَ رَجُلٌ

और तुम नहीं चाहते के इस्लाह करने वालों में से बनो। और एक आदमी आया

مِّنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ۫ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنَّ الْمَلَاَ

शेहर के किनारे से दौड़ता हुवा। केहने लगा ऐ मूसा! यक़ीनन दरबारी आप के मुतअल्लिक़ मशवरा कर रहे

يَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّىْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿۲۰﴾

हैं के आप को क़त्ल कर दें, इस लिए आप निकल जाइए, यक़ीनन मैं आप के खैरख्वाहों में से हूँ।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ رَبِّ نَجِّنِىْ

फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) उस शेहर से निकल गए पकड़े जाने के खौफ से। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की ऐ मेरे रब! मुझे

مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۱﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ

ज़ालिम क़ौम से बचा ले। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मदयन की जानिब मुतवज्जेह हुए तो केहने लगे

عَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِىْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۲۲﴾ وَلَمَّا وَرَدَ

उम्मीद है के मेरा रब मुझे सीधे रास्ते की रहनुमाई करेगा। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मदयन के पानी

مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۫ۖ

पर उतरे तो वहां पर लोगों की एक जमाअत को पाया जो जानवरों को पानी पिला रही थी। और उन के पीछे दो

وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ

औरतों को पाया जो (अपने जानवर पानी से) हटा रही थीं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने पूछा के तुम दोनों का क्या हाल है?

قَالَتَا لَا نَسْقِىْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٜ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ

तो दोनों केहने लगीं के हम पानी नहीं पिलाते यहां तक के चरवाहे पिला कर चले जाएं। और हमारे बाप बहोत

كَبِيْرٌ ﴿۲۳﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ

बूढ़े हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने उन के जानवरों को पानी पिला दिया, फिर वो साए की तरफ़ वापस लौटे और दुआ की

اِنِّىْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿۲۴﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا

ऐ मेरे रब! यक़ीनन मैं मोहताज हूँ उस खैर का जो तू मेरी तरफ उतारे। फिर उन में से एक मूसा (अलैहिस्सलाम) के

تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ

पास आई जो शरमाती हुई चल रही थी। केहने लगी मेरे अब्बा आप को बुला रहे हैं ताके आप को उजरत दें इस के

اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ

सिले में के आप ने हमारे जानवरों को पानी पिलाया। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) शुऐब (अलैहिस्सलाम) के पास पहोंचे और उन के सामने

الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۵﴾

क़िस्सा बयान किया तो शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया आप ख़ौफ़ न कीजिए, आप ने ज़ालिम क़ौम से नजात पा ली।

قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ

उन में से एक ने कहा ऐ मेरे अब्बा! आप इन्हें नौकरी पर रख लीजिए। यक़ीनन उन में सब से बेहतर जिन्हें आप मज़दूर

الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿۲۶﴾ قَالَ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ

रखें वो है जो कूव्वत वाला भी हो और अमानत वाला भी हो। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया के मैं चाहता हूँ के आप के निकाह

اِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ

में दूँ मेरी इन दो बेटियों में से एक इस शर्त पर के आप मेरे यहाँ नौकरी करोगे आठ साल।

فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ

फिर अगर आप दस साल पूरे कर दो तो ये आप की तरफ से होगा। और मैं ये नहीं चाहता के आप पर मशक़्क़त

عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۷﴾

डालूँ। अनक़रीब आप मुझे सुलहा में से पाएंगे अगर अल्लाह ने चाहा।

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ये मेरे और आप के दरमियान मुआहदा है। दोनों मुद्दतों में से जो मैं पूरी करूँ

فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿۲۸﴾ ع

तो मेरे ऊपर कोई ज़्यादती नहीं की जाएगी। और अल्लाह वकील है उन बातों पर जो हम केह रहे हैं।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ

फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने मुद्दत पूरी कर ली और अपनी बीवी को ले कर चले तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने

مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا

कोहे तूर की जानिब से आग देखी। अपनी बीवी से फ़रमाया के तुम ठेहरो,

اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ

यक़ीनन मैं ने आग देखी है, शायद मैं आग की कोई खबर या आग का एक अंगारा

مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ

ले आऊँ ताके तुम तापो। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) आग के पास पहोंचे तो बरकत वाले मैदान में

شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ
वादी के दाहने किनारे से एक दरख़्त से आवाज़

مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٠
दी गई ऐ मूसा! यक़ीनन मैं ही अल्लाह हूँ, तमाम जहानों का रब हूँ।

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى
और ये के आप अपना असा डाल दीजिए। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) ने असा को देखा के हरकत कर रहा है गोया के वो सांप

مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ قف
है तो आप पुश्त फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर नहीं देखा।(अल्लाह ने फ़रमाया) ऐ मूसा! आप आगे आइए और ख़ौफ़ न

اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝٣١ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ
कीजिए। यक़ीनन आप अमन पाने वालों में से हैं। आप अपना हाथ अपने गिरेबान में दाख़िल कीजिए, वो रोशन हो कर

بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ز وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ
निकलेगा बग़ैर किसी बुराई के। और अपनी तरफ अपना बाज़ू खौफ की वजह से

مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ
मिला लीजिए, ये दोनों दलीलें हैं, इन्हें आप के रब की तरफ़ से फ़िरऔन और उस के दरबारियों के पास

وَ مَلَا۠ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٣٢ قَالَ رَبِّ
ले कर जाइए। इस लिए के वो नाफरमान क़ौम है। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया ऐ मेरे रब!

اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝٣٣ وَاَخِيْ
यक़ीनन मैं ने उन में से एक शख़्स को क़त्ल किया है, तो मैं डरता हूँ के वो मुझे क़त्ल कर देंगे। और मेरा

هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً
भाई हारून वो मुझ से ज़्यादा फसीह ज़बान वाला है तो आप उन को मेरे साथ मददगार बना कर भेज दीजिए

يُّصَدِّقُنِيْٓ ز اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝٣٤ قَالَ سَنَشُدُّ
ताके वो मेरी तसदीक़ करे। इस लिए के मैं डरता हूँ के वो मुझे झुठलाएंगे। अल्लाह ने फरमाया के

عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَ نَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا
अनक़रीब हम आप का बाज़ू मज़बूत करेंगे आप के भाई के ज़रिए और तुम दोनों को ग़लबा देंगे के वो

فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا
तुम तक नहीं पहोंच सकेंगे। हमारे मोअजिज़ात ले कर जाओ। तुम दोनों और जिन्हों ने तुम्हारा इत्तिबा किया

معانقة ١١ عند المتاخرين ١٢

الْغٰلِبُوْنَ ۝٣٥ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ
तुम ही ग़ालिब रहोगे। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) उन के पास आए हमारे रोशन मोअजिज़ात ले कर,
قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا
उन्हों ने कहा ये तो महज़ एक घड़ा हुवा जादू है और हम ने इस को
فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝٣٦ وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ
अपने पेहले बाप दादा में नहीं सुना। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा के मेरा रब खूब जानता है
بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ
उस को जो हिदायत ले कर आया है उस के पास से और उसे भी जिस के लिए
عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٣٧ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
आखिरत का घर है। यक़ीनन ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाएंगे। और फिरऔन ने कहा
يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ
ऐ दरबारियो! मैं तुम्हारे लिए मेरे अलावा कोई माबूद नहीं जानता। ऐ हामान!
لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا
तू मेरे लिए मिट्टी पर आग जला, फिर तू मेरे लिए एक ऊँची इमारत तय्यार कर
لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ
ताके मैं मूसा के माबूद को झांक कर देखूँ। और मैं यक़ीनन उसे झूठा
مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٣٨ وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ
समझता हूँ। और फ़िरऔन और उस के लशकर ने उस मुल्क में नाहक़ बड़ा
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝٣٩
बनना चाहा और समझा के वो हमारे पास वापस लाए नहीं जाएंगे।
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ
फिर हम ने उसे और उन के लशकरों को पकड़ लिया, फिर हम ने उन्हें समन्दर में फैंक दिया। फिर आप देखिए के
كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٠ وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ
ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुवा? और हम ने उन्हें सरदार बनाया जो आग की तरफ़
اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝٤١ وَاَتْبَعْنٰهُمْ
बुलाते थे। और क़यामत के दिन उन की नुसरत नहीं की जाएगी। और हम ने

فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ
इस दुन्या में उन के पीछे लानत लगा दी। और क़यामत के दिन वो

مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ۝٤٢ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ
बुरों में से होंगे। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को पेहली क़ौमों को हलाक

مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى
करने के बाद किताब दी, इन्सानों के लिए बसीरतों के तौर पर और हिदायत

وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤٣ وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ
और रहमत के तौर पर ताके वो नसीहत हासिल करें। और आप मग़रिबी किनारे में

الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ
नहीं थे जब हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ अम्रे (रिसालत) भेजा और आप वहाँ देखने वालों

مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝٤٤ وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
में नहीं थे। लेकिन हम ने पैदा किया क़ौमों को फिर उन की उमरें तवील

الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا
हो गईं। और आप ठेहरे हुए नहीं थे मदयन वालों में के उन पर

عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۝٤٥ وَمَا كُنْتَ
हमारी आयतें तिलावत करते, लेकिन हम ही रसूल भेजने वाले हैं। और आप मौजूद नहीं थे

بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ
कोहे तूर के किनारे पर जब हम ने पुकारा, लेकिन ये आप के रब की तरफ से रहमत है

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
ताके आप डराएं ऐसी क़ौम को जिन के पास कोई डराने वाला आप से पेहले नहीं आया

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤٦ وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌ
ताके वो नसीहत हासिल करें। और अगर ये बात न होती के उन्हें मुसीबत पहोंचे

بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ
उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे, फिर वो कहें ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ

اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٤٧
रसूल क्यूं नहीं भेजा के हम तेरी आयतों का इत्तिबा करते और हम ईमान लाने वालों में से हो जाते।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِیَ
फिर जब उन के पास हमारी तरफ से हक़ आया तो उन्हों ने कहा के इस नबी को क्यूं नहीं दिया गया उस जैसा

مِثْلَ مَآ اُوْتِیَ مُوْسٰی ؕ اَوَلَمْ یَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِیَ مُوْسٰی
मोअजिज़ा जो मूसा (अलैहिस्सलाम) को दिया गया? क्या उन्हों ने कुफ्र नहीं किया उस मोअजिज़े के साथ जो मूसा (अलैहिस्सलाम) को दिया गया

مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۗ وَ قَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ
इस से पेहले? उन्हों ने कहा के दो जादूगर हैं जिन्हों ने एक दूसरे की मदद की है। और उन्हों ने कहा के हम किसी मोअजिज़े

كٰفِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ
को नहीं मानते। आप फरमा दीजिए के तुम अल्लाह की तरफ से किताब लाओ जो

اَهْدٰی مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۴۹﴾ فَاِنْ
उन दोनों से ज़्यादा रास्ता बतलाने वाली हो के मैं उस के पीछे चलूँ अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर

لَّمْ یَسْتَجِیْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا یَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ
वो आप की बात का जवाब न दें तो जान लो के यक़ीनन वो अपनी ख्वाहिशात के पीछे चल रहे हैं।

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَیْرِ هُدًی مِّنَ اللّٰهِ ؕ
और उस से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अपनी ख्वाहिश के पीछे चले अल्लाह की तरफ से हिदायत के बग़ैर।

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۵۰﴾ وَلَقَدْ وَصَّلْنَا
बेशक अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते। यक़ीनन हम ने उन के लिए

لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۱﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ
ये कलाम (कुरआन) लगातार भेजा ताके वो नसीहत हासिल करें। वो जिन को हम ने इस से पेहले

الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَاِذَا یُتْلٰی
किताब दी वो उस पर ईमान लाते हैं। और जब उन पर उसे तिलावत

عَلَیْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا
किया जाता है, तो केहते हैं के हम इस पर ईमान लाए, यक़ीनन ये हक़ है हमारे रब की तरफ से, यक़ीनन हम

مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِیْنَ ﴿۵۳﴾ اُولٰٓئِكَ یُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَیْنِ
इस से पेहले भी मुसलमान थे। यही हैं जिन्हें उन का अज्र दुगना मिलेगा इस वजह से के

بِمَا صَبَرُوْا وَیَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّیِّئَةَ وَمِمَّا
उन्हों ने सब्र किया और वो भलाई के ज़रिए बुराई को दफा करते हैं और उन चीज़ों में से जो

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَ اِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا

हम ने उन्हें दीं खर्च करते हैं। और जब वो लग़्व बात सुनते हैं तो उस से ऐराज़

عَنْهُ وَ قَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ز سَلٰمٌ

करते हैं और केहते हैं के हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। अस्सलामु

عَلَيْكُمْ ز لَا نَبْتَغِى الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾ اِنَّكَ لَا تَهْدِىْ مَنْ

अलैकुम। जाहिल हमें नहीं चाहिए। बिल्कुल आप हिदायत नहीं दे सकते उस को

اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ج وَهُوَ اَعْلَمُ

जिसे आप चाहें लेकिन अल्लाह हिदायत देता है जिसे वो चाहता है। और अल्लाह हिदायत पाने वालों

بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَ قَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ

को ख़ूब जानता है। और उन्हों ने कहा के अगर हम इस हिदायत के पीछे चलेंगे तेरे साथ

نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ط اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا

तो हमें हमारे मुल्क से उचक लिया जाएगा। क्या हम ने उन को जगह नहीं दी अमन वाले हरम में

يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَىْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا

जिस की तरफ़ हर क़िस्म के फल खींच कर लाए जाते हैं हमारी तरफ से रोज़ी के तौर पर?

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا

लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और कितनी बस्तियाँ हम हलाक कर

مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ج فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ

चुके हैं जो अपनी मईशत पर इतराती थी। तो ये उन के मकानात हैं जिन में रहा नहीं गया

مِّنْ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ط وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٥٨﴾

उन के बाद मगर बहोत थोड़ा। और हम ही वारिस हुए।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِىْٓ اُمِّهَا

और आप का रब बस्तियों को हलाक नहीं कर देता जब तक के उन में से बड़ी बस्ती में रसूल

رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ج وَمَا كُنَّا مُهْلِكِى الْقُرٰٓى

नहीं भेजता जो उन पर हमारी आयतें तिलावत करे। और हम बस्तियों को हलाक नहीं करते

اِلَّا وَ اَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ

मगर जब ही के वहाँ वाले ज़ालिम होते हैं। और जो कुछ भी तुम्हें दिया गया है

فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ

वो दुन्यवी ज़िन्दगी का थोड़ा सा नफा और उस की ज़ीनत है। और जो अल्लाह के पास है वो ज़्यादा बेहतर

خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ

है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाला है। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? क्या फिर वो शख़्स जिस से हम ने

وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ

अच्छा वादा कर रखा है फिर वो उसे पाएगा, उस शख़्स की तरह हो सकता है के जिस को हम ने दुन्यवी

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾

ज़िन्दगी में मुतमत्तेअ किया, फिर वो क़यामत के दिन (पकड़ कर) हाज़िर किए जाने वालों में से होगा?

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ

और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकार कर कहेगा कहाँ हैं मेरे वो शुरका जिन का तुम दावा किया

تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا

करते थे? वो लोग कहेंगे जिन पर अज़ाब का कलिमा साबित हो गया ऐ हमारे रब!

هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ

ये हैं वो जिन को हम ने बेहकाया। जिस तरह हम बेहके हुए थे हम ने उन्हें बेहकाया। हम तेरी तरफ बराअत

اِلَيْكَ ز مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ

करते हैं के ये हमारी इबादत नहीं करते थे। और कहा जाएगा के तुम पुकारो तुम्हारे शुरका को,

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ

फिर वो उन को पुकारेंगे, तो वो उन को जवाब नहीं देंगे, इसी दौरान वो अज़ाब देख लेंगे।

لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ

काश के वो हिदायत पाते। और जिस दिन वो उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा

مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ

के तुम ने रसूलों को क्या जवाब दिया था? फिर उन पर खबरें उस दिन बन्द हो

يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ

जाएंगी, फिर वो एक दूसरे से भी सवाल नहीं करेंगे। हाँ, जिस ने तौबा की और ईमान लाया

وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾

और नेक अमल किए, तो उम्मीद है के वो फलाह पाने वालों में से हो।

وَرَبُّكَ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخۡتَارُؕ مَا كَانَ لَهُمُ
और तेरा रब पैदा करे जिसे चाहे और चुने जिसे चाहे। उन लोगों के पास

الۡخِيَرَةُ ؕ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۶۸﴾
इन्तिखाब का इखतियार नहीं। अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों में से जो ये शरीक ठेहराते हैं।

وَرَبُّكَ يَعۡلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوۡرُهُمۡ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ﴿۶۹﴾
और तेरा रब खूब जानता है उस को जो उन के सीने छुपाते और ज़ाहिर करते हैं।

وَهُوَ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَؕ لَهُ الۡحَمۡدُ فِى الۡاُوۡلٰى
और वही अल्लाह है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी के लिए तमाम तारीफें हैं दुन्या में

وَالۡاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُ الۡحُكۡمُ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۷۰﴾ قُلۡ
और आखिरत में। और उसी के लिए हुकूमत है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। आप पूछिए

اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيۡكُمُ الَّيۡلَ سَرۡمَدًا
तुम्हारी क्या राए है अगर अल्लाह तुम पर रात हमेशा रखे क़यामत

اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ مَنۡ اِلٰهٌ غَيۡرُ اللّٰهِ يَاۡتِيۡكُمۡ بِضِيَآءٍؕ
के दिन तक, तो कौन माबूद है अल्लाह के अलावा जो तुम्हारे पास रोशनी लाए?

اَفَلَا تَسۡمَعُوۡنَ ﴿۷۱﴾ قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيۡكُمُ
क्या फिर तुम सुनते नहीं हो? आप पूछिए तुम्हारी क्या राए है अगर अल्लाह तुम पर दिन हमेशा

النَّهَارَ سَرۡمَدًا اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ مَنۡ اِلٰهٌ غَيۡرُ اللّٰهِ
रखे क़यामत के दिन तक, तो कौन माबूद है अल्लाह के अलावा

يَاۡتِيۡكُمۡ بِلَيۡلٍ تَسۡكُنُوۡنَ فِيۡهِؕ اَفَلَا تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۷۲﴾
जो तुम्हारे पास रात को लाए जिस में तुम सुकून हासिल करो? क्या फिर तुम बसीरत नहीं रखते?

وَمِنۡ رَّحۡمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ لِتَسۡكُنُوۡا
और अपनी रहमत से अल्लाह ने तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए ताके तुम उस में सुकून

فِيۡهِ وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ﴿۷۳﴾
हासिल करो और ताके तुम अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और ताके तुम शुक्र अदा करो।

وَيَوۡمَ يُنَادِيۡهِمۡ فَيَقُوۡلُ اَيۡنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيۡنَ
और जिस दिन अल्लाह उन को पुकार कर कहेगा, कहाँ हैं मेरे शुरका जिन का तुम

كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا

दावा किया करते थे? और हम हर उम्मत में से एक गवाह को निकालेंगे,

فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ

फिर हम कहेंगे के तुम्हारी दलील तुम लाओ, फिर वो जान लेंगे के हक़ अल्लाह ही के लिए है

وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٧٥﴾ اِنَّ قَارُوْنَ

ع ١٠/٥

और खो जाएंगे उन से वो जो वो झूठ घड़ा करते थे। यक़ीनन क़ारून

كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ

मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम में से था, फिर उन पर बड़ाई मारने लगा। और हम ने उसे

مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ

खज़ानों में से इतना दिया था के उस की कुन्जियाँ ताक़तवर जमाअत को

اُولِى الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ

थका देती थी। जब के उस से उस की क़ौम ने कहा तू मत इतरा, यक़ीनन अल्लाह

لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ

इतराने वालों से महब्बत नहीं करता। और तू उस माल में जो अल्लाह ने तुझे दिया

الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا

दारे आखिरत को तलाश कर और तू दुन्या में से अपना हिस्सा (आखिरत के लिए लेना) मत भूल

وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ

और तू एहसान कर जैसा के अल्लाह ने तेरी तरफ एहसान किया और तू ज़मीन में फसाद

فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾ قَالَ

मत फैला। यक़ीनन अल्लाह फसाद फैलाने वालों से महब्बत नहीं करते। क़ारून बोला

اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ

के मुझे ये माल मिला है उस इल्म की वजह से जो मेरे पास है। क्या वो ये जानता नहीं के

اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ

अल्लाह ने उस से पेहले क़ौमों को हलाक किया है जो

اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّ اَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْـَٔلُ

उस से ज़्यादा क़ूव्वत वाली और उस से ज़्यादा माल जमा करने वाली थीं? और गुनाहों के मुतअल्लिक़

عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ
मुजरिमों से सवाल नहीं किया जाएगा (आमालनामे में मौजूद ही होंगे)। फिर क़ारून अपनी क़ौम के सामने

فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
अपनी ज़ीनत में निकला। तो केहने लगे जो दुन्यवी ज़िन्दगी चाहते थे

يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ
के काश के हमें मिलता जैसा क़ारून को दिया गया है। यक़ीनन क़ारून बड़ी क़िस्मत

عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ
वाला है। और उन लोगों ने कहा जिन को इल्म दिया गया के तुम्हारे लिए हलाकत हो!

ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ
अल्लाह का सवाब बेहतर है उस के लिए जो ईमान लाया और नेक अमल किए।

وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ
और उसे नहीं पाएंगे मगर सब्र करने वाले ही। फिर हम ने क़ारून और उस का घर ज़मीन में

الْاَرْضَ ۣ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ
धंसा दिया। फिर उस के लिए कोई जमाअत नहीं थी जो उस की नुसरत करती

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾
अल्लाह के सिवा। और खुद भी वो अपनी मदद न कर सका।

وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ
और वो लोग जो कल को उस की जगह पर होने की तमन्ना करते थे वो केहने लगे

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ
के तेरे लिए हलाकत हो! यक़ीनन अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ
अपने बन्दों में से और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। अगर अल्लाह हम पर एहसान न करता तो हमें भी ज़मीन

بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ
में धंसा देता। तेरे लिए हलाकत हो, यक़ीनन काफिर लोग फलाह नहीं पाएंगे। ये दारे आखिरत ع

الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي
हम उसे बनाते हैं उन लोगों के लिए जो ज़मीन में बरतरी

الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝٨٣
और फ़साद नहीं चाहते। और अच्छा अन्जाम मुत्तक़ियों के लिए है।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ
जो भलाई ले कर आएगा तो उस को उस से बेहतर बदला मिलेगा। और जो बुराई ले कर

بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ
आएगा तो गुनाह करने वालों को सिर्फ उन के

اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٨٤ اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ
आमाल ही की सज़ा मिलेगी। यक़ीनन वो अल्लाह जिस ने

عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّیْۤ
कुरआन आप पर फर्ज़ किया, वो ज़रूर आप को मआद की तरफ लौटाने वाला है। आप फरमा दीजिए मेरा रब

اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ
खूब जानता है के कौन हिदायत ले कर आया और कौन खुली गुमराही

مُّبِيْنٍ ۝٨٥ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ يُّلْقٰۤى اِلَيْكَ
में है? और आप को तवक्कुअ नहीं थी के आप की तरफ किताब उतारी

الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا
जाएगी मगर तेरे रब की रहमत की वजह से (नाज़िल हुई), इस लिए आप काफिरों के

لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝٨٦ وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ
मददगार न बनें। और आप को अल्लाह की आयतों से ये न रोकें इस के बाद

اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ
के वो आप की तरफ उतारी गईं और आप अपने रब की तरफ दावत दीजिए और मुशरिकीन

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝٨٧ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ
में से न हों। और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को न पुकारिए।

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۣ كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ
कोई माबूद नहीं मगर वही। सिवाए उस की ज़ात के हर चीज़ हलाक होने वाली है।

لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٨٨
उसी के लिए हुकूमत है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وقف لازم

اٰياتها ٦٩ (٢٩) سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ (٨٥) رُكوعاتها ٧

उस में ६९ आयतें हैं सूरह अन्कबूत मक्का में नाज़िल हुई और ७ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا

अलिफ लाम मीम। क्या इन्सानों ने ये समझ रखा है के उन्हें छोड़ दिया जाएगा इतना केह देने पर के

اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿۲﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ

"اٰمَنَّا" और उन को आज़माया नहीं जाएगा? यक़ीनन हम ने आज़माया था उन लोगों को जो

مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ

उन से पेहले थे, फिर अल्लाह ज़रूर मालूम कर के रहेगा उन लोगों को जो सच्चे हैं और झूठों को ज़रूर

الْكٰذِبِيْنَ ﴿۳﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ

मालूम करेगा। क्या उन लोगों ने जो बुरे अमल करते हैं ये समझ रखा है के वो हम से भाग कर आगे

اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۴﴾ مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ

निकल सकते हैं? बुरा है जो वो फैसला कर रहे हैं। जो अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता

اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۵﴾

है तो यक़ीनन अल्लाह का मुक़र्रर किया हुवा वक़्त ज़रूर आने वाला है। और वो सुनने वाला, इल्म वाला है।

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ

और जो मुजाहदा करता है तो सिर्फ अपनी ही ज़ात के लिए मुजाहदा करता है। यक़ीनन अल्लाह तमाम

عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۶﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

जहान वालों से बेनियाज़ है। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ

तो हम उन से उन की बुराइयाँ दूर कर देंगे और हम उन्हें बदला देंगे उन अच्छे कामों का जो

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۷﴾ وَ وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ

वो करते थे। और हम ने इन्सान को उस के वालिदैन के साथ भलाई का हुक्म

حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ

दिया। और अगर वो तुझे मजबूर करें ताके तू मेरे साथ शरीक ठेहराए ऐसी चीज़ को जिस की तेरे पास

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ

कोई दलील नहीं तो उन का केहना मत मान। मेरी ही तरफ़ तुम्हें वापस आना है, फिर मैं तुम्हें खबर दूँगा

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

उन कामों की जो तुम करते थे। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِی الصّٰلِحِیْنَ ۝٩ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ یَّقُوْلُ

हम उन्हें ज़रूर नेक लोगों में दाखिल करेंगे। और लोगों में से कुछ वो हैं जो केहते हैं के

اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَاۤ اُوْذِیَ فِی اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ

“ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ”। फिर जब उसे अल्लाह की वजह से ईज़ा दी जाती है तो इन्सानों की ईज़ारसानी को अल्लाह के अज़ाब

كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَ لَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَیَقُوْلُنَّ

के मानिन्द क़रार देता है। और अगर तेरे रब की तरफ़ से नुसरत आए तो वो ज़रूर कहेगा के

اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَ لَیْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِیْ صُدُوْرِ

यक़ीनन हम तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह बखूबी नहीं जानता जो जहान वालों के सीनों में (छुपा हुवा)

الْعٰلَمِیْنَ ۝١٠ وَ لَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ لَیَعْلَمَنَّ

है? और अल्लाह ज़रूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और अल्लाह मुनाफ़िक़ीन को ज़रूर मालूम

الْمُنٰفِقِیْنَ ۝١١ وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا

करेगा। और काफ़िरों ने ईमान वालों से कहा के तुम हमारे

اتَّبِعُوْا سَبِیْلَنَا وَ لْنَحْمِلْ خَطٰیٰكُمْ ؕ وَ مَا هُمْ بِحٰمِلِیْنَ

रास्ते पर चलने लग जाओ और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेते हैं। हालांके वो उन के गुनाहों में से

مِنْ خَطٰیٰهُمْ مِّنْ شَیْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١٢ وَ لَیَحْمِلُنَّ

कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं। यक़ीनन वो झूठे हैं। और वो ज़रूर अपने बोझ

اَثْقَالَهُمْ وَ اَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَ لَیُسْئَلُنَّ یَوْمَ

उठाएंगे और अपने बोझ के साथ दूसरों के बोझ भी उठाएंगे। और उन से क़यामत के दिन ज़रूर सवाल

الْقِیٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ۝١٣ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا

किया जाएगा उस के मुतअल्लिक़ जो वो झूठ घड़ा करते थे। यक़ीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को रसूल बना कर भेजा

اِلٰی قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِیْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِیْنَ عَامًا ؕ

उन की क़ौम की तरफ़, फिर वो उन में ठेहरे एक हज़ार साल मगर पचास साल (यानी साढ़े नौ सौ बरस)।

فَاَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝١٤ فَاَنْجَيْنٰهُ
फिर उन को तूफ़ान ने पकड़ लिया इस हाल में के वो ज़ालिम थे। फिर हम ने उन्हें और कशती वालों को

وَ اَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٥ وَاِبْرٰهِيْمَ
नजात दी और हम ने उसे तमाम जहान वालों के लिए निशानी बनाया। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ط ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
जब के उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया के अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो। ये तुम्हारे लिए बेहतर है

اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١٦ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
अगर तुम जानते हो। अल्लाह के सिवा तुम सिर्फ बुतों को

اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ط اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ
पूजते हो और तुम सिर्फ झूठ घड़ते हो। यक़ीनन वो जिन की तुम अल्लाह के सिवा इबादत

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ
करते हो वो तुम्हें रोज़ी देने के मालिक नहीं हैं, तो तुम अल्लाह के पास रोज़ी

الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ط اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١٧
तलब करो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र अदा करो। उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ط وَمَا
और अगर तुम झुठलाओ तो तुम से पेहले कई उम्मतों ने झुठलाया। और रसूल के

عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٨ اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ
ज़िम्मे सिवाए साफ़ साफ़ पहोंचा देने के कुछ भी नहीं। क्या उन्हों ने देखा नहीं के अल्लाह

يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ط اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
कैसे मखलूक़ को पेहली मरतबा पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा। यक़ीनन ये अल्लाह पर

يَسِيْرٌ ۝١٩ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ
आसान है। आप फरमा दीजिए के तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो के कैसे

بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ط
उस ने मखलूक़ को पेहली मरतबा पैदा किया, फिर अल्लाह आखिरी बार ज़िन्दा कर के उठाएगा।

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢٠ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ
यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। वो अज़ाब दे जिसे चाहे

وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَآ اَنْتُمْ
और रहम करे जिस पर चाहे। और उसी की तरफ़ तुम्हें पलट कर जाना है। और तुम ज़मीन में
بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ
(भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते और न आसमान में (चढ़ कर)। और तुम्हारे लिए
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
अल्लाह के अलावा कोई दोस्त और मददगार नहीं। और जो अल्लाह की
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ
आयतों के और उस की मुलाक़ात के मुन्किर हैं वो मायूस हैं मेरी रहमत से
وَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ
और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। फिर उन की क़ौम का जवाब नहीं था
اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ
मगर ये के उन्हों ने कहा के तुम उसे क़त्ल कर दो या जला दो, फिर अल्लाह ने उन्हें आग से
مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ
बचा लिया। यक़ीनन उस में कई निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)
اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ
ने फरमाया के तुम ने अल्लाह के सिवा सिर्फ़ बुत बना रखे हैं, आपस की
بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ
दोस्ती की बिना पर दुन्यवी ज़िन्दगी में। फिर क़यामत के दिन तुम में से
بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ
एक दूसरे का इन्कार करोगे और तुम में से एक दूसरे पर लानत करोगे। और तुम्हारा ठिकाना
النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ
दोज़ख होगा और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं होगा। फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर ईमान लाए लूत (अलैहिस्सलाम)।
وَقَالَ اِنِّىْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ
और कहा के मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत कर रहा हूँ। यक़ीनन वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत
الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا
वाला है। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इसहाक़ और याक़ूब अता किए और हम ने

ع ٤

وقف لازم

فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ

उन की औलाद में नुबूव्वत और किताब रख दी। और हम ने उन्हें उन का अज्र दिया

فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

दुन्या में। और यक़ीनन वो आखिरत में सुलहा में से होंगे।

وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ز

और लूत (अलैहिस्सलाम) को (भी) जब उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया के यक़ीनन तुम ऐसी बेहयाई करते हो

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾ اَئِنَّكُمْ

जो तमाम जहान वालों में से किसी ने तुम से पेहले नहीं की। क्या तुम

لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ۬ وَتَاْتُوْنَ

मर्दों के पास आते हो और तुम डाका डालते हो? और तुम

فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ

अपनी मजलिसों में बुरी हरकतें करते हो? फिर उन की क़ौम का जवाब नहीं हुवा

اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ

मगर ये के उन्हों ने कहा के तुम हमारे पास अल्लाह का अज़ाब ले आओ अगर तुम

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ

सच्चों में से हो। लूत (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के ऐ मेरे रब! इस मुफसिद क़ौम के खिलाफ तू मेरी

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ

नुसरत फरमा। और जब हमारे भेजे हुए फरिशते इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास बशारत

بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ

ले कर आए, तो उन्हों ने कहा के हम इस बस्ती वालों को हलाक करने वाले हैं।

اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ؕ

इस लिए के यहाँ वाले ज़ालिम हैं। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के उस में लूत (अलैहिस्सलाम) भी हैं।

قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ۫ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَ اَهْلَهٗۤ

फरिशते केहने लगे हम खूब जानते हैं उन को जो उस बस्ती में है। हम लूत (अलैहिस्सलाम) और उन के मानने

اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَمَّاۤ اَنْ

वालों को बचा लेंगे मगर उन की बीवी। ये हलाक होने वालों में से होगी। और जब

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا

हमारे भेजे हुए फरिशते लूत (अलैहिस्सलाम) के पास आए तो उन की वजह से वो ग़मगीन और तंगदिल हुए

وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۗ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ

और उन फरिशतों ने कहा के आप न डरिए, न ग़म कीजिए। हम आप को और आप के मानने वालों को बचा लेंगे

اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٣٣ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ

मगर आप की बीवी को, ये हलाक होने वालों में से होगी। यक़ीनन हम इस बस्ती वालों पर

عَلٰٓى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

आसमान से अज़ाब उतारेंगे इस वजह से के वो (फासिक़ हैं)

يَفْسُقُوْنَ ۝٣٤ وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ

नाफरमान हैं। यक़ीनन हम ने उस बस्ती की कुछ वाज़ेह निशानी अक़्ल वालों के लिए

يَّعْقِلُوْنَ ۝٣٥ وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ

रेहने दी है। और मदयन की तरफ भेजा उन के भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को। शुऐब (अलैहिस्सलाम)

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا

ने फरमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो और तुम आखिरी दिन की उम्मीद रखो और तुम ज़मीन में

فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٣٦ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

फसाद फैलाते हुए मत फिरो। फिर उन्हों ने उन को झुठलाया, फिर उन को ज़लज़ले ने पकड़ लिया,

فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝٣٧ وَعَادًا وَّثَمُوْدَاۡ

फिर वो अपने घरों में घुटने के बल औन्धे पड़े रेह गए। और आद और समूद को हलाक किया

وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۗ وَزَيَّنَ لَهُمُ

और तुम्हारे सामने उन के घरों में से कुछ साफ नज़र आते हैं। और शैतान ने उन

الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ

के लिए उन के आमाल मुज़य्यन किए, फिर उन को रास्ते से रोक दिया

وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ۝٣٨ ۙ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ

हालांके वो होशयार थे। और क़ारून और फिरऔन

وَهَامٰنَ ۗ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ

और हामान को हलाक किया। यक़ीनन मूसा (अलैहिस्सलाम) उन के पास मोअजिज़ात ले कर आए,

فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿۳۹﴾
फिर उन्हों ने ज़मीन में बड़ा बनना चाहा और वो (भाग कर) न निकल सके।
فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ
फिर सब को हम ने उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। फिर उन में से किसी पर हम ने कंकर का तूफान
حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ
भेजा। और उन में से किसी को चीख ने पकड़ लिया। और उन में से
مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ
किसी को हम ने ज़मीन में धंसा दिया। और उन में से वो भी थे जिन को हम ने ग़र्क़ किया।
وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
और अल्लाह ऐसा नहीं है के उन पर ज़ुल्म करे लेकिन वो खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म
يَظْلِمُوْنَ ﴿۴۰﴾ مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ
करते थे। उन लोगों का हाल जिन्हों ने अल्लाह के सिवा हिमायती
اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۖ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۗ
बना लिए हैं मकड़ी की तरह है, जिस ने जाला बनाया।
وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا
और यक़ीनन घरों में सब से कमज़ोर (बूदा) मकड़ी का जाला है। काश के वो
يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ
जानते। यक़ीनन अल्लाह जानता है जिन चीज़ों को अल्लाह के
مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۴۲﴾
सिवा ये पुकारते हैं। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।
وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ
और ये मिसालें हैं जिन को हम इन्सानों के लिए बयान करते हैं। और सिर्फ इल्म वाले
اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
ही उसे समझते हैं। आसमानों और ज़मीन को अल्लाह ने हक़ के खातिर पैदा
بِالْحَقِّ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۴﴾
किया। यक़ीनन उस में ईमान लाने वालों के लिए निशानी है।

وقف لازم

ع ٤

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ

आप उस किताब की तिलावत करते रहिए जो आप की तरफ़ वही की गई है और नमाज़ क़ाइम कीजिए।

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ

यक़ीनन नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है। और अल्लाह का ज़िक्र

اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ۝٤٥ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ

सब से बड़ी चीज़ है। और अल्लाह जानता है वो जो तुम करते हो। और बेहतर अन्दाज़ के सिवा

الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ

एहले किताब से झगड़ा मत करो। मगर वो जो उन में से ज़ालिम हैं

وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ

और यूँ कहो हम ईमान लाए हैं उस किताब पर जो हमारी तरफ़ उतारी गई और जो तुम्हारी तरफ उतारी गई

وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝٤٦

और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के ताबेदार हैं।

وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ

और इसी तरह हम ने आप की तरफ ये किताब उतारी। फिर वो जिन को हम ने किताब दी

يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ

वो उस पर ईमान रखते हैं। और उन लोगों में से कुछ उस पर ईमान रखते हैं। और हमारी आयतों का

بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝٤٧ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ

इन्कार नहीं करते मगर जो काफ़िर हैं। और आप इस से पेहले न कोई किताब तिलावत

مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝٤٨

करते थे और न अपने दाहने हाथ से लिखते थे, तब तो ज़रूर बातिलपरस्त शक में पड़ते।

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ

बल्के ये रोशन आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन को इल्म दिया गया।

وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝٤٩ وَقَالُوْا

और हमारी आयात का ज़ालिम लोग ही इन्कार करते हैं। और केहते हैं

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ

उस पर उस के रब की तरफ से मोअजिज़ात क्यूं नहीं उतारे गऐ? आप फरमा दीजिए के मोअजिज़ात तो सिर्फ

عِنۡدَ اللّٰہِ ؕ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیۡرٌ مُّبِیۡنٌ ﴿۵۰﴾ اَوَ لَمۡ یَکۡفِہِمۡ اَنَّاۤ
अल्लाह के पास हैं। और मैं तो सिर्फ साफ साफ डराने वाला हूँ। क्या उन के लिए ये काफ़ी नहीं है

اَنۡزَلۡنَا عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ یُتۡلٰی عَلَیۡہِمۡ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ
के हम ने आप की तरफ़ ये किताब उतारी जो उन पर तिलावत की जाती है। यक़ीनन उस में

لَرَحۡمَۃً وَّ ذِکۡرٰی لِقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۱﴾ قُلۡ کَفٰی بِاللّٰہِ بَیۡنِیۡ
रहमत है और नसीहत है ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। आप फ़रमा दीजिए अल्लाह मेरे

ع

وَ بَیۡنَکُمۡ شَہِیۡدًا ۚ یَعۡلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ ؕ
और तुम्हारे दरमियान काफ़ी गवाह है। अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है।

وَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِالۡبَاطِلِ وَ کَفَرُوۡا بِاللّٰہِ ۙ اُولٰٓئِکَ ہُمُ
और जो बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाह के साथ कुफ्र करते हैं, यही लोग ख़सारा उठाने

الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۵۲﴾ وَ یَسۡتَعۡجِلُوۡنَکَ بِالۡعَذَابِ ؕ
वाले हैं। और ये लोग आप से अज़ाब जल्दी तलब कर रहे हैं।

وَ لَوۡ لَاۤ اَجَلٌ مُّسَمًّی لَّجَآءَہُمُ الۡعَذَابُ ؕ وَ لَیَاۡتِیَنَّہُمۡ بَغۡتَۃً
और अगर वक़्त मुक़र्रर किया हुवा न होता तो उन के पास अज़ाब आ जाता। और अलबत्ता उन के पास वो अचानक ही

وَّ ہُمۡ لَا یَشۡعُرُوۡنَ ﴿۵۳﴾ یَسۡتَعۡجِلُوۡنَکَ بِالۡعَذَابِ ؕ
आ जाएगा और उन्हें मालूम भी नहीं होगा। ये आप से अज़ाब जल्दी तलब कर रहे हैं।

وَ اِنَّ جَہَنَّمَ لَمُحِیۡطَۃٌۢ بِالۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۵۴﴾ یَوۡمَ یَغۡشٰہُمُ الۡعَذَابُ
और यक़ीनन जहन्नम काफिरों को घेरने वाली है। जिस दिन उन को अज़ाब ढांप लेगा

مِنۡ فَوۡقِہِمۡ وَ مِنۡ تَحۡتِ اَرۡجُلِہِمۡ وَ یَقُوۡلُ ذُوۡقُوۡا
उन के ऊपर से और पैरों के नीचे से और कहेगा के तुम

مَا کُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۵۵﴾ یٰعِبَادِیَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا
अपने आमाल के मज़े लो। ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो!

اِنَّ اَرۡضِیۡ وَاسِعَۃٌ فَاِیَّایَ فَاعۡبُدُوۡنِ ﴿۵۶﴾ کُلُّ نَفۡسٍ
यक़ीनन मेरी ज़मीन वसीअ है, तो तुम मेरी ही इबादत करो। हर जानदार को

ذَآئِقَۃُ الۡمَوۡتِ ۟ ثُمَّ اِلَیۡنَا تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا
मौत का मज़ा चखना है। फिर हमारी तरफ तुम्हें वापस आना है। और जो ईमान लाए

وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِىْ

और नेक अमल करते रहे, हम उन्हें ज़रूर जन्नत में से ठिकाना देंगे ऐसे बालाखानों (ऊपर वाली मन्ज़िलों)

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۵۸﴾

में जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अमल करने वालों का बदला कितना अच्छा है?

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۵۹﴾

वो लोग जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖۗ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ

और कितने जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठा कर नहीं रखते। अल्लाह ही उन्हें और तुम्हें भी रोज़ी देता है।

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۶۰﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ

और अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है। और अगर आप उन से पूछें किस ने आसमान

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ

और ज़मीन पैदा किए और किस ने चाँद और सूरज को काम में लगा रखा है, तो ज़रूर वो बोलेंगे के

اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۶۱﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

अल्लाह ने। फिर कहाँ वो लौटाए जाते हैं? अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ

चाहता है अपने बन्दों में से और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब

عَلِيْمٌ ﴿۶۲﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً

जानने वाला है। और अगर आप उन से सवाल करें के किस ने आसमान से पानी उतारा,

فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ

फिर उस के ज़रिए ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, तो ज़रूर वो जवाब देंगे के अल्लाह ने।

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۶۳﴾

आप फ़रमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। लेकिन उन में से अक्सर समझते नहीं।

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ لَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ

और ये दुन्यवी ज़िन्दगी नहीं है मगर दिल्लगी और खेल। और यक़ीनन आख़िरत

الْاٰخِرَةَ لَهِىَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾

वाला घर वही (अस्ल) ज़िन्दगी है। काश ये समझते।

فَاِذَا رَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ
फिर जब वो सवार होते हैं कशती में तो अल्लाह को पुकारते हैं उसी के लिए इबादत को ख़ालिस करते

الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾
हुए। फिर जब अल्लाह उन्हें खुशकी की तरफ़ बचा कर ले आता है, तो फौरन ही वो शिर्क करने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۗ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾
ताके नाशुकरी करें उन नेअमतों में जो हम ने उन्हें दी। और ताके वो मज़े उड़ा लें। फिर आगे उन्हें पता चलेगा।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ
क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम ने अमन वाला हरम बनाया हालांके लोग उस के अतराफ़ से उचक

مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ
लिए जाते हैं? क्या फिर वो बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाह की नेअमतों की नाशुकरी

يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
करते हैं? और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ

كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ
घड़े या हक़ को झुठलाए जब वो उस के पास आए? क्या

فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا
जहन्नम काफिरों का ठिकाना नहीं? और वो लोग जिन्हों ने मुजाहदा किया हमारी खातिर तो हम उन्हें

لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾
हमारे रास्तों की ज़रूर रहनुमाई करेंगे। और यक़ीनन अल्लाह एहसान करने वालों के साथ है।

اٰيَاتُهَا ٦٠ (٣٠) سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ (٨٤) رُكُوْعَاتُهَا ٦

उस में ६० आयतें हैं सूरह रूम मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾ فِىْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ
अलिफ लाम मीम। रूमी उस ज़मीन के क़रीबी इलाक़े में मग़लूब हुए। और वो

مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾ فِىْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ؕ لِلّٰهِ
मग़लूब होने के बाद जल्द ही ग़ालिब होंगे। चन्द साल में। तमाम

الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَ يَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ
उमूर अल्लाह ही के क़ब्ज़े में हैं इस से पेहले भी और इस के बाद भी। और उस दिन ईमान वाले अल्लाह की
الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۴﴾ بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
नुसरत पर खुश हो जाएंगे। अल्लाह नुसरत करता है जिस की चाहता है। और वो ज़बर्दस्त है,
الرَّحِيْمُ ۙ﴿۵﴾ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ
निहायत रहम वाला है। ये अल्लाह के वादे के तौर पर है। अल्लाह अपने वादे के खिलाफ़ नहीं करेगा,
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶﴾ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا
लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। वो दुन्यवी ज़िन्दगी के ज़ाहिर का इल्म
مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖۚ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿۷﴾
रखते हैं। और वो आख़िरत से ग़ाफिल हैं।
اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ
क्या उन्हों ने सोचा नहीं अपने दिल में के अल्लाह ने आसमान और ज़मीन और उन के
وَ الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
दरमियान की चीज़ें पैदा नहीं कीं मगर हक़ के साथ और एक मुक़र्ररा वक़्त तक के लिए?
وَ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿۸﴾
और यक़ीनन इन्सानों में से बहोत से अपने रब की मुलाक़ात का इन्कार करते हैं।
اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
क्या वो ज़मीन में चले (फिरे) नहीं के देखते के उन लोगों का अन्जाम
عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
कैसा हुवा जो उन से पेहले थे। जो उन से ज़्यादा क़ूव्वत वाले थे
وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَ عَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا
और उन्हों ने ज़मीन को जोता और आबाद किया था उस से ज़्यादा जितना इन्हों ने आबाद किया है
وَ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
और उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए थे? फिर अल्लाह ऐसा नहीं था के उन पर ज़ुल्म करता,
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۹﴾ؕ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ
लेकिन वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। फिर बुरा करने वालों

الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا

का अन्जाम बहोत ही बुरा हुवा, इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह की आयात को झुठलाया और वो उन

بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝۱۰ اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ

के साथ मज़ाक़ करते थे। अल्लाह पेहली बार मख़लूक़ पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा,

ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝۱۱ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ

फिर उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। और जिस दिन क़यामत क़ाइम होगी तो मुजरिम लोग

الْمُجْرِمُوْنَ ۝۱۲ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا

मायूस रेह जाएंगे। और उन के लिए उन के शुरका में से सिफ़ारिश करने वाले भी नहीं होंगे

وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝۱۳ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ

और वो अपने शुरका का इन्कार कर देंगे। और जिस दिन क़यामत क़ाइम होगी

يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝۱۴ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

उस दिन सब अलग अलग हो जाएंगे। फिर जो लोग ईमान लाए और नेक काम

الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝۱۵ وَاَمَّا الَّذِيْنَ

करते रहे तो वो बाग़ में होंगे, उन्हें खुश कर दिया जाएगा। और जिन्हों ने

كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ

कुफ़्र किया और हमारी आयतों को और आखिरत के मिलने को झुठलाया, तो वो

فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝۱۶ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ

अज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। तो अल्लाह की तस्बीह करो जब

تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝۱۷ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ

शाम करो और जब सुबह करो। और उसी के लिए तमाम तारीफ़ें हैं आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝۱۸ يُخْرِجُ الْحَيَّ

में और सेपेहर के वक्त और जिस वक़्त तुम दोपहर करो। वही ज़िन्दा को मुर्दा

مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِ

से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है और ज़मीन को उस के खुश्क

الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝۱۹ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ

हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है। और इसी तरह तुम निकाले जाओगे। और अल्लाह की निशानियों में से

اَنۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَاۤ اَنۡتُمۡ بَشَرٌ تَنۡتَشِرُوۡنَ ۝۲۰
ये है के उस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर अब तुम बशर हो, फैल रहे हो।
وَمِنۡ اٰيٰتِهٖۤ اَنۡ خَلَقَ لَكُمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ اَزۡوَاجًا
और अल्लाह की निशानियों में से ये भी है के उस ने तुम्हारे लिए तुम ही (मियाँ बीवी) से जोड़ों को पैदा किया
لِّتَسۡكُنُوۡۤا اِلَيۡهَا وَجَعَلَ بَيۡنَكُمۡ مَّوَدَّةً وَّرَحۡمَةً ؕ
ताके तुम उन के पास सुकून पाओ और तुम्हारे दरमियान महब्बत और शफ़क़त रख दी।
اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّتَفَكَّرُوۡنَ ۝۲۱ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖ خَلۡقُ
यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह की निशानियों में से आसमानों
السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافُ اَلۡسِنَتِكُمۡ وَ اَلۡوَانِكُمۡ ؕ
और ज़मीन को पैदा करना है और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे रंगों का अलग अलग होना है।
اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلۡعٰلِمِيۡنَ ۝۲۲ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمۡ
यक़ीनन उस में समझने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और अल्लाह की निशानियों में से तुम्हारा सोना है
بِالَّيۡلِ وَالنَّهَارِ وَابۡتِغَآؤُكُمۡ مِّنۡ فَضۡلِهٖ ؕ اِنَّ
रात में और दिन में और तुम्हारा तलाश करना है उस की रोज़ी को। यक़ीनन
فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّسۡمَعُوۡنَ ۝۲۳ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖ يُرِيۡكُمُ
उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सुनती है। और अल्लाह की निशानियों में से ये भी है के वो तुम्हें
الۡبَرۡقَ خَوۡفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحۡىٖ
बिजली दिखाता है डराने के लिए और लालच के लिए, और वो आसमान से पानी बरसाता है, फिर उस के ज़रिए
بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है। यक़ीनन उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं
لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۝۲۴ وَمِنۡ اٰيٰتِهٖۤ اَنۡ تَقُوۡمَ
ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह की निशानियों में से ये भी है के आसमान और ज़मीन अल्लाह
السَّمَآءُ وَالۡاَرۡضُ بِاَمۡرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمۡ دَعۡوَةً ۖۗ
के हुक्म से क़ाइम हैं। फिर जब वो तुम्हें पुकारेगा एक ही पुकार
مِّنَ الۡاَرۡضِ ۖۗ اِذَاۤ اَنۡتُمۡ تَخۡرُجُوۡنَ ۝۲۵ وَلَهٗ مَنۡ فِى
ज़मीन से तो उसी वक़्त तुम (ज़मीन से) निकल आओगे। और उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَهُوَ الَّذِیْ

आसमानों और ज़मीन में हैं। तमाम उस के ताबेदार हैं। और वही अल्लाह है जो मख़्लूक़

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ

पेहली बार पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा और ये उस पर आसान है। और

الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

सब से ऊँची शाने (वहदानीयत) उसी के लिए है आसमानों और ज़मीन में। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾ ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ

हिक्मत वाला है। उस ने तुम्हारे लिए मिसाल बयान की तुम्हारी जानों से। क्या तुम्हारे

مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِیْ مَا رَزَقْنٰكُمْ

ममलूक तुम्हारे शरीक हैं उस रोज़ी में जो हम ने तुम्हें दी

فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ

के तुम (और वो ममलूक) बराबर हो जाओ, के तुम उन से डरो तुम्हारे अपने से डरने की तरह?

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ

इसी तरह हम आयतें तफ़सील से बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं। बल्के ये

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِیْ

ज़ालिम अपनी ख़्वाहिशात के पीछे बग़ैर दलील के चल पड़े हैं। फिर कौन उस को रास्ता

مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمْ

दिखा सकता है जिसे अल्लाह गुमराह कर दे? और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा। तो आप अपना चेहरा हर

وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِیْ فَطَرَ النَّاسَ

तरफ़ से फेर कर इसी दीन की तरफ़ रखिए, अल्लाह की फ़ितरत (दीन) की तरफ़ जिस पर अल्लाह ने इन्सानों को पैदा

عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ

किया है। बदलना नहीं है अल्लाह के बनाए हुए को। ये सीधा दीन है।

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ

लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। उसी की तरफ़ रूजूअ करने वाले बनो

وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۳۱﴾

और उसी से डरो और नमाज़ क़ाइम करो और मुशरिकीन में से मत बनो।

ع ۸

مِنَ الَّذِیْنَ فَرَّقُوْا دِیْنَهُمْ وَ كَانُوْا شِیَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ

उन में से जिन्हों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और वो कई गिरोह बन गए। हर फ़िरक़ा

بِمَا لَدَیْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝٣٢ وَ اِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا

उसी पर खुश है जो उस के पास है। और जब इन्सानों को ज़रर पहोंचता है तो वो अपने रब को

رَبَّهُمْ مُّنِیْبِیْنَ اِلَیْهِ ثُمَّ اِذَاۤ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً

पुकारते हैं उसी की तरफ़ रूजूअ करते हुए, फिर जब वो उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत चखाता है

اِذَا فَرِیْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ یُشْرِكُوْنَ ۝٣٣ لِیَكْفُرُوْا

तो फ़ौरन उन में से एक जमाअत अपने रब के साथ शरीक ठेहराने लगती है। ताके वो नाशुकरी करें

بِمَاۤ اٰتَیْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣٤ اَمْ اَنْزَلْنَا

उन चीज़ों की जो हम ने उन्हें दीं। फिर तुम मज़े उड़ा लो, फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा। या हम ने उन

عَلَیْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ یَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ یُشْرِكُوْنَ ۝٣٥

पर कोई दलील उतारी है, जो ताईद करती हो उन के इरतिकाबे शिर्क की?

وَ اِذَاۤ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ

और जब हम इन्सानों को रहमत चखाते हैं तो वो उस पर खुश होने लगते हैं। और जब उन्हें मुसीबत

سَیِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْهِمْ اِذَا هُمْ یَقْنَطُوْنَ ۝٣٦

पहोंचती है उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे हैं तो फ़ौरन वो मायूस हो जाते हैं।

اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ وَ یَقْدِرُ ؕ

क्या उन्हों ने देखा नहीं के अल्लाह रोज़ी कुशादा और तंग करते हैं जिस के लिए चाहते हैं?

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ۝٣٧ فَاٰتِ

यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। तो तुम

ذَا الْقُرْبٰی حَقَّهٗ وَ الْمِسْكِیْنَ وَ ابْنَ السَّبِیْلِ ؕ ذٰلِكَ

रिश्तेदारों को और मिस्कीन और मुसाफिर को उस का हक़ दो। ये

خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ؗ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ

बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं। और यही लोग

الْمُفْلِحُوْنَ ۝٣٨ وَ مَاۤ اٰتَیْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّیَرْبُوَاۡ فِیْۤ اَمْوَالِ

फलाह पाने वाले हैं। और जो सूद तुम देते हो ताके वो बढ़े लोगों के मालों

النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ

में, तो वो अल्लाह के नज़दीक़ तो बढ़ता नहीं। और जो ज़कात देते हो

تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह की रज़ा तलब करते हुए तो यही लोग दुगना करने वाले हैं। अल्लाह

الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ

ने तुम्हें पैदा किया, फिर उस ने तुम्हें रोज़ी दी, फिर वो तुम्हें मौत देगा, फिर वो तुम्हें ज़िन्दा करेगा।

هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ

क्या तुम्हारे शुरका में से कोई हैं जो इस में से कुछ भी कर

مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ

सकते हों? अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों से जिन्हें वो शरीक ठेहराते हैं। फ़साद फैल गया

فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ

खुशकी और तरी में उन आमाल की बदौलत जो इन्सानी हाथों ने किए, ताके अल्लाह

بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ سِيْرُوْا

उन के कुछ आमाल की उन्हें सज़ा चखाए ताके वो बाज़ आ जाएं। आप फरमा दीजिए के तुम

فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

ज़मीन में चलो, फिर देखो के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जो उन से

مِنْ قَبْلُ ۭ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ

पेहले थे। उन में से अक्सर मुशरिक थे। तो आप अपना चेहरा सीधा रखिए

لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ

उस सीधे दीन की तरफ इस से पेहले के वो दिन आ जाए जिस के टलने का कोई इम्कान नहीं

مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ

अल्लाह की तरफ से, उस दिन वो सब अलग अलग हो जाएंगे। जो कुफ्र करेगा तो उसी के ज़िम्मे उस के

كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

कुफ्र का वबाल पड़ेगा। और जो नेक अमल करेगा तो अपनी ही ज़ात के फ़ाइदे के लिए वो तय्यारी कर रहे हैं।

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ

ताके अल्लाह ईमान वालों को और उन को जिन्हों ने नेक अमल किए अपने फ़ज़्ल से बदला दे।

اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ يُّرْسِلَ

यक़ीनन अल्लाह काफिरों से महब्बत नहीं करते। और अल्लाह की निशानियों में से ये है के वो हवाएं

الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ

भेजता है बशारत देने वाली बना कर और ताके वो तुम्हें अपनी कुछ रहमत का मज़ा चखाए और ताके

الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ

कशती चले अल्लाह के हुक्म से और ताके तुम उस का फ़ज़्ल तलब करो और ताके तुम

تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا

शुक्र करो। यक़ीनन हम ने आप से पेहले पैग़म्बर भेजे

اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ

उन की क़ौम की तरफ, फिर वो उन के पास रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर हम ने मुजरिमों से

اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

इन्तिक़ाम लिया। और हम पर लाज़िम है ईमान वालों की मदद करना। अल्लाह ही है जो

يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ

हवाएं भेजता है, फिर वो बादलों को उड़ाती हैं, फिर उस को आसमान में फैलाता है जैसे

يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ

चाहता है, और उस को अलग अलग टुकड़े बना देता है, फिर तुम मेंह को देखोगे जो उस के दरमियान से

مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَاۤ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ

निकलती है। फिर जब वो उस को पहोंचाता है जिसे चाहता है अपने बन्दों में से

اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ

तब वो खुश हो जाते हैं। और यक़ीनन इस से पेहले के

اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَانْظُرْ

उन के ऊपर ये बारिश बरसाई जाए वो बिलकुल नाउम्मीद थे। फिर आप देखिए अल्लाह

اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ

की रहमतों के निशानात की तरफ के कैसे अल्लाह ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है।

اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

यक़ीनन वो मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ

और अगर हम तूफानी हवा भेजें, फिर वो खेती को ज़र्द देख लें, तो ज़रूर उस के बाद वो नाशुकरी

يَكْفُرُوْنَ ﴿۵۱﴾ فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ

करने लगें। यक़ीनन आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और आप बेहरे को पुकार नहीं

الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ

सुना सकते जब के वो पुश्त फेर कर भागे भी। और आप अन्धों को उन की गुमराही से रास्ता

عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا

नहीं दिखा सकते। आप तो सिर्फ उसी को सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं,

فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۵۳﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ

फिर वो ताबेदारी करते हैं। अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया कमज़ोरी से,

ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ

फिर उस ने कमज़ोरी के बाद कूव्वत दी, फिर कूव्वत के

مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّ شَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ

बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया। अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। और वो

الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿۵۴﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ

इल्म वाला, कुदरत वाला है। और जिस दिन क़यामत क़ाइम होगी तो मुजरिम लोग

الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا

क़स्में खाएंगे के वो एक घड़ी से ज़्यादा नहीं ठेहरे। इसी तरह ये हक़ से

يُؤْفَكُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ

लौटाए जाते थे। और उन लोगों ने कहा जिन को इल्म और ईमान दिया गया के

لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ز فَهٰذَا يَوْمُ

यक़ीनन तुम अल्लाह की किताब के ऐतेबार से ठेहरे हो क़ब्रों से उठाए जाने के दिन तक। तो ये क़ब्रों से

الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَيَوْمَئِذٍ

उठाए जाने का दिन है, लेकिन तुम जानते नहीं थे। फिर उस दिन

لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۵۷﴾

उन ज़ालिमों को उन की माज़िरत नफ़ा नहीं देगी और न उन से मुआफी तलब की जाएगी।

ع ۵ ۱۳

قرأ حفص بضم الضاد وفتحها والتلاوة لكل الضم مختارة ١٢

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
यक़ीनन हम ने इन्सानों के लिए इस कुरआन में हर मिसाल बयान की है।

وَلَىِٕنْ جِئْتَهُمْ بِاٰیَةٍ لَّیَقُوْلَنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا
और अगर आप उन के पास मोअजिज़ा ले भी आएं तब भी काफिर लोग कहेंगे

اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿۵٨﴾ كَذٰلِكَ یَطْبَعُ اللّٰهُ
बस! तुम तो झूठे हो। इसी तरह अल्लाह मुहर लगा देता है उन

عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۵٩﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ
लोगों के दिलों पर जो समझते नहीं। इस लिए आप सब्र कीजिए, यक़ीनन अल्लाह का वादा

اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا یَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِیْنَ لَا یُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾
सच्चा है और आप से सब्र का दामन न छुड़ा दें (आपे से बाहर न करें) वो लोग जो यक़ीन नहीं रखते।

ركوعاتها ٤ (٣١) سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ (۵٧) اٰیَاتُهَا ٣٤
और ४ रूकूअ हैं सूरह लुक़्मान मक्का में नाज़िल हुई उस में ३४ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِیْمِ ﴿٢﴾ هُدًى
अलिफ लाम मीम। ये हिकमत वाली किताब की आयतें हैं। हिदायत

وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِیْنَ ﴿٣﴾ الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
और रहमत है उन नेकी करने वालों के लिए जो नमाज़ क़ाइम करते हैं

وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ یُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾
और ज़कात देते हैं और जो आखिरत पर भी यकीन रखते हैं।

اُولٰٓىِٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ
ये अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं और यही लोग

الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّشْتَرِیْ لَهْوَ
फलाह पाने वाले हैं। और उन लोगों में से एक वो भी है जो अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली कहानियाँ

الْحَدِیْثِ لِیُضِلَّ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ
खरीदता है ताके वो बेसमझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे।

وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝۶

और वो राहे खुदा को मज़ाक़ बनाता है। यही हैं जिन के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब है।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ

और जब हमारी आयतें उस पर तिलावत की जाती हैं तो वो तकब्बुर से मुंह फेर लेता है गोया के

لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ

उस ने सुना ही नहीं गोया उस के कान में डाट है। तो आप उसे दर्दनाक अज़ाब की बशारत

اَلِيْمٍ ۝۷ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

सुना दीजिए। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए

جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝۸ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ

जन्नाते नईम हैं। जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह ने सच्चा वादा फरमाया है।

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝۹ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ

और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। उस ने आसमान पैदा किए बग़ैर सुतून के

تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ

जिन को तुम देख सको और उस ने ज़मीन में पहाड़ रख दिए के वो तुम्हें ले कर हिलने न लगे

وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ

और उस ने ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैला दिए। और हम ने आसमान से पानी

مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝۱۰ هٰذَا خَلْقُ

उतारा, फिर हम ने उस में नबातात के खूबसूरत जोड़े उगाए। ये अल्लाह की मखलूक़

اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ

है, तो मुझे दिखाओ के जो अल्लाह के अलावा हैं उन लोगों ने क्या पैदा किया?

بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝۱۱ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ

बल्के ये ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। यक़ीनन हम ने लुक़मान को हिकमत

الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ

दी के अल्लाह का शुक्र अदा करो। जो शुक्र करेगा तो सिर्फ अपने ज़ाती फाइदे के लिए

لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝۱۲ وَاِذْ

करेगा। और जो नाशुकरी करेगा तो यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। और जब

قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ

लुक़मान (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटे से कहा जब वो उसे नसीहत कर रहे थे ऐ मेरे बेटे! तू अल्लाह के साथ शरीक मत ठेहरा।

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾ وَ وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ

यक़ीनन शिर्क बहोत बड़ा जुल्म है। और हम ने इन्सान को उस के वालिदैन के मुतअल्लिक़

بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ

हुक्म दिया के उस की माँ ने उस को पेट में उठाया है कमज़ोरी दर कमज़ोरी, और उस का दूध छुड़ाना

فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾

दो साल के अन्दर होता है, के तू मेरा और अपने वालिदैन का शुक्रगुज़ार रेह। मेरी ही तरफ लौटना है।

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ

और अगर वालिदैन तुझे मजबूर करें इस पर के तू मेरे साथ शरीक ठेहराए ऐसी चीज़ को जिस की तेरे पास कोई

عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ صَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا

दलील नहीं, तो तू उन का केहना न मानना, लेकिन उन के साथ रेहना दुन्या में उर्फ के मुताबिक़।

وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ

और उन लोगों के रास्ते पर चलना जो मेरी तरफ रूजूअ होते हैं, फिर मेरी ही तरफ तुम्हें लौट कर आना है,

فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ

फिर मैं तुम्हें बताऊँगा जो अमल तुम करते थे। ऐ मेरे बेटे! यक़ीनन अगर राई

مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ

के दाने के बराबर भी कोई चीज़ हो, फिर वो किसी चटान में हो

اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ

या आसमानों या ज़मीन में हो, तब भी अल्लाह उस को ले आएगा।

اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ

यक़ीनन अल्लाह बारीकबीन, बाखबर है। ऐ मेरे बेटे! तू नमाज़ क़ाइम कर और नेकी का

بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى

हुक्म कर और बुराई से रोक और सब्र कर उन मुसीबतों पर

مَآ اَصَابَكَ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ

जो तुझे पहोंचीं। यक़ीनन ये ऐसे उमूर में से है जिन का अज़्म किया जाता है। और तू अपना रूख़्सार लोगों

خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ
से मत फेर और ज़मीन में अकड़ कर मत चल।

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾ وَاقْصِدْ
यक़ीनन अल्लाह हर तकब्बुर करने वाले, फख्र करने वाले से महब्बत नहीं करता। और दरमियानी

فِیْ مَشْیِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ
चाल इखतियार कर और अपनी आवाज़ पस्त रख। यक़ीनन सब से

الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِیْرِ ﴿١٩﴾ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ
बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है। क्या तुम ने देखा नहीं के अल्लाह ने

سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ
तुम्हारे ताबेअ कर दीं वो चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं

وَاَسْبَغَ عَلَیْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ
और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतों की वुस्अत फरमा दी है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَیْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًی
और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं इल्म और हिदायत

وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِیْرٍ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قِیْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا
और रोशन किताब के बग़ैर। और जब उन से कहा जाता है के तुम उस हिदायत की

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَیْهِ
पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारी है, तो केहते हैं के बल्के हम तो उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने हमारे

اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّیْطٰنُ یَدْعُوْهُمْ اِلٰی عَذَابِ
बाप दादा को पाया। क्या अगर्चे शैतान उन को बुला रहा हो दोज़ख के अज़ाब की

السَّعِیْرِ ﴿٢١﴾ وَمَنْ یُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَی اللّٰهِ وَهُوَ
तरफ? और जो अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ कर देगा और वो

مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ؕ
नेकोकार हो, तो उस ने मज़बूत कड़ा थाम लिया।

وَاِلَی اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا یَحْزُنْكَ
और अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर का अन्जाम है। और जो कुफ्र करता है तो उस का कुफ्र आप को ग़मगीन

كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

न करे। हमारी ही तरफ उन को लौटना है, फिर हम उन्हें बता देंगे जो अमल उन्हों ने किए थे। यक़ीनन अल्लाह

عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ

दिलों का हाल खूब जानते हैं। हम उन्हें थोड़ा फ़ाइदा उठाने देंगे, फिर ज़बर्दस्ती ले जाएंगे

اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ

सख्त अज़ाब की तरफ। और अगर आप उन से सवाल करें के किस ने आसमान

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ

और ज़मीन पैदा किए, तो ज़रूर कहेंगे के अल्लाह ने। आप फरमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं।

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

बल्के उन में से अक्सर जानते नहीं। अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ اَنَّ مَا

में हैं। यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। और अगर वो दरख्त जो

فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْ ۢ

ज़मीन में हैं वो क़लम बन जाएं और समन्दर उस के लिए रौशनाई बन जाए, उस के बाद

بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ

सात समन्दर और भी हों, तब भी अल्लाह के कलिमात खत्म नहीं होंगे। यक़ीनन

اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا

अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। तुम्हारा पैदा किया जाना और तुम्हारा कब्रों से उठना नहीं है मगर

كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ ۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ

एक जान (पैदा करने) के मानिन्द। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। क्या आप ने देखा नहीं के

اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَ

अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है और

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ز كُلٌّ يَّجْرِىْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

उस ने चाँद और सूरज को काम में लगा रखा है। सब के सब चलते रहेंगे एक वक़्ते मुक़र्ररा तक

وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

और ये के अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। ये इस वजह से के अल्लाह

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ
ही हक़ है और ये के अल्लाह के सिवा जिन को ये पुकारते हैं वो बातिल हैं

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝٣٠ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ
और ये के अल्लाह बरतर है, बड़ा है। क्या आप ने देखा नहीं के कशती

تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ
चलती है समन्दर में अल्लाह की नेअमत से ताके वो तुम्हें अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝٣١ وَاِذَا
यक़ीनन इस में अलबत्ता निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। और जब उन्हें मौज

غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
ढांप लेती है सायबानों की तरह, तो वो अल्लाह को पुकारने लगते हैं उस के लिए इबादत को खालिस करते हुए।

لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ
फिर जब वो उन को बचा कर खुशकी की तरफ ले आता है तो उन में से कुछ मयानारवी इखतियार करने वाले होते हैं।

وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝٣٢ يٰٓاَيُّهَا
और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करता मगर जो गद्दार, नाशुकरा है। ऐ

النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ
इन्सानो! तुम अपने रब से डरो और तुम डरो उस दिन से जिस दिन कोई वालिद

وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ
अपनी औलाद के काम नहीं आएगा और न औलाद अपने वालिद के कुछ भी काम

وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
आ सकेगी। यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, फिर तुम्हें दुन्यवी ज़िन्दगी

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۥ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝٣٣
धोके में न डाले। और तुम्हें अल्लाह से धोके में न रखे धोकेबाज़ (शैतान)।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ
यक़ीनन अल्लाह के पास क़यामत का इल्म है। और वही बारिश को उतारता है।

وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا
और जानता है उसे जो बच्चादानियों में है। और कोई शख्स नहीं जानता के

تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَمَا تَدْرِیْ نَفْسٌۢ بِاَیِّ اَرْضٍ
कल क्या करेगा? और कोई शख़्स नहीं जानता के किस ज़मीन में

تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ ﴿٣٤﴾
मरेगा? यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, बाखबर है।

ع ٤

اٰیَاتُهَا ٣٠ (٣٢) سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّیَّةٌ (٧٥) رُكُوْعَاتُهَا ٣
उस में ३० आयतें हैं सूरह सजदा मक्का में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِیْلُ الْكِتٰبِ لَا رَیْبَ فِیْهِ مِنْ رَّبِّ
अलिफ लाम मीम। इस किताब का उतारा जाना रब्बुल आलमीन की तरफ से है, इस में कोई

الْعٰلَمِیْنَ ﴿٢﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ
शक नहीं। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने खुद इस को घड़ लिया है? बल्के ये हक़ है तेरे रब

رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِیْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
की तरफ से ताके आप डराएं ऐसी क़ौम को जिन के पास आप से पेहले कोई डराने वाला नहीं आया

لَعَلَّهُمْ یَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
ताके वो राह पाएं। अल्लाह ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को

وَالْاَرْضَ وَمَا بَیْنَهُمَا فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं छे दिन में पैदा किया है, फिर वो

عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا
अर्श पर मुस्तवी हुवा। तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई मददगार और सिफारिशी

شَفِیْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ
नहीं है। क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? वो तमाम उमूर की तदबीर करता है आसमान

السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ یَعْرُجُ اِلَیْهِ فِیْ یَوْمٍ
से ज़मीन तक, फिर वो उस की तरफ चढ़ते हैं ऐसे दिन में

كَانَ مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾ ذٰلِكَ
जिस की मिक़दार तुम्हारी गिन्ती के ऐतेबार से एक हज़ार साल है। वो

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ الَّذِيْٓ

ग़ाइब और हाज़िर का जानने वाला है, ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। वो अल्लाह

اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ

जिस ने हर चीज़ को अच्छा बनाया जो भी उस ने पैदा किया, और इन्सान को पेहले मिट्टी से

مِنْ طِيْنٍ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ

पैदा किया। फिर उस ने उस की नस्ल को एक हक़ीर पानी के ख़ुलासे से

مَّهِيْنٍ ۝ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَ نَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ

बनाया। फिर उस को पूरा पूरा बनाया, फिर उस में अपनी रूह फूंक दी और

لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝

उस ने तुम्हारे कान, आँख और दिल बनाए। बहोत कम तुम शुक्र अदा करते हो।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ

और ये केहते है क्या जब हम गुम हो जाएंगे ज़मीन में, तब हम नई पैदाइश में ज़िन्दा कर के उठाए

جَدِيْدٍ ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝ قُلْ

जाएंगे? बल्के वो अपने रब की मुलाक़ात ही का इन्कार कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए

يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ

के तुम्हें वफात देगा मौत का वो फरिशता जो तुम पर मुतअय्यन है, फिर

اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ

तुम अपने रब की तरफ लौटाए जाओगे। और काश के आप देखते जब ये मुजरिम

نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا

अपने सर अपने रब के सामने झुकाए हुए होंगे। (वो कहेंगे) ऐ हमारे रब! हम ने

وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝

देख लिया और सुन लिया, तो तू हमें (दुन्या में) वापस भेज दे के हम नेक अमल करें, हमें यक़ीन आ गया।

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ

और अगर हम चाहते तो हर शख्स को उस की हिदायत दे देते, लेकिन मेरी जानिब से क़ौले सादिक़

الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

सादिर हो चुका है के मैं जिन्नात और इन्सानों, दोनों से जहन्नम को ज़रूर

اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ج
भरूँगा। तो तुम अज़ाब चखो इस वजह से के तुम ने अपने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था।

اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ
हम ने भी तुम्हें भुला दिया और अपने करतूत के इवज़ हमेशा का अज़ाब

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا
चखो। हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं के जब उन्हें उन आयात के ज़रिए नसीहत

بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا
की जाती है, तो सजदे में गिर जाते हैं और अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और वो

السجدة ٩

يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ السجدة تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ
बड़ाई नहीं चाहते। उन के पेहलू ख़्वाबगाहों से अलग रेहते हैं,

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ز وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾
वो अपने रब को खौफ व उम्मीद से पुकारते हैं। और हमारी दी हुई रोज़ी में से खर्च करते हैं।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ج
फिर कोई शख्स नहीं जानता के आँखों की ठन्डक में से क्या उस के लिए छुपाया गया है,

جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا
उन के आमाल के बदले में। क्या फिर वो शख्स जो मोमिन हो

وقف غفران

كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ط لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
उस शख्स की तरह हो सकता है जो बदकार है? दोनों बराबर नहीं हो सकते। अलबत्ता जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ز نُزُلًا ۢ بِمَا
और नेक अमल करते रहे, उन के लिए रेहने की जन्नतें हैं। मेहमानी के खातिर उन आमाल के

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ط
बदले में जो वो करते थे। और अलबत्ता जो बदकार हैं तो उन का ठिकाना दोज़ख है।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا
जब कभी वहाँ से निकलने का इरादा करेंगे तो उस में दोबारा लौटा दिए जाएंगे

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ
और उन से कहा जाएगा के उस आग के अज़ाब को चखो जिस को तुम झुठलाया

تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى

करते थे। और हम उन्हें क़रीबी अज़ाब में से चखाएंगे

دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ

बड़े अज़ाब से पेहले शायद वो बाज़ आ जाएं। और उस से ज़्यादा

اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ

ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के रब की आयात के ज़रिए नसीहत की जाए, फिर वो उस से ऐराज़ करे?

اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى

यक़ीनन हम मुजरिमों से इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को

ع ٢ ١٥

الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ

किताब दी, तो आप उस की मुलाक़ात के बारे में शक में न रहिए, और हम ने

هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً

उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया। और हम ने उन में से पेशवा बनाए

يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे जब उन्हों ने सब्र किया। और वो हमारी आयतों पर यक़ीन

يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

रखते थे। यक़ीनन तेरा रब उन के दरमियान क़यामत के दिन फेसला करेगा

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

उन बातों में से जिन में वो इख़्तिलाफ कर रहे थे। क्या उन के लिए ये चीज़ हिदायत का बाइस नहीं हुई के

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ

हम ने उन से पेहले कितनी क़ौमों को हलाक किया जिन के मकानात में

فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٦﴾

ये चलते हैं? यक़ीनन उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं। क्या फिर वो सुनते नहीं?

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ

क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम पानी को चलाते हैं बन्जर ज़मीन की तरफ़,

فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ

फिर हम उस के ज़रिए खेती निकालते हैं जिस से उन के चौपाए और खुद वो भी खाते हैं।

اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ

क्या फिर वो देखते नहीं? और ये पूछते हैं के ये फत्ह़ कब है

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ

अगर तुम सच्चे हो? आप फरमा दीजिए के फत्ह़ के दिन काफिरों को उन का ईमान लाना

كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَعْرِضْ

नफा नहीं देगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। इस लिए उन से आप ऐराज़ कीजिए

عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿٣٠﴾

और मुन्तज़िर रहिए। यक़ीनन ये भी मुन्तज़िर हैं।

(٣٣) سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ (٩٠)

اٰيَاتُهَا ٧٣ — رُكُوْعَاتُهَا ٩

उस में ७३ आयतें हैं — सूरह अहज़ाब मदीना में नाज़िल हुई — और ९ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप अल्लाह से डरिए और काफिरों और मुनाफिक़ों का केहना न मानिए।

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١﴾ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ

यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और उस की पैरवी कीजिए जो आप की तरफ आप के रब की

مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٢﴾

तरफ से वही किया जा रहा है। यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है।

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٣﴾ مَا جَعَلَ

और आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। और अल्लाह कारसाज़ काफी है। अल्लाह ने किसी

اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ

शख्स के सीने में दो दिल नहीं बनाए। और तुम्हारी

اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ

बीवियों को जिन से तुम ज़िहार करते हो उन को तुम्हारी माँ नहीं बनाया।

وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ

और तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारे हक़ीक़ी बेटे नहीं बनाया। ये तुम्हारी अपने मुंह से कही हुई

بِاَفْوَاهِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ ﴿٤﴾

बातें हैं। और अल्लाह हक़ केहता है और उसे सीधे रास्ते की रहनुमाई करता है।

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ

तुम उन को उन के बाप दादा की तरफ मन्सूब कर के पुकारो, ये अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इन्साफ वाली चीज़ है। फिर

لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۗ

अगर तुम उन के बाप दादा को नहीं जानते, तो वो दीन में तुम्हारे भाई हैं और तुम्हारे आज़ादकरदा गुलाम हैं।

وَ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ

और तुम पर कोई हरज नहीं है उस में जो तुम ग़लती कर बैठो,

وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

लेकिन वो जिस का तुम दिल से इरादा करो। (ये ग़लत है।) और अल्लाह बख्शने वाला,

رَّحِيْمًا ﴿٥﴾ اَلنَّبِىُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

निहायत रहम वाला है। ये नबी ईमान वालों पर उन की जानों से भी ज़्यादा हक़ रखते हैं,

وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ۗ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى

और नबी की बीवियाँ उन की माएँ हैं। और रिश्तेदार उन में से एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार

بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ

हैं अल्लाह की किताब में ईमान वालों से और मुहाजिरीन से,

اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ۗ كَانَ ذٰلِكَ

मगर ये के तुम अपने दोस्तों के साथ उर्फ के मुताबिक़ कोई मुआमला करो। ये

فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٦﴾ وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ

किताब में लिखा हुवा है। और जब हम ने अम्बिया से उन का

مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى

अहद लिया और आप से और नूह और इब्राहीम और मूसा

وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۠ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٧﴾

और ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) से। और हम ने उन से पुख्ता अहद लिया।

لِّيَسْئَلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

ताके अल्लाह सच्चों से उन की सच्चाई के मुतअल्लिक़ सवाल करे। और अल्लाह ने काफ़िरों के लिए दर्दनाक

عَذَابًا اَلِیۡمًا ﴿۸﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اذۡكُرُوۡا نِعۡمَةَ اللّٰهِ
अज़ाब तय्यार कर रखा है। ऐ ईमान वालो! तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को

عَلَیۡكُمۡ اِذۡ جَآءَتۡكُمۡ جُنُوۡدٌ فَاَرۡسَلۡنَا عَلَیۡهِمۡ رِیۡحًا
जो तुम पर है जब तुम्हारे पास लशकर आए, फिर हम ने उन पर तूफानी हवा

وَّجُنُوۡدًا لَّمۡ تَرَوۡهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِیۡرًا ﴿۹﴾
और ऐसे लशकर भेजे जिन को तुम ने नहीं देखा। और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे थे।

اِذۡ جَآءُوۡكُمۡ مِّنۡ فَوۡقِكُمۡ وَمِنۡ اَسۡفَلَ مِنۡكُمۡ
जब वो तुम्हारे पास आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से

وَاِذۡ زَاغَتِ الۡاَبۡصَارُ وَبَلَغَتِ الۡقُلُوۡبُ الۡحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوۡنَ
और जब के आँखें फटी की फटी रेह गईं और दिल हलक़ तक पहोंच गए और तुम ने अल्लाह के

بِاللّٰهِ الظُّنُوۡنَا ﴿۱۰﴾ هُنَالِكَ ابۡتُلِیَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَزُلۡزِلُوۡا
साथ तरह तरह के गुमान किए। उस वक़्त ईमान वाले आज़माए गए और

زِلۡزَالًا شَدِیۡدًا ﴿۱۱﴾ وَاِذۡ یَقُوۡلُ الۡمُنٰفِقُوۡنَ وَالَّذِیۡنَ
उन्हें सख्त हिला दिया गया। और जब मुनाफ़िक़ मर्द और वो जिन के दिलों में

فِیۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوۡلُهٗۤ
मर्ज़ है, केहने लगे हम से अल्लाह ने और उस के रसूल ने जो वादा किया था

اِلَّا غُرُوۡرًا ﴿۱۲﴾ وَاِذۡ قَالَتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡهُمۡ یٰۤاَهۡلَ
वो धोका ही था। और जब उन में से एक जमाअत केह रही थी के ऐ यसरब

یَثۡرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمۡ فَارۡجِعُوۡا ۚ وَیَسۡتَاۡذِنُ فَرِیۡقٌ
वालो! तुम्हारे लिए ठेहेरने की जगह नहीं है, तो वापस लौट जाओ। और उन में से एक जमाअत नबीए अकरम

مِّنۡهُمُ النَّبِیَّ یَقُوۡلُوۡنَ اِنَّ بُیُوۡتَنَا عَوۡرَةٌ ۛؕ وَمَا هِیَ
(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इजाज़त तलब कर रही थी, वो केह रही थी के यक़ीनन हमारे घर खाली पड़े हैं, हालांके वो

بِعَوۡرَةٍ ۚۛ اِنۡ یُّرِیۡدُوۡنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿۱۳﴾ وَلَوۡ دُخِلَتۡ
खाली नहीं थे। वो सिर्फ भागना चाहते थे। और अगर (ये लशकर)

عَلَیۡهِمۡ مِّنۡ اَقۡطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الۡفِتۡنَةَ لَاٰتَوۡهَا
मदीना के अतराफ से उन पर दाखिल हो कर उन से कुफ्र का मुतालबा करें तो वो कुफ्र कर लेंगे,

وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ۝١٤ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا
और उस में सिर्फ थोड़ी ही देर करेंगे। यक़ीनन उन्हों ने अल्लाह से इस
اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ
से पेहले भी वादा किया था के पीठ फेर कर नहीं भागेंगे। और अल्लाह के अहद का
مَسْـُٔوْلًا ۝١٥ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ
ज़रूर सवाल किया जाएगा। आप फरमा दीजिए के तुम्हें भागना हरगिज़ नफ़ा नहीं देगा अगर तुम भागोगे
مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝١٦
मौत से या क़त्ल से और उस वक़्त तो फ़ाइदा नहीं उठा सकोगे मगर थोड़ा।
قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ
आप फ़रमा दीजिए के कौन है जो तुम्हें बचाएगा अल्लाह से अगर अल्लाह तुम्हारे साथ बुराई का
سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ
इरादा करे या तुम पर महरबानी का इरादा करे? और वो अपने लिए अल्लाह के अलावा
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝١٧ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ
कोई कारसाज़ और मददगार नहीं पाएंगे। यक़ीनन अल्लाह ने मालूम कर लिया है तुम में से रोकने
مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ج
वालों को और अपने भाइयों से केहने वालों को के तुम हमारे पास आ जाओ।
وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝١٨ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ صلے
और वो खुद लड़ाई में नहीं आते मगर थोड़ा। तुम पर बखीली करते हुए।
فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ
फिर जब खौफ आता है, तो आप उन को देखोगे के वो आप की तरफ तक रहे हैं, उन की आँखें
اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ج
घूम रही हैं उस शख्स की तरह जिस पर मौत की ग़शी तारी हो।
فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً
फिर जब खौफ चला जाता है तो वो आप को तेज़ ज़बानों से ताने देते हैं माल पर
عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ
लालच करते हुए। ये ईमान ही नहीं लाए, फिर अल्लाह ने उन के आमाल ह़ब्त कर दिए।

وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝١٩ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ
और ये अल्लाह पर आसान है। वो समझते हैं के लशकर अभी

لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ
गए नहीं। और अगर लशकर आ जाएं तो वो चाहेंगे के काश के वो

بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ۭ
(बाहर) देहातियों में रेहते, तुम्हारी ख़बरों के मुतअल्लिक़ पूछते रेहते।

وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ۝٢٠ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ
और अगर वो तुम में होते भी तो क़िताल न करते मगर थोड़ा। यक़ीनन अल्लाह के

فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ
रसूल में बेहतरीन नमूना है उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और आख़िरी दिन से

وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۝٢١ وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ
उम्मीद रखता है और अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करता है। और जब ईमान वालों ने

الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ
लशकर देखे, तो उन्हों ने कहा के ये वो है जिस का अल्लाह और उस के रसूल ने हम से वादा किया था

وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۡ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا
और अल्लाह और उस के रसूल ने सच्चा वादा किया था। और इस चीज़ ने उन को ईमान और ताबेदारी में

وَّتَسْلِيْمًا ۝٢٢ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا
बढ़ा दिया है। ईमान वालों में से ऐसे मर्द हैं जिन्हों ने सच कर दिखाया

مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ
वो अहद जो उन्हों ने अल्लाह से किया था। फिर उन में से कुछ वो हैं जिन्हों ने अपना ज़िम्मा पूरा कर दिया और उन में

مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۡ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۝٢٣ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ
से कुछ वो हैं जो मुन्तज़िर हैं। और उन्हों ने कोई तबदीली नहीं की। ताके अल्लाह सच्चों को

الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ
उन की सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ीन को अगर वो चाहे तो अज़ाब दे

اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٢٤
या उन की तौबा क़बूल करे। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى
और अल्लाह ने काफ़िरों को फेर दिया अपने गुस्से में भरे हुए, वो कोई खैर न ले जा सके। और अल्लाह

اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾
ईमान वालों की तरफ़ से क़िताल के लिए काफ़ी हो गया। और अल्लाह क़ूव्वत वाला, ज़बर्दस्त है।

وَ اَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
और एहले किताब में से जिन्हों ने उन की मदद की थी उन के क़िल्ओं से उन को

مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ
नीचे उतारा और उन के कुलूब में रौब डाल दिया, एक जमाअत को तुम क़त्ल कर रहे थे

وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
और एक जमाअत को तुम क़ैदी बना रहे थे। और अल्लाह ने तुम्हें उन की ज़मीन का वारिस बनाया और उन के घरों

وَ اَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
और उन के मालों का वारिस बनाया, और ऐसी ज़मीन का तुम्हें वरिस बनाया जिस को तुम ने अभी रौंदा नहीं। और अल्लाह

شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ
हर चीज़ पर कुदरत वाला है। ऐ नबी! आप फरमा दीजिए आप की बीवियों से के अगर

اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ
तुम दुन्यवी ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो तुम आओ,

اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾ وَاِنْ كُنْتُنَّ
मैं तुम्हें मताअे दुन्या दे दूँ और मैं तुम्हें अच्छी तरह छोड़ दूँ। और अगर तुम

تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ
अल्लाह और उस के रसूल और दारे आख़िरत चाहती हो तो यक़ीनन अल्लाह ने

اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ
तुम में से नेकी करने वालियों के लिए अज्रे अज़ीम तय्यार कर रखा है। ऐ नबी की बीवियो!

مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا
तुम में से जो भी खुली बेहयाई करेगी, तो उसे दोहरा

الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾
अज़ाब दिया जाएगा। और ये अल्लाह पर आसान है।

ع ٣ ١٩

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ تَعْمَلْ صَالِحًا

और जो तुम में से अल्लाह और उस के रसूल की इताअत और आमाले सालिहा करेगी

تُؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

तो हम उसे उस का अज्र दुगना देंगे और हम ने उस के लिए बाइज़्ज़त रिज़्क़ तय्यार कर रखा है।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ

ऐ नबी की बीवियो! तुम दूसरी आम औरतों में से किसी एक की तरह नहीं हो अगर तुम मुत्तक़ी बन कर रहो,

فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ

तो बोलने में आवाज़ पस्त मत करो के कहीं लालच करने लगे वो शख़्स जिस के दिल में बीमारी हो

وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

और बात वो करो जो भलाई वाली हो। और अपने घरों में ठेहरी रहो

وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ

और पेहली वाली जाहिलीयत के तर्ज़ पर बनाव सिंघार को खुला मत रेहने दो और नमाज़ क़ाइम करो

وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ

और ज़कात दो और अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो। अल्लाह तो सिर्फ़ ये

اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ

चाहता है के तुम से गन्दगी को दूर रखे ऐ एहले बैत! और तुम्हें पाक

تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

साफ़ रखे। और याद करो उस को जो तिलावत किया जाता है तुम्हारे घरों में

مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

अल्लाह की आयात और हिक्मत में से। यक़ीनन अल्लाह बारीकबीन, बाखबर है।

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

यक़ीनन मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें

وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ

और आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें और सच बोलने वाले मर्द और सच बोलने वाली औरतें

وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ

और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और खुशूअ करने वाले मर्द और खुशूअ करने वाली औरतें

وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ

और सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें

وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا

और जो मर्द अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले हैं और जो औरतें अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाली हैं और जो मर्द अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करने वाले हैं

وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

और जो औरतें अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करने वाली हैं। अल्लाह ने उन के लिए मग़फिरत और अज्रे अज़ीम तय्यार कर रखा है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ

और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत के लिए जाइज़ नहीं है के जब अल्लाह और उस का रसूल किसी मुआमले का

اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ

फ़ैसला कर दे तो उन के लिए अपने मुआमले में कुछ भी इखतियार हो। और जो अल्लाह और

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ؕ

उस के रसूल की नाफरमानी करेगा तो वो खुली गुमराही में भटक गया।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ

और जब आप फरमा रहे थे उस शख्स को के जिस पर अल्लाह ने इन्आम फरमाया और आप ने भी उस पर इन्आम फरमाया

عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ

के तू अपनी बीवी अपने पास रेहने दे और अल्लाह से डर हालांके आप अपने जी में छुपा रहे थे वो जिस को अल्लाह

مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ

ज़ाहिर करने वाला था और आप इन्सानों से डरते थे। और अल्लाह उस का ज़्यादा हक़दार है के आप उस से डरें।

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ

फिर जब ज़ैद इब्ने हारिसा ने ज़ैनब से हाजत पूरी कर ली तो हम ने ज़ैनब आप के निकाह में दे दी, ताके ईमान

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا

वालों पर कोई हरज न रहे उन के मुंह बोले बेटों की बीवियों के बारे में जब वो उन से

مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ

गर्ज़ पूरी कर लें। और अल्लाह के हुक्म को तो पूरा होना ही था। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर कोई

عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ

तंगी नहीं उस में जो (खुद) अल्लाह ने उन के लिए मुक़द्दर कर दिया। अल्लाह का दस्तूर रहा है

فِی الَّذِیۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَ کَانَ اَمۡرُ اللّٰہِ قَدَرًا

उन (पैग़म्बरों) में भी जो पेहले गुज़र चुके हैं। और अल्लाह का अम्रे क़ज़ा व क़दर पूरा

مَّقۡدُوۡرَۨا ﴿۳۸﴾ الَّذِیۡنَ یُبَلِّغُوۡنَ رِسٰلٰتِ اللّٰہِ

हो कर ही रेहता है। पैग़म्बर वो लोग हैं जो अल्लाह के पैग़ामात पहोंचाते हैं

وَ یَخۡشَوۡنَہٗ وَ لَا یَخۡشَوۡنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰہَ ؕ وَ کَفٰی بِاللّٰہِ

और अल्लाह से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। और अल्लाह हिसाब लेने वाला

حَسِیۡبًا ﴿۳۹﴾ مَا کَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنۡ رِّجَالِکُمۡ

काफ़ी है। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी एक के बाप नहीं,

وَ لٰکِنۡ رَّسُوۡلَ اللّٰہِ وَ خَاتَمَ النَّبِیّٖنَ ؕ وَ کَانَ اللّٰہُ بِکُلِّ شَیۡءٍ

लेकिन वो अल्लाह के रसूल हैं और तमाम अम्बिया के ख़ातम हैं। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने

عَلِیۡمًا ﴿٪۴۰﴾ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اذۡکُرُوا اللّٰہَ ذِکۡرًا

वाले हैं। ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह की याद बहोत ज़्यादा

کَثِیۡرًا ﴿ۙ۴۱﴾ وَّ سَبِّحُوۡہُ بُکۡرَۃً وَّ اَصِیۡلًا ﴿۴۲﴾ ہُوَ الَّذِیۡ

किया करो। और उस की तस्बीह करो सुबह व शाम। वही अल्लाह है जो

یُصَلِّیۡ عَلَیۡکُمۡ وَ مَلٰٓئِکَتُہٗ لِیُخۡرِجَکُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ

तुम पर रहमत भेजता है और उस के फरिशते भी ताके अल्लाह तुम्हें अन्धेरों से नूर

اِلَی النُّوۡرِ ؕ وَ کَانَ بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ رَحِیۡمًا ﴿۴۳﴾ تَحِیَّتُہُمۡ یَوۡمَ

की तरफ़ निकाले। और वो ईमान वालों पर बहोत शफक़त वाला है। उन का तहीया जिस दिन

یَلۡقَوۡنَہٗ سَلٰمٌ ۚۖ وَ اَعَدَّ لَہُمۡ اَجۡرًا کَرِیۡمًا ﴿۴۴﴾ یٰۤاَیُّہَا

वो उस से मिलेंगे सलाम होगा। और अल्लाह ने उन के लिए इज़्ज़त वाला सवाब तय्यार कर रखा है। ऐ

النَّبِیُّ اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنٰکَ شَاہِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیۡرًا ﴿ۙ۴۵﴾

नबी! यक़ीनन हम ने आप को रसूल बना कर भेजा गवाही देने वाला और बशारत सुनाने वाला और डराने वाला।

وَّ دَاعِیًا اِلَی اللّٰہِ بِاِذۡنِہٖ وَ سِرَاجًا مُّنِیۡرًا ﴿۴۶﴾ وَ بَشِّرِ

और अल्लाह की तरफ़ उस के हुक्म से दावत देने वाला और नूर फैलाने वाला चिराग़ बना कर भेजा है। और ईमान

الۡمُؤۡمِنِیۡنَ بِاَنَّ لَہُمۡ مِّنَ اللّٰہِ فَضۡلًا کَبِیۡرًا ﴿۴۷﴾ وَ لَا

वालों को बशारत दीजिए इस बात की के उन के लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल है। और

تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ

काफ़िरों और मुनाफिक़ों का केहना न मानिए और उन की तरफ से जो तकलीफ पहोंचे उस की परवा न कीजिए और

عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝٤٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا

अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। और अल्लाह काफ़ी कारसाज़ है। ऐ ईमान वालो!

اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ

जब तुम निकाह करो ईमान वाली औरतों से, फिर तुम उन को तलाक़ दो इस से पेहले

اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ

के तुम उन को छुओ तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत नहीं जिस को तुम शुमार करो।

فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝٤٩ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ

तो तुम उन को कुछ मताअ दे दो और अच्छी तरह रुख़सत कर दो। ऐ नबी! हम ने

اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ

आप के लिए आप की बीवियां हलाल की हैं जिन को आप महर दे चुके हैं और आप की ममलूका बांदियाँ भी जो अल्लाह

يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ

ने आप को ग़नीमत में से दिलवाई हैं और हलाल की हैं आप के चचा की बेटियाँ और आप की फूफियों की बेटियाँ

وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫

और आप के मामू की बेटियाँ, और आप की खालाओं की बेटियाँ, जिन्हों ने आप के साथ हिजरत की।

وَ امْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ

और वो मोमिन औरत जो अपनी ज़ात नबी को हिबा कर दे अगर नबी उन को निकाह

اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ

में लेना चाहें। ये सिर्फ आप ही के लिए है, न के आम मोमिनीन के लिए।

قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ

यक़ीनन हमें मालूम है जो हम ने उन पर फ़र्ज़ किया है उन की बीवियों और उन की बांदियों के

اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

बारे में ताके आप पर कुछ भी तंगी न रहे। और अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला,

رَّحِيْمًا ۝٥٠ تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ

निहायत रहम वाला है। आप दूर रखें जिसे चाहें उन में से और अपने पास रखें जिसे

تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابۡتَغَيۡتَ مِمَّنۡ عَزَلۡتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيۡكَ ؕ
चाहें। और जिस को आप चाहें उन में से जिन को आप ने अलग रखा था तो आप पर कोई गुनाह नहीं।

ذٰلِكَ اَدۡنٰٓى اَنۡ تَقَرَّ اَعۡيُنُهُنَّ وَلَا يَحۡزَنَّ وَيَرۡضَيۡنَ
ये इस के ज़्यादा क़रीब है के उन की आँखें ठन्डी रहें और वो ग़मगीन न हों और वो सब खुश रहें

بِمَآ اٰتَيۡتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡلَمُ مَا فِىۡ قُلُوۡبِكُمۡ ؕ
उस पर जो आप ने उन को दिया। और अल्लाह खूब जानता है उस को जो तुम्हारे दिलों में है।

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيۡمًا حَلِيۡمًا ﴿۵۱﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنۡۢ بَعۡدُ
और आल्लाह इल्म वाले, हिल्म वाले हैं। आप के लिए इस के बाद औरतें हलाल नहीं

وَلَاۤ اَنۡ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنۡ اَزۡوَاجٍ وَّلَوۡ اَعۡجَبَكَ حُسۡنُهُنَّ
और न ये के आप उन के बदले में और दूसरी बीवियाँ लाएं अगर्चे उन का हुस्न आप को अच्छा लगे,

اِلَّا مَا مَلَكَتۡ يَمِيۡنُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ
मगर आप की ममलूका बाँदियाँ। और अल्लाह हर चीज़ पर

رَّقِيۡبًا ﴿۵۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَدۡخُلُوۡا بُيُوۡتَ
निगरान है। ऐ ईमान वालो! दाखिल मत हो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हुजरों

النَّبِىِّ اِلَّاۤ اَنۡ يُّؤۡذَنَ لَكُمۡ اِلٰى طَعَامٍ غَيۡرَ نٰظِرِيۡنَ
में मगर ये के तुम्हें खाने की तरफ इजाज़त दी जाए इस हाल में के तुम उस के पकने का इन्तिज़ार करने

اِنٰٮهُ ۙ وَلٰـكِنۡ اِذَا دُعِيۡتُمۡ فَادۡخُلُوۡا فَاِذَا طَعِمۡتُمۡ
वाले न हो, लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तब तुम दाखिल हो, फिर जब तुम खा चुको

فَانۡتَشِرُوۡا وَلَا مُسۡتَاۡنِسِيۡنَ لِحَدِيۡثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمۡ كَانَ
तो मुन्तशिर हो जाओ और बातों में दिल लगा कर के मत बैठो। यक़ीनन ये चीज़ नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि

يُؤۡذِى النَّبِىَّ فَيَسۡتَحۡىٖ مِنۡكُمۡ ۫ وَاللّٰهُ لَا يَسۡتَحۡىٖ
वसल्लम) को ईज़ा पहोंचाती है, फिर वो तुम से हया करते हैं। और अल्लाह हक़ से हया

مِنَ الۡحَـقِّ ؕ وَاِذَا سَاَلۡتُمُوۡهُنَّ مَتَاعًا فَسۡـَٔلُوۡهُنَّ مِنۡ وَّرَآءِ
नहीं करता। और जब उम्महातुल मोमिनीन से तुम्हें कोई चीज़ मांगनी हो, तो परदे के पीछे से उन से

حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمۡ اَطۡهَرُ لِقُلُوۡبِكُمۡ وَقُلُوۡبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ
सवाल करो। ये चीज़ तुम्हारे दिलों के लिए और उन के दिलों के लिए ज़्यादा पाकीज़गी वाली है। और

لَكُمۡ اَنۡ تُؤۡذُوۡا رَسُوۡلَ اللّٰهِ وَلَاۤ اَنۡ تَنۡكِحُوۡۤا اَزۡوَاجَهٗ

तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं है के तुम अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईज़ा दो और जाइज़ नहीं है ये के तुम आप (सल्लल्लाहु

مِنۡۢ بَعۡدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمۡ كَانَ عِنۡدَ اللّٰهِ عَظِيۡمًا ۝۵۳

अलैहि वसल्लम) की बीवियों से निकाह करो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद कभी भी। यक़ीनन ये अल्लाह के नज़दीक बड़ी चीज़ है।

اِنۡ تُبۡدُوۡا شَيۡـئًا اَوۡ تُخۡفُوۡهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَىۡءٍ

अगर तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उस को छुपाओ तो यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले

عَلِيۡمًا ۝۵۴ لَا جُنَاحَ عَلَيۡهِنَّ فِىۡۤ اٰبَآئِهِنَّ وَلَاۤ اَبۡنَآئِهِنَّ

हैं। औरतों पर कोई गुनाह नहीं (बेहिजाब आने में) उन के बाप दादा के बारे में और न उन के बेटों के बारे में

وَلَاۤ اِخۡوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبۡنَآءِ اِخۡوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبۡـنَآءِ

और न उन के भाइयों के बारे में और न उन के भाइयों के बेटों के बारे में और न उन की बेहनों के बेटों के

اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتۡ اَيۡمَانُهُنَّ ۚ

बारे में और न उन की (मेल जोल की) औरतों के बारे में और न उन के बारे में जिन के उन के हाथ मालिक हैं।

وَاتَّقِيۡنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ شَهِيۡدًا ۝۵۵

और तुम अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को देख रहे हैं।

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوۡنَ عَلَى النَّبِىِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ

यक़ीनन अल्लाह और उस के फरिशते रहमत भेजते हैं नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर। ऐ ईमान

اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَيۡهِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِيۡمًا ۝۵۶ اِنَّ الَّذِيۡنَ

वालो! तुम भी आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर दुरूद और सलाम कस्रत से पढ़ो। यक़ीनन वो लोग

يُؤۡذُوۡنَ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِى الدُّنۡيَا

जो अल्लाह और उस के रसूल को ईज़ा पहोंचाते हैं अल्लाह ने उन पर दुन्या और आखिरत में लानत

وَالۡاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمۡ عَذَابًا مُّهِيۡنًا ۝۵۷ وَالَّذِيۡنَ

की है और उन के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तय्यार कर रखा है। और जो लोग

يُؤۡذُوۡنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ بِغَيۡرِ مَا اكۡتَسَبُوۡا

ईज़ा पहोंचाते है ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को इस के बग़ैर के उन्हों ने कुसूर किया हो,

فَقَدِ احۡتَمَلُوۡا بُهۡتَانًا وَّاِثۡمًا مُّبِيۡنًا ۝۵۸ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلۡ

तो यक़ीनन उन्हों ने बुहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाया। ऐ नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप अपनी अज़्वाजे

لِّاَزۡوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ يُدۡنِيۡنَ عَلَيۡهِنَّ

मुतह्हरात से और अपनी बेटियों और मोमिनीन की औरतों से फरमा दीजिए के वो अपने चेहरे पर अपनी चादर का

مِنۡ جَلَابِيۡبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدۡنٰٓى اَنۡ يُّعۡرَفۡنَ فَلَا يُؤۡذَيۡنَ ؕ

कुछ हिस्सा लटकाए रखें। ये इस के ज़्यादा क़रीब है के उन्हें पेहचान लिया जाए, फिर उन्हें ईज़ा न दी जाए।

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ﴿۵۹﴾ لَئِنۡ لَّمۡ يَنۡتَهِ الۡمُنٰفِقُوۡنَ

और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। अगर मुनाफिक़ मर्द और वो लोग

وَالَّذِيۡنَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّالۡمُرۡجِفُوۡنَ فِى الۡمَدِيۡنَةِ

जिन के दिलों में बीमारी है और वो लोग जो मदीना मुनव्वरा में अफवाहें फैलाने वाले हैं बाज़ नहीं आएंगे

لَنُغۡرِيَنَّكَ بِهِمۡ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوۡنَكَ فِيۡهَاۤ اِلَّا قَلِيۡلًا ۛۚ ﴿۶۰﴾

तो हम आप को उन के खिलाफ भड़का देंगे, फिर वो मदीना मुनव्वरा में आप के पड़ोसी बन कर ठेहेर नहीं सकेंगे मगर थोड़ा।

مَّلۡعُوۡنِيۡنَ ۛۚ اَيۡنَمَا ثُقِفُوۡۤا اُخِذُوۡا وَقُتِّلُوۡا تَقۡتِيۡلًا ﴿۶۱﴾

उन पर फिटकार हो। जहाँ कहीं मिलेंगे, पकड़ लिए जाएंगे और उन्हें एक एक कर के क़त्ल कर दिया जाएगा।

سُنَّةَ اللّٰهِ فِى الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلُ ۚ وَلَنۡ تَجِدَ لِسُنَّةِ

अल्लाह का दस्तूर रहा है उन के बारे में जो पेहले गुज़र चुके हैं। और अल्लाह की सुन्नत में आप कोई तबदीली

اللّٰهِ تَبۡدِيۡلًا ﴿۶۲﴾ يَسۡـئَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلۡ

हरगिज़ नहीं पाएंगे। ये लोग आप से क़यामत के बारे में सवाल करते है। आप फ़रमा दीजिए के

اِنَّمَا عِلۡمُهَا عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدۡرِيۡكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوۡنُ

उस का इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है। और आप को मालूम नहीं के शायद क़यामत क़रीब

قَرِيۡبًا ﴿۶۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الۡكٰفِرِيۡنَ وَاَعَدَّ لَهُمۡ سَعِيۡرًا ۙ ﴿۶۴﴾

ही हो। यक़ीनन अल्लाह ने काफिरों पर लानत फरमाई है और उन के लिए देहेकती आग तय्यार कर रखी है।

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوۡنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيۡرًا ۚ ﴿۶۵﴾

जिस में वो हमेशा रहेंगे। वो कोई मददगार और दोस्त नहीं पाएंगे।

يَوۡمَ تُقَلَّبُ وُجُوۡهُهُمۡ فِى النَّارِ يَقُوۡلُوۡنَ يٰلَيۡتَنَاۤ اَطَعۡنَا

जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पलट किए जाएंगे, वो कहेंगे ऐ काश के हम अल्लाह की इताअत

اللّٰهَ وَاَطَعۡنَا الرَّسُوۡلَا ﴿۶۶﴾ وَقَالُوۡا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعۡنَا سَادَتَنَا

करते और हम रसूल की इताअत करते। और वो कहेंगे ऐ हमारे रब! हम ने अपने सरदारों और

وَ كُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ۝٦٧ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ

अपने बड़ों की इताअत की, तो उन्हों ने हमें गुमराह किया रास्ते से। ऐ हमारे रब! तू उन्हें दुगना

مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ۝٦٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

अज़ाब दे और तू उन पर बड़ी लानत फ़रमा। ऐ ईमान वालो! तुम

اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ

उन जैसे मत बनो जिन्हों ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को ईज़ा दी, फिर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को बरी फ़रमा

مِمَّا قَالُوْا ؕ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ۝٦٩ يٰۤاَيُّهَا

दिया उस से जो उन्हों ने कहा। और मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के नज़दीक वजाहत वाले थे। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٧٠

ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो।

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ

वो तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल की इस्लाह कर देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝٧١

और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करेगा तो यक़ीनन वो भारी कामयाबी से कामयाब हो गया।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

यक़ीनन हम ने अमानत पेश की आसमानों और ज़मीन

وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

और पहाड़ों पर, तो उन सब ने इन्कार किया उस के उठाने से और वो डरे उस से

وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۝٧٢

और उस को इन्सान ने उठा लिया। यक़ीनन वो बड़ा ज़ालिम और बड़ा जाहिल है।

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ

ताके अल्लाह अज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को

وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ

और अल्लाह ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों की तौबा क़बूल करे।

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٧٣

और अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

رُكُوْعَاتُهَا ٦ (٣٤) سُوْرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ (٥٨) اٰيَاتُهَا ٥٤

और ६ रूकूअ हैं सूरह सबा मक्का में नाज़िल हुई उस में ५४ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं

الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝١ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ

और उस के लिए तमाम तारीफें हैं आखिरत में। और वो हिक्मत वाला, बाखबर है। वो जानता है उन चीज़ों को जो

فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ

ज़मीन में दाख़िल होती हैं और जो ज़मीन से निकलती हैं और जो आसमान से उतरती हैं

وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ۝٢ وَقَالَ الَّذِيْنَ

और जो आसमान में चढ़ती हैं। और वो निहायत रहम वाला, बख्शने वाला है। और काफिर लोग केहते

كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ

हैं हम पर क़यामत नहीं आएगी। आप फरमा दीजिए, क्यूं नहीं? मेरे रब की क़सम जो ग़ैब का इल्म रखता है

عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ

वो तुम पर ज़रूर आएगी। उस से ज़र्रा बराबर कोई चीज़ मखफी नहीं आसमानों में और न ज़मीन में

وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ

और न उस से छोटी कोई चीज़ और न उस से बड़ी कोई चीज़ मगर वो साफ़ साफ़ बयान करने वाली

اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٣ۙ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

किताब (लौहे महफूज़) में है। ताके अल्लाह बदला दे उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ

उन के लिए मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली रोज़ी है। और जो लोग हमारी आयतों में

فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝٥

कोशिश करते हैं हराने वाले बन कर उन के लिए बला का दर्दनाक अज़ाब होगा।

وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ

और वो लोग जिन को इल्म दिया गया वो समझ रहे हैं के वो कुरआन जो आप की तरफ़ आप के रब की तरफ से

مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَ يَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ

उतारा गया, वो हक़ है। और ये कुरआन ज़बर्दस्त काबिले तारीफ अल्लाह के रास्ते की तरफ रहनुमाई

الْحَمِيْدِ ۝٦ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ

करता है। और काफिर केहते हैं क्या हम तुम्हें पता बतलाएं ऐसे शख़्स का जो

يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ

तुम्हें खबर देता है के जब तुम पूरे तौर पर टुकड़े टुकड़े (रेज़ा रेज़ा) कर दिए जाओगे तब तुम नए सिरे

خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝٧ اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ

से ज़िन्दा किए जाओगे? या तो उस ने अल्लाह पर झूठ घड़ा है या उसे जुनून है।

بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ

बल्के वो लोग जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते वो अज़ाब में और दूर वाली गुमराही

الْبَعِيْدِ ۝٨ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ

में हैं। क्या उन्हों ने देखा नहीं उन चीज़ों को जो उन के आगे और उन के पीछे हैं

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ

आसमान और ज़मीन! अगर हम चाहें तो हम उन्हें ज़मीन में धंसा दें

اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

या हम उन पर आसमान से टुकड़े गिरा दें। यक़ीनन उस में अलबत्ता

لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝٩ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ ع

निशानी है हर तौबा करने वाले बन्दे के लिए। हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को हमारी तरफ़ से फ़ज़्ल (नुबूव्वत व

مِنَّا فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ

हुकूमत) दिया। (हम ने कहा) ऐ पहाड़ो! तुम उन के साथ तस्बीह करो और परिन्दों को भी हुक्म दिया। और हम ने उन के लिए

الْحَدِيْدَ ۝١٠ اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا

लोहे को नर्म किया। के आप चौड़ी ज़िरहें बनाइए और मेख़ें लगाने में मिक़दार मुतअय्यन रखिए और तुम सब नेक अमल

صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝١١ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ

करते रहो। यक़ीनन मैं तुम्हारे कामों को देख रहा हूँ। और सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए हवा को ताबेअ किया, हवा का सुबह के

غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ

वक़्त का सफर एक महीने की मसाफ़त और उस का शाम के वक़्त का सफ़र एक महीने की मसाफत तै करता था। और हम ने

الْقِطْرِ ۭ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۭ

उन के लिए तांबे का चशमा बहाया। और जिन्नात में से वो भी थे जो उन के सामने उन के रब के हुक्म से काम करते थे।

وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿١٢﴾

और उन में से जो हमारे हुक्म से टेढ़ा चलेगा तो हम उसे देहेकती आग का अज़ाब चखाएंगे।

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَاۗءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَ تَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ

वो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के लिए बनाते थे वो चीज़ें जो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) चाहते, यअनी क़िलअे और मूर्तियाँ और तालाब

كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ۭ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۭ

जैसे लगन और एक ही जगह साबित रेहने वाली ऊँची ऊँची देगें। ऐ आले दावूद! शुक्रिये के तौर पर अमल करो।

وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ

और मेरे बन्दों में से कम शुक्रगुज़ार हैं। फिर जब हम ने उन की मौत का फैसला कर दिया

الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰي مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَاۗبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ

तो जिन्नात को सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की मौत का पता नहीं बतलाया मगर ज़मीन के कीड़े (घुन) ने जो आप की

مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ

लाठी को खा रहा था। फिर जब सुलैमान (अलैहिस्सलाम) गिर पड़े, तब जिन्नात ने जाना के अगर वो (जिन) ग़ैब

الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾ۭ لَقَدْ كَانَ

जानते होते तो वो रुस्वा करने वाले अज़ाब में न रेहते। तहक़ीक़ के कौमे सबा के लिए

لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ڛ

उन के वतन में निशानी थी। दो बाग़ात थे दाएं और बाएं।

كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ

तो तुम खाओ अपने रब की रोज़ी में से और उस का शुक्र अदा करो। शेहर भी उम्दा

وَّ رَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿١٥﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ

और रब भी बख्शने वाला। फिर उन्हों ने ऐराज़ किया, तो हम ने उन पर बन्द का सैलाब छोड़ दिया,

وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ

और हम ने उन को उन दो बाग़ के इवज़ बदमज़ा फल वाले दूसरे दो बाग़ दिए और झाव के दरख्त

وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ

और थोड़ी सी बेरी के दरख्त। हम ने उन्हें उन के कुफ्र की वजह से ये सज़ा दी।

وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ

और हम सज़ा नहीं देते मगर नाशुकरी करने वाले को। और हम ने एहले सबा और उन बस्तियों के दरमियान

الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا

जिन में हम ने बरकतें रखी थीं ऐसी बस्तियाँ बना दी थीं जो नज़र आती थीं, और हम ने उन में सफर की

السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾ فَقَالُوْا

मन्ज़िलें मुतअय्यन कर दी थीं। के तुम उन में रात में और दिन में अमन से चलो। तो उन्हों ने कहा

رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ

ऐ हमारे रब! हमारे सफरों के दरमियान दूरी कर दे और उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, फिर हम ने उन्हें कहानियाँ

اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

बना दिया और हम ने उन्हें मुकम्मल तौर पर टुकड़े टुकड़े कर दिया। बेशक उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं

لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ

हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। यक़ीनन उन पर इबलीस ने अपना गुमान सच कर

ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ

दिखाया, फिर वो इबलीस के पीछे चले सिवाए ईमान वालों के गिरोह के। और इबलीस का

لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ

ईमान वालों पर जो तसल्लुत है, सिर्फ इस लिए है ताके हम मालूम करें के कौन आखिरत पर ईमान रखता है,

مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ۭ وَرَبُّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾

उस से जो उस की तरफ से शक में है। और आप का रब हर चीज़ पर निगराँ है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ

आप फ़रमा दीजिए के तुम पुकारो उन को जिन का तुम गुमान करते हो अल्लाह के सिवा। वो न आसमान

مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ

में ज़र्रा बराबर के मालिक हैं और न ज़मीन में, और न उन की आसमान और ज़मीन

فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَلَا تَنْفَعُ

(के बनाने) में कोई शिरकत है और उन में से कोई अल्लाह का मददगार नहीं। और सिफारिश अल्लाह के

الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۭ حَتّٰٓي اِذَا فُزِّعَ عَنْ

नज़दीक नफा नहीं देगी मगर उसी की जिस को अल्लाह इजाज़त दे। यहाँ तक के जब उन के दिलों से घबराहट

قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ

दूर हो जाती है तो पूछते हैं के तुम्हारे रब ने क्या कहा? वो केहते हैं के हक़ बात कही। और वो बरतर है,

الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

बड़ा है। आप पूछिए कौन तुम्हें रोज़ी देता है आसमानों से और ज़मीन से?

قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾

आप ही फ़रमा दीजिए अल्लाह। और हम या तुम ज़रूर या हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में हैं। आप फरमा

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

दीजिए के तुम से हमारे जराइम का सवाल नहीं होगा और तुम्हारे आमाल के मुतअल्लिक़ हम से नहीं पूछा जाएगा।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ

आप फ़रमा दीजिए के हमारा रब हमें इकट्ठा करेगा,फिर हमारे दरमियान हक़ को खोल देगा। और वो बहोत ज़्यादा खोलने वाला है,

الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ

खूब जानने वाला है। आप फरमा दीजिए के तुम मुझे दिखाओ जिन को तुम अल्लाह के साथ शरीक ठेहरा कर मिलाते हो।

بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً

हरगिज़ नहीं। बल्के वो अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। और हम ने आप को तमाम इन्सानों के लिए बशारत

لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

देने वाला और डराने वाला रसूल बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾

और ये केहते हैं के ये वादा कब है अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً

आप फरमा दीजिए के तुम्हारे लिए एक दिन का वादा है जिस से न एक घड़ी तुम पीछे रेह सकते हो और न एक घड़ी

وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا

आगे जा सकते हो। और काफिरों ने कहा के हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे इस

الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ

कुरआन पर और उन किताबों पर जो इस से पेहले थीं। और काश के आप देखें जब के ज़ालिम

مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ

खड़े किए जाएंगे अपने रब के सामने। उन में से एक दूसरे की तरफ बात को डाल

اِلْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا
रहा होगा। कमज़ोर लोग कहेंगे उन से जो बड़े बन कर रहे

لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ۝٣١ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا
के अगर तुम न होते तो हम ईमान वाले होते। जो बड़े बन कर रहे वो कमज़ोरों

لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى
से कहेंगे क्या हम ने तुम्हें हिदायत से रोका था

بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ۝٣٢ وَقَالَ الَّذِيْنَ
इस के बाद के वो तुम्हारे पास आई? बल्के तुम ही मुजरिम थे। और कमज़ोर लोग

اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ
कहेंगे उन से जो बड़े बन कर रहे बल्के रात और दिन के मक्र (ने रोका),

اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ نَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ
जब तुम हमें हुक्म देते थे इस का के हम अल्लाह के साथ कुफ्र करें और हम उस के लिए शरीक ठेहराएं।

وَ اَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ
और वो नदामत को छुपाएंगे जब वो अज़ाब देखेंगे। और हम तौक़ रख देंगे

فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا
काफिरों की गरदनों में। उन्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर उन्हीं कामों की जो वो

يَعْمَلُوْنَ ۝٣٣ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ
करते थे। और हम ने किसी बस्ती में डराने वाला रसूल नहीं भेजा मगर वहाँ के खुशहाल

مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝٣٤ وَقَالُوْا نَحْنُ
लोगों ने कहा के यक़ीनन हम तो कुफ्र करते हैं उस के साथ जिस को दे कर तुम भेजे गए हो। और कहा के हम

اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝٣٥ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ
ज़्यादा माल और औलाद वाले हैं। और हमें अज़ाब नहीं होगा। आप फ़रमा दीजिए यक़ीनन मेरा रब

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है और तंग करता है जिस के लिए चाहता है, लेकिन अक्सर लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٦ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ
जानते नहीं। और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो तुम्हें हमारा ज़्यादा

تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ فَاُولٰٓئِكَ

मुक़र्रब बना दें, मगर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, तो उन के

لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِى الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

लिए उन के अमल की दुगनी जज़ा होगी और वो बालाखानों में अमन से होंगे।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ

और जो कोशिश कर रहे हैं हमारी आयतों में हराने वाले बन कर, ये लोग अज़ाब में हाज़िर

مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

किए जाएंगे। आप फरमा दीजिए यक़ीनन मेरा रब रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ

अपने बन्दों में से और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। और जो चीज़ भी तुम खर्च करो तो वो

يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا

उस का बदल देता है। और वो बेहतरीन रोज़ी देने वाला है। और जिस दिन वो सब को इकट्ठा करेगा,

ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾

फिर फरिशतों से कहेगा क्या ये लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا

तो वो कहेंगे के आप पाक हैं, आप हमारे कारसाज़ हैं न के वो। बल्के ये लोग

يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ

तो जिन्नात की इबादत करते थे। उन में से अक्सर जिन्नात पर ईमान भी रखते थे। तो आज

لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ وَ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ

तुम में से एक दूसरे के लिए नफ़ा और ज़रर के मालिक नहीं। और हम कहेंगे ज़ालिमों

ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾

से के तुम उस आग का अज़ाब चखो जिस को तुम झुठलाया करते थे।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ

और जब उन पर हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं, तो वो केहते हैं के ये पैग़म्बर नहीं है मगर एक आदमी

يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا

जो चाहता है के तुम्हें रोक दे उन माबूदों से जिन की तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे। और ये केहते हैं

مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفۡكٌ مُّفۡتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِلۡحَقِّ

के ये कुरआन नहीं है मगर झूठ जो घड़ लिया गया है। और काफिर लोग हक़ के मुतअल्लिक़ केहते हैं जब हक़

لَمَّا جَآءَهُمۡ ۙ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا سِحۡرٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۴۳﴾ وَمَاۤ اٰتَيۡنٰهُمۡ

उन के पास आया के ये तो महज़ साफ जादू है। और हम ने उन्हें

مِّنۡ كُتُبٍ يَّدۡرُسُوۡنَهَا وَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهِمۡ قَبۡلَكَ

किताबें नहीं दीं जिन को वो पढ़ें और हम ने उन की तरफ़ आप से पेहले कोई डराने वाला रसूल

مِنۡ نَّذِيۡرٍ ﴿۴۴﴾ؕ وَكَذَّبَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ۙ وَمَا بَلَغُوۡا مِعۡشَارَ

नहीं भेजा। और उन लोगों ने भी झुठलाया जो उन से पेहले थे। और ये उन के दसवें हिस्से को भी नहीं पहोंचे

مَاۤ اٰتَيۡنٰهُمۡ فَكَذَّبُوۡا رُسُلِىۡ ۗ فَكَيۡفَ كَانَ نَكِيۡرِ ﴿۴۵﴾ؑ قُلۡ

जो हम ने अगलों को दिया था, फिर उन्हों ने मेरे पैग़म्बरों को झुठलाया। फिर मेरा अज़ाब कैसा था? आप फरमा

اِنَّمَاۤ اَعِظُكُمۡ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنۡ تَقُوۡمُوۡا لِلّٰهِ مَثۡنٰى وَ فُرَادٰى

दीजिए मैं तुम्हें सिर्फ एक चीज़ की नसीहत करता हूँ। ये के तुम खड़े हो जाओ अल्लाह के लिए दो दो और तन्हा तन्हा,

ثُمَّ تَتَفَكَّرُوۡا ۗ مَا بِصَاحِبِكُمۡ مِّنۡ جِنَّةٍ ؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا نَذِيۡرٌ لَّكُمۡ

फिर तुम सोचो के तुम्हारे साथी (नबी) को कुछ जुनून नहीं है। वो तो सिर्फ तुम्हारे लिए एक सख्त

بَيۡنَ يَدَىۡ عَذَابٍ شَدِيۡدٍ ﴿۴۶﴾ قُلۡ مَا سَاَلۡتُكُمۡ مِّنۡ اَجۡرٍ

अज़ाब से पेहले डराने वाला है। आप फ़रमा दीजिए मैं ने जो अज्र तुम से मांगा हो

فَهُوَ لَكُمۡ ؕ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ

वो भी तुम्हारे लिए है। मेरा अज्र तो सिर्फ अल्लाह के ज़िम्मे है। और वो हर चीज़ पर

شَهِيۡدٌ ﴿۴۷﴾ قُلۡ اِنَّ رَبِّىۡ يَقۡذِفُ بِالۡحَقِّ ۚ عَلَّامُ الۡغُيُوۡبِ ﴿۴۸﴾

निगराँ है। आप फरमा दीजिए के मेरा रब हक़ को डालता है। वो छुपी हुई चीज़ें खूब जानता है।

قُلۡ جَآءَ الۡحَقُّ وَمَا يُبۡدِئُ الۡبَاطِلُ وَمَا يُعِيۡدُ ﴿۴۹﴾ قُلۡ

आप फरमा दीजिए के हक़ आ गया और बातिल न पेहले कुछ कर सकता था और न दोबारा कुछ कर सकेगा। आप

اِنۡ ضَلَلۡتُ فَاِنَّمَاۤ اَضِلُّ عَلٰى نَفۡسِىۡ ۚ وَاِنِ اهۡتَدَيۡتُ

फ़रमा दीजिए अगर मैं गुमराही पर हूँ तो मेरी ज़ात ही पर मेरी गुमराही है। और अगर मैं हिदायत पर हूँ

فَبِمَا يُوۡحِىۡۤ اِلَىَّ رَبِّىۡ ؕ اِنَّهٗ سَمِيۡعٌ قَرِيۡبٌ ﴿۵۰﴾ وَلَوۡ تَرٰۤى اِذۡ فَزِعُوۡا

तो उस की वजह से है जो मेरी तरफ़ मेरा रब वही कर रहा है। यक़ीनन वो सुनने वाला, क़रीब है। और काश आप देखते

فَلَا فَوۡتَ وَاُخِذُوۡا مِنۡ مَّكَانٍ قَرِيۡبٍۙ ﴿۵۱﴾ وَّقَالُوۡۤا اٰمَنَّا

जब ये घबराएंगे तो फिर छूट नहीं सकेंगे और क़रीबी जगह से पकड़ लिए जाएंगे। और कहेंगे के हम कुरआन पर

بِهٖ‌ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنۡ مَّكَانٍۢ بَعِيۡدٍ ۖۚ‏ ﴿۵۲﴾

ईमान ले आए। और उन के हाथ (ईमान तक) दूर जगह से कहाँ पहोंच सकते हैं?

وَّقَدۡ كَفَرُوۡا بِهٖ مِنۡ قَبۡلُ‌ۚ وَيَقۡذِفُوۡنَ بِالۡغَيۡبِ مِنۡ مَّكَانٍۢ

हालांके वो उस के साथ इस से पेहले कुफ़्र करते रहे। और वो बेतहक़ीक़ बातें दूर ही दूर से

بَعِيۡدٍ‏ ﴿۵۳﴾ وَحِيۡلَ بَيۡنَهُمۡ وَ بَيۡنَ مَا يَشۡتَهُوۡنَ كَمَا فُعِلَ

हांका करते थे। और उन के दरमियान और उन की ख्वाहिशात के दरमियान आड़ कर दी जाएगी जैसा के उन

بِاَشۡيَاعِهِمۡ مِّنۡ قَبۡلُ‌ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا فِىۡ شَكٍّ مُّرِيۡبٍ ﴿۵۴﴾

के हममस्लकों के साथ इस से पेहले किया गया। बेशक वो बड़े भारी शक में थे।

اٰيَاتُهَا ٤٥ (٣٥) سُوۡرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ (٤٣) رُكُوۡعَاتُهَا ٥

उस में ४५ आयतें हैं सूरह फातिर मक्का में नाज़िल हुई और ५ रूकूअ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ جَاعِلِ الۡمَلٰٓئِكَةِ

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है और फरिश्तों को पैग़ाम पहोंचाने वाला

رُسُلًا اُولِىۡۤ اَجۡنِحَةٍ مَّثۡنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ‌ؕ يَزِيۡدُ فِى الۡخَلۡقِ

बना कर भेजने वाला है जो फरिश्ते दो दो और तीन तीन और चार चार पर वाले होते हैं। पैदाइश में ज़्यादती करता है

مَا يَشَآءُ‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ‏ ﴿۱﴾ مَا يَفۡتَحِ اللّٰهُ

जितनी चाहता है। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। अल्लाह इन्सानों के

لِلنَّاسِ مِنۡ رَّحۡمَةٍ فَلَا مُمۡسِكَ لَهَا‌ۚ وَمَا يُمۡسِكۡ ۙ

लिए रहमत खोल दे तो उसे कोई रोक नहीं सकता। और जो रोक दे

فَلَا مُرۡسِلَ لَهٗ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ‌ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ‏ ﴿۲﴾

तो अल्लाह के बाद उस को कोई भेज नहीं सकता। और वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اذۡكُرُوۡا نِعۡمَتَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ‌ؕ هَلۡ مِنۡ

ऐ इन्सानो! याद करो अल्लाह की उस नेअमत को जो तुम पर है। क्या अल्लाह के सिवा

خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ
कोई पैदा करने वाला है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता हो? कोई माबूद नहीं

اِلَّا هُوَ ۖ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝۳ وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ
मगर वही। फिर तुम कहाँ उलटे फिरे जा रहे हो? और अगर ये आप को झुठलाएं

فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝۴
तो आप से पेहले पैग़म्बरों को झुठलाया गया। और अल्लाह ही की तरफ़ तमाम उमूर लौटाए जाएंगे।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ
ऐ इन्सानो! यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, फिर तुम्हें दुन्यवी ज़िन्दगी धोके में

الدُّنْيَا ۥ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝۵ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
न डाले। और तुम्हें अल्लाह से धोकेबाज़ (शैतान) धोके में न डाले। यक़ीनन शैतान

لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا
तुम्हारा दुशमन है, तो तुम उसे दुशमन समझते रहो। वो अपनी जमाअत को बुलाता है ताके वो

مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝۶ ؕ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ
दोज़खियों में से हो जाएं। वो जिन्हों ने कुफ़्र किया उन के लिए सख्त

شَدِيْدٌ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ
अज़ाब है। और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए मग़फिरत है और बड़ा अज्र

وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝۷ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ
है। क्या फिर वो शख्स जिस के लिए उस की बदअमली मुज़य्यन की गई, फिर वो उस को अच्छा समझता है (ये और मोमिन जो उसे बुरा

فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ
समझता है दोनों बराबर हो सकते हैं?) तो यक़ीनन अल्लाह गुमराह करते हैं जिसे चाहते हैं और हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं।

فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ ۢ
फिर उन पर अफसोस के बाइस आप की जान न निकल जाए। बेशक अल्लाह को मालूम है

بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝۸ وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
जो हरकतें ये कर रहे हैं। और अल्लाह वो है जिस ने हवाओं को भेजा, फिर वो बादलों को

سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ
उड़ाती हैं, फिर हम उस को हांक कर ले जाते हैं खुश्क ज़मीन की तरफ, फिर हम उस से ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं

ع ١

بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوۡرُ ۝۹ مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ
उस के खुश्क हो जाने के बाद। इसी तरह क़ब्रों से उठना भी होगा। जो इज़्ज़त चाहता
الۡعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الۡعِزَّةُ جَمِيۡعًا ؕ اِلَيۡهِ يَصۡعَدُ الۡكَلِمُ
है तो अल्लाह ही के लिए है सारी इज़्ज़त। उसी की तरफ पाकीज़ा कलिमे
الطَّيِّبُ وَالۡعَمَلُ الصَّالِحُ يَرۡفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيۡنَ يَمۡكُرُوۡنَ
चढ़ते हैं और नेक अमल उन को बुलन्द करते हैं। और जो बुरी तदबीरें
السَّيِّاٰتِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِيۡدٌ ؕ وَمَكۡرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ
करते हैं उन के लिए सख्त अज़ाब है। और उन का मक्र नाकाम
يَبُوۡرُ ۝۱۰ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ نُّطۡفَةٍ
होगा। और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है मिट्टी से, फिर नुत्फे से,
ثُمَّ جَعَلَكُمۡ اَزۡوَاجًا ؕ وَمَا تَحۡمِلُ مِنۡ اُنۡثٰى وَلَا تَضَعُ
फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया। और कोई मादा हामिला नहीं होती और न जनती है
اِلَّا بِعِلۡمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنۡ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنۡقَصُ
मगर अल्लाह के इल्म में होता है। और किसी उम्र वाले को उम्र नहीं दी जाती और न उस की उम्र में से कम
مِنۡ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِىۡ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ ۝۱۱
किया जाता है मगर वो लौहे महफ़ूज़ में है। और ये अल्लाह पर आसान है।
وَمَا يَسۡتَوِى الۡبَحۡرٰنِ ۖ هٰذَا عَذۡبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ
और दो समन्दर बराबर नहीं हैं। ये मीठा, प्यास बुझाता है, उस का पीना खुशगवार है,
وَهٰذَا مِلۡحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنۡ كُلٍّ تَاۡكُلُوۡنَ لَحۡمًا طَرِيًّا
और ये नमकीन कड़वा है। और हर एक में से तुम खाते हो ताज़ा गोश्त
وَّ تَسۡتَخۡرِجُوۡنَ حِلۡيَةً تَلۡبَسُوۡنَهَا ۚ وَتَرَى الۡفُلۡكَ فِيۡهِ
और तुम निकालते हो ज़ेवर जिस को तुम पेहनते हो। और आप कशती को देखोगे उस में
مَوَاخِرَ لِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ۝۱۲
मौजों को फाड़ती हुई चलती हैं, ताके तुम अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और ताके तुम शुक्र अदा करो।
يُوۡلِجُ الَّيۡلَ فِى النَّهَارِ وَ يُوۡلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيۡلِ ۙ وَ
वो रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है। और

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है। सब के सब चलते रहेंगे वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ

यही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसी के लिए सल्तनत है। और जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ۝١٣ؕ اِنْ تَدْعُوْهُمْ

उस के सिवा वो खजूर की गुठली के ग़िलाफ के भी मालिक नहीं हैं। अगर तुम उन को पुकारो

لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ

तो वो तुम्हारी पुकार सुनते नहीं। और अगर वो सुनें भी तो तुम्हें जवाब नहीं दे सकेंगे।

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ

और क़यामत के दिन वो तुम्हारे शिर्क का इन्कार करेंगे। और तुम्हें बाखबर की तरह कोई

مِثْلُ خَبِيْرٍ ۝١٤ۧ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ

खाबर नहीं दे सकता। ऐ इन्सानो! तुम मोहताज हो

اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝١٥ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

अल्लाह की तरफ़। और अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। अगर वो चाहे तो तुम्हें हलाक कर दे

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝١٦ۚ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۝١٧

और नई मखलूक़ को ले आए। और ये अल्लाह पर कुछ मुशकिल नहीं।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ

और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और अगर कोई बोझ लदा हुवा उस के उठाने को

اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ

(किसी को) बुलाए तो कुछ बोझ भी उस में से उठाया नहीं जा सकता अगर्चे वो क़रीबी रिश्तेदार ही क्यूं न हो।

اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا

आप तो सिर्फ उन को डराते हैं जो अपने रब से बेदेखे डरते हैं और नमाज़ क़ाइम

الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ

करते हैं। और जो तज़किया करेगा तो सिर्फ अपनी ही ज़ात के फ़ाइदे के लिए तज़किया करेगा।

وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝١٨ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۝١٩

और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है। और अन्धा और बीना बराबर नहीं हो सकते।

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوۡرُ ﴿٢٠﴾ وَلَا الظِّلُّ وَلَا الۡحَرُوۡرُ ﴿٢١﴾

और अन्धेरे और नूर बराबर नहीं हो सकते। और साया और धूप बराबर नहीं हो सकती।

وَمَا يَسۡتَوِى الۡاَحۡيَآءُ وَلَا الۡاَمۡوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسۡمِعُ

और ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते। यक़ीनन अल्लाह सुनाते हैं

مَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَمَاۤ اَنۡتَ بِمُسۡمِعٍ مَّنۡ فِى الۡقُبُوۡرِ ﴿٢٢﴾ اِنۡ اَنۡتَ

जिसे चाहते हैं। और आप उन को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं। आप तो सिर्फ

اِلَّا نَذِيۡرٌ ﴿٢٣﴾ اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ بِالۡحَـقِّ بَشِيۡرًا وَّ نَذِيۡرًا ؕ

डराने वाले हैं। हम ने आप को हक़ दे कर बशारत देने वाला, डराने वाला रसूल बना कर भेजा है।

وَاِنۡ مِّنۡ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيۡهَا نَذِيۡرٌ ﴿٢٤﴾ وَاِنۡ يُّكَذِّبُوۡكَ فَقَدۡ

और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिस में डराने वाला न आया हो। और अगर ये आप को झुठलाएं तो उन

كَذَّبَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ۚ جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ

लोगों ने भी झुठलाया जो उन से पेहले थे। जिन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात

وَبِالزُّبُرِ وَبِالۡكِتٰبِ الۡمُنِيۡرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَخَذۡتُ الَّذِيۡنَ

और लिखी हुई किताबें और रोशन किताब ले कर आए थे। फिर मैं ने काफिरों को

كَفَرُوۡا فَكَيۡفَ كَانَ نَكِيۡرِ ﴿٢٦﴾ اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنۡزَلَ

पकड़ लिया, फिर मेरा अज़ाब कैसा था? क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने आसमान

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخۡتَلِفًا

से पानी उतारा। फिर हम ने उस से फलों को निकाला जिन के रंग

اَلۡوَانُهَا ؕ وَمِنَ الۡجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيۡضٌ وَّحُمۡرٌ مُّخۡتَلِفٌ

मुखतलिफ हैं। और पहाड़ों में सफेद और सुर्ख घाटियाँ हैं जिन के रंग

اَلۡوَانُهَا وَغَرَابِيۡبُ سُوۡدٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ

मुखतलिफ होते हैं और कुछ गेहरे सियाह होते हैं। और इन्सानों में से और चौपाओं में से

وَالۡاَنۡعَامِ مُخۡتَلِفٌ اَلۡوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخۡشَى اللّٰهَ

और जानवरों में भी इसी तरह मुखतलिफ रंग के (पैदा किए)। अल्लाह से उस के बन्दों में से

مِنۡ عِبَادِهِ الۡعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ غَفُوۡرٌ ﴿٢٨﴾ اِنَّ

सिर्फ़ इल्म वाले डरते हैं। बेशक अल्लाह ज़बर्दस्त है, बख़्शने वाला है। यक़ीनन

الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا

जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं और खर्च करते हैं

مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً

उस में से जो हम ने उन्हें रोज़ी के तौर पर दिया है चुपके और अलानिया, वो उम्मीद रखते हैं ऐसी तिजारत की

لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ يَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

जो बरबाद नहीं होगी। ताके अल्लाह उन्हें उन के सवाब दे और उन्हें अपने फ़ज़्ल से मज़ीद दे।

اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

यक़ीनन वो बख्शने वाला, क़दरदान है। और वो किताब जो हम ने आप की तरफ

مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ اِنَّ اللّٰهَ

वही की वो हक़ है, सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को जो उस से पेहले थीं। यक़ीनन अल्लाह

بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ

अपने बन्दों से बाखबर है, वो देख रहा है। फिर हम ने किताब का वारिस बनाया उन को जिन्हें

اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ وَمِنْهُمْ

हम ने मुन्तखब किया हमारे बन्दों में से। फिर उन में से कोई तो अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाला है। और उन में से

مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ذٰلِكَ

कोई मयानारव है। और उन में से कोई नेकियों में सबक़त करने वाला है अल्लाह के हुक्म से। ये

هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا

बड़ा फ़ज़्ल है। जन्नाते अद्न में वो दाखिल होंगे,

يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ

वहाँ उन्हें सौने के कंगन और मोती पेहनाए जाएंगे। और उन का लिबास

فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا

उन में रेशम का होगा। और वो कहेंगे के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म

الْحَزَنَ اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا

दूर कर दिया। यक़ीनन हमारा रब बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, क़दरदान है। वो अल्लाह जिस ने हमें

دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا

हमेशा के घर में अपने फ़ज़्ल से उतारा। जिस में न हमें रंज पहोंचेगा और न

يَمَسُّنَا فِيۡهَا لُغُوۡبٌ ۝٣٥ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لَهُمۡ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ
थकावट पहोंचेगी। और वो लोग जो काफिर हैं उन के लिए जहन्नम की आग है।

لَا يُقۡضٰى عَلَيۡهِمۡ فَيَمُوۡتُوۡا وَلَا يُخَفَّفُ عَنۡهُمۡ
उन के मुतअल्लिक़ फैसला नहीं होगा के वो मर जाएं, और न उन से आग का अज़ाब हलका

مِّنۡ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجۡزِىۡ كُلَّ كَفُوۡرٍ ۝٣٦ وَهُمۡ يَصۡطَرِخُوۡنَ
किया जाएगा। इसी तरह हम हर नाशुकरे को सज़ा देंगे। और वो उस में चीख

فِيۡهَا ۚ رَبَّنَاۤ اَخۡرِجۡنَا نَعۡمَلۡ صَالِحًا غَيۡرَ الَّذِىۡ كُنَّا
रहे होंगे। ऐ हमारे रब! तू हमें निकाल के हम नेक अमल करें उस के अलावा जो हम

نَعۡمَلُ ؕ اَوَلَمۡ نُعَمِّرۡكُمۡ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيۡهِ مَنۡ تَذَكَّرَ وَ
करते थे। (तो कहा जाएगा) क्या हम ने तुम्हें उमरें नहीं दी थीं जिस में नसीहत हासिल कर सकता था जो नसीहत

جَآءَكُمُ النَّذِيۡرُ ؕ فَذُوۡقُوۡا فَمَا لِلظّٰلِمِيۡنَ مِنۡ نَّصِيۡرٍ ۝٣٧
हासिल करता और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया था? फिर तुम चखो। फिर ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيۡبِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيۡمٌۢ
यक़ीनन अल्लाह आसमान और ज़मीन की पोशीदा चीज़ें जानने वाला है। यक़ीनन उसे दिलों

بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ۝٣٨ هُوَ الَّذِىۡ جَعَلَكُمۡ خَلٰٓئِفَ
के हाल का भी इल्म है। उस ने तुम्हें ज़मीन में जानशीन

فِى الۡاَرۡضِ ؕ فَمَنۡ كَفَرَ فَعَلَيۡهِ كُفۡرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيۡدُ الۡكٰفِرِيۡنَ
बनाया। फिर जो कुफ्र करेगा, तो उसी पर उस के कुफ्र का वबाल पड़ेगा। और काफिरों का कुफ्र उन के

كُفۡرُهُمۡ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ اِلَّا مَقۡتًا ۚ وَلَا يَزِيۡدُ الۡكٰفِرِيۡنَ
रब के यहाँ गुस्से ही को बढ़ाता है। और काफिरों को उन का कुफ्र

كُفۡرُهُمۡ اِلَّا خَسَارًا ۝٣٩ قُلۡ اَرَءَيۡتُمۡ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيۡنَ
खसारे ही में बढ़ाता है। आप फ़रमा दीजिए क्या तुम ने देखा अपने शुरका को अल्लाह

تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوۡنِىۡ مَاذَا خَلَقُوۡا
के सिवा जिन को तुम पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्हों ने क्या पैदा किया

مِنَ الۡاَرۡضِ اَمۡ لَهُمۡ شِرۡكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ۚ اَمۡ اٰتَيۡنٰهُمۡ كِتٰبًا
ज़मीन में से या उन की शिराकत है आसमानों में? या हम ने उन्हें किताब दी है

فَهُمۡ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنۡهُ ۚ بَلۡ اِنۡ يَّعِدُ الظّٰلِمُوۡنَ بَعۡضُهُمۡ
के वो उस की वजह से रोशन रास्ते पर हैं? बल्के ये ज़ालिम उन में से एक दूसरे से वादा

بَعۡضًا اِلَّا غُرُوۡرًا ۝٤٠ اِنَّ اللّٰهَ يُمۡسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ
नहीं करते मगर धोके ही का। बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन को गिरने से थामे

اَنۡ تَزُوۡلَا ۚ وَلَئِنۡ زَالَتَاۤ اِنۡ اَمۡسَكَهُمَا مِنۡ اَحَدٍ
हुए है। और अगर वो गिर जाएं तो उन्हें अल्लाह के बाद कौन

مِّنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيۡمًا غَفُوۡرًا ۝٤١ وَاَقۡسَمُوۡا بِاللّٰهِ جَهۡدَ
थाम सकता है? यक़ीनन वो हिल्म वाला, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है। और ये अल्लाह की क़स्में खाते थे पक्की

اَيۡمَانِهِمۡ لَئِنۡ جَآءَهُمۡ نَذِيۡرٌ لَّيَكُوۡنُنَّ اَهۡدٰى مِنۡ اِحۡدَى
क़स्में के अगर उन के पास डराने वाला आएगा तो ज़रूर सारी उम्मतों में सब से ज़्यादा हिदायत वाले बन

الۡاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمۡ نَذِيۡرٌ مَّا زَادَهُمۡ اِلَّا نُفُوۡرَا ۝٤٢
जाएंगे। लेकिन जब उन के पास डराने वाला आया तो उन की नफ़रत और बढ़ी।

اۨسۡتِكۡبَارًا فِى الۡاَرۡضِ وَمَكۡرَ السَّيِّیٴِ ؕ وَلَا يَحِيۡقُ الۡمَكۡرُ
ज़मीन में तकब्बुर करने और बुरी तदबीरें करने की बिना पर। और बुरा मक्र उस के करने

السَّيِّیٴُ اِلَّا بِاَهۡلِهٖ ؕ فَهَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا سُنَّتَ الۡاَوَّلِيۡنَ ۚ
वालों ही को हलाक करता है। क्या फिर पेहले लोगों के दस्तूर के वो मुन्तज़िर हैं?

فَلَنۡ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبۡدِيۡلًا ۚ وَلَنۡ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ
फिर आप अल्लाह के दस्तूर में कोई तबदीली हरगिज़ नहीं पाओगे। और अल्लाह के दस्तूर में तग़य्युर हरगिज़

تَحۡوِيۡلًا ۝٤٣ اَوَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ
न पाओगे। क्या वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के देखते के उन

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ وَكَانُوۡۤا اَشَدَّ مِنۡهُمۡ
लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जो उन से पेहले थे और उन से ज़्यादा कूव्वत

قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعۡجِزَهٗ مِنۡ شَىۡءٍ فِى السَّمٰوٰتِ
वाले थे? और अल्लाह ऐसा नहीं है के उसे कोई चीज़ आजिज़ कर सके आसमानों में

وَلَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيۡمًا قَدِيۡرًا ۝٤٤ وَلَوۡ يُؤَاخِذُ
और न ज़मीन में। यक़ीनन वो इल्म वाला, कुदरत वाला है। और अगर अल्लाह

اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا

इन्सानों को पकड़े उन के आमाल की वजह से तो ज़मीन की पुश्त पर किसी जानदार को

مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

न छोड़े, लेकिन अल्लाह उन्हें मुहलत दे रहा है एक वक़्ते मुक़र्ररा तक।

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

फिर जब उन का आखिरी वक़्त आ जाएगा तो यक़ीनन अल्लाह अपने बन्दों को खूब देख रहा है।

رُكُوْعَاتُهَا ٥ (٣٦) سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ (٤١) اٰيَاتُهَا ٨٣

और ५ रूकूअ हैं सूरह यासीन मक्का में नाज़िल हुई उस में ८३ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰسٓ ﴿١﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾

या सीन। हिक्मत वाले कुरआन की क़सम। यक़ीनन आप भेजे हुए पैग़म्बरों में से हैं।

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا

सीधे रास्ते पर हैं। ये कुरआन ज़बर्दस्त रहमत वाले अल्लाह की तरफ़ से उतारा गया है। ताके आप डराएं ऐसी क़ौम को

مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ

जिन के बाप दादा को नहीं डराया गया है, इस लिए वो ग़ाफिल हैं। यक़ीनन उन में से अक्सर पर क़ौले हक़्

عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا

साबित हो गया के वो ईमान नहीं लाएंगे। यक़ीनन हम ने उन की गर्दनों में तौक़ रख दिए हैं,

فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ

फिर वो ठोड़ियों तक पहोंच गए हैं और उन के सर ऊँचे हो रहे हैं। और हम ने उन के आगे

اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ

दीवार बना दी है और उन के पीछे दीवार बना दी है, फिर हम ने उन को ढांप लिया है, इस लिए वो

لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ

देख नहीं सकते। और उन पर बराबर है चाहे आप उन्हें डराएं या न डराएं,

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ

वो ईमान नहीं लाएंगे। आप उसी को डरा सकते हैं जो इस नसीहत का इत्तिबा करे और रहमान से बेदेखे

بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ﴿١١﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ

डरे। फिर आप उसे बशारत दीजिए मग़फिरत और इज़्ज़त वाले सवाब की। हम ही मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे

الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۗ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ

और हम लिख रहे हैं उन के आगे भेजे हुए आमाल और उन के निशानाते क़दम। और हर चीज़ हम ने महफ़ूज़ कर रखी है

فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٢﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ

लौहे महफ़ूज़ में। और आप उन के लिए मिसाल बयान कीजिए एक बस्ती वालों की,

اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿١٣﴾ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ

जब उन के पास भेजे हुए आदमी आए। जब हम ने उन की तरफ दो रसूल भेजे, तो उन्हों ने उन को

فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿١٤﴾

झुठलाया, फिर हम ने तीसरे को तक़वियत के लिए भेजा, फिर उन तीनों ने कहा हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं।

قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ

वो बोले के तुम नहीं हो मगर हम जैसे एक इन्सान और रहमान तआला ने कुछ भी

مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿١٥﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ

नहीं उतारा। तुम तो सिर्फ़ झूठ बोलते हो। उन्हों ने कहा के हमारा रब जानता है के

اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٧﴾

बेशक हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं। और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहोंचा देना है।

قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ

वो बोले के हम तुम्हें मन्हूस समझते हैं। अगर तुम बाज़ नहीं आओगे तो हम तुम्हें रज्म कर देंगे

وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۗ

और तुम्हें हमारी तरफ से दर्दनाक सज़ा मिलेगी। तो वो तीनों केहने लगे तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है।

اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۗ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ

क्या अगर्चे तुम्हें नसीहत की जाए तब भी? बल्के तुम ऐसी क़ौम हो जो हद से तजावुज़ करते हो। और शेहर के किनारे

مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾

से एक आदमी आया दौड़ता हुवा, उस ने कहा के ऐ मेरी क़ौम! तुम उन रसूलों का इत्तिबा कर लो।

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

तुम उन का इत्तिबा कर लो जो तुम से बदला नहीं मांगते और जो हिदायतयाफ्ता हैं।

وَمَالِیَ لَآ اَعۡبُدُ الَّذِیۡ فَطَرَنِیۡ وَاِلَیۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٢٢﴾

और मुझे क्या हुवा के मैं इबादत न करूँ उस अल्लाह की जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

ءَاَتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنۡ یُّرِدۡنِ الرَّحۡمٰنُ بِضُرٍّ

क्या मैं उसे छोड़ कर दूसरे माबूद बना लूँ के अगर रहमान तआला मुझे ज़रर पहोंचाना चाहे

لَّا تُغۡنِ عَنِّیۡ شَفَاعَتُهُمۡ شَیۡـًٔا وَّلَا یُنۡقِذُوۡنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّیۡۤ

तो उन की सिफ़ारिश मेरे कुछ भी काम नहीं आ सकती और न वो मुझे बचा सकते हैं। यक़ीनन तब तो मैं

اِذًا لَّفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّیۡۤ اٰمَنۡتُ بِرَبِّکُمۡ فَاسۡمَعُوۡنِ ﴿٢٥﴾

खुली गुमराही में पड़ गया। मैं तो ईमान ले आया तुम्हारे रब पर, तो तुम मेरी बात सुनो।

قِیۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّةَ ؕ قَالَ یٰلَیۡتَ قَوۡمِیۡ یَعۡلَمُوۡنَ ﴿٢٦﴾

कहा गया के तू जन्नत में दाख़िल हो जा। उस ने कहा ऐ काश के मेरी क़ौम जान लेती।

بِمَا غَفَرَ لِیۡ رَبِّیۡ وَجَعَلَنِیۡ مِنَ الۡمُکۡرَمِیۡنَ ﴿٢٧﴾ وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا

जो मेरे रब ने मेरी मग़फिरत की है और मुझे मुअज़्ज़ज़ लोगों में से बना दिया। और हम ने उस की क़ौम पर

عَلٰی قَوۡمِهٖ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ مِنۡ جُنۡدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا کُنَّا

उस के बाद आसमान से लशकर नहीं उतारे और न हम उतारने

مُنۡزِلِیۡنَ ﴿٢٨﴾ اِنۡ کَانَتۡ اِلَّا صَیۡحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ

वाले हैं। वो तो सिर्फ एक ही चिंघाड़ थी, तब ही वो बुझ कर

خٰمِدُوۡنَ ﴿٢٩﴾ یٰحَسۡرَةً عَلَی الۡعِبَادِ ۚ مَا یَاۡتِیۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ

रेह गए। हाए अफ़सोस बन्दों पर! उन के पास कोई रसूल नहीं आता

اِلَّا کَانُوۡا بِهٖ یَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمۡ یَرَوۡا کَمۡ اَهۡلَکۡنَا

मगर वो उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं। क्या उन्हों ने देखा नहीं के उन से पेहले कितनी

قَبۡلَهُمۡ مِّنَ الۡقُرُوۡنِ اَنَّهُمۡ اِلَیۡهِمۡ لَا یَرۡجِعُوۡنَ ﴿٣١﴾

क़ौमों को हम ने हलाक किया जो उन की तरफ वापस नहीं आते?

وَاِنۡ کُلٌّ لَّمَّا جَمِیۡعٌ لَّدَیۡنَا مُحۡضَرُوۡنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰیَةٌ لَّهُمُ الۡاَرۡضُ

और वो सब के सब इकट्ठे हमारे सामने ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे। और उन के लिए बन्जर ज़मीन एक

الۡمَیۡتَةُ ۚۖ اَحۡیَیۡنٰهَا وَ اَخۡرَجۡنَا مِنۡهَا حَبًّا فَمِنۡهُ

निशानी है। जिस को हम ने ज़िन्दा किया और उस से हम ने अनाज निकाला, फिर उस में से

يَاْكُلُوْنَ ۝٣٣ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ

वो खाते भी हैं। और हम ने उस में खजूर और अंगूर के बाग़ात बनाए

وَّ فَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ۝٣٤ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ

और हम ने उस में चशमे जारी कर दिए। ताके वो उस के फल में से खाएं

وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝٣٥ سُبْحٰنَ الَّذِيْ

और उन के हाथों ने ये फल नहीं बनाए। क्या फिर वो शुक्र अदा नहीं करते? पाक है वो अल्लाह जिस ने

خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ

तमाम जोड़े पैदा किए उस में से जिस को ज़मीन उगाती है और खुद उन की जानों से भी और उन चीज़ों से

وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٦ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۖۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ

भी जिन का उन्हें इल्म नहीं। और उन के लिए एक निशानी रात है। के हम उस से दिन को खींच लेते हैं,

فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۝٣٧ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ

तो अचानक वो तारीकी में रेह जाते हैं। और सूरज चलता रेहता हैं अपने मुस्तक़र तक के लिए।

ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝٣٨ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ

ये ज़बर्दस्त इल्म वाले अल्लाह की मुतअय्यन की हुई मिक़्दार है। और चाँद की हम ने मन्ज़िलें मुतअय्यन की हैं,

حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۝٣٩ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ

यहाँ तक के वो पुरानी शाख की तरह हो जाता है। न सूरज के लिए मुनासिब है

اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ

के वो चाँद को पकड़ ले और न रात दिन से आगे जा सकती है। और

فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝٤٠ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ

सब के सब फ़लक में तैर रहे हैं। और उन के लिए एक निशानी ये है के हम ने उन की ज़ुर्रीयत को भरी हुई

فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝٤١ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ

कशती में सवार कराया। और हम ने उन के लिए कशती के मानिन्द चीज़ें पैदा कीं जिन पर वो सवारी

مَا يَرْكَبُوْنَ ۝٤٢ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ

करते हैं। और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क़ कर दें, फिर न उन का कोई फरयादरस हो

وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۝٤٣ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝٤٤

और न उन्हें बचाया जा सके। मगर हमारी रहमत से और एक वक़्त तक फ़ाइदा देने के लिए (हम ने ग़र्क़ नहीं किया)।

وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمُ اتَّقُوۡا مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡكُمۡ وَمَا خَلۡفَكُمۡ

और जब उन से कहा जाता है के डरो उस से जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है

لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا تَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ اٰيَةٍ مِّنۡ اٰيٰتِ

ताके तुम पर रहम किया जाए। और उन के पास कोई निशानी नहीं आती उन के रब की निशानियों

رَبِّهِمۡ اِلَّا كَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ

में से मगर वो उस से ऐराज़ करते हैं। और जब उन से कहा जाता है के

اَنۡفِقُوۡا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِلَّذِيۡنَ

ख़र्च करो उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी के तौर पर दिया है, तो काफ़िर ईमान वालों से

اٰمَنُوۡۤا اَنُطۡعِمُ مَنۡ لَّوۡ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطۡعَمَهٗۤ ۖ اِنۡ اَنۡتُمۡ

केहते हैं के क्या हम उन को खिलाएं जिन को अगर अल्लाह चाहता तो खिला देता? तुम तो

اِلَّا فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٤٧﴾ وَيَقُوۡلُوۡنَ مَتٰى هٰذَا الۡوَعۡدُ

सिर्फ़ खुली गुमराही में हो। और वो केहते हैं के ये वादा कब है अगर

اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً

तुम सच्चे हो? वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर एक चिंघाड़ के,

تَاۡخُذُهُمۡ وَهُمۡ يَخِصِّمُوۡنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ تَوۡصِيَةً

जो उन को पकड़ लेगी जिस वक़्त वो झगड़ रहे होंगे। फिर वो न वसीयत कर सकेंगे

وَّلَاۤ اِلٰٓى اَهۡلِهِمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٥٠﴾ وَنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ

और न अपने घर वालों की तरफ वापस लौट सकेंगे। और सूर फूंका जाएगा

ركوع ٣

فَاِذَا هُمۡ مِّنَ الۡاَجۡدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمۡ يَنۡسِلُوۡنَ ﴿٥١﴾ قَالُوۡا

तब ही वो क़ब्रों से निकल कर अपने रब की तरफ दौड़ रहे होंगे। वो कहेंगे

يٰوَيۡلَنَا مَنۡۢ بَعَثَنَا مِنۡ مَّرۡقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ

हाए अफसोस हम पर! किस ने हमें हमारी सोने की जगह से उठा दिया? ये वो है जिस का रहमान तआला ने

وقف لازم وقف منزل
وقف غفران

الرَّحۡمٰنُ وَصَدَقَ الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿٥٢﴾ اِنۡ كَانَتۡ

वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था। वो तो सिर्फ

اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ جَمِيۡعٌ لَّدَيۡنَا مُحۡضَرُوۡنَ ﴿٥٣﴾

एक ज़ोरदार आवाज़ होगी, तो फौरन ही वो इकट्ठे हमारे सामने सब हाज़िर किए जाएंगे।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ
फिर आज किसी शख़्स पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं होगा और उन्हें बदला नहीं मिलेगा

اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٥٤ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ
मगर उन आमाल का जो वो करते थे। यक़ीनन जन्नती आज दिल्लगी की चीज़ों

فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ۝٥٥ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ
में मज़े कर रहे हैं। वो और उन की बीवियाँ सायों में तख़्तों

عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ۝٥٦ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ
पर टेक लगाए हुए हैं। उन के लिए उस में मेवे हैं और वो

مَّا يَدَّعُوْنَ ۝٥٧ سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ۝٥٨ وَامْتَازُوا
चीज़ें हैं जो वो मांगें। महरबान रब की आवाज़ में सलाम आएगा। (और कहा जाएगा के) ऐ मुजरिमो!

الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ۝٥٩ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ
आज तुम अलग हो जाओ। क्या मैं ने तुम्हें हुक्म नहीं दिया था ऐ आदम

اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
की औलाद! के तुम शैतान की इबादत न करो? यक़ीनन वो तुम्हारा खुला

مُّبِيْنٌ ۝٦٠ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٦١
दुश्मन है। और ये के तुम मेरी ही इबादत करो। यही सीधा रास्ता है।

وقف غفران ١٢

وَلَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ۭ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا
यक़ीनन उस ने तुम में से बहोत सी मख़लूक़ को गुमराह किया है। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं

تَعْقِلُوْنَ ۝٦٢ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝٦٣
रखते थे? ये वो जहन्नम है जिस का तुम से वादा किया जा रहा था।

اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝٦٤ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ
तुम उस में आज दाख़िल हो जाओ इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे। आज हम मुहर लगा देंगे

عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ
उन के मुंह पर और हम से बोलेंगे उन के हाथ और गवाही देंगे उन के पैर

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٦٥ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى
उन आमाल की जो वो करते थे। और अगर हम चाहें तो उन की आँखें मिटा कर

اَعۡيُنِهِمۡ فَاسۡتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبۡصِرُوۡنَ ﴿٦٦﴾
अन्धा कर दें, फिर वो रास्ते पर दौड़ें, फिर वो कहाँ देख पाते हैं?
وَلَوۡ نَشَآءُ لَمَسَخۡنٰهُمۡ عَلٰى مَكَانَتِهِمۡ فَمَا اسۡتَطَاعُوۡا
और अगर हम चाहें तो उन की सूरतें मस्ख कर दें उन की जगह ही पर, फिर वो न आगे चलने की ताक़त
مُضِيًّا وَّلَا يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنۡ نُّعَمِّرۡهُ نُنَكِّسۡهُ
रख सकें और न पीछे लौट सकें। और जिसे हम (लम्बी) उम्र देते हैं तो उसे जिस्मानी कूव्वत में औंधा
فِى الۡخَلۡقِ ؕ اَفَلَا يَعۡقِلُوۡنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمۡنٰهُ الشِّعۡرَ
कर देते हैं। क्या ये अक़्ल नहीं रखते? और हम ने इस नबी को शेअर नहीं सिखलाया
وَمَا يَنۡۢبَغِىۡ لَهٗ ؕ اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ وَّقُرۡاٰنٌ مُّبِيۡنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنۡذِرَ
और न शेअर उन के लिए मुनासिब है। ये तो सिर्फ नसीहत है और साफ साफ बयान करने वाला कुरआन है। ताके
مَنۡ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الۡقَوۡلُ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٧٠﴾
वो डराए उस शख्स को जो ज़िन्दा है और ताके काफिरों पर हुज्जत साबित हो जाए।
اَوَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّا خَلَقۡنَا لَهُمۡ مِّمَّا عَمِلَتۡ اَيۡدِيۡنَاۤ اَنۡعَامًا
क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम ने उन के लिए पैदा किए चौपाए अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ों में से,
فَهُمۡ لَهَا مٰلِكُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَ ذَلَّلۡنٰهَا لَهُمۡ فَمِنۡهَا رَكُوۡبُهُمۡ
फिर वो उन के मालिक हैं। और हम ने चौपाए उन के ताबेअ किए, फिर उन में से बाज़ उन की सवारियाँ हैं
وَمِنۡهَا يَاۡكُلُوۡنَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمۡ فِيۡهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ
और उन में से बाज़ को वो खाते हैं। और उन के लिए उन चौपाओं में और भी मनाफेअ हैं और पीने की चीज़ें हैं।
اَفَلَا يَشۡكُرُوۡنَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
क्या फिर ये शुक्र अदा नहीं करते? और उन्हों ने अल्लाह के अलावा कई माबूद बना लिए हैं
لَّعَلَّهُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ نَصۡرَهُمۡ ۙ وَهُمۡ
के शायद उन की नुसरत की जाए। वो उन की नुसरत की ताक़त नहीं रखते, बल्के वो
لَهُمۡ جُنۡدٌ مُّحۡضَرُوۡنَ ﴿٧٥﴾ فَلَا يَحۡزُنۡكَ قَوۡلُهُمۡ ۘ اِنَّا
उन के लिए लशकर बना कर हाज़िर किए जाएंगे। इस लिए उन का क़ौल आप को ग़मगीन न करे। यक़ीनन हम
نَعۡلَمُ مَا يُسِرُّوۡنَ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمۡ يَرَ
जानते हैं उसे जिसे वो छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं। क्या इन्सान ने ये देखा नहीं

وقف لازم

الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ

के हम ने उसे एक नुत्फे से पैदा किया, तो अचानक वो खुला झगड़ालू

مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ۭ قَالَ مَنْ يُّحْيِ

बन गया। और वो हमारे लिए मिसालें बयान करता है और अपनी पैदाइश को भूल जाता है। वो केहता है के कौन इन

الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ

हड्डियों को ज़िन्दा करेगा जब के वो रेज़ा रेज़ा हो चुकी होंगी? आप फरमा दीजिए के उन को ज़िन्दा करेगा वही अल्लाह

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ

जिस ने उन को पेहली मरतबा पैदा किया है। और वो अल्लाह हर मख़लूक़ को खूब जानने वाला है। वो अल्लाह जिस ने

مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख्त से आग को बनाया, फिर अब तुम उस से आग सुलगाते हो।

اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ

क्या वो अल्लाह जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वो इस पर क़ादिर नहीं के

عَلٰٓي اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ڲ بَلٰي ۤ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ

उन के जैसों को पैदा कर दे? क्यूं नहीं? यक़ीनन वो बहोत ज़्यादा पैदा करने वाला, इल्म वला है। उस का तो हुक्म करना

وقف غفران

اِذَآ اَرَادَ شَيْـــًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ

होता है जब वो किसी चीज़ का इरादा करता है के केहता है के हो जा, तो वो हो जाती है। फिर वो अल्लाह पाक है

الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

जिस के कब्ज़े में हर चीज़ की सलतनत है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

ع

اٰيَاتُهَا ١٨٢ (٣٧) سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ مَكِّيَّةٌ (٥٦) رُكُوْعَاتُهَا ٥

उस में १८२ आयतें हैं सूरह साफ्फात मक्का में नाज़िल हुई और ५ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿١﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿٢﴾ فَالتّٰلِيٰتِ

उन फरिशतों की क़सम जो सफ बनाने वाले हैं। फिर उन फरिशतों की क़सम जो बादलों को ज़ोर से झिड़कने वाले हैं। फिर उन

ذِكْرًا ﴿٣﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

फ़रिशतों की क़सम जो ज़िक्र की तिलावत करने वाले हैं। यक़ीनन तुम्हारा रब यकता है। वो आसमानों और ज़मीन का रब

المنزل السادس (٦)

وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝٥ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

है और उन चीज़ों का जो उन के दरमियान में है और तमाम मशरिक़ों का रब है। यक़ीनन हम ने आसमाने दुन्या को ज़ीनत

بِزِيْنَةِ ۣ الْكَوَاكِبِ ۝٦ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝٧

के लिए सितारों से मुज़य्यन किया। और हर सरकश शैतान से हिफाज़त के लिए।

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَ يُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ

जो मलअे आला की तरफ़ कान नहीं लगा सकते, और उन्हें हर जानिब से धुत्कार कर

جَانِبٍ ۝٨ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝٩ اِلَّا مَنْ

फेंका जाता है। और उन के लिए दाइमी अज़ाब है। मगर जो

خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠ فَاسْتَفْتِهِمْ

छुप कर कुछ उचक ले, तो उस का पीछा करता है एक चमकता अंगारा। फिर आप उन से पूछिए

اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ

के क्या उन की तखलीक़ ज़्यादा मुशकिल है या हमारी दूसरी मखलूक़ात की? बेशक हम ने उन्हें पैदा किया चिपकने वाली

لَّازِبٍ ۝١١ بَلْ عَجِبْتَ وَ يَسْخَرُوْنَ ۝١٢ وَاِذَا ذُكِّرُوْا

मिट्टी से। बल्के आप तअज्जुब कर रहे हैं और ये मज़ाक़ उड़ा रहे हैं। और जब भी उन्हें नसीहत की जाए

لَا يَذْكُرُوْنَ ۝١٣ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝١٤ وَقَالُوْٓا

तो नसीहत नहीं मानते। और जब कोई मोअजिज़ा देखते हैं तो मज़ाक़ उड़ाते हैं। और केहते हैं के

اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا

ये नहीं है मगर खुला जादू। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे,

ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝١٦ اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝١٧ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ

तो क्या हम ज़िन्दा किए जाएंगे? और क्या हमारे अगले बाप दादा भी?आप फ़रमा दीजिए के जी हाँ! और तुम ज़लील भी

دَاخِرُوْنَ ۝١٨ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝١٩

होगे। वो तो सिर्फ़ एक झिड़कना होगा तो अचानक वो देखने लगेंगे।

وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝٢٠ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ

और कहेंगे के हाए हमारी खराबी! ये तो हिसाब का दिन आ गया। ये फैसले का वो दिन है

الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝٢١ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

जिस को तुम झुठलाया करते थे। तुम ज़ालिमों और उन के हममस्लकों को

ع ٥

وَ اَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

इकट्ठा करो और उन को जिन की ये इबादत करते थे। अल्लाह के अलावा।

فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ

फिर तुम उन को रास्ता दिखाओ आग के रास्ते की तरफ़। और उन को ठेहराओ इस लिए के उन से

مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ

सवाल किया जाएगा। तुम्हें क्या हुवा के तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते? बल्के वो आज

مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

ताबेदार बने हुए हैं। और उन में से एक दूसरे के सामने आ कर सवाल करेंगे।

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا

वो कहेंगे के तुम थे जो हम पर बड़े ज़ोरों से चढ़ चढ़ कर आते थे। वो कहेंगे

بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ

बल्के तुम ही ईमान नहीं लाए थे। और हमारा तुम पर कुछ ज़ोर

مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ

नहीं था। बल्के तुम खुद ही गुमराह थे। फिर हम पर हमारे रब का कहा साबित

رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾

हो गया के हम अज़ाब चखने वाले हैं। फिर हम ने तुम्हें गुमराह किया इस लिए के हम खुद गुमराह थे।

فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ

फिर वो सब उस दिन अज़ाब में शरीक होंगे। बेशक हम मुजरिमों के

نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ

साथ ऐसा ही करते हैं। इस लिए के जब उन्हें कहा जाता था के कोई माबूद नहीं

اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا

सिवाए अल्लाह के, तो वो तकब्बुर करते थे। और केहते थे के क्या हम अपने माबूदों को छोड़ दें

لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾

एक मजनून शाइर की वजह से? बल्के वो तो हक़ ले कर आया है और उस ने तमाम पैग़म्बरों की तस्दीक़ की है।

اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ

यक़ीनन तुम दर्दनाक अज़ाब चखने वाले हो। और तुम्हें सज़ा नहीं मिलेगी

اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۳۹ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝۴۰
मगर उन्ही आमाल की जो तुम करते थे। मगर अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे।
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ۝۴۱ فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ۝۴۲
के ये वो हैं जिन के लिए मालूम रोज़ी है। मेवे होंगे। और उन्हें ऐज़ाज़ दिया जाएगा।
فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝۴۳ عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝۴۴ يُطَافُ
जन्नाते नईम में। वो तख्तों पर आमने सामने बैठे हुवे होंगे। उन को (बारी बारी)
عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝۴۵ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝۴۶
सफेद चशमए साफ़ी से भरे जाम पेश किए जाएंगे, जो पीने वालों के लिए सरापा लज़्ज़त होंगे।
لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ۝۴۷ وَعِنْدَهُمْ
जिस में न सर चकराना होगा और न उस की वजह से नशा आएगा। और उन के पास
قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ۝۴۸ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ۝۴۹
नीची निगाहों वाली, बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी। गोया के छुपा कर रखे हुए अन्डे हैं।
فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ۝۵۰ قَالَ
फिर उन में से एक दूसरे से रूबरू हो कर सवाल करेंगे। उन में से
قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ۝۵۱ يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ
एक केहने वाला कहेगा के मेरा एक साथी था। जो कहा करता था के क्या तू भी तस्दीक़
لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ۝۵۲ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا
करने वालों में से है? के जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएंगे
ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ۝۵۳ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ۝۵۴
क्या तब हम से हिसाब लिया जाएगा? तो वो कहेगा के क्या तुम झांक कर देखोगे?
فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ۝۵۵ قَالَ تَاللّٰهِ
फिर वो झांकेगा, तो उस साथी को जहन्नम के बीच में देखेगा। कहेगा के अल्लाह की क़सम!
اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ۝۵۶ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ
यक़ीनन तू तो क़रीब था के मुझे भी हलाक कर देता। और अगर मेरे रब की नेअमत न होती तो मैं भी
مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝۵۷ اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ۝۵۸ اِلَّا مَوْتَتَنَا
पकड़े जाने वालों में होता। क्या फिर ये सच नहीं के हम (जन्नतियों) को मरना नहीं? मगर हमारी

الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ

पेहली मौत और हमें अज़ाब नहीं होगा। यक़ीनन ये भारी

الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ

कामयाबी है। उसी जैसे के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए। क्या ये

خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً

मेहमानी के ऐतेबार से बेहतर है या ज़क्कूम का दरख़्त? यक़ीनन हम ने उसे ज़ालिमों के लिए

لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾

आज़माइश का ज़रिया बनाया है। यक़ीनन वो एक दरख़्त है, जो क़अरे जहन्नम से निकलता है।

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾ فَاِنَّهُمْ

उस के खोशे ऐसे हैं गोया वो शयातीन के सर हैं। फिर वो

لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾ ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ

उस से खाएंगे, फिर उसी से पेट भरेंगे। फिर उन को

عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاْ

उस पर गर्म पानी से पीना होगा। फिर उन को ज़रूर दोज़ख की तरफ

اِلَى الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ

लौटना होगा। उन्हों ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया। फिर वो

عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ

उन के निशानाते क़दम पर तेज़ दौड़ रहे हैं। और यक़ीनन उन से पेहले वालों की अक्सरीयत

الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾

गुमराह थी। और हम ने उन में भी डराने वाले रसूल भेजे।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ

फिर आप देखिए के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जिन्हें डराया गया था? मगर अल्लाह के खालिस किए

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾ ع

हुए बन्दे। और तहक़ीक़ के हमें नूह (अलैहिस्सलाम) ने पुकारा, फिर हम कितने अच्छे दुआ कबूल करने वाले हैं।

وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَجَعَلْنَا

और हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को और उन के मानने वालों को भारी मुसीबत से नजात दी। और हम ने

ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾ سَلٰمٌ

उन की ज़ुर्रीयत ही को बाक़ी रेहने वाला बनाया। और हम ने उन का तज़किरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया। सलामती हो

عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾

नूह (अलैहिस्सलाम) पर तमाम जहान वालों में। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا

वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। फिर हम ने दूसरों को

الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾ وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ

ग़र्क़ किया। और उन के हममस्लकों में से अलबत्ता इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) थे। जब वो अपने रब के

رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ

पास क़ल्बे सलीम ले कर आए। जब के उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम से फरमाया के

مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾

किन चीज़ों की तुम इबादत करते हो? क्या अल्लाह के सिवा झूठे माबूदों को तुम चाहते हो?

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

फिर रब्बुल आलमीन के मुतअल्लिक़ तुम्हारा क्या गुमान है? फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने सितारों में एक निगाह की।

فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ

और फरमाया के मैं बीमार हूँ। चुनांचे वो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को छोड़ कर पुश्त फेर कर चले गए। फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾

उन के माबूदों के पास चुपके से जा पहोंचे, और फरमाया क्या तुम खाते नहीं हो? तुम्हें क्या हुवा तुम बोलते नहीं हो?

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾

फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कूव्वत से उन को मारने लगे। फिर वो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सामने आए तेज़ दौड़ते हुए।

قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने पूछा क्या तुम इबादत करते हो ऐसी चीज़ों की जिन को खुद तराशते हो? हालांके अल्लाह ने तुम्हें भी

وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾

पैदा किया और उन को भी जो तुम बनाते हो। वो बोले तुम इस के लिए एक इमारत तामीर करो, फिर उस को आतिशकदे

فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَقَالَ اِنِّىْ

में डाल दो। फिर उन्हों ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के साथ बुरे मक्र का इरादा किया, तो हम ने उन्ही को ज़लील बना दिया। और इब्राहीम(अलैहिस्सलाम)

وقف لازم

ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِىْ
ने फ़रमाया मैं अपने रब की तरफ जा रहा हूँ, अनक़रीब वो मुझे रास्ता दिखाएगा। ऐ मेरे रब! तू मुझे

مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ
सुलहा में से औलाद अता कर। तो हम ने उन्हें बशारत दी हिल्म वाले लड़के की। फिर जब वो लड़का इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के

السَّعْىَ قَالَ يٰبُنَىَّ اِنِّىْٓ اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنِّىْٓ اَذْبَحُكَ
साथ दौड़ने की उम्र को पहोंच गया, तो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ मेरे बेटे! मैं ख्वाब देख रहा हूँ के मैं तुझे ज़बह कर

فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ز
रहा हूँ, इस लिए तू देख ले, तेरी क्या राए है? बेटे ने कहा के ऐ मेरे अब्बा! आप कर गुज़रिए जिस का आप को हुक्म दिया

سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّآ اَسْلَمَا
जा रहा है। अगर अल्लाह ने चाहा तो अनक़रीब आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे। फिर जब दोनों ने हुक्म मान लिया और

وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ
इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने बेटे को पेशानी के बल लिटा दिया। और हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को आवाज़ दी के ऐ इब्राहीम! यक़ीनन

صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ج اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾
आप ने ख्वाब सच कर दिखाया। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ
अलबत्ता ये खुला इमतिहान था। और हम ने एक अज़ीम ज़बीहा उन्हें फिदये में

عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ
दिया। और हम ने उन का तज़किरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया। सलामती हो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾ اِنَّهٗ
पर। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं। बेशक वो

مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا
हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और हम ने उन्हें बशारत दी इसहाक़ (अलैहिस्सलाम) की जो नबी होंगे,

مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾ وَ بٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ
सुलहा में से होंगे। और हम ने उन पर और इसहाक़ (अलैहिस्सलाम) पर बरकतें नाज़िल फरमाईं।

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا
और दोनों की औलाद में से कुछ नेक हैं और कुछ अपनी जान पर खुला ज़ुल्म करने वाले हैं। और यक़ीनन हम ने

عَلٰى مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَ نَجَّيْنٰهُمَا وَ قَوْمَهُمَا

मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) पर एहसान किया। और हम ने उन दोनों को और उन की क़ौम को भारी

مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾

मुसीबत से नजात दी। और हम ने उन की नुसरत की, फिर वही ग़ालिब रहे।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ

और हम ने उन दोनों को साफ साफ बयान करने वाली किताब दी। और हम ने उन दोनों को सीधे रास्ते की

الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ سَلٰمٌ

रहनुमाई की। और हम ने उन का तज़किरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया। सलामती हो

عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

मूसा और हारून (अलैहिमस्सलाम) पर। यक़ीनन हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ

वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और यक़ीनन इल्यास (अलैहिस्सलाम)

لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اَتَدْعُوْنَ

पैग़म्बरों में से थे। जब उन्हों ने अपनी क़ौम से फरमाया क्या तुम डरते नहीं हो? क्या तुम पुकारते हो

بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ

बअल बुत को और तुम छोड़ देते हो बनाने वालों में सब से बेहतरीन बनाने वाले अल्लाह को, अपने रब को और अपने

اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

पेहले बाप दादाओं के रब को। फिर उन्हों ने उन को झुठलाया, फिर वो ज़रूर पकड़े जाएंगे।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾

मगर अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे। और हम ने उन का तज़किरा पीछे आने वालों में छोड़ दिया।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾

सलामती हो इलयासीन पर। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ وَاِنَّ لُوْطًا

यक़ीनन वो हमारे मोमिन बन्दों में से थे। और यक़ीनन लूत (अलैहिस्सलाम) पैग़म्बरों

لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾ اِلَّا عَجُوْزًا

में से थे। जब के हम ने उन्हें और उन के घर वालों को, सब को नजात दी। मगर बुढ़िया

فِي الْغٰبِرِيْنَ ۝١٣٥ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝١٣٦ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ

जो हलाक होने वालों में हो गई। फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया। और यक़ीनन तुम उन पर सुबह

عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ۝١٣٧ وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٣٨

और रात के वक्त गुज़रते हो। क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते?

وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٣٩ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝١٤٠

और यक़ीनन यूनुस (अलैहिस्सलाम) पैग़म्बरों में से थे। जब वो भरी हुई कशती की तरफ भागे।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ۝١٤١ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ

फिर कशती वालों ने कुरआअन्दाज़ी की, पस वो समन्दर में डाले जाने वाले हो गए। फिर उन को मछली ने लुक़्मा बना लिया

وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝١٤٢ فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۝١٤٣ لَلَبِثَ

इस हाल में के ये अपने को मलामत कर रहे थे। फिर अगर वो तस्बीह करने वाले न होते। तो ज़रूर वो क़ब्रों

فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝١٤٤ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ

से मुर्दे उठाए जाने के दिन तक मछली के पेट में रेहते। फिर हम ने उन्हें फैंक दिया खुले मैदान में इस हाल

سَقِيْمٌ ۝١٤٥ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ۝١٤٦

में के वो बीमार थे। और हम ने उन पर एक बेलदार दरख्त उगा दिया।

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ۝١٤٧ فَاٰمَنُوْا

और हम ने उन को एक लाख या ज़्यादा इन्सानों की तरफ रसूल बना कर भेजा। पस वो ईमान लाए,

فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝١٤٨ فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ

तो हम ने उन्हें मुतमत्तेअ किया एक वक़्त तक के लिए। फिर आप उन से पूछिए क्या आप के रब के लिए बेटियाँ और

وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ۝١٤٩ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ

उन के लिए बेटे? या हम ने फरिशतों को बेटियाँ बनाया इस हाल में के वो

شٰهِدُوْنَ ۝١٥٠ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ۝١٥١

देख रहे थे? सुनो! यक़ीनन वो अपने पास से घड़ा हुवा झूठ बक रहे हैं।

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١٥٢ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ

के अल्लाह ने औलाद बनाई है। और यक़ीनन ये झूठे हैं। क्या अल्लाह ने बेटियाँ चुन कर खुद लीं

عَلَى الْبَنِيْنَ ۝١٥٣ مَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝١٥٤ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝١٥٥

बेटों के मुक़ाबले में? तुम्हें क्या हुवा, तुम कैसे फैसले करते हो? क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते?

اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾

या तुम्हारे पास रोशन दलील है? तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो।

وَ جَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَ بَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۭ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ

और ये अल्लाह और जिन्नात के दरमियान नसब बयान करते हैं। हालांके जिन्नात को पक्का यक़ीन है

اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾

के वो हाज़िर किए जाएंगे। अल्लाह पाक है उन चीज़ों से जो ये बयान करते हैं।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾ فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾ مَاۤ اَنْتُمْ

मगर अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे। फिर तुम और वो जिन की तुम इबादत करते हो, अल्लाह के खिलाफ

عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّاۤ

गुमराह नहीं कर सकते, मगर उसी को जो जहन्नमरसीद होने वाला है। (मुशरिकीन के बरअक्स फरिशते तो केहते हैं)

اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّاۤفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾

और हम में से हर एक का मक़ाम मुतअय्यन है। और हम तो सफ बनाते हैं।

وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا

और हम तो तस्बीह करने वाले हैं। हालांके ये मुशरिक केहते थे के अगर हमारे पास

ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾

पेहले लोगों की नसीहत होती, तो ज़रूर हम अल्लाह के खालिस किए हुए बन्दे हो जाते।

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا

फिर उन्हों ने उसी के साथ कुफ्र किया, फिर जल्द ही उन्हें पता चल जाएगा। और यक़ीनन हमारे भेजे हुए

لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾

पैग़म्बरों के मुतअल्लिक़ हमारा पेहले से हुक्म हो चुका है, के उन की ज़रूर नुसरत की जाएगी।

وَ اِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾

और हमारा लशकर ही ग़ालिब रहेगा। इस लिए आप उन से एक वक्त तक मुंह फेर लीजिए।

وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾

और आप उन को देखते रहिए, फिर वो भी देख लेंगे। क्या हमारा अज़ाब ये जल्दी तलब कर रहे हैं?

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاۤءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ

फिर जब अज़ाब उन के आंगन में उतरेगा, तो उन लोगों की सुबह बुरी होगी जिन्हें डराया गया था। और आप

عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۱۷۸﴾ وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿۱۷۹﴾
उन से एक वक़्त तक ऐराज़ कीजिए। और आप देखते रहिए, फिर वो भी देख लेंगे।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ سَلٰمٌ
आप का रब पाक है, इज़्ज़त वाला रब है, पाक है उन बातों से जो ये बयान कर रहे हैं। और सलामती हो

عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾
पैग़म्बरों पर। और तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं।

اٰيَاتُهَا ۸۸ (۳۸) سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ (۳۸) رُكُوْعَاتُهَا ۵
उस में ८८ आयतें हैं सूरह सॉद मक्का में नाज़िल हुई और ५ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ﴿۱﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
सॉद, नसीहत वाले कुरआन की क़सम! बल्के वो लोग जो काफिर हैं

فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿۲﴾ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ
वो ज़बर्दस्ती और मुखालफत में हैं। उन से पेहले बहोत सी क़ौमों को हम ने हलाक किया,

فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿۳﴾ وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ
फिर उन्हों ने पुकारा, और वो छुटकारे का वक़्त नहीं था। और उन को तअज्जुब हुवा इस बात से के उन के पास

مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿۴﴾
उन्ही में से एक डराने वाला आया। और काफिरों ने कहा के ये झूठा जादूगर है।

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ﴿۵﴾
क्या उस ने तमाम माबूदों का एक माबूद बना दिया? यक़ीनन ये बड़ी अजीब बात है।

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ
और उन के सरदार ये केहते हुए चले गए के तुम भी चलो और अपने माबूदों ही के साथ चिपके रहो।

اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ يُّرَادُ ﴿۶﴾ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِى الْمِلَّةِ
ये तो कोई गर्ज़ वाली बात है। इस को हम ने पिछले दीन में

الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿۷﴾ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ
नहीं सुना। यक़ीनन ये तो सिर्फ घड़ी हुई बात है। हमारे दरमियान में से क्या इसी पर ये कुरआन

مِنۢ بَيۡنِنَا ؕ بَلۡ هُمۡ فِیۡ شَكٍّ مِّنۡ ذِكۡرِیۡ ۚ
उतारा गया? बल्के वो मेरे ज़िक्र की तरफ से शक में हैं।

بَلۡ لَّمَّا يَذُوۡقُوۡا عَذَابِ ؕ﴿۸﴾ اَمۡ عِنۡدَهُمۡ خَزَآئِنُ رَحۡمَةِ رَبِّكَ
बल्के अब तक उन्हों ने मेरा अज़ाब चखा नहीं। या उन के पास तेरे रब की रहमत के खज़ाने हैं?

الۡعَزِيۡزِ الۡوَهَّابِ ۚ﴿۹﴾ اَمۡ لَهُمۡ مُّلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ
जो ज़बर्दस्त है, बहोत देने वाला है। या उन के लिए आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान की

وَمَا بَيۡنَهُمَا ۟ فَلۡيَرۡتَقُوۡا فِی الۡاَسۡبَابِ ﴿۱۰﴾ جُنۡدٌ مَّا هُنَالِكَ
सल्तनत है, तो उन्हें चाहिए के रस्सियों के ज़रिए ऊपर चढ़ जाएं। ये भी एक फौज है उन गिरोहों

مَهۡزُوۡمٌ مِّنَ الۡاَحۡزَابِ ﴿۱۱﴾ كَذَّبَتۡ قَبۡلَهُمۡ قَوۡمُ نُوۡحٍ وَّعَادٌ
में से जो यहाँ शिकस्त खा चुके हैं। उन से पेहले क़ौमे नूह और क़ौमे आद

وَّ فِرۡعَوۡنُ ذُو الۡاَوۡتَادِ ۙ﴿۱۲﴾ وَثَمُوۡدُ وَقَوۡمُ لُوۡطٍ وَّاَصۡحٰبُ
और मेखों वाले फ़िरऔन ने और क़ौमे समूद और क़ौमे लूत और ऐका वालों

لۡـئَيۡكَةِ ؕ اُولٰٓئِكَ الۡاَحۡزَابُ ﴿۱۳﴾ اِنۡ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ
ने भी तकज़ीब की। यही गिरोह हैं। उन सब ही ने रसूलों को

الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۚ﴿۱۴﴾ وَمَا يَنۡظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيۡحَةً
झुठलाया, फिर मेरा अज़ाब नाज़िल हुवा। और ये मुन्तज़िर नहीं हैं मगर एक लम्बी

وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنۡ فَوَاقٍ ﴿۱۵﴾ وَقَالُوۡا رَبَّنَا عَجِّلۡ لَّنَا
आवाज़ के, जिस के लिए दरमियानी वक़्फा नहीं है। और उन्हों ने कहा के ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए

قِطَّنَا قَبۡلَ يَوۡمِ الۡحِسَابِ ﴿۱۶﴾ اِصۡبِرۡ عَلٰى مَا يَقُوۡلُوۡنَ
हिसाब के दिन से पेहले हमारा हिसाब जल्दी ले ले। आप सब्र कीजिए उन बातों पर जो ये केह रहें हैं और हमारे

وَاذۡكُرۡ عَبۡدَنَا دَاوٗدَ ذَا الۡاَيۡدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۷﴾ اِنَّا سَخَّرۡنَا
बन्दे दावूद (अलैहिस्सलाम) का तज़किरा कीजिए जो कूव्वत वाले थे। वो अल्लाह की तरफ बहोत रूजूअ होने वाले थे। हम ने उन

الۡجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحۡنَ بِالۡعَشِیِّ وَالۡاِشۡرَاقِ ۙ﴿۱۸﴾ وَالطَّيۡرَ
के साथ पहाड़ों को मुसख्खर किया था जो तस्बीह करते थे शाम और सुबह के वक्त। और परिन्दे भी

مَحۡشُوۡرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۹﴾ وَشَدَدۡنَا مُلۡكَهٗ وَاٰتَيۡنٰهُ
इकट्ठे हो कर। सब मिल कर अल्लाह के आगे रूजूअ होते थे। और हम ने उन की सल्तनत को मज़बूत किया था और हम ने

اَلْحِكْمَةَ وَ فَصْلَ الْخِطَابِ ﴿۲۰﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ

उन्हें हिक्मत और फ़स्ले खिताब दिया था। और क्या आप के पास मुद्दईयों की खबर पहोंची,

اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿۲۱﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا

जब वो दीवार फलांग कर मेहराब में आए। दावूद (अलैहिस्सलाम) पर जब वो दाखिल हुए तो वो उन से घबराए, उन्हों

لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا

ने कहा के आप न डरिए। हम दो मुद्दई हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है, इस लिए आप हमारे

بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿۲۲﴾

दरमियान हक़ के मुताबिक़ फैसला कीजिए और ज़्यादती न कीجिए और हमारी सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई कीजिए।

اِنَّ هٰذَآ اَخِيْ ۣ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۣ

ये मेरा भाई है। उस की निनान्वे भेड़े थीं और मेरी एक भेड़ थी।

فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿۲۳﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ

तो ये केहता है के वो एक भी तू मुझे दे दे और बात में मुझ पर ज़बर्दस्ती करता है। दावूद (अलैहिस्सलाम) ने

بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ

फ़रमाया उस ने तेरी भेड़ अपनी भेड़ों में मिलाने के लिए मांग कर तुझ पर ज़ुल्म किया। और अक्सर शरीक

لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا

एक दूसरे पर ज़्यादती ही करते हैं, मगर जो ईमान लाए और नेक काम

الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۭ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ

करते रहे और ऐसे लोग थोड़े हैं। और दावूद (अलैहिस्सलाम) ने गुमान किया के हम ने उन का इमतिहान लिया

فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ۩ ﴿۲۴﴾ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۭ

तो उन्हों ने अपने रब से इस्तिग़फार किया और सज्दे में गिर पड़े और तौबा की। तो हम ने उन की ये खता मुआफ कर दी।

وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ

और उन का हमारे नज़दीक बड़ा मरतबा है और अच्छा ठिकाना है। ऐ दावूद! हम ने आप को जानशीन

خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ

बनाया ज़मीन में, इस लिए आप इन्सानों के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कीजिए और ख्वाहिश के पीछे

الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ

न चलिए, वरना ये ख्वाहिश आप को अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर देगी। यक़ीनन जो अल्लाह के रास्ते से

وقف لازم

السجدة ۱۰

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ

भटकते हैं, उन के लिए सख्त अज़ाब है इस वजह से के उन्हों ने हिसाब के दिन को

الْحِسَابِ۝٢٦ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

भुला दिया। और हम ने आसमान और ज़मीन और उन के दरमियान की चीज़ें बेकार नहीं

بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

बनाईं। ये तो काफिरों का गुमान है। फिर काफिरों के लिए दोज़ख से

مِنَ النَّارِ ۝٢٧ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

हलाकत है। क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۝٢٨

ज़मीन में फसाद फैलाने वालों के मानिन्द कर देंगे? या हम मुत्तक़ियों को फाजिरों की तरह कर देंगे?

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا

ये मुबारक किताब है जो हम ने आप की तरफ उतारी है ताके ये उस की आयतों में ग़ौर करें और ताके अक़्ल वाले

الْاَلْبَابِ ۝٢٩ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ

नसीहत पकड़ें। और हम ने दावूद (अलैहिस्सलाम) को सुलैमान (अलैहिस्सलाम) अता किए। कितने अच्छे बन्दे थे! यक़ीनन वो अल्लाह की

اَوَّابٌ ۝٣٠ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝٣١

तरफ रूजूअ करने वाले थे। जब उन के सामने शाम के वक़्त तीन पैरों पर खड़े रेहने वाले उम्दा घोड़े पेश किए गए।

فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ

तो सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने कहा के मैं ने रब की याद छोड़ कर माल से महब्बत कर ली

حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝٣٢ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ

यहाँ तक के सूरज पर्दे में छुप गया। वो घोड़े मेरे सामने पेश करो। फिर वो उन की पिंडलियों और गर्दनों पर तलवार

وَالْاَعْنَاقِ ۝٣٣ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ

चलाने लगे। तहक़ीक़ के हम ने सुलैमान (अलैहिस्सलाम) का इम्तिहान लिया और हम ने उन की कुर्सी पर एक धड़ को डाल दिया, फिर

جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝٣٤ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا

वो अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह हुए। केहने लगे ऐ मेरे रब! तू मेरी मग़फिरत कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत अता फरमा

لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝٣٥ فَسَخَّرْنَا

जो मेरे बाद किसी के लिए सज़ावार न हो। यक़ीनन तू बहोत ज़्यादा अता करने वाला है। फिर हम ने

لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿۳۶﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ

उन के लिए हवा को ताबेअ किया जो चलती थी सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के हुक्म से नर्मी से जहाँ वो चाहते। और हर तामीर करने

كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿۳۷﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿۳۸﴾

वाले और ग़ोता लगाने वाले शयातीन को ताबेअ किया। और दूसरे ज़न्जीरों में जकड़े हुए होते थे।

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۹﴾

ये हमारी अता है, फिर आप एहसान कीजिए या रोके रखिए, कुछ हिसाब न होगा।

وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۰﴾ وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ

और उन का हमारे हाँ बड़ा मरतबा और अच्छा ठिकाना है। और याद कीजिए हमारे बन्दे अय्यूब (अलैहिस्सलाम) को।

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿۴۱﴾

जब के उन्हों ने अपने रब को पुकारा के मुझे शैतान ने तकलीफ और अज़ीयत पहोंचाई है।

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿۴۲﴾

(अल्लाह ने फरमाया) आप अपना पैर ज़मीन से रगड़िए। ये ठंडा पीने और नहाने का पानी है।

وَ وَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَ ذِكْرٰى

और हम ने उन को उन के घर वाले और उन के जैसे उन के साथ और भी अता किए अपनी रहमत से और अक़्ल वालों के

لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۴۳﴾ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ

लिए नसीहत के तौर पर। और (हम ने कहा) आप अपने हाथ में (तिन्कों का) एक गठ्ठर लीजिए, फिर उसे मारिए

وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ

और क़सम न तोड़िए। हम ने उन को साबिर पाया। कितने अच्छे बन्दे थे! वो अल्लाह की तरफ

اَوَّابٌ ﴿۴۴﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي

रूजूअ होने वाले थे। और आप हमारे बन्दे इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब (अलैहिमुस्सलाम) का तज़किरा कीजिए जो

الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ﴿۴۵﴾ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى

हाथों और आँखों वाले थे। यक़ीनन हम ने उन्हें दारे आखिरत की याद के लिए खालिस

الدَّارِ ﴿۴۶﴾ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿۴۷﴾

किया था। और वो हमारे नज़दीक अलबत्ता अच्छे मुन्तखब किए हुए बन्दों में से थे।

وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿۴۸﴾

और आप तज़किरा कीजिए इस्माईल और अलयसअ और जुलकिफ़्ल (अलैहिमुस्सलाम) का। और सब के सब अच्छे लोगों में से थे।

هٰذَا ذِكۡرٌ ؕ وَاِنَّ لِلۡمُتَّقِيۡنَ لَحُسۡنَ مَاٰبٍۙ‏ ﴿۴۹﴾ جَنّٰتِ

ये नसीहत है। और मुत्तक़ियों के लिए अच्छा अन्जाम ज़रूर है। जन्नाते अद्न

عَدۡنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الۡاَبۡوَابُ‌ۚ‏ ﴿۵۰﴾ مُتَّكِـِٕيۡنَ فِيۡهَا يَدۡعُوۡنَ

हैं, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। उन में वो टेक लगाए हुए होंगे,

فِيۡهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيۡرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿۵۱﴾ وَ عِنۡدَهُمۡ قٰصِرٰتُ

उन में वो मांगेंगे बहोत से मेवे और शराब। और उन के पास नीची निगाहों वाली

الطَّرۡفِ اَتۡرَابٌ ﴿۵۲﴾ هٰذَا مَا تُوۡعَدُوۡنَ لِيَوۡمِ الۡحِسَابِ‏ ﴿۵۳﴾

हमउम्र हूरें होंगी। (कहा जाएगा) ये वो नेअमतें हैं जिन का हिसाब के दिन के लिए तुम से वादा किया जाता था।

اِنَّ هٰذَا لَرِزۡقُنَا مَا لَهٗ مِنۡ نَّفَادٍ ۚ ۖ‏ ﴿۵۴﴾ هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيۡنَ

ये हमारी ऐसी रोज़ी है जिस के लिए खत्म होना नहीं। ये तो होगा। और सरकशों का अलबत्ता

لَشَرَّ مَاٰبٍۙ‏ ﴿۵۵﴾ جَهَنَّمَ‌ ۚ يَصۡلَوۡنَهَا‌ ۚ فَبِئۡسَ الۡمِهَادُ‏ ﴿۵۶﴾ هٰذَا ۙ

बुरा ठिकाना है। जहन्नम है। जिस में वो दाखिल होंगे। फिर वो बुरी आरामगाह है। ये अज़ाब है,

فَلۡيَذُوۡقُوۡهُ حَمِيۡمٌ وَّغَسَّاقٌۙ‏ ﴿۵۷﴾ وَّاٰخَرُ مِنۡ شَكۡلِهٖۤ اَزۡوَاجٌ ؕ‏ ﴿۵۸﴾

फिर उन्हें चाहिए के उस को चखें गर्म पानी और पीप। और उसी शक्ल के दूसरे अज़ाब भी होंगे।

هٰذَا فَوۡجٌ مُّقۡتَحِمٌ مَّعَكُمۡ‌ ۚ لَا مَرۡحَبًۢا بِهِمۡ‌ ؕ اِنَّهُمۡ صَالُوا

(दोज़खी कहेंगे) ये एक और जमाअत तुम्हारे साथ घुस रही है। उन के लिए मरहबा न हो। वो आग में दाखिल

النَّارِ‏ ﴿۵۹﴾ قَالُوۡا بَلۡ اَنۡتُمۡ ۗ لَا مَرۡحَبًۢا بِكُمۡ‌ ؕ اَنۡتُمۡ قَدَّمۡتُمُوۡهُ

होने वाले हैं। वो बोलेंगे बल्के तुम्हारे लिए मरहबा न हो। तुम ही ने उस को हमारे लिए पेहले से तय्यार किया,

لَنَا‌ ۚ فَبِئۡسَ الۡقَرَارُ‏ ﴿۶۰﴾ قَالُوۡا رَبَّنَا مَنۡ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا

फिर ये बुरी ठेहेरने की जगह है। वो कहेंगे ऐ हमारे रब! जिस ने भी इस को हमारे लिए पेहले से तय्यार किया हो,

فَزِدۡهُ عَذَابًا ضِعۡفًا فِى النَّارِ‏ ﴿۶۱﴾ وَقَالُوۡا مَا لَنَا لَا نَرٰى

तो तू उसे दोज़ख में दुगना अज़ाब दे। और वो कहेंगे के क्या हुवा के हम नहीं

رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمۡ مِّنَ الۡاَشۡرَارِ ؕ‏ ﴿۶۲﴾ اَتَّخَذۡنٰهُمۡ سِخۡرِيًّا

देखते उन मर्दों को जिन को हम बुरा समझते थे? क्या उन को हम ने मज़ाक़ बनाया था

اَمۡ زَاغَتۡ عَنۡهُمُ الۡاَبۡصَارُ‏ ﴿۶۳﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ

या उन से हमारी निगाहें चूक गई हैं? बेशक ये हक़ है, दोज़खियों का

الثلثة

اَهۡلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَا مُنۡذِرٌ ۖ وَّمَا مِنۡ اِلٰهٍ

आपस में झगड़ना। आप फ़रमा दीजिए के मैं तो सिर्फ डराने वाला हूँ। और कोई माबूद नहीं

اِلَّا اللّٰهُ الۡوَاحِدُ الۡقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ

मगर अल्लाह जो यकता है, ग़ालिब है। आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान की चीज़ों का रब है,

وَمَا بَيۡنَهُمَا الۡعَزِيۡزُ الۡغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلۡ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيۡمٌ ﴿٦٧﴾ اَنۡتُمۡ عَنۡهُ

ज़बर्दस्त है, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है। आप फरमा दीजिए के ये अज़ीम खबर है। जिस से तुम

مُعۡرِضُوۡنَ ﴿٦٨﴾ مَا كَانَ لِىَ مِنۡ عِلۡمٍۢ بِالۡمَلَاِ الۡاَعۡلٰٓى

ऐराज़ कर रहे हो। मुझे मलअे आला का इल्म नहीं था

اِذۡ يَخۡتَصِمُوۡنَ ﴿٦٩﴾ اِنۡ يُّوۡحٰۤى اِلَىَّ اِلَّاۤ اَنَّمَاۤ اَنَا نَذِيۡرٌ

जब वो झगड़ रहे थे। मेरी तरफ तो सिर्फ वही किया जा रहा है के मैं साफ साफ डराने

مُّبِيۡنٌ ﴿٧٠﴾ اِذۡ قَالَ رَبُّكَ لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىۡ خَالِقٌۢ بَشَرًا

वाला हूँ। जब आप के रब ने फरिश्तों से फरमाया के यक़ीनन मैं मिट्टी से इन्सान को पैदा करने

مِّنۡ طِيۡنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيۡتُهٗ وَنَفَخۡتُ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِىۡ فَقَعُوۡا

वाला हूँ। फिर जब मैं उस को पूरा बना लूँ और मैं उस मे अपनी रूह फूंक दूँ

لَهٗ سٰجِدِيۡنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الۡمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمۡ اَجۡمَعُوۡنَ ﴿٧٣﴾

तो तुम उस के सामने सज्दे में गिर जाना। फिर सब ही फरिश्तों ने इकट्ठे सज्दा किया।

اِلَّاۤ اِبۡلِيۡسَ ؕ اِسۡتَكۡبَرَ وَكَانَ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰۤاِبۡلِيۡسُ

मगर इबलीस ने। जिस ने तकब्बुर किया और वो काफिरों में से हो गया। अल्लाह ने फरमाया के ऐ इबलीस!

مَا مَنَعَكَ اَنۡ تَسۡجُدَ لِمَا خَلَقۡتُ بِيَدَىَّ ؕ اَسۡتَكۡبَرۡتَ

तुझे किस चीज़ ने रोका इस से के तू सज्दा करे उस को जिस को मैं ने अपने हाथों से बनाया? क्या तू ने बड़ा बनना चाहा

اَمۡ كُنۡتَ مِنَ الۡعَالِيۡنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيۡرٌ مِّنۡهُ ؕ خَلَقۡتَنِىۡ

या तू बुलन्द मर्तबा वालों में से है? इबलीस ने कहा के मैं इस से बेहतर हूँ। तू ने मुझे पैदा किया है

مِنۡ نَّارٍ وَّخَلَقۡتَهٗ مِنۡ طِيۡنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخۡرُجۡ مِنۡهَا فَاِنَّكَ

आग से और तू ने इस को मिट्टी से पैदा किया है। अल्लाह ने फरमाया के तू जन्नत से निकल, यक़ीनन तू

رَجِيۡمٌ ۖ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيۡكَ لَعۡنَتِىۡۤ اِلٰى يَوۡمِ الدِّيۡنِ ﴿٧٨﴾

मरदूद है। और तुझ पर हिसाब के दिन तक मेरी लानत है।

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ

इबलीस ने कहा मेरे रब! फिर तू मुझे मुहलत दे उस दिन तक जिस दिन क़ब्रों से मुर्दे ज़िन्दा किए जाएंगे। अल्लाह ने

مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ

फरमाया के यक़ीनन तू उन में से है जिन्हें मुहलत दी गई। मुक़र्ररा वक़्त के दिन तक। इबलीस ने कहा

فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ

के फिर तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं ज़रूर उन तमाम को गुमराह करूंगा। मगर तेरे बन्दे उन में से जो खालिस

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ ز وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾ لَاَمْلَئَنَّ

किए हुए हैं। अल्लाह ने फरमाया के ये हक़ है। और हक़ ही मैं केहता हूँ। के मैं जहन्नम

جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ

ज़रूर भरूंगा तुझ से और उन तमाम से जो उन में से तेरे पीछे चलेंगे। आप फरमा दीजिए

مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾

मैं तुम से इस पर कोई उजरत नहीं मांगता और मैं तकल्लुफ करने वालों में से नहीं हूँ।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾

ये तो सिर्फ तमाम जहानों के लिए नसीहत है। और एक वक़्त के बाद तुम्हें उस की खबर ज़रूर मालूम होगी।

رُكُوْعَاتُهَا ٨ (٥٩) سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ (٣٩) اٰيَاتُهَا ٧٥

और ८ रूकूअ हैं — सूरह ज़ुमर मक्का में नाज़िल हुई — उस में ७५ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ

इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ से है। यक़ीनन हम ने आप की तरफ

اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿٢﴾

ये किताब हक़ के साथ उतारी है, पस आप अल्लाह की इबादत कीजिए उसी के लिए इबादत को खालिस करते हुए।

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ط وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

सुनो! अल्लाह के लिए खालिस इबादत है। और वो जिन्हों ने अल्लाह के सिवा हिमायती

مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ م مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ط

बना लिए हैं, (केहते हैं) हम उन की इबादत नहीं करते मगर इस लिए ताके वो हमें अल्लाह के कुछ क़रीब कर दें।

إِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۚ

यक़ीनन अल्लाह उन के दरमियान फैसला करेगा जिस में वो इखतिलाफ कर रहे हैं।

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝٣ لَوْ اَرَادَ

यक़ीनन अल्लाह उस को हिदायत नहीं देता जो झूठा है, बहोत ज़्यादा नाशुकरी करने वाला है। अगर अल्लाह

اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ

औलाद बनाना चाहता तो ज़रूर अपनी मखलूक़ में से मुन्तखब करता जिसे चाहता।

سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

अल्लाह औलाद से पाक है। यक़ीनन वो यकता है, ग़ालिब है। उस ने आसमान और ज़मीन

وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ

हिक्मत से पैदा किए। वो रात को दिन पर लपेटता है और दिन

النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ

को रात पर लपेटता है और उस ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है। सब के सब

يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝٥ خَلَقَكُمْ

वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए चलते रहेंगे। सुनो! वो ज़बर्दस्त है, बहोत ज़्यादा बख्शने वाला है। उस ने

مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ

तुम्हें एक जान से पैदा किया, फिर उसी जान से उस की बीवी को बनाया, और उस ने

لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ

तुम्हारे लिए चौपाओं में से आठ जोड़े बनाए। वो तुम्हें पैदा करता है तुम्हारी माओं के

اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ

पेट में एक शक्ल के बाद दूसरी शक्ल में, तीन तारीकियों में।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ

यही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसी के लिए सल्तनत है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं।

فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۫

फिर तुम कहाँ फेरे जा रहे हो? अगर तुम कुफ्र करोगे तो यक़ीनन अल्लाह तुम से बेनियाज़ है। और अल्लाह अपने

وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ

बन्दों के लिए कुफ्र पसन्द नहीं करता। और अगर तुम शुक्र अदा करो तो उस को तुम्हारे लिए वो पसन्द करता है।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ؕ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ
और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर अपने रब की तरफ

مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ
तुम्हें लौटना है, फिर वो तुम्हें खबर देगा उन कामों की जो तुम करते थे। बेशक वो

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝۷ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ
दिलों का हाल खूब जानने वाला है। और जब इन्सान को ज़रर पहोंचता है

دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ
तो वो अपने रब को पुकारता है उसी की तरफ तौबा करते हुए, फिर जब अल्लाह उसे अपनी नेअमत अता करता है

نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ
तो जिस काम के लिए पेहले उस को पुकारता था उसे भूल जाता है, और अल्लाह के लिए शरीक ठेहराने

اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ
लगता है ताके वो अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे। आप फरमा दीजिए के तू मज़ा उड़ा ले अपने कुफ्र के साथ

قَلِيْلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝۸ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ
थोड़ा सा। यक़ीनन तू दोज़खियों में से है। भला वो शख्स जो इबादत करने वाला है

اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا
रात के औक़ात में सज्दे में और क़याम में, आखिरत से डरता है और अपने रब की रहमत का

رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ
उम्मीदवार है? (ये शुक्रगुज़ार अच्छा या नाशुकरा?) आप फरमा दीजिए क्या वो लोग जो इल्म रखते हैं और जो इल्म

وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝۹ ع ۱۵
नहीं रखते दोनों बराबर हो सकते हैं? सिर्फ अक़्ल वाले ही नसीहत हासिल करते हैं।

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ
आप फरमा दीजिए ऐ मेरे वो बन्दो जो ईमान लाए हो! तुम अपने रब से डरो। इस दुन्या

اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ
में जिन्हों ने नेकी की उन के लिए अच्छा बदला है। और अल्लाह की ज़मीन

وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۱۰
वसीअ है। सब्र करने वालों को उन का सवाब गिने बग़ैर पूरा पूरा (अस्ल और कई गुना ज़ाइद) दिया जाएगा।

قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ
आप फरमा दीजिए के मुझे हुक्म है के मैं अल्लाह की इबादत करूँ उसी के लिए इबादत को खालिस

الدِّیْنَ ﴿۱۱﴾ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲﴾
करते हुए। और मुझे हुक्म है के मानने वालों में से सब से पेहला मानने वाला बनूँ।

قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ
आप फरमा दीजिए अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ, तो मैं डरता हूँ भारी दिन के

عَظِیْمٍ ﴿۱۳﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِیْنِیْ ﴿۱۴﴾
अज़ाब से। आप फरमा दीजिए के मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए इबादत को खालिस रखते हुए।

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ
अब तुम अल्लाह को छोड़ कर जिस की चाहो इबादत करो। आप फरमा दीजिए यक़ीनन खसारा उठाने वाले वो हैं

الَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ ؕ
जिन्हों ने अपनी जानों और अपने घर वालों को खसारे में डाला क़यामत के दिन।

اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ
सुनो! यही खुला खसारा है। उन के लिए उन के ऊपर से

ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ
आग के सायबान होंगे, और उन के नीचे से भी आग के सायबान होंगे। इस से अल्लाह

اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِیْنَ
अपने बन्दों को डराते हैं। ऐ मेरे बन्दो! तुम मुझ से डरो। और वो लोग जो

اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ یَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْۤا
शैतान से (यानी) उस की परसतिश से दूर रेहते हैं और अल्लाह की तरफ मुतवज्जेह

اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰی ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿۱۷﴾ الَّذِیْنَ
रेहते हैं उन के लिए बशारत है। तो आप बशारत सुना दीजिए, मेरे उन बन्दों को

یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ
जो इस कलाम को सुनते हैं, फिर सब से अच्छे कलाम की पैरवी करते हैं। उन को

الَّذِیْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۸﴾
अल्लाह ने हिदायत दी है और यही अक़्ल वाले हैं।

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ

क्या फिर वो शख्स जिस पर अज़ाब का कलिमा साबित हो गया, क्या फिर आप बचा सकते हैं

مَنْ فِي النَّارِ ۚ﴿۱۹﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ

उसे जो आग में है? लेकिन वो जो अपने रब से डरते हैं, उन के लिए ऊपर वाली मन्ज़िलें होंगी

مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۬ؕ

जिन के ऊपर भी मन्ज़िलें बनी हुई हैं। उन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी।

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿۲۰﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ

अल्लाह का वादा है। अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करेंगे। क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह ने

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْاَرْضِ

आसमान से पानी उतारा, फिर उसे ज़मीन में चशमों में चलाया,

ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ

फिर वो उस के ज़रिए खेती निकालता है जिस के रंग मुखतलिफ होते हैं, फिर वो बिल्कुल खुश्क हो जाती है, फिर तुम उसे

مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى

पीला देखते हो, फिर अल्लाह उसे कूड़ा करकट बना देते हैं। यक़ीनन उस में नसीहत है

لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ

अक़्ल वालों के लिए। क्या फिर जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया,

فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ

फिर वो अपने रब की तरफ से नूर पर है। फिर हलाकत है उन के लिए जिन के

مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۲﴾ اَللّٰهُ نَزَّلَ

दिल अल्लाह की याद से सख्त हैं। ये लोग खुली गुमराही में हैं। अल्लाह ने बातों में से सब से अच्छी बात

اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖۗ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ

(यानी) किताब को उतारा है, जिस के मज़ामीन एक दूसरे के मुशाबेह हैं जो बार बार दोहराए गए हैं। जिस से अपने

جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ

रब से डरने वालों के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर उन की खालें और उन

وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ

के दिल अल्लाह की याद के लिए नर्म हो जाते हैं। ये अल्लाह की हिदायत है, उस से अल्लाह हिदायत देता है

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝۲۳

जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

क्या फिर वो शख़्स जो क़यामत के दिन अपने चेहरे के ज़रिए बदतरीन अज़ाब से बचेगा। (क्या गुमराह व मुत्तक़ी बराबर?)

وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝۲۴ كَذَّبَ

और ज़ालिमों से कहा जाएगा के तुम चखो उन आमाल को जो तुम करते थे। उन लोगों

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ

ने झुठलाया जो उन से पेहले थे, फिर उन के पास अज़ाब आया जहाँ से

لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۲۵ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

उन को गुमान भी नहीं था। फिर अल्लाह ने उन्हें रुस्वाई का अज़ाब दुन्यवी ज़िन्दगी में चखा दिया।

وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝۲۶ وَلَقَدْ

وقف لازم

और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब तो सब से बड़ा है। काश के उन्हें इल्म होता। यक़ीनन

ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ

हम ने इन्सानों के लिए इस कुरआन में हर मिसाल बयान की,

لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝۲۷ ۚ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ

शायद वो नसीहत हासिल करें। उस को अरबी वाला कुरआन (बना कर उतारा), जो

ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝۲۸ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا

कजी वाला नहीं है ताके वो डरें। अल्लाह ने मिसाल बयान की के एक आदमी है

فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ

जिस में कई आपस में झगड़ने वाले शरीक हैं और एक शख़्स है जो सालिम एक ही शख़्स का है।

هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

क्या दोनों मिसाल के ऐतेबार से बराबर हो सकते हैं? तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं। बल्के उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۲۹ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ۝۳۰ ۫

जानते नहीं। यक़ीनन आप को भी मरना है और उन्हें भी मरना है।

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ۝۳۱ ؑ

ع ۳ / ۱۷

फिर क़यामत के दिन अपने रब के सामने तुम झगड़ोगे।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ

फिर उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और सच्चाई को झुठलाए

اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۞ وَالَّذِىْ

जब वो उस के पास पहोंची? क्या जहन्नम में काफिरों के लिए ठिकाना नहीं है? और जो

جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۞

सच को ले कर आया और उस की तस्दीक़ की तो वही लोग मुत्तक़ी हैं।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ۞

उन के लिए वो नेअमतें होंगी जो वो चाहेंगे उन के रब के पास। ये नेकी करने वालों का बदला है।

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِىْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ

ताके अल्लाह उन से उन के बुरे आमाल दूर कर दे और उन को अच्छे

بِاَحْسَنِ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۞ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ

आमाल का सवाब दे। क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफी नहीं हैं? और ये आप को डराते

وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ

हैं उन माबूदों से जो अल्लाह के अलावा हैं। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिए कोई हिदायत

مِنْ هَادٍ ۞ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ

देने वाला नहीं। और जिस को अल्लाह हिदायत दे उस के लिए कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या

اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِى انْتِقَامٍ ۞ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ

अल्लाह ज़बर्दस्त, इन्तिकाम लेने वाला नहीं है? और अगर आप उन से पूछेंगे के किस ने आसमानों और ज़मीन

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ

को पैदा किया, तो ज़रूर कहेंगे के अल्लाह ने। आप फरमा दीजिए क्या फिर तुम ने देखा उन को जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِىَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ

अल्लाह के अलावा अगर अल्लाह मुझे ज़रर पहोंचाने का इरादा करे तो क्या वो अल्लाह के ज़रर को दूर

ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِىْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ

कर सकते हैं या अल्लाह मुझ पर महरबानी का इरादा करे तो क्या वो अल्लाह की रहमत को रोक सकते हैं?

قُلْ حَسْبِىَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۞ قُلْ يٰقَوْمِ

आप फरमा दीजिए के अल्लाह मुझे काफी है। और उसी पर तवक्कुल करने वाले तवक्कुल करते हैं। आप फरमा दीजिए ऐ मेरी क़ौम!

اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّیْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ مَنْ

तुम अपनी जगह पर अमल करते रहो, मैं भी अमल कर रहा हूँ। फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा, के किस

یَّاْتِیْهِ عَذَابٌ یُّخْزِیْهِ وَیَحِلُّ عَلَیْهِ عَذَابٌ مُّقِیْمٌ ﴿۴۰﴾ اِنَّاۤ

पर ऐसा अज़ाब आता है जो उसे रुस्वा कर देगा और किस पर दाइमी अज़ाब उतरता है? यक़ीनन हम

اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى

ने आप पर ये किताब उतारी इन्सानों के लिए हक़ के साथ। फिर जो हिदायत पाएगा तो अपनी ज़ात

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا یَضِلُّ عَلَیْهَا ۚ وَمَاۤ اَنْتَ

के नफे के लिए। और जो गुमराह होगा तो उसी पर गुमराही का वबाल पड़ेगा। और आप

عَلَیْهِمْ بِوَكِیْلٍ ﴿۴۱﴾ اَللّٰهُ یَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِیْنَ مَوْتِهَا

उन पर मुसल्लत नहीं हैं। अल्लाह हर जानदार की जान निकालता है उस के मरने के वक़्त,

وَالَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا ۚ فَیُمْسِكُ الَّتِیْ قَضٰى عَلَیْهَا

और उस की भी जो सोने की हालत में नहीं मरा। फिर अल्लाह रोक लेता है उस को जिस पर मौत का फैसला

الْمَوْتَ وَیُرْسِلُ الْاُخْرٰۤى اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ

कर देता है और दूसरी को छोड़ देता है एक वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए। यक़ीनन उस में

لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۴۲﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। क्या उन्हों ने अल्लाह के अलावा सिफारिशी बना

شُفَعَآءَ ؕ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا یَمْلِكُوْنَ شَیْـًٔا وَّلَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۴۳﴾

लिए हैं? आप फरमा दीजिए के क्या अगर्चे वो किसी चीज़ के भी मालिक न हों और कुछ भी अक़्ल न रखते हों?

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِیْعًا ؕ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही के लिए सारी सिफारिश है। उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

ثُمَّ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ

फिर उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और जब तन्हा अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों

قُلُوْبُ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِیْنَ

के दिल सुकड़ जाते हैं जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते। और जब उन का ज़िक्र किया जाता है

مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا هُمْ یَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۵﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ

जो अल्लाह के अलावा हैं तो यकायक वो खुश हो जाते हैं। आप फरमा दीजिए के ऐ अल्लाह! ऐ आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ

के पैदा करने वाले! ऐ मख़फ़ी और ज़ाहिर के जानने वाले! तू ही अपने बन्दों के दरमियान फ़ैसला

عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ

करेगा जिस में वो इखतिलाफ कर रहे थे। और अगर उन ज़ालिमों के

ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ

पास वो सब हो जो ज़मीन में है और उस के जैसा उस के साथ और भी हो (दुगना) तब भी उस को अज़ाब की मुसीबत

مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

से बचने के लिए क़यामत के दिन फिदये में दे देंगे। और उन के सामने ज़ाहिर होगा अल्लाह की तरफ से

مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ

वो जिस का वो गुमान (अन्दाज़ा) भी नहीं करते थे। और उन के सामने अपने अमल की बुराइयाँ ज़ाहिर हो

مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ

जाएंगी और उन को घेर लेगा वो अज़ाब जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। फिर जब इन्सान को ज़रर

الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ز ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ

पहोंचता है तो वो हमें पुकारता है। फिर जब हम उसे अपनी तरफ से नेअमत अता करते हैं तो केहता है

اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

के मुझे तो ये सिर्फ अपने हुनर की वजह से मिली है। बल्के ये आज़माइश है, लेकिन उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى

जानते नहीं। यक़ीनन उस को उन लोगों ने भी कहा जो उन से पेहले थे, फिर उन के कुछ काम

عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ

नहीं आया वो जो वो किया करते थे। फिर उन को उन के आमाले बद की मुसीबतें पहोंचीं।

وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ

और उन में से जो ज़ालिम हैं उन्हें जल्द ही उन की बदअमली की सज़ा मिलेगी।

وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ

और ये (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकेंगे। क्या ये जानते नहीं के अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए

لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ ع

चाहता है और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है।

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا

आप फरमा दीजिए ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने ने अपनी जानों पर ज़्यादती की है! तुम अल्लाह की रहमत से

مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ

मायूस मत हो। यक़ीनन अल्लाह तमाम गुनाह बख्श देगा। यक़ीनन वो बहोत ज़्यादा

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और रूजूअ करो अपने रब की तरफ और उसी के ताबेदार बन कर रहो

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوْٓا

इस से पेहले के तुम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम्हारी नुसरत न की जाए। और सब से बेहतर कलाम की

اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ

पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी तरफ उतारा गया है इस से पेहले के तुम पर

الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ

अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें पता भी न हो। कहीं कोई शख्स केहने लगे

يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ

हाए अफसोस उस कोताही पर जो मैं ने अल्लाह के मुआमले में की और मैं मज़ाक करने वालों

لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ

में रेह गया। या वो यूँ कहे के अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं मुत्तक़ियों

مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ

में से बनता। या यूं कहे जब अज़ाब को देखे के अगर मेरे लिए दुन्या में पलट कर

كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ

जाना हो तो मैं नेकी करने वालों में से बन जाऊँगा। क्यूं नहीं! यक़ीनन तेरे पास मेरी आयतें आईं,

فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾ وَيَوْمَ

फिर तू ने उन को झुठलाया और तू ने तकब्बुर किया और तू काफिरों में से था। और क़यामत

الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ

के दिन आप देखोगे जिन्होंने ने अल्लाह पर झूठ बोला उन के चेहरे सियाह होंगे।

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ

क्या जहन्नम में तकब्बुर करने वालों के लिए ठिकाना नहीं? और अल्लाह नजात देगा उन की

اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۘ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝۶۱ اَللّٰهُ

कामयाबी के साथ उन को जो मुत्तक़ी हैं। उन को मुसीबत नहीं पहोंचेगी और वो ग़मगीन नहीं होंगे। अल्लाह

خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۘ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝۶۲ لَهٗ مَقَالِيْدُ

हर चीज़ को पैदा करने वाला है। और वो हर चीज़ का कारसाज़ है। उसी के पास आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ

और ज़मीन की कुन्जियाँ हैं। और जिन्हों ने अल्लाह की आयात के साथ कुफ्र किया वो खसारे वाले

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝۶۳ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا

हैं। आप फरमा दीजिए क्या अल्लाह के अलावा के मुतअल्लिक़ तुम मुझे हुक्म देते हो के मैं उस की इबादत करूँ,

الْجٰهِلُوْنَ ۝۶۴ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ

ऐ जाहिलो? यक़ीनन आप की तरफ और उन की तरफ जो आप से पेहले थे वही की गई।

لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝۶۵

के अगर तुम शिर्क करोगे तो तुम्हारा अमल हब्त हो जाएगा और तुम खसारा उठाने वालों में से बन जाओगे।

بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝۶۶ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ

बल्के अल्लाह ही की तुम इबादत करो और शुक्रगुज़ारों में से रहो। और उन्हों ने अल्लाह की क़दर नहीं की

حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

जैसा के उस की क़दर करने का हक़ है। और ज़मीन सारी की सारी उस की मुठ्ठी में होगी क़यामत के दिन और

وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ۗ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝۶۷

आसमान लिपटे हुए होंगे उस के दाएं हाथ में। अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों से जिन्हें वो शरीक ठेहराते हैं।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ

और सूर फूंका जाएगा, फिर बेहोश हो जाएंगे वो जो आसमानों में हैं और जो

فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ۗ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ

ज़मीन में हैं मगर जिन को अल्लाह चाहे। फिर दूसरी मरतबा सूर फूंका जाएगा तो फौरन ही वो खड़े हो

قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝۶۸ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ

जाएंगे, देखने लग जाएंगे। और ज़मीन रोशन हो जाएगी अपने रब के नूर से और नामए आमाल

الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ

रख दिया जाएगा, और अम्बिया और शुहदा को लाया जाएगा, और उन के दरमियान हक़ के साथ फैसला

بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَ وُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ

किया जाएगा, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और हर शख़्स को पूरे पूरे मिलेंगे वो अमल जो उस ने किए,

وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

और वो उन के अमल खूब जानता है। और काफिरों को हांका जाएगा जहन्नम की तरफ

اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَ قَالَ

जमाअत दर जमाअत। यहाँ तक के जब वो उस के पास आएंगे तो उस के दरवाज़े खोले जाएंगे और उन से

لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ

उस के मुहाफिज़ फरिशते पूछेंगे क्या तुम्हारे पास तुम में से पैग़म्बर नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की

اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا

आयतें तिलावत करते और तुम्हें डराते थे तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से? वो कहेंगे

بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾

क्यूं नहीं! लेकिन काफिरों पर अज़ाब का कलिमा साबित हो गया।

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ

कहा जाएगा के तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाखिल हो जाओ उस में हमेशा रेहने के लिए। फिर ये

مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ

तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। और जो अपने रब से डरते रहे उन को लाया जाएगा जन्नत की तरफ जमाअत

اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ

दर जमाअत। यहाँ तक के जब वो उस के पास आएंगे इस हाल में के उस के दरवाज़े खुले हुए होंगे, और उस के

خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

मुहाफिज़ फरिशते उन से कहेंगे के तुम पर सलामती हो, तुम अच्छे रहे, फिर तुम उस में हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا

और वो कहेंगे के तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से अपना वादा सच कर दिखाया और उस ने हमें

الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ

इस ज़मीन का वारिस बनाया के हम जन्नत में रहें जहाँ हम चाहें। फिर ये अमल करने वालों का

الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ

कितना अच्छा बदला है! और तुम फरिशतों को देखोगे के सफ बांधे हुए होंगे अर्श के चारों

الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ

तरफ, वो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कर रहे होंगे। और लोगों के दरमियान हक़ के मुताबिक़

بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

फेसला किया जाएगा, और कहा जाएगा तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं।

اٰيَاتُهَا ٨٥ (٤٠) سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ (٦٠) رُكُوْعَاتُهَا ٩

उस में ८५ आयतें हैं सूरह मोमिन मक्का में नाज़िल हुई और ९ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾

हॉ मीम। इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, इल्म वाले अल्लाह की तरफ से है।

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِي

जो गुनाहों को बख्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला, सख्त सज़ा देने वाला, कुदरत

الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ

वाला है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी की तरफ लौटना है। अल्लाह की आयात में झगड़ा

فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ

नहीं करते मगर वो जिन्हों ने कुफ्र किया, इस लिए उन का मुल्कों में आना जाना आप को

فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ

धोके में न डाले। उन से पेहले झुठलाया क़ौमे नूह ने और उन के बाद आने वाले

مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ

गिरोहों ने। और हर उम्मत ने अपने रसूल के साथ इरादा किया के उस को पकड़ लें,

وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۣ

और उन्हों ने बातिल के ज़रिए झगड़ा किया ताके उस के ज़रिए हक़ को मिटा दें, फिर मैं ने उन को पकड़ लिया।

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

फिर मेरी सज़ा कैसी रही? और इसी तरह तेरे रब के कलिमात

عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ

काफिरों पर साबित हो गए के वो दोज़खी हैं। वो फरिशते जो अर्श को उठाए

الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ

हुए हैं और जो उस के इर्द गिर्द हैं वो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और उस पर ईमान रखते

بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْاۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ

हैं और ईमान वालों के लिए मग़फिरत तलब करते है। ऐ हमारे रब! तेरी रहमत और तेरा इल्म

رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ

हर चीज़ पर हावी है, तो तू मग़फिरत कर दे उन की जिन्हों ने तौबा की और तेरा रास्ता अपनाया

وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝٧ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ

और उन को दोज़ख के अज़ाब से तू बचा ले। ऐ हमारे रब! और तू उन को जन्नाते अद्न में दाखिल कर दे

الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ

जिस का तू ने उन से वादा किया है, और उन को भी जो लाइक़ हों उन के बाप दादा और उन की बीवियों

وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٨ۙ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ

और उन की औलाद में से। यक़ीनन तू ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। और तू उन को बुराइयों से बचा ले।

وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ

और जिस को तू बुराइयों से बचा लेगा उस दिन यक़ीनन तू ने उस पर रहम किया। और ये भारी

الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩ۧ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ

कामयाबी है। यक़ीनन वो लोग जो काफिर हैं उन के लिए ऐलान होगा के अल्लाह का गुस्सा

اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ

तुम्हारे अपनी जानों पर गुस्से से ज़्यादा बड़ा है जब के तुम्हें बुलाया जाता था ईमान की तरफ,

فَتَكْفُرُوْنَ ۝١٠ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا

फिर तुम कुफ्र करते थे। वो कहेंगे ऐ हमारे रब! तू ने हमें दो मरतबा मौत दी और तू ने दो मरतबा

اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ

हमें ज़िन्दा किया, अब हम ने अपने गुनाहों का ऐतेराफ कर लिया, फिर क्या निकलने का कोई

مِّنْ سَبِيْلٍ ۝١١ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ

रास्ता है? ये इस वजह से के जब तुम्हारे सामने यकता अल्लाह को पुकारा जाता था तो तुम कुफ्र करते थे।

وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝١٢

और अगर उस के साथ शिर्क किया जाता तो तुम मान लेते थे। फिर हुकूमत बरतर बुलन्द अल्लाह ही के लिए है।

هُوَ الَّذِیْ یُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ وَیُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ
वो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है।

وَمَا یَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ یُّنِیْبُ ۝۱۳ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ
और नसीहत हासिल नहीं करते मगर जो रूजूअ इलल्लाह करते हैं। तो तुम अल्लाह को पुकारो, उसी के लिए

لَهُ الدِّیْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝۱۴ رَفِیْعُ الدَّرَجٰتِ
इबादत खालिस करते हुए अगर्चे काफिर नापसन्द करें। वो दरजात बुलन्द करने वाला है,

ذُو الْعَرْشِ ۚ یُلْقِی الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰی مَنْ یَّشَآءُ
अर्श वाला है। वो रूह डालता है अपने अम्र से जिस पर चाहता है

مِنْ عِبَادِهٖ لِیُنْذِرَ یَوْمَ التَّلَاقِ ۝۱۵ یَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ۬
अपने बन्दों में से ताके मुलाक़ात के दिन से वो डराए। जिस दिन वो बाहर निकले हुए होंगे।

لَا یَخْفٰی عَلَی اللّٰهِ مِنْهُمْ شَیْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْیَوْمَ ؕ
अल्लाह पर उन की कोई चीज़ मखफी नहीं। (अल्लाह फरमाएंगे के) आज किस की सल्तनत है?

لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝۱۶ اَلْیَوْمَ تُجْزٰی كُلُّ نَفْسٍۢ
(जवाब होगा) ग़ालिब यकता अल्लाह ही की है। उस दिन हर शख्स को बदला दिया जाएगा उन आमाल का जो

بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْیَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ۝۱۷
उस ने किए। आज किसी पर जुल्म नहीं होगा। यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

وَاَنْذِرْهُمْ یَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَی الْحَنَاجِرِ
और आप उन को क़यामत के दिन से डराइए जब दिल गले तक आ जाएंगे, ग़म से घुट

كٰظِمِیْنَ ؕ۬ مَا لِلظّٰلِمِیْنَ مِنْ حَمِیْمٍ وَّلَا شَفِیْعٍ
रहे होंगे। ज़ालिमों के लिए न कोई दोस्त होगा और न सिफारिशी

یُّطَاعُ ۝۱۸ یَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْیُنِ وَمَا تُخْفِی الصُّدُوْرُ ۝۱۹
जिस की बात मानी जाए। वो जानता है आँखों की खयानत को और उसे जो सीने छुपाते हैं।

وَاللّٰهُ یَقْضِیْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ
और अल्लाह हक़ के साथ फैसला करेगा। और वो जिन को ये पुकारते हैं अल्लाह के अलावा

لَا یَقْضُوْنَ بِشَیْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝۲۰ ع
वो किसी चीज़ का फैसला नहीं कर सकते। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
क्या वो ज़मीन में चले नहीं के देखते के उन लोगों का अन्जाम

الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً
कैसा हुवा जो उन से पेहले थे? जो उन से भी ज़्यादा कूव्वत वाले

وَّ اٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ
और ज़मीन में निशानात वाले थे, फिर अल्लाह ने उन को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया। और उन को

لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝٢١ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ
अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं था। ये इस वजह से के उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِيٌّ
मोअजिज़ात ले कर आए थे, तो उन्हों ने कुफ्र किया, फिर अल्लाह ने उन को पकड़ लिया। यक़ीनन वो कूव्वत वाला,

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢٢ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا
सख्त सज़ा देने वाला है। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को अपने मोअजिज़ात

وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٢٣ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا
और रोशन दलील दे कर भेजा। फिरऔन और हामान और क़ारून की तरफ, तो उन्हों ने कहा के

سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝٢٤ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا
ये जादूगर है, झूठा है। फिर जब उन के पास वो हक़ ले कर आए हमारी तरफ से तो उन्हों ने कहा

اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ
के क़त्ल कर दो उन के बेटों को जो उन के साथ ईमान लाए हैं और उन की औरतों को ज़िन्दा रेहने दो।

وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ۝٢٥ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
और काफिरों का मक्र तो ज़लालत ही का था। और फिरऔन ने कहा के

ذَرُوْنِىْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّىْٓ اَخَافُ
तुम मुझे छोड़ दो के मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ, और उसे चाहिए के वो अपने रब को पुकारे। मैं डरता हूँ

اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِى الْاَرْضِ الْفَسَادَ ۝٢٦
कहीं वो तुम्हारा मज़हब बदल दे या इस मुल्क में फसाद बरपा करे।

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّىْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ
और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के मैं ने पनाह ली है अपने रब और तुम्हारे रब की हर तकब्बुर करने वाले से

لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ
जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता। और एक मोमिन मर्द ने कहा

مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا
आले फिरऔन में से जो अपना ईमान छुपा रहा था, क्या तुम क़त्ल करते हो एक शख्स को इस बिना पर के

اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ
वो केहता है के मेरा रब अल्लाह है, हालांके वो तुम्हारे पास रोशन मोअजिज़ात तुम्हारे रब की तरफ से ले कर आया है?

وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا
और अगर वो झूठा है तो उसी पर उस के झूठ का वबाल पड़ेगा। और अगर वो सच्चा है तो तुम्हें

يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ
उस अज़ाब का कुछ हिस्सा पहोंचेगा जिस से वो तुम्हें डरा रहा है। यक़ीनन अल्लाह उस को हिदायत नहीं देते जो

هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ
हद से बढ़ने वाला, झूठा है। ऐ मेरी क़ौम! तुम्हारे लिए आज सल्तनत है,

ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ
तुम इस मुल्क में ग़ालिब हो। फिर कौन हमारी नुसरत करेगा अल्लाह के अज़ाब से

اِنْ جَآءَنَا قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى
अगर हमारे पास अज़ाब आ जाए? फिरऔन ने कहा के मैं तुम्हें नहीं दिखाता मगर वही जो मैं देख रहा हूँ,

وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ
और मैं तुम्हारी रहनुमाई करता हूँ भलाई ही के रास्ते की तरफ। और उस शख्स ने कहा जो ईमान लाया था के

اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَاْبِ
ऐ मेरी क़ौम! मुझे डर है के तुम पर वैसा ही दिन न आ जाए जैसा बहोत से गिरोहों पर आ चुका है। क़ौमे नूह और

قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ
क़ौमे आद और क़ौमे समूद और उन के बाद वालों के जैसे हाल का।

وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ
और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म का इरादा भी नहीं करते। और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर एक दूसरे को पुकारने के दिन

يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
का खौफ करता हूँ। जिस दिन तुम पुश्त फेर कर भागोगे। तुम्हारे लिए अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं

مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۳﴾

होगा। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ

और तहक़ीक़ के तुम्हारे पास यूसुफ (अलैहिस्सलाम) इस से पेहले रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर तुम बराबर शक में

فِىْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۭ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ

रहे उस से जो तुम्हारे पास वो ले कर आए। यहाँ तक के जब वो वफात पा गए, तो तुम ने कहा

لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ

अल्लाह इस के बाद किसी पैग़म्बर को हरगिज़ नहीं भेजेगा। इसी तरह अल्लाह गुमराह करता है

مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ﴿۳۴﴾ ۚۖ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ

उस को जो हद से बढ़ने वाला, शक में पड़ा होता है। उन लोगों को जो झगड़ा करते हैं

فِىْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۭ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ

अल्लाह की आयात में किसी दलील के बग़ैर जो उन के पास आई हो। ये झगड़ा अल्लाह और ईमान वालों के नज़दीक

وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ

बहोत ही गुस्सा दिलाने वाली चीज़ है। इस तरह अल्लाह हर तकब्बुर करने वाले ज़ालिम के दिल पर मुहर

مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿۳۵﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِىْ

लगा देते हैं। और फिरऔन बोला के ऐ हामान! तू मेरे लिए एक ऊँची

صَرْحًا لَّعَلِّىْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿۳۶﴾ ۙ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ

इमारत तामीर कर ताके मैं उन रास्तों तक पहोंचूँ। आसमान के रास्तों तक,

فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّىْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ وَكَذٰلِكَ

फिर मैं मूसा के रब को झांक कर देखूँ, और यक़ीनन मैं उसे झूठा गुमान करता हूँ। और इसी तरह

زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۭ

फिरऔन के लिए उस की बदअमली मुज़य्यन की गई और उसे रास्ते से रोका गया।

وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِىْ تَبَابٍ ﴿۳۷﴾ ۧ وَقَالَ الَّذِىْٓ اٰمَنَ

और फिरऔन का मक्र नहीं था मगर तबाही का। और उस शख़्स ने कहा जो ईमान लाया था

يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿۳۸﴾ ۚ يٰقَوْمِ اِنَّمَا

ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरा इत्तिबा करो, मैं तुम्हें नेकी के रास्ते की रहनुमाई करूँगा। ऐ मेरी क़ौम! ये दुन्यवी

هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ز وَّ اِنَّ الْاٰخِرَةَ هِىَ دَارُ

ज़िन्दगी तो सिर्फ थोड़ा सा नफा उठाना है। और यक़ीनन आखिरत वो हमेशा रेहने का

الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰى اِلَّا مِثْلَهَا ج

घर है। जो बुरे अमल करेगा तो उसे बदला नहीं दिया जाएगा मगर उसी के बक़दर।

وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ

और जो नेक अमल करे, मर्दों में से हो या औरतों में से बशर्तेके वो मोमिन हो,

فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ

तो वो लोग जन्नत में दाखिल होंगे और उन को उस में बेहिसाब रोज़ी दी

حِسَابٍ ﴿٤٠﴾ وَيٰقَوْمِ مَا لِىْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى

जाएगी। और ऐ मेरी क़ौम! मुझे क्या हुवा के मैं तुम्हें बुला रहा हूँ नजात

النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِىْٓ اِلَى النَّارِ ط ﴿٤١﴾ تَدْعُوْنَنِىْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ

की तरफ और तुम मुझे बुला रहे हो आग की तरफ। तुम मुझे बुलाते हो ताके मैं अल्लाह के साथ कुफ्र करूँ

وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِىْ بِهٖ عِلْمٌ ز وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ

और मैं उस के साथ शरीक ठेहराऊँ ऐसी चीज़ जिस की मेरे पास कोई दलील नहीं। और मैं तुम्हें बुला रहा हूँ

اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِىْٓ اِلَيْهِ

ज़बर्दस्त, बहोत ज़्यादा बख्शने वाले अल्लाह की तरफ। यक़ीनी बात है के तुम मुझे जिस की तरफ बुलाते हो

لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِى الدُّنْيَا وَلَا فِى الْاٰخِرَةِ

उस की तरफ दावत नहीं दी जा सकती दुन्या में और न आखिरत में,

وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

और ये के हम सब को लौटना है अल्लाह की तरफ और ये के हद से आगे बढ़ने वाले ही दोज़खी हैं।

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ط وَاُفَوِّضُ اَمْرِىْٓ

फिर अनक़रीब तुम याद करोगे उस को जो मैं तुम से केह रहा हूँ। और मैं अपना मुआमला अल्लाह के

اِلَى اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ

सुपुर्द करता हूँ। यक़ीनन अल्लाह बन्दों को खूब देख रहे हैं। फिर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को बचा लिया

مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾

उन की बुरी तदबीरों से और आले फिरऔन को बुरे अज़ाब ने घेर लिया।

النصف

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّ عَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ

आग पर उन्हें पेश किया जाता है सुबह व शाम। और जिस दिन क़यामत

السَّاعَةُ ۗ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

क़ाइम होगी, (कहा जाएगा) आले फिरऔन को सख्ततरीन अज़ाब में दाखिल कर दो।

وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ

और जब वो आग में झगड़ रहे होंगे, फिर कमज़ोर लोग कहेंगे बड़े बन कर

اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ

रेहने वालों से के यक़ीनन हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे, तो क्या तुम इस

عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا

आग का कुछ हिस्सा हम से हटा दोगे? तो कहेंगे जो बड़े बन कर रहे के हम

كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ

सब उसी आग में हैं। यक़ीनन अल्लाह ने बन्दों के दरमियान फैसला कर दिया है। और वो

الَّذِيْنَ فِى النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ

लोग जो दोज़ख में होंगे जहन्नम के फरिशतों से कहेंगे के तुम अपने रब से मांगो के एक दिन तो

عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ

अज़ाब हम से कुछ हल्का कर दे। वो कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर रोशन

رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ

मोअजिज़ात ले कर नहीं आए थे? वो कहेंगे क्यूं नहीं। वो फरिशते कहेंगे फिर तुम पुकारते रहो।

وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾ اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا

और काफिरों की दुआ महज़ बेअसर है। हम मदद करते हैं अपने पैग़म्बरों की

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿٥١﴾

और उन की जो ईमान लाए, दुन्यवी ज़िन्दगी में भी और उस दिन भी जिस दिन गवाह खड़े होंगे।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ

जिस दिन ज़ालिमों को उन की माज़िरत नफा नहीं देगी और उन के लिए लानत है

وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى

और उन के लिए बुरा घर है। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को हिदायत दी

وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ۝٥٣ هُدًى

और बनी इस्राईल को किताब दी। जो हिदायत है

وَّ ذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝٥٤ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ

और नसीहत है अक़्ल वालों के लिए। इस लिए आप सब्र कीजिए, यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है

وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ

और अपने गुनाहों के लिए इस्तिग़फार करते रहिए और अपने रब की हम्द के साथ सुबह व शाम

وَ الْاِبْكَارِ ۝٥٥ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ

तस्बीह कीजिए। जो लोग अल्लाह की आयात में झगड़ा करते हैं किसी दलील

سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ

के बग़ैर जो उन के पास आई हो, उन के सीनों में सिवाए तकब्बुर के कुछ भी नहीं है, जिस को वो पहोंचने

بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝٥٦

वाले नहीं। इस लिए आप अल्लाह की पनाह तलब कीजिए। यक़ीनन वो सुनने वाला, देखने वाला है।

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ

अलबत्ता आसमानों और ज़मीन का पैदा करना ये ज़्यादा बड़ा है इन्सानों के पैदा करने से,

وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٧ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى

लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। और अन्धा और देखने वाला बराबर नहीं

وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ۭ

हो सकते। और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे वो और बदकार बराबर नहीं हो सकते।

قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝٥٨ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ

बहोत कम तुम नसीहत हासिल करते हो। क़यामत ज़रूर आने वाली ही है

لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٩

जिस में कोई शक नहीं, लेकिन लोगों में से अक्सर ईमान नहीं लाते।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ

और तेरे रब ने कहा के तुम मुझ से मांगो, मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूँगा। जो

يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝٦٠

मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं, अनक़रीब वो जहन्नम में ज़लील हो कर दाखिल होंगे।

اَللّٰهُ الَّذِىۡ جَعَلَ لَـكُمُ الَّيۡلَ لِتَسۡكُنُوۡا فِيۡهِ وَالنَّهَارَ
अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए रात बनाई ताके तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन

مُبۡصِرًا‌ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوۡ فَضۡلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ
रोशन बनाया। यक़ीनन अल्लाह इन्सानों पर फ़ज़्ल वाला है, लेकिन अक्सर

النَّاسِ لَا يَشۡكُرُوۡنَ ﴿۶۱﴾ ذٰ لِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمۡ خَالِقُ كُلِّ
लोग शुक्र अदा नहीं करते। वही अल्लाह तुम्हारा रब है, जो हर चीज़ का पैदा करने

شَىۡءٍ‌ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ‌ ۚ فَاَنّٰى تُؤۡفَكُوۡنَ ﴿۶۲﴾ كَذٰلِكَ
वाला है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम कहाँ लौटाए जा रहे हो? इसी तरह

وقف لازم

يُؤۡفَكُ الَّذِيۡنَ كَانُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجۡحَدُوۡنَ ﴿۶۳﴾ اَللّٰهُ
लौटाया गया उन लोगों को भी जो अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे। अल्लाह

الَّذِىۡ جَعَلَ لَـكُمُ الۡاَرۡضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً
ही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठेहेरने की जगह और आसमान को छत बनाया

وَّ صَوَّرَكُمۡ فَاَحۡسَنَ صُوَرَكُمۡ وَرَزَقَكُمۡ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ‌ ؕ
और तुम्हारी सूरतें बनाईं, फिर तुम्हारी सूरतें बहोत अच्छी बनाईं और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं।

ذٰ لِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمۡ ‌ۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۶۴﴾ هُوَ
यही अल्लाह तुम्हारा रब है। फिर अल्लाह बाबरकत है जो तमाम जहानों का रब है। वही

الۡحَىُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادۡعُوۡهُ مُخۡلِصِيۡنَ لَهُ الدِّيۡنَ‌ ؕ
ज़िन्दा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम उसी को पुकारो उसी के लिए इबादत को खालिस करते हुए।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۶۵﴾ قُلۡ اِنِّىۡ نُهِيۡتُ اَنۡ اَعۡبُدَ
तमाम तारीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए हैं। आप फरमा दीजिए के मुझे इस से मना किया गया है के मैं इबादत करूं

الَّذِيۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِىَ الۡبَيِّنٰتُ
उन की जिन को तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा जब के मेरे पास रोशन आयतें पहोंचीं मेरे रब की तरफ से।

مِنۡ رَّبِّىۡ وَاُمِرۡتُ اَنۡ اُسۡلِمَ لِرَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۶۶﴾ هُوَ
और मुझे हुक्म है के मैं रब्बुल आलमीन का फरमांबरदार रहूँ। वही

الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ نُّطۡفَةٍ ثُمَّ مِنۡ
अल्लाह है जिस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर नुत्फे से, फिर जमे हुए खून

عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ

से, फिर तुम्हें वो बच्चा बना कर निकालता है, फिर (तुम को ज़िन्दा रखता है) ताके तुम अपनी जवानी को पहोंचो,

ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ

फिर (तुम को और ज़िन्दा रखता है) ताके तुम बूढ़े हो जाओ। और तुम में से बाज़ों को वफात दी जाती है उस से पेहले

وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ

और ताके तुम मुक़र्रर की हुई आखिरी मुद्दत को पहोंचो, और ताके तुम अक़्ल से काम लो। वही

الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ

अल्लाह है जो ज़िन्दा रखता है और मौत देता है। फिर जब वो किसी मुआमले का फैसला करता है, तो सिर्फ उस से केहता है

لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ

के हो जा, तो वो हो जाता है। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों को जो अल्लाह की

فِىْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

आयात में झगड़ा करते हैं? वो कहाँ फिरे जा रहे हैं? जिन्हों ने किताब को

بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾

और उस को भी झुठलाया जिस को दे कर हम ने अपने पैग़म्बरों को भेजा। फिर अनक़रीब उन्हें मालूम हो जाएगा।

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾

जब के तौक़ और ज़न्जीरें उन की गर्दनों में होंगी। उन को गर्म पानी

فِى الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِى النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيْلَ

में घसीटा जाएगा। फिर आग में झौंक दिए जाएंगे। फिर उन से पूछा

لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا

जाएगा के कहाँ हैं वो जिन को अल्लाह के सिवा तुम शरीक ठेहराते थे? वो बोलेंगे के

ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ۭ

वो हम से खो गए, बल्के उस से पेहले किसी चीज़ को हम पुकारते नहीं थे।

كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ

इसी तरह अल्लाह काफिरों को गुमराह करेंगे। ये सज़ा इस वजह से है के

تَفْرَحُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ

ज़मीन में नाहक़ तुम इतराते थे, और इस लिए के तुम

تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ

अकड़ते थे। जहन्नम के दरवाज़ों में तुम दाखिल हो जाओ, उस में हमेशा

فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ

रेहने के लिए। ये तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। इस लिए आप सब्र कीजिए,

اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ

यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है। फिर अगर आप को हम दिखा दें उस अज़ाब का कुछ हिस्सा जिस से हम उन्हें

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَلَقَدْ

डरा रहे हैं या हम आप को वफात दे दें, तब भी वो हमारी तरफ लौटाए जाएंगे। और

اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا

हम ने आप से पेहले भी पैग़म्बर भेजे, उन में से बाज़ के क़िस्से हम ने आप के सामने बयान

عَلَيْكَ وَ مِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ

किए हैं और उन में से बाज़ वो हैं जिन के क़िस्से हम ने आप के सामने बयान नहीं किए। और किसी

لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ

पैग़म्बर की ये ताक़त नहीं थी के वो कोई मोअजिज़ा ले आए मगर अल्लाह की इजाज़त से। फिर जब अल्लाह

اَمْرُ اللّٰهِ قُضِىَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾ ع

का हुक्म आया तो हक़ के साथ फैसला कर दिया गया और वहाँ पर एहले बातिल खसारे में रहे।

اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا

अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए ताके तुम उन में से बाज़ पर सवारी करो

وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا

और उन में से बाज़ को तुम खाते हो। और तुम्हारे लिए उन में और भी मनाफेअ हैं और ताके

عَلَيْهَا حَاجَةً فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَ عَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ

उन पर सवार हो कर तुम अपने दिलों की हाजत तक पहोंच जाओ और उन चौपाओं पर और कशतियों पर तुम्हें सवार

تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَىَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ

कराया जाता है। और अल्लाह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है। फिर अल्लाह की निशानियों में से किस

تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا

किस निशानी का तुम इन्कार करोगे? क्या वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के देखते

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَكْثَرَ

के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जो उन से पेहले थे? जो तादाद में उन से ज़्यादा थे

مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى

और कूव्वत में उन से मज़बूत थे और उन्हों ने ज़मीन में निशानात भी सब से ज़्यादा (छोड़े), फिर

عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ

भी उन के कुछ काम नहीं आई उन की कमाई। फिर जब उन के पास उन के

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए तो वो इतराने लगे उस इल्म पर जो उन के पास था,

وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۸۳﴾ فَلَمَّا رَاَوْا

और उन को घेर लिया उस अज़ाब ने जिस का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे। फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब

بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ

देखा तो बोल उठे के हम यकता अल्लाह पर ईमान ले आए, और हम ने कुफ़्र किया उस के साथ जिस को हम शरीक

مُشْرِكِيْنَ ﴿۸۴﴾ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا

ठेहराते थे। तो उन को उन का ईमान लाना नाफेअ नहीं हुवा जब उन्हों ने हमारा

بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ

अज़ाब देख लिया। यही अल्लाह की सुन्नत है जो उस के बन्दों में पेहले रही है।

وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۵﴾

और उस जगह काफिर खसारे में रहे।

آيَاتُهَا ۵۴ (۴۱) سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ (۶۱) رُكُوْعَاتُهَا ۶

उस में ५४ आयतें हैं सूरह सजदा मक्का में नाज़िल हुई और ६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿۱﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿۲﴾ كِتٰبٌ

हॉ मीम। इस का उतारा जाना बड़े महरबान, निहायत रहम वाले अल्लाह की तरफ से है। ये किताब है

فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۳﴾

जिस की आयतें तफसील से बयान की गई हैं जो अरबी ज़बान वाला कुरआन है ऐसी क़ौम के लिए जो इल्म रखती है।

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝٤

बशारत सुनाने वाली और डराने वाली है। फिर उन में से अक्सर ने ऐराज़ किया, फिर वो नहीं सुनते।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ

और केहते हैं के हमारे दिल पर्दे में हैं उस से जिस की तरफ तुम हमें बुलाते हो,

وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ

और हमारे कानों में डाट है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान हिजाब है,

فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝٥ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

तो तुम अपना काम करो, हम अपना काम करेंगे। आप फरमा दीजिए के मैं भी बशर हूँ जैसे तुम,

يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا

मेरी तरफ वही की जाती है के तुम्हारा माबूद यकता माबूद है, तो उसी की तरफ

اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝٦

मुतवज्जेह रहो और उसी से मग़फिरत मांगो। और मुशरिकीन के लिए हलाकत है।

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ

जो ज़कात नहीं देते और आखिरत के भी

كٰفِرُوْنَ ۝٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

मुन्किर हैं। यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे

لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٨ قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ

उन के लिए सवाब है जो कभी खत्म न होगा। आप फरमा दीजिए क्या तुम कुफ्र करते हो

بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ

उस अल्लाह के साथ जिस ने ज़मीन पैदा की दो दिन में और उस के लिए

لَهٗٓ اَنْدَادًا ۗ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٩ وَجَعَلَ فِيْهَا

तुम शरीक बनाते हो। वो तमाम जहानों का रब है। और उसी ने ज़मीन में

رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ

उस के ऊपर से पहाड़ रख दिए और उस के अन्दर बरकतें रखी हैं और ज़मीन में ज़मीन वालों

اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۗ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝١٠

की खाने की चीज़ें मिक़्दारे मुअय्यन के साथ रख दीं चार दिन में। पूछने वालों का (जवाब) पूरा हुवा।

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

फिर वो आसमान की तरफ मुतवज्जेह हुवा इस हाल में के वो धुवां था, तो उस ने

لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ

आसमान से और ज़मीन से कहा के तुम दोनों आओ खुशी से या मजबूरी से। दोनों ने कहा के

اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿١١﴾ فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ

हम खुशी से आते हैं। फिर अल्लाह ने उन को सात आसमान बनाने का फैसला किया

فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ

दो दिन में, और हर आसमान में उस का हुक्म दे दिया।

وَ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ

और हम ने आसमाने दुन्या को मुज़य्यन किया चिराग़ों से और हिफाज़त के खातिर।

ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا

ये ज़बर्दस्त इल्म वाले अल्लाह की मुतअय्यन की हुई मिक्दार है। फिर अगर वो ऐराज़ करें

فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ

तो आप फरमा दीजिए के मैं तुम्हें डराता हूँ ऐसे अज़ाब से जो क़ौमे आद व क़ौमे समूद के अज़ाब

وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

जैसा होगा। जब उन के पास पैग़म्बर आए उन के सामने से

وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ

और उन के पीछे से के तुम इबादत मत करो मगर अल्लाह ही की। तो बोले के अगर हमारा

رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ

रब चाहता तो वो फरिशतों को उतारता। यक़ीनन हम उस दीन के साथ भी कुफ्र करते हैं जिसे दे कर तुम

كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ

भेजे गए हो। अलबत्ता क़ौमे आद तो उस ने ज़मीन में नाहक़

الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا

तकब्बुर किया, और उन्हों ने कहा के हम से कौन ज़्यादा कूव्वत वाला है? क्या उन्हों ने देखा नहीं

اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَ كَانُوْا

के जिस अल्लाह ने उन्हें पैदा किया है, वो उन से भी ज़्यादा कूव्वत वाला है। और वो

بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ۝۱۵ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا
हमारी आयतों का इन्कार करते थे। फिर हम ने उन पर सर्द तूफानी हवा

فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ
मन्हूस दिनों में भेजी ताके उन्हें दुन्यवी ज़िन्दगी में

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى
ज़िल्लत का अज़ाब हम चखाएं। और आखिरत का अज़ाब तो और ज़्यादा रुस्वाई वाला है

وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ۝۱۶ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا
और उन की नुसरत भी नहीं की जाएगी। और जो क़ौमे समूद थी, तो हम ने उन को रास्ता बतलाया, फिर उन्हों ने

الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ
अन्धा रेहने को हिदायत के मुक़ाबले में पसन्द किया, फिर उन्हें उन के करतूत की वजह से

الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۝۱۷ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ
ज़िल्लत वाले अज़ाब की कड़क ने पकड़ लिया। और हम ने बचा लिया उन को जो

اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ۝۱۸ وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ
ईमान लाए थे और मुत्तकी थे। और जिस दिन अल्लाह के दुशमन दोज़ख की तरफ इकट्ठे किए जाएंगे

اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ۝۱۹ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا
फिर उन्हें (जमाअतों में) तक़सीम किया जाएगा। यहाँ तक के जब वो दोज़ख के पास पहोंचेंगे

شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَ اَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ
तो उन के खिलाफ गवाही देंगे उन के कान और उन की आँखें और उन की खालें

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۝۲۰ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ
उन आमाल की जो वो करते थे। और वो अपनी खालों से कहेंगे के तुम ने हमारे खिलाफ गवाही

عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ
क्यूं दी? वो कहेंगी के हम से बुलवाया उस अल्लाह ने जिस ने हर चीज़ को गोयाई दी है

وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ۝۲۱
और उसी ने तुम्हें पेहली मरतबा पैदा किया और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ
और तुम छुपा नहीं सकते थे के तुम्हारे खिलाफ गवाही दें तुम्हारे कान और

اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ
तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें, लेकिन तुम ने गुमान किया था के अल्लाह
لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٢٢ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ
नहीं जानता बहोत से आमाल जो तुम करते हो। और यही तुम्हारा गुमान था जो
ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٢٣
तुम ने अपने रब के साथ रखा जिस ने तुम्हें हलाक कर दिया, फिर तुम खसारा उठाने वालों में से बन गए।
فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا
फिर अगर वो सब्र करें तो दोज़ख उन का ठिकाना है। और अगर वो मुआफी मांगना चाहें
فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ۝٢٤ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ
तो उन से मुआफी क़बूल नहीं की जाएगी। और हम ने उन के लिए क़रीन मुतअय्यन किए हैं,
فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
फिर उन्हों ने उन के लिए मुज़य्यन किया है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है,
وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ
और क़ौल साबित हो गया उन पर मअ उन उम्मतों के जो उन से पेहले गुज़र चुकी हैं
مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝٢٥
जिन्नात और इन्सानों की। यक़ीनन वो खसारे वाले हैं।
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ
और काफिरों ने कहा के तुम इस कुरआन की तरफ कान मत लगाओ
وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝٢٦ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ
और उस के बीच में शोर करो, शायद तुम ग़ालिब रहो। फिर उन काफिरों को हम
كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ
ज़रूर सख्त अज़ाब चखाएंगे। और हम उन्हें ज़रूर सज़ा देंगे
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٧ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ
उन के बुरे आमाल की। ये दोज़ख अल्लाह के दुश्मनों की सज़ा है।
لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۗ جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا
उन का उसी में हमेशा का घर है। उस की सज़ा में के वो हमारी आयतों का इन्कार

ع

يَجْحَدُوْنَ ۝٢٨ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا

करते थे। और काफिर कहेंगे ऐ हमारे रब! तू हमें दिखा

الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ

वो जिन्नात और इन्सान जिन्हों ने हमें गुमराह किया के हम उन्हें हमारे पैरों के

اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ۝٢٩ اِنَّ الَّذِيْنَ

नीचे डाल दें ताके वो सब से ज़्यादा नीचे वालों में से हो जाएं। तहक़ीक़ के जिन्हों ने

قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

कहा के हमारा रब अल्लाह है, फिर उसी पर क़ाइम रहे उन पर फरिशते उतरते हैं (केहते हुए के)

اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ

तुम खौफ न करो और ग़म न करो और बशारत सुन लो उस जन्नत की जिस का

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝٣٠ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ

तुम से वादा किया जाता था। हम तुम्हारे साथी हैं दुन्या

الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ

और आखिरत में। और तुम्हारे लिए आखिरत में वो नेअमतें होंगी जो तुम्हारे जी चाहेंगे

اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝٣١ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ

और तुम्हारे लिए उस में वो नेअमतें होंगी जो तुम मांगोगे। बहोत ज़्यादा मग़फिरत करने वाले, निहायत

رَّحِيْمٍ ۝٣٢ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ

रहम वाले अल्लाह की तरफ से मेहमानी है। और उस से ज़्यादा अच्छी बात वाला कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ

وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٣٣ وَلَا تَسْتَوِي

बुलाए और नेक अमल करे और कहे के मैं मुसलमानों में से हूँ। और भलाई

الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۭ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ

और बुराई बराबर नहीं हो सकती। दफा कीजिए उस के ज़रिए जो बेहतर हो,

فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ

तो फौरन वो शख्स के आप के और उस के दरमियान अदावत थी, वो ऐसा हो जाएगा गोया के वो पक्का

حَمِيْمٌ ۝٣٤ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا

दोस्त है। और ये मरतबा सिर्फ सब्र करने वालों ही को दिया जाता है। और

يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ

वही उस को पाते हैं जो बड़े नसीब वाले हैं। और अगर आप को शैतान की तरफ

مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

से कोई वसवसा आए तो अल्लाह की पनाह मांगिए। यक़ीनन वो सुनने वाला,

الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ

इल्म वाला है। और अल्लाह की निशानियों में से रात और दिन हैं और सूरज

وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا

और चाँद हैं। सूरज और चाँद को सज्दा मत करो, और सज्दा करो

لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾

उस अल्लाह को जिस ने उन्हें पैदा किया अगर तुम उसी की इबादत करते हो।

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ

फिर अगर वो तकब्बुर करें, तो यक़ीनन वो फरिशते जो तेरे रब के पास हैं वो उस की तस्बीह करते

لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿٣٨﴾ السجدة وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ

रेहते हैं रात और दिन में और वो उकताते नहीं। और अल्लाह की निशानियों में से

اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا

ये है के तू ज़मीन को खुश्क देखेगा, फिर जब हम उस के ऊपर पानी बरसाते हैं

الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ

तो वो हिलने लगती है और उभर आती है। यक़ीनन वो अल्लाह जिस ने ज़मीन को ज़िन्दा किया वो जरूर मुर्दों को ज़िन्दा

الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

करने वाला है। यक़ीनन वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है। जो

يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ

हमारी आयतों में इल्हाद करते है वो हम पर मख्फी नहीं हैं। क्या फिर वो

يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

जो आग में डाला जाएगा वो बेहतर है या वो जो बेखौफ हो कर क़यामत के दिन आएगा?

اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّ

जो चाहो कर लो, बेशक वो तुम्हारे आमाल को खूब देख रहा है। जिन

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ
लोगों ने इस कुरआन के साथ कुफ़्र किया जब के वो उन के पास आया। और ये तो मुअज़्ज़ज़

عَزِيْزٌ ﴿٤١﴾ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ
किताब है। उस में न उस के आगे से बातिल आ सकता है और न उस के

وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾ مَا يُقَالُ
पीछे से। हिक्मत वाले क़ाबिले तारीफ अल्लाह की तरफ से उतारी गई है। आप से वही

لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ
कहा जाता है जो आप से पेहले पैग़म्बरों से कहा गया। बेशक आप का रब

لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا
मुआफ करने वाला भी है और अलमनाक सज़ा देने वाला भी है। और अगर हम उस को अजमी कुरआन

اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ
बनाते तो ज़रूर ये केहते के उस की आयतें तफ़सील से बयान क्यूं नहीं की गईं? क्या ये (कुरआन) तो अजमी

وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ
और (नबी) अरबी? आप फरमा दीजिए के ये कुरआन ईमान वालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है।

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ
और जो ईमान नहीं लाते उन के कानों में डाट है, और ये कुरआन उन पर

عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾ ع
अन्धापा है। उन को पुकारा जाता है दूर जगह से।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ
हम ने ही मूसा (अलैहिस्सलाम) को किताब दी थी, फिर उस में इखतिलाफ किया गया।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ
और अगर एक कलिमा तेरे रब की तरफ़ से पेहले से न होता तो उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाता। और ये लोग

لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿٤٥﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ
उस की तरफ़ से बहोत बड़े शक में हैं। जिस ने भला काम किया तो अपनी ही ज़ात के लिए।

وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٤٦﴾
और जिस ने बुरा काम किया तो वबाल उसी पर है। और तेरा रब बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करने वाला नहीं।

قرأۃ حفص بتسهيل الهمزة الثانية ١٢

اِلَیۡهِ یُرَدُّ عِلۡمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخۡرُجُ مِنۡ ثَمَرٰتٍ

अल्लाह ही की तरफ क़यामत का इल्म लौटाया जाता है। जो फल भी अपने खौलों से

مِّنۡ اَکۡمَامِهَا وَمَا تَحۡمِلُ مِنۡ اُنۡثٰی وَلَا تَضَعُ

निकलते हैं और जो कोई मादा हामिला होती है और वज़्अे हमल करती है वो सब ही

اِلَّا بِعِلۡمِهٖ ؕ وَیَوۡمَ یُنَادِیۡهِمۡ اَیۡنَ شُرَکَآءِیۡ ۙ قَالُوۡۤا

अल्लाह के इल्म से होता है। और जिस दिन अल्लाह उन को पुकारेगा के कहाँ हैं मेरे शुरका? तो वो कहेंगे

اٰذَنّٰکَ ۙ مَا مِنَّا مِنۡ شَهِیۡدٍ ﴿٤٧﴾ وَضَلَّ عَنۡهُمۡ

हम आप से यही अर्ज़ करते हैं के हम में कोई मुद्दई नहीं। और उन से खो जाएंगे

مَّا کَانُوۡا یَدۡعُوۡنَ مِنۡ قَبۡلُ وَظَنُّوۡا مَا لَهُمۡ

वो जिन को इस से पेहले वो पुकारा करते थे और वो जान लेंगे के उन के लिए कोई बचने की

مِّنۡ مَّحِیۡصٍ ﴿٤٨﴾ لَا یَسۡـَٔمُ الۡاِنۡسَانُ مِنۡ دُعَآءِ الۡخَیۡرِ ۫

राह नहीं है। इन्सान भलाई मांगने से थकता नहीं है।

وَاِنۡ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَیَـُٔوۡسٌ قَنُوۡطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنۡ اَذَقۡنٰهُ

और अगर उस को मुसीबत पहोंचे तो मायूस और नाउम्मीद हो जाता है। और अगर हम उसे चखाएँ

رَحۡمَةً مِّنَّا مِنۡۢ بَعۡدِ ضَرَّآءَ مَسَّتۡهُ لَیَقُوۡلَنَّ هٰذَا

हमारी तरफ से मेहरबानी किसी तकलीफ के बाद जो उस को पहोंची थी, तो ज़रूर कहेगा के ये तो मेरे

لِیۡ ۙ وَمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنۡ رُّجِعۡتُ

लाइक़ है। और मैं क़यामत क़ाइम होने वाली गुमान नहीं करता। और अगर मैं मेरे रब की तरफ लौटाया

اِلٰی رَبِّیۡۤ اِنَّ لِیۡ عِنۡدَهٗ لَلۡحُسۡنٰی ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا

भी गया तो मेरे लिए उस के पास भलाई ही होगी। फिर हम ज़रूर काफिरों को उन के

بِمَا عَمِلُوۡا ۫ وَلَنُذِیۡقَنَّهُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ غَلِیۡظٍ ﴿٥٠﴾

अमल बतलाएंगे। और हम उन्हें सख्त अज़ाब चखाएँगे।

وَاِذَاۤ اَنۡعَمۡنَا عَلَی الۡاِنۡسَانِ اَعۡرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ

और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वो ऐराज़ करता है और अपना पेहलू दूर हटा लेता है।

وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوۡ دُعَآءٍ عَرِیۡضٍ ﴿٥١﴾ قُلۡ

और जब उसे तकलीफ पहोंचती है तो वो लम्बी दुआ करने वाला बन जाता है। आप फरमा दीजिए

اَرَءَیۡتُمۡ اِنۡ کَانَ مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ ثُمَّ کَفَرۡتُمۡ

के भला ये बतलाओ अगर ये कुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो, फिर तुम उस के साथ कुफ्र

بِهٖ مَنۡ اَضَلُّ مِمَّنۡ هُوَ فِیۡ شِقَاقٍۭ بَعِیۡدٍ ﴿۵۲﴾

करो तो उस से ज़्यादा गुमराह कौन है जो दूर वाली गुमराही में है?

سَنُرِیۡهِمۡ اٰیٰتِنَا فِی الۡاٰفَاقِ وَ فِیۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ

अनक़रीब हमारी आयतें हम उन्हें दिखाएंगे अतराफ़े आलम में, और खुद उन की ज़ात में,

حَتّٰی یَتَبَیَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُ الۡحَقُّ ؕ اَوَلَمۡ یَکۡفِ بِرَبِّکَ اَنَّهٗ

ताके उन के सामने वाज़ेह हो जाए के यही हक़ है। क्या आप के रब के लिए ये काफी नहीं है के वो

عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ شَهِیۡدٌ ﴿۵۳﴾ اَلَاۤ اِنَّهُمۡ فِیۡ مِرۡیَةٍ

हर चीज़ पर निगरान है? सुनो! यक़ीनन वो अपने रब की

مِّنۡ لِّقَآءِ رَبِّهِمۡ ؕ اَلَاۤ اِنَّهٗ بِکُلِّ شَیۡءٍ مُّحِیۡطٌ ﴿۵۴﴾

मुलाक़ात की तरफ से शक में हैं। सुनो! यक़ीनन वो हर चीज़ का इहाता किए हुवे है।

رکوعاتها ۵ (۴۲) سُوۡرَةُ الشُّوۡرٰی مَکِّیَّةٌ (۶۲) اٰیَاتُهَا ۵۳

और ५ रुकूअ हैं सूरह शूरा मक्का में नाज़िल हुई उस में ५३ आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿۱﴾ عٓسٓقٓ ﴿۲﴾ کَذٰلِکَ یُوۡحِیۡۤ اِلَیۡکَ

हॉ मीम। ऐ़न सीन क़ाफ़। इसी तरह अल्लाह वही भेजता है आप की तरफ

وَ اِلَی الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِکَ ۙ اللّٰهُ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ﴿۳﴾ لَهٗ

और उन (अम्बिया) की तरफ जो आप से पेहले थे। वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। उस की

مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ وَهُوَ الۡعَلِیُّ

मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में और ज़मीन में हैं। और वो बरतर है,

الۡعَظِیۡمُ ﴿۴﴾ تَکَادُ السَّمٰوٰتُ یَتَفَطَّرۡنَ

बड़ा है। क़रीब है के आसमान फट जाएं

مِنۡ فَوۡقِهِنَّ وَ الۡمَلٰٓئِکَةُ یُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ

उन के ऊपर से और फरिशते तस्बीह पढ़ रहे हैं अपने रब की हम्द के साथ

وَ يَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ اللّٰهَ

और ज़मीन वालों के लिए इस्तिग़फार करते हैं। सुनो! यक़ीनन अल्लाह

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝۵ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا

बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और वो लोग जिन्हों ने अल्लाह के सिवा

مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۫ۖ وَمَاۤ اَنْتَ

हिमायती बना लिए हैं, तो अल्लाह उन की निगरानी कर रहा है। और आप

عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝۶ وَ كَذٰلِكَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ

उन के ज़िम्मेदार नहीं। और हम ने इसी तरह आप पर कुरआने अरबी वही के ज़रिए से

قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا

नज़िल किया है ताके आप डराएं मक्का वालों को और उन को जो उस के इर्द गिर्द हैं,

وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ

और आप डराएं जमा होने के दिन से जिस में कोई शक नहीं। एक जमाअत जन्नत में होगी

وَ فَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝۷ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً

और एक जमाअत दोज़ख में होगी। और अगर अल्लाह चाहता तो उन को एक ही उम्मत

وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ

बना देता, लेकिन अल्लाह अपनी रहमत में दाखिल करता है जिसे चाहता है।

وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝۸

और ज़ालिमों के लिए कोई हिमायती और मददगार नहीं होगा।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ

क्या उन्हों ने अल्लाह के अलावा हिमायती बना लिए हैं? फिर अल्लाह वही कारसाज़ है

وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ز وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۹ ع

और वो मुर्दों को ज़िन्दा करता है। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ

और जिस चीज़ में भी तुम इखतिलाफ करो तो उस का फैसला अल्लाह के सुपुर्द है।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖۗ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝۱۰

यही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैं ने तवक्कुल किया। और उसी की तरफ मैं मुतवज्जेह होता हूँ।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ

वो अल्लाह आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है। उस ने तुम्हारे लिए खुद तुम्हीं

مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ

में से जोड़े बनाए और चौपाओं के जोड़े बनाए।

يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ

वो तज़वीज सें तुम्हारी नस्लें चलाता है। कोई चीज़ उस की मिस्ल नहीं। और वो सुनने वाला,

الْبَصِيْرُ ۝١١ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ

देखने वाला है। उस के पास आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ हैं। वो रोज़ी

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ

कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। यक़ीनन वो हर चीज़ को खूब

عَلِيْمٌ ۝١٢ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ

जानता है। अल्लाह ने तुम लोगों के वास्ते वही दीन मुक़र्रर किया जिस का उस ने हुक्म दिया था नूह (अलैहिस्सलाम)

نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ

को और जिस को हम ने आप के पास वही के ज़रिए भेजा है और जिस का हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) को हुक्म दिया था के इसी दीन को क़ाइम रखना

وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ

और उस में तुम तफरक़ा मत डालना। मुशरिकीन पर भारी है वो जिस की

مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ

तरफ आप उन को बुलाते हैं। अल्लाह अपनी तरफ मुन्तखब करते हैं जिसे चाहते हैं

وَ يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۝١٣ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا

और अपनी तरफ हिदायत देते हैं उसी को जो मुतवज्जेह होता है। और वो अलग अलग फिरक़े नहीं बने

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ

मगर इस के बाद के उन के पास इल्म आया उन की आपस की ज़िद की वजह से।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ

और अगर एक बात तेरे रब की तरफ से पेहले से न हो चुकी होती एक मुक़र्ररा किए हुए आखिरी वक़्त तक की तो उन के

بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ
दरमियान फेसला कर दिया जाता। और वो जो किताब के वारिस बनाए गए

مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۴﴾ فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ
उन के बाद अलबत्ता वो उस की तरफ से बड़े शक में हैं। तो उसी दीन की तरफ आप दावत दीजिए।

وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ
और आप इस्तिक़ामत इखतियार कीजिए जैसा आप को हुक्म दिया गया है। और उन की ख्वाहिशात के पीछे न चलिए। और

اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ
यूँ कहिए के मैं ईमान लाया उस किताब पर जो अल्लाह ने उतारी है। और मुझे हुक्म दिया गया है के मैं तुम्हारे

بَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ ۭ لَنَآ اَعْمَالُنَا
दरमियान इन्साफ करूँ। अल्लाह हमारा और तुम्हारा रब है। हमारे लिए हमारे आमाल हैं

وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۭ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ
और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई बहस नहीं है। अल्लाह

يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾ وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ
हमें इकट्ठा करेगा। और उसी की तरफ लौटना है। और जो हुज्जतबाज़ी करते हैं

فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ
अल्लाह के बारे में इस के बाद के अल्लाह को मान लिया गया, उन की हुज्जत

دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ عَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ
उन के रब के यहाँ बातिल है, और उन पर गज़ब है और उन के लिए

عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۶﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ
सख्त अज़ाब है। अल्लाह ही ने किताब उतारी

بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ۭ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ
हक़ के साथ और मीज़ान को उतारा। और आप को क्या खबर, अजब नहीं के क़यामत

قَرِيْبٌ ﴿۱۷﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ
क़रीब हो। उस को जल्दी तलब कर रहे हैं वो जो क़यामत पर ईमान नहीं रखते।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا
और जो ईमान वाले हैं वो उस से डरते हैं। और समझते हैं के वो

الْحَقُّ ؕ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ
हक़ है। सुनो! यक़ीनन वो जो क़यामत के बारे में झगड़ा कर रहे हैं

لَفِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ۝۱۸ اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ
अलबत्ता वो दूर की गुमराही में हैं। अल्लाह अपने बन्दों पर महरबान है, रोज़ी देता है

مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ۝۱۹ مَنْ كَانَ
जिस को चाहता है। और वो क़ूव्वत वाला, ज़बर्दस्त है। जो आखिरत

يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ
की खेती चाहेगा तो हम उस के लिए उस की खेती में ज़्यादती करेंगे। और जो

كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ
दुन्या की खेती चाहेगा तो हम उस को उस में से कुछ दे देंगे। और उस के लिए

فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝۲۰ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا
आखिरत में कोई हिस्सा नहीं होगा। क्या उन के लिए शुरका हैं जिन्हों ने उन के

لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ
लिए दीन में कोई शरीअत बनाई है वो जिस का अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया? और अगर क़ौले फैसल

الْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ
न हुवा होता तो उन के दरमियान फैसला कर दिया जाता। और यक़ीनन ज़ालिम लोगों के लिए

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۲۱ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ
दर्दनाक अज़ाब है। आप ज़ालिम लोगों को देखोगे के डर रहे होंगे

مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
अपने करतूत से और वो उन पर पड़ कर रहेगा। और जो ईमान लाए और नेक काम

الصّٰلِحٰتِ فِىْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ
करते रहे वो जन्नतों के बाग़ात में होंगे। उन के रब के पास उन के लिए वो नेअमतें

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝۲۲ ذٰلِكَ الَّذِىْ
होंगी जो वो चाहेंगे। ये बड़ा भारी फज़्ल है। उसी की

يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ
अल्लाह अपने बन्दों को खुशखबरी देता है, उन को जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे।

قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ

आप फरमा दीजिए के मैं तुम से उस पर सिवाए रिश्तेदारी की महब्बत के किसी अज्र का सवाल नहीं करता।

وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और जो नेकी करेगा तो हम उस की नेकी में खूबी ज़्यादा कर देंगे। यक़ीनन अल्लाह

غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ

बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, क़दरदान है। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने अल्लाह पर झूठ घड़ा?

فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ

फिर अगर अल्लाह चाहता तो आप के दिल पर मुहर लगा देता। और अल्लाह बातिल को

الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ

मिटाते हैं और हक़ को अपने अहकाम से साबित किया करते हैं। यक़ीनन वो दिलों के हाल को

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ

खूब जानने वाले हैं। और वही अल्लाह अपने बन्दों की तौबा

عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ

क़बूल करता है और गुनाह मुआफ करता है और जानता है वो जो

مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

तुम करते हो। और अल्लाह उन की दुआ क़बूल करता है जो ईमान लाए और नेक काम

الصّٰلِحٰتِ وَ يَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ

करते रहे और उन को अपने फज़्ल से मज़ीद देता है। और काफिरों के

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ

लिए सख्त अज़ाब होगा। और अगर अल्लाह रोज़ी कुशादा कर दे अपने सब बन्दों के लिए

لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ

तो वो ज़मीन में बाग़ी बन जाएं, लेकिन अल्लाह एक मिक़दार से उतारता है जितनी चाहता है।

اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ

यक़ीनन वो अपने बन्दों से बाखबर है, देखने वाला है। और वही अल्लाह है जो बारिश

الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَ يَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ

उतारता है इस के बाद के वो मायूस हो जाते हैं और वो अपनी रहमत फैलाता है। और वो

الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ۝۲۸ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ
क़ाबिले तारीफ कारसाज़ है। और अल्लाह की आयात में से आसमानों और ज़मीन और

وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ
उन जानदारों का पैदा करना है जो उस ने ज़मीन व आसमान में फैलाए हैं। और वो

عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ۝۲۹ وَمَآ اَصَابَكُمْ
उन के इकट्ठा करने पर जब चाहे क़ादिर है। और तुम्हें जो मुसीबत पहोंचे तो वो

ركوع

مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ۝۳۰
तुम्हारे उन आमाल की वजह से है जो तुम्हारे हाथों ने किए और बहोत से गुनाह अल्लाह मुआफ़ कर देते हैं।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا لَكُمْ
और तुम ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते। और तुम्हारे लिए अल्लाह

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝۳۱ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ
के सिवा कोई कारसाज़ और मददगार नहीं। और अल्लाह की आयात में से समन्दर में चलने वाली

فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝۳۲ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ
पहाड़ों जैसी कशतियाँ हैं। अगर अल्लाह चाहे तो हवा को ठेहरा दे, फिर वो (कशतियाँ) समन्दर

رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
की पुश्त पर ठेहरी रेह जाएं। यक़ीनन उस में हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए अलबत्ता

شَكُوْرٍ ۝۳۳ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ
निशानियाँ हैं। या उन को उन के करतूत की बिना पर हलाक कर दे, और बहोत सों को अल्लाह मुआफ

عَنْ كَثِيْرٍ ۝۳۴ وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِنَا ؕ
कर देते हैं। और अल्लाह जानता है उन को जो झगड़ा करते हैं हमारी आयतों में।

مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ۝۳۵ فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ فَمَتَاعُ
उन के लिए कोई छूटने का रास्ता नहीं। सो जो कुछ तुम को दिया दिलाया गया है वो महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी के

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ
बरतने के लिए है। और जो अल्लाह के पास है वो बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाला है उन लोगों के लिए

اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝۳۶ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ
जो ईमान लाए और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं। और जो गुनाहों में से बड़े गुनाहों से

كَبٰٓئِرَ الۡاِثۡمِ وَالۡفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوۡا هُمۡ يَغۡفِرُوۡنَ ۚ﴿۳۷﴾
और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो मुआफ कर देते हैं।

وَالَّذِيۡنَ اسۡتَجَابُوۡا لِرَبِّهِمۡ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۖ وَاَمۡرُهُمۡ
और जो अपने रब की बात मान लेते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं। और उन का काम आपस के

شُوۡرٰى بَيۡنَهُمۡ ۖ وَمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ۚ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيۡنَ
मशवरे से होता है। और हम ने जो कुछ उन को दिया है वो उस में से खर्च करते हैं। और जो ऐसे हैं

اِذَاۤ اَصَابَهُمُ الۡبَغۡىُ هُمۡ يَنۡتَصِرُوۡنَ ﴿۳۹﴾ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ
के जब उन पर ज़ुल्म वाकेअ होता है तो वो बराबर का बदला लेते हैं। और एक बुराई का बदला

سَيِّئَةٌ مِّثۡلُهَا ۚ فَمَنۡ عَفَا وَاَصۡلَحَ فَاَجۡرُهٗ
उसी जैसी एक बुराई है। लेकिन जो मुआफ़ कर दे और इस्लाह कर ले तो उस का सवाब

عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۴۰﴾ وَلَمَنِ انۡتَصَرَ بَعۡدَ
अल्लाह के ज़िम्मे है। यक़ीनन अल्लाह ज़ालिमों से महब्बत नहीं करता। और जो अपने ऊपर ज़ुल्म हो चुकने के बाद

ظُلۡمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ سَبِيۡلٍ ؕ﴿۴۱﴾ اِنَّمَا السَّبِيۡلُ
बराबर का बदला ले लें, सो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं है। इलज़ाम तो सिर्फ

عَلَى الَّذِيۡنَ يَظۡلِمُوۡنَ النَّاسَ وَيَبۡغُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ
उन पर है जो इन्सानों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी

بِغَيۡرِ الۡحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۴۲﴾ وَلَمَنۡ صَبَرَ
करते हैं। उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। और जो शख्स सब्र करे

وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنۡ عَزۡمِ الۡاُمُوۡرِ ۚ﴿۴۳﴾ وَمَنۡ يُّضۡلِلِ
और मुआफ कर दे ये अलबत्ता हिम्मत के कामों में से है। और जिस को अल्लाह गुमराह

اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ وَّلِىٍّ مِّنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيۡنَ
कर दे उस के लिए उस के बाद कोई कारसाज़ नहीं। और आप ज़ालिमों को देखोगे

لَمَّا رَاَوُا الۡعَذَابَ يَقُوۡلُوۡنَ هَلۡ اِلٰى مَرَدٍّ
के जब वो अज़ाब को देखेंगे तो कहेंगे के क्या कोई पलटने का

مِّنۡ سَبِيۡلٍ ۚ﴿۴۴﴾ وَتَرٰٮهُمۡ يُعۡرَضُوۡنَ عَلَيۡهَا خٰشِعِيۡنَ مِنَ
रास्ता है? और तुम उन को देखोगे के वो दोज़ख पर पेश किए जाएंगे, आजिज़ी कर रहे होंगे ज़िल्लत

ع ۴ ۵

الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ

की वजह से, आँखों के किनारों से देख रहे होंगे। और ईमान वाले

اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

कहेंगे के यक़ीनन खसारे वाले वही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों और

وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ

अपने घर वालों को क़यामत के दिन खसारे में डाला। सुनो! यक़ीनन ज़ालिम लोग

فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿۴۵﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ

दाइमी अज़ाब में होंगे। और उन के लिए कोई हिमायती नहीं होंगे

يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

जो अल्लाह के सिवा उन की नुसरत करें। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे

فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۶﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ

उस के लिए कोई रास्ता नहीं। तुम अपने रब की बात मान लो

مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ

इस से पेहले के अल्लाह की तरफ से वो दिन आ जाए जिस को लौटाया नहीं जा सकेगा। तुम्हारे लिए

مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿۴۷﴾

उस दिन कोई पनाह लेने की जगह नहीं होगी और तुम्हारे लिए कोई रोकने वाला नहीं होगा।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ

फिर अगर वो ऐराज़ करें तो हम ने आप को उन पर निगराँ बना कर नहीं भेजा। आप के ज़िम्मे तो

اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

सिर्फ़ पहोंचा देना है। और जब हम इन्सान को अपनी तरफ़ से रहमत (का लुत्फ) चखाते हैं तो वो उस पर

فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ

इतराने लगता हैं। और अगर उन्हें मुसीबत पहोंचती है उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे

فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿۴۸﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

तो यक़ीनन इन्सान नाशुकरा बन जाता है। अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की

وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا

सल्तनत है। वो पैदा करता है जो चाहता है। जिसे चाहता है बेटियाँ देता है

وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا
और जिसे चाहता है बेटे देता है। या उन के लिए बेटे और बेटियाँ दोनों इकट्ठे कर

وَّ اِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾
देता है। और जिसे चाहता है बांझ बनाता है। यक़ीनन वो इल्म वाला, कुदरत वाला है।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ
और किसी इन्सान की ताक़त नहीं के वो अल्लाह से कलाम करे मगर वही से या

مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِىَ بِاِذْنِهٖ
पर्दे के पीछे से या पैग़ाम पहोंचाने वाले (फ़रिशते) को भेजे, फिर वो अल्लाह के हुक्म से वही लाता है

مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِىٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ
जो अल्लाह चाहता है। यक़ीनन वो बरतर है, हिक्मत वाला है। और इसी तरह हम ने आप के पास वही

اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ
यअनी अपना हुक्म भेजा। आप नहीं जानते थे के किताब क्या है

وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِىْ بِهٖ مَنْ
और न ईमान (जानते थे), लेकिन हम ने उस को नूर बनाया, हम उस के ज़रिए हिदायत देते हैं

نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِىْٓ اِلٰى صِرَاطٍ
जिसे हमारे बन्दों में से चाहते हैं। और यक़ीनन आप सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
कर रहे हैं। उस अल्लाह के रास्ते की तरफ जिस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो

وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾
आसमानों में और ज़मीन में हैं। सुनो! अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर लौटते हैं।

اٰيَاتُهَا ٨٩ (٤٣) سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ (٦٣) رُكُوْعَاتُهَا ٧

उस में ८९ आयतें हैं — सूरह ज़ुख़रूफ़ मक्का में नाज़िल हुई — और ७ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿﴾
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا
हॉ मीम। साफ साफ बयान करने वाली किताब की क़सम! यक़ीनन हम ने उसे अरबी वाला कुरआन

عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٣ وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ
बनाया है ताके तुम अक़्ल से काम लो। यक़ीनन ये हमारे पास लौहे महफ़ूज़ में है,

لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝٤ اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
बहोत ही बुलन्द मर्तबा, हिक्मत वाली किताब है। क्या हम तुम से इस ज़िक्र (कुरआन) को हटा देंगे

اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ۝٥ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ
इस वजह से के तुम हद से आगे बढ़ने वाली क़ौम हो? और हम ने पेहले लोगों में बहोत से

فِي الْاَوَّلِيْنَ ۝٦ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ
नबी भेजे। और कोई नबी उन के पास नहीं आता था मगर वो उस के साथ मज़ाक़

يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٧ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى
करते थे। फिर हम ने हलाक कर दिया उन से भी मज़बूत पकड़ वालों को, और पेहले लोगों

مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
का हाल पीछे गुज़र चुका है। और अगर आप उन से पूछें के किस ने आसमानों और ज़मीन को

وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۝٩ الَّذِيْ
पैदा किया, तो वो ज़रूर कहेंगे के उन को पैदा किया उस अल्लाह ने जो ज़बर्दस्त है, इल्म वाला है। वो अल्लाह

جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا
जिस ने ज़मीन को फ़र्श बनाया और जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन में रास्ते बनाए

لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٠ وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ
ताके तुम राह पाओ। और वो जिस ने आसमान से एक मिक़दार से पानी

بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝١١
उतारा। फिर हम उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं। इसी तरह तुम भी क़ब्रों से निकाले जाओगे।

وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ
और वही है अल्लाह जिस ने तमाम जोड़े पैदा किए और जिस ने तुम्हारे लिए कशतियों में

مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ۝١٢ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ
और चौपाओं में से वो बनाए जिन पर तुम सवारी करते हो। ताके तुम उन की पीठों पर बराबर सवार हो जाओ,

ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ
फिर तुम अपने रब की नेअमत को याद करो जब तुम उस पर बराबर बैठ जाओ और

تَقُوۡلُوۡا سُبۡحٰنَ الَّذِىۡ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ

कहो वो अल्लाह पाक है जिस ने हमारे लिए इस को ताबेअ किया और हम उस को क़ाबू में कर नहीं

مُقۡرِنِيۡنَ ۝۱۳ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنۡقَلِبُوۡنَ ۝۱۴ وَجَعَلُوۡا لَهٗ

सकते थे। और यक़ीनन हम अपने रब की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। और उन्हों ने अल्लाह के लिए

مِنۡ عِبَادِهٖ جُزۡءًا ؕ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَكَفُوۡرٌ مُّبِيۡنٌ ؕ ۝۱۵

उस के बन्दों में से जुज़्अ (औलाद) क़रार दिए। यक़ीनन इन्सान अलबत्ता खुला नाशुकरा है।

اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخۡلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصۡفٰىكُمۡ بِالۡبَنِيۡنَ ۝۱۶

क्या उस ने (खुद) अपनी मखलूक़ में से बेटियाँ लीं और तुम्हें बेटे मुन्तखब कर के दिए?

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحۡمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ

हालांके जब उन में से किसी एक को बशारत दी जाती है उस की जिस के साथ वो रहमान के लिए मिसाल बयान करता है (लड़की),

وَجۡهُهٗ مُسۡوَدًّا وَّهُوَ كَظِيۡمٌ ۝۱۷ اَوَمَنۡ يُّنَشَّؤُا

तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है और वो दिल में घुटने लगता है। क्या वो बच्ची जो परवरिश पाती है

فِى الۡحِلۡيَةِ وَهُوَ فِى الۡخِصَامِ غَيۡرُ مُبِيۡنٍ ۝۱۸ وَ جَعَلُوا

ज़ेवर में और आपस के झगड़े में वो साफ बोल नहीं सकती। और उन्हों ने उन

الۡمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيۡنَ هُمۡ عِبٰدُ الرَّحۡمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوۡا

फ़रिशतों को जो रहमान के बन्दे हैं औरतें बना दिया। क्या वो उन की पैदाइश के वक़्त

خَلۡقَهُمۡ ؕ سَتُكۡتَبُ شَهَادَتُهُمۡ وَ يُسۡـَٔلُوۡنَ ۝۱۹ وَقَالُوۡا

मौजूद थे? अनक़रीब उन की शहादत लिखी जाएगी और उन से सवाल किया जाएगा। और ये केहते हैं

لَوۡ شَآءَ الرَّحۡمٰنُ مَا عَبَدۡنٰهُمۡ ؕ مَا لَهُمۡ بِذٰلِكَ مِنۡ عِلۡمٍ

के अगर रहमान चाहता तो हम उन की इबादत न करते। उन की उस पर कोई दलील नहीं।

اِنۡ هُمۡ اِلَّا يَخۡرُصُوۡنَ ؕ ۝۲۰ اَمۡ اٰتَيۡنٰهُمۡ كِتٰبًا مِّنۡ قَبۡلِهٖ

वो तो सिर्फ़ अटकल से बातें कर रहे हैं। क्या हम ने उन को किताब दी इस से पेहले,

فَهُمۡ بِهٖ مُسۡتَمۡسِكُوۡنَ ۝۲۱ بَلۡ قَالُوۡۤا اِنَّا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا

फिर वो उस को मज़बूती से पकड़े हुए हैं? बल्के उन्हों ने कहा के यक़ीनन हम ने हमारे बाप दादा

عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ۝۲۲ وَكَذٰلِكَ مَا

को पाया एक तरीक़े पर और हम उन्ही के निशानाते क़दम पर राह पा रहे हैं। और इसी तरह हम

اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ فِىۡ قَرۡيَةٍ مِّنۡ نَّذِيۡرٍ اِلَّا قَالَ
ने आप से पेहले किसी बस्ती में कोई डराने वाला नहीं भेजा, मगर वहाँ के खुशहाल

مُتۡرَفُوۡهَآ ۙ اِنَّا وَجَدۡنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا
लोगों ने कहा के यक़ीनन हम ने हमारे बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया और हम उन के निशानाते क़दम

عَلٰٓى اٰثٰرِهِمۡ مُّقۡتَدُوۡنَ ۝۲۳ قٰلَ اَوَلَوۡ جِئۡتُكُمۡ بِاَهۡدٰى
की पैरवी कर रहे हैं। नबी ने कहा क्या अगर्चे मैं तुम्हारे पास इस से ज़्यादा हिदायत वाली चीज़ ले कर

مِمَّا وَجَدۡتُّمۡ عَلَيۡهِ اٰبَآءَكُمۡ ؕ قَالُوۡۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرۡسِلۡتُمۡ بِهٖ
आया हूँ जिस पर तुम ने तुम्हारे बाप दादा को पाया? उन्हों ने कहा के हम यक़ीनन उस के साथ कुफ्र करते हैं जिस को

كٰفِرُوۡنَ ۝۲۴ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ
दे कर तुम भेजे गए हो। फिर हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया, तो आप देखिए के झुठलाने वालों का

عَاقِبَةُ الۡمُكَذِّبِيۡنَ ۝۲۵ وَاِذۡ قَالَ اِبۡرٰهِيۡمُ لِاَبِيۡهِ
अन्जाम कैसा हुवा? और जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अपने बाप से

وَقَوۡمِهٖۤ اِنَّنِىۡ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعۡبُدُوۡنَ ۝۲۶ اِلَّا الَّذِىۡ فَطَرَنِىۡ
और अपनी क़ौम से के मैं बरी हूँ उन चीज़ों से जिन की तुम इबादत करते हो। मगर वो अल्लाह जिस ने मुझे पैदा किया,

فَاِنَّهٗ سَيَهۡدِيۡنِ ۝۲۷ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً
यक़ीनन वही अनक़रीब मुझे रास्ता दिखाएगा। और उस को अल्लाह ने बाक़ी रेहने वाला कलिमा बनाया

فِىۡ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ۝۲۸ بَلۡ مَتَّعۡتُ هٰٓؤُلَآءِ
उन की ज़ुर्रीयत में ताके वो रूजूअ करें। बल्के मैं ने उन्हें और उन के बाप दादा को

وَ اٰبَآءَهُمۡ حَتّٰى جَآءَهُمُ الۡحَقُّ وَرَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ۝۲۹
मुतमत्तेअ किया यहाँ तक के उन के पास हक़ आया और साफ साफ बयान करने वाला पैग़म्बर आया।

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الۡحَقُّ قَالُوۡا هٰذَا سِحۡرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوۡنَ ۝۳۰
और जब उन के पास हक़ आया तो उन्हों ने कहा के ये जादू है और हम उस के साथ कुफ्र करते हैं।

وَ قَالُوۡا لَوۡلَا نُزِّلَ هٰذَا الۡقُرۡاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ
और उन्हों ने कहा के ये क़ुरआन उन दो बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर

مِّنَ الۡقَرۡيَتَيۡنِ عَظِيۡمٍ ۝۳۱ اَهُمۡ يَقۡسِمُوۡنَ رَحۡمَتَ رَبِّكَ ؕ
क्यूं नहीं उतारा गया? क्या ये तेरे रब की रहमत तक़सीम करते हैं?

نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

हम ने उन के दरमियान उन की रोज़ी दुन्यवी ज़िन्दगी में तक़सीम की है,

وَ رَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ

और हम ने उन में से एक को दूसरे पर दरजात के ऐतेबार से बुलन्द किया है ताके एक

بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾

दूसरे से काम लेता रहे। और तेरे रब की रहमत बेहतर है उस से जिसे ये जमा कर रहे हैं।

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ

और अगर ये बात न होती के तमाम इन्सान एक ही तरह के बन जाएंगे तो रहमान के साथ जो

بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا

कुफ्र करते हैं हम उन के घर की छतें चाँदी की और सीढ़ियाँ चाँदी की बना देते, जिन पर

يَظْهَرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّ سُرُرًا عَلَيْهَا

वो चढ़ते हैं। और उन के घरों के दरवाज़े और तख्त जिन पर

يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿۳۴﴾ وَ زُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ

वो टेक लगाते हैं चाँदी के बना देते। और (ये सब चीज़ें) सौने की बना देते। और ये तमाम तो सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी का

الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۵﴾ وَمَنْ

थोड़ा नफा उठाने की चीज़ें हैं। और आखिरत तेरे रब के नज़दीक मुत्तक़ियों के लिए बेहतर है। और जो

يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ

रहमान के ज़िक्र से अन्धा बनता है तो हम उस के लिए एक शैतान मुक़र्रर कर देते हैं, फिर वो उस का

قَرِيْنٌ ﴿۳۶﴾ وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ

साथी बन जाता है। और ये उन्हें रास्ते से रोकते हैं और ये लोग समझते

اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۷﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ

हैं के हम हिदायत पर हैं। यहाँ तक के जब वो हमारे पास आएगा तो कहेगा काश के मेरे

وَ بَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿۳۸﴾

और तेरे दरमियान मशरिक़ व मग़रिब की दूरी होती, तू कितना बुरा साथी है!

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ

और आज तुम्हें हरगिज़ नफ़ा नहीं देगी जब तुम ने शिर्क किया ये बात के तुम अज़ाब में

مُشْتَرِكُوْنَ ۝۳۹ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْىَ
शरीक हो। क्या आप बेहरे को सुना सकते हो या अन्धे को रास्ता दिखा सकते हो

وَمَنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝۴۰ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ
और उस शख़्स को जो खुली गुमराही में है? फिर अगर हम आप को (दुन्या से) ले जाएं

فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۝۴۱ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِىْ وَعَدْنٰهُمْ
फिर भी हम उन से इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। या हम आप को दिखा दें वो जिस का हम ने उन से वादा किया है,

فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ۝۴۲ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِىْٓ اُوْحِىَ
तो हमें उन पर कुदरत है। फिर आप मज़बूत थामे रहिए उस को जो आप की तरफ वही

اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝۴۳ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ
किया गया। यक़ीनन आप सीधे रास्ते पर हैं। और ये आप के लिए और आप की क़ौम

وَ لِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْئَلُوْنَ ۝۴۴ وَسْئَلْ مَنْ اَرْسَلْنَا
के लिए नसीहत है। और आगे तुम से सवाल किया जाएगा। और आप हमारे पैग़म्बरों से पूछ लीजिए

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ ۟ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ
जिन को हम ने आप से पेहले भेजा। क्या हम ने रहमान के सिवा माबूद बनाए हैं

اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ۝۴۵ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ
जिन की इबादत की जाए? यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को हमारे मोअजिज़ात दे कर भेजा फिरऔन

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّىْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۴۶
और उस के सरदारों की जानिब तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के में रब्बुल आलमीन का भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ۝۴۷ وَمَا نُرِيْهِمْ
फिर जब वो उन के पास हमारे मोअजिज़ात ले कर आए तो वो उस से हंसने लगे। और हम उन्हें कोई मोअजिज़ा

مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ز وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ
नहीं दिखाते थे मगर वो उन के साथ वाले मोअजिज़े से बड़ा होता था। और हम ने उन्हें अज़ाब में पकड़ लिया

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝۴۸ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ
ताके वो रूजूअ करें। और उन्होंने ने कहा के ऐ जादूगर! तू हमारे लिए अपने रब से दुआ कर

بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ۝۴۹ فَلَمَّا كَشَفْنَا
उस का वास्ता दे कर जो अहद उस ने तुझ से कर रखा है। हम हिदायत क़बूल कर लेंगे। फिर जब हम

عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝٥٠ وَنَادٰى فِرْعَوْنُ

उन से वो अज़ाब हटा देते तो उस वक़्त वो अहदशिकनी करने लगते। और फिरऔन ने अपनी क़ौम

فِىْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِىْ مُلْكُ مِصْرَ وَ هٰذِهِ

में आवाज़ लगाई, उस ने कहा के ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरे लिए मिस्र की सल्तनत

الْاَنْهٰرُ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِىْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝٥١ اَمْ اَنَا

और ये नेहरें नहीं हैं जो मेरे नीचे से बेहती हैं? क्या फिर तुम देखते नहीं हो? बल्के मैं

خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ۝٥٢

बेहतर हूँ उस शख़्स से जो ज़लील है और साफ बोल भी नहीं सकता?

فَلَوْلَاۤ اُلْقِىَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ

फिर उस पर सौने के कंगन क्यूं नहीं डाले गए या उस के साथ फरिशते सफ बांध कर

الْمَلٰۤئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ۝٥٣ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۭ

क्यूं नहीं आए? गर्ज़ उस ने अपनी क़ौम को मग़लूब कर दिया, फिर भी उन्हों ने उस की इताअत कर ली।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٥٤ فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا

इस लिए के वो नाफरमान क़ौम थी। फिर जब उन्हों ने हमें गुस्सा दिलाया तो हम ने उन से

مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٥٥ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا

इन्तिक़ाम लिया, फिर हम ने उन तमाम को ग़र्क़ कर दिया। फिर हम ने उन को गुज़श्ता क़ौम और पीछे वालों के लिए

لِّلْاٰخِرِيْنَ ۝٥٦ وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ

इबरत बना दिया। और जब ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) की मिसाल बयान की गई, तो अचानक आप की क़ौम

مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ۝٥٧ وَقَالُوْۤا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۭ

उस से शोर मचाने लगी। और वो बोले के क्या हमारे माबूद बेहतर हैं या ईसा?

مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ۝٥٨

वो आप के सामने सिर्फ झगड़े के लिए ये मिसाल बयान करते हैं। बल्के वो झगड़ालू क़ौम ही है।

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَ جَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىْٓ

ईसा (अलैहिस्सलाम) तो एक बन्दा है, जिस पर हम ने इन्आम किया और जिस को हम ने बनी इस्राईल के

اِسْرَآءِيْلَ ۝٥٩ وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰۤئِكَةً فِى

लिए मिसाल बनाया। और अगर हम चाहते तो हम तुम में से फरिशते बनाते के

الۡاَرۡضِ يَخۡلُفُوۡنَ ﴿۶۰﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ

वो ज़मीन पर यके बाद दीगरे रहा करते। और यक़ीनन ईसा इब्ने मरयम (अलैहस्सलाम) ये क़यामत की निशानी हैं, इस लिए

بِهَا وَاتَّبِعُوۡنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿۶۱﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ

तुम लोग क़यामत के बारे में शक न करो और तुम मेरे हुक्म पर चलो। ये सीधा रास्ता है। और तुम्हें शैतान न

الشَّيۡطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿۶۲﴾ وَ لَمَّا جَآءَ عِيۡسٰى

रोके, यक़ीनन वो तुम्हारा खुला दुशमन है। और जब ईसा (अलैहिस्सलाम) रोशन मोअजिज़ात ले कर आए

بِالۡبَيِّنٰتِ قَالَ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِالۡحِكۡمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمۡ

तो ईसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन मैं तुम्हारे पास हिक्मत ले कर आया हूँ और ताके मैं तुम्हारे सामने

بَعۡضَ الَّذِىۡ تَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ ﴿۶۳﴾

साफ बयान करूँ उस का कुछ हिस्सा जिस में तुम इखतिलाफ़ कर रहे हो। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّىۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ

यक़ीनन अल्लाह वही मेरा और तुम्हारा रब है, तो तुम उसी की इबादत करो। ये सीधा

مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿۶۴﴾ فَاخۡتَلَفَ الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ ۚ

रास्ता है। तो उन में से गिरोह अलग अलग हो गए।

فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡ عَذَابِ يَوۡمٍ اَلِيۡمٍ ﴿۶۵﴾ هَلۡ

फिर ज़ालिमों के लिए दर्दनाक दिन के अज़ाब से हलाकत है। वो

يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ

मुन्तज़िर नहीं हैं मगर क़यामत के के एक दम उन के पास आ जाए और उन्हें

لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۶۶﴾ اَلۡاَخِلَّآءُ يَوۡمَئِذٍۢ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ

पता भी न हो। सिवाए मुत्तक़ियों के उस दिन दोस्त एक दूसरे के दुशमन

اِلَّا الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۶۷﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡكُمُ الۡيَوۡمَ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ

होंगे। ऐ मेरे बन्दो! आज तुम पर कोई खौफ नहीं है और न तुम

تَحۡزَنُوۡنَ ﴿۶۸﴾ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ﴿۶۹﴾

ग़मगीन होंगे। वो जो ईमान लाए हमारी आयतों पर और जो मुसलमान थे।

اُدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ اَنۡتُمۡ وَ اَزۡوَاجُكُمۡ تُحۡبَرُوۡنَ ﴿۷۰﴾ يُطَافُ

(कहा जाएगा) तुम और तुम्हारी बीवियाँ शादां व फरहां जन्नत में दाख़िल हो जाओ। उन पर

عَلَيۡهِمۡ بِصِحَافٍ مِّنۡ ذَهَبٍ وَّاَكۡوَابٍ ۚ وَفِيۡهَا
सौने के लगन और प्यालों का दौर चलेगा। और उस में

مَا تَشۡتَهِيۡهِ الۡاَنۡفُسُ وَتَلَذُّ الۡاَعۡيُنُ ۚ وَاَنۡتُمۡ فِيۡهَا
वो चीज़ें होंगी जिस की नफ्स ख्वाहिश करेंगे और जिस से आँखें लज़्ज़त पाएंगी। और तुम उस में

خٰلِدُوۡنَ ﴿٧١﴾ وَتِلۡكَ الۡجَنَّةُ الَّتِىۡۤ اُوۡرِثۡتُمُوۡهَا بِمَا كُنۡتُمۡ
हमेशा रहोगे। और ये वो जन्नत है जिस का तुम्हें अपने अमल की बदौलत वारिस बनाया

تَعۡمَلُوۡنَ ﴿٧٢﴾ لَكُمۡ فِيۡهَا فَاكِهَةٌ كَثِيۡرَةٌ مِّنۡهَا تَاۡكُلُوۡنَ ﴿٧٣﴾
गया है। तुम्हारे लिए यहाँ बकस्रत मेवे हैं, जिन में से तुम खाओ।

اِنَّ الۡمُجۡرِمِيۡنَ فِىۡ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوۡنَ ﴿٧٤﴾ ۖ
यक़ीनन मुजरिम लोग जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे।

لَا يُفَتَّرُ عَنۡهُمۡ وَهُمۡ فِيۡهِ مُبۡلِسُوۡنَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمۡنٰهُمۡ
वो उन से हल्का नहीं किया जाएगा और वो उस में मायूस पड़े रहेंगे। और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया

وَلٰـكِنۡ كَانُوۡا هُمُ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوۡا يٰمٰلِكُ لِيَقۡضِ
लेकिन वो खुद ही ज़ालिम थे। और वो पुकारेंगे ऐ मालिक! तेरे रब को

عَلَيۡنَا رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمۡ مّٰكِثُوۡنَ ﴿٧٧﴾ لَقَدۡ جِئۡنٰكُمۡ
हमारा ख़ातमा कर देना चाहिए। मालिक कहेंगे के तुम्हें ठेहेरना ही है। हम तुम्हारे पास हक़ को

بِالۡحَقِّ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَكُمۡ لِلۡحَقِّ كٰرِهُوۡنَ ﴿٧٨﴾ اَمۡ اَبۡرَمُوۡۤا
लाए थे, लेकिन तुम में से अक्सर हक़ को नापसन्द करते थे। क्या उन्हों ने हत्मी

اَمۡرًا فَاِنَّا مُبۡرِمُوۡنَ ﴿٧٩﴾ ۚ اَمۡ يَحۡسَبُوۡنَ اَنَّا لَا نَسۡمَعُ سِرَّهُمۡ
फ़ैसला कर लिया है? तो हम भी हत्मी फैसला करने वाले हैं। या वो समझते हैं के हम उन की चुपके से कही हुई बात

وَنَجۡوٰهُمۡ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيۡهِمۡ يَكۡتُبُوۡنَ ﴿٨٠﴾ قُلۡ
या उन की सरगोशी सुनते नहीं? क्यूं नहीं! और हमारे भेजे हुए फ़रिशते उन के पास लिख रहे हैं।

اِنۡ كَانَ لِلرَّحۡمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الۡعٰبِدِيۡنَ ﴿٨١﴾ سُبۡحٰنَ
आप फ़रमा दीजिए के अगर रहमान की औलाद होती, तो सब से पेहले मैं उस की बन्दगी करने वाला होता। आसमानों

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ رَبِّ الۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ﴿٨٢﴾
और ज़मीन का रब, अर्श का रब पाक है उन बातों से जो वो बयान करते हैं।

فَذَرۡهُمۡ يَخُوۡضُوۡا وَ يَلۡعَبُوۡا حَتّٰى يُلٰقُوۡا يَوۡمَهُمُ
पस आप उन को छोड़ दीजिए के वो लगे रहें और खेलते रहें यहाँ तक के वो पा लें उन का वो दिन

الَّذِىۡ يُوۡعَدُوۡنَ ﴿۸۳﴾ وَهُوَ الَّذِىۡ فِى السَّمَآءِ اِلٰهٌ
जिस से उन्हें डराया जा रहा है। और वही अल्लाह आसमान में भी माबूद है

وَّفِى الۡاَرۡضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الۡحَكِيۡمُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۸۴﴾ وَتَبٰرَكَ
और ज़मीन में भी माबूद है। और वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है। और बाबरकत है

الَّذِىۡ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۚ
वो अल्लाह जिस के लिए आसमानों और ज़मीन और उन दोनों के दरमियान की तमाम चीज़ों की सल्तनत है।

وَ عِنۡدَهٗ عِلۡمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۸۵﴾
और उसी के पास क़यामत का इल्म है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَلَا يَمۡلِكُ الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهِ الشَّفَاعَةَ
और वो लोग जिन को ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं सिफारिश के मालिक नहीं हैं,

اِلَّا مَنۡ شَهِدَ بِالۡحَقِّ وَهُمۡ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۶﴾ وَلَئِنۡ سَاَلۡتَهُمۡ
मगर जिस ने हक़ की गवाही दी और वो जानते हैं। और अगर आप उन से पूछें

مَّنۡ خَلَقَهُمۡ لَيَقُوۡلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤۡفَكُوۡنَ ﴿۸۷﴾
किस ने उन को पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे के अल्लाह ने। सो ये लोग किधर उल्टे चले जाते हैं?

وَقِيۡلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوۡمٌ لَّا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۸۸﴾ وقف لازم
और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिकायत के इलाही! ये तो ऐसी क़ौम है जो ईमान नहीं लाती।

فَاصۡفَحۡ عَنۡهُمۡ وَقُلۡ سَلٰمٌ ؕ فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۸۹﴾ ع
(कहा गया) फिर आप उन से दरगुज़र कीजिए और यूं कहिए 'अस्सलामु अलैकुम'। फिर आगे उन्हें पता चलेगा।

اٰيَاتُهَا ۵۹ (۴۴) سُوۡرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ (۶۴) رُكُوۡعَاتُهَا ۳

उस में ५९ आयतें हैं सूरह दुख़ान मक्का में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴿﴾
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿۱﴾ وَالۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ﴿۲﴾ اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ فِىۡ لَيۡلَةٍ
हॉ मीम। साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की क़सम! हम ने उस को बरकत वाली रात में

مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنۡذِرِيۡنَ ۝٣ فِيۡهَا يُفۡرَقُ

उतारा है, बेशक हम डराने वाले हैं। जिस रात में तमाम

كُلُّ اَمۡرٍ حَكِيۡمٍ ۝٤ اَمۡرًا مِّنۡ عِنۡدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا

हिक्मत भरे अवामिर फ़ैसल हो कर हमारी तरफ़ से तक़सीम किए जाते हैं। यक़ीनन हम ही

مُرۡسِلِيۡنَ ۝٥ رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ

भेजने वाले हैं। तेरे रब की रहमत के बाइस। यक़ीनन वो सुनने वाला,

وقف لازم

الۡعَلِيۡمُ ۝٦ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۘ

इल्म वाला है। वो आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान का रब है

اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِيۡنَ ۝٧ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ؕ

अगर तुम यक़ीन रखते हो। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और मौत देता है।

رَبُّكُمۡ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝٨ بَلۡ هُمۡ

वो तुम्हारा और तुम्हारे पेहले बाप दादाओं का रब है। बल्के वो

فِىۡ شَكٍّ يَّلۡعَبُوۡنَ ۝٩ فَارۡتَقِبۡ يَوۡمَ تَاۡتِى السَّمَآءُ

शक में हैं, खेल रहे हैं। इस लिए आप उस दिन का इन्तिज़ार कीजिए जिस दिन आसमान

بِدُخَانٍ مُّبِيۡنٍ ۝١٠ يَّغۡشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ

साफ धुएं को लाएगा। जो इन्सानों पर छा जाएगा। ये दर्दनाक

اَلِيۡمٌ ۝١١ رَبَّنَا اكۡشِفۡ عَنَّا الۡعَذَابَ اِنَّا مُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٢

अज़ाब है। ऐ हमारे रब! तू हम से ये अज़ाब दूर कर दे, यक़ीनन हम ईमान ला रहे हैं।

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكۡرٰى وَقَدۡ جَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ۝١٣

अब उन के लिए इस नसीहत के हासिल करने का वक़्त कहाँ होगा, हालांके उन के पास साफ साफ बयान करने वाला पैग़म्बर

وقف لازم

ثُمَّ تَوَلَّوۡا عَنۡهُ وَقَالُوۡا مُعَلَّمٌ مَّجۡنُوۡنٌ ۝١٤ اِنَّا

आया। फिर उन्हों ने उस से ऐराज़ किया और कहा के ये तो सिखलाया हुवा है, मजनून है। हम

وقف لازم

كَاشِفُوا الۡعَذَابِ قَلِيۡلًا اِنَّكُمۡ عَآئِدُوۡنَ ۝١٥

अज़ाब थोड़ा सा कम करेंगे तो तुम दोबारा उसी हालत पर लौट जाओगे।

يَوۡمَ نَبۡطِشُ الۡبَطۡشَةَ الۡكُبۡرٰى ۚ اِنَّا مُنۡتَقِمُوۡنَ ۝١٦

जिस दिन हमारी सख़्ती वाली पकड़ होगी, हम ज़रूर इन्तिक़ाम लेने वाले हैं।

وَلَقَدۡ فَتَنَّا قَبۡلَهُمۡ قَوۡمَ فِرۡعَوۡنَ وَ جَآءَهُمۡ رَسُوۡلٌ

हम ने उन से पेहले फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया और उन के पास मुअज़्ज़ज़

كَرِيۡمٌ ﴿١٧﴾ اَنۡ اَدُّوۡۤا اِلَىَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّىۡ لَكُمۡ

रसूल आया। के अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो। मैं तुम्हारे लिए

رَسُوۡلٌ اَمِيۡنٌ ﴿١٨﴾ وَّاَنۡ لَّا تَعۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّىۡۤ

अमानतदार रसूल हूँ। और ये के अल्लाह पर सरकशी मत करो। मैं

اٰتِيۡكُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ﴿١٩﴾ وَاِنِّىۡ عُذۡتُ بِرَبِّىۡ

तुम्हारे पास रोशन मोअजिज़ा ले कर आया हूँ। और मैं मेरे और तुम्हारे रब की

وَرَبِّكُمۡ اَنۡ تَرۡجُمُوۡنِ ﴿٢٠﴾ وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا لِىۡ

पनाह लेता हूँ इस से के तुम मुझे रज्म करो। और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते

فَاعۡتَزِلُوۡنِ ﴿٢١﴾ فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوۡمٌ

तो तुम मुझ से दूर रहो। फिर उन्हों ने अपने रब से दुआ की के ये ऐसी क़ौम है

مُّجۡرِمُوۡنَ ﴿٢٢﴾ فَاَسۡرِ بِعِبَادِىۡ لَيۡلًا اِنَّكُمۡ مُّتَّبَعُوۡنَ ﴿٢٣﴾

जो मुजरिम है। तो (ऐ मूसा!) आप मेरे बन्दों को रात के वक़्त ले कर निकल जाइए, तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

وَاتۡرُكِ الۡبَحۡرَ رَهۡوًا ؕ اِنَّهُمۡ جُنۡدٌ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿٢٤﴾

और आप समन्दर को ठेहरा हुवा छोड़ दीजिए। इस लिए के ये ऐसा लशकर है जिसे ग़र्क़ किया जाएगा।

كَمۡ تَرَكُوۡا مِنۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ﴿٢٥﴾ وَّزُرُوۡعٍ

वो कितने बाग़ात और चशमे और खेतियाँ और अच्छी रेहने की जगहें

وَّ مَقَامٍ كَرِيۡمٍ ﴿٢٦﴾ وَّ نَعۡمَةٍ كَانُوۡا فِيۡهَا فٰكِهِيۡنَ ﴿٢٧﴾

छोड़ कर गए। और ऐसी नेअमतें छोड़ीं जिन में वो मज़े कर रहे थे।

كَذٰلِكَ ۟ وَاَوۡرَثۡنٰهَا قَوۡمًا اٰخَرِيۡنَ ﴿٢٨﴾

इसी तरह। और हम ने दूसरी क़ौम को उन चीज़ों का वारिस बनाया।

فَمَا بَكَتۡ عَلَيۡهِمُ السَّمَآءُ وَالۡاَرۡضُ وَمَا كَانُوۡا

फिर उन पर न आसमान रोया और न ज़मीन रोई और न उन्हें

مُنۡظَرِيۡنَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدۡ نَجَّيۡنَا بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مِنَ

मुहलत दी गई। हम ने बनी इस्राईल को रूस्वा करने वाले अज़ाब से

الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۳۰﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

नजात दी। (जो था) फ़िरऔन से, वो सरकश, हद से

عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ

आगे बढ़ने वालों में से था। हम ने उन को इल्म के साथ तमाम

عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ

जहान वालों पर मुन्तख़ब किया। और हम ने उन (बनी इस्राईल) को वो मोअजिज़ात दिए

مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿۳۳﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿۳۴﴾

जिन में सरीह आज़्माइश/इन्आम था। यक़ीनन ये लोग केहते हैं।

اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿۳۵﴾

ये हमारा पेहली दफ़ा ही मरना है, और हम क़ब्रों से उठाए नहीं जाएंगे।

فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۳۶﴾ اَهُمْ

फिर हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। क्या ये

خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ

बेहतर हैं या क़ौमे तुब्बअ और वो जो उन से पेहले थे?

اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۳۷﴾

जिन को हम ने हलाक किया। यक़ीनन वो भी मुजरिम थे।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿۳۸﴾

और हम ने आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान की चीज़ों को खेल के लिए पैदा नहीं किया।

مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

हम ने उन को पैदा नहीं किया मगर हक़ के साथ लेकिन उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۴۰﴾

जानते नहीं। बेशक फ़ैसले का दिन उन तमाम का मुक़र्ररा वक़्त है।

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْئًا وَّلَا هُمْ

जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ भी काम नहीं आएगा और न उन की

يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

नुसरत की जाएगी। मगर वो जिस पर अल्लाह रहम करे। यक़ीनन वो

الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ﴿۴۲﴾ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوۡمِ ﴿۴۳﴾ طَعَامُ

ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। यक़ीनन ज़क्कूम का दरख़्त, वो गुनेहगार

الۡاَثِيۡمِ ﴿۴۴﴾ كَالۡمُهۡلِ ۚ يَغۡلِىۡ فِى الۡبُطُوۡنِ ﴿۴۵﴾ كَغَلۡىِ

का खाना है। जो तेल की तलछट जैसा होगा, (उन के) पेट में गर्म पानी के खौलने की तरह

الۡحَمِيۡمِ ﴿۴۶﴾ خُذُوۡهُ فَاعۡتِلُوۡهُ اِلٰى سَوَآءِ الۡجَحِيۡمِ ﴿۴۷﴾

खौलेगा। (हुक्म होगा) इस को पकड़ो और इस को धकेल कर दोज़ख के बीच में ले जाओ।

ثُمَّ صُبُّوۡا فَوۡقَ رَاۡسِهٖ مِنۡ عَذَابِ الۡحَمِيۡمِ ﴿۴۸﴾

फिर उस के सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब उंडेल दो।

ذُقۡ ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡكَرِيۡمُ ﴿۴۹﴾

तू इस अज़ाब को चख। तू बड़ा इज़्ज़त वाला और मुकर्रम बनता था।

اِنَّ هٰذَا مَا كُنۡتُمۡ بِهٖ تَمۡتَرُوۡنَ ﴿۵۰﴾ اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ

ये वो अज़ाब है जिस में तुम शक कर रहे थे। मुत्तक़ी लोग

فِىۡ مَقَامٍ اَمِيۡنٍ ﴿۵۱﴾ فِىۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ﴿۵۲﴾

अमन वाली जगह में होंगे। बाग़ात में और चशमों में होंगे।

يَّلۡبَسُوۡنَ مِنۡ سُنۡدُسٍ وَّاِسۡتَبۡرَقٍ مُّتَقٰبِلِيۡنَ ﴿۵۳﴾

वो बारीक और मोटा रेशम पेहने हुए होंगे, आमने सामने बैठे होंगे।

كَذٰلِكَ ۟ وَزَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِيۡنٍ ﴿۵۴﴾ يَدۡعُوۡنَ

इसी तरह। और बड़ी आँखों वाली हूरें उन के निकाह में हम देंगे। वो

فِيۡهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيۡنَ ﴿۵۵﴾ لَا يَذُوۡقُوۡنَ

उन में बेख़ौफ हो कर तमाम मेवे मांगेंगे। वो सिवाए

فِيۡهَا الۡمَوۡتَ اِلَّا الۡمَوۡتَةَ الۡاُوۡلٰى ۚ وَوَقٰهُمۡ

पेहली मौत के उस में मौत को नहीं चखेंगे। और अल्लाह ने

عَذَابَ الۡجَحِيۡمِ ﴿۵۶﴾ فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ ذٰلِكَ

उन्हें दोज़ख के अज़ाब से बचा लिया। ये सब कुछ आप के रब के फ़ज़्ल से होगा। यही

هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿۵۷﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرۡنٰهُ بِلِسَانِكَ

भारी कामयाबी है। सो हम ने इस कुरआन को आप की ज़बान में आसान कर दिया

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

ताके वो नसीहत हासिल करें। इस लिए आप मुन्तज़िर रहिए, यक़ीनन वो भी मुन्तज़िर हैं।

اٰيَاتُهَا ٣٧ (٤٥) سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ (٦٥) رُكُوْعَاتُهَا ٤

उस में ३७ आयतें हैं सूरह जासिया मक्का में नाज़िल हुई और ४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

हॉ मीम। इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से है।

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾

यक़ीनन आसमानों और ज़मीन में अलबत्ता ईमान लाने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ

और तुम्हारे पैदा करने में और उन जानवरों में भी जिन को अल्लाह फैलाता है निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

ऐसी क़ौम के लिए जो यक़ीन रखती है। और रात और दिन के आने जाने में

وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا

और उस रोज़ी में जो अल्लाह ने आसमान से उतारी, फिर उस

بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ

के ज़रिए ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, और हवाओं के चलाने में

اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती है। ये अल्लाह की आयतें हैं, जिन्हें हम आप

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ

के सामने हक़ के साथ तिलावत करते हैं। फिर अल्लाह के बाद और अल्लाह की आयतों के बाद कौन सी बात पर

وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٧﴾

ये ईमान लाएंगे? हलाकत है हर झूटे गुनेहगार के लिए।

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

जो अल्लाह की आयतों को सुनता है जो उस पर तिलावत की जाती हैं, फिर वो अड़ा रेहता है मुतकब्बिर बन कर

كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٨

गोया के उस ने उस को सुना ही नहीं। इस लिए आप उसे दर्दनाक अज़ाब की बशारत सुना दीजिए।

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اِتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ

और जब वो हमारी आयतों में से कुछ मालूम कर लेता है तो उसे मज़ाक़ बनाता है।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٩ؕ مِنْ وَّرَآئِهِمْ

उन लोगों के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है। उन के आगे

جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا

जहन्नम है। और उन के कुछ काम नहीं आएगा जो उन्हों ने कमाया था

وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

और न वो जो उन्हों ने अल्लाह के सिवा हिमायती बनाए हैं। बल्के उन के लिए भारी

عَظِيْمٌ ۝١٠ؕ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ

अज़ाब होगा। ये हिदायत है। और जिन्हों ने अपने रब की आयात के साथ

رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝١١ؑ اَللّٰهُ

कुफ्र किया उन के लिए दर्दनाक अज़ाब में से अज़ाब होगा। अल्लाह

الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ

ही ने तुम्हारे लिए समन्दर को ताबेअ किया, ताके कशती चले

فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ

उस में अल्लाह के हुक्म से और ताके तुम अल्लाह का फ़ज़्ल तलब करो और ताके

تَشْكُرُوْنَ ۝١٢ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ

शुक्र अदा करो। और उस ने तुम्हारे लिए अपनी तरफ से काम में लगा रखी हैं वो तमाम चीज़ें

وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। बेशक उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝١٣ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا

के लिए जो सोचती है। आप फरमा दीजिए उन लोगों से जो ईमान लाए हैं के वो मुआफ़ कर दें

لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًاۢ

उन को जो अल्लाह के अज़ाब की उम्मीद नहीं रखते ताके अल्लाह क़ौम को

بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿١٤﴾ مَنۡ عَمِلَ صَالِحًا

उन के करतूत की सज़ा दे। जिस ने नेक अमल किया

فَلِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ اَسَآءَ فَعَلَيۡهَا ۫ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمۡ

तो अपने लिए (किया)। और जिस ने बुरा अमल किया तो उसी पर वबाल है। फिर तुम्हारे रब की तरफ़

تُرۡجَعُوۡنَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

तुम लौटाए जाओगे। और यक़ीनन हम ने बनी इस्राईल को

الۡكِتٰبَ وَ الۡحُكۡمَ وَ النُّبُوَّةَ وَ رَزَقۡنٰهُمۡ

किताब दी और हुकूमत और नुबूव्वत दी और हम ने उन्हें रोज़ी दी उम्दा चीज़ों में

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَ فَضَّلۡنٰهُمۡ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿١٦﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ

से और हम ने उन्हें तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। और हम ने उन को

بَيِّنٰتٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ ۚ فَمَا اخۡتَلَفُوۡۤا اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ

दीन के बारे में खुली खुली दलीलें दीं। फिर उन्हों ने इखतिलाफ नहीं किया, मगर इस के बाद के

مَا جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ ۙ بَغۡيًا ۢ بَيۡنَهُمۡ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

उन के पास इल्म आया आपस की ज़िद की वजह से। यक़ीनन तेरा रब

يَقۡضِىۡ بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فِيۡمَا كَانُوۡا فِيۡهِ

उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा उस में जिस में वो इखतिलाफ़

يَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلۡنٰكَ عَلٰى شَرِيۡعَةٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ

कर रहे हैं। फिर हम ने आप को इस अम्रे दीन की एक शरीअत पर रखा है,

فَاتَّبِعۡهَا وَلَا تَتَّبِعۡ اَهۡوَآءَ الَّذِيۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿١٨﴾

इस लिए आप इस शरीअत का इत्तिबा कीजिए और उन की ख्वाहिशात के पीछे न चलिए जो इल्म नहीं रखते।

اِنَّهُمۡ لَنۡ يُّغۡنُوۡا عَنۡكَ مِنَ اللّٰهِ شَيۡـًٔا ؕ

यक़ीनन ये अल्लाह से आप के कुछ भी काम नहीं आ सकेंगे।

وَاِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِىُّ

और यक़ीनन ये ज़ालिम लोग उन में से एक दूसरे के हिमायती हैं। और अल्लाह मुत्तक़ियों का

الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿١٩﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى

हिमायती है। ये कुरआन लोगों के लिए बसीरतों का हामिल है और हिदायत

وَّرَحۡمَةٌ لِّقَوۡمٍ يُّوۡقِنُوۡنَ ﴿٢٠﴾ اَمۡ حَسِبَ الَّذِيۡنَ

और रहमत है ऐसी क़ौम के लिए जो यक़ीन रखती है। क्या उन लोगों ने जिन्हों ने

اجۡتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنۡ نَّجۡعَلَهُمۡ كَالَّذِيۡنَ

बुराइयाँ कमाई हैं ये गुमान कर रखा है के हम उन्हें उन की तरह बनाएंगे जो

اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحۡيَاهُمۡ

ईमान लाए और नेक अमल करते रहे हैं? के उन की ज़िन्दगी और उन की मौत

وَمَمَاتُهُمۡ ؕ سَآءَ مَا يَحۡكُمُوۡنَ ﴿٢١﴾ وَخَلَقَ اللّٰهُ

बराबर हो जाए? बुरा है जिस का वो फैसला कर रहे हैं। और अल्लाह ने

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِالۡحَقِّ وَلِتُجۡزٰى كُلُّ

आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, और इस लिए ताके हर शख़्स को

نَفۡسٍ بِمَا كَسَبَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيۡتَ

उन के अमल का बदला दिया जाए और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। क्या फिर आप ने उस शख़्स को

مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلۡمٍ

देखा जिस ने अपनी ख्वाहिश को अपना माबूद बना लिया है, और जिसे अल्लाह ने इल्म के बावजूद गुमराह कर दिया है,

وَّخَتَمَ عَلٰى سَمۡعِهٖ وَ قَلۡبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ

और जिस के कान और दिल पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है, और जिस की आँखों पर पर्दा

غِشٰوَةً ؕ فَمَنۡ يَّهۡدِيۡهِ مِنۡۢ بَعۡدِ اللّٰهِ ؕ

रख दिया है। फिर उस को अल्लाह के बाद कौन हिदायत देगा?

اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ﴿٢٣﴾ وَ قَالُوۡا مَا هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا

क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और उन्हों ने कहा के ये ज़िन्दगी नहीं है मगर हमारी दुन्यवी

الدُّنۡيَا نَمُوۡتُ وَنَحۡيَا وَمَا يُهۡلِكُنَاۤ

ज़िन्दगी के हम मरते हैं और हम ज़िन्दा होते हैं और हमें हलाक नहीं करता

اِلَّا الدَّهۡرُ ۚ وَمَا لَهُمۡ بِذٰلِكَ مِنۡ عِلۡمٍ ۚ اِنۡ هُمۡ

मगर ज़माना। और उन के पास इस की कोई दलील नहीं। ये सिर्फ

اِلَّا يَظُنُّوۡنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

गुमान कर रहे हैं। और जब उन पर हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं

مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا

तो उन की हुज्जत नहीं होती मगर ये के वो केहते हैं के तुम हमारे पास हमारे बाप

بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ

दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही

يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ

तुम्हें ज़िन्दा रखता है, फिर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें क़यामत के दिन इकट्ठा

الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

करेगा जिस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط

ع ٣/١٥

जानते नहीं। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾

और जिस दिन क़यामत क़ाइम होगी उस दिन बातिलपरस्त खसारा उठाएंगे।

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً قف كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى

और आप देखोगे हर उम्मत को घुटनों के बल बैठी हुई। हर उम्मत अपने नामओ आमाल की तरफ़

اِلٰى كِتٰبِهَا ط اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

बुलाई जाएगी। (कहा जाएगा के) आज तुम्हें तुम्हारे आमाल का बदला दिया जाएगा।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ط اِنَّا

ये हमारा दफ्तर है जो तुम्हारे खिलाफ ठीक बोल रहा है। यक़ीनन हम

كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

लिखवा लिया करते थे जो तुम अमल करते थे।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ

फिर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे तो उन को उन का रब

رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾

अपनी रहमत में दाखिल करेगा। ये खुली कामयाबी है।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قف اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى

और जिन्हों ने कुफ्र किया तो (उन्हें कहा जाएगा के) क्या मेरी आयतें तुम पर तिलावत नहीं

عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۱﴾
की जाती थीं, फिर तुम तकब्बुर करते थे और तुम मुजरिम क़ौम थे?

وَ اِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ
और जब कहा जाता है के यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है और क़यामत

لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ
में कोई शक नहीं, तो तुम ने कहा के हम नहीं जानते के क़यामत क्या चीज़ है?

اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿۳۲﴾
हम तो गुमान करते हैं थोड़ा सा और हमें यक़ीन नहीं।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ
और उन के सामने उन के आमाल की बुराई खुल जाएगी, और उन को घेर लेगा

مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰكُمْ
वो अज़ाब जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। और कहा जाएगा के आज हम तुम्हें भुला देंगे,

كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ
जिस तरह तुम ने अपने इस दिन के मिलने को भुला रखा था और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख है

وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۴﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ
और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं होगा। ये इस वजह से के तुम ने

اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ
अल्लाह की आयतों को मज़ाक़ बनाया और तुम्हें दुन्यवी ज़िन्दगी ने धोके में डाले रखा।

فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۳۵﴾
फिर आज वो वहाँ से निकाले नहीं जाएंगे और न उन से मुआफी तलब की जाएगी।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ
फिर अल्लाह ही के लिए तमाम तारीफें हैं जो आसमानों का रब है और ज़मीन का रब है, तमाम जहानों

الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۶﴾ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ
का रब है। और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों में

وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۳۷﴾
और ज़मीन में। और वो अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

رکوعاتها ٤ (٤٦) سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ (٦٦) اٰیاتها ٣٥

और ४ रूकूअ हैं सूरह अहक़ाफ़ मक्का में नाज़िल हुई उस में ३५ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ۚ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

हॉ मीम। इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से है।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ

हम ने आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों को जो उन दोनों के दरमियान में हैं पैदा नहीं किया

اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

मगर मस्लहत के खातिर और ऐक मुक़र्रर किए हुए वक़्त तक के लिए। और काफिर लोग

عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ

जिस से उन को डराया जाता है ऐराज़ करते हैं। आप फ़रमा दीजिए भला बतलाओ वो जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ

अल्लाह को छोड़ कर मुझे दिखलाओ के उन्हों ने कौन सी ज़मीन पैदा की

اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ

या उन की शराकत है आसमानों में? मेरे सामने इस कुरआन से पेहले

مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤﴾

की कोई किताब लाओ या कोई मन्कूल इल्म ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ

और उस से ज़्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़ कर पुकारे उस को

لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ

जो क़यामत के दिन तक उसे जवाब नहीं दे सकता। और वो उन के

عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٥﴾ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ

पुकारने से भी बेखबर हैं। और जब लोगों का हश्र होगा तो ये उन के दुशमन

اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿٦﴾ وَاِذَا تُتْلٰى

बन जाएंगे और उन की इबादत का भी इन्कार करेंगे। और जब उन पर

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ

हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं तो काफ़िर लोग हक़ के मुतअल्लिक़ जब हक़ उन के

لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۷ اَمْ يَقُوْلُوْنَ

पास आया केहते हैं के ये तो खुला जादू है। क्या ये केहते हैं के

افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ

इस नबी ने उस को घड़ लिया है? आप फरमा दीजिए के अगर मैं ने उस को घड़ लिया है तो तुम अल्लाह के मुक़ाबले में मेरे

مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ

कुछ भी काम नहीं आ सकोगे। अल्लाह खूब जानता है जिस में तुम लगे रेहते हो। अल्लाह की शहादत

شَهِيْدًاۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝۸

मेरे और तुम्हारे दरमियान काफ़ी है। और वो बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ

आप फ़रमा दीजिए के मैं रसूलों में से कोई नया नहीं आया, और मुझे क्या ख़बर के

مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى

मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा? मैं तो सिर्फ उसी का इत्तिबा करता हूँ जो मेरी तरफ

اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۹ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

वही किया जा रहा है और मैं सिर्फ साफ साफ डराने वाला हूँ। आप फ़रमा दीजिए बतलाओ

اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ

अगर ये कुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो और तुम ने उस के साथ कुफ्र किया और बनी इस्राईल में

مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ

से एक गवाह ने गवाही दी उसी जैसी किताब की, फिर वो ईमान ले आया,

وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۰ ع

और तुम तकब्बुर करते रहे। यक़ीनन अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا

और काफिरों ने ईमान वालों के मुतअल्लिक़ कहा के अगर ये दीन बेहतर होता

مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ

तो ये उस की तरफ हम से सबक़त न करते। और जब उन्हों ने उस के ज़रिए हिदायत न पाई तो अब ये कहेंगे

هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ۝۱۱ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى
के ये तो पुराना झूठ है। हालांके उस से पेहले मूसा (अलैहिस्सलाम) की किताब

اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا
रहनुमा और रहमत थी। और ये किताब है जो तसदीक़ करने वाली है, अरबी

عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَ بُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ۝۱۲
ज़बान वाली है ताके वो ज़ालिमों को डराए और एहसान करने वालों के लिए बशारत हो।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ
बेशक जिन लोगों ने कहा के हमारा रब अल्लाह है, फिर वो जमे रहे तो उन पर न खौफ़

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝۱۳ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ
होगा और न वो ग़मगीन होंगे। ये जन्नती हैं,

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۱۴
उस में वो हमेशा रहेंगे। उन आमाल के बदले के तौर पर जो वो करते थे।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ
और हम ने इन्सान को हुक्म दिया उस के वालिदैन के साथ भलाई करने का। उस की माँ ने उस को पेट में

اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ
उठाया तकलीफ से और उस को जना तकलीफ से। और उस का पेट में रेहना और उस का दूध छुड़ाना

ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَ بَلَغَ اَرْبَعِيْنَ
तीस महीनों में होता है। यहाँ तक के जब वो अपनी जवानी को पहोंच जाता है और चालीस साल की उम्र

سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ
को पहोंचता है, तो केहता है के ऐ मेरे रब! तू मुझे इस की तौफ़ीक़ दे के मैं तेरी नेअमत का शुक्र अदा करूँ

الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا
जो तू ने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर की और इस की के मैं नेक अमल करूँ

تَرْضٰىهُ وَ اَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ
जो तू पसन्द करे, और तू मेरे लिए मेरी औलाद में सलाह (व तक़्वा) रख दे। यक़ीनन मैं तेरी तरफ तौबा

اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝۱۵ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ। यही लोग हैं के जिन से

نَتَقَبَّلُ عَنۡهُمۡ اَحۡسَنَ مَا عَمِلُوۡا وَنَتَجَاوَزُ
हम उन के नेक अमल क़बूल करते हैं और हम उन की ख़ताओं से दरगुज़र

عَنۡ سَيِّاٰتِهِمۡ فِیۡۤ اَصۡحٰبِ الۡجَنَّةِ ؕ وَعۡدَ الصِّدۡقِ الَّذِیۡ
करते हैं, वो जन्नतियों में होंगे। उस सच्चे वादे की बिना पर जो

كَانُوۡا يُوۡعَدُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِیۡ قَالَ لِوَالِدَيۡهِ اُفٍّ لَّـكُمَاۤ
उन से वादा किया जाता था। और जिस ने अपने वालिदैन से कहा के उफ है तुम पर,

اَتَعِدٰنِنِیۡۤ اَنۡ اُخۡرَجَ وَقَدۡ خَلَتِ الۡقُرُوۡنُ مِنۡ قَبۡلِىۡ‌ۚ
क्या तुम मुझे डराते हो इस से के मैं क़ब्र से निकाला जाऊँगा हालांके मुझ से पेहले उम्मतें गुज़र चुकी हैं?

وَهُمَا يَسۡتَغِيۡثٰنِ اللّٰهَ وَيۡلَكَ اٰمِنۡ‌ ‌ۖ اِنَّ وَعۡدَ
और वो दोनों अल्लाह से फरयाद कर रहे हैं के तेरा नास हो! तू ईमान ले आ। यक़ीनन अल्लाह का

اللّٰهِ حَقٌّ ‌ۖۚ فَيَقُوۡلُ مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۱۷﴾
वादा सच्चा है, फिर भी वो केहता है के ये तो महज़ पेहले लोगों के अफसाने हैं।

اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ حَقَّ عَلَيۡهِمُ الۡقَوۡلُ فِىۡۤ اُمَمٍ قَدۡ خَلَتۡ
यही लोग हैं जिन पर अज़ाब का क़ौल साबित हो चुका बशुमूल उन उम्मतों के जो जिन्नात

مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ‌ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا
और इन्सानों की उन से पेहले गुज़र चुकी हैं, के यक़ीनन ये खसारे

خٰسِرِيۡنَ ﴿۱۸﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوۡا‌ ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمۡ
वाले हैं। और सब के दरजात उन के आमाल के मुताबिक़ हैं। और ताके अल्लाह

اَعۡمَالَهُمۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَيَوۡمَ يُعۡرَضُ
उन को उन के आमाल का बदला पूरा पूरा दे और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और जिस दिन काफिरों

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا عَلَى النَّارِ ؕ اَذۡهَبۡتُمۡ طَيِّبٰتِكُمۡ
को आग पर पेश किया जाएगा, (कहा जाएगा) के तुम ने अपने मज़े उड़ा लिए

فِىۡ حَيَاتِكُمُ الدُّنۡيَا وَاسۡتَمۡتَعۡتُمۡ بِهَا‌ ۚ فَالۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ
अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी में और तुम ने उस से फ़ाइदा उठा लिया। तो आज तुम्हें सज़ा दी जाएगी

عَذَابَ الۡهُوۡنِ بِمَا كُنۡتُمۡ تَسۡتَكۡبِرُوۡنَ فِى
ज़िल्लत के अज़ाब की इस वजह से के तुम ज़मीन में

ع ٢

الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاذْكُرْ

नाहक़ तकब्बुर करते थे और इस वजह से के तुम नाफरमान थे। और तुम याद करो

اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ

क़ौमे आद के भाई को। जब के उन्हों ने अपनी क़ौम को डराया अहक़ाफ में और उन से पेहले

النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا

और उन के बाद भी डराने वाले गुज़र चुके हैं के इबादत मत करो

اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾

मगर अल्लाह ही की। यक़ीनन मुझे तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ

तो उन्हों ने कहा क्या हमारे पास तुम इस लिए आए हो ताके हमें हमारे माबूदों से हटा दो? तो ले आओ वो अज़ाब जिस से

اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ

तुम हमें डरा रहे हो अगर तुम सच्चों में से हो। नबी ने कहा के इल्म तो सिर्फ अल्लाह ही के

اللّٰهِ ۖ٘ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا

पास है। और मैं तुम्हें वही पहोंचाता हूँ जिसे दे कर मैं भेजा गया हूँ, लेकिन मैं तुम्हें ऐसी क़ौम देख रहा हूँ

تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ

जो जहालत करती हो। फिर जब उन्हों ने वो अज़ाब देखा के बादल है जो उन की वादियों की तरफ़ आ रहा है

قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ

तो बोले ये बादल है जो हम पर बारिश बरसाएगा।(कहा गया) बल्के ये वो अज़ाब है जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे थे।

رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَیْءٍۢ بِاَمْرِ

ये एक तूफानी हवा है जिस में दर्दनाक अज़ाब है। जो हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से मलयामेट

رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی

कर देगी, अब वो ऐसे हो गए के उन के रेहने के मकानात के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता। इसी तरह हम

الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَاۤ

मुजरिम लोगों को सज़ा देते हैं। और हम ने उन को वो कुदरत दी थी जो हम

اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّ

ने तुम्हें नहीं दी, और हम ने उन के लिए कान और आँखें और दिल

اَفۡـِٕدَةً ۖ فَمَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ سَمۡعُهُمۡ وَلَاۤ اَبۡصَارُهُمۡ

बनाए थे। फिर उन के कान और उन की आँखें और उन के दिल

وَلَاۤ اَفۡـِٕدَتُهُمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ اِذۡ كَانُوۡا يَجۡحَدُوۡنَ ۙ بِاٰيٰتِ

कुछ भी काम न आए, इस लिए के वो अल्लाह की आयात का इन्कार

اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝٢٦ وَلَقَدۡ

करते थे, और उन को घेर लिया उस अज़ाब ने जिस का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे। यक़ीनन

اَهۡلَكۡنَا مَا حَوۡلَكُمۡ مِّنَ الۡقُرٰى وَصَرَّفۡنَا الۡاٰيٰتِ

हम ने हलाक किया उन बस्तियों को जो तुम्हारे इर्द गिर्द हैं और हम ने निशानियों को फेर फेर कर बयान किया

لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ۝٢٧ فَلَوۡلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا

ताके वो रूजूअ करें। तो जिन को उन लोगों ने अल्लाह के सिवा तक़र्रुब के लिए

مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ قُرۡبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلۡ ضَلُّوۡا عَنۡهُمۡ ۚ

माबूद बना रखा था, उन्हों ने उन की मदद क्यूं नहीं की? बल्के वो उन से खो गए।

وَذٰلِكَ اِفۡكُهُمۡ وَمَا كَانُوۡا يَفۡتَرُوۡنَ ۝٢٨

और ये उन का झूठ था और उन की घड़ी हुई बातें थीं।

وَاِذۡ صَرَفۡنَاۤ اِلَيۡكَ نَفَرًا مِّنَ الۡجِنِّ يَسۡتَمِعُوۡنَ الۡقُرۡاٰنَ ۚ

और जब के हम ने आप की तरफ कई एक जिन्नात को मुतवज्जेह किया के कुरआन सुनें।

فَلَمَّا حَضَرُوۡهُ قَالُوۡۤا اَنۡصِتُوۡا ۚ فَلَمَّا قُضِىَ وَلَّوۡا

फिर जब वो लोग कुरआन के पास आ पहोंचे तो केहने लगे के चुप रहो। फिर जब क़िराअत ख़त्म हो गई तो वो अपनी

اِلٰى قَوۡمِهِمۡ مُّنۡذِرِيۡنَ ۝٢٩ قَالُوۡا يٰقَوۡمَنَاۤ اِنَّا سَمِعۡنَا

क़ौम की तरफ़ डराने के लिए वापस आए। केहने लगे ऐ हमारी क़ौम! हम ने एक किताब

كِتٰبًا اُنۡزِلَ مِنۡۢ بَعۡدِ مُوۡسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيۡنَ

सुनी है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद उतारी गई है, जो सच्चा बतलाने वाली है उन किताबों को

يَدَيۡهِ يَهۡدِىۡۤ اِلَى الۡحَقِّ وَاِلٰى طَرِيۡقٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ۝٣٠

जो इस से पेहले थीं जो हक़ की तरफ और सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई करती है।

يٰقَوۡمَنَاۤ اَجِيۡبُوۡا دَاعِىَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوۡا بِهٖ يَغۡفِرۡ لَكُمۡ

ऐ हमारी क़ौम! तुम अल्लाह के दाई का केहना मान लो और उस पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾
बख़्श देगा और तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा लेगा।

وَ مَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ
जो अल्लाह के दाई की बात नहीं मानेगा, तो वो ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को थका नहीं सकेगा

وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ۭ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ
और उस के लिए अल्लाह के सिवा कोई हिमायती भी नहीं होंगे। यही लोग खुली गुमराही

مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
में हैं। क्या उन्हों ने देखा नहीं के अल्लाह जिस ने आसमान और ज़मीन पैदा

وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى
किए और वो उन के पैदा करने की वजह से थका नहीं, वो इस पर क़ादिर है के मुर्दों

اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۭ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾
को ज़िन्दा करे। क्यूं नहीं! यक़ीनन वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۭ اَلَيْسَ
और जिस दिन काफिरों को आग पर पेश किया जाएगा। (कहा जाएगा) क्या

هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا
ये सच नहीं है? तो वो बोलेंगे क्यूं नहीं! हमारे रब की क़सम! अल्लाह फ़रमाएँगे के फिर तुम अज़ाब

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ
चखो इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे। फिर आप सब्र कीजिए जैसा के

كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ
पैग़म्बरों में से ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों ने सब्र किया और उन के लिए आप जल्दी

لَّهُمْ ۭ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ
न कीजिए। जिस दिन वो देखेंगे वो अज़ाब जिस से उन्हें डराया जा रहा है (तो वो समझेंगे)

لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۭ بَلٰغٌ ۚ
के वो ठेहरे नहीं मगर दिन की एक घड़ी। ये (कुरआन) पहोंचा देना है।

فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾
अब सिर्फ़ नाफ़रमान ही हलाक होंगे।

ايَاتُهَا ٣٨ (٤٧) سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِيَّةٌ (٩٥) رُكُوْعَاتُهَا ٤

उस में ३८ आयतें हैं सूरह मुहम्मद मदीना में नाज़िल हुई और ४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ

जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका अल्लाह ने उन के

اَعْمَالَهُمْ ۝١ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا

अमल कल्अदम कर दिए। और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और ईमान लाए

بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ

उस पर जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उन के रब की तरफ से उतारा गया है और वो हक़ है, तो अल्लाह ने

سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا

उन से उन की बुराइयाँ दूर कर दीं, और उन के हाल की इस्लाह कर दी। ये इस वजह से के जिन्हों ने कुफ्र किया

اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ

वो बातिल के पीछे चले हैं और ये के जो ईमान लाए हैं उन्हों ने उस हक़ की पैरवी की है जो उन के

مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣

रब की तरफ से है। इसी तरह अल्लाह इन्सानों के लिए उन की मिसालें बयान करते हैं।

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى

फिर जब तुम काफिरों से मिलो तो उन की गर्दनें मारो। यहाँ तक के

اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّاۢ بَعْدُ

जब तुम उन का खून बहा चुको, तो मज़बूत बांध लो। फिर या तो (क़ैदियों को) उस के बाद एहसान कर के (छोड़ देना है),

وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ڗ ذٰلِكَ ۭ

या फिदया ले कर (छोड़ना है), जब तक के लड़ने वाले अपने हथ्यार न रख दें। ये तो हुवा।

وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ

और अगर अल्लाह चाहता तो उन से इन्तिक़ाम लेता, लेकिन इस लिए ताके तुम में से एक को दूसरे के

بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ

ज़रिए अल्लाह आज़माए। और वो जो क़त्ल किए गए अल्लाह के रास्ते में उन के

يُضِلَّ اَعۡمَالَهُمۡ ۝٤ سَيَهۡدِيۡهِمۡ وَيُصۡلِحُ بَالَهُمۡ ۝٥

आमाल अल्लाह हरगिज़ कल्अदम नहीं करेगा। जल्द ही उन की रहनुमाई करेगा और उन के हाल की इस्लाह करेगा।

وَيُدۡخِلُهُمُ الۡجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمۡ ۝٦ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ

और उन को जन्नत में दाखिल करेगा जिस का उन के सामने अल्लाह ने तआरुफ़ करा दिया है। ऐ ईमान

اٰمَنُوۡۤا اِنۡ تَنۡصُرُوا اللّٰهَ يَنۡصُرۡكُمۡ وَيُثَبِّتۡ اَقۡدَامَكُمۡ ۝٧

वालो! अगर तुम अल्लाह की नुसरत करोगे तो वो तुम्हारी नुसरत करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा।

وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فَتَعۡسًا لَّهُمۡ وَاَضَلَّ اَعۡمَالَهُمۡ ۝٨

और जो काफ़िर हैं तो उन के लिए बरबादी है और अल्लाह ने उन के अमल हब्त कर दिए हैं।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ كَرِهُوۡا مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ فَاَحۡبَطَ اَعۡمَالَهُمۡ ۝٩

ये इस वजह से के उन्हों ने नापसन्द किया जो अल्लाह ने उतारा, फिर अल्लाह ने उन के आमाल कल्अदम कर दिए।

اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ

क्या फिर वो ज़मीन में चले फिरे नहीं के देखते के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा

الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ‌ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ‌ۖ وَلِلۡكٰفِرِيۡنَ

जो उन से पेहले थे? जिन को अल्लाह ने मलयामेट कर दिया और काफिरों के लिए उन की

اَمۡثَالُهَا ۝١٠ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوۡلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

मिसालें हैं। ये इस वजह से के अल्लाह ईमान वालों का कारसाज़ है

وَاَنَّ الۡكٰفِرِيۡنَ لَا مَوۡلٰى لَهُمۡ ۝١١ اِنَّ اللّٰهَ يُدۡخِلُ الَّذِيۡنَ

ع ٤

और जो काफिर हैं उन का कोई कारसाज़ नहीं। यक़ीनन अल्लाह उन लोगों को जो ईमान

اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا

लाए और नेक अमल करते रहे उन को ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الۡاَنۡهٰرُ‌ؕ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يَتَمَتَّعُوۡنَ وَيَاۡكُلُوۡنَ

होंगी। और जो काफिर हैं वो मज़े कर रहे हैं और खाते हैं जैसा के

كَمَا تَاۡكُلُ الۡاَنۡعَامُ وَالنَّارُ مَثۡوًى لَّهُمۡ ۝١٢ وَكَاَيِّنۡ

चौपाए खाते हैं, हालांके आग उन का ठिकाना है। और कितनी बस्तियाँ

مِّنۡ قَرۡيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنۡ قَرۡيَتِكَ الَّتِىۡۤ اَخۡرَجَتۡكَ‌ۚ

थीं जो तुम्हारी इस बस्ती से जिस ने आप को निकाला उस से ज़्यादा कूव्वत वाली थीं?

اَهۡلَكۡنٰهُمۡ فَلَا نَاصِرَ لَهُمۡ ﴿١٣﴾ اَفَمَنۡ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ
उन को हम ने हलाक किया, फिर उन का कोई मददगार भी नहीं हुवा। क्या वो शख़्स जो अपने रब की तरफ़ से रोशन रास्ते
مِّنۡ رَّبِّهٖ كَمَنۡ زُيِّنَ لَهٗ سُوۡٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ ﴿١٤﴾
पर है उस शख़्स की तरह हो सकता है जिस के लिए उस की बदअमली मुज़य्यन की गई और जो अपनी ख्वाहिशात के
مَثَلُ الۡجَنَّةِ الَّتِىۡ وُعِدَ الۡمُتَّقُوۡنَ ؕ فِيۡهَاۤ اَنۡهٰرٌ
पीछे चलते हैं। उस जन्नत का हाल जिस का मुत्तक़ियों से वादा किया गया है, ये है के उस में नेहरें हैं
مِّنۡ مَّآءٍ غَيۡرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنۡهٰرٌ مِّنۡ لَّبَنٍ لَّمۡ يَتَغَيَّرۡ طَعۡمُهٗ ۚ
पानी की जो बदबूदार नहीं। और नेहरें हैं दूध की जिस का मज़ा बदला नहीं।
وَاَنۡهٰرٌ مِّنۡ خَمۡرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيۡنَ ۚ وَاَنۡهٰرٌ
और नेहरें हैं शराब की जो पीने वालों के लिए लज़ीज़ है। और नेहरें हैं
مِّنۡ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَلَهُمۡ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ
सुथरे शहद की। और उन के लिए उन में हर क़िस्म के मेवे हैं
وَمَغۡفِرَةٌ مِّنۡ رَّبِّهِمۡ ؕ كَمَنۡ هُوَ خَالِدٌ فِى النَّارِ
और उन के रब की तरफ से मग़फिरत है। क्या ये शख़्स उस शख़्स की तरह हो सकता है जो आग में हमेशा रहेगा
وَسُقُوۡا مَآءً حَمِيۡمًا فَقَطَّعَ اَمۡعَآءَهُمۡ ﴿١٥﴾ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ
और जिन्हें गर्म पानी पिलाया जाएगा, फिर वो पानी उन की अंतड़ियाँ काट देगा? और उन में से कुछ वो हैं
يَّسۡتَمِعُ اِلَيۡكَ ۚ حَتّٰۤى اِذَا خَرَجُوۡا مِنۡ عِنۡدِكَ قَالُوۡا
जो आप की तरफ कान लगाते हैं। यहाँ तक के जब वो आप के पास से निकलते हैं तो उन
لِلَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۚ اُولٰٓئِكَ الَّذِيۡنَ
से केहते हैं जिन को इल्म दिया गया के पैग़म्बर ने अभी क्या कहा? ये वो हैं के जिन
طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ وَاتَّبَعُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ ﴿١٦﴾
के दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और ये लोग अपनी ख़्वाहिशात के पीछे चले हैं।
وَالَّذِيۡنَ اهۡتَدَوۡا زَادَهُمۡ هُدًى وَّاٰتٰهُمۡ تَقۡوٰٮهُمۡ ﴿١٧﴾
और जो हिदायत पर हैं अल्लाह ने उन को मज़ीद हिदायत दी है और उन को उन का तक़्वा अता किया है।
فَهَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً ۚ
वो मुन्तज़िर नहीं हैं मगर क़यामत के के उन के पास अचानक आ जाए।

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ

तो उस की अलामतें तो आ ही चुकी हैं। फिर उन के लिए अपनी नसीहत हासिल करने का वक़्त कहाँ रहेगा जब

ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ

क़यामत उन के पास आ पहोंचेगी? तो आप यक़ीन रखिए के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अपने और

لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के गुनाह के लिए इस्तिग़फार कीजिए। और अल्लाह तुम्हारे

مُتَقَلَّبَكُمْ وَ مَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

चलने फिरने और रेहने सेहने की खबर रखता है। और ईमान वाले केहते हैं के

لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ

कोई सूरत क्यूं नहीं उतारी जाती? फिर जब कोई मुहकम सूरत उतारी जाती है

وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

और उस में क़िताल का ज़िक्र होता है, तो आप देखोगे उन लोगों को जिन के दिलों में

مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ

बीमारी है के वो आप की तरफ़ देखते हैं उस शख़्स के देखने की तरह के जिस पर मौत की ग़शी

مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫

तारी हो। तो उन के लिए हलाकत है। उन की ताअत और बात चीत मालूम है।

فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا

फिर जब मुआमला पुख़्ता हो जाए, फिर अगर ये अल्लाह के साथ सच्चे रहें तो ये उन के लिए

لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا

बेहतर है। तुम से तवक़्क़ुअ ये है के अगर तुम हाकिम बन जाओ तो मुल्क में

فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْآ اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

फसाद बरपा करो और क़तारहमी करो। यही लोग हैं

لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

जिन पर अल्लाह ने लानत फ़रमाई है, फिर उन को बेहरा कर दिया है और उन की आँखों को अन्धा कर दिया है।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ

क्या फिर वो कुरआन में तदब्बुर नहीं करते या उन के दिलों पर ताले पड़े हुए हैं? यक़ीनन

الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ

जो लोग पुश्त फेर कर हट गए इस के बाद के उन के सामने हिदायत

لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾

वाज़ेह हो चुकी थी, शैतान ने ये काम उन के लिए मुज़य्यन किया और उन को मुहलत दिखाई।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ

ये इस वजह से के उन्हों ने कहा उन लोगों से जो नापसन्द करते हैं उस कुरआन को जो अल्लाह ने उतारा है

سَنُطِيْعُكُمْ فِىْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

के मुस्तक़्बिल में हम बाज़ उमूर में तुम्हारी बात मानेंगे। हालांके अल्लाह जानता है उन के चुपके से कही हुई बात को।

فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ

फिर क्या हाल होगा जब के फरिश्ते उन की जान निकाल रहे होंगे, मार रहे होंगे उन के चेहरों पर

وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ

और उन की पीठों पर? ये अज़ाब इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह को नाराज़ करने वाली चीज़ों को अपनाया

وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ اَمْ حَسِبَ

और उस की खुशनूदी को नापसन्द किया, फिर अल्लाह ने उन के आमाल हब्त कर दिए। क्या वो लोग

الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ

जिन के दिलों में मर्ज़ है उन्हों ने ये समझ रखा है के अल्लाह उन का कीना हरगिज़ नहीं निकालेगा (यानी ज़ाहिर नहीं

اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ

करेगा)? और अगर हम चाहें तो आप को हम वो मुनाफिक़ीन दिखा दें, फिर आप उन को पेहचान लें

بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِىْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ

उन की अलामत से। और आप उन को बात के लेहजे में ज़रूर पेहचान लोगे। और अल्लाह को

يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ

तुम्हारे आमाल का इल्म है। और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएंगे ताके हम तुम में से जिहाद करने

مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۠ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

वालों और सब्र करने वालों को मालूम कर लें, और ताके तुम्हारे अन्दरूनी हाल को आज़माएं।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا

यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल

الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى
की मुखालफ़त की इस के बाद के उन के लिए हक़ वाज़ेह हो गया

لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝۳۲ يٰۤاَيُّهَا
वो अल्लाह को ज़रा भी ज़रर हरगिज़ नहीं पहोंचा सकेंगे। और अनक़रीब अल्लाह उन के आमाल हब्त कर देगा। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ
ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो

وَلَا تُبْطِلُوْۤا اَعْمَالَكُمْ ۝۳۳ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا
और अपने अमल बातिल मत करो। यक़ीनन वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और अल्लाह

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ
के रास्ते से रोका, फिर वो मर गए इस हाल में के वो काफिर थे तो अल्लाह उन की हरगिज़

اللّٰهُ لَهُمْ ۝۳۴ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ
मग़फिरत नहीं करेगा। फिर तुम कमज़ोर मत बनो और तुम सुल्ह की तरफ मत बुलाओ। और तुम ही

الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝۳۵
ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे अमल कम भी नहीं करेगा।

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا
दुन्यवी ज़िन्दगी तो महज़ खेल और तमाशा है। और अगर तुम ईमान लाओगे

وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝۳۶
और मुत्तक़ी बनोगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारा अज्र देगा और तुम से तुम्हारे माल नहीं मांगेगा।

اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ
अगर वो तुम से माल का सवाल करे, फिर वो तुम से इसरार से सवाल करे, तो तुम बुख्ल करने लगो और वो तुम्हारे

اَضْغَانَكُمْ ۝۳۷ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا
कीने खोल कर रहे। सुनो! तुम वो लोग हो के तुम्हें बुलाया जाता है ताके अल्लाह के रास्ते में

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا
तुम खर्च करो। फिर तुम में से बाज़ बुख्ल करते हैं। और जो भी बुख्ल करेगा तो सिर्फ

يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ
अपने आप से बुख्ल करेगा। और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम मुहताज हो।

وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ
और अगर तुम ऐराज़ करोगे तो अल्लाह तुम्हारे अलावा क़ौम को बदले में ले आएगा, फिर

لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾
वो तुम जैसे नहीं होंगे।

اٰيَاتُهَا ٢٩ (٤٨) سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ (١١١) رُكُوْعَاتُهَا ٤
उस में २९ आयतें हैं सूरह फत्ह मदीना में नाज़िल हुई और ४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ
यक़ीनन हम ने आप को फत्हे मुबीन के साथ कामयाबी अता की। ताके अल्लाह आप के लिए

مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ
आप के अगले और पिछले गुनाह बख्श दे, और अल्लाह अपनी नेअमत आप पर इतमाम तक पहोंचाए,

وَ يَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢﴾ وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ
और आप को सीधे रास्ते की रहनुमाई करे। और आप की अल्लाह ज़बर्दस्त

نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ
नुसरत करे। वही है जिस ने सकीना उतारा ईमान

فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۭ
वालों के दिलों में ताके वो अपने मौजूदा ईमान के साथ ईमान में और बढ़ जाएं।

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا
और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन के लशकर हैं। और अल्लाह इल्म वाला,

حَكِيْمًا ﴿٤﴾ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
हिक्मत वाला है। ताके अल्लाह ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को जन्नतों में दाखिल करे

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ
जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे और अल्लाह उन

عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا
से उन की बुराइयाँ दूर कर दे। और ये अल्लाह के नज़दीक बहोत बड़ी

عَظِيۡمًا ۙ﴿۵﴾ وَّيُعَذِّبَ الۡمُنٰفِقِيۡنَ وَالۡمُنٰفِقٰتِ

कामयाबी है। और ताके अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों

وَ الۡمُشۡرِكِيۡنَ وَالۡمُشۡرِكٰتِ الظَّآنِّيۡنَ بِاللّٰهِ

और मुशरिक मर्दों और मुशिरक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह के साथ बुरा गुमान

ظَنَّ السَّوۡءِ ؕ عَلَيۡهِمۡ دَآئِرَةُ السَّوۡءِ ۚ وَ غَضِبَ اللّٰهُ

करने वाले हैं। उन पर मसाइब का चक्कर घूमता रहा। और अल्लाह उन पर गज़बनाक

عَلَيۡهِمۡ وَ لَعَنَهُمۡ وَاَعَدَّ لَهُمۡ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتۡ

है और उस ने उन पर लानत फ़रमाई है और उन के लिए जहन्नम तय्यार की है। और वो बुरी

مَصِيۡرًا ﴿۶﴾ وَلِلّٰهِ جُنُوۡدُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ

जगह है। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन के लशकर हैं।

وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيۡزًا حَكِيۡمًا ﴿۷﴾ اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ

और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। यक़ीनन हम ने आप को

شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيۡرًا ۙ﴿۸﴾ لِّتُؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ

शहादत देने वाला, बशारत देने वाला, डराने वाला बना कर भेजा है। ताके तुम ईमान लाओ अल्लाह पर

وَ رَسُوۡلِهٖ وَتُعَزِّرُوۡهُ وَتُوَقِّرُوۡهُ ؕ وَتُسَبِّحُوۡهُ بُكۡرَةً

और उस के रसूल पर और तुम उन की नुसरत करो और उन की ताज़ीम करो। और तुम अल्लाह की सुबह व शाम

وَّ اَصِيۡلًا ﴿۹﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يُبَايِعُوۡنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوۡنَ

तस्बीह करो। जो लोग आप से बैअत करते हैं वो अल्लाह ही से बैअत कर रहे

اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوۡقَ اَيۡدِيۡهِمۡ ۚ فَمَنۡ نَّكَثَ

हैं। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। फिर जो बैअत तोड़ेगा

فَاِنَّمَا يَنۡكُثُ عَلٰى نَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ اَوۡفٰى بِمَا عٰهَدَ

तो खुद अपने नुक़सान के लिए तोड़ेगा। और जो पूरा करेगा उस को जिस पर

عَلَيۡهُ اللّٰهَ فَسَيُؤۡتِيۡهِ اَجۡرًا عَظِيۡمًا ﴿۱۰﴾ سَيَقُوۡلُ

ع ١

उस ने अल्लाह से मुआहदा किया, तो अनक़रीब अल्लाह उन्हें भारी अज्र देगा। अनक़रीब कहेंगे

لَكَ الۡمُخَلَّفُوۡنَ مِنَ الۡاَعۡرَابِ شَغَلَتۡنَاۤ اَمۡوَالُنَا

आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से वो लोग जो अअराब में से पीछे रेहने वाले हैं के हमारे माल और हमारे

وَاَهۡلُوۡنَا فَاسۡتَغۡفِرۡ لَنَا ۚ يَقُوۡلُوۡنَ بِاَلۡسِنَتِهِمۡ

घर वालों ने हमें मशगूल कर दिया, इस लिए आप हमारे लिए इस्तिग़फार कीजिए। अनक़रीब वो अपनी ज़बान से कहेंगे

مَّا لَيۡسَ فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ ؕ قُلۡ فَمَنۡ يَّمۡلِكُ لَـكُمۡ

वो जो उन के दिलों में नहीं है। आप फरमा दीजिए फिर कौन मालिक है तुम्हारे लिए

مِّنَ اللّٰهِ شَيۡـئًا اِنۡ اَرَادَ بِكُمۡ ضَرًّا اَوۡ اَرَادَ

अल्लाह के मुक़ाबले में किसी चीज़ का अगर वो तुम्हें ज़रर पहोंचाने या तुम्हें नफा पहोंचाने का

بِكُمۡ نَفۡعًا ؕ بَلۡ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرًا ﴿۱۱﴾

इरादा करे? बल्के अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है।

بَلۡ ظَنَنۡتُمۡ اَنۡ لَّنۡ يَّنۡقَلِبَ الرَّسُوۡلُ وَالۡمُؤۡمِنُوۡنَ

बल्के तुम ने गुमान किया के रसूल और ईमान वाले अपने घर वालों के पास कभी भी

اِلٰٓى اَهۡلِيۡهِمۡ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِىۡ قُلُوۡبِكُمۡ

वापस पलट कर नहीं आएंगे, और उस को तुम्हारे दिलों में मुज़य्यन किया गया

وَظَنَنۡتُمۡ ظَنَّ السَّوۡءِ ۖۚ وَكُنۡتُمۡ قَوۡمًا ۢ بُوۡرًا ﴿۱۲﴾

और तुम ने बुरा गुमान किया। और तुम हलाक होने वाली क़ौम थी।

وَمَنۡ لَّمۡ يُؤۡمِنۡۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعۡتَدۡنَا

और जो ईमान नहीं लाएगा अल्लाह और उस के रसूल पर, तो हम ने काफिरों के लिए

لِلۡكٰفِرِيۡنَ سَعِيۡرًا ﴿۱۳﴾ وَلِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ

दहकती आग तय्यार कर रखी है। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

يَغۡفِرُ لِمَنۡ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ

अल्लाह जिस की चाहे मग़फिरत कर दे और अज़ाब दे जिसे चाहे। और अल्लाह बहोत ज़्यादा

غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ﴿۱۴﴾ سَيَقُوۡلُ الۡمُخَلَّفُوۡنَ اِذَا انۡطَلَقۡتُمۡ

बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। अनक़रीब पीछे रेहने वाले कहेंगे जब ग़नीमतें

اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاۡخُذُوۡهَا ذَرُوۡنَا نَتَّبِعۡكُمۡ ۚ

लेने के लिए तुम चलोगे के हमें छोड़ दो के तुम्हारे पीछे पीछे हम भी आएं।

يُرِيۡدُوۡنَ اَنۡ يُّبَدِّلُوۡا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلۡ لَّنۡ تَتَّبِعُوۡنَا

वो चाहते हैं के अल्लाह का कलाम बदल दें। आप फरमा दीजिए के तुम हमारे पीछे पीछे हरगिज़ नहीं आ सकते,

كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ

इसी तरह अल्लाह ने इस से पेहले फरमा दिया है। तब वो कहेंगे

بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥﴾

बल्के तुम हम से हसद करते हो। बल्के वो नहीं समझते मगर थोड़ा सा।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ

आप फरमा दीजिए अअराब में से पीछे रेहने वालों से के अनक़रीब तुम्हें बुलाया जाएगा

اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ

सख्त जंग करने वाली क़ौम की तरफ, उन से तुम क़िताल करोगे या वो सुलह कर लेंगे।

فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ

फिर अगर तुम इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा।

وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا

और अगर तुम रूगरदानी करोगे जैसा के तुम ने इस से पेहले रूगरदानी की है, तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब

اَلِيْمًا ﴿١٦﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ

देगा। अन्धे पर कोई हरज नहीं और लंगड़े पर कोई हरज

حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ

नहीं और बीमार पर कोई हरज नहीं। और जो अल्लाह और उस के रसूल की

وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

इताअत करेगा तो वो उसे ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾

होंगी। और जो ऐराज़ करेगा तो उसे अल्लाह दर्दनाक अज़ाब देंगे।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ

यक़ीनन अल्लाह राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वो बैअत कर रहे थे आप से

تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ

दरख्त के नीचे, फिर अल्लाह ने मालूम कर लिया जो उन के दिलों में है, फिर अल्लाह ने

السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾ وَّمَغَانِمَ

उन पर सकीना उतारा और उन को क़रीबी फ़त्ह बदले में दी। और बदले में

كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۹﴾
दी बहोत सी ग़नीमतें जो वो लेंगे। और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ
अल्लाह ने तुम से बहोत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन को तुम लोगे, फिर उस ने

لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ
तुम्हें ये जल्दी दे दी, और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए। और ताके ये

اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲۰﴾
ईमान वालों के लिए निशानी बने और अल्लाह तुम्हें सीधे रास्ते की रहनुमाई करे।

وَّ اُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ
और एक दूसरी ग़नीमत जिस पर तुम क़ादिर नहीं हुए जिस का अल्लाह ने इहाता किया है।

وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۱﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ
और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। और अगर तुम से क़िताल करते

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا
ये काफिर तो वो पुश्त फेर कर भागते, फिर वो कोई मददगार और

وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۲۲﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ
हिमायती न पाते। ये अल्लाह की सुन्नत है जो इस से पेहले गुज़र

مِنْ قَبْلُ ۚۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾ وَهُوَ
चुकी है। और अल्लाह की सुन्नत में आप कोई तबदीली हरगिज़ नहीं पाओगे। और वही

الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ
अल्लाह है जिस ने उन के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिए

بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ
मक्का की वादी में इस के बाद के उस ने तुम्हें उन पर फ़त्ह दी।

وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿۲۴﴾ هُمُ الَّذِيْنَ
और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। ये वही हैं जो

كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ
काफिर हैं और जिन्हों ने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका और कुरबानी के

مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ

जानवर को जो रुका हुवा रेह गया उस मौक़े में पहोंचने से रोका। और अगर ईमान वाले मर्द

وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَئُوْهُمْ

और ईमान वाली औरतें न होतीं जिन को तुम नहीं जानते के तुम उन को रौंद डालोगे

فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ

तो तुम को उन से बेखबरी में नुक़सान पहोंच जाता। ताके अल्लाह अपनी रहमत में

اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا

दाखिल करे जिसे चाहे। अगर ये मुसलमान कुफ्फार से अलग हो गए होते, तो हम उन में से

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ

काफिरों को दर्दनाक अज़ाब देते। जब के काफिरों ने

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ

अपने दिल में ज़िद की ठान ली, वो भी जाहिलीयत

الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

की ज़िद, तो अल्लाह ने अपना सकीना उतारा अपने रसूल पर

وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا

और ईमान वालों पर और उस ने तक़्वे का कलिमा उन से चिपका दिया और वही

اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾

उस के ज़्यादा मुस्तहिक़ और उस के अहल थे। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ

यक़ीनन अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख्वाब दिखाया था के वाक़ेअ

الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ

में मस्जिदे हराम में इनशाअल्लाह तुम ज़रूर दाखिल होंगे अमन से, अपने सरों को

رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ

मुंडाए हुए और क़स्र कराए हुए बेखौफ हो कर। फिर अल्लाह ने मालूम कर लिया वो जो तुम

مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾

नहीं जानते, फिर उस ने उस के अलावा क़रीबी फ़त्ह दे दी।

هُوَ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰی وَ دِیْنِ الْحَقِّ

वही अल्लाह है जिस ने अपना रसूल हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा

لِیُظْهِرَهٗ عَلَی الدِّیْنِ كُلِّهٖ ؕ وَ كَفٰی بِاللّٰهِ شَهِیْدًا ؕ﴿۲۸﴾

ताके वो उसे तमाम अदयान पर ग़ालिब कर दे। और अल्लाह गवाह काफी है।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के भेजे हुए पैग़म्बर हैं। और वो सहाबा जो आप के साथ हैं वो कुफ्फार पर सब

عَلَی الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا یَّبْتَغُوْنَ

से ज़्यादा सख्त, आपस में रहमदिल हैं, आप उन को देखोगे रुकूअ सज्दा करते हुए, वो अल्लाह का

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا ؗ سِیْمَاهُمْ فِیْ وُجُوْهِهِمْ

फज़्ल और अल्लाह की खुशनूदी तलब करते हैं। उन की अलामत सज्दे के निशान की

مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ ۛۚ

उन के चेहरों पर है। ये उन की सिफत तौरात में भी है।

وَ مَثَلُهُمْ فِی الْاِنْجِیْلِ ۛ۫ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ

और उन की सिफ़त इन्जील में भी है उस खेती की तरह जिस ने अपनी सुई निकाली, फिर उस को मज़बूत किया,

فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰی عَلٰی سُوْقِهٖ یُعْجِبُ الزُّرَّاعَ

फिर वो सख्त हो गई है, फिर वो अपने तने पर खड़ी हो गई जो खुश करती है किसानों को

لِیَغِیْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا

ताके अल्लाह उन के ज़रिए काफिरों को गुस्सा दिलाए। अल्लाह ने उन से जो उन में से ईमान लाए

وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا ۠﴿۲۹﴾

और नेक अमल करते रहे मग़फिरत का और भारी अज्र का वादा किया है।

معانقہ ١٥ عند المتأخرين ١٢ ع ١٢

ایاتها ١٨ (٤٩) سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٦) رکوعاتها ٢

उस में १८ आयतें हैं सूरह हुजुरात मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَیْنَ یَدَیِ اللّٰهِ

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उस के रसूल के सामने पेशदस्ती

وَ رَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝۱

न करो और अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ

ऐ ईमान वालो! तुम अपनी आवाज़ें नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की आवाज़

صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ

पर बुलन्द मत करो, और उन के सामने ज़ोर से बात न करो तुम में से एक के दूसरे

بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ

से बात करने की तरह कहीं तुम्हारे आमाल हब्त न हो जाएं, इस हाल में के

لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ

तुम्हें पता भी न हो। यक़ीनन जो लोग अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल

عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ

के सामने पस्त रखते हैं यही लोग हैं जिन के दिलों के तक़वे का

قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝۳

अल्लाह ने इम्तिहान लिया है। उन के लिए मग़फिरत है और बड़ा अज्र है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ

यक़ीनन वो लोग जो आप को हुजरों के बाहर से पुकारते हैं, उन में से अक्सर

لَا يَعْقِلُوْنَ ۝۴ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ

अक़्ल नहीं रखते। और अगर वो सब्र करते यहाँ तक के आप उन की

اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵

तरफ निकलते तो ये उन के लिए बेहतर होता। और अल्लाह बख्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ

ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई फासिक़ कोई खबर ले कर आए

فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا

तो तुम अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लो के कहीं नावाक़िफीयत से किसी क़ौम को तुम मुसीबत पहोंचा दो,

عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝۶ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ

फिर अपने किए पर नादिम बनो। और जान लो के तुम में अल्लाह के

اللّٰہِ ؕ لَوْ یُطِیْعُکُمْ فِیْ کَثِیْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ

रसूल हैं। अगर वो तुम्हारा केहना मान लें बहोत से उमूर में तो तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ,

وَلٰکِنَّ اللّٰہَ حَبَّبَ اِلَیْکُمُ الْاِیْمَانَ وَزَیَّنَہٗ

लेकिन अल्लाह ने तुम्हारी तरफ ईमान को महबूब बना दिया और उस को मुज़य्यन किया

فِیْ قُلُوْبِکُمْ وَکَرَّہَ اِلَیْکُمُ الْکُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْیَانَ ؕ

तुम्हारे दिलों में और तुम्हारे लिए कुफ्र और नाफरमानी और बदअमली को नापसन्दीदा बना दिया।

اُولٰٓئِکَ ہُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ﴿۷﴾ فَضْلًا مِّنَ اللّٰہِ وَنِعْمَۃً ؕ

यही लोग अल्लाह के फ़ज़्ल और इन्आम से सीधे रास्ते वाले हैं।

وَاللّٰہُ عَلِیْمٌ حَکِیْمٌ ﴿۸﴾ وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ

और अल्लाह इल्म वाले, हिक्मत वाले हैं। और अगर ईमान वालों में से दो

مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَیْنَہُمَا ۚ

जमाअतें आपस में लड़ पड़ें तो तुम उन के दरमियान सुल्ह करा दो।

فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىہُمَا عَلَی الْاُخْرٰی فَقَاتِلُوا الَّتِیْ

फिर अगर उन में से एक जमाअत दूसरी पर ज़्यादती करे तो तुम सब क़िताल करो उस से जो ज़्यादती

تَبْغِیْ حَتّٰی تَفِیْٓءَ اِلٰۤی اَمْرِ اللّٰہِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ

कर रही है, यहाँ तक के वो अल्लाह के हुक्म की तरफ वापस लौट आए। फिर अगर वो वापस लौट जाए

فَاَصْلِحُوْا بَیْنَہُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ

तो तुम उन के दरमियान सुल्ह करा दो इन्साफ से और तुम इन्साफ करो।

اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الْمُقْسِطِیْنَ ﴿۹﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَۃٌ

यक़ीनन अल्लाह इन्साफ करने वालों को पसन्द करते हैं। ईमान वाले तो भाई भाई ही हैं,

فَاَصْلِحُوْا بَیْنَ اَخَوَیْکُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰہَ لَعَلَّکُمْ

तो तुम अपने भाइयों के दरमियान सुल्ह कर दिया करो। और अल्लाह से डरते रहो ताके तुम पर

تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۰﴾ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا یَسْخَرْ قَوْمٌ

रहम किया जाए। ऐ ईमान वालो! कोई क़ौम किसी क़ौम से तमस्खुर

مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤی اَنْ یَّکُوْنُوْا خَیْرًا مِّنْہُمْ وَلَا

न करे, हो सकता है के वो उन से बेहतर हों और न

نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ

औरतें दूसरी औरतों से, शायद वो उन से बेहतर हों।

وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ

और तुम अपनी ज़ात पर ऐब न लगाओ। और एक दूसरे को बुरे अलक़ाब से न पुकारो।

بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ

ईमान के बाद फ़िस्क़ बुरा नाम है। और जो

لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١١﴾ يٰٓاَيُّهَا

तौबा नहीं करेगा तो ये लोग ज़ालिम हैं। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫

ईमान वालो! बहोत से गुमानों से बचो।

اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ

यक़ीनन बाज़ गुमान गुनाह होते हैं, और तजस्सुस मत करो, और तुम में से एक

بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ

दूसरे की ग़ीबत न करो। क्या तुम में से कोई एक पसन्द करेगा के अपने मुर्दार भाई का

اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

गोश्त खाए? तो यक़ीनन तुम उस को नापसन्द करोगे। और अल्लाह से डरो।

اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ

यक़ीनन अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, रहम करने वाला है। ऐ इन्सानो! यक़ीनन हम ने तुम्हें एक

مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ

मर्द और एक औरत से पैदा किया, और हम ने तुम्हें खानदान और क़बीले बनाया ताके तुम एक दूसरे को

لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ؕ

पेहचानो। यक़ीनन तुम में से सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला अल्लाह के नज़दीक वो है जो तुम में सब से ज़्यादा तक़वे वाला हो।

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿١٣﴾ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ

यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, बाखबर है। देहाती केहते हैं के हम ईमान लाए हैं।

قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

आप फरमा दीजिए के तुम ईमान नहीं लाए, लेकिन तुम कहो के हम इस्लाम लाए हैं और अब तक

يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا
ईमान तुम्हारे कुलूब में दाखिल नहीं हुवा। और अगर तुम अल्लाह और उस

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ
के रसूल की इताअत करोगे तो वो तुम्हारे आमाल में ज़रा सी भी कमी नहीं करेगा।

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ
यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। ईमान वाले तो सिर्फ वही हैं जो

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا
अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाए हैं, फिर उन्हों ने शक नहीं किया और जिन्हों ने

بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ
अपने मालों और जानों से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया। यही

هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿١٥﴾ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ
लोग सच्चे हैं। आप फरमा दीजिए क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बतला रहे हो?

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
हालांके अल्लाह खूब जानता है उस को जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है।

وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ
और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। वो आप पर एहसान जताते हैं

اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ
के वो इस्लाम लाए हैं। आप फरमा दीजिए के एहसान मेरे ऊपर मत जतलाओ अपने इस्लाम का।

بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ
बल्के अल्लाह तुम पर एहसान जतलाता है के उस ने तुम्हें ईमान की हिदायत दी,

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ
अगर तुम सच्चे हो। यक़ीनन अल्लाह आसमानों

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ
की और ज़मीन की छुपी हुई चीज़ें जानता है। और अल्लाह

بَصِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾
देख रहा है उन कामों को जो तुम करते हो।

اٰیَاتُہَا ۴۵ (۵۰) سُوْرَۃُ قٓ مَکِّیَّۃٌ (۳۴) رُکُوْعَاتُہَا ۳

उस में ४५ आयतें हैं सूरह क़ॉफ मक्का में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِیْدِ ۝۱ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ

क़ॉफ। बुज़ुर्गी वाले कुरआन की क़सम! बल्के ये तअज्जुब करते हैं के उन के पास

مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَیْءٌ

उन्हीं में से डराने वाला आया, फिर काफिरों ने कहा के ये क़ाबिले

عَجِیْبٌ ۝۲ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ

तअज्जुब चीज़ है। के क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे? ये वापस लौटना

بَعِیْدٌ ۝۳ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ

बहोत दूर है। यक़ीनन हमें मालूम है वो जो ज़मीन उन से कम कर रही है।

وَ عِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِیْظٌ ۝۴ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ

और हमारे पास महफूज़ रखने वाला दफ्तर है। बल्के उन्हों ने हक़ को झुठलाया

لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِیْٓ اَمْرٍ مَّرِیْجٍ ۝۵ اَفَلَمْ یَنْظُرُوْٓا

जब वो उन के पास आया, बल्के वो खलत मलत मुआमले में हैं। क्या उन्हों ने नज़र नहीं की

اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَیْفَ بَنَیْنٰهَا وَ زَیَّنّٰهَا وَمَا لَهَا

अपने ऊपर आसमान की तरफ कैसा हम ने उसे बनाया और सजाया और जिस में

مِنْ فُرُوْجٍ ۝۶ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَیْنَا فِیْهَا

कोई फटन नहीं? और ज़मीन हम ने फैलाई और उस में पहाड़

رَوَاسِیَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِیْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِیْجٍ ۝۷

डाल दिए और उस में हम ने तमाम खूबसूरत जोड़े उगाए।

تَبْصِرَةً وَّ ذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِیْبٍ ۝۸ وَنَزَّلْنَا

अल्लाह की तरफ रूजूअ करने वाले हर बन्दे की बसीरत और नसीहत के लिए। और हम ने

مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ

आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उस से बाग़ात उगाए और अनाज

الْحَصِيْدِ ﴿٩﴾ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ﴿١٠﴾

जो काटा जाता है। और ऊँचे ऊँचे खजूर के दरख्त, जिस के लिए तरतीब से लगे हुए खोशे होते हैं।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ

बन्दों की रोज़ी के तौर पर। और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन ज़िन्दा की। इसी तरह

الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ

क़ब्रों से निकलना होगा। उन से पेहले क़ौमे नूह ने और रस्स वालों ने

وَثَمُوْدُ ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿١٣﴾ وَّاَصْحٰبُ

और क़ौमे समूद, और क़ौमे आद और फिरऔन और लूत के भाइयों ने, और ऐका

الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

वालों ने और तुब्बअ की क़ौम ने झुठलाया। सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया, फिर मेरी धमकी हक़ीक़त बन गई।

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ

क्या हम पेहली मरतबा पैदा कर के थक गए हैं? (नहीं) बल्के वो अज़ सरे नौ पैदा होने से शक

جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ

में हैं। यक़ीनन हम ने इन्सान को पैदा किया और उस के नफसानी खतरात हम खूब

ع ١٥ ١٥

بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾

जानते हैं। और रगे जान से भी ज़्यादा हम उस के क़रीब हैं।

اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ

जब के दाईं और बाईं तरफ से दो बैठे हुए लेने वाले ले रहे

قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ

होते हैं। वो कोई बात नहीं निकालता मगर उस के सामने एक निगराँ

عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾ وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ

तय्यार होता है। और मौत की सख्ती सच मुच आ गई। (काफिर से कहा जाएगा के) ये

مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ

वो है जिस से तू किनारा किया करता था। और सूर फूंका जाएगा। ये

يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ

अज़ाब का दिन है। और हर शख्स आएगा उस के साथ एक हांकने वाला

وَّ شَهِيۡدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدۡ كُنۡتَ فِىۡ غَفۡلَةٍ مِّنۡ هٰذَا فَكَشَفۡنَا

और एक गवाह होगा। (कहा जाएगा) यक़ीनन तू इस से ग़फलत में था, फिर हम ने

عَنۡكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الۡيَوۡمَ حَدِيۡدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ

तुझ से तेरा परदा हटा दिया, फिर तेरी नज़र आज कितनी तेज़ है? और उस का

قَرِيۡنُهٗ هٰذَا مَا لَدَىَّ عَتِيۡدٌ ؕ﴿٢٣﴾ اَلۡقِيَا فِىۡ جَهَنَّمَ

साथी कहेगा के जो मेरे पास था वो ये हाज़िर है। (हुक्म होगा) हर सरकश काफिर को

كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيۡدٍ ۙ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلۡخَيۡرِ مُعۡتَدٍ مُّرِيۡبِ ۙ﴿٢٥﴾

जहन्नम में डाल दो। जो खैर से बहोत ज़्यादा रोकने वाला, जुल्म करने वाला, शक करने वाला था।

اۨلَّذِىۡ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلۡقِيٰهُ فِى الۡعَذَابِ

जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद बनाया, तो उस को सख्त अज़ाब में

الشَّدِيۡدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِيۡنُهٗ رَبَّنَا مَاۤ اَطۡغَيۡتُهٗ

फैंक दो। उस का साथी कहेगा के ऐ हमारे रब! मैं ने इस को सरकश नहीं बनाया,

وَلٰـكِنۡ كَانَ فِىۡ ضَلٰلٍۢ بَعِيۡدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخۡتَصِمُوۡا لَدَىَّ وَقَدۡ

लेकिन वो खुद ही दूर वाली गुमराही में था। अल्लाह फरमाएंगे मेरे सामने झगड़ा मत करो, मैं ने

قَدَّمۡتُ اِلَيۡكُمۡ بِالۡوَعِيۡدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الۡقَوۡلُ لَدَىَّ

तुम्हारी तरफ पेहले वईद भेज दी थी। मेरे यहाँ क़ौल में तबदीली नहीं

وَمَاۤ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلۡعَبِيۡدِ ﴿٢٩﴾ۧ يَوۡمَ نَقُوۡلُ لِجَهَنَّمَ

और मैं बन्दों पर ज़रा भी जुल्म नहीं करता। जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे

هَلِ امۡتَلَاۡتِ وَتَقُوۡلُ هَلۡ مِنۡ مَّزِيۡدٍ ﴿٣٠﴾ وَاُزۡلِفَتِ

क्या तू भर गई? और वो पूछेगी क्या कुछ और भी है? और जन्नत

الۡجَـنَّةُ لِلۡمُتَّقِيۡنَ غَيۡرَ بَعِيۡدٍ ﴿٣١﴾ هٰذَا مَا تُوۡعَدُوۡنَ

मुत्तक़ियों के क़रीब लाई जाएगी, दूर नहीं होगी। (कहा जाएगा) ये वो है जिस का तुम से वादा किया जाता था

لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيۡظٍ ۚ﴿٣٢﴾ مَنۡ خَشِىَ الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَيۡبِ

हर तौबा करने वाले, हिफाज़त करने वाले कि लिए। जो भी रहमान से डरे बग़ैर देखे

وَجَآءَ بِقَلۡبٍ مُّنِيۡبِ ۙ﴿٣٣﴾ اۨدۡخُلُوۡهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوۡمُ

और तौबा करने वाला दिल ले कर आए। (तो उस से कहा जाएगा) तुम उस में सलामती के साथ दाखिल हो जाओ। ये हमेशा

الْخُلُوْدِ۝٣٤ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ۝٣٥

रेहने का दिन है। उन के लिए उस में वो नेअमतें होंगी जो वो चाहेंगे और हमारे पास और मज़ीद भी है।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ

और कितनी क़ौमें हम ने उन से पेहले हलाक कीं जो कूव्वत में उन से बढ़ कर

بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ۝٣٦

थीं, फिर वो शेहरों में नक़बज़नी करने लगे। के कहीं भागने की जगह है?

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى

यक़ीनन इस में अलबत्ता नसीहत है उस शख्स के लिए जिस के पास दिल हो, या वो कान

السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ۝٣٧ وَلَقَدْ خَلَقْنَا

लगाए इस हाल में के वो दिल से मुतवज्जेह भी हो। यक़ीनन हम ने आसमानों और ज़मीन

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖۗ وَّمَا مَسَّنَا

और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं छे दिन में पैदा किया। और हमें कुछ भी

مِنْ لُّغُوْبٍ۝٣٨ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ

थकावट नहीं पहोंची। इस लिए आप उन की बातों पर सब्र कीजिए, और सूरज के

رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ۝٣٩ۚ

तुलूअ होने से और सूरज के गुरूब होने से पेहले अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए।

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ۝٤٠ وَاسْتَمِعْ

और रात के वक्त उस की तस्बीह कीजिए और सज्दों (नमाज़) के बाद भी। और सुन

يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ۝٤١ۙ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ

जिस दिन मुनादी क़रीबी जगह से आवाज़ देगा। जिस दिन वो वाकेअ

الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ۝٤٢ اِنَّا نَحْنُ

में चिंघाड़ सुनेंगे। (कहा जाएगा के) ये क़ब्रों से निकलने का दिन है। यक़ीनन हम ही

نُحْيٖ وَ نُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ۝٤٣ۙ يَوْمَ تَشَقَّقُ

ज़िन्दा करते है और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ लौटना है। जिस दिन ज़मीन

الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ۝٤٤

उन से फटेगी इस हाल में के वो दौड़ रहे होंगे। ये क़ब्रों से उठाना हम पर आसान है।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ قف

हम खूब जानते हैं जो वो केह रहे हैं और आप उन पर जब्र करने वाले नहीं हैं।

فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾ ع

इस लिए आप इस कुरआन के ज़रिए नसीहत कीजिए उस को जो मेरे अज़ाब से डरता है।

اٰيَاتُهَا ٦٠ (٥١) سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ (٦٧) رُكُوْعَاتُهَا ٣

उस में ६० आयतें हैं सूरह ज़ारियात मक्का में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجٰرِيٰتِ

उन हवाओं की क़सम जो बिखेर कर गुबार उड़ाती हैं। फिर उन बादलों की जो बोझ को उठाते हैं। फिर उन कशतियों की जो

يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ﴿٤﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾

नर्मी से चलती हैं। फिर उन फरिशतों की जो चीज़ें तक़सीम करते हैं। जिस का तुम से वादा किया जा रहा है, यक़ीनन वो

وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿٧﴾

सच्चा है। और यक़ीनन हिसाब ज़रूर होने वाला है। उस आसमान की क़सम जो रास्तों वाला है।

اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿٨﴾ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ

(मक्का वालो!) यक़ीनन तुम इखतिलाफ वाली बात में हो। उस से फेरा जाता है उस को जो

اُفِكَ ﴿٩﴾ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ

फिरता है। अटकल से बातें करने वाले मारे जाएं। वो जो ग़फलत में पड़े हुए,

سَاهُوْنَ ﴿١١﴾ يَسْئَلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٢﴾ يَوْمَ

भूले हुए हैं। वो सवाल करते हैं के हिसाब का दिन कब है? जिस दिन

هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿١٣﴾ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ط هٰذَا

उन को आग में अज़ाब दिया जाएगा। (कहा जाएगा के) तुम अपने फितने को चखो। ये

الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ

वो है जिस को तुम जल्दी तलब कर रहे थे। यक़ीनन मुत्तक़ी लोग

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٥﴾ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ط اِنَّهُمْ

जन्नतों में और चशमों में होंगे। ले रहे होंगे वो जो उन को उन के रब ने दिया है। (इस

كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ۞ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ
वजह से के) वो इस से पेहले नेकी करने वाले थे। वो रात में कम

مَا يَهْجَعُوْنَ ۞ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۞
सोते थे। और सहर के वक़्त वो इस्तिग़फार किया करते थे।

وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۞ وَفِي الْاَرْضِ
और उन के मालों में हक़ था सवाल करने वाले के लिए भी और ग़ैर साइल फक़ीर के लिए भी। और ज़मीन में

اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۞ وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۞
यक़ीन करने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और खुद तुम्हारे नुफूस में भी। क्या फिर तुम देखते नहीं?

وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۞ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ
और आसमान में तुम्हारी रोज़ी है और वो भी जिस का तुम से वादा किया जाता है। फिर आसमान और

وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۞
ज़मीन के रब की क़सम! यक़ीनन ये हक़ है उस के मानिन्द जैसा के तुम बोलते हो।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۞ اِذْ
क्या तुम्हारे पास इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों का क़िस्सा पहोंचा? जब वो इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के पास दाखिल

دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۞
हुए तो उन्हों ने कहा अस्सलामु अलैकुम। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमया वअलैकुमुस्सलाम। तुम ऐसे लोग हो जो अजनबी मालूम होते

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۞ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ
हो। फिर वो जल्दी से अपने घर वालों की तरफ गए, फिर वो एक मोटा ताज़ा बछड़ा लाए। फिर उस बछड़े को उन के क़रीब किया,

قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۞ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا
इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया तुम खाते क्यूं नहीं? फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने उन की तरफ से खौफ महसूस किया। उन्हों ने

لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۞ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ
कहा आप खौफ न कीजिए। और उन फरिशतों ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इल्म वाले लड़के की बशारत दी। फिर उन की बीवी

فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ۞
सामने आई, फिर माथे पर हाथ मारा और कहा के मैं तो बुढ़िया हो चुकी हूँ, बाँझ हूँ।

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۞
उन्हों ने कहा के इसी तरह होगा। तेरे रब ने कहा है। यक़ीनन वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝٣١ قَالُوْٓا اِنَّآ

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया फिर तुम्हें क्या काम सौंपा गया है, ऐ फरिशतो? वो केहने लगे हम

اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝٣٢ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً

मुजरिम क़ौम की तरफ भेजे गए हैं। ताके हम उन पर मिट्टी

مِّنْ طِيْنٍ ۝٣٣ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ۝٣٤

के पथ्थर बरसाएं। जो तेरे रब के पास हद से आगे बढ़ने वालों के लिए निशानज़दा हैं।

فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣٥

फिर हम ने ईमान वालों को निकाल लिया जो उस बस्ती में थे।

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٣٦ وَتَرَكْنَا

फिर हम ने उस बस्ती में मुसलमानों के एक घर के सिवा नहीं पाया। और हम ने

فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٣٧

उस में निशानी छोड़ दी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं।

وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) में भी जब के हम ने उन्हें फिरऔन की तरफ रोशन दलील दे कर रसूल

مُّبِيْنٍ ۝٣٨ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝٣٩

बना कर भेजा। फिर उस ने अरकाने सल्तनत के बल पर रूगरदानी की, और बोला के ये तो जादूगर या मजनून है।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝٤٠

फिर हम ने उस को और उस के लशकरों को पकड़ लिया, फिर हम ने उन को फैंक दिया समन्दर में जब के उन पर इल्ज़ाम रखा

وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ۝٤١

गया। और क़ौमे आद में जब के हम ने उन पर बाँझ करने वाली हवा भेजी।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ۝٤٢

जिस चीज़ पर भी वो गुज़रती थी उसे गली हुई चीज़ के मानिन्द कर छोड़ती थी।

وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ۝٤٣ فَعَتَوْا

और क़ौमे समूद में जब उन से कहा गया के तुम एक वक़्त तक मज़े उड़ा लो। फिर उन्हों ने

عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٤٤

अपने रब के हुक्म से सरकशी की, फिर उन को कड़क ने पकड़ लिया इस हाल में के वो देख रहे थे।

فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ۝٤٥

फिर उन्हें उठने की भी ताक़त नहीं थी और वो बदला भी नहीं ले सकते थे।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٤٦

और क़ौमे नूह को इस से पेहले। यक़ीनन वो नाफरमान क़ौम थी।

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ۝٤٧ وَالْاَرْضَ

और आसमान को हम ने क़ुदरत से बनाया है, और यक़ीनन हम ही वसीअ करने वाले हैं। और ज़मीन को

فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ۝٤٨ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ

हम ने बिछाया, फिर हम कितना अच्छा बिछाने वाले हैं? और हर चीज़ के

خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝٤٩ فَفِرُّوْا

जोड़े हम ने पैदा किए ताके तुम नसीहत हासिल करो। फिर तुम अल्लाह की तरफ

اِلَى اللّٰهِ ۗ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٥٠ وَلَا تَجْعَلُوْا

भागो। यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए उस की तरफ से साफ साफ डराने वाला हूँ। और तुम अल्लाह के साथ

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۗ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٥١ كَذٰلِكَ

दूसरे माबूद मत बनाओ। यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए उस की तरफ से साफ साफ डराने वाला हूँ। इसी तरह

مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ

उन लोगों के पास भी जो उन से पेहले थे कोई रसूल नहीं आया, मगर उन्हों ने कहा के ये तो जादूगर है

اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝٥٢ اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝٥٣

या पागल है। क्या उन्हों ने एक दूसरे को इस की वसीयत कर रखी है? बल्के ये शरीर क़ौम है।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ۝٥٤ وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى

तो आप उन से ऐराज़ कीजिए, अब आप पर कोई मलामत नहीं। और आप नसीहत करते रहिए, यक़ीनन नसीहत

تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٥ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ

ईमान वालों को नफा देगी। और मैं ने जिन्नात और इन्सान पैदा नहीं किए मगर इस लिए

اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ۝٥٦ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ

ताके वो मेरी इबादत करें। मैं उन से रोज़ी नहीं चाहता और न मैं ये चाहता हूँ

اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ۝٥٧ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ۝٥٨

के वो मुझे खाना दें। यक़ीनन अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है, वो मज़बूत क़ूव्वत वाला है।

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ

फिर उन लोगों के लिए जो ज़ालिम हैं बारी है उन के साथियों की बारी की तरह,

فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿٥٩﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا

फिर वो जल्दी न मचाएँ। फिर हलाकत है काफिरों के लिए

مِن يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

उन के उस दिन से जिस से उन्हें डराया जा रहा है।

ع ٣

رُكُوعَاتُهَا ٢ (٥٢) سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ (٧٦) آيَاتُهَا ٤٩

और २ रूकूअ हैं सूरह तूर मक्का में नाज़िल हुई उस में ४६ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالطُّورِ ﴿١﴾ وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ﴿٢﴾ فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ ﴿٣﴾

तूर की क़सम! और किताब की क़सम जो लिखी हुई है। जो फैलाए हुए कागज़ में है।

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ﴿٤﴾ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ﴿٥﴾ وَالْبَحْرِ

बैते मामूर की क़सम। बुलन्द छत की क़सम। और दरयाए शोर की क़सम,

الْمَسْجُورِ ﴿٦﴾ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ مَّا لَهُ

जो पुर है। यक़ीनन तेरे रब का अज़ाब ज़रूर वाक़ेअ होने वाला है। उस को

مِن دَافِعٍ ﴿٨﴾ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ﴿٩﴾ وَتَسِيرُ

कोई दफा नहीं कर सकता। जिस दिन आसमान कपकपा कर लरज़ेगा। और पहाड़

الْجِبَالُ سَيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾

चलने लगेंगे। फिर उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

وقف لازم

الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ﴿١٢﴾ يَوْمَ يُدَعُّونَ

उन के लिए जो दिल्लगी में खेल रहे हैं। जिस दिन उन्हें धक्के

إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ﴿١٣﴾ هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم بِهَا

दे कर जहन्नम की आग की तरफ लाया जाएगा। (कहा जाएगा के) ये वो आग है जिस को तुम

تُكَذِّبُونَ ﴿١٤﴾ أَفَسِحْرٌ هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿١٥﴾

झुठलाते थे। क्या ये जादू है या तुम देखते नहीं हो?

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ

तुम उस में दाखिल हो जाओ, फिर सब्र करो या सब्र न करो, तुम पर बराबर है।

اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ

तुम्हें सज़ा दी जाएगी उन्ही आमाल की जो तुम करते थे। यक़ीनन मुत्तक़ी लोग

فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰهُمْ

जन्नतों में और नेअमतों में होंगे। मज़ा कर रहे होंगे उस में जो उन को उन के रब ने दिया है। और उन के

رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا ۢ

रब ने उन को आग के अज़ाब से बचा लिया है। (कहा जाएगा के) तुम खाओ, पियो, मुबारकबादी है उन आमाल की

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ

वजह से जो तुम करते थे। वो लोग सफ बसफ रखे हुए तख्तों पर टेक लगाए हुए होंगे।

وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ

और हम उन का खूबसूरत बड़ी आँखों वाली हूरों के साथ निकाह कराएंगे। और वो जो ईमान लाए और उन की जुर्रीयत

ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ

ने ईमान में उन की पैरवी की तो हम उन के साथ उन की जुर्रीयत को मिला देंगे, और हम उन के अमल में

مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾

से कुछ भी उन के लिए कम नहीं करेंगे। हर शख्स रुका रहेगा उन आमाल की वजह से जो उस ने किए।

وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾

और हम उन्हें बराबर देते रहेंगे मेवे और उन का मरगूब गोश्त।

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾

एक दूसरे से छीना झपटी करेंगे वहाँ ऐसे प्याले में जिस में न बकना है और न गुनाह की बातें हैं।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾

और उन पर उन के ऐसे खिदमतगार लड़के चक्कर लगाते रहेंगे गोया वो छुपाए हुए मोती हैं।

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالُوْٓا

और उन में से एक दूसरे की तरफ मुतवज्जेह हो कर पूछेंगे। कहेंगे के

اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا

हम इस से पेहले हमारे घर वालों में डरते रेहते थे। फिर अल्लाह ने हम पर एहसान फरमाया

وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ

और हमें आग के अज़ाब से बचा लिया। हम इस से पेहले उसी को पुकारते थे।

اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾ ع فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ

यक़ीनन वो लुत्फ करने वाला, बड़ा महरबान है। इस लिए आप नसीहत कीजिए, फिर आप अपने रब की नेअमत

رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾ ؕ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ

की वजह से न काहिन हो और न पागल हो। क्या ये लोग केहते हैं के ये तो शाइर है?

نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ

हम उस के मुतअल्लिक़ मौत के हादसे के मुन्तज़िर हैं। आप फरमा दीजिए के तुम मुन्तज़िर रहो, फिर मैं भी

مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾ ؕ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ

तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। क्या उन को उन की अक़्लें इस का हुक्म

بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ ۚ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ

देती हैं या ये लोग शरीर ही हैं? क्या वो केहते हैं के इस नबी ने ये क़ुरआन खुद कहा है?

بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا

बल्के ये ईमान नहीं लाते। तो उन्हें चाहिए के उस जैसा कोई कलाम ले आएं अगर ये

صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾ ؕ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ ؕ

सच्चे हैं। क्या ये बग़ैर किसी चीज़ के खुद पैदा हो गए या ये खुद पैदा करने वाले हैं?

اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾ ؕ

क्या उन्हों ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? बल्के ये यक़ीन नहीं रखते।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ ؕ

या उन के पास तेरे रब के खज़ाने हैं या ये हाकिम हैं?

اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ

या उन के पास कोई सीढ़ी है जिस में (चढ़ कर) वो सुन लेते हैं? तो उन को चाहिए के उन का सुनने वाला

بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ ؕ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾ ؕ

कोई रोशन दलील ले आए। क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ और तुम्हारे लिए बेटे हैं?

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ ؕ اَمْ

या आप उन से मुआवज़े का सवाल करते हैं के ये उस तावान में दबे जा रहे हैं? क्या

عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤١﴾ اَمْ يُرِيْدُوْنَ

उन के पास ग़ैब का इल्म है के ये लिख लेते हैं? या ये मक्र करना

كَيْدًا ؕ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ

चाहते हैं? फिर जो काफिर हैं उन्ही के खिलाफ तदबीर की जाएगी। क्या उन का

اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾

कोई माबूद है अल्लाह के सिवा? अल्लाह पाक है उन से जिन्हें वो शरीक बता रहे हैं।

وَاِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ

और अगर ये आसमान से गिरता हुवा टुकड़ा देख लें, तो कहेंगे के ये तो तेह बतेह

مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾ فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ

बादल है। फिर आप उन्हें छोड़ दीजिए यहाँ तक के वो मिलें अपने उस दिन से जिस में उन पर

يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا

साइक़ा पड़ेगी। जिस दिन उन की मक्कारी उन के कुछ भी काम नहीं आएगी

وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا

और उन की नुसरत नहीं की जाएगी। और उन ज़ालिमों के लिए इस के अलावा भी

دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاصْبِرْ

अज़ाब होगा, लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और आप सब्र कीजिए अपने रब

لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ

के हुक्म की वजह से, फिर ज़रूर आप हमारी निगाहों के सामने हो और आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए

تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾

जिस वक्त आप उठते हो। और रात में भी उस की तस्बीह कीजिए और सितारों के गुरूब होने पर भी।

ع ٢

اٰيَاتُهَا ٦٢ (٥٣) سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ (٢٣) رُكُوْعَاتُهَا ٣

उस में ६२ आयतें हैं सूरह नज्म मक्का में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿٢﴾

सितारे की क़सम जब वो गिरे। के तुम्हारे साथी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) न भूले हैं, न भटके हैं।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝٣ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝٤

और वो अपनी ख्वाहिश से नहीं बोलते। ये तो सिर्फ वही है जो उन की तरफ वही की जाती है।

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝٥ ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۝٦ وَهُوَ

उन को सख्त कूव्वतों वाले फरिशते ने सिखाया है। जो ताक़तवर है, फिर वो पूरा नमूदार हुवा। इस हाल में

بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝٧ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝٨ فَكَانَ قَابَ

के वो आसमान के बुलन्द किनारे में था। फिर वो क़रीब आया, फिर नीचे उतरा। फिर दो कमान के बराबर

قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝٩ فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ۝١٠

या उस से भी कम फासला रेह गया। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे की तरफ वही की जो उस ने वही की।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۝١١ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۝١٢

दिल ने झूठ नहीं बोला जो उस ने देखा। क्या फिर तुम उन से झगड़ते हो उस पर जो वो देख रहे हैं?

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۝١٣ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝١٤

यक़ीनन उन्हों ने एक दूसरी मरतबा भी उस (फरिशते) को देखा है। सिदरतुल मुन्तहा के पास।

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝١٥ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۝١٦

जिस के पास जन्नतुल मअवा है। जब के सिदरतुल मुन्तहा को ढांप रही थीं वो चीज़ें जो उस को ढांप रही थीं।

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ۝١٧ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ

निगाहे मुबारक न हटी, न (मरई से) आगे बढ़ी। यक़ीनन आप ने अपने रब की बड़ी निशानियों में से

الْكُبْرٰى ۝١٨ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۝١٩ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ

देखा। क्या फिर तुम ने देखा लात और उज़्ज़ा और तीसरे मनात

الْاُخْرٰى ۝٢٠ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۝٢١ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ

को? क्या तुम्हारे लिए बेटे और अल्लाह के लिए बेटियाँ? यक़ीनन ये तो बहोत बुरी

ضِيْزٰى ۝٢٢ اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ

तक़सीम है। ये तो सिर्फ नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादाओं ने

اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ

रख रखे हैं, जिन पर अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। वो तो सिर्फ गुमान

اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ

के पीछे चलते हैं और उस के पीछे जिस की नफ्स ख्वाहिश करते हैं। और यक़ीनन उन के पास उन के रब

رَّبِّهِمُ الْهُدٰىؕ ﴿٢٣﴾ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰىؗۖ ﴿٢٤﴾ فَلِلّٰهِ

ही की तरफ़ से हिदायत आई है। क्या इन्सान को मिलता है जो भी वो चाहे? फिर अल्लाह की मिल्क

الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى۠ ﴿٢٥﴾ وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ

है आखिरत भी और पेहली दुन्या भी। और कितने फरिशते हैं आसमानों में के

لَا تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ

जिन की सिफारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती मगर इस के बाद के अल्लाह इजाज़त दे

لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

जिस के लिए चाहे और पसन्द करे। यक़ीनन जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते

لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ

वो फरिशतों को लड़कियों का नाम देते हैं। हालाँके उन के पास उस की कोई

مِنْ عِلْمٍؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّۚ وَاِنَّ الظَّنَّ

दलील नहीं। वो सिर्फ गुमान के पीछे चलते हैं। और गुमान हक़

لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًاۚ ﴿٢٨﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ

के मुक़ाबले में कुछ भी काम नहीं देता। फिर आप उस से ऐराज़ कीजिए जो हमारे ज़िक्र से

عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَاؕ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ

मुंह मोड़ता है और जो सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी को चाहता है। ये

مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

उन का मबलग़े इल्म है। यक़ीनन तेरा रब वो खूब जानता है उस को जो अल्लाह के

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ

रास्ते से भटक गया और वो खूब जानता है उस को भी जिस ने हिदायत पाई। और अल्लाह के लिए

مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا

वो तमाम चीज़ें हैं जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं। ताके अल्लाह सज़ा दे उन को जिन्हों ने

بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰىۚ ﴿٣١﴾ اَلَّذِيْنَ

बुरे आमाल किए और अल्लाह अच्छा बदला दे उन को जिन्हों ने नेकियाँ कीं। उन को जो

يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَؕ

बड़े गुनाहों से और बेहयाई के कामों से बचते हैं, सिवाए छोटे गुनाह के।

إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۚ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنشَأَكُم

यक़ीनन तेरा रब वसीअ मग़फिरत वाला है। वो तुम्हें खूब जानता है जब के उस ने तुम्हें

مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنتُمْ أَجِنَّةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۖ

ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँ के पेटों में जनीन थे।

فَلَا تُزَكُّوا أَنفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ﴿٣٢﴾ أَفَرَأَيْتَ

फिर तुम अपने नुफूस को मुज़क्का मत बताओ। वो खूब जानता है उस को जो मुत्तक़ी है। क्या आप ने

الَّذِي تَوَلَّىٰ ﴿٣٣﴾ وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ﴿٣٤﴾ أَعِندَهُ

देखा उस शख्स को जिस ने ऐराज़ किया? और उस ने थोड़ा सा दिया और हाथ रोक लिया? क्या उस के पास

عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ﴿٣٥﴾ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ

ग़ैब का इल्म है, फिर वो देख रहा है? क्या उसे खबर नहीं दी गई उन चीज़ों की जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के सहीफों में

مُوسَىٰ ﴿٣٦﴾ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ﴿٣٧﴾ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ

हैं? और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सहीफों में हैं, जिन्हों ने (रिसालत का हक़) अदा कर दिया। ये के कोई बोझ उठाने

وِزْرَ أُخْرَىٰ ﴿٣٨﴾ وَأَن لَّيْسَ لِلْإِنسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ﴿٣٩﴾

वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और ये के इन्सान को वही मिलेगा जो उस ने सई की।

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ﴿٤١﴾

और उस की सई अनक़रीब देखी जाएगी। फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنتَهَىٰ ﴿٤٢﴾ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ﴿٤٣﴾

और ये के तेरे रब की तरफ पहोंचना है। और वही हंसाता है और वही रुलाता है।

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ

और वही मौत देता है और वही ज़िन्दगी देता है। और उसी ने जोड़े पैदा किए,

الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٤٥﴾ مِن نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ﴿٤٦﴾ وَأَنَّ عَلَيْهِ

मर्द को भी और औरत को भी। एक नुत्फे से जो डाला जाता है। और ये के उसी के ज़िम्मे

النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ﴿٤٧﴾ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿٤٨﴾ وَأَنَّهُ

दूसरी मरतबा पैदा करना है। और वही ग़नी करता है और वही मुफलिस बनाता है। और वो

هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ﴿٤٩﴾ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ﴿٥٠﴾

शिअरा का रब है। और उसी ने पेहले आद को हलाक किया।

وَثَمُوْدَاۡ فَمَاۤ اَبْقٰى ﴿٥١﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ

और समूद को हलाक किया, फिर किसी को बाक़ी नहीं छोड़ा। और उस ने उस से पेहले क़ौमे नूह को हलाक किया। यक़ीनन

كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ﴿٥٣﴾

वो सब से ज़्यादा ज़ुल्म करने वाले और सब से ज़्यादा शरीर थे। और उसी ने उलट दी जाने वाली बस्ती को पटख दिया।

فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾

फिर उस को ढांपा (उन पथ्थरों ने) जिस ने उन को ढांपा। फिर तू अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत पर झगड़ेगा?

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾

ये पेहले डराने वालों में से एक डराने वाला है। क़रीब आने वाली क़रीब आ पहोंची।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ اَفَمِنْ هٰذَا

उस को अल्लाह के सिवा कोई दूर नहीं कर सकता। क्या फिर इस

الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾

बात से तुम तअज्जुब करते हो? और हंसते हो और रोते नहीं हो?

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۩ ﴿٦٢﴾

और तकब्बुर करते हो? तो अल्लाह को सज्दा करो और उस की इबादत करो।

السجدة ١٢

اٰيَاتُهَا ٥٥ (٥٤) سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ (٣٧) رُكُوْعَاتُهَا ٣

उस में ५५ आयतें हैं सूरह क़मर मक्का में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً

क़यामत क़रीब आ गई और चाँद दो टुकड़े हो गया। और अगर काफिर कोई निशानी देख लें तो

يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا

ऐराज़ करते हैं और केहते हैं के ये जादू है जो हमेशा से चला आ रहा है। और उन्हों ने झुठलाया और अपनी

اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ

ख्वाहिश के पीछे चले और हर अम्र ठेहेरने वाला है। यक़ीनन उन के पास इतनी खबरें आ चुकी हैं

الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا

जिन में (काफी) इबरत है। इन्तिहाई दरजे की हिक्मत है, फिर डराने

وقف لازم

تُغْنِ النُّذُرُ ۝٥ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ

वाले भी कुछ काम नहीं आए। इस लिए आप उन से ऐराज़ कीजिए, जिस दिन एक पुकारने वाला नागवार चीज़ की

اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٦ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ

तरफ पुकारेगा। उन की नज़रें झुकी हुई होंगी, वो क़ब्रों से निकल रहे

مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝٧ مُّهْطِعِيْنَ

होंगे गोया के वो फैली हुई टिड्डियाँ हैं। वो तेज़ दौड़ रहे होंगे

اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٨ كَذَّبَتْ

बुलाने वाले की जानिब। काफिर लोग कहेंगे के ये तो बड़ा सख्त दिन है। उन से पेहले

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ

क़ौमे नूह ने भी झुठलाया, फिर उन्हों ने हमारे बन्दे को झुठलाया और बोले ये तो मजनून है और उस को

وَّازْدُجِرَ ۝٩ فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠

झिड़क दिया गया। फिर उस ने अपने रब को पुकारा के मैं मग़लूब हूँ, तू मेरी नुसरत फरमा।

فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١١ وَّفَجَّرْنَا

फिर हम ने आसमान के दरवाज़े लगातार बरसने वाले पानी के साथ खोल दिए। और हम ने

الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢

ज़मीन से चशमे जारी कर दिए, फिर पानी एक हुक्म पर मिल गया जो पेहले से मुतअय्यन कर दिया गया था।

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝١٣ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ

और हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को तख्तियों वाली और कीलों वाली कशती पर सवार करा दिया। जो चल रही थी हमारी निगाहों के

جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝١٤ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰيَةً

सामने। उस के इन्तिक़ाम के लिए जिस की नाशुकरी की गई। यक़ीनन हम ने उस को एक निशानी के तौर पर छोड़ दिया,

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٥ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٦ وَلَقَدْ

क्या फिर कोई नसीहत हासिल करने वाला है? फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा रहा? यक़ीनन

يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٧ كَذَّبَتْ

हम ने इस कुरआन को याद करने के लिए आसान किया, तो क्या है कोई याद करने वाला? क़ौमे आद

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٨ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ

ने झुठलाया, फिर मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा रहा? यक़ीनन हम ने उन पर

رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ
तूफानी ठन्डी हवा लगातार नहूसत वाले दिन में भेजी। जो इन्सानों को
النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ
(उचक) कर फैंक रही थी गोया के वो इन्सान अखड़े हुए खजूर के तने हैं। फिर मेरा अज़ाब
عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ
और मेरा डराना कैसा रहा? यक़ीनन हम ने इस कुरआन को हिफ्ज़ के लिए (नसीहत के लिए) आसान किया, फिर क्या है कोई
فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾ فَقَالُوا أَبَشَرًا
हिफ्ज़ करने वाला (नसीहत हासिल करने वाला)? क़ौमे समूद ने डराने वालों को झुठलाया। फिर उन्हों ने कहा के क्या
مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾
हम में से एक इन्सान के हम पीछे चलें? यक़ीनन हम तब तो गुमराही और दीवानगी में होंगे।
ءَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ﴿٢٥﴾
क्या हमारे दरमियान में से इसी पर ये ज़िक्र डाला गया? बल्के ये तो झूठा है, अकड़ने वाला है।
سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ ﴿٢٦﴾ إِنَّا مُرْسِلُوا
जल्द ही कल को ये जान लेंगे के कौन झूठा, अकड़ने वाला है। हम ऊँटनी उन के
النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ
इम्तिहान के लिए भेजने वाले हैं, इस लिए आप उन के मुतअल्लिक़ मुन्तज़िर रहिए और सब्र कीजिए। और उन को
أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا
खबर दे दीजिए के पानी उन के दरमियान तक़सीम है। हर पीने की बारी पर हाज़िर होना है। पस उन्हों ने
صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي
अपने साथी को पुकारा, फिर वो तलवार ले कर आया, फिर उस ने ऊँटनी के पैर काट दिए। फिर मेरा अज़ाब और डराना
وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوا
कैसा रहा? यक़ीनन हम ने उन पर एक ही चीख को भेजा, फिर वो बाड़
كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ
के सूखे भूसे की तरह हो गए। यक़ीनन हम ने इस कुरआन को नसीहत (याद) के लिए आसान किया,
فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾
फिर क्या है कोई नसीहत हासिल (याद) करने वाला? क़ौमे लूत ने डराने वालों को झुठलाया।

ع ١٢

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ نَجَّيْنٰهُمْ

यक़ीनन हम ने उन पर पथ्थर बरसाने वाली तेज़ हवा का अज़ाब भेजा, मगर लूत (अलैहिस्सलाम) के मानने वालों पर। जिन को हम ने

بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ

नजात दी रात के पिछले पेहेर में। हमरी तरफ से नेअमत के तौर पर। इसी तरह हम बदला देते हैं उस को जो

شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

शुक्रगुज़ार होता है। यक़ीनन उन्हों ने उन को हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्हों ने डराने वालों के बारे में शक किया।

وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا

और लूत (अलैहिस्सलाम) को फुसलाया उन्हों ने उन के मेहमानों से, फिर हम ने उन की आँखों को मेट दिया, फिर तुम मेरा अज़ाब

عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ

चखो और मेरे डराने को चखो। यक़ीनन उन के पास सुबह के वक़्त दाइमी अज़ाब आ चुका सूरज

مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا

निकलते हुए। फिर मेरे अज़ाब को और मेरे डराने को चखो। यक़ीनन हम ने

الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدْ

कुरआन को हिफ्ज़ कि लिए आसान किया, फिर क्या है कोई हिफ्ज़ करने वाला? यक़ीनन

ع ٢

جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا

आले फिरऔन के पास भी डराने वाले आए। जिन्हों ने हमारी तमाम आयतों को झुठलाया,

فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ

फिर हम ने उन को एक कुदरत वाले ज़बर्दस्त के पकड़ने की तरह पकड़ लिया। क्या तुम्हारे कुफ्फार उन लोगों से बेहतर

مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ

हैं या तुम्हारे लिए किताबों में बराअत है? या ये केहते हैं के हम इकट्ठे हैं,

جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

कामयाब हो जाएंगे? अनक़रीब उन इकट्ठे होने वालों को शिकस्त दी जाएगी और ये पुश्त फेर कर भागेंगे।

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾

बल्के क़ियामत उन के वादे का वक्त है और क़ियामत बहोत ज़्यादा खौफनाक और बड़ी कड़वी है।

وقف لازم

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ

यक़ीनन मुजरिम गुमराही और आग में होंगे। जिस दिन उन को

فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ۝٤٨ اِنَّا

आग में उन के चेहरों के बल घसीटा जाएगा। (कहा जाएगा के) तुम दोज़ख का अज़ाब चखो। यक़ीनन हम

كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ۝٤٩ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ

ने हर चीज़ को मिक़दार से पैदा किया है। और हमारा हुक्म नहीं मगर एक ही मरतबा

كَلَمْحٍۢ بِالْبَصَرِ ۝٥٠ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ

आँख के पलक झपकने की तरह। यक़ीनन हम ने तुम्हारे हममस्लकों को हलाक किया,

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝٥١ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ۝٥٢ وَكُلُّ

फिर क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? और हर चीज़ जो उन्हों ने की दफ्तरों में लिखी हुई है। और हर

صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ۝٥٣ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ

छोटी और बड़ी हरकत लिखी हुई है। यक़ीनन मुत्तक़ी लोग जन्नतों और नेहरों में

وَّ نَهَرٍ ۝٥٤ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۝٥٥

होंगे। सच्चाई की जगह में होंगे क़ुदरत वाले बादशाह के पास।

ع ٥

اٰيَاتُهَا ٧٨ (٥٥) سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ (٩٧) رُكُوْعَاتُهَا ٣

उस में ७८ आयतें हैं सूरह रहमान मदीना में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلرَّحْمٰنُ ۝١ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝٢ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝٣ عَلَّمَهُ

रहमान ने कुरआन की तालीम दी। उस ने इन्सान को पैदा किया। उस ने

الْبَيَانَ ۝٤ اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۝٥ وَّالنَّجْمُ

उसे बोलना सिखलाया। चाँद और सूरज एक हिसाब से चल रहे हैं। और बेल

وَ الشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ۝٦ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۝٧

और दरख्त अल्लाह को सज्दा करते हैं। और उस ने आसमान बुलन्द किया और उस ने तराज़ू रख दिया।

اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ۝٨ وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ

(हुक्म दिया) के तुम तोलने में ज़्यादती मत करो। और इन्साफ के साथ ठीक तोला करो

وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ۝٩ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۝١٠

और तोलने में कम कर के मत दो। और उस ने मख्लूक़ के लिए ज़मीन बनाई।

فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿۱۱﴾ وَالْحَبُّ

जिस में मेवे हैं और खजूर हैं ग़िलाफ वाले। और अनाज है

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿۱۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

भूसे वाला और खुशबूदार फूल हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस

تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿۱۴﴾

नेअमत को झुठलाओगे? उस ने इन्सान को पैदा किया ठीकरी की तरह खनखनाती मिट्टी से।

وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ﴿۱۵﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

और उस ने जिन्नात को पैदा किया आग की लपट से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۶﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿۱۷﴾

नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो दोनों मशरिक़ का रब है और दोनों मग़रिब का रब है।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۸﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उस ने दो समन्दर मिला कर चलाए

يَلْتَقِيٰنِ ﴿۱۹﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿۲۰﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

जो बाहम मिलते हैं। हालांके उन दोनों के दरमियान में एक आड़ है के एक दूसरे से तजावुज़ नहीं करते। फिर (ऐ इन्सानो और

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۱﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿۲۲﴾

जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उन दोनों से निकलते हैं मोती और मूंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۳﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? और उस के हैं समन्दर में

فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿۲۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۵﴾

पहाड़ों जैसे ऊँचे जहाज़। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿۲۶﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ

हर वो चीज़ जो ज़मीन पर है फना होने वाली है। और तेरे अज़मत और इज़्ज़त वाले रब का

ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿۲۷﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

चेहरा बाक़ी रहेगा। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को

تُكَذِّبٰنِ ﴿۲۸﴾ يَسْئَلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

झुठलाओगे? उसी से माँगते हैं वो जो आसमानों और ज़मीन में हैं।

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾

हर दिन वो एक शान (हाल) में होता है। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अनक़रीब हम तुम्हारे लिए फारिग़ होंगे ऐ इन्सानों और जिन्नात की दोनों जमाअतो! फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने

تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ

रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? ओ इन्सानों और जिन्नात की जमाअत! अगर तुम को ये कुदरत है

اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

के आसमानों और ज़मीन की हुदूद से कहीं बाहर निकल जाओ,

فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो तुम सूराख कर के निकल जाओ। तुम निकल नहीं सकते मगर परवानअे इजाज़त से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!)

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ

तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? तुम्हारे ऊपर आग का रोशन शौला और धुवाँ छोड़ा

مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

जाएगा। फिर तुम मुक़ाबला नहीं कर सकोगे। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से

تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً

किस किस नेअमत को झुठलाओगे? फिर जब आसमान फट पड़ेगा, तो वो गुलाबी हो जाएगा तेल की तलछट की

كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ

तरह। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? फिर उस दिन उस के

لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

गुनाहों के मुतअल्लिक़ सवाल नहीं किया जाएगा किसी इन्सान और किसी जिन से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ

अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? मुजरिमों को पेहचान लिया जाएगा उन की अलामतों से,

فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

फिर उन्हें पकड़ा जाएगा पेशानी के बालों और क़दमों से। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا

में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? (कहा जाएगा के) ये वो जहन्नम है जिस को मुजरिम

الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾

झुठलाते थे। वो चक्कर लगा रहे होंगे जहन्नम के दरमियान और खौलते हुए गर्म पानी के दरमियान।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?और उस शख्स के लिए जो अपने रब

رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾

के सामने खड़ा होने से डरे दो जन्नतें होंगी। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को

ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾

झुठलाओगे? वो कसीर शाखों वाले होंगे। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

उन दोनों में दो चशमे चल रहे हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस

تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾

किस नेअमत को झुठलाओगे? उन दोनों में हर मेवे की दो दो क़िस्में होंगी।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो टेक लगाए हुए

بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾

होंगे तख्तों के ऊपर जिन के अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे। और दोनों जन्नतों के मेवे क़रीब लटक रहे होंगे।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उन में नीची

الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾

निगाहों वाली हूरें होंगी, जिन को न किसी इन्सान ने छुवा उन से पेहले और न किसी जिन ने।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ

फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? गोया के वो हूरें याकूत

وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾

और मूंगे हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ

नेकी का बदला तो सिवाए नेकी के और क्या होगा? फिर (ऐ इन्सानो

اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا
और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? और उन दोनों जन्नतों के अलावा
جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾
और भी दो जन्नतें हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?
مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾
दोनों गेहरे सब्ज़ सियाही माइल हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे?
فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا
उन में उबलते हुए दो चशमे हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस
تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾
किस नेअमत को झुठलाओगे? उन दोनों में मेवे हैं और खजूर हैं और अनार।
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ
फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? उन में नेक खूबसूरत
حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ
औरतें हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो हूरें
مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا
हैं जो खैमों में ठेहरी हुई हैं। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस
تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾
नेअमत को झुठलाओगे? जिन को उन से पेहले किसी इन्सान ने छुवा नहीं और न किसी जिन ने।
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ
फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? वो जन्नती टेक
عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ
लगाए हुए होंगे सब्ज़ अजीब खूबसूरत मस्नदों पर। फिर (ऐ इन्सानो और जिन्नात!) तुम अपने
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ
रब की नेअमतों में से किस किस नेअमत को झुठलाओगे? तेरे जलाल और अज़मत
ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾
वाले रब का नाम बड़ा बाबरकत है।

رُكُوْعَاتُهَا ٣ (٥٦) سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ (٤٦) اٰيَاتُهَا ٩٦

और ३ रूकूअ हैं सूरह वाक़िआ मक्का में नाज़िल हुई उस में ९६ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وقف لازم

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ﴿۱﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۘ﴿۲﴾

जब वाक़ेअ होने वाली क़ियामत वाक़ेअ होगी। जिस के वाक़ेअ होने में कोई झूठ नहीं।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۙ﴿۳﴾ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۙ﴿۴﴾

वो पस्त करने वाली, बुलन्द करने वाली है। जब ज़मीन लरज़ उठेगी कपकपाती हुई।

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۙ﴿۵﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۙ﴿۶﴾

और पहाड़ टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे। फिर वो उड़ता हुवा गुबार बन जाएंगे।

وَّ كُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ؕ﴿۷﴾ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ

और तुम तीन जमाअतें बन जाओगे। फिर दाईं तरफ वाले,

مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ؕ﴿۸﴾ وَ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ

दाईं तरफ वाले कितने अच्छे हैं! और बाईं तरफ वाले,

مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ؕ﴿۹﴾ وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۚ﴿۱۰﴾

क्या ही बुरे बाईं तरफ वाले! और सबक़त करने वाले तो सबक़त करने वाले ही हैं।

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ﴿۱۱﴾ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۱۲﴾ ثُلَّةٌ

यही मुक़र्रबीन हैं। जो जन्नाते नईम में होंगे। वो ज़्यादातर

مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿۱۳﴾ وَ قَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ﴿۱۴﴾

तो अगले लोगों में से होंगे। और पीछे वालों में से थोड़े होंगे।

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ﴿۱۵﴾ مُّتَّكِئِيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿۱۶﴾

वो ऐसे तख़्तों पर टेक लगाए हुए होंगे, जो सौने के तारों से जड़े हुए होंगे। वो उन पर टेक लगाए आमने

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۙ﴿۱۷﴾ بِاَكْوَابٍ

सामने बैठे होंगे। उन पर चक्कर लगा रहे होंगे ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। प्याले

وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ﴿۱۸﴾ لَّا يُصَدَّعُوْنَ

और जग और ग्लास ले कर ऐसे चशमे से, जिस से न सरदर्द

عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝١٩ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝٢٠

होगा और न बकना होगा। और उन के पसन्दीदा मेवे ले कर।

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝٢١ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝٢٢

और परिन्दों का गोश्त जो उन को मरगूब हो। और बड़ी आँखों वाली खूबसूरत हूरें होंगी।

كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝٢٣ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا

छुपाए हुए मोतियों की तरह। उन के आमाल के बदले

يَعْمَلُوْنَ ۝٢٤ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۝٢٥

में। वो उस जन्नत में न लग्व बात सुनेंगे और न गुनाह की बात सुनेंगे।

اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝٢٦ وَ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ

मगर एक ही कलाम सुनेंगेः अस्सलामु अलैकुम, अस्सलामु अलैकुम। और दाईं तरफ वाले।

مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝٢٧ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۝٢٨ وَّطَلْحٍ

दाईं तरफ वाले क्या (खूब) हैं! कांटे साफ की हुई बेरियों में, और तेह बतेह

مَّنْضُوْدٍ ۝٢٩ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝٣٠ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝٣١

रखे केलों में, और लम्बे साए में, और बेहते हुए पानी में,

وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۝٣٢ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۝٣٣

और बकस्रत मेवों में होंगे, जो कभी न खत्म होंगे न कभी मुमानअत होगी।

وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۝٣٤ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۝٣٥

और ऊँचे ऊँचे फर्शों में होंगे। हम ने उन हूरों को खास तौर पर बनाया है।

فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۝٣٦ عُرُبًا اَتْرَابًا ۝٣٧ لِّاَصْحٰبِ

फिर हम ने उन को बाकिरा, बहोत ज़्यादा प्यार दिलाने वाली, हमउम्र बनाया है। असहाबे यमीन

الْيَمِيْنِ ۝٣٨ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝٣٩ وَ ثُلَّةٌ

के लिए। वो बड़ी जमाअत अगले लोगों में से होगी। और बड़ी जमाअत पिछले लोगों में

مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝٤٠ وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ

से होगी। और बाईं तरफ वाले। बाईं तरफ वाले क्या (ही

الشِّمَالِ ۝٤١ فِيْ سَمُوْمٍ وَّ حَمِيْمٍ ۝٤٢ وَّظِلٍّ مِّنْ

बुरे) हैं! वो लू में होंगे और गर्म पानी में होंगे। और धुंवें के साए में

يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا

होंगे। न ठन्डा होगा और न अच्छा होगा। इस लिए के वो

قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَ كَانُوْا يُصِرُّوْنَ

उस से पेहले खुशहाल थे। और बड़े गुनाहों पर

عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾ وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۵ اَئِذَا

इसरार करते थे। और वो केहते थे के क्या जब हम

مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾

मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे और हड्डियाँ हो जाएंगे तब हम क़ब्रों से उठाए जाएंगे?

اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ

हम भी और हमारे बाप दादा भी। आप फरमा दीजिए के यक़ीनन पेहले वाले

وَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۵ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ

और पीछे आने वाले। सब के सब ज़रूर जमा किए जाएंगे एक मालूम दिन के मुक़र्ररा

مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾

वक़्त में। फिर तुम ऐ गुमराह लोगो! झुठलाने वालो!

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِئُوْنَ

तुम ज़रूर खाओगे ज़क्कूम के दरख्त से। फिर उसी

مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ

से पेट भरोगे। फिर उस के ऊपर गर्म पानी

مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾ هٰذَا

पियोगे। फिर पियोगे प्यासे ऊँट के पीने की तरह। ये

نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ

उन की मेहमानी होगी हिसाब के दिन। हम ने तुम्हें पैदा किया,

فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ

फिर तुम तस्दीक़ क्यूं नहीं करते? क्या फिर तुम ने देखा वो मनी जो तुम डालते हो? क्या तुम

تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾ نَحْنُ قَدَّرْنَا

उसे पैदा करते हो या हम पैदा करने वाले हैं? हम ने तुम्हारे दरमियान

بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾

मौत मुक़द्दर कर दी और हम आजिज़ नहीं हैं।

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

इस बात से के हम तुम्हारे जैसे बदले में लाएं और तुम्हें पैदा कर दें उस शक्ल में जो तुम जानते भी नहीं।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

यक़ीनन तुम्हें मालूम है पेहली पैदाइश, फिर तुम नसीहत क्यूं हासिल नहीं करते?

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ

क्या तुम ने देखा उस को जो तुम बोते हो? क्या तुम उस खेती को उगाते हो

اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا

या हम खेती उगाने वाले हैं? अगर हम चाहें तो हम उसे चूरा चूरा बना दें,

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ

फिर तुम बातें बनाते रेह जाओ। के यक़ीनन हम तो क़र्ज़दार बन गए। बल्के हम

مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾

तो महरूम हो गए। क्या तुम ने देखा वो पानी जो तुम पीते हो?

ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾

क्या तुम ने उस को बादल से उतारा या हम उतारने वाले हैं?

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

अगर हम चाहें तो उसे खारा बना दें, फिर तुम शुक्र अदा क्यूं नहीं करते?

اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ

क्या तुम ने देखा उस आग को जिसे तुम सुलगाते हो? क्या तुम ने उस का

شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا

दरख्त पैदा किया या हम पैदा करने वाले हैं? हम ने उस को

تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ

नसीहत और मुसाफिरों के लिए फाइदे की चीज़ बनाया। फिर अपने अज़मत वाले रब

رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾

के नाम की तस्बीह कीजिए। फिर मैं क़सम खाता हूँ सितारों के गुरूब की जगहों की।

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ

और यक़ीनन ये बड़ी क़सम है काश के तुम जानते। ये इज़्ज़त वाला

كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهُ

कुरआन है। वो महफ़ूज़ रखी हुई किताब में है (लौहे महफ़ूज़ में है)। उस को नहीं छूते

إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾ تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾

मगर पाक फरिशते। ये रब्बुल आलमीन की तरफ से उतारा गया है।

أَفَبِهَٰذَا الْحَدِيثِ أَنتُم مُّدْهِنُونَ ﴿٨١﴾ وَتَجْعَلُونَ

सो क्या तुम लोग इस कलाम को सरसरी बात समझते हो? और तुम अपना हिस्सा

رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُونَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ

ये बनाते हो के तुम उसे झुठलाते हो? फिर जब रूह हलक़

الْحُلْقُومَ ﴿٨٣﴾ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ

तक पहोंचती है। और तुम उस वक्त का मन्ज़र देखते भी हो। और हम

أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾

तुम से उस (मरने वाले) के ज़्यादा क़रीब होते हैं, लेकिन तुम देख नहीं पाते।

فَلَوْلَا إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُونَهَا إِن كُنتُمْ

फिर अगर तुम से हिसाब लिया जाना नहीं है, तो तुम उस रूह को वापस क्यूं नहीं लौटा देते अगर तुम

صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾ فَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾

सच्चे हो? फिर अलबत्ता अगर वो मुक़र्रबीन में से है,

فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأَمَّا

तो राहत होगी और ख़ुशबूदार फूल होंगे। और जन्नते नईम होगी। और अलबत्ता

إِن كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾ فَسَلَامٌ لَّكَ

अगर वो असहाबे यमीन में से है, सो उस से कहा जाएगा के तेरे लिए अम्न व अमान है

مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾ وَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ

के तू असहाबे यमीन (दाहने वालों) में से है। और अलबत्ता अगर वो झुठलाने वाले गुमराहों

الضَّالِّينَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٩٣﴾ وَتَصْلِيَةُ

में से है, तो उस की मेहमानी की जाएगी गर्म पानी से। और आग में

جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ
दाखिल करना है। यक़ीनन ये अलबत्ता हक़्क़ुल यक़ीन है। इस लिए

بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾
आप अपने अज़्मत वाले रब के नाम की तस्बीह कीजिए।

اٰيَاتُهَا ٢٩ (٥٧) سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ (٩٤) رُكُوْعَاتُهَا ٤
उस में २९ आयतें हैं सूरह हदीद मदीना में नाज़िल हुई और ४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
अल्लाह के लिए तस्बीह करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ
हिक्मत वाला है। उस के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है। वो ज़िन्दा करता है

وَ يُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْاَوَّلُ
और मौत देता है। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है। वही पेहला है

وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ
और आखिर है और वही ज़ाहिर है और बातिन है। और वो हर चीज़ को खूब जानने

عَلِيْمٌ ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
वाला है। उस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया

فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ
छे दिन में, फिर वो अर्श पर मुस्तवी हुवा। वो जानता है

مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ
उन चीज़ों को जो ज़मीन में दाखिल होती हैं और जो ज़मीन से निकलती हैं और जो आसमान

مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمْ
से उतरती हैं और जो आसमान में चढ़ती हैं। और वो तुम्हारे साथ होता है

اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤﴾ لَهٗ
जहाँ तुम होते हो। और अल्लाह तुम्हारे आमाल को खूब देख रहा है। उस के लिए

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है। और अल्लाह की तरफ तमाम उमूर लौटाए

الْاُمُوْرُ ۝٥ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

जाएंगे। वो रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में

فِى الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٦ اٰمِنُوْا

दाखिल करता है। और वो दिलों के हाल को खूब जानता है। ईमान लाओ

بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ

अल्लाह पर और उस के रसूल पर और तुम खर्च करो उन चीज़ों में से जिस में अल्लाह ने तुम्हें जानशीन

فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ

बनाया है। तो वो लोग जो तुम में से ईमान लाए और वो खर्च करते हैं उन के लिए बड़ा

كَبِيْرٌ ۝٧ وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ

अज्र है। और तुम्हें क्या हुवा के तुम ईमान नहीं लाते अल्लाह पर? हालांके रसूल

يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ

तुम्हें बुला रहे हैं ताके तुम अपने रब पर ईमान ले आओ और उस ने तुम से भारी अहद लिया है

اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ

अगर तुम मोमिन हो। वही अपने बन्दे पर रोशन

عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ

आयतें उतारता है ताके वो तुम्हें निकाले तारीकियों से

اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٩

नूर की तरफ। और यक़ीनन अल्लाह तुम पर बहोत ज़्यादा शफक़त वाला, निहायत महरबान है।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ

और तुम्हें क्या हुवा के अल्लाह के रास्ते में तुम खर्च नहीं करते? हालांके अल्लाह ही के लिए

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ

आसमानों और ज़मीन की मीरास है। तुम में से बराबर नहीं हैं वो जिन्हों ने खर्च किया

مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً

फतह से पेहले और क़िताल किया। ये ज़्यादा भारी दरजात वाले हैं

مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا

उन की बनिस्बत जिन्हों ने उस के बाद खर्च किया और उस के बाद क़िताल किया। और तमाम से

وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٠

अल्लाह ने अच्छा वादा कर रखा है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर हैं।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ

कौन है जो अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दे, फिर उस के लिए अल्लाह कई गुना

لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝١١ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ

बढ़ाए और उस के लिए अच्छा सवाब है। जिस दिन आप देखोगे ईमान वाले मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ

और ईमान वाली औरतों को के उन का नूर उन के आगे और उन के दाएं चल रहा होगा,

بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

(कहा जाएगा के) तुम्हें बशारत हो आज ऐसी जन्नतों की जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में ये

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢ يَوْمَ

हमेशा रहेंगे। ये बड़ी कामयाबी है। जिस दिन

يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें ईमान वालों से कहेंगे के

انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا

तुम हमारा इन्तिज़ार करो के हम तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें। (कहा जाएगा के) तुम अपने पीछे वापस लौट

وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ

जाओ, वहाँ तुम नूर तलाश करो। फिर उन के दरमियान में एक दीवार क़ाइम कर दी जाएगी, जिस के लिए दरवाज़ा

بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ

होगा। जिस के अन्दर में रहमत होगी और उस के बाहर उस से आगे अज़ाब

الْعَذَابُ ۝١٣ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا

होगा। वो उन को पुकारेंगे के क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे? वो कहेंगे

بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَ تَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ

क्यूं नहीं? लेकिन तुम ने अपने आप को खुद अज़ाब में डाला है और तुम हम पर बला के मुन्तज़िर रहे और तुम शक में रहे

وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ
और तुम्हें तमन्नाओं ने धोके में डाले रखा यहाँ तक के अल्लाह का हुक्म आ पहोंचा और तुम्हें अल्लाह के साथ

بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ
धोके में डाले रखा धोकेबाज़ शैतान ने। फिर आज न तुम से फिदया लिया जाएगा

وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ
और न काफिरों से। तुम्हारा ठिकाना दोज़ख होगा। यही

مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ
तुम्हारा साथी है। और बुरी जगह है। क्या ईमान वालों के लिए इस का वक़्त नहीं

اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ
आया के उन के दिल डर जाएं अल्लाह के ज़िक्र के सामने और उस हक़ के सामने जो

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
उतरा है और ये न हों उन लोगों की तरह जिन को उन से पेहले

مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ
किताब दी गई, फिर उन पर मुद्दत लम्बी हुई, फिर उन के दिल सख्त हो गए।

وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ
और उन में से अक्सर नाफरमान हैं। खूब जान लो के अल्लाह

يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ
ज़मीन को ज़िन्दा करता है उस के खुश्क हो जाने के बाद। यक़ीनन हम ने तुम्हारे लिए

الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ
आयतों को खोल खोल कर बयान किया है ताके तुम अक़्लमन्द बन जाओ। यक़ीनन सदक़ा करने वाले मर्द

وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ
और सदक़ा करने वाली औरतें और जिन्हों ने अल्लाह को अच्छा कर्ज़ दिया, तो उन के

لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
लिए उस क़र्ज़ को दुगना किया जाएगा और उन के लिए अच्छा सवाब होगा। और जो ईमान लाए अल्लाह पर

وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖۗ وَالشُّهَدَآءُ
और उस के पैग़म्बरों पर, ऐसे ही लोग अपने रब के नज़दीक

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَ نُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ

सिद्दीक़ और शहीद हैं। उन के लिए उन का अज्र और उन का नूर होगा। और जिन्हों ने

كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ

कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वो दोज़खी

الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ

हैं। जान लो के दुन्यवी ज़िन्दगी तो सिर्फ खेल

وَّلَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ

और ग़फलत और ज़ीनत और आपस में फख्र करना है और आपस में एक दूसरे से

فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ

बढ़ना है मालों में और औलाद में। उस बारिश की तरह जिस का सब्ज़ा किसानों को खुश

نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ

करता है, फिर वो लेहलेहाने लगता है, फिर तू उस को देखता है पीला, फिर वो चूरा चूरा

حُطَامًا ؕ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ

बन जाता है। और आखिरत में सख्त अज़ाब और अल्लाह की

مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ

तरफ से मग़फिरत और खुशनूदी है। और दुन्यवी ज़िन्दगी नहीं है

اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ

मगर धोके का सामान। तुम दौड़ लगाओ अपने रब की

مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ

मग़फिरत और उस जन्नत की तरफ जिस की चौड़ाई आसमान और ज़मीन के

وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ

बराबर है। जो ईमान वालों के लिए तय्यार की गई है जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर

وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ

और उस के पैग़म्बरों पर। ये अल्लाह का फज़्ल है, उस को देता है जिसे चाहता है।

وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ

और अल्लाह बड़े फज़्ल वाला है। कोई मुसीबत नहीं

مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ
पहोंचती ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में
اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ
मगर वो एक किताब (लौहे महफ़ूज़) में लिखी हुई है इस से पेहले के हम उस को पैदा करें। यक़ीनन ये
عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٢٢ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى
अल्लाह पर आसान है। ताके तुम ग़म न करो उस चीज़ पर
مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ
जो तुम से फौत हो गई और न इतराओ उस पर जो अल्लाह ने तुम्हें दिया। और अल्लाह
لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِۨ ۝٢٣ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ
पसन्द नहीं करता हर इतराने वाले, फख्र करने वाले को। जो बुख्ल करते हैं
وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ
और इन्सानों को बुख्ल का हुक्म देते हैं। और जो रूगरदानी करेगा
فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٢٤ لَقَدْ اَرْسَلْنَا
तो यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। यक़ीनन हम ने
رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
अपने पैग़म्बर भेजे रोशन मोअजिज़ात दे कर और हम ने उन के साथ किताब उतारी
وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا
और तराज़ू उतारा ताके इन्सान इन्साफ को ले कर खड़े हो जाएं। और हम ने
الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ
लोहा उतारा जिस में सख्त कूव्वत है और इन्सानों के लिए दूसरे मनाफेअ भी हैं
وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ
और ताके अल्लाह जान ले उस को जो अल्लाह की और उस के पैग़म्बरों की नुसरत करता है बग़ैर देखे।
اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝٢٥ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا
यक़ीनन अल्लाह कूव्वत वाला है, ज़बर्दस्त है। यक़ीनन हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को रिसालत दे कर भेजा
وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ
और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को और हम ने उन की औलाद में नुबूव्वत रख दी और किताब रख दी

ع ٣ ١٩

فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾
तो उन में से कुछ हिदायत पाने वाले हैं। और उन में से अक्सर नाफरमान हैं।
ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ قَفَّيْنَا بِعِيْسَى
फिर हम ने उन के पीछे हमारे पैग़म्बर भेजे और हम ने ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम)
ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا
को भेजा और हम ने उन को इन्जील दी। और हम ने उन लोगों के
فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَرَهْبَانِيَّةَ
दिलों में जिन्हों ने उन का इत्तिबा किया नर्मी और महरबानी रख दी। और रहबानीयत को
اِۨبْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ
उन्हों ने खुद ईजाद किया था, उस को हम ने उन पर लाज़िम नहीं किया था, मगर अल्लाह की खुशनूदी तलब करने के
اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ
लिए, फिर उस रहबानीयत की उन्हों ने रिआयत नहीं की जैसा के उस का हक़ था। फिर हम ने उन लोगों को
اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾
जो उन में से ईमान लाए थे उन का सवाब दिया। और उन में से अक्सर नाफरमान हैं।
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ
ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और ईमान लाओ उस के पैग़म्बर पर,
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا
वो तुम्हें अपनी रहमत से दोहरा अज्र देगा और तुम्हारे लिए नूर बना देगा
تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾
जिस को ले कर तुम चलोगे और तुम्हारी मग़फिरत करेगा। और अल्लाह बहोत बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।
لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَىْءٍ
ताके एहले किताब जान लें के वो किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं हैं
مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
अल्लाह के फज़्ल में से और ये के फज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वो उसे देता है
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾
जिसे चाहता है। और अल्लाह बड़े फज़्ल वाला है।

ع ٤

اٰیَاتُهَا ٢٢ (٥٨) سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٥) رُكُوْعَاتُهَا ٣

उस में २२ आयतें हैं सूरह मुजादला मदीना में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا

यक़ीनन अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने शौहर के बारे में

وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

और अल्लाह से शिकायत कर रही थी। और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़तगू सुन रहे थे। यक़ीनन अल्लाह

سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝١ اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ

सुनने वाले, देखने वाले हैं। तुम में से वो मर्द जो अपनी औरतों से ज़िहार करें

مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۗـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ

तो वो उन की हक़ीक़ी माएँ नहीं बन जातीं। उन की हक़ीक़ी माएँ तो वही हैं जिन्हों ने उन को जना है।

وَ اِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ

और यक़ीनन वो बुरी बात और झूठी बात केह रहे हैं। और यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा मुआफ

لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝٢ وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ

करने वाला, बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। और जो मर्द अपनी औरतों से ज़िहार करें,

ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ

फिर वो वापस अपने कलाम से रूजूअ करें तो एक गर्दन आज़ाद करना है इस से पेहले के वो एक दूसरे को

اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

छुवें। इस की तुम्हें नसीहत की जाती है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से

خَبِيْرٌ ۝٣ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ

बाखबर है। फिर जो (गुलाम) न पाए तो लगातार दो महीनों के रोज़े हैं

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ

इस से पेहले के वो एक दूसरे को छुवें। फिर जो इस की ताक़त न रखता हो तो साठ मिस्कीनों को खाना

مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ

खिलाना है। ये इस लिए है ताके तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल पर। और ये अल्लाह की मुक़र्ररा हुदूद

اللّٰهِ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ

हैं। और काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है। यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह और उस के

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ

रसूल से झगड़ते हैं ज़लील होंगे जैसा के ज़लील हुए वो जो उन से पेहले थे और यक़ीनन

اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٥

हम ने साफ साफ आयतें नाज़िल की हैं। और काफिरों के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ

जिस दिन उन तमाम को अल्लाह उठाएगा, फिर उन को जतलाएगा वो अमल जो उन्हों ने किए।

اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦ ع

अल्लाह ने उस को गिन रखा है और उन्हों ने उस को भुला दिया है। और अल्लाह हर चीज़ को देख रहे हैं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ

क्या आप ने देखा नहीं के अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं।

مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ

तीन आदमियों की कोई सरगोशी नहीं होती मगर अल्लाह उन का चौथा होता है और न पाँच आदमियों की

اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ

मगर अल्लाह उन का छठ्ठा होता है, और न उस से कम और न उस से ज़्यादा मगर वो उन के साथ

مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

होता है, जहाँ भी वो हों। फिर अल्लाह उन्हें उन आमाल की जो उन्हों ने किए क़यामत के दिन खबर देगा।

اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا

यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाले हैं। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों की तरफ जिन को

عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ

सरगोशी से मना किया गया, फिर भी वो दोबारा करते हैं उसी को जिस से उन को रोका गया था और वो सरगोशी करते हैं

بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا جَآءُوْكَ

गुनाह की और जुल्म की और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नाफरमानी की। और जब वो आप के पास आते हैं तो

حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ

आप को दुआ देते हैं उन अल्फाज़ से जो अल्लाह ने आप को दुआ देने के लिए मखसूस नहीं फरमाए। और वो केहते हैं अपने दिलों में

لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ

के अल्लाह हमें अज़ाब क्यूं नहीं देता उन बातों की वजह से जो हम केह रहे हैं। उन के लिए जहन्नम काफी है, जिस में वो

فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٨ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ

दाखिल होंगे। फिर वो बुरी जगह है। ऐ ईमान वालो! जब तुम आपस में सरगोशी करो

فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ

तो सरगोशी मत करो गुनाह की और ज़ुल्म की और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की नाफरमानी की,

وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ

बल्के सरगोशी करो नेकी की और तक़्वे की। और अल्लाह से डरो, उस अल्लाह से जिस की तरफ

تُحْشَرُوْنَ ۝٩ اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ

तुम इकट्ठे किए जाओगे। सरगोशी तो सिर्फ शैतान की तरफ से है ताके वो ग़मगीन करे

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

ईमान वालों को हालांके वो उन को ज़रा भी ज़रर नहीं पहोंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से।

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए। ऐ ईमान वालो!

اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ

जब तुम से कहा जाए के मजलिस में खुल कर बैठो तो कुशादगी किया करो, अल्लाह तुम्हारे लिए

اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ

कुशादगी करेगा। और जब कहा जाए के उठ जाओ तब उठ जाओ, तो अल्लाह तुम में से

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ

ईमान वालों के और उन के दरजात बुलन्द करेगा जिन को इल्म दिया गया।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١١ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर हैं। ऐ ईमान वालो!

اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ

जब तुम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सरगोशी करो, तो अपनी सरगोशी से पेहले कुछ सदक़ा

صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا

कर लो। ये तुम्हारे लिए बेहतर है और ज़्यादा पाकीज़गी वाला है। फिर अगर तुम (सदक़ा) न पाओ

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ

तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाले, निहायत रहम वाले हैं। क्या तुम इस से डर गए के अपनी सरगोशी से

يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ

पेहले सदक़ा कर दिया करो? फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया और अल्लाह ने तुम्हें मुआफ

عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

कर दिया तो नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो और अल्लाह और उस के रसूल का केहना

وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾ اَلَمْ

मानो। और अल्लाह बाखबर है उन कामों से जो तुम करते हो। क्या आप ने देखा नहीं उन लोगों

تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ

की तरफ जिन्हों ने दोस्ती की ऐसी क़ौम से जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब है? वो तुम में से नहीं हैं

وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾

और न उन में से हैं और वो झूठी बात पर क़सम खाते हैं हालांके वो जानते हैं।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

अल्लाह ने उन के लिए दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है। यक़ीनन बुरे हैं वो काम जो वो कर

يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا

रहे हैं। उन्हों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना लिया है, फिर उन्हों ने अल्लाह के रास्ते

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ

से रोका, फिर उन के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है। हरगिज़ उन के कुछ काम नहीं

عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

आएंगे उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से ज़रा भी।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ

ये दोज़खी हैं। वो उस में हमेशा रहेंगे। जिस दिन

يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ

अल्लाह उन तमाम को क़ब्रों से उठाएगा, फिर वो अल्लाह के सामने क़स्में खाएंगे जैसा के वो तुम्हारे सामने

وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾

क़स्में खाते थे और वो समझते हैं के वो (अच्छे) काम पर हैं। सुनो! यक़ीनन वो झूठे हैं।

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ

शैतान उन पर ग़ालिब आ गया है, फिर शैतान ने अल्लाह का ज़िक्र उन से भुला दिया है। ये शैतान का

الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

गिरोह है। सुनो! यक़ीनन शैतान का गिरोह वही खसारा उठाने वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰٓئِكَ فِى الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

यक़ीनन वो लोग जो अल्लाह और उस के रसूल से मुखालफत रखते हैं ये सब से ज़्यादा ज़लील लोगों में हैं।

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِىْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾

अल्लाह ने लिख दिया है के मैं और मेरे पैग़म्बर ही ज़रूर ग़ालिब रहेंगे। यक़ीनन अल्लाह क़ूव्वत वाला, ज़बर्दस्त है।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ

आप नहीं पाओगे ऐसी क़ौम को जो ईमान रखती है अल्लाह पर और आखिरी दिन पर के वो दोस्ती रखते हों

مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ

उन से जो अल्लाह और उस के रसूल के मुखालिफ हैं, अगर्चे वो उन के बाप दादा या उन के बेटे

اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ

या उन के भाई या उन का खानदान ही क्यूं न हो। ये वो लोग हैं के जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख

الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

दिया है और अपनी तरफ से रूह के ज़रिए उन की ताईद की है। और अल्लाह उन्हें जन्नतों में दाखिल करेगा,

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से

عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾

राज़ी हो गए। ये अल्लाह का गिरोह है। सुनो! यक़ीनन अल्लाह का गिरोह ही फ़लाह पाने वाला है।

اٰيَاتُهَا ٢٤ (٥٩) سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ (١٠١) رُكُوْعَاتُهَا ٣

उस में २४ आयतें हैं सूरह हश्र मदीना में नाज़िल हुई और ३ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ

अल्लाह के लिए तस्बीह करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और वो

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। वही है जिस ने एहले किताब में से काफिरों को उन के

مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ

घरों से पेहली बार इकठ्ठे करने के वक्त बाहर निकाला। तुम ने गुमान नहीं किया था

اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ

के वो निकलेंगे और वो भी गुमान कर रहे थे के उन को उन के क़िल्अे अल्लाह से बचाने वाले हैं, फिर अल्लाह

اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ

उन के पास आया ऐसी जगह से जिस का उन्हों ने गुमान भी नहीं किया था और अल्लाह ने उन के दिलों में रौब

الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

डाल दिया के वो अपने घरों को अपने हाथों से और ईमान वालों के हाथों से उजाड़ने लगे।

فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ۝ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ

तो ऐ बसीरत वालो! इबरत पकड़ो। और अगर अल्लाह ने उन पर जिलावतनी न लिख दी

الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ

होती तो अल्लाह उन को दुन्या में अज़ाब देता। और उन के लिए आखिरत में आग का

النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ

अज़ाब है। ये इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफत की। और जो भी

يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ مَا قَطَعْتُمْ

अल्लाह की मुखालफत करेगा तो यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है। जो खजूर का

مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ

दरख्त तुम ने काटा या उस को अपनी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो वो अल्लाह के हुक्म से

اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ

था और इस लिए ताके अल्लाह नाफरमानों को रुस्वा करे। और जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उन लोगों से

مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ

(फेअ बना कर) लौटाया, फिर तुम ने उस पर घोड़े और ऊँट नहीं दौड़ाए थे,

وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

लेकिन अल्लाह मुसल्लत करता है अपने पैग़म्बरों को जिस पर चाहता है। और अल्लाह हर चीज़ पर

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ

कुदरत वाला है। जो अल्लाह ने अपने रसूल पर माले फैअ लौटाया उन बस्तियों वालों की

الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى

तरफ से, तो वो अल्लाह का है और रसूल का है और रिश्तेदारों और यतीमों

وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً ۢ بَيْنَ

और मिस्कीनों और मुसाफिर का है। ताके ये तुम में से मालदारों के दरमियान घूमने वाली

الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ۭ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۤ

जाएदाद बन कर न रेह जाए। और रसूल तुम्हें जो दे उस को ले लो।

وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

और जिस से तुम्हें रोके उस से रुक जाओ। और अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा

الْعِقَابِ ۝٧ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا

देने वाला है। उन फुक़रा के लिए (माले फैअ) है जिन्हों ने हिजरत की, जो अपने घरों से

وقف لازم

مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ

और अपने मालों से निकाल दिए गए हैं, जो अल्लाह का फ़ज़्ल और अल्लाह की खुशनूदी तलब

وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ

करते हैं और जो अल्लाह और उस के रसूल की नुसरत करते हैं। यही लोग

الصّٰدِقُوْنَ ۝٨ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ

सच्चे हैं। और उन के लिए (माले फैअ) है जो मदीना में मुक़ीम थे ईमान के साथ

مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ

मुहाजिरीन के आने से पेहले, जो महब्बत करते हैं उस से जो हिजरत कर के आए उन की तरफ और अपने दिलों में

فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ

कोई तंगी नहीं पाते उस की तरफ से जो उन्हें (मुहाजिरीन को) दिया जाए, और वो अपने आप पर मुहाजिरीन को

عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ڵ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ

तरजीह देते हैं अगर्चे खुद उन के साथ फाक़ा ही क्यूं न हो। और जिसे अपने नफ्स के बुख्ल से

نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٩ وَالَّذِيْنَ جَاۗءُوْ

बचा लिया गया तो यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उन के

مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَا اغۡفِرۡ لَنَا وَلِاِخۡوَانِنَا

बाद आए, वो केहते हैं के ऐ हमारे रब! मग़फ़िरत कर दे हमारी और हमारे भाइयों की,

الَّذِيۡنَ سَبَقُوۡنَا بِالۡاِيۡمَانِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِىۡ قُلُوۡبِنَا

उन की जिन्हों ने ईमान में हम से सबक़त की है और हमारे दिलों में ईमान वालों

غِلًّا لِّلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۱۰﴾

के लिए कीना मत रख, ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू बहोत ज़्यादा शफक़त वाला, निहायत महरबान है।

اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ نَافَقُوۡا يَقُوۡلُوۡنَ لِاِخۡوَانِهِمُ الَّذِيۡنَ

क्या आप ने नहीं देखा मुनाफ़िक़ीन को जो एहले किताब में से

كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ لَئِنۡ اُخۡرِجۡتُمۡ لَنَخۡرُجَنَّ

अपने काफिर भाइयों से केहते हैं के अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल

مَعَكُمۡ وَلَا نُطِيۡعُ فِيۡكُمۡ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنۡ قُوۡتِلۡتُمۡ

जाएंगे, और हम तुम्हारे बारे में किसी की बात कभी नहीं मानेंगे। और अगर तुम से क़िताल किया गया, तो हम

لَنَنۡصُرَنَّكُمۡ ؕ وَاللّٰهُ يَشۡهَدُ اِنَّهُمۡ لَكٰذِبُوۡنَ ﴿۱۱﴾

तुम्हारी ज़रूर नुसरत करेंगे। हालांके अल्लाह गवाही देता है के ये बिल्कुल झूठे हैं।

لَئِنۡ اُخۡرِجُوۡا لَا يَخۡرُجُوۡنَ مَعَهُمۡ ۚ وَلَئِنۡ قُوۡتِلُوۡا

अगर वो निकाले गए तो ये उन के साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उन से क़िताल किया गया तो उन की नुसरत

لَا يَنۡصُرُوۡنَهُمۡ ۚ وَلَئِنۡ نَّصَرُوۡهُمۡ لَيُوَلُّنَّ الۡاَدۡبَارَ ۟

नहीं करेंगे। और अगर वो उन की नुसरत करेंगे भी, तो वो ज़रूर पीठ फेर कर भागेंगे।

ثُمَّ لَا يُنۡصَرُوۡنَ ﴿۱۲﴾ لَاَنۡتُمۡ اَشَدُّ رَهۡبَةً فِىۡ صُدُوۡرِهِمۡ

फिर उन की नुसरत नहीं की जाएगी। अलबत्ता तुम्हारा खौफ उन के दिलों में अल्लाह से भी

مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَفۡقَهُوۡنَ ﴿۱۳﴾

ज़्यादा है। ये इस वजह से के ये ऐसी क़ौम है जो कुछ समझती नहीं।

لَا يُقَاتِلُوۡنَكُمۡ جَمِيۡعًا اِلَّا فِىۡ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ

वो सब इकठ्ठे हो कर भी तुम से क़िताल नहीं कर सकते मगर क़िल्आबन्द बस्तियों में

اَوۡ مِنۡ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاۡسُهُمۡ بَيۡنَهُمۡ شَدِيۡدٌ ؕ تَحۡسَبُهُمۡ جَمِيۡعًا

या दीवारों की ओट से। उन की लड़ाई आपस में बड़ी सख्त है। आप उन्हें इकठ्ठे गुमान करते हैं

وَّقُلُوۡبُهُمۡ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَوۡمٌ لَّا يَعۡقِلُوۡنَ ۚ ﴿١٤﴾

हालांके उन के दिल अलग अलग हैं। ये इस वजह से के ये ऐसी क़ौम है जो अक़्ल नहीं रखती।

كَمَثَلِ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ قَرِيۡبًا ذَاقُوۡا وَبَالَ اَمۡرِهِمۡ ۚ

इन का हाल उन के हाल की तरह है जो उन से पेहले अभी गुज़रे हैं जिन्हों ने अपनी हरकत का वबाल चख लिया।

وَلَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۚ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيۡطٰنِ اِذۡ قَالَ

और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। उन का हाल उस शैतान के हाल की तरह है जब वो इन्सान से केहता

لِلۡاِنۡسَانِ اكۡفُرۡ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّىۡ بَرِىۡٓءٌ مِّنۡكَ اِنِّىۡۤ

है के तू काफिर बन जा। जब वो कुफ्र कर लेता है, तो शैतान केहता है के मैं तुझ से बरी हूँ के मैं

اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿١٦﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَاۤ اَنَّهُمَا

अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। फिर दोनों का अन्जाम ये होगा के वो दोनों

فِى النَّارِ خَالِدَيۡنِ فِيۡهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيۡنَ ﴿١٧﴾

आग में होंगे, उस में वो हमेशा रहेंगे। और ये ज़ालिमों की सज़ा है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلۡتَنۡظُرۡ نَفۡسٌ

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और चाहिए के हर शख़्स देख ले वो

مَّا قَدَّمَتۡ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيۡرٌۢ

जो उस ने कल के लिए आगे किया भेजा है। और अल्लाह से डरो। यक़ीनन अल्लाह बाखबर है उन कामों से

بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوۡنُوۡا كَالَّذِيۡنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنۡسٰٮهُمۡ

जो तुम करते हो। और उन लोगों की तरह मत बनो जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया, फिर अल्लाह ने खुद उन को

اَنۡفُسَهُمۡ ؕ اُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسۡتَوِىۡۤ

उन की जानों से भुला दिया। यही लोग नाफरमान हैं। दोज़खी और जन्नती

اَصۡحٰبُ النَّارِ وَاَصۡحٰبُ الۡجَـنَّةِ ؕ اَصۡحٰبُ الۡجَـنَّةِ هُمُ

बराबर नहीं हो सकते। जन्नती ही कामयाब

الۡفَآئِزُوۡنَ ﴿٢٠﴾ لَوۡ اَنۡزَلۡنَا هٰذَا الۡقُرۡاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ

होने वाले हैं। अगर हम इस कुरआन को उतारते पहाड़ पर

لَّرَاَيۡتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنۡ خَشۡيَةِ اللّٰهِ ؕ

तो आप उसे ज़रूर आजिज़ी करने वाला, अल्लाह के खौफ की वजह से फटने वाला देखते।

ع ٢/٥

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
और ये मिसालें हैं जो हम इन्सानों के लिए बयान करते हैं ताके वो

يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
सोचें। वही अल्लाह वो है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾
वो ज़ाहिर और छुपी हुई चीज़ों को जानने वाला है। वो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ
वही अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। वो बादशाह है, सब ऐबों से पाक है,

السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ
सलामती वाला है, अमन देने वाला है, निगेहबान है, ज़बर्दस्त है, कूव्वत वाला है, बड़ाई वाला है।

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ
अल्लाह उन के शरीक ठेहराने से पाक है। वही अल्लाह है जो खिल्क़त को बनाने वाला,

الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ
पैदा करने वाला, सूरतें बनाने वाला है, उस के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं। उस की तस्बीह पढ़ती हैं वो

مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾ ع
तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और वो ज़बर्दस्त है, हिकमत वाला है।

اٰيَاتُهَا ١٣ (٦٠) سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ (٩١) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में १३ आयतें हैं सूरह मुमतहिना मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّىْ وَ عَدُوَّكُمْ
ऐ ईमान वालो! मेरे और अपने दुशमन को दोस्त मत

اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا
बनाओ, तुम उन को दोस्ती से पैग़ाम भेजते हो हालांके उन्हों ने कुफ्र किया

بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ
उस हक़ के साथ जो तुम्हारे पास आया। वो रसूल को और तुम्हें भी निकालते हैं

اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا

इस वजह से के तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान रखते हो। अगर तुम मेरे रास्ते में और मेरी रज़ा

فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ

की तलब में जिहाद के लिए निकले हो, फिर तुम उन की तरफ चुपके चुपके महब्बत का पैग़ाम भेजते हो।

وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ

हालांके मैं खूब जानता हूँ उस को जो तुम ने छुपाया और जो ज़ाहिर किया। और जो तुम में से ऐसा

مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝١ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ

करेगा तो यक़ीनन वो सीधे रास्ते से गुमराह हो गया। अगर वो तुम पर क़ुदरत पा लें

يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ

तो वो तुम्हारे दुश्मन बन जाएं और तुम्हारी तरफ अपने हाथ और अपनी ज़बानें

وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۝٢ؕ لَنْ تَنْفَعَكُمْ

बुराई के साथ चलाएं और वो तो चाहते हैं के तुम काफिर बन जाओ। हरगिज़ तुम्हें नफा देगी

اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ

तुम्हारी रिश्तेदारियाँ और न तुम्हारी औलाद क़यामत के दिन। वो तुम्हारे दरमियान फैसला करेगा।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ

और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे हैं। तुम्हारे लिए इब्राहीम (अलैहिससलातु वस्सलाम)

حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا

में और उन में जो उन के साथ थे अच्छा नमूना है। जब उन्हों ने अपनी

لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ

क़ौम से कहा के हम तुम से बरी हैं और उन से भी बरी हैं जिन की तुम अल्लाह के

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ز كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ

सिवा इबादत करते हो। हम ने तुम्हारे साथ कुफ्र किया और हमारे और तुम्हारे दरमियान अदावत

الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ

और बुग्ज़ हमेशा के लिए ज़ाहिर हो गया जब तक के तुम यकता अल्लाह पर ईमान न लाओ,

اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ

मगर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का फरमान अपने अब्बा से के मैं ज़रूर तेरे लिए इस्तिग़फार करूँगा, और

أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا

मैं तेरे लिए अल्लाह से किसी भी चीज़ का इखतियार नहीं रखता। ऐ हमारे रब! हम ने तुझ ही पर

وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝٤ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا

तवक्कुल किया और तेरी ही तरफ तौबा करते हैं और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब! हमें काफिरों का

فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ

तख्तए मश्क़ न बना और हमारी मग़फिरत कर दे, ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝٥ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। यक़ीनन तुम्हारे लिए उन में अच्छा नमूना है

لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ

उस शख्स के लिए जो उम्मीद रखता हो अल्लाह की और आखिरी दिन की। और जो रूगरदानी करेगा

فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝٦ عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَّجْعَلَ

तो यक़ीनन अल्लाह वो बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। उम्मीद है के अल्लाह तुम्हारे

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ

और उन के दरमियान जिन से तुम्हें अदावत है, महब्बत पैदा कर दे। और अल्लाह

قَدِيرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝٧ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ

कुदरत वाला है। और अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। अल्लाह तुम्हें नहीं रोकता

عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ

उन से जिन्हों ने तुम से दीन में क़िताल नहीं किया और तुम्हें अपने

مِّنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ ؕ

घरों से नहीं निकाला, (इस से नहीं रोकता) के तुम उन के साथ एहसान करो और तुम उन के साथ इन्साफ करो।

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝٨ إِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ

यक़ीनन अल्लाह इन्साफ करने वालों से महब्बत करते हैं। अल्लाह तुम्हें सिर्फ रोकते हैं उन

عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ

से जिन्हों ने तुम से दीन में क़िताल किया और तुम्हें अपने घरों से

مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوا عَلٰى إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ

निकाला और तुम्हारे निकालने पर दूसरों की मदद की, (रोकता है इस से) के तुम उन से दोस्ती करो।

وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ۝٩ يٰٓاَيُّهَا
और जो उन से दोस्ती रखेगा तो यही लोग ज़ालिम हैं। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ
ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें हिजरत कर के आएं,

فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ
तो उन का इम्तिहान ले लो। अल्लाह उन के ईमान को खूब जानता है। फिर अगर तुम उन को मोमिन

مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۭ لَا هُنَّ حِلٌّ
जान लो तो उन को काफिरों की तरफ वापस मत लौटाओ। न ये मोमिन औरतें उन के लिए हलाल

لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ
हैं और न वो उन के लिए हलाल हैं। और काफिरों को दो वो जो उन्हों ने खर्च किया है।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ
और तुम पर कोई गुनाह नहीं है के तुम उन औरतों से निकाह करो जब उन को उन के महर

اُجُوْرَهُنَّ ۭ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا
दे दो। और काफिर औरतों के नामूस अपने क़ब्ज़े में मत रखो और मांग लो वो जो

مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ۭ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۭ
तुम ने खर्च किया है और उन्हें भी चाहिए के वो मांग लें जो उन्हों ने खर्च किया है। ये अल्लाह का हुक्म है।

يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ۝١٠ وَاِنْ فَاتَكُمْ
अल्लाह तुम्हारे दरमियान फैसला करता है। और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी

شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا
बीवियों में से कोई बीवी काफिरों की तरफ चली जाए, फिर तुम सज़ा दो, तो दे दो

الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۭ وَاتَّقُوا
उन को जिन की बीवियाँ चली गई हैं उस के मानिन्द जो उन मुसलमान शौहरों ने खर्च किया था। और अल्लाह से

اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ۝١١ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ
डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)!

اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ
जब आप के पास मोमिन औरतें आएं के आप से बैअत करें इस पर के वो अल्लाह के साथ शरीक नहीं

بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ

ठेहराएंगी किसी चीज़ को और चोरी नहीं करेंगी और ज़िना नहीं करेंगी और अपनी औलाद को क़त्ल नहीं

اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ

करेंगी और बुहतान नहीं बांधेंगी जिस को वो घड़ें अपने हाथों और पैरों

وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ

के सामने और आप की किसी नेक काम में नाफरमानी नहीं करेंगी, तो आप उन को बैअत फरमा लीजिए

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٢ يٰۤاَيُّهَا

और उन के लिए अल्लाह से इस्तिग़फार कीजिए। यक़ीनन अल्लाह बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا

ईमान वालो! दोस्ती मत रखो उस क़ौम से जिन पर अल्लाह का गज़ब है जो आखिरत से

مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ۝١٣

मायूस हो चुके हैं जिस तरह के काफिर क़ब्र वालों से मायूस हो चुके हैं।

اٰيَاتُهَا ١٤ (٦١) سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ (١٠٩) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में १४ आयतें हैं सूरह सफ मदीना में नाज़िल हुई और २ रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

अल्लाह की तस्बीह पढ़ती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيْمُ ۝١ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ

हिक्मत वाला है। ऐ ईमान वालो! क्यूं केहते हो वो बातें जो तुम खुद

مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٢ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا

करते नहीं? अल्लाह के नज़दीक बेज़ारी के ऐतेबार से बहोत बड़ी है ये बात के तुम कहो

مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٣ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ

वो जो तुम करो नहीं। यक़ीनन अल्लाह दोस्त रखते हैं उन को जो क़िताल करते हैं

فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝٤ وَاِذْ

अल्लाह के रास्ते में सफ बांध कर गोया के वो सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। और जब

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम से फरमाया ऐ मेरी क़ौम! मुझे क्यूं ईज़ा देते हो हालांके तुम जानते हो के

اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ

मैं अल्लाह का तुम्हारी तरफ भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ। फिर जब वो टेढ़े चले तो अल्लाह ने उन के दिल टेढ़े

قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

कर दिए। और अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत नहीं देते।

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ

और जब के ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने कहा ऐ बनी इस्राईल! मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह

اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ

का भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ उस तौरात को सच्चा बतलाने वाला हूँ जो मुझ से पेहले थी

وَ مُبَشِّرًا ۢ بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ

और मैं उस रसूल की बशारत देता हूँ जो मेरे बाद आएंगे जिन का नाम अहमद होगा।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ

फिर जब वो उन के पास रोशन मोअजिज़ात ले कर आए तो उन्हों ने कहा के ये तो खुला जादू है। और उस

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى

से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े जब के उसे इस्लाम की

اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧

तरफ दावत दी जा रही हो? और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते।

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ

वो ये चाहते हैं के वो अल्लाह के नूर को अपने मुंह से बुझा दें। और अल्लाह

مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ

अपने नूर को इत्माम तक पहोंचाने वाला है अगर्चे काफिर नापसन्द करें। वही अल्लाह है जिस ने अपना

رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ

रसूल हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा ताके वो उसे ग़ालिब कर दे

عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

तमाम अदयान पर अगर्चे मुशरिक बुरा मानें। ऐ ईमान

اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ

वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बतलाऊँ जो तुम को नजात दे दर्दनाक अज़ाब

اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُجَاهِدُوْنَ

से? ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के पैग़म्बर पर और तुम

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ

अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों के ज़रिए जिहाद करो। ये तुम्हारे लिए बेहतर

لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ

है अगर तुम्हें समझ है। तो वो तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा

وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ

और वो तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी

وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ

और उम्दा रेहने के मकानात में (दाखिल करेगा) जन्नाते अद्न में। ये बड़ी

الْعَظِيْمُ ۝١٢ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ

कामयाबी है। और एक दूसरी नेअमत मिलेगी जो तुम्हें पसन्द है। वो अल्लाह की तरफ से नुसरत और क़रीबी

قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

फ़तह है। और ईमान वालों को बशारत सुना दीजिए। ऐ ईमान वालो!

كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

अल्लाह के मददगार बन जाओ जैसा के ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने हवारीयीन से

لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

फरमाया था के कौन हैं मेरे मददगार अल्लाह की तरफ? हवारीयीन ने कहा के

نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ

हम अल्लाह के मददगार हैं। फिर बनी इस्राईल की एक जमाअत ईमान

اِسْرَآءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ

लाई और एक जमाअत ने कुफ्र किया। तो हम ने ईमान वालों को

اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝١٤ ع

उन के दुशमन के खिलाफ कूव्वत दी, पस वो ग़ालिब रहे।

ع ٥ ١٠

رُكُوعَاتُهَا ٢ (٦٢) سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ (١١٠) اٰيَاتُهَا ١١

और २ रूकूअ हैं सूरह जुमुआ मदीना में नाज़िल हुई उस में ११ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ

अल्लाह की तस्बीह करती हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में और ज़मीन में हैं, उस अल्लाह की जो बादशाह है,

الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝١ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ

तमाम उयूब से पाक है, ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। वही अल्लाह है जिस ने उम्मियों में उन्ही

فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ

में से एक पैग़म्बर भेजा जो उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत करते हैं और उन का तज़किया करते हैं

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ

और उन्हें किताब और हिक्मत की तालीम देते हैं। और यक़ीनन वो इस से पेहले

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۭ

खुली गुमराही में थे। और उन में से दूसरों की तरफ भी भेजा है जो अभी उन से मिले नहीं।

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

और वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। ये अल्लाह का फ़ज़्ल है, उसे देता है

مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٤ مَثَلُ

जिसे चाहता है। और अल्लाह भारी फ़ज़्ल वाला है। उन लोगों का

الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ

हाल जिन पर तौरात लादी गई, फिर उन्हों ने उस को नहीं उठाया उस गधे की

الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۭ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ

तरह है जो दफतरों को उठाए हुए हो। बुरी है उस क़ौम की मिसाल जिस ने

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥

अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देते।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَاۗءُ

आप फरमा दीजिए ऐ यहूदियो! अगर तुम्हारा ये दावा है के तुम अल्लाह के दोस्त

لِلّٰهِ مِنۡ دُوۡنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الۡمَوۡتَ اِنۡ كُنۡتُمۡ
हो और इन्सानों को छोड़ कर, तो तुम मौत की तमन्ना करो अगर तुम

صٰدِقِيۡنَ ۝٦ وَلَا يَتَمَنَّوۡنَهٗۤ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتۡ اَيۡدِيۡهِمۡ ؕ
सच्चे हो। और ये लोग कभी भी मौत की तमन्ना नहीं करेंगे उन आमाल की वजह से जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं।

وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌۢ بِالظّٰلِمِيۡنَ ۝٧ قُلۡ اِنَّ الۡمَوۡتَ الَّذِىۡ
और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानते हैं। फरमा दीजिए यक़ीनन वो मौत जिस

تَفِرُّوۡنَ مِنۡهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيۡكُمۡ ثُمَّ تُرَدُّوۡنَ اِلٰى عٰلِمِ
से तुम भागते हो ज़रूर वो तुम से मिल कर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले

الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمۡ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝٨ ع
अल्लाह की जानिब लौटाए जाओगे, फिर वो तुम्हें तुम्हारे आमाल की खबर देगा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا نُوۡدِىَ لِلصَّلٰوةِ مِنۡ يَّوۡمِ
ऐ ईमान वालो! जब जुमुआ के दिन नमाज़ की अज़ान दी

الۡجُمُعَةِ فَاسۡعَوۡا اِلٰى ذِكۡرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الۡبَيۡعَ ؕ
जाए, तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ दौड़ो और खरीद व फरोख्त को छोड़ दो।

ذٰلِكُمۡ خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ۝٩ فَاِذَا قُضِيَتِ
ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। फिर जब नमाज़ खत्म हो

الصَّلٰوةُ فَانۡتَشِرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَابۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِ
जाए, तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलब

اللّٰهِ وَاذۡكُرُوا اللّٰهَ كَثِيۡرًا لَّعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ۝١٠
करो और अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करो ताके तुम फलाह पाओ

وَاِذَا رَاَوۡا تِجَارَةً اَوۡ لَهۡوَا ۨانۡفَضُّوۡۤا اِلَيۡهَا وَتَرَكُوۡكَ
और जब वो तिजारत या अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली कोई चीज़ देखते हैं तो उस की तरफ दौड़ पड़ते हैं और आप को

قَآئِمًا ؕ قُلۡ مَا عِنۡدَ اللّٰهِ خَيۡرٌ مِّنَ اللَّهۡوِ
खड़ा हुवा छोड़ जाते हैं। आप फरमा दीजिए जो अल्लाह के पास है वो अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली चीज़ों से बेहतर है

وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيۡرُ الرّٰزِقِيۡنَ ۝١١ ع
और तिजारत से बेहतर है। और अल्लाह बेहतरीन रोज़ी देने वाला है।

ايَاتُهَا ١١ (٦٣) سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ (١٠٤) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ११ आयतें हैं सूरह मुनाफ़िकून मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ

जब मुनाफिक़ आप के पास आते हैं तो केहते हैं के हम गवाही देते हैं के यक़ीनन आप अल्लाह के रसूल

اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ

हैं। और अल्लाह जानता है के बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह गवाही देता है

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۚ ﴿١﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

के ये मुनाफिक़ बिल्कुल झूठे हैं। उन्हों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना रखा है,

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا

फिर वो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं। यक़ीनन बुरे हैं जो काम वो

يَعْمَلُوْنَ ﴿٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ

कर रहे हैं। ये इस वजह से के वो ईमान लाए, फिर काफिर बन गए, तो उन के दिलों पर मुहर

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٣﴾ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ

लगा दी गई, अब वो समझते नहीं। और जब आप उन को देखोगे तो उन के जिस्म आप को

اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ

अच्छे लगेंगे। और अगर वो बोलेंगे तो आप उन की बात सुनोगे। गोया के वो

خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ

सहारे से टिकी हुई लकड़ियाँ हैं। वो गुमान करते हैं हर चीख को अपने ऊपर। वही

الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٤﴾

दुशमन हैं, इस लिए आप उन से बचते रहिए। अल्लाह उन को मारे। कहाँ वो उलटे फिरे जा रहे हैं?

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا

और जब उन से कहा जाता है के आओ, तुम्हारे लिए अल्लाह के पैग़म्बर मग़फिरत तलब करते हैं, तो वो अपने

رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٥﴾

सर हिलाते हैं और आप उन को देखोगे के वो रूकते हैं और वो तकब्बुर करते हैं।

وقف لازم

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ

उन के लिए बराबर है के आप उन के लिए इस्तिग़फार करें या उन के लिए इस्तिग़फार न करें।

لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

अल्लाह उन की हरगिज़ मग़फिरत नहीं करेगा। बेशक अल्लाह नाफरमान क़ौम को हिदायत नहीं दिया

الْفٰسِقِيْنَ ۝٦ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ

करते। ये वही हैं जो केहते हैं के तुम खर्च मत करो उन पर जो

عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ

अल्लाह के पैग़म्बर के पास रेहते हैं ताके वो मुतफर्रिक़ हो जाएं। और अल्लाह के लिए आसमानों

وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧

और ज़मीन के खज़ाने हैं, लेकिन मुनाफिक़ समझते नहीं।

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ

वो केहते हैं के अगर हम मदीना वापस गए तो इज़्ज़त वाला

الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ

मदीना से ज़लील को निकाल देगा। हालांके इज़्ज़त अल्लाह ही के लिए और उस के रसूल के लिए

وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨ ع

और ईमान वालों के लिए है, लेकिन मुनाफिक़ जानते नहीं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ

ऐ ईमान वालो! तुम्हें तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद

وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ

अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफिल न बना दें। और जो ऐसा करेगा तो यही

هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٩ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ

खसारे वाले हैं। और हमारी दी हुई रोज़ी में से खर्च करो

مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ

इस से पेहले के तुम में से किसी एक की मौत आ जाए, फिर वो कहे ऐ मेरे रब!

لَوْلَآ اَخَّرْتَنِىْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ

तू ने मुझे क़रीबी मुद्दत तक मुहलत क्यूं नहीं दी के मैं सदक़ा करता और नेक लोगों में

الصّٰلِحِيْنَ ۝١٠ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ

से बन जाता। और अल्लाह किसी शख़्स को जब उस का आखिरी वक़्त आ जाता है तो उसे हरगिज़ मुहलत

اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١١

नहीं देता। और अल्लाह तुम्हारे अमल से बाखबर है।

اٰيَاتُهَا ١٨ (٦٤) سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٨) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में १८ आयतें हैं सूरह तग़ाबुन मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ لَهُ

अल्लाह के लिए तस्बीह करती हैं वो सब चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं। उसी के लिए

الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝١

सल्तनत है और उसी के लिए तमाम तारीफें हैं। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّ مِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ

उसी ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कुछ काफिर हैं और तुम में से कुछ मोमिन हैं।

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

और अल्लाह तुम्हारे अमल देख रहा है। उस ने आसमानों और ज़मीन को

وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ

पैदा किया हक़ के साथ और उस ने तुम्हारी सूरतें बनाईं, फिर उस ने तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं।

وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और उसी की तरफ लौटना है। अल्लाह जानता है उन तमाम चीज़ों को जो आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं

وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपा कर करते हो और जो अलानिया करते हो। और अल्लाह दिलों का

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

हाल खूब जानता है। क्या तुम्हारे पास उन लोगों की खबर नहीं आई जिन्हों ने

مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ

इस से पेहले कुफ्र किया। फिर उन्हों ने अपने किए का वबाल चखा और उन के लिए दर्दनाक

اَلِيۡمٌ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتۡ تَّاۡتِيۡهِمۡ رُسُلُهُمۡ
अज़ाब है। ये इस वजह से के उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर

بِالۡبَيِّنٰتِ فَقَالُوۡۤا اَبَشَرٌ يَّهۡدُوۡنَنَا ۫ فَكَفَرُوۡا
आते थे, तो वो केहते थे के क्या बशर हमें रास्ता बताएंगे? फिर उन्हों ने कुफ्र किया

وَتَوَلَّوۡا وَّاسۡتَغۡنَى اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِىٌّ حَمِيۡدٌ۝ زَعَمَ
और रूगरदानी की और अल्लाह ने परवाह नहीं की। और अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। काफिरों ने ये गुमान

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنۡ لَّنۡ يُّبۡعَثُوۡا ؕ قُلۡ بَلٰى وَرَبِّىۡ
कर रखा है के वो क़ब्रों से हरगिज़ उठाए नहीं जाएंगे। आप फरमा दीजिए क्यूं नहीं! मेरे रब की क़सम!

لَتُبۡعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلۡتُمۡ ؕ وَذٰلِكَ
तुम क़ब्रों से ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें तुम्हारे अमल की खबर दी जाएगी। और ये

عَلَى اللّٰهِ يَسِيۡرٌ۝ فَاٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَالنُّوۡرِ الَّذِىۡۤ
अल्लाह पर आसान है। इस लिए तुम ईमान ले आओ अल्लाह पर और उस के पैग़म्बर पर और उस नूर पर जो हम ने

اَنۡزَلۡنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ۝ يَوۡمَ يَجۡمَعُكُمۡ
उतारा है। और अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। जिस दिन वो तुम्हें इकठ्ठा करेगा

لِيَوۡمِ الۡجَمۡعِ ذٰلِكَ يَوۡمُ التَّغَابُنِ ؕ وَمَنۡ يُّؤۡمِنۡۢ
जमा होने के दिन में, वो हार जीत का दिन होगा। और जो अल्लाह पर ईमान

بِاللّٰهِ وَيَعۡمَلۡ صَالِحًا يُّكَفِّرۡ عَنۡهُ سَيِّاٰتِهٖ
लाएगा और नेक अमल करता रहेगा, तो अल्लाह उस से उस की बुराइयाँ दूर कर देगा

وَيُدۡخِلۡهُ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ
और उसे जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी,

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ۝
जिन में वो हमेशा रहेंगे। ये अज़ीम कामयाबी है।

وَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصۡحٰبُ
और वो लोग जिन्हों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही दोज़खी

النَّارِ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ۝ مَاۤ اَصَابَ
हैं, वो उस में हमेशा रहेंगे। और ये बुरी जगह है। कोई मुसीबत

مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ

नहीं पहोंचती मगर अल्लाह के हुक्म से। और जो ईमान लाए अल्लाह पर

يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١﴾ وَاَطِيْعُوا

तो अल्लाह उस के दिल को हिदायत देगा। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानते हैं। और अल्लाह

اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا

और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम रूगरदानी करो तो हमारे

عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٢﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ

पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ साफ साफ पहोंचा देना है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ

और अल्लाह ही पर ईमान वालों को तवक्कुल करना चाहिए। ऐ ईमान

اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ

वालो! यक़ीनन तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बाज़ तुम्हारे दुशमन हैं,

فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا

तो तुम उन से बचते रहो। और अगर मुआफ करो और दरगुज़र करो और बख्श दो

فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ

तो यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो सिर्फ

وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

आज़माइश (का ज़रिया) हैं। और अल्लाह के पास बड़ा अज्र है।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا

तो अल्लाह से डरो जितना तुम से हो सके और सुनो और खुशी से मानो

وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ

और खर्च करो, तो तुम्हारे लिए ही बेहतर होगा। और जो अपने नफ्स के बुख्ल से बचा

نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٦﴾ اِنْ تُقْرِضُوا

लिया जाए, तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। अगर तुम अल्लाह को

اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ

अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वो उस को कई गुना कर के तुम्हें देगा और तुम्हारी मग़फिरत कर देगा।

وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٧﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ

और अल्लाह क़दर करने वाला, हिल्म वाला है। वो ज़ाहिर और पोशीदा जानने वाला है,

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।

اٰيَاتُهَا ١٢ (٦٥) سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ (٩٩) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में १२ आयतें हैं सूरह तलाक़ मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! जब तुम औरतों को तलाक़ देने लगो तो उन को तुम तलाक़ दो

لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ

उन की इद्दत पर और इद्दत शुमार करो। और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है।

لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

तुम उन को उन के घरों से मत निकालो और वो खुद भी न निकलें

اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَ تِلْكَ

मगर ये के वो खुली बेहयाई कर लें। और ये

حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ

अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हुदूद हैं। और जो अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हुदूद से तजावुज़ करेगा, तो यक़ीनन

ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ

उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया। वो नहीं जानता के शायद अल्लाह उस के

بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ﴿١﴾ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ

बाद कोई नई सूरत ले आए। फिर जब वो अपनी इद्दत की इन्तिहा (के क़रीब) पहोंच जाएं

فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ

तो उन को रोक लो उर्फ के मुताबिक़ या उन को उर्फ के मुताबिक़ छोड़ दो

وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا

और अपने में से दो आदिल आदमियों को गवाह बना लो और ठीक

الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ
गवाही दो अल्लाह के वास्ते। उस की नसीहत की जाती है उस शख्स को जो

يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ
ईमान रखता है अल्लाह पर और आखिरी दिन पर। और जो तक़्वा इखतियार करेगा

يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ
तो अल्लाह उस के लिए रास्ता बनाएंगे। और उसे रोज़ी देंगे ऐसी जगह से जहाँ से वो गुमान भी

لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ
नहीं करता था। और जो अल्लाह पर तवक्कुल करे तो अल्लाह उस के लिए काफी है।

اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ
यक़ीनन अल्लाह अपने हुक्म को इन्तिहा तक पहोंचाने वाला है। यक़ीनन अल्लाह ने हर चीज़ की एक मिक़्दार

قَدْرًا ﴿۳﴾ وَالّٰٓئِيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ
मुतअय्यन कर रखी है। और जो औरतें हैज़ आने से मायूस हैं

مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ
तुम्हारी बीवियों में से, अगर तुम शक करो तो उन की इद्दत तीन महीने हैं।

وَّالّٰٓئِيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ
और उन औरतों की भी जिन्हें अभी हैज़ नहीं आया (उन की इद्दत भी तीन महीने हैं)। और हमल वाली औरतों की इद्दत

اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ
ये है के वो अपना हमल वज़्अ कर लें। और जो अल्लाह से डरेगा तो अल्लाह उस के लिए

مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ﴿۴﴾ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗٓ
उस के मुआमले में आसानी रख देंगे। ये अल्लाह का अम्र है जो उस ने तुम्हारी

اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ
तरफ उतारा है। और जो अल्लाह से डरेगा, तो अल्लाह उस से उस के गुनाह दूर कर देगा

وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ﴿۵﴾ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ
और उस को बड़ा अज्र देगा। मुतल्लक़ा औरतों को घर दो जहाँ तुम

سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا
रहो अपनी कुदरत के मुताबिक़ और तुम उन को ज़रर न पहोंचाओ ताके तुम उन

عَلَيْهِنَّ ؕ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ

पर तंगी करो। और अगर वो हामिला हों तो उन पर खर्च करो

حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ

यहाँ तक के वो अपना हमल वज़्अ कर लें। फिर अगर वो तुम्हारे लिए बच्चों को दूध पिलाएं

اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ

तो उन को उन की उजरत दो। (बच्चे के मुतअल्लिक़) आपस में उर्फ के मुताबिक़ ज़िम्मेदारी मुक़र्रर करो।

وَ اِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗۤ اُخْرٰى ؕ ۝٦ لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ

और अगर तुम बाहम तंगी करो, फिर उस के लिए कोई दूसरी औरत दूध पिलाए। तो चाहिए के वुस्अत वाला अपनी वुस्अत

مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ

के मुताबिक़ खर्च करे। और जिस पर उस की रोज़ी तंग हो, तो चाहिए के वो खर्च करे उस में से

مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ

जो अल्लाह ने उस को दिया है। अल्लाह किसी शख्स को मुकल्लफ नहीं बनाता मगर उसी के मुताबिक़ जो उस को दिया है।

اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝٧ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ

अनक़रीब अल्लाह तंगी के बाद आसानी रख देंगे। और कितनी बस्तियाँ हैं

ع ١

عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَ رُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا

जिन्हों ने सरकशी की अपने रब के हुक्म से और उस के पैग़म्बरों से, फिर हम ने उन से हिसाब लिया

شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝٨ فَذَاقَتْ

सख्त हिसाब और हम ने उन्हें सख्त अज़ाब दिया। फिर उन्हों ने

وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝٩

अपने किए का वबाल चखा और उन के मुआमले का अन्जाम खसारे वाला हुवा।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا

अल्लाह ने उन के लिए सख्त अज़ाब तय्यार कर रखा है, तो अल्लाह से

اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ۛۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛۚ قَدْ

डरते रहो ऐ अक़्लमन्दो! जो ईमान ला चुके हो। अल्लाह ने

مع عند المتقدمين ١٢

اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝١٠ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا

तुम्हारी तरफ ज़िक्र उतारा है। रसूल भेजा जो

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ

तुम पर अल्लाह की रोशन आयतें तिलावत करते हैं ताके अल्लाह ईमान वालों को

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ

और उन को जो नेक अमल करते रहे तारीकियों से नूर की

اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَ يَعْمَلْ

तरफ निकाले। और जो ईमान लाएगा अल्लाह पर और नेक अमल

صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

करता रहेगा तो अल्लाह उसे जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से नेहरें बेहती

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ

होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। यक़ीनन अल्लाह ने

اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝۱۱ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ

उस को बेहतरीन रोज़ी दी है। अल्लाह वो है जिस ने पैदा किए सात

سَمٰوٰتٍ وَّ مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ

आसमान और उतनी ही ज़मीनें। हुक्म उन के

الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ

दरमियान उतरता है ताके तुम जान लो के अल्लाह हर चीज़ पर

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ

कुदरत वाला है। और ये के अल्लाह का इल्म हर चीज़ को इहाता किए

شَيْءٍ عِلْمًا ۝۱۲

हुए है।

ع ٢ ١٨

اٰيَاتُهَا ١٢ (٦٦) سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٧) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में १२ आयतें हैं सूरह तहरीम मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप क्यूं हराम करते हो उस चीज़ को जो अल्लाह ने आप के लिए हलाल की है?

تَبْتَغِیْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ

आप अपनी बीवियों की खुशनूदी चाहते हो। और अल्लाह बख्शने वाला,

رَّحِیْمٌ ۝۱ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَیْمَانِكُمْ ۚ

निहायत रहम वाला है। अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया है तुम्हारी क़स्मों को खोल देना।

وَ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ۝۲

और अल्लाह तुम्हारा मौला है। और वो इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِیُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِیْثًا ۚ

और जब के नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी एक ज़ौजअे मुतह्हरा से चुपके से एक बात कही।

فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَ اَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَیْهِ عَرَّفَ

फिर जब उस उम्मुल मोमिनीन ने उस की खबर दे दी और अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस पर मुत्तलेअ कर दिया, तो आप

بَعْضَهٗ وَ اَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस में से कुछ बतला दिया और कुछ बताने से ऐराज़ फरमाया। फिर जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस

قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِیَ الْعَلِیْمُ

उम्मुल मोमिनीन को उस की खबर दी, तो वो केहने लगीं के आप को इस की किस ने खबर दी? तो नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

الْخَبِیْرُ ۝۳ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ

ने फरमाया के मुझे इल्म वाले, बाखबर अल्लाह ने खबर दी। अगर तुम दोनों बीवियाँ अल्लाह की तरफ तौबा करोगी (तो बेहतर), तुम दोनों के

قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَیْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ

दिल टेढ़े हो गए हैं। और अगर तुम दोनों आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ एक दूसरे की मदद करोगी, तो अल्लाह आप

وَجِبْرِیْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ وَالْمَلٰٓىِٕكَةُ

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मदद करेगा और जिबरील और नेक मुसलमान। और उस के

بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِیْرٌ ۝۴ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ

बाद फरिशते भी मददगार हैं। अगर नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हें तलाक़ दे दें

اَنْ یُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَیْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ

तो हो सकता है के उन का रब नबीए अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तुम से बेहतर बीवियाँ बदले में दे दे इस्लाम वालियाँ,

مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓىِٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓىِٕحٰتٍ

ईमान वालियाँ, खुशूअ करने वालियाँ, तौबा करने वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, रोज़ा रखने वालियाँ हों,

ثَيِّبٰتٍ وَّ اَبْكَارًا ۞٥ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

सय्यिबा और बाकिरा। ऐ ईमान वालो!

قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ

अपने आप को और अपने घर वालों को आग से बचाओ जिस का ईंधन इन्सान

وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ

और पथ्थर होंगे, जिस पर सख्तमिज़ाज सख्ती करने वाले फरिशते हैं,

لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ

वो अल्लाह की नाफरमानी नहीं करते उस में जो अल्लाह उन्हें हुक्म दे और वो करते हैं वही जिस का उन्हें

مَا يُؤْمَرُوْنَ ۞٦ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا

हुक्म दिया जाता है। ऐ काफिरो! आज उज़्र मत पेश

ع ٧ ١٩

الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞٧

करो। तुम्हें सिर्फ सज़ा दी जाएगी उन्ही कामों की जो तुम करते थे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً

ऐ ईमान वालो! अल्लाह की तरफ तौबअे नसूह

نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ

करो। उम्मीद है के तुम्हारा रब तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर

سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

कर देगा और तुम्हें जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के नीचे से

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِىَّ

नेहरें बेहती होंगी। जिस दिन नबी को और उन को जो उन के साथ ईमान लाए हैं

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ

अल्लाह रुस्वा नहीं करेंगे। उन के आगे और उन की दाईं जानिब

اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا

उन का नूर दौड़ रहा होगा, वो केह रहे होंगे ऐ हमारे रब! तू हमारे लिए हमारे नूर को इत्माम तक

نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۞٨

पहोंचा और हमारी मग़फिरत कर दे। यक़ीनन तू हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ
ऐ नबी! आप काफिरों से और मुनाफिक़ीन से जिहाद कीजिए

وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ
और उन पर सख्ती कीजिए। और उन का ठिकाना जहन्नम है। और वो बुरी

الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ
जगह है। अल्लाह ने काफिरों के लिए मिसाल बयान की नूह (अलैहिस्सलाम)

نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ
और लूत (अलैहिस्सलाम) की बीवियों की। जो दोनों हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों की

مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا
मातहती में थीं, फिर दोनों ने उन दोनों नबियों से खयानत की, फिर वो दोनों नबी अल्लाह के मुक़ाबले

عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ
में उन दोनों के कुछ काम नहीं आए और कहा गया दोनों बीवियों से के आग में दाखिल हो जाओ

مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ
(जहन्नम में) दाखिल होने वालों के साथ। और अल्लाह ने मिसाल बयान की ईमान वालों

اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ
के लिए फिरऔन की बीवी (आसिया) की। जब के उस (आसिया) ने कहा के ऐ मेरे रब! मेरे लिए

وقف لازم

عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ
अपने पास जन्नत में एक घर तामीर कर और तू मुझे फिरऔन और उस के अमल

وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١
से नजात दे और तू मुझे ज़ालिम क़ौम से नजात दे।

وَ مَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
और मिसाल बयान की मरयम बिन्ते इमरान (अलैहिमस्सलाम) की, जिस ने अपनी शर्मगाह की हिफाज़त की,

فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَ صَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ
तो फिर हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी और उस ने अपने रब के

رَبِّهَا وَ كُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢
कलिमात और अल्लाह की किताबों की तस्दीक़ की और वो फरमांबरदारों में से थीं।

ایَاتُهَا ۳۰ (۶۷) سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ (۷۷) رُكُوْعَاتُهَا ۲

उस में ३० आयतें हैं सूरह मुल्क मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ

बाबरकत है वो ज़ात जिस के क़ब्ज़े में सल्तनत है, और वो हर चीज़ पर क़ुदरत

قَدِيْرُ ۝۱ الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ

वाला है। जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की ताके वो तुम्हें आज़माए

اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝۲ الَّذِیْ

के तुम में से कौन अच्छे अमल वाला है। और वो ज़बर्दस्त है, बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। वो अल्लाह

خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ط مَا تَرٰی فِیْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ

जिस ने ऊपर नीचे सात आसमान बनाए। रहमान के पैदा किए हुए में तुम कोई

مِنْ تَفٰوُتٍ ط فَارْجِعِ الْبَصَرَ لا هَلْ تَرٰی مِنْ فُطُوْرٍ ۝۳

फ़र्क़ नहीं पाओगे। फिर आप निगाह को लौटाइए, क्या आप कोई दराड़ देखते हो?

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ

फिर आप निगाह को सेहबारा कीजिए, बार बार निगाह आप की तरफ वापस लौट आएगी

خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝۴ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

ज़लील हो कर इस हाल में के वो थकी हुई होगी। हम ने ही आसमाने दुन्या को मुज़य्यन किया

بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ

चिराग़ों से और हम ने उन चिराग़ों को शैतानों के मारने का ज़रिया बनाया और हम ने शयातीन के लिए

عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝۵ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ

आग का अज़ाब तय्यार कर रखा है। और उन लोगों के लिए जिन्हों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया जहन्नम का

جَهَنَّمَ ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝۶ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا

अज़ाब है। और वो बुरी जगह है। जब वो उस में डाले जाएंगे, तो जहन्नम

لَهَا شَهِيْقًا وَّهِیَ تَفُوْرُ ۝۷ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ط

का शोर सुनेंगे और वो जोश मार रही होगी। क़रीब है के वो गुस्से की वजह से फट जाए।

كُلَّمَآ اُلْقِیَ فِیْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ یَاْتِكُمْ

जब कभी उस में कोई जमाअत डाली जाएगी, तो जहन्नम के मुहाफ़िज़ फरिश्ते उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डराने

نَذِیْرٌ ﴿٨﴾ قَالُوْا بَلٰی قَدْ جَآءَنَا نَذِیْرٌ ۙ۬ فَكَذَّبْنَا

वाला नहीं आया? तो वो कहेंगे क्यूं नहीं! यक़ीनन हमारे पास डराने वाला आया था। तो हम ने झुठलाया

وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ ۚۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا

और हम ने कहा के अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया। तुम तो बड़ी गुमराही में

فِیْ ضَلٰلٍ كَبِیْرٍ ﴿٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ

पड़े हो। और वो कहेंगे के अगर हम सुनते या समझते

مَا كُنَّا فِیْۤ اَصْحٰبِ السَّعِیْرِ ﴿١٠﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ

तो हम दोज़खियों में शामिल न होते। फिर वो अपने गुनाह का इक़रार करेंगे।

فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِیْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ

फिर दोज़खियों पर लानत हो। जो अपने रब से बेदेखे

رَبَّهُمْ بِالْغَیْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِیْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا

डरते हैं उन के लिए मग़फ़िरत है और बड़ा अज्र है। और तुम बात

قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾

चुपके से कहो या ज़ोर से कहो। बेशक अल्लाह दिलों का हाल खूब जानता है।

اَلَا یَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ ﴿١٤﴾ هُوَ

क्या वो नहीं जानता जिस ने (उस को) पैदा किया? और वो भेद जानने वाला, बाखबर है। वही

الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِیْ مَنَاكِبِهَا

अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को चलने के क़ाबिल बनाया, फिर तुम उस के रास्तों में चलो

وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ

और अल्लाह की दी हुई रोज़ी खाओ। और उसी की तरफ ज़िन्दा हो कर उठना है। क्या तुम अमन में हो उस से जो

فِی السَّمَآءِ اَنْ یَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِیَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾

आसमान में है के वो ज़मीन में तुम्हें धंसा दे, फिर वो अचानक हरकत करने लगे?

اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ اَنْ یُّرْسِلَ عَلَیْكُمْ

या तुम आसमान वाले से अमन में हो इस से के वो तुम पर तूफान भेज दे

حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَیْفَ نَذِیْرِ ﴿۱۷﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

पथ्थर का? फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा के मेरा डराना कैसा था। यक़ीनन उन

الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ﴿۱۸﴾ اَوَلَمْ یَرَوْا

लोगों ने भी झुठलाया जो उन से पेहले थे, फिर मेरा इन्कार कैसा था? क्या उन्हों ने देखा नहीं

وقف لازم ـ وقف منزل ـ وقف غفران

اِلَى الطَّیْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّیَقْبِضْنَ ۘؔ مَا یُمْسِكُهُنَّ

परिन्दों की तरफ ऊपर, जो पर फैलाए होते हैं और पर कभी सुकेड़ते हैं। उन को कोई सिवाए रहमान

اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍۢ بَصِیْرٌ ﴿۱۹﴾ اَمَّنْ هٰذَا

के थाम नहीं रहा। बेशक वो हर चीज़ को खूब देख रहा है। भला ऐसा कौन है

الَّذِیْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ یَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ

जो तुम्हारा लशकर बने, जो तुम्हारी नुसरत करे रहमान के सिवा?

اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِیْ غُرُوْرٍ ﴿۲۰﴾ۚ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ

काफ़िर तो सिर्फ़ धोके में हैं। भला ऐसा कौन है जो

یَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِیْ عُتُوٍّ

तुम्हें रोज़ी दे अगर अल्लाह अपनी रोज़ी रोक ले? बल्के ये शरारत और बिदकने पर अड़े

وَّنُفُوْرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنْ یَّمْشِیْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖۤ اَهْدٰۤى

हुए हैं। भला जो शख्स चले औंधा अपने मुंह के बल वो ज़्यादा हिदायतयाफ्ता है

اَمَّنْ یَّمْشِیْ سَوِیًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۲۲﴾ قُلْ

या वो आदमी जो सीधे रास्ते पर सीधा चले? आप फरमा दीजिए

هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

के वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें पैदा किया और जिस ने तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल

وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ هُوَ الَّذِیْ

बनाए। बहोत कम तुम शुक्र अदा करते हो। आप फरमा दीजिए के वही अल्लाह है जिस ने

ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَاِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَیَقُوْلُوْنَ

तुम्हें फैला दिया ज़मीन में और उसी की तरफ तुम इकट्ठे किए जाओगे। और ये केहते हैं के

مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ

ये वादा कब है अगर तुम सच्चे हो। आप फ़रमा दीजिए

اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۟
के इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह के पास है। और मैं तो सिर्फ़ साफ साफ डराने वाला हूँ।

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِیْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا
फिर जब कुफ्फार वादे को क़रीब आता देखेंगे तो काफ़िरों के चेहरे बिगड़ जाएंगे

وَقِیْلَ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ۟ قُلْ
और कहा जाएगा के ये वो अज़ाब है जिस को तुम मांगा करते थे। आप फ़रमा दीजिए

اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِیَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِیَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ
के तुम ही बताओ के अगर अल्लाह मुझे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं हलाक कर दे या हम पर रहम करे

فَمَنْ یُّجِیْرُ الْكٰفِرِیْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ۟ قُلْ هُوَ
तो काफिरों को कौन दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा? आप फ़रमा दीजिए के वही

الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَیْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ
रहमान है, उसी पर हम ईमान लाए हैं और उसी पर हम ने तवक्कुल किया। फिर जल्द ही

مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۟ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ
तुम्हें मालूम हो जाएगा के कौन खुली गुमराही में है। आप फरमा दीजिए के तुम्हारी क्या राए है के अगर

مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ۟ ع
तुम्हारा पानी गेहराई में चला जाए तो कौन तुम्हारे पास सुथरा पानी लाएगा?

رکوعاتہا ۲ (۶۸) سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّیَّةٌ (۲) اٰیاتہا ۵۲

और २ रूकूअ हैं सूरह क़लम मक्का में नाज़िल हुई उस में ५२ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۟

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا یَسْطُرُوْنَ ۟ۙ مَاۤ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ
नून। क़लम की क़सम और उस की क़सम जिस को फरिशते लिख रहे हैं। आप के रब की नेअमत की वजह से आप

بِمَجْنُوْنٍ ۟ۚ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَیْرَ مَمْنُوْنٍ ۟ۚ
मजनून नहीं हैं। और बेशक आप के लिए बेइन्तिहा अज्र है।

وَاِنَّكَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیْمٍ ۟ فَسَتُبْصِرُ وَیُبْصِرُوْنَ ۟ۙ
और यक़ीनन आप अज़ीम अख़लाक़ पर हो। फिर जल्द ही आप भी देख लोगे और ये भी देख लेंगे।

بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ۝٦ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ

के तुम में से कौन मचल रहा है। यक़ीनन तेरा रब उस शख़्स को खूब जानता है जो उस के रास्ते

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۠ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝٧ فَلَا تُطِعِ

से भटक गया है। और खूब जानता है हिदायत पाने वालों को। इस लिए आप झुठलाने वालों

الْمُكَذِّبِيْنَ ۝٨ وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ۝٩

की इताअत न कीजिए। वो तो ये चाहते हैं के अगर आप नरमी करें तो वो भी नरमी करेंगे।

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ۝١٠ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ ۝١١

और आप केहना न मानिए हर क़सम खाने वाले, ज़लील, ताना देने वाले, चुग़ली को ले कर चलने वाले,

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝١٢ عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ

खैर से रोकने वाले, हद से आगे बढ़ने वाले, गुनहगार, सरकश का, उस के बाद वो बेअस्ल

زَنِيْمٍ ۝١٣ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ۝١٤ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ

भी है। इस वजह से के वो माल वाला और बेटों वाला है। जब उस के सामने हमारी आयतें तिलावत

اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٥ سَنَسِمُهٗ

की जाती हैं, तो केहता है के ये पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। अनक़रीब हम उस की नाक को

عَلَى الْخُرْطُوْمِ ۝١٦ اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ

दाग़ेंगे। हम ने उन्हें आज़माया जैसा के हम ने बाग़ वालों को आज़माया था।

اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۝١٧ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ۝١٨

जब उन्हों ने क़स्में खाई थीं के उस बाग़ के फल सुबह ज़रूर तोड़ लेंगे। और वो इन्शाअल्लाह नहीं केहते थे।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ۝١٩

फिर उन पर तेरे रब की तरफ से एक बला ने चक्कर लगाया इस हाल में के वो सोए हुए थे।

فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ۝٢٠ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ۝٢١

फिर वो कटे हुए खेत की तरह बन गया। फिर वो आपस में एक दूसरे को सुबह के वक़्त पुकारने लगे।

اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ۝٢٢

के चलो अपने खेत पर अगर तुम्हें खेती काटना है।

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ۝٢٣ اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا

फिर वो चले और वो चुपके चुपके एक दूसरे को केह रहे थे। के आज तुम पर कोई फक़ीर

الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

बाग़ में दाखिल न होने पाए। और वो खेती से रोकने पर क़ादिर बन कर सुबह के वक़्त चले।

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ

फिर जब उन्हों ने वो बाग़ देखा, तो केहने लगे के हम तो रास्ता भूल गए हैं। बल्के हम तो

مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ

महरूम हो गए। उन में से मोअतदिल शख्स ने कहा के क्या मैं ने तुम से कहा नहीं था के तुम

لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

तस्बीह क्यूं नहीं करते? वो बोले के हमारा रब पाक है, यक़ीनन हम ही कुसूरवार हैं।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَالُوْا

फिर उन में से एक दूसरे की तरफ मुतवज्जेह हो कर मलामत करने लगे। वो केहने लगे

يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا

हाए हमारी खराबी! यक़ीनन हम ही सरकश थे। उम्मीद है के हमारा रब हमें इस से बेहतर

خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ

बदले में दे दे, हम अपने रब की तरफ राग़िब हैं। इसी तरह

الْعَذَابُ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا

अज़ाब आता है। और आखिरत का अज़ाब इस से भी बड़ा है। काश के वो

يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ

जानते। यक़ीनन मुत्तक़ियों के लिए उन के रब के पास जन्नाते

النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

नईम हैं। क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों की तरह बना देंगे?

مَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ

तुम्हें क्या हुवा? तुम कैसे फैसले करते हो? क्या तुम्हारे पास किताब है जिस में

تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَكُمْ

तुम पढ़ते हो? के तुम्हारे लिए उस में वो है जो तुम पसन्द करोगे? क्या हम से

اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

तुम ने क़स्में ली हैं जो क़यामत के दिन तक चलेंगी? के तुम्हें

وقف لازم

ع ١

لَمَا تَحْكُمُوْنَ ۚ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ

ज़रूर मिलेगा जिस का तुम हुक्म दोगे। आप उन से सवाल कीजिए के तुम में से कौन उस का ज़िम्मेदार है?

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا

या उन के शुरका हैं? तो उन्हें चाहिए के अपने शुरका को लाएं अगर वो

صٰدِقِيْنَ ۝ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ

सच्चे हैं। जिस दिन पिंडली खोली जाएगी और सज्दे

اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ

के लिए बुलाया जाएगा, तो वो (सज्दा करने की) ताक़त नहीं रख सकेंगे। उन की निगाहें झुकी हुई होंगी,

تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ

उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी। हालांके इस से पेहले उन्हें सज्दे के लिए बुलाया जाता था

وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ۝ فَذَرْنِىْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ

जब के (सहीह व) सालिम थे। इस लिए आप मुझे और उस शख़्स को छोड़ दीजिए जो इस बात को झुठलाता है।

سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِىْ

अनक़रीब हम उन्हें ढील देंगे इस तरीक़े से के उन्हें पता नहीं चलेगा। और मैं उन्हें

لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِىْ مَتِيْنٌ ۝ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا

ढ़ील दूँगा। यक़ीनन मेरी तदबीर बहोत मज़बूत है। क्या आप उन से बदले का सवाल करते हैं,

فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ

फिर वो तावान की वजह से बोझल हो रहे हैं? या उन के पास ग़ैब है

فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ

के वो लिख लाते हैं? फिर अपने रब के हुक्म की इस्तिक़लाल के साथ राह देखते रहिए और आप मछली वाले

كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ۝

पैग़म्बर की तरह न हों, जब के उन्हों ने पुकारा इस हाल में के वो गुस्से से पुर थे।

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ

अगर उन्हें अपने रब की नेअमत ने सहारा न दिया होता, तो वो फैंक दिए जाते चटयल मैदान में और

مَذْمُوْمٌ ۝ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

वो बदहाल होते। फिर उन को उन के रब ने मुन्तखब कर लिया, फिर उन को सुलहा में से बना दिया।

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ
और ये काफिर तो क़रीब थे के आप को फिसला देते अपनी निगाहों के ज़रिए

لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ يَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾
जब वो ज़िक्र सुनते हैं और केहते हैं के ये तो मजनून है।

وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾
हालांके ये कुरआन तो तमाम जहान वालों के लिए नसीहत ही नसीहत है।

اٰيَاتُهَا ٥٢ (٦٩) سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ مَكِّيَّةٌ (٧٨) رُكُوْعَاتُهَا ٢
उस में ५२ आयतें हैं सूरह हाक़्क़ा मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْحَآقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٣﴾
सचमुच आने वाली। क्या है सचमुच आने वाली? और आप को मालूम भी है के सचमुच आने वाली क्या चीज़ हे?

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ ۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ
क़ौमे समूद और क़ौमे आद ने खड़खड़ाने वाली को झुठलाया। फिर क़ौमे समूद,

فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ
तो वो हलाक की गई ज़ोर की आवाज़ से। और क़ौमे आद तो वो हलाक की गई ठन्डी तूफ़ानी

صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ
हवा से जो हद से ज़्यादा थी। जिस को अल्लाह ने उन पर मुसख्खर किया सात रात और आठ

اَيَّامٍ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ
दिन तक लगातार, फिर आप उस में उस क़ौम को देखोगे पछाड़ा हुवा, गोया के वो

اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ
उखड़े हुए खजूर के खोखले तने हैं। फिर क्या आप उन में से किसी को बचा हुवा

مِّنْ ۢ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ
देख रहे हो? और फिरऔन और जो उन से पेहले थे वो और उलट दी जाने वाली बस्तियाँ गुनाह

بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً
ले कर आए। फिर उन्हों ने अपने रब के पैग़म्बर की नाफरमानी की, फिर उस ने उन को सख़्ती से

رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾

पकड़ लिया। यक़ीनन जब पानी तुग़यानी में आया, तो हम ने ही तुम्हें कशती में सवार किया।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

ताके हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और उसे याद रखने वाले कान याद रखें।

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ

फिर जब सूर में फूंका जाएगा एक ही मरतबा। और ज़मीन

الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾

और पहाड़ उठाए जाएंगे और कूटे जाएं एक ही चोट से।

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ

तो उस दिन वाक़ेअ होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी। और आसमान फट जाएगा, फिर वो

يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۗ وَيَحْمِلُ

उस दिन बिल्कुल बूदा होगा। और फरिशते उस के किनारों पर होंगे। और तेरे

عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ

रब का अर्श उस दिन अपने ऊपर आठ फरिशते उठाए हुए होंगे। उस दिन

تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ

तुम्हारी पेशी होगी, तुम्हारा कोई मख्फी राज़ मख्फी नहीं रेह सकेगा। तो जिस को उस का नामअे आमाल उस के

كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾

दाएं हाथ में दिया जाएगा, तो वो कहेगा के लो! मेरे इस नामअे आमाल को पढ़ो!

اِنِّىْ ظَنَنْتُ اَنِّىْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ

बेशक मैं ये अक़ीदा रखता था के मुझे मेरा हिसाब मिलने वाला है। फिर वो खुश्गवार ज़िन्दगी

رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾

में होगा। ऊँची जन्नत में होगा। जिस के मेवे झुके हुए होंगे।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢ بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِى الْاَيَّامِ

(कहा जाएगा) तुम्हें मुबारक हो, खाओ और पियो उन आमाल की वजह से जो तुम ने पिछले दिनों में

الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ

पेहले किए। और जिस को उस का नामअे आमाल बाएं हाथ में दिया जाएगा,

فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ﴿۲۵﴾ وَلَمْ اَدْرِ

वो कहेगा के काश मुझे मेरा नामअे आमाल न मिलता। और मैं न जानता के

مَا حِسَابِيَهْ ﴿۲۶﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿۲۷﴾

मेरा हिसाब क्या है? ऐ काश के वो मौत ही खात्मा करने वाली होती।

مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ﴿۲۸﴾ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿۲۹﴾

मेरा माल मेरे कुछ भी काम नहीं आया। मेरी सल्तनत भी मुझ से चली गई।

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿۳۰﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿۳۱﴾ ثُمَّ

(कहा जाएगा के) उस को पकड़ो और उस के गले में तौक़ डालो। फिर उस को दोज़ख में दाखिल करो। फिर

فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿۳۲﴾

ऐसी ज़न्जीर में जकड़ो, जिस की लम्बाई सत्तर हाथ है।

اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿۳۳﴾ وَلَا يَحُضُّ

इस लिए के ये अज़मत वाले अल्लाह पर ईमान नहीं रखता था। और मिस्कीन को खाना

عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿۳۴﴾ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا

देने की तरग़ीब नहीं देता था। तो आज उस का यहाँ कोई दोस्त

حَمِيْمٌ ﴿۳۵﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ﴿۳۶﴾ لَّا يَاْكُلُهٗٓ

नहीं है। और न खाना है सिवाए दोज़खियों के लहू पीप के। सिवाए गुनहगारों के

اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ ﴿۳۷﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۳۸﴾

उसे कोई नहीं खाएगा। फिर मैं क़सम खाता हूँ उन चीज़ों की जो तुम देख रहे हो।

وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿۴۰﴾ وَّمَا هُوَ

और उन चीज़ों की जो तुम देख नहीं रहे। बेशक ये इज्ज़त वाले फरिशते का क़ौल है। और ये किसी

بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَلَا بِقَوْلِ

शाइर का कलाम नहीं है। बहोत कम तुम लोग ईमान लाते हो। और किसी काहिन का कलाम भी

كَاهِنٍ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۲﴾ تَنْزِيْلٌ

नहीं है। बहोत कम तुम नसीहत हासिल करते हो। (बल्के ये कुरआन तो)

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۳﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ

रब्बुल आलमीन की तरफ से उतारा गया है। और अगर ये नबी भी हमारे ऊपर कोई बात

الْاَقَاوِيْلِ ﴿۴۴﴾ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿۴۵﴾

बना लेते। तो हम उस को भी कूव्वत से पकड़ लेते।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿۴۶﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ

फिर हम उस की रगे जान काट डालते। फिर तुम में से कोई भी उसे

عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۴۸﴾

बचा न सकता। और यक़ीनन ये नसीहत है मुत्तक़ियों के लिए।

وَ اِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿۴۹﴾ وَ اِنَّهٗ

और यक़ीनन हम जानते हैं के तुम में से कुछ झुठलाने वाले हैं। और बेशक ये कुरआन

لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿۵۱﴾

काफ़िरों के लिए हसरत है। और ये कुरआन हक़्क़ुल यक़ीन है।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿۵۲﴾

फिर आप अपने अज़्मत वाले रब के नाम की तस्बीह कीजिए।

اٰيَاتُهَا ۴۴ (۷۰) سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ (۷۹) رُكُوْعَاتُهَا ۲

उस में ४४ आयतें हैं सूरह मआरिज मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَاَلَ سَآئِلٌ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿۱﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ

एक सवाल करने वाले ने सवाल किया ऐसे अज़ाब का जो काफिरों के लिए वाक़ेअ होने वाला है, जिसे

لَهٗ دَافِعٌ ﴿۲﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ﴿۳﴾ تَعْرُجُ

कोई दफा नहीं कर सकता। अल्लाह की तरफ से, जो सीढ़ियों का मालिक है। फरिशते और

الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ

रूह सीढ़ियों से चढ़ कर उस के पास जाते हैं, (अज़ाब वाक़ेअ होगा) ऐसे दिन में जिस की मिक़दार

خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ﴿۴﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿۵﴾

पचास हज़ार बरस है। फिर आप अच्छी तरह सब्र कीजिए।

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ﴿۶﴾ وَّ نَرٰىهُ قَرِيْبًا ﴿۷﴾ يَوْمَ

बेशक ये उस को दूर समझ रहे हैं। और हम उसे क़रीब देख रहे हैं। जिस दिन

تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۙ﴿٨﴾ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ﴿٩﴾

आसमान पिघले हुए ताँबे के मानिन्द हो जाएगा। और पहाड़ ऊन की तरह हो जाएंगे।

وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۚ﴿١٠﴾ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ

और कोई दोस्त किसी दोस्त को पूछेगा भी नहीं। हालांके वो उन्हें दिखाए जाएंगे। मुजरिम

الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِ ۙ﴿١١﴾

चाहेगा के काश के वो उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए फ़िदये में दे दे अपने बेटों को।

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۙ﴿١٢﴾ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ۙ﴿١٣﴾

और अपनी बीवी को और अपने भाई को। और अपने उस कुम्बे को जिस में वो रेहता था।

وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۙ﴿١٤﴾ كَلَّا ؕ

और उन तमाम को जो ज़मीन में हैं सब को फिदये में दे दे, फिर वो अपने को बचा ले। हरगिज़ नहीं।

اِنَّهَا لَظٰى ۙ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۚ﴿١٦﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ

यक़ीनन ये तो भड़कती हुई आग होगी। जो चमड़ी भी खींच लेगी। वो आग पुकारेगी उस को जिस ने पीठ फेरी

وَتَوَلّٰى ۙ﴿١٧﴾ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿١٨﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ

और ऐराज़ किया। और जिस ने माल जमा किया, फिर उस ने हिफाज़त से रखा। यक़ीनन इन्सान कमहिम्मत पैदा

هَلُوْعًا ۙ﴿١٩﴾ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۙ﴿٢٠﴾ وَّاِذَا مَسَّهُ

किया गया है। जब उसे मुसीबत पहोंचती है, तो फरयादी बन जाता है। और जब उसे नेअमत पहोंचती है

الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۙ﴿٢١﴾ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿٢٢﴾ الَّذِيْنَ هُمْ

तो रोकने वाला बन जाता है। मगर वो नमाज़ पढ़ने वाले। जो अपनी नमाज़ पर

عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۪ۙ﴿٢٣﴾ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ

मुदावमत करते हैं। और जिन के मालों में मुक़र्रर किया

مَّعْلُوْمٌ ۪ۙ﴿٢٤﴾ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۪ۙ﴿٢٥﴾ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ

हुवा हक़ है। मांगने वाले के लिए और फक़ीर के लिए। और जो हिसाब के

بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۪ۙ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ

दिन को सच्चा बतलाते हैं। और जो अपने रब के अज़ाब से

مُّشْفِقُوْنَ ۚ﴿٢٧﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿٢٨﴾

डरते हैं। यक़ीनन उन के रब का अज़ाब बेखौफ रेहने की चीज़ नहीं है।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝٢٩ اِلَّا

और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। मगर

عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ

अपनी बीवियों से या अपनी बांदियों से, इस लिए के उन पर उस में कोई

مَلُوْمِيْنَ ۝٣٠ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

मलामत नहीं। लेकिन जो उस के अलावा को तलब करेगा, तो यही लोग हद से आगे बढ़ने

الْعٰدُوْنَ ۝٣١ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ

वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद को

رٰعُوْنَ ۝٣٢ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۝٣٣

निबाहते हैं। और जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम रेहते हैं।

وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝٣٤ اُولٰٓئِكَ

और जो अपनी नमाज़ की पाबन्दी करते हैं। उन को

فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۝٣٥ فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

ع ٤٥

जन्नतों में ऐज़ाज़ दिया जाएगा। फिर काफिरों को क्या हो गया

قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۝٣٦ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ

के आप की तरफ दौड़े चले आते हैं। दाईं तरफ से और बाईं तरफ़ से जमाअत दर जमाअत।

عِزِيْنَ ۝٣٧ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ

क्या उन में से हर शख्स ये लालच रखता है के उसे जन्नते नईम में दाखिल किया

نَعِيْمٍ ۝٣٨ كَلَّا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٩

जाएगा? हरगिज़ नहीं! यक़ीनन हम ने उन को पैदा किया है उस से जिस को ये जानते हैं।

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ۝٤٠

फिर मैं मशरिक़ों और मग़रिबों के रब की क़सम खाता हूँ के यक़ीनन हम इस पर क़ादिर हैं

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝٤١

के उन से बेहतर को बदले में ले आएं। और ये हम से भाग कर आगे नहीं जा सकते।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَ يَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ

इस लिए आप उन को छोड़ दीजिए के वो लगे रहें और खेलें यहाँ तक के वो मिलें उन के उस दिन से

الَّذِىۡ يُوۡعَدُوۡنَ ۝٤٢ يَوۡمَ يَخۡرُجُوۡنَ مِنَ الۡاَجۡدَاثِ
जिस से उन्हें डराया जा रहा है। जिस दिन वो क़ब्रों से निकल रहे होंगे

سِرَاعًا كَاَنَّهُمۡ اِلٰى نُصُبٍ يُّوۡفِضُوۡنَ ۝٤٣ خَاشِعَةً
तेज़ी से गोया के वो निशानों की तरफ तेज़ दौड़ रहे हैं। उन की नज़रें

اَبۡصَارُهُمۡ تَرۡهَقُهُمۡ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الۡيَوۡمُ الَّذِىۡ
झुकी हुई होंगी, उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी। ये वो दिन है जिस से

كَانُوۡا يُوۡعَدُوۡنَ ۝٤٤
उन्हें डराया जा रहा है।

رُكُوۡعَاتُهَا ٢ (٧١) سُوۡرَةُ نُوۡحٍ مَّكِّيَّةٌ (٧١) اٰيَاتُهَا ٢٨

और २ रूकूअ हैं सूरह नूह मक्का में नाज़िल हुई उस में २८ आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَا نُوۡحًا اِلٰى قَوۡمِهٖۤ اَنۡ اَنۡذِرۡ قَوۡمَكَ
हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा के आप अपनी क़ौम को डराइए

مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِيَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝١ قَالَ يٰقَوۡمِ
इस से पेहले के उन के पास दर्दनाक अज़ाब आ जाए। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ मेरी

اِنِّىۡ لَكُمۡ نَذِيۡرٌ مُّبِيۡنٌ ۝٢ اَنِ اعۡبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوۡهُ
क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे लिए साफ साफ डराने वाला हूँ। के अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो

وَاَطِيۡعُوۡنِ ۝٣ يَغۡفِرۡ لَكُمۡ مِّنۡ ذُنُوۡبِكُمۡ وَ يُؤَخِّرۡكُمۡ
और मेरा केहना मानो। तो अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और तुम्हें एक वक़्ते मुक़र्ररा

اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ
तक मोहलत देगा। यक़ीनन अल्लाह की मुक़र्रर की हुई मुद्दत जब आ जाती है, तो फिर मुअख़्ख़र नहीं की जाती।

لَوۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ۝٤ قَالَ رَبِّ اِنِّىۡ دَعَوۡتُ قَوۡمِىۡ
काश के तुम जानते। नूह (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ मेरे रब! यक़ीनन मैं ने मेरी क़ौम

لَيۡلًا وَّنَهَارًا ۝٥ فَلَمۡ يَزِدۡهُمۡ دُعَآءِىۡۤ اِلَّا فِرَارًا ۝٦
को रात और दिन बुलाया। तो वो मेरे बुलाने पर और ज़्यादा ही भागते रहे।

وَاِنِّیۡ کُلَّمَا دَعَوۡتُہُمۡ لِتَغۡفِرَ لَہُمۡ جَعَلُوۡۤا اَصَابِعَہُمۡ

और जब भी मैं ने उन को बुलाया ताके आप उन की मग़फिरत करें, तो उन्हों ने अपनी उंगलियाँ

فِیۡۤ اٰذَانِہِمۡ وَاسۡتَغۡشَوۡا ثِیَابَہُمۡ وَاَصَرُّوۡا وَاسۡتَکۡبَرُوا

अपने कानों में ठोंस लीं और अपने कपड़े ओढ़ लिए और उन्हों ने ज़िद की और बहोत

اسۡتِکۡبَارًا ۚ﴿۷﴾ ثُمَّ اِنِّیۡ دَعَوۡتُہُمۡ جِہَارًا ۙ﴿۸﴾ ثُمَّ اِنِّیۡۤ

ज़्यादा तकब्बुर किया। फिर मैं ने उन को खुल्लम खुल्ला दावत दी। फिर मैं ने

اَعۡلَنۡتُ لَہُمۡ وَاَسۡرَرۡتُ لَہُمۡ اِسۡرَارًا ۙ﴿۹﴾ فَقُلۡتُ

उन को अलानिया दावत दी, फिर मैं ने उन को चुपके चुपके दावत दी। फिर मैं ने कहा के

اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّکُمۡ ؕ اِنَّہٗ کَانَ غَفَّارًا ۙ﴿۱۰﴾ یُّرۡسِلِ السَّمَآءَ

तुम अपने रब से मग़फ़िरत तलब करो। यक़ीनन वो बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला है। वो आसमान को तुम पर

عَلَیۡکُمۡ مِّدۡرَارًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّیُمۡدِدۡکُمۡ بِاَمۡوَالٍ وَّبَنِیۡنَ

बरसता हुवा छोड़ेगा। और तुम्हारी इमदाद करेगा मालों और बेटों के ज़रिए

وَیَجۡعَلۡ لَّکُمۡ جَنّٰتٍ وَّیَجۡعَلۡ لَّکُمۡ اَنۡہٰرًا ؕ﴿۱۲﴾ مَا لَکُمۡ

और तुम्हारे लिए बाग़ात बनाएगा और तुम्हारे लिए नेहरें बनाएगा। तुम्हें क्या हुवा के

لَا تَرۡجُوۡنَ لِلّٰہِ وَقَارًا ۚ﴿۱۳﴾ وَقَدۡ خَلَقَکُمۡ اَطۡوَارًا ﴿۱۴﴾

तुम अल्लाह के लिए अज़्मत का अक़ीदा नहीं रखते? हालांके उस ने तुम्हें तौर दर तौर पैदा किया है।

اَلَمۡ تَرَوۡا کَیۡفَ خَلَقَ اللّٰہُ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ﴿۱۵﴾

क्या तुम ने देखा नहीं के कैसे अल्लाह ने ऊपर नीचे सात आसमान पैदा किए?

وَّجَعَلَ الۡقَمَرَ فِیۡہِنَّ نُوۡرًا وَّجَعَلَ الشَّمۡسَ سِرَاجًا ﴿۱۶﴾

और उन में चाँद को नूरानी बनाया और सूरज को रोशन बनाया।

وَاللّٰہُ اَنۡۢبَتَکُمۡ مِّنَ الۡاَرۡضِ نَبَاتًا ۙ﴿۱۷﴾ ثُمَّ یُعِیۡدُکُمۡ

और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से उगाया। फिर वो तुम्हें ज़मीन में दोबारा

فِیۡہَا وَیُخۡرِجُکُمۡ اِخۡرَاجًا ﴿۱۸﴾ وَاللّٰہُ جَعَلَ لَکُمُ

लौटाएगा, फिर वो तुम्हें क़ब्रों से निकालेगा। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को

الۡاَرۡضَ بِسَاطًا ۙ﴿۱۹﴾ لِّتَسۡلُکُوۡا مِنۡہَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿۲۰﴾

बिछौना बनाया। ताके तुम उस के कुशादा रास्तों में चलो।

قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِیْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ

नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! उन्हों ने मेरी नाफरमानी की और वो उन के पीछे चले जिन

لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَ وَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ۝۲۱ وَ مَكَرُوْا

के माल और जिन की औलाद उन को ज़्यादा नहीं करती मगर खसारे में। और उन्हों ने

مَكْرًا كُبَّارًا ۝۲۲ وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ

बड़ा ज़बर्दस्त मक्र किया। और उन्हों ने कहा के तुम हरगिज़ मत छोड़ो अपने माबूदों को

وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ

और तुम हरगिज़ मत छोड़ो वद्द और सुवाअ और यगूस और यऊक़

وَنَسْرًا ۝۲۳ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ

और नस्र को। और तहक़ीक़ के उन्हों ने बहोत सों को गुमराह किया। और (या रब!) ज़ालिमों

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ۝۲۴ مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا

की गुमराही और बढ़ाइए। अपने गुनाहों की वजह से वो ग़र्क़ किए गए,

فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ

फिर वो आग में दाखिल किए गए। फिर अपने लिए उन्हों ने अल्लाह के सिवा कोई मददगार भी

اللّٰهِ اَنْصَارًا ۝۲۵ وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ

नहीं पाया। और नूह (अलैहिस्सलाम) ने कहा के ऐ मेरे रब! तू ज़मीन पर काफिरों का

عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝۲۶ اِنَّكَ

एक घर भी बसता हुवा मत छोड़। इस लिए के

اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا

अगर तू उन को छोड़ेगा तो वो तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और वो नहीं जनेंगे मगर फाजिर

كَفَّارًا ۝۲۷ رَبِّ اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ دَخَلَ

काफिर ही को। ऐ मेरे रब! तू मेरी मग़फ़िरत कर दे और मेरे वालिदैन की और उस शख़्स की जो मेरे

بَيْتِیَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَلَا تَزِدِ

घर में मोमिन बन कर आए और ईमान वाले मर्दों की और मोमिन औरतों की। और तू ज़ालिमों को मत

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ۝۲۸

बढ़ा मगर हलाकत में।

اٰیَاتُهَا ۲۸ (۷۲) سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ (۴۰) رُكُوْعَاتُهَا ۲

उस में २८ आयतें हैं सूरह जिन मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا

आप फ़रमा दीजिए के मेरी तरफ ये वही किया गया है के चन्द जिन्नात ने कुरआन सुन लिया, तो वो केहने लगे

اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۝۱ يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ

के यक़ीनन हम ने एक अजीब कुरआन सुना है। जो नेकी की तरफ़ रहनुमाई करता है,

فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۝۲ وَّاَنَّهُ

तो हम उस पर ईमान ले आए। और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठेहराएंगे। और ये के

تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۝۳

हमारे रब की ऊँची शान है, उस ने न कोई बीवी बनाई और न औलाद बनाई।

وَّاَنَّهُ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۝۴

और हम में से बेवकूफ अल्लाह पर (किज़्ब में भी) बहोत दूर की केहते रहे।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ

और ये के हम ने गुमान किया के इन्सान और जिन अल्लाह पर हरगिज़ झूठ नहीं

كَذِبًا ۝۵ وَّاَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ

बोलेंगे। और ये के इन्सानों में से कुछ लोग पनाह तलब करते थे

بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۝۶ وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا

मर्द जिन्नात की, तो उन्हों ने उन जिन्नात का गुरूर और बढ़ा दिया। और ये के उन्हों ने गुमान किया

كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۝۷ وَّاَنَّا لَمَسْنَا

जैसा के तुम ने गुमान किया के अल्लाह किसी को (ज़िन्दा कर के) हरगिज़ नहीं उठाएगा। और ये के हम ने आसमान

السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۝۸

को टटोला, तो हम ने उस को भरा हुवा पाया मज़बूत चौकीदारों से और अंगारों से।

وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ

और ये के हम वहाँ पर सुनने की जगहों पर बैठते थे। फिर अब जो कोई

يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۝۹ وَّاَنَّا

कान लगाता है, तो अपने लिए एक ताकने वाला अंगारा पाता है। और हम नहीं

لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ

जानते के क्या बुराई मन्जूर है ज़मीन वालों के साथ या उन के रब ने उन के साथ

رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝۱۰ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ

भलाई का इरादा किया है। और ये के हम में से कुछ अच्छे हैं और हम में से कुछ इस के

ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۝۱۱ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ

अलावा हैं। हम अलग अलग तरीक़ों पर थे। और ये के हम ने गुमान किया के हम

لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۝۱۲ وَّاَنَّا

अल्लाह को ज़मीन में हरगिज़ आजिज़ नहीं कर सकेंगे और भाग कर भी हरगिज़ उस को आजिज़ नहीं कर सकेंगे। और

لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ

जब हम ने उस हिदायत को सुना तो हम उस पर ईमान ले आए। तो जो भी अपने रब पर ईमान ले आएगा,

فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۝۱۳ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ

फिर उसे न नुक़सान का खौफ होगा, न जुल्म का। और हम में से कुछ मुसलमान हैं

وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا

और कुछ गुनहगार हैं। लेकिन जो इस्लाम लाएगा, तो उन्हों ने हिदायत का

رَشَدًا ۝۱۴ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝۱۵

क़स्द किया। और अलबत्ता जो ज़ालिम हैं, तो वो जहन्नम का ईंधन हैं।

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً

और ये के अगर वो उस तरीक़े पर हमेशा चलते रेहते तो हम उन्हें पीने को वाफिर पानी

غَدَقًا ۝۱۶ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ

देते। ताके हम उन को इस में आज़माएं। और जो अपने रब की नसीहत से ऐराज़ करेगा

يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝۱۷ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ

तो वो उसे चढ़ते अज़ाब में दाखिल कर देगा। और ये के मस्जिदें तो अल्लाह ही की हैं,

فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۝۱۸ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ

तो तुम अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो। और ये के जब अल्लाह का बन्दा खड़ा होता है

يَدۡعُوۡهُ كَادُوۡا يَكُوۡنُوۡنَ عَلَيۡهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ قُلۡ اِنَّمَآ

उसी को पुकारता है, तो क़रीब है के वो उन के खिलाफ़ जमा हो जाएं। आप फ़रमा दीजिए के मैं तो सिर्फ़

اَدۡعُوۡا رَبِّىۡ وَلَاۤ اُشۡرِكُ بِهٖۤ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلۡ اِنِّىۡ

अपने रब को पुकारता हूँ और मैं उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठेहराता। आप फ़रमा दीजिए के मैं

لَاۤ اَمۡلِكُ لَـكُمۡ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلۡ اِنِّىۡ

तुम्हारे लिए न ज़रर का इख़तियार रखता हूँ और न हिदायत का। आप फ़रमा दीजिए के मुझे

لَنۡ يُّجِيۡرَنِىۡ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنۡ اَجِدَ مِنۡ دُوۡنِهٖ

अल्लाह से हरगिज़ कोई नहीं बचा सकेगा। और उस को छोड़ कर मैं कोई पनाह लेने की जगह हरगिज़ नहीं

مُلۡتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنۡ

पाऊँगा। मगर अल्लाह की तरफ से पैग़ाम पहोंचाना और उस के पैग़ामात को ले कर आना (ये अज़ाब से जाए पनाह है)। और

يَّعۡصِ اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ

जो अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफ़त करेगा, तो यक़ीनन उस के लिए जहन्नम की आग है जिस में वो

فِيۡهَاۤ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوۡا مَا يُوۡعَدُوۡنَ فَسَيَعۡلَمُوۡنَ

हमेशा रहेंगे। यहाँ तक के जब वो देखेंगे उस (अज़ाब) को जिस से उन्हें डराया जा रहा है,

مَنۡ اَضۡعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾ قُلۡ

तो उस वक़्त जान लेंगे के किस के मददगार कमज़ोर और तादाद में कम हैं। आप फ़रमा दीजिए के मैं

اِنۡ اَدۡرِىۡۤ اَقَرِيۡبٌ مَّا تُوۡعَدُوۡنَ اَمۡ يَجۡعَلُ لَهٗ

नहीं जानता के क्या क़रीब है वो जिस से तुम्हें डराया जा रहा है या उस के लिए मेरा रब कोई

رَبِّىۡۤ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الۡغَيۡبِ فَلَا يُظۡهِرُ عَلٰى غَيۡبِهٖۤ

मुद्दत मुक़र्रर करेगा। वो ग़ैब का जानने वाला है, फिर वो अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तलेअ नहीं

اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارۡتَضٰى مِنۡ رَّسُوۡلٍ فَاِنَّهٗ

करता। मगर जिस रसूल को वो पसन्द कर ले, तो वो

يَسۡلُكُ مِنۡۢ بَيۡنِ يَدَيۡهِ وَمِنۡ خَلۡفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

उस के आगे और उस के पीछे चौकीदार को चलाता है।

لِّيَعۡلَمَ اَنۡ قَدۡ اَبۡلَغُوۡا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمۡ وَ اَحَاطَ

ताके जान ले के उन्हों ने अपने रब के पैग़ामात पहोंचा दिए और अल्लाह उन चीज़ों का इहाता

بِمَا لَدَیْهِمْ وَ اَحْصٰی كُلَّ شَیْءٍ عَدَدًا ﴿۲۸﴾

किए हुए है जो उन के आगे हैं और हर चीज़ की तादाद उस ने गिन रखी है।

اٰیَاتُهَا ۲۰ (۷۳) سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّیَّةٌ (۳) رُكُوْعَاتُهَا ۲

और २ रूकूअ हैं सूरह मुज़्ज़म्मिल मक्का में नाज़िल हुई उस में २० आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

یٰۤاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿۱﴾ قُمِ الَّیْلَ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۲﴾ نِّصْفَهٗۤ

ऐ चादर ओढ़ने वाले! आप रात में क़याम कीजिए मगर किसी रात। (क़याम करें)

اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِیْلًا ﴿۳﴾ اَوْ زِدْ عَلَیْهِ وَ رَتِّلِ

आधी रात या उस में से थोड़ी कम कर लीजिए। या उस पर थोड़ी ज़्यादा कर लीजिए और कुरआन

الْقُرْاٰنَ تَرْتِیْلًا ﴿۴﴾ اِنَّا سَنُلْقِیْ عَلَیْكَ قَوْلًا ثَقِیْلًا ﴿۵﴾

पाक को ठेहेर ठेहेर कर पढ़िए। अनक़रीब हम आप पर भारी क़ौल डालेंगे।

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّیْلِ هِیَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ اَقْوَمُ قِیْلًا ﴿۶﴾

यक़ीनन रात की इबादत वो (दिल व ज़बान में) ज़्यादा मुवाफ़क़त वाली है और ज़्यादा सीधी बात केहलाने वाली है।

اِنَّ لَكَ فِی النَّهَارِ سَبْحًا طَوِیْلًا ﴿۷﴾ وَ اذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ

यक़ीनन आप के लिए दिन में लम्बा मश्ग़ला है। और आप अपने रब के नाम को याद कीजिए और सब से कट कर उसी

وَ تَبَتَّلْ اِلَیْهِ تَبْتِیْلًا ﴿۸﴾ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ

की तरफ मुन्क़तेअ हो जाइए। वो मशरिक़ और मग़रिब का रब है,

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِیْلًا ﴿۹﴾ وَ اصْبِرْ عَلٰی

उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो उसी को कारसाज़ बनाइए। और आप सब्र कीजिए उन बातों पर जो

مَا یَقُوْلُوْنَ وَ اهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِیْلًا ﴿۱۰﴾ وَ ذَرْنِیْ

वो केहते हैं और उन को अच्छी तरह छोड़ दीजिए। और आप मुझे और

وَ الْمُكَذِّبِیْنَ اُولِی النَّعْمَةِ وَ مَهِّلْهُمْ قَلِیْلًا ﴿۱۱﴾ اِنَّ لَدَیْنَاۤ

खुशहाल झुठलाने वालों को छोड़ दीजिए और उन को थोड़ी मुहलत दीजिए। यक़ीनन हमारे पास

اَنْكَالًا وَّ جَحِیْمًا ﴿۱۲﴾ وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّ عَذَابًا

बेड़ियाँ हैं और दोज़ख है। और खाना है हलक़ में अटकने वाला और दर्दनाक

اَلِیْمًا ﴿١٣﴾ یَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ
अज़ाब है। जिस दिन ज़मीन और पहाड़ लरज़ उठेंगे
الْجِبَالُ كَثِیْبًا مَّهِیْلًا ﴿١٤﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَیْكُمْ
और पहाड़ फिसलती हुई रेत का तौदा बन जाएंगे। यक़ीनन हम ने तुम्हारी तरफ पैग़म्बर
رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَیْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ
भेजा जो तुम पर गवाह है जैसा के हम ने फिरऔन की तरफ रसूल
رَسُوْلًا ﴿١٥﴾ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا
भेजा। फिर फिरऔन ने उस रसूल की मुख़ालफ़त की, फिर हम ने मज़बूत गिरिफ़्त में उसे
وَّبِیْلًا ﴿١٦﴾ فَكَیْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ یَوْمًا
पकड़ लिया। अगर तुम ने कुफ़्र किया, तो फिर तुम कैसे बच सकोगे उस दिन
یَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِیْبًا ﴿١٧﴾ السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ
जो बच्चों को भी बूढ़ा कर देगा? आसमान उस दिन फट जाएगा।
كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ
अल्लाह का वादा पूरा हो कर रहेगा। बेशक ये नसीहत है। फिर जो
شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِیْلًا ﴿١٩﴾ اِنَّ رَبَّكَ یَعْلَمُ اَنَّكَ
चाहे वो अपने रब की तरफ़ रास्ता बना ले। यक़ीनन आप का रब खूब जानता है के आप
تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَیِ الَّیْلِ وَ نِصْفَهٗ وَ ثُلُثَهٗ
क़याम करते हैं रात में दो तिहाई के क़रीब और आधी रात और सुलुस रात
وَ طَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِیْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ یُقَدِّرُ الَّیْلَ
और उन लोगों में से एक जमाअत भी जो आप के साथ हैं। और अल्लाह दिन और रात की मिक़दार मुतअय्यन
وَ النَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَیْكُمْ
करता है। उस ने जान लिया के तुम हरगिज़ उस को निबाह नहीं सकोगे तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़बूल की
فَاقْرَءُوْا مَا تَیَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ سَیَكُوْنُ
तो तुम पढ़ो कुरआन में से जो आसान हो। उस ने जान लिया के अनक़रीब
مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ یَضْرِبُوْنَ فِی الْاَرْضِ
तुम में से कुछ बीमार होंगे और दूसरे ज़मीन में सफर करेंगे

يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ
अल्लाह का फ़ज़्ल तलब करने के लिए। और दूसरे क़िताल करेंगे

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا
अल्लाह के रास्ते में। तो तुम कुरआन में से पढ़ो जो आसान हो और तुम नमाज़

الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ
क़ाइम करो और ज़कात दो और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो।

وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ
और जो भलाई तुम अपनी जानों के लिए आगे भेजोगे, तो उस को अल्लाह के पास

اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ
पाओगे, वो बेहतर है और अज्र के ऐतेबार से बड़ा है। और तुम अल्लाह से मग़फिरत तलब करो,

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۰﴾
यक़ीनन अल्लाह बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

ع

اٰیَاتُهَا ۵۶ (۷۴) سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ (۴) رُكُوْعَاتُهَا ۲
उस में ५६ आयतें हैं सूरह मुद्दस्सिर मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿۱﴾ قُمْ فَاَنْذِرْ ﴿۲﴾ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿۳﴾
ऐ चादर में लिपटने वाले! आप खड़े हो जाइए, फिर डराइए। और अपने रब की बड़ाई बयान कीजिए।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ﴿۴﴾ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿۵﴾ وَلَا تَمْنُنْ
और अपने कपड़े पाक रखिए। और गन्दगी से अलग रहिए। और आप एहसान इस लिए न कीजिए के आप

تَسْتَكْثِرُ ﴿۶﴾ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ﴿۷﴾ فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ﴿۸﴾
ज़्यादा का मुतालबा करें। और अपने रब की वजह से सब्र कीजिए। फिर जब सूर फूंका जाएगा।

فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ﴿۹﴾ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ
तो ये दिन बड़ा सख़्त होगा। काफ़िरों पर कुछ आसान

يَسِيْرٍ ﴿۱۰﴾ ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ﴿۱۱﴾ وَّجَعَلْتُ
नहीं होगा। मुझे और उस को जिसे मैं ने पैदा किया, तन्हा छोड़ दीजिए। और मैं ने

لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّ مَهَّدْتُّ لَهٗ

उस को अता किया बहोत सारा माल। और हाज़िर रेहने वाले बेटे बनाए। और मैं ने उस को हर चीज़ में

تَمْهِيْدًا ۙ﴿۱۴﴾ ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۙ﴿۱۵﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ

वुस्अत दी। फिर वो लालच रखता है के मैं मज़ीद दूँ। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन वो

كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ؕ﴿۱۶﴾ سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ؕ﴿۱۷﴾ اِنَّهٗ

हमारी आयतों के साथ दुशमनी रखने वाला था। अनक़रीब मैं उसे कठिन चढ़ाई पर चढ़ने पर मजबूर करूंगा। उस ने

فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۙ﴿۱۸﴾ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۙ﴿۱۹﴾ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ

सोचा और एक अन्दाज़ा लगाया। तो वो मारा जाए के कैसा उस ने अन्दाज़ा लगाया। फिर वो मारा जाए के कैसा उस ने

قَدَّرَ ۙ﴿۲۰﴾ ثُمَّ نَظَرَ ۙ﴿۲۱﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۙ﴿۲۲﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ

अन्दाज़ा लगाया। फिर उस ने देखा। फिर उस ने मुंह बनाया और फिर उस ने मुंह बिगाड़ा। फिर उस ने पीठ

وَ اسْتَكْبَرَ ۙ﴿۲۳﴾ فَقَالَ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ۙ﴿۲۴﴾

फेरी और फिर उस ने तकब्बुर किया। फिर उस ने कहा के ये तो नहीं है मगर जादू जो मन्कूल चला आ रहा है।

اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ؕ﴿۲۵﴾ سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿۲۶﴾

ये तो एक इन्सान ही का कलाम है। अनक़रीब मैं उसे दोज़ख में दाखिल करूँगा।

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ؕ﴿۲۷﴾ لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ۚ﴿۲۸﴾ لَوَّاحَةٌ

और आप को मालूम भी है के सक़र क्या है? वो आग न बाक़ी रेहने देगी और न कोई चीज़ छोड़ेगी। वो तो शक्ले इन्सानी

لِّلْبَشَرِ ۚۖ﴿۲۹﴾ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ؕ﴿۳۰﴾ وَمَا جَعَلْنَاۤ اَصْحٰبَ

को बिगाड़ कर रख देगी। उस दोज़ख पर उन्नीस फ़रिशते हैं। और हम ने दोज़ख वालों को नहीं

النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۪ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ

बनाया मगर फ़रिशते। और हम ने उन की तादाद को काफिरों

اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا

के लिए सिर्फ़ फ़ितना बनाया ताके वो लोग यक़ीन करें जिन को किताब

الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ

दी गई और ईमान वाले ईमान में और बढ़ें और शक न करें

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ

वो जिन को किताब दी गई और शक न करें ईमान वाले और ताके वो लोग कहें

فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ

जिन के दिलों में बीमारी है और काफ़िर कहें के अल्लाह ने उस के ज़रिए मिसाल बयान कर के किस चीज़ का इरादा किया है?

بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ یُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ یَّشَآءُ

इसी तरह अल्लाह गुमराह करते हैं जिसे चाहते हैं

وَ یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَمَا یَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ

और हिदायत देते हैं जिसे चाहते हैं। और तेरे रब के लशकर सिर्फ़

اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِیَ اِلَّا ذِكْرٰی لِلْبَشَرِ ﴿۳۱﴾ كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿۳۲﴾

वही जानता है। और ये महज़ एक नसीहत है इन्सानों के लिए। हरगिज़ नहीं! चाँद की क़सम।

وَالَّیْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿۳۳﴾ وَالصُّبْحِ اِذَاۤ اَسْفَرَ ﴿۳۴﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَی

और रात की क़सम, जब वो चली जाए। सुबह की क़सम, जब वो रोशन हो जाए। यक़ीनन ये बड़ी निशानियों में से

الْكُبَرِ ﴿۳۵﴾ نَذِیْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿۳۶﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ

एक है। और ये इन्सानों को डराने वाली है। उस को जो तुम में से ये चाहे

اَنْ یَّتَقَدَّمَ اَوْ یَتَاَخَّرَ ﴿۳۷﴾ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِیْنَةٌ ﴿۳۸﴾

के आगे बढ़े या पीछे हटे। हर शख्स रोका जाएगा उन आमाल की वजह से जो उस ने किए।

اِلَّاۤ اَصْحٰبَ الْیَمِیْنِ ﴿۳۹﴾ فِیْ جَنّٰتٍ ۛ یَتَسَآءَلُوْنَ ﴿۴۰﴾

सिवाए यमीन वालों के। जो जन्नतों में होंगे, एक दूसरे को पूछ रहे होंगे।

عَنِ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۴۱﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِیْ سَقَرَ ﴿۴۲﴾ قَالُوْا

मुजरिमों के मुतअल्लिक़। (मुजरिमों से पूछेंगे) के तुम्हें दोज़ख में किस चीज़ ने दाखिल किया? तो वो कहेंगे के

لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّیْنَ ﴿۴۳﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِیْنَ ﴿۴۴﴾

हम नमाज़ पढ़ने वालों में से नहीं थे। और हम मिस्कीन को खाना नहीं देते थे।

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآىِٕضِیْنَ ﴿۴۵﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ

और हम बातिल कलाम में लगने वालों के साथ लगे रेहते थे। और हम हिसाब

بِیَوْمِ الدِّیْنِ ﴿۴۶﴾ حَتّٰۤی اَتٰىنَا الْیَقِیْنُ ﴿۴۷﴾

के दिन को झुठलाते थे। यहाँ तक के हमारे पास यक़ीन (यानी मौत) आ गई।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِیْنَ ﴿۴۸﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ

फिर तो उन को सिफारिश करने वालों की सिफारिश नफा नहीं देगी। फिर उन को क्या हुवा के नसीहत

ع ۱۵

معانقہ ۱۲ عند المتاخرین

التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝٤٩ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝٥٠

से ऐराज़ कर रहे हैं। गोया के वो बिदके हुए गधे हैं।

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝٥١ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ

जो शेर से भागे हों। बल्के उन में से हर शख्स ये

مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝٥٢ كَلَّا ۭ بَلْ

चाहता है के उसे खुले हुए सहीफे दिए जाएं। हरगिज़ नहीं! बल्के

لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝٥٣ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۝٥٤ فَمَنْ

वो आख़िरत से डरते नहीं हैं। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन कुरआन तो नसीहत है। फिर जो

شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝٥٥ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ

चाहे उस से नसीहत हासिल करे। और वो नसीहत हासिल नहीं कर सकते मगर ये के अल्लाह चाहे।

هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝٥٦

वो तक़्वा का अहल है और बख़्शने का अहल है।

اٰيَاتُهَا ٤٠ (٧٥) سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ (٣١) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ४० आयतें हैं सूरह क़ियामह मक्का में नाज़िल हुई और २ रुकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝١ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ

क़सम खाता हूँ क़यामत के दिन की। और क़सम खाता हूँ मलामत करने वाले

اللَّوَّامَةِ ۝٢ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝٣

नफ्स की। क्या इन्सान ने ये समझ रखा है के हम उस की हड्डियाँ हरगिज़ जमा नहीं करेंगे?

بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۝٤ بَلْ يُرِيْدُ

क्यूं नहीं! हम इस पर क़ादिर हैं के उस के पोरे भी दुरुस्त कर दें। बल्के इन्सान

الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝٥ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝٦

ये चाहता है के आगे भी वो बदकारी करता रहे। वो पूछता है के क़यामत का दिन कब है?

فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝٧ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝٨ وَجُمِعَ الشَّمْسُ

फिर जब निगाहें फटी रेह जाएं। और चाँद बेनूर हो जाए। और चाँद और सूरज इकट्ठे

وَالْقَمَرُ ۙ﴿٩﴾ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ﴿١٠﴾
किए जाएं। इन्सान उस दिन कहेगा के किधर भागूँ?

كَلَّا لَا وَزَرَ ؕ﴿١١﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۣالْمُسْتَقَرُّ ؕ﴿١٢﴾
हरगिज़ नहीं! कोई जाए पनाह नहीं। तेरे रब की तरफ़ उस दिन ठेहेरना है।

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ ۣبِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ؕ﴿١٣﴾
इन्सान को खबर दी जाएगी उस दिन उन आमाल की जो उस ने आगे भेजे और पीछे छोड़े।

بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۙ﴿١٤﴾ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ؕ﴿١٥﴾
बल्के इन्सान अपने खिलाफ खुद हुज्जत है। अगर्चे वो अपने बहाने पेश करे।

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ؕ﴿١٦﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ
आप अपनी ज़बान कुरआन के साथ न हिलाएं ताके उस में आप जल्दी करें। हमारे ज़िम्मे उस कुरआन का जमा करना

وَقُرْاٰنَهٗ ۚ﴿١٧﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۚ﴿١٨﴾ ثُمَّ
और उस का पढ़वाना भी है। फिर जब हम उस को पढ़ लें, फिर बाद में आप पढ़िए। फिर

اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ؕ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۙ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُوْنَ
यक़ीनन हमारे ज़िम्मे उस को बयान करना भी है। हरगिज़ नहीं! बल्के तुम दुन्या से महब्बत रखते हो। और आख़िरत

الْاٰخِرَةَ ؕ﴿٢١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ﴿٢٢﴾ اِلٰى رَبِّهَا
को छोड़ देते हो। कुछ चेहरे उस दिन तर व ताज़ा होंगे। अपने रब की तरफ़ देख रहे

نَاظِرَةٌ ۚ﴿٢٣﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ ۣبَاسِرَةٌ ۙ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ
होंगे। और कुछ चेहरे उस दिन उदास होंगे। गुमान करते होंगे के उन

اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ؕ﴿٢٥﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ﴿٢٦﴾
के साथ कमर तोड़ने वाले का मुआमला किया जाएगा। हरगिज़ नहीं! जब रूह हलक़ तक पहोंच जाए।

وَقِيْلَ مَنْ ٜ رَاقٍ ۙ﴿٢٧﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ﴿٢٨﴾ وَالْتَفَّتِ
और पूछा जाए के है कोई रुक़्या करने वाला। और वो गुमान करता है के ये तो जुदाई का वक्त है। और पिंडली

السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ﴿٢٩﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۣالْمَسَاقُ ؕ﴿٣٠﴾ ع
पिंडली के साथ लिपट जाए। तेरे रब ही की जानिब उस दिन चलना है।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ۙ﴿٣١﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۙ﴿٣٢﴾
फिर उस ने न तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी। लेकिन उस ने झुठलाया और मुंह मोड़ा।

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰىؕ۝۳۳ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰىۙ۝۳۴ ثُمَّ اَوْلٰى

फिर वो गया अपने घर वालों की तरफ अकड़ता हुवा। तेरे लिए हलाकत हो, फिर हलाकत हो। फिर तेरे

لَكَ فَاَوْلٰىؕ۝۳۵ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًىؕ۝۳۶

लिए हलाकत हो, फिर हलाकत हो। क्या इन्सान ने ये समझ रखा है के उसे बेकार छोड़ दिया जाएगा?

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰىۙ۝۳۷ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً

क्या वो मनी का एक नुत्फा नहीं था जो टपकाया जाता है? फिर जमा हुवा खून था, फिर अल्लाह ने

فَخَلَقَ فَسَوّٰىۙ۝۳۸ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ

बनाया, फिर दुरुस्त किया, फिर उस से जोड़ा बनाया एक मर्द

وَ الْاُنْثٰىؕ۝۳۹ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى۝۴۰

और एक औरत को। क्या वो अल्लाह इस पर क़ादिर नहीं है के मुर्दों को ज़िन्दा करे?

ع ١٨

اٰيَاتُهَا ۳۱ (۷۶) سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ (۹۸) رُكُوْعَاتُهَا ۲

उस में ३१ आयतें हैं सूरह दह्‌र मदीना में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ

बेशक इन्सान पर ज़माने में एक वक्त ऐसा भी आया है के वो क़ाबिले ज़िक्र

شَيْئًا مَّذْكُوْرًا۝۱ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ

चीज़ नहीं था। यक़ीनन हम ने इन्सान को मखलूत नुत्फे से पैदा

اَمْشَاجٍۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا۝۲ اِنَّا هَدَيْنٰهُ

किया, के हम उस को आज़माएं, फिर हम ने उसे सुनने वाला, देखने वाला बनाया। बेशक हम ने उस को रास्ता

السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا۝۳ اِنَّآ اَعْتَدْنَا

बतलाया, या शुक्र करने वाला हुवा या नाशुकरा। यक़ीनन हम ने काफिरों

لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاۡ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا۝۴ اِنَّ الْاَبْرَارَ

के लिए ज़न्जीरें और तौक़ और आग तय्यार कर रखी हैं। यक़ीनन नेक लोग

يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا۝۵ۚ عَيْنًا

पिएंगे ऐसे जाम से जिस में काफूर की आमेज़िश होगी। एक चशमे से

يَّشۡرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوۡنَهَا تَفۡجِيۡرًا ۝٦ يُوۡفُوۡنَ

जिस से अल्लाह के मखसूस बन्दे पिएंगे (और वो जहाँ चाहेंगे) उसे बहा ले जाएंगे। जो नज़र

بِالنَّذۡرِ وَيَخَافُوۡنَ يَوۡمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسۡتَطِيۡرًا ۝٧

पूरी करते हैं और डरते हैं उस दिन से जिस की मुसीबत फैली हुई होगी।

وَ يُطۡعِمُوۡنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسۡكِيۡنًا وَّ يَتِيۡمًا

और जो खाना देते हैं उस की महब्बत के बावजूद मिस्कीन और यतीम

وَّ اَسِيۡرًا ۝٨ اِنَّمَا نُطۡعِمُكُمۡ لِوَجۡهِ اللّٰهِ لَا نُرِيۡدُ مِنۡكُمۡ

और क़ैदी को। के हम तुम्हें सिर्फ अल्लाह की रज़ा की खातिर खाना देते हैं, हम तुम से न बदला

جَزَآءً وَّلَا شُكُوۡرًا ۝٩ اِنَّا نَخَافُ مِنۡ رَّبِّنَا يَوۡمًا

चाहते हैं और न शुक्रिया चाहते हैं। हम तो अपने रब से डरते हैं उस दिन से

عَبُوۡسًا قَمۡطَرِيۡرًا ۝١٠ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الۡيَوۡمِ

जो उदासी वाला और सख्त दिन होगा। तो अल्लाह उन को उस दिन की मुसीबत से बचा लेंगे

وَلَقّٰهُمۡ نَضۡرَةً وَّ سُرُوۡرًا ۝١١ وَجَزٰهُمۡ بِمَا صَبَرُوۡا

और उन को अल्लाह ताज़गी और खुशी अता करेंगे। और उन के सब्र के बदले उन को

جَنَّةً وَّ حَرِيۡرًا ۝١٢ مُّتَّكِـِٕيۡنَ فِيۡهَا عَلَى الۡاَرَآئِكِ ۚ

जन्नत और रेशम इनायत फरमाएंगे। उस में वो टेक लगाए हुए होंगे तख्तों पर।

لَا يَرَوۡنَ فِيۡهَا شَمۡسًا وَّلَا زَمۡهَرِيۡرًا ۝١٣ وَ دَانِيَةً

उस में न वो धूप देखेंगे और न सरदी। और फलदार शाखों के

عَلَيۡهِمۡ ظِلٰلُهَا وَ ذُلِّلَتۡ قُطُوۡفُهَا تَذۡلِيۡلًا ۝١٤

साए उन के क़रीब होंगे और फलों के गुच्छे झुके हुए ताबेअ होंगे।

وَ يُطَافُ عَلَيۡهِمۡ بِاٰنِيَةٍ مِّنۡ فِضَّةٍ وَّاَكۡوَابٍ

और उन पर चाँदी के बरतन घुमाए जाएंगे और प्याले

كَانَتۡ قَوَارِيۡرَا۠ ۝١٥ قَوَارِيۡرَا۠ مِنۡ فِضَّةٍ قَدَّرُوۡهَا

जो शीशे के होंगे। चाँदी के शीशे से होंगे, जिन को भरने वाले ने एक मुअय्यन मिक़दार

تَقۡدِيۡرًا ۝١٦ وَيُسۡقَوۡنَ فِيۡهَا كَاۡسًا كَانَ مِزَاجُهَا

से भरा होगा। और उन को उस में ऐसे जाम पिलाए जाएंगे जिन में सूंठ की आमेज़िश

سہ قرء حفص بغير الالف في الوصل فيهما ووقف على الاول بالالف وعلى الثاني بغير الالف ١٢

زَنْجَبِیْلًا ﴿١٧﴾ عَیْنًا فِیْهَا تُسَمّٰی سَلْسَبِیْلًا ﴿١٨﴾
होगी। जन्नत के एक चशमे से जिस का नाम सलसबील है।

وَ یَطُوْفُ عَلَیْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَیْتَهُمْ
और उन पर लड़के चक्कर लगाएंगे जो लड़के ही रहेंगे। जब आप उन को देखोगे तो आप

حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾ وَاِذَا رَاَیْتَ ثَمَّ رَاَیْتَ
उन्हें बिखेरे हुए मोती गुमान करोगे। और जब आप उस जगह को देखोगे तो

نَعِیْمًا وَّ مُلْكًا كَبِیْرًا ﴿٢٠﴾ عٰلِیَهُمْ ثِیَابُ سُنْدُسٍ
नेअमत वाली जगह और एक बड़ी सल्तनत देखोगे। उन पर बारीक और मोटे सब्ज़

خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ز وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَ سَقٰهُمْ
रेशम का लिबास होगा। और उन्हें चाँदी के कंगन पेहनाए जाएंगे। और उन को

رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً
उन का रब पाकीज़ा शराब पिलाएगा। ये तुम्हारा सवाब है

وَّكَانَ سَعْیُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَیْكَ
और तुम्हारी कोशिश की क़दर की गई है। हम ने आप पर ये कुरआन थोड़ा थोड़ा

الْقُرْاٰنَ تَنْزِیْلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ
नाज़िल किया है। इस लिए आप अपने रब के हुक्म की वजह से सब्र कीजिए और उन में से

مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً
किसी गुनहगार या बहोत नाशुकरे का केहना न मानिए। और अपने रब के नाम का ज़िक्र कीजिए सुबह

وَّ اَصِیْلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ الَّیْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ
और शाम। और रात के किसी वक्त में उस के सामने सज्दा कीजिए और लम्बी रात

لَیْلًا طَوِیْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ یُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ
में उस की तस्बीह कीजिए। यक़ीनन ये लोग दुन्या चाहते हैं

وَ یَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ یَوْمًا ثَقِیْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ
और अपने पीछे एक भारी दिन को छोड़ देते हैं। हमीं ने उन को पैदा किया

وَ شَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ
और उन के बन्धन को मज़बूत किया है। और हम जब चाहें उन के जैसे बदले में

تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ

ले आएं। यक़ीनन ये नसीहत है। फिर जो चाहे

اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ

अपने रब की तरफ़ रास्ता बना ले। और तुम नहीं चाहोगे

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾

मगर ये के अल्लाह ही चाहे। यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है।

يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمِيْنَ

वो अपनी रहमत में जिसे चाहे दाख़िल करता है। और ज़ालिमों

اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

के लिए उस ने दर्दनाक अज़ाब तय्यार कर रखा है।

ع ٢

اٰيَاتُهَا ٥٠ (٧٧) سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ (٣٣) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ५० आयतें हैं सूरह मुरसलात मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾

उन हवाओं की क़सम जो नफे के लिए भेजी जाती हैं। फिर उन हवाओं की क़सम जो तेज़ चलने वाली हैं।

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿٣﴾ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾

उन हवाओं की क़सम जो बादलों को फैलाने वाली हैं। फिर उन हवाओं की क़सम जो बादलों को अलग अलग करने वाली

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾

हैं। फिर उन हवाओं की क़सम जो अल्लाह की याद दिल में डालने वाली हैं। उज़्र के लिए या डराने के लिए।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾

तुम्हें जिस से डराया जा रहा है, वो अलबत्ता ज़रूर वाक़ेअ होने वाला है। फिर जब सितारे बेनूर हो जाएंगे।

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾

और जब आसमान फट जाएगा। और जब पहाड़ गुबार बना कर उड़ा दिए जाएंगे।

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ﴿١١﴾ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ﴿١٢﴾

और जब पैग़म्बर इकट्ठे किए जाएंगे। किस दिन के लिए उसे मुअख़्ख़र किया गया?

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿۱۳﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿۱۴﴾

फ़ैसले के दिन के लिए। और आप को मालूम है के फ़ैसले का दिन क्या है?

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۵﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۶﴾

उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। क्या हम ने हलाक नहीं किया अगले लोगों को?

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۷﴾ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ

फिर हम उन के पीछे चलता करेंगे पीछे आने वालों को। इसी तरह हम मुजरिमों

بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۱۹﴾

के साथ करते हैं। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿۲۰﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ

क्या हम ने तुम्हें पैदा नहीं किया एक ज़लील पानी से? फिर हम ने उस को महफ़ूज़ ठेहेरने की जगह में

مَّكِيْنٍ ﴿۲۱﴾ اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۲۲﴾ فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ

रखा। एक वक़्ते मुक़र्ररा तक। फिर हम ने मिक़दार मुतअय्यन की। फिर हम कितनी अच्छी

الْقٰدِرُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۲۴﴾

मिक़दार मुतअय्यन करने वाले हैं। उस दिन हलाकत है झुठलाने वालों के लिए।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿۲۵﴾ اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿۲۶﴾

क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? ज़िन्दों और मुर्दों को।

وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّ اَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً

और हम ने उस में ऊँचे ऊँचे पहाड़ गाड़ दिए और हम ने तुम्हें मीठा पानी पीने

فُرَاتًا ﴿۲۷﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۲۸﴾ اِنْطَلِقُوْٓا

को दिया। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। (कहा जाएगा)

اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۹﴾ اِنْطَلِقُوْٓا

के तुम चलो उस अज़ाब की तरफ़ जिस को तुम झुठलाते थे। तुम चलो

اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿۳۰﴾ لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ

तीन शाख़ों वाले साए की तरफ़। जो न साया देने वाला है और न आग की तपिश

مِنَ اللَّهَبِ ﴿۳۱﴾ اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿۳۲﴾

के कुछ काम आ सकता है। यक़ीनन वो तो अंगारे फैंकती है महल जैसे।

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ۝٣٣ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٣٤

गोया के वो पीले पीले ऊँट हैं। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ۝٣٥ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ۝٣٦

ये वो दिन है के वो बोल नहीं सकेंगे। और उन को इजाज़त भी नहीं दी जाएगी के वो उज़्र पेश करें।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٣٧ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ

उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। ये फ़ैसले का दिन है।

جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ۝٣٨ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ

हम ने तुम्हें और अगले लोगों को जमा कर दिया। फिर अगर तुम्हारे पास कोई दाव है

فَكِيْدُوْنِ ۝٣٩ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٤٠ ع

तो मुझ पर चला लो। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ۝٤١ وَّ فَوَاكِهَ

यक़ीनन मुत्तक़ी लोग सायों और चशमों, और मेवों में होंगे,

مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝٤٢ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢبِمَا كُنْتُمْ

जिस क़िस्म के वो चाहेंगे। मुबारक हो, तुम खाओ और पियो उन आमाल के बदले में जो तुम

تَعْمَلُوْنَ ۝٤٣ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝٤٤

करते थे। इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देंगे।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٤٥ كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا

उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है। तुम खाओ और थोड़ा मज़ा

قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ۝٤٦ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ

ले लो, यक़ीनन तुम मुजरिम हो। उस दिन झुठलाने वालों के लिए

لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٤٧ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا

हलाकत है। और जब उन से कहा जाता है के तुम रूकूअ करो

لَا يَرْكَعُوْنَ ۝٤٨ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝٤٩

तो ये रूकूअ नहीं करते। उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٠ ع

फिर इस के बाद कौन सी बात पर वो ईमान लाएंगे।

اٰیَاتُهَا ٤٠ (٧٨) سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ (٨٠) رُكُوْعَاتُهَا ٢

उस में ४० आयतें हैं सूरह नबा मक्का में नाज़िल हुई और २ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝١ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۝٢ الَّذِیْ هُمْ فِيْهِ

किस चीज़ के मुतअल्लिक़ ये सवाल कर रहे हैं? एक बड़ी ख़बर के मुतअल्लिक़? जिस में वो इखतिलाफ

مُخْتَلِفُوْنَ ۝٣ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝٤ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝٥ اَلَمْ نَجْعَلِ

कर रहे हैं? हरगिज़ नहीं! अनक़रीब उन्हें पता चल जाएगा। फिर हरगिज़ नहीं! अनक़रीब उन्हें पता चल जाएगा। क्या

الْاَرْضَ مِهٰدًا ۝٦ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝٧ وَّ خَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۝٨

हम ने ज़मीन को फ़र्श और पहाड़ों को मेख़ें नहीं बनाया? और हम ने तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया।

وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝٩ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۝١٠ وَّجَعَلْنَا

और हम ने तुम्हारी नीन्द को राहत का ज़रिया बनाया। और हम ने रात को परदा बनाया। और हम ने

النَّهَارَ مَعَاشًا ۝١١ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝١٢ وَّجَعَلْنَا

दिन को रोज़ी कमाने का वक़्त बनाया। और हम ने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। और हम ने

سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۝١٣ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۝١٤

चमकता हुवा चिराग़ बनाया। और हम ने बादलों से ज़ोर से बेहने वाला पानी उतारा।

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۝١٥ وَّ جَنّٰتٍ اَلْفَافًا ۝١٦ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ

ताके हम उस के ज़रिए निकालें अनाज और सब्ज़ा। और घने बाग़ात। बेशक फ़ैसले का दिन

كَانَ مِيْقَاتًا ۝١٧ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِی الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۝١٨

मुक़र्ररा वक़्त है। जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम फ़ौज दर फ़ौज आओगे।

وَّ فُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۝١٩ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ

और आसमान खोले जाएंगे, फिर वो दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे। और पहाड़ चलाए जाएंगे, फिर वो

سَرَابًا ۝٢٠ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝٢١ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۝٢٢

सराब की तरह हो जाएंगे। यक़ीनन जहन्नम घात में है। सरकशों का ठिकाना है।

لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ۝٢٣ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝٢٤

जिस में वो मुद्दतों पड़े रहेंगे। जिस में वो ठन्डी चीज़, पीने की चीज़ चख भी नहीं पाएंगे।

إِلَّا حَمِيمًا وَّ غَسَّاقًا ﴿٢٥﴾ جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ

सिवाए गर्म पानी और पीप के। जो बराबर की सज़ा के तौर पर होगा। इस लिए के वो हिसाब की उम्मीद नहीं

حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَّكَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنٰهُ

रखते थे। और हमारी आयतों को झुठलाते थे। और हर चीज़ को हम ने लिख कर (किताब में) महफ़ूज़ कर

كِتٰبًا ﴿٢٩﴾ فَذُوقُوا فَلَنْ نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ

रखा है। फिर तुम चखो, फिर हम तुम्हारे लिए हरगिज़ ज़्यादा नहीं करेंगे मगर अज़ाब ही को। यक़ीनन मुत्तक़ियों के लिए

مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَآئِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَّكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَّكَأْسًا

कामयाबी है। बाग़ात और अंगूर। और नौजवान हमउम्र औरतें हैं। और लबालब भरे जाम

دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً

हैं। उस में वो न कोई बेहूदा बात और न झूठ सुनेंगे। तेरे रब की तरफ़ से बदले के तौर पर, हदये के तौर

حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُونَ

पर भी, हिसाब के तौर पर भी। जो आसमानों और ज़मीन और उन चीज़ों का रब है जो उन के दरमियान हैं, रहमान है, वो

مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ

उस से बात करने की ताक़त भी नहीं रख सकेंगे। जिस दिन रूह और फ़रिशते सफ बाँध कर खड़े होंगे, बोल नहीं सकेंगे

إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ

मगर वही जिन को रहमान तआला इजाज़त दे और जो ठीक बात कहे। ये दिन हक़ है। फिर जो

شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾ إِنَّآ أَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَّوْمَ يَنْظُرُ

चाहे अपने रब के पास ठिकाना बना ले। यक़ीनन हम ने तुम्हें क़रीबी अज़ाब से डराया। जिस दिन इन्सान

الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِي كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

देखेगा वो आमाल जो उस के हाथों ने आगे भेजे और काफ़िर कहेगा के ऐ काश के मैं मिट्टी होता।

اٰيَاتُهَا ٤٦ (٧٩) سُورَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ (٨١) رُكُوعَاتُهَا ٢

और २ रूकूअ हैं सूरह नाज़िआत मक्का में नाज़िल हुई उस में ४६ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾ وَّالسّٰبِحٰتِ

उन फ़रिश्तों की क़सम जो सख़्ती से जान निकालने वाले हैं। और उन फ़रिश्तों की क़सम जो सहूलत से जान निकालने वाले हैं।और उन फ़रिश्तों

سَبۡحًا ۙ﴿۳﴾ فَالسّٰبِقٰتِ سَبۡقًا ۙ﴿۴﴾ فَالۡمُدَبِّرٰتِ اَمۡرًا ۘ﴿۵﴾ يَوۡمَ

की क़सम जो तैर कर आने वाले हैं। फिर उन फ़रिशतों की क़सम जो दौड़ कर आने वाले हैं। फिर उन फ़रिशतों की क़सम जो उमूर की तदबीर करने वाले हैं।

تَرۡجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿۶﴾ تَتۡبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ﴿۷﴾ قُلُوۡبٌ

जिस दिन ज़लज़ले वाली ज़लज़ला ले आएगी। जिस के पीछे आएगी पीछे आने वाली। दिल

يَّوۡمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿۸﴾ اَبۡصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ﴿۹﴾ يَقُوۡلُوۡنَ

उस दिन धड़क रहे होंगे। उन की नज़रें झुकी हुई होंगी। वो केहते हैं

ءَاِنَّا لَمَرۡدُوۡدُوۡنَ فِی الۡحَافِرَةِ ؕ﴿۱۰﴾ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ﴿۱۱﴾

के क्या हम पेहली हालत में लौटाए जाएंगे? क्या जब के हम खोखली हड्डियाँ हो जाएंगे?

قَالُوۡا تِلۡكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ﴿۱۲﴾ فَاِنَّمَا هِیَ زَجۡرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ﴿۱۳﴾

उन्हों ने कहा के तब तो ये लौटना खसारे वाला है। वो क़यामत तो सिर्फ़ एक ही डांट होगी।

فَاِذَا هُمۡ بِالسَّاهِرَةِ ؕ﴿۱۴﴾ هَلۡ اَتٰىكَ حَدِيۡثُ مُوۡسٰی ۘ﴿۱۵﴾

के एक दम वो सब मैदान में हाज़िर हो जाएंगे। क्या तुम्हारे पास मूसा (अलैहिस्सलाम) का क़िस्सा पहोंचा?

اِذۡ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالۡوَادِ الۡمُقَدَّسِ طُوًی ۚ﴿۱۶﴾ اِذۡهَبۡ

जब के उन के रब ने उन को मुक़द्दस वादिए तुवा में आवाज़ दी। के जाओ फिरऔन के पास,

اِلٰی فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰی ۖ﴿۱۷﴾ فَقُلۡ هَلۡ لَّكَ اِلٰۤی اَنۡ تَزَكّٰی ۙ﴿۱۸﴾

इस लिए के उस ने सरकशी की है। और कहो के क्या तुझे रग़बत है के तू पाक साफ बन जाए?

وَاَهۡدِيَكَ اِلٰی رَبِّكَ فَتَخۡشٰی ۚ﴿۱۹﴾ فَاَرٰىهُ الۡاٰيَةَ الۡكُبۡرٰی ۖ﴿۲۰﴾

और मैं तुझे रास्ता दिखाऊँ तेरे रब की तरफ के तुझे डर पैदा हो। तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फिरऔन को बड़ा मोअजिज़ा दिखाया।

فَكَذَّبَ وَعَصٰی ۖ﴿۲۱﴾ ثُمَّ اَدۡبَرَ يَسۡعٰی ۖ﴿۲۲﴾ فَحَشَرَ فَنَادٰی ۖ﴿۲۳﴾

फिर उस ने झुठलाया और नाफरमानी की। फिर वो पीठ फेर कर भागा। फिर उस ने लोगों को इकट्ठा किया, फिर पुकारा।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الۡاَعۡلٰی ۖ﴿۲۴﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الۡاٰخِرَةِ

और कहा के मैं ही तुम्हारा रब्बे आला हूँ। फिर अल्लाह ने उस को दुन्या और आखिरत के अज़ाब में

وَالۡاُوۡلٰی ؕ﴿۲۵﴾ اِنَّ فِیۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّمَنۡ يَّخۡشٰی ؕ﴿۲۶﴾

पकड़ लिया। यक़ीनन उस में अलबत्ता इबरत है उस शख्स के लिए जो डरे।

ءَاَنۡتُمۡ اَشَدُّ خَلۡقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰهَا ﴿۲۷﴾ رَفَعَ سَمۡكَهَا

क्या तुम्हारा पैदा करना मुशकिल है या आसमान का, जो अल्लाह ने बनाया? जिस की छत को उस ने बुलन्द किया,

فَسَوّٰىهَا ﴿٢٨﴾ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ﴿٢٩﴾ وَالْاَرْضَ بَعْدَ

फिर उस को ठीक बनाया। और उस की रात को तारीक बनाया और उस की धूप को निकाला। और उस के बाद

ذٰلِكَ دَحٰىهَا ﴿٣٠﴾ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ﴿٣١﴾ وَالْجِبَالَ

ज़मीन बिछाई। उस में से उस का पानी और उस की चरागाह (यानी चारे) को निकाला। और पहाड़ों

اَرْسٰىهَا ﴿٣٢﴾ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ

को गाड़ दिया। तुम्हारे फ़ाइदे के लिए और चौपाओं के लिए। फिर जब सब से बड़ी मुसीबत

الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ

आ जाएगी। जिस दिन इन्सान अपने किए को याद करेगा। और जहन्नम खोल दी जाएगी

لِمَنْ يَّرٰى ﴿٣٦﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

उस शख़्स के लिए जो देखे। फिर जिस ने सरकशी की, और दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह दी,

فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى

तो जहन्नम ही उस का ठिकाना है। और जो डरा अपने रब के सामने खड़ा होने से और उस ने

النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾ يَسْــَٔلُوْنَكَ

अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका, तो यक़ीनन जन्नत ही उस का ठिकाना है। वो आप से

عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿٤٢﴾ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾

क़यामत के मुतअल्लिक़ सवाल करते हैं के कब उसे वाक़ेअ होना है? उस के बताने में आप का क्या तअल्लुक़?

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾

आप के रब ही की तरफ़ उस के इल्म का मुन्तहा है। आप तो सिर्फ डराने वाले हैं उस शख़्स को जो उस से डरे।

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾

जिस दिन वो क़यामत को देखेंगे गोया के वो (दुन्या में) सिर्फ एक शाम या एक सुबह ठेहरे हैं।

رُكُوْعُهَا ١ (٢٤) سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ (٨٠) اٰيَاتُهَا ٤٢

और १ रूकूअ हैं सूरह अबस मक्का में नाज़िल हुई उस में ४२ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ﴿١﴾ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ

मुंह बिगाड़ा और ऐराज़ किया। इस वजह से के आप के पास एक अन्धा आया। आप को क्या मालूम शायद वो

يَزَّكّٰىٓ ۙ﴿۳﴾ اَوۡ يَذَّكَّرُ فَتَنۡفَعَهُ الذِّكۡرٰى ؕ﴿۴﴾ اَمَّا مَنِ اسۡتَغۡنٰى ۙ﴿۵﴾

संवर जाए। या नसीहत ले, फिर उसे नसीहत फ़ाइदा दे। हाँ जो बेपरवाही बरतता है,

فَاَنۡتَ لَهٗ تَصَدّٰى ؕ﴿۶﴾ وَمَا عَلَيۡكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ؕ﴿۷﴾ وَاَمَّا مَنۡ جَآءَكَ

तो आप उस के पीछे पड़ते हो? हालांके आप पर कुछ नहीं इस में के वो पाक नहीं होता। और हाँ जो आप

يَسۡعٰى ۙ﴿۸﴾ وَهُوَ يَخۡشٰى ۙ﴿۹﴾ فَاَنۡتَ عَنۡهُ تَلَهّٰى ۚ﴿۱۰﴾ كَلَّاۤ اِنَّهَا

के पास आता है दौड़ कर और वो डरता भी है, तो आप उस से तग़ाफ़ुल बरतते हो? हरगिज़ नहीं! ये तो

تَذۡكِرَةٌ ۚ﴿۱۱﴾ فَمَنۡ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۘ﴿۱۲﴾ فِىۡ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۙ﴿۱۳﴾ مَّرۡفُوۡعَةٍ

वक़्फ़ लाज़िम: وقف لازم

नसीहत है। फिर जो चाहे इस से नसीहत पकड़े। ये बाइज़्ज़त सहीफ़ों में है। जो बुलन्द हैं,

مُّطَهَّرَةٍ ۙ﴿۱۴﴾ بِاَيۡدِىۡ سَفَرَةٍ ۙ﴿۱۵﴾ كِرَامٍۢ بَرَرَةٍ ؕ﴿۱۶﴾ قُتِلَ الۡاِنۡسَانُ

साफ़ सुथरे हैं। ऐसे लिखने वाले फ़रिश्तों के हाथों में है, जो बाइज़्ज़त फ़रमांबरदार हैं। इन्सान मारा जाए

مَاۤ اَكۡفَرَهٗ ؕ﴿۱۷﴾ مِنۡ اَىِّ شَىۡءٍ خَلَقَهٗ ؕ﴿۱۸﴾ مِنۡ نُّطۡفَةٍ ؕ

के कितना वो नाशुकरा है। किस चीज़ से अल्लाह ने उस को पैदा किया? नुत्फ़े से उस को पैदा किया। फ़िर मुअय्यन

خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۙ﴿۱۹﴾ ثُمَّ السَّبِيۡلَ يَسَّرَهٗ ۙ﴿۲۰﴾ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقۡبَرَهٗ ۙ﴿۲۱﴾

मिक़्दार के साथ उस को बनाया। फिर रास्ता उस के लिए आसान किया। फिर उस को मौत दी, फिर उस को क़ब्र में पहोंचाया।

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنۡشَرَهٗ ؕ﴿۲۲﴾ كَلَّا لَمَّا يَقۡضِ مَاۤ اَمَرَهٗ ؕ﴿۲۳﴾ فَلۡيَنۡظُرِ

फिर जब वो अल्लाह चाहेगा तो उसे क़ब्र से उठाएगा। हरगिज़ नहीं! अब तक उस ने नहीं किया वो जिस का अल्लाह ने उस को हुक्म

الۡاِنۡسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖۤ ۙ﴿۲۴﴾ اَنَّا صَبَبۡنَا الۡمَآءَ صَبًّا ۙ﴿۲۵﴾ ثُمَّ شَقَقۡنَا

दिया। फिर इन्सान को चाहिए के वो नज़र उठाए अपने खाने की तरफ़। के हम ने पानी ऊपर से डाला। फिर हम ने

الۡاَرۡضَ شَقًّا ۙ﴿۲۶﴾ فَاَنۡۢبَتۡنَا فِيۡهَا حَبًّا ۙ﴿۲۷﴾ وَّعِنَبًا وَّقَضۡبًا ۙ﴿۲۸﴾

ज़मीन को फाड़ा। फिर हम ने उस में अनाज उगाया। और अंगूर और तरकारी।

وَّزَيۡتُوۡنًا وَّنَخۡلًا ۙ﴿۲۹﴾ وَّحَدَآئِقَ غُلۡبًا ۙ﴿۳۰﴾ وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ۙ﴿۳۱﴾

और ज़ैतून और खजूर। और घने बाग़ात। और मेवा और चारा।

مَّتَاعًا لَّـكُمۡ وَلِاَنۡعَامِكُمۡ ؕ﴿۳۲﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۚ﴿۳۳﴾

तुम्हारे अपने और तुम्हारे चौपाओं के लिए फ़ाइदे के खातिर। फिर जब शोर वाली क़यामत आ जाएगी।

يَوۡمَ يَفِرُّ الۡمَرۡءُ مِنۡ اَخِيۡهِ ۙ﴿۳۴﴾ وَاُمِّهٖ وَاَبِيۡهِ ۙ﴿۳۵﴾ وَصَاحِبَتِهٖ

उस दिन हर शख़्स भागेगा अपने भाई से। और अपनी माँ और अपने बाप से। और अपनी बीवी

وَبَنِيۡهِؕ‏ ﴿۳۶﴾ لِكُلِّ امۡرِىءٍ مِّنۡهُمۡ يَوۡمَئِذٍ شَاۡنٌ يُّغۡنِيۡهِؕ‏ ﴿۳۷﴾

और अपने बेटों से। उन में से हर शख्स के लिए उस दिन एक फ़िक्र होगा जो उस को हर चीज़ से बेपरवाह कर देगा।

وُجُوۡهٌ يَّوۡمَئِذٍ مُّسۡفِرَةٌ ۙ‏ ﴿۳۸﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسۡتَبۡشِرَةٌ ۚ‏ ﴿۳۹﴾

कुछ चेहरे उस दिन चमक रहे होंगे। हंसी खुशी।

وَوُجُوۡهٌ يَّوۡمَئِذٍ عَلَيۡهَا غَبَرَةٌ ۙ‏ ﴿۴۰﴾ تَرۡهَقُهَا قَتَرَةٌ ؕ‏ ﴿۴۱﴾

और कुछ चेहरे उस दिन (ऐसे होंगे के) उन पर गुबार होगा। उन पर सियाही (यानी ज़िल्लत) छाई होगी।

اُولٰۤئِكَ هُمُ الۡكَفَرَةُ الۡفَجَرَةُ ﴿۴۲﴾

यही बदकार काफ़िर होंगे।

ع ۵

اٰيَاتُهَا ٢٩ (٨١) سُوۡرَةُ التَّكۡوِيۡرِ مَكِّيَّةٌ (٧) رُكُوۡعُهَا ١

उस में २६ आयतें हैं सूरह तकवीर मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا الشَّمۡسُ كُوِّرَتۡ ۙ‏ ﴿۱﴾ وَاِذَا النُّجُوۡمُ انۡكَدَرَتۡ ۙ‏ ﴿۲﴾ وَاِذَا الۡجِبَالُ

जब सूरज लपेट लिया जाए। और जब सितारे बेनूर हो जाएं। और जब पहाड़

سُيِّرَتۡ ۙ‏ ﴿۳﴾ وَاِذَا الۡعِشَارُ عُطِّلَتۡ ۙ‏ ﴿۴﴾ وَاِذَا الۡوُحُوۡشُ حُشِرَتۡ ۙ‏ ﴿۵﴾

चलाए जाएं। और जब दस महीने की गाभन ऊँटनी खुली छोड़ दी जाए। और जब वहशी जानवर इकठ्ठे किए जाएं।

وَاِذَا الۡبِحَارُ سُجِّرَتۡ ۙ‏ ﴿۶﴾ وَاِذَا النُّفُوۡسُ زُوِّجَتۡ ۙ‏ ﴿۷﴾

और जब समन्दर आग बना दिए जाएं। और जब तमाम इन्सानों की एक एक क़िस्म को जमा किया जाए।

وَاِذَا الۡمَوۡءٗدَةُ سُئِلَتۡ ۙ‏ ﴿۸﴾ بِاَىِّ ذَنۡۢبٍ قُتِلَتۡ ۚ‏ ﴿۹﴾ وَاِذَا الصُّحُفُ

और जब ज़िन्दा दरगोर की हुई बच्ची से पूछा जाए, के किस गुनाह में उसे क़त्ल किया गया? और जब नामअे आमाल

نُشِرَتۡ ۙ‏ ﴿۱۰﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتۡ ۙ‏ ﴿۱۱﴾ وَاِذَا الۡجَحِيۡمُ سُعِّرَتۡ ۙ‏ ﴿۱۲﴾

खोले जाएं। और जब आसमान की खाल खींच ली जाए। और जब जहन्नम भड़काई जाए।

وَاِذَا الۡجَـنَّةُ اُزۡلِفَتۡ ۙ‏ ﴿۱۳﴾ عَلِمَتۡ نَفۡسٌ مَّاۤ اَحۡضَرَتۡ ؕ‏ ﴿۱۴﴾

और जब जन्नत क़रीब लाई जाए। तो हर शख्स जान लेगा जो कुछ वो ले कर आया है। फिर मैं क़सम

فَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالۡخُنَّسِ ۙ‏ ﴿۱۵﴾ الۡجَوَارِ الۡكُنَّسِ ۙ‏ ﴿۱۶﴾ وَالَّيۡلِ اِذَا عَسۡعَسَ ۙ‏ ﴿۱۷﴾

खाता हूँ उन सितारों की जो पीछे हटने वाले, सीधे चलने वाले, छुपने वाले हैं। रात की क़सम जब वो तारीक हो जाए।

وَالصُّبۡحِ اِذَا تَنَفَّسَ ۝١٨ اِنَّهٗ لَقَوۡلُ رَسُوۡلٍ كَرِيۡمٍ ۝١٩ ذِیۡ

सुबह की क़सम जब वो सांस ले (आ जाए)। यक़ीनन ये कुरआन ऐसे भेजे हुए मुअज़्ज़ज़ फ़रिशते का कलाम है, जो कूव्वत

قُوَّةٍ عِنۡدَ ذِی الۡعَرۡشِ مَكِيۡنٍ ۝٢٠ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيۡنٍ ۝٢١

वाला, अर्श वाले के पास रेहने वाला, मरतबे वाला है, फरिशतों का मुताअ, वहाँ अमानतदार भी है।

وَمَا صَاحِبُكُمۡ بِمَجۡنُوۡنٍ ۝٢٢ وَلَقَدۡ رَاٰهُ بِالۡاُفُقِ الۡمُبِيۡنِ ۝٢٣

और तुम्हारे साथी (नबी) मजनून नहीं हैं। बेशक उन्हों ने उस फ़रिशते को देखा है साफ आसमान के किनारे में।

وَمَا هُوَ عَلَی الۡغَيۡبِ بِضَنِيۡنٍ ۝٢٤ وَمَا هُوَ بِقَوۡلِ شَيۡطٰنٍ

और वो ग़ैब की चीज़ों (के बतलाने) में बखील नहीं है। और कुरआन शैतान मरदूद का कलाम

رَّجِيۡمٍ ۝٢٥ فَاَيۡنَ تَذۡهَبُوۡنَ ۝٢٦ اِنۡ هُوَ اِلَّا ذِكۡرٌ لِّلۡعٰلَمِيۡنَ ۝٢٧

नहीं है। फिर तुम कहाँ जा रहे हो? ये कुरआन तो तमाम जहान वालों के लिए नसीहत है।

لِمَنۡ شَآءَ مِنۡكُمۡ اَنۡ يَّسۡتَقِيۡمَ ۝٢٨ وَمَا تَشَآءُوۡنَ

उस शख्स के लिए जो तुम में से चाहे के वो सीधे रास्ते पर रहे। और अल्लाह रब्बुल आलमीन

اِلَّآ اَنۡ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الۡعٰلَمِيۡنَ ۝٢٩

की मशीयत पर तुम्हारा इरादा मौकूफ़ है।

ع ٢٩

ایاتها ١٩ (٨٢) سُوۡرَةُ الۡاِنۡفِطَارِ مَكِّيَّةٌ (٨٢) رکوعها ١

उस में १९ आयतें हैं सूरह इन्फ़ितार मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا السَّمَآءُ انۡفَطَرَتۡ ۝١ وَاِذَا الۡكَوَاكِبُ انۡتَثَرَتۡ ۝٢ وَاِذَا الۡبِحَارُ

जब आसमान फट जाए। और जब तारे झड़ जाएं। और जब समन्दर बहा दिए

فُجِّرَتۡ ۝٣ وَاِذَا الۡقُبُوۡرُ بُعۡثِرَتۡ ۝٤ عَلِمَتۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ

जाएं। और जब क़ब्रें उखेड़ दी जाएं। तो हर शख्स जान लेगा जो उस ने आगे भेजा

وَاَخَّرَتۡ ۝٥ يٰۤاَيُّهَا الۡاِنۡسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الۡكَرِيۡمِ ۝٦

और पीछे छोड़ा। ऐ इन्सान! तुझे किस चीज़ ने धोके में डाल रखा है तेरे रब्बे करीम से?

الَّذِیۡ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۝٧ فِیۡۤ اَیِّ صُوۡرَةٍ مَّا شَآءَ

जिस ने तुझे पैदा किया, फिर तुझे दुरुस्त बनाया, फिर तुझे बराबर किया। जौनसी सूरत में उस ने चाहा

رَكَّبَكَ ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ﴿٩﴾ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ

तुझे जोड़ दिया। हरगिज़ नहीं! बल्के तुम हिसाब को झुठलाते हो। और यक़ीनन तुम पर निगराँ फ़रिश्ते

لَحٰفِظِيْنَ ﴿١٠﴾ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ﴿١١﴾ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾

मुतअय्यन हैं। किरामन कातिबीन। जानते हैं वो जो तुम करते हो।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿١٣﴾ وَّاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ﴿١٤﴾

बेशक नेक लोग नेअमतों में होंगे। और बदकार बेशक दोज़ख में होंगे।

يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿١٦﴾

वो उस में दाखिल होंगे हिसाब के दिन। और वो उस से ग़ाइब नहीं होंगे।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٨﴾

और तुम क्या समझे के हिसाब का दिन क्या चीज़ है? फिर तुम क्या समझे के हिसाब का दिन क्या चीज़ है?

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ؕ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾

जिस दिन कोई शख्स किसी शख्स की नफारसानी पर क़ादिर नहीं होगा। और तमाम उमूर उस दिन अल्लाह तआला के पास होंगे।

اٰيَاتُهَا ٣٦ (٨٣) سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ (٨٦) رُكُوْعُهَا ١

और १ रूकूअ है सूरह मुतफ्फिफीन मक्का में नाज़िल हुई उस में ३६ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿١﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ

हलाकत है कम देने वालों के लिए। जब वो लोगों से नाप कर लें

يَسْتَوْفُوْنَ ﴿٢﴾ وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿٣﴾

तो पूरा लेते हैं। और जब उन को नाप कर दें या उन को वज़न कर के दें तो कम कर के देते हैं।

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥﴾

क्या उन्हें ये गुमान नहीं के वो क़ब्रों से ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे? एक बड़े दिन में।

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ

जिस दिन तमाम इन्सान रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन बदकारों का

الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ﴿٧﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ﴿٨﴾ كِتٰبٌ

नामअे आमाल सिज्जीन में है। और तुम क्या समझे के सिज्जीन क्या है? एक लिखी

مَّرْقُوْمٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ

हुई किताब है। हलाकत है उस दिन उन झुठलाने वालों के लिए। जो हिसाब के दिन को झुठलाते

الدِّيْنِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ اِذَا تُتْلٰى

हैं। और उस को नहीं झुठलाता मगर हर हद से आगे बढ़ने वाला गुनहगार। जब उस पर हमारी आयतें

عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ سكتة رَانَ

तिलावत की जावें तो कहे के ये तो पेहले लोगों की घड़ी हुई कहानियाँ हैं। हरगिज़ नहीं! बल्के उन

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ

के दिलों पर उन के करतूत ने ज़ंग चढ़ा दिया है। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन ये लोग अपने रब से

يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾

उस दिन हिजाब में होंगे। फिर वो दोज़ख में ज़रूर दाखिल होंगे।

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ

फिर कहा जाएगा के यही वो अज़ाब है जिस को तुम झुठलाते थे। हरगिज़ नहीं! बेशक नेक लोगों का

الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾ كِتٰبٌ

नामअे आमाल इल्लीयीन में है। और तुम क्या समझे हो के इल्लीयीन क्या है? एक लिखी हुई

مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾

किताब है। जिस के पास मुक़र्रब फरिशते मौजूद रेहते हैं। यक़ीनन नेक लोग नेअमतों में होंगे।

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ

तख़्तों पर बैठ कर देख रहे होंगे। उन के चेहरों में आप नेअमत की ताज़गी मालूम कर

النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ

लोगे। उन्हें पिलाई जाएगी खालिस शराब, जिस पर मुहर लगी हुई होगी। जिस की मुहर मुश्क की होगी।

وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾

और उसी में तनाफुस करने वालों को तनाफुस करना चाहिए। और उस शराब की आमेज़िश तसनीम से होगी।

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا

एक चशमे से जिस चशमे से मुक़र्रबीन पिएंगे। बेशक मुजरिम लोग ईमान

مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾

वालों पर हंसा करते थे। और जब उन पर वो गुज़रते तो आपस में आँखें मारते थे।

وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ۝٣١ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا

और जब वो अपने घर वालों के पास पलटते थे, तो पलट कर भी मज़े ले कर उन की बातें करते थे। और जब वो उन को देखते

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ۝٣٢ وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ۝٣٣ فَالْيَوْمَ

थे तो केहते थे के ये लोग गुमराह लोग हैं। हालांके वो उन पर मुहाफ़िज़ बना कर नहीं भेजे गए। फिर आज

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ۝٣٤ عَلَى الْاَرَآئِكِ ۙ

ईमान वाले काफिरों से हंसते हैं। तख़्तों पर बैठे

يَنْظُرُوْنَ ۝٣٥ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝٣٦

देख रहे हैं। के क्या अब कुफ्फार को उन के किए का बदला मिल गया?

اٰيَاتُهَا ٢٥ (٨٤) سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ (٨٣) رُكُوْعُهَا ١

उस में २५ आयतें हैं सूरह इन्शिक़ाक़ मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۝١ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٢

जब आसमान फट जाए। और आसमान कान लगाए हुए है अपने रब के हुक्म के लिए और वो उसी के लाइक़ है।

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۝٣ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۝٤ وَاَذِنَتْ

और जब ज़मीन फैला दी जाए। और वो डाल दे उन चीज़ों को जो उस में हैं और खाली हो जाए। और ज़मीन भी कान लगाए

لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٥ يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ

हुए है अपने रब के हुक्म के लिए और वो उसी के लाइक़ है। ऐ इन्सान! यक़ीनन तेरे रब की तरफ़ पहोंचने के लिए

كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۝٦ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۝٧

तुझे खूब मेहनत करनी है, फिर तू उस से मिलने वाला है। तो जिस को उस का नामअे आमाल दाहने हाथ में दिया जाएगा,

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۝٨ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰٓى اَهْلِهٖ

तो आगे उस से आसान हिसाब लिया जाएगा। और वो अपने घरवालों की तरफ खुश खुश

مَسْرُوْرًا ۝٩ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۝١٠ فَسَوْفَ

वापस आएगा। और जिस का नामअे आमाल उस की पीठ पीछे से दिया जाएगा, तो वो

يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۝١١ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ۝١٢ اِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ اَهْلِهٖ

मौत को पुकारेगा। और आग में दाखिल होगा। इस लिए के वो अपने घर वालों में

مَسۡرُوۡرًا ؕ﴿۱۳﴾ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنۡ لَّنۡ يَّحُوۡرَ ۛ﴿ۚ۱۴﴾ بَلٰۤى ۛۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ

खुश रेहता था। उस का गुमान था के वो हरगिज़ लौट कर आएगा नहीं। क्यूं नहीं! यक़ीनन उस का रब उस

بِهٖ بَصِيۡرًا ؕ﴿۱۵﴾ فَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالشَّفَقِ ۙ﴿۱۶﴾ وَالَّيۡلِ

को देख रहा था। फिर मैं शफ़क़ की क़सम खाता हूँ। और रात की क़सम खाता हूँ और उन चीज़ों की जिस को रात

وَمَا وَسَقَ ۙ﴿۱۷﴾ وَالۡقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۙ﴿۱۸﴾ لَتَرۡكَبُنَّ طَبَقًا عَنۡ طَبَقٍ ؕ﴿۱۹﴾

ने जमा कर लिया है। चाँद की क़सम जब वो पूरा रोशन हो जाए। तुम ज़रूर एक हाल से दूसरे हाल पर चढ़ोगे।

فَمَا لَهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۲۰﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيۡهِمُ الۡقُرۡاٰنُ

फिर उन्हें क्या हुवा के वो ईमान नहीं लाते? और जब उन पर क़ुरआन पढ़ा जाता है

لَا يَسۡجُدُوۡنَ ؕ﴿۲۱﴾ ۩ بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُكَذِّبُوۡنَ ۖ﴿۲۲﴾ وَاللّٰهُ

तो सज्दा नहीं करते। बल्के काफिर लोग झुठलाते हैं। और अल्लाह

اَعۡلَمُ بِمَا يُوۡعُوۡنَ ۖ﴿۲۳﴾ فَبَشِّرۡهُمۡ بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ۙ﴿۲۴﴾

खूब जानता है उस को जो वो दिल में भरे रखते हैं। तो आप उन को दर्दनाक अज़ाब की बशारत सुना दीजिए।

اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ اَجۡرٌ غَيۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ﴿۲۵﴾ ع

मगर वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए ऐसा अज्र होगा जो खत्म नहीं होगा।

اٰيَاتُهَا ٢٢ (٨٥) سُوۡرَةُ الۡبُرُوۡجِ مَكِّيَّةٌ (٢٧) رُكُوۡعُهَا ١

उस में २२ आयतें हैं सूरह बुरूज मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ﴿﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الۡبُرُوۡجِ ۙ﴿۱﴾ وَالۡيَوۡمِ الۡمَوۡعُوۡدِ ۙ﴿۲﴾ وَشَاهِدٍ

बुरजों वाले आसमान की क़सम! वादे वाले दिन की क़सम! हाज़िर होने वाले

وَّمَشۡهُوۡدٍ ؕ﴿۳﴾ قُتِلَ اَصۡحٰبُ الۡاُخۡدُوۡدِ ۙ﴿۴﴾ النَّارِ ذَاتِ

की क़सम और हाज़िरी के दिन की क़सम! खन्दक़ों वाले मारे जाएं। ईंधन वाली

الۡوَقُوۡدِ ۙ﴿۵﴾ اِذۡ هُمۡ عَلَيۡهَا قُعُوۡدٌ ۙ﴿۶﴾ وَّهُمۡ عَلٰى مَا يَفۡعَلُوۡنَ

आग वाले। जब वो उस के ऊपर बैठे हुए थे। और वो देख रहे थे जो कुछ वो ईमान वालों

بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ شُهُوۡدٌ ؕ﴿۷﴾ وَمَا نَقَمُوۡا مِنۡهُمۡ اِلَّاۤ اَنۡ يُّؤۡمِنُوۡا

के साथ कर रहे थे। और वो ईमान वालों से सिर्फ इसी बात का इन्तिक़ाम ले रहे थे के वो ईमान

بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۟ۙ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

लाए हैं क़ाबिले तारीफ ज़बर्दस्त अल्लाह पर। उस अल्लाह पर जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۟ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ

और अल्लाह हर चीज़ पर निगराँ है। बेशक जिन लोगों ने ईमान वाले मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ

और औरतों को ईज़ा दी, फिर उन्हों ने तौबा नहीं की तो उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है और उन के लिए जलने का

الْحَرِيْقِ ۟ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ

अज़ाब है। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए जन्नतें हैं

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ۬ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۟ؕ

जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी। ये बड़ी कामयाबी है।

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۟ؕ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَ يُعِيْدُ ۟ۚ وَهُوَ

यक़ीनन तेरे रब की पकड़ बड़ी सख्त है। वही पेहली मरतबा पैदा करता है और वही दोबारा पैदा करेगा। और वो

الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۟ۙ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۟ۙ فَعَّالٌ

बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, बहोत ज़्यादा महब्बत वाला, अर्श का मालिक बुज़ुर्ग है। करता है वही

لِّمَا يُرِيْدُ ۟ؕ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ۟ۙ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ۟ؕ

जिस का वो इरादा करता है। क्या आप के पास लशकरों का क़िस्सा पहोंचा? फिरऔन और समूद का।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۟ۙ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآىِٕهِمْ

बल्के काफिर लोग झुठलाने में लगे हैं। और अल्लाह उन को हर तरफ से घेरे

مُّحِيْطٌ ۟ۚ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۟ۙ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۟۠

हुए है। बल्के ये बुज़ुर्गी वाला कुरआन, लौहे महफूज़ में है।

ايَاتُهَا ١٧ (٨٦) سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ (٣٦) رُكُوْعُهَا ١

उस में १७ आयतें हैं सूरह तारिक़ मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۟ۙ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۟ۙ النَّجْمُ

आसमान की क़सम और रात में आने वाले की क़सम! और तुम क्या समझे रात में आने वाला क्या है? चमकता हुवा

الثَّاقِبُ ۟ۙ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۟ؕ فَلْيَنْظُرِ

तारा है। कोई शख़्स भी नहीं है जिस पर निगरान (फ़रिशता) मुक़र्रर न हो। तो इन्सान को चाहिए के देखे

الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۟ؕ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۟ۙ يَّخْرُجُ

के किस चीज़ से वो पैदा किया गया है। वो पैदा किया गया उछलने वाले पानी से। जो निकलता है

مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۟ؕ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ۟ؕ

रीढ़ की और सीने की हड्डियों के दरमियान से। यक़ीनन वो उस के दोबारा लाने पर ज़रूर क़ादिर है।

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۟ۙ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۟ؕ وَالسَّمَآءِ

जिस दिन भेदों का इम्तिहान लिया जाएगा। फिर न इन्सान में खुद कोई कूव्वत होगी और न (उस का) कोई मददगार। बारिश

ذَاتِ الرَّجْعِ ۟ۙ وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۟ۙ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ

वाले आसमान की क़सम! और फटने वाली ज़मीन की क़सम! बेशक ये कुरआन क़ौले

فَصْلٌ ۟ۙ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۟ؕ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۟ۙ

फ़ेसल है। और ये कोई मज़ाक़ नहीं है। काफ़िर भी मक्र कर रहे हैं।

وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۟ۚۖ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۟۠

और मैं भी तदबीर कर रहा हूँ। फिर काफ़िरों को मुहलत दे दीजिए, उन को थोड़ी सी मुहलत दे दीजिए।

ع ١٧

اٰيَاتُهَا ١٩ (٨٧) سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ (٨) رُكُوْعُهَا ١

उस में १९ आयतें हैं सूरह आला मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۟

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۟ۙ الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۟ۙ وَالَّذِيْ

अपने बुलन्दतरीन रब के नाम की तस्बीह कीजिए। जिस ने मखलूक़ पैदा की, फिर उस ने दुरुस्त बनाया। और जिस ने

قَدَّرَ فَهَدٰى ۟ۙ وَالَّذِيْۤ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۟ۙ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً

मिक़दार से बनाया, फिर रास्ता दिखाया। और जिस ने चारा उगाया। फिर उस को काला कूड़ा करकट

اَحْوٰى ۟ؕ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰۤى ۟ۙ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ

बना दिया। अनक़रीब हम आप को पढ़ाएंगे, फिर आप भूलेंगे नहीं, मगर जो अल्लाह चाहे। यक़ीनन वो

يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ۟ؕ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ۟ۚۖ فَذَكِّرْ

जानता है ज़ोर से कही हुई और आहिस्ता कही हुई बात को। और हम आप के लिए आसानी वाली (मिल्लत) को आसान कर के देंगे।

اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾

इस लिए आप नसीहत कीजिए अगर नसीहत फाइदा दे। अनक़रीब नसीहत हासिल करेगा वो शख़्स जो डरेगा।

وَ يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾

और उस से दूर रहेगा वो बदबख़्त, जो बड़ी आग में दाखिल होगा।

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿١٣﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾

फिर वो उस में न मरेगा, न जिएगा। यक़ीनन कामयाब है वो शख़्स जिस ने तज़किया किया।

وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾

और अपने रब का नाम लिया, फिर नमाज़ पढ़ी। बल्के तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो।

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ

हालांके आखिरत बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाली है। यही बात पेहले सहीफों

الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾ ع

में है। इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और मूसा (अलैहिस्सलाम) के सहीफों में है।

اٰيَاتُهَا ٢٦ (٨٨) سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ (٦٨) رُكُوْعُهَا ١

उस में २६ आयतें हैं सूरह ग़ाशिया मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾

क्या आप के पास ढांपने वाली (क़यामत) का क़िस्सा पहोंचा? उस दिन कुछ चेहरे ज़लील होंगे।

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾ تُسْقٰى

काम करने वाले, (बुरे काम की वजह से) थके हुए होंगे। वो गर्म आग में दाखिल होंगे। खौलते हुए चशमे से

مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٥﴾ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿٦﴾ لَّا يُسْمِنُ

(पानी) उन्हें पीने को दिया जाएगा। उन के लिए कोई खाना नहीं होगा मगर झाड़ काँटों वाला। जो न मोटा करे

وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ ﴿٧﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾

और न भूक के कुछ काम आए। कुछ चेहरे उस दिन तर व ताज़ा होंगे।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا

अपने अमल से खुश होंगे। ऊँची जन्नत में होंगे। जिस में वो लग़्व बात

وقف لازم

لَاغِيَةً ۝١١ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢ فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝١٣

न सुनेंगे। जिस में बेहते हुए चशमे होंगे। उस में ऊँचे ऊँचे तख्त होंगे।

وَّأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝١٤ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝١٥ وَّزَرَابِيُّ

और तरतीब से रखे हुए प्याले होंगे। और सफ ब सफ रखे हुए तकिए होंगे। और फैलाए हुए

مَبْثُوثَةٌ ۝١٦ أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝١٧

फर्श होंगे। क्या फिर वो देखते नहीं हैं ऊँटों की तरफ के कैसे वो पैदा किए गए?

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝١٨ وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ

और आसमान की तरफ के कैसे उसे ऊँचा किया गया? और पहाड़ों की तरफ के कैसे

نُصِبَتْ ۝١٩ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝٢٠ فَذَكِّرْ إِنَّمَا

उन्हें गाड़ा गया? और ज़मीन की तरफ के कैसे उसे बिछाया गया? फिर आप नसीहत कीजिए। आप तो सिर्फ

أَنتَ مُذَكِّرٌ ۝٢١ لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ۝٢٢ إِلَّا مَن

नसीहत करने वाले हैं। आप उन पर मुसल्लत नहीं किए गए हैं। मगर वो जिस ने

تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ۝٢٣ فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝٢٤

मुंह फेरा और कुफ्र किया। तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा।

النصف ع ١٧

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝٢٥ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ۝٢٦

यक़ीनन हमारी तरफ उन्हें लौटना है। फिर हमारे ज़िम्मे उन का हिसाब लेना है।

آيَاتُهَا ٣٠ (٨٩) سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ (١٠) رُكُوعُهَا ١

उस में ३० आयतें हैं सूरह फ़ज्र मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْفَجْرِ ۝١ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝٢ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝٣ وَاللَّيْلِ

फजर की क़सम! दस रातों की क़सम! जुफ्त और ताक़ की क़सम! रात की

إِذَا يَسْرِ ۝٤ هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ۝٥ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ

क़सम जब वो चल रही हो! क्या उस में अक़लमन्द के लिए क़सम है? क्या आप ने नहीं देखा के

فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝٦ إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝٧ الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ

आप के रब ने क़ौमे आद के साथ क्या किया? सुतूनों वाले इरम के साथ क्या किया? के उस जैसी क़ौम

مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

नहीं पैदा की गई शेहरों में। और समूद के साथ क्या किया, जिस ने वादिए (क़ुरा) में चटानों को तराशा।

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾

और मेखों वाले फिरऔन के साथ क्या किया? जिन्हों ने शेहरों में सर उठाया था।

فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ

फिर वहाँ बकस्रत फसाद फैलाया। तो उन पर तेरे रब ने अज़ाब का कोड़ा

عَذَابٍ ﴿١٣﴾ إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ

फिटकारा। यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता ताक में है। फिर इन्सान के जब उस का

إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

रब उस का इम्तिहान लेता है, फिर उसे इज़्ज़त देता है और नेअमतें देता है, तो वो केहता है के मुझे मेरे रब ने इज़्ज़त दी।

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي

और जब उसे आज़माता है, फिर उस पर उस की रोज़ी तंग करता है, तो वो केहता है के मेरे रब ने मेरी

أَهَانَنِ ﴿١٦﴾ كَلَّا بَلْ لَا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحَاضُّونَ

इहानत की। हरगिज़ नहीं! बल्के तुम ही यतीम की इज़्ज़त नहीं करते। और मिस्कीन को

عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿١٨﴾ وَتَأْكُلُونَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَمًّا ﴿١٩﴾

खाना देने की तरग़ीब नहीं देते। और तुम मीरास सारा समेट कर हड़प कर जाते हो।

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا

और तुम माल से महब्बत करते हो बहोत ही ज़्यादा महब्बत। हरगिज़ नहीं! जब ज़मीन कूट कूट कर

دَكًّا ﴿٢١﴾ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِيءَ يَوْمَئِذٍ

नेस्त कर दी जाएगी। और तेरा रब और फरिशते सफ ब सफ आएंगे। और उस दिन

بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى ﴿٢٣﴾

जहन्नम लाई जाएगी। उस दिन इन्सान नसीहत लेगा, लेकिन अब नसीहत लेने का वक्त कहाँ?

يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ

वो कहेगा के ऐ काश के मैं ने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए (नेक अमल) आगे भेजे होते। उस दिन उस के

عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يَا أَيَّتُهَا

अज़ाब जैसा कोई अज़ाब न देगा। और न उस की जकड़ की तरह किसी की जकड़ होगी। ऐ

النَّفْسُ الْمُطْمَىِٕنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

इत्मिनान वाली रूह! तू अपने रब की तरफ वापस चल, तू उस से राज़ी और वो तुझ से राज़ी।

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾

तू मेरे बन्दों में शामिल हो जा। और मेरी जन्नत में दाखिल हो जा।

اٰيَاتُهَا ٢٠ (٩٠) سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ (٣٥) رُكُوْعُهَا ١

उस में २० आयतें हैं सूरह बलद मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾

मैं इस शेहर (मक्का) की क़सम खाता हूँ! और आप इस शेहर में हलाल (न के मुहरिम) उतरने वाले हो।

وَ وَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿٤﴾

बाप की क़सम और औलाद की क़सम! यक़ीनन हम ने इन्सान को मश्क़्क़त में पैदा किया है।

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿٥﴾ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا

क्या वो ये समझता है के उस पर किसी को कुदरत नहीं है? वो केहता है के मैं ने ढ़ेरों माल

لُّبَدًا ﴿٦﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ

लुटाया। क्या वो समझता है के उस को किसी ने देखा नहीं। क्या हम ने उस की दो आँखें

عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾

नहीं बनाईं? और ज़बान और दो होंट नहीं बनाए? और हम ने उसे दोनों रास्ते दिखा दिए।

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾

फिर वो घाटी पर से नहीं गुज़रा? और तुम क्या समझे के घाटी क्या है?

فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَّتِيْمًا

गरदन को आज़ाद करना है। या भूक वाले दिन में यतीम

ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ

रिश्तेदार को खिलाना। या ख़ाकनशीन मोहताज को खाना खिलाना। फिर जो ईमान वालों

مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾

में से हैं और जिन्हों ने सब्र की एक दूसरे को फेहमाइश की और रहम करने की एक दूसरे को तलक़ीन की,

أُولَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلۡمَيۡمَنَةِ ۝١٨ وَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ بِـَٔايَٰتِنَا

ये दाईं जानिब वाले हैं। और जिन्हों ने हमारी आयात के साथ कुफ़्र किया

هُمۡ أَصۡحَٰبُ ٱلۡمَشۡـَٔمَةِ ۝١٩ عَلَيۡهِمۡ نَارٞ مُّؤۡصَدَةُۢ ۝٢٠

ये बाईं जानिब वाले हैं। उन के ऊपर से आग बन्द कर दी गई है।

آيَاتُهَا ١٥ (٩١) سُوۡرَةُ الشَّمۡسِ مَكِّيَّةٌ (٢٦) رُكُوۡعُهَا ١

उस में १५ आयतें हैं सूरह शम्स मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَٱلشَّمۡسِ وَضُحَىٰهَا ۝١ وَٱلۡقَمَرِ إِذَا تَلَىٰهَا ۝٢ وَٱلنَّهَارِ

सूरज और उस के चढ़ने की क़सम। चाँद की क़सम जब वो उस के पीछे आए। दिन की क़सम

إِذَا جَلَّىٰهَا ۝٣ وَٱلَّيۡلِ إِذَا يَغۡشَىٰهَا ۝٤ وَٱلسَّمَآءِ

जब वो सूरज को रोशन करे। रात की क़सम जब वो उस को छुपा ले। आसमान की क़सम और उस के बनाने

وَمَا بَنَىٰهَا ۝٥ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا طَحَىٰهَا ۝٦ وَنَفۡسٖ وَمَا سَوَّىٰهَا ۝٧

वाले की क़सम! ज़मीन की क़सम और उस के बिछाने वाले की क़सम! नफ्स की क़सम और उस को दुरुस्त बनाने वाले की क़सम।

فَأَلۡهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقۡوَىٰهَا ۝٨ قَدۡ أَفۡلَحَ مَن زَكَّىٰهَا ۝٩

फिर उसी ने उस को उस की ढ़टाई और उस के तक़्वे का इल्हाम किया। यक़ीनन वो शख्स कामयाब है जिस ने इस (नफ्स) का तज़्किया

وَقَدۡ خَابَ مَن دَسَّىٰهَا ۝١٠ كَذَّبَتۡ ثَمُودُ بِطَغۡوَىٰهَآ ۝١١

किया। और नाकाम है वो जिस ने उस को खराब किया। क़ौमे समूद ने अपनी सरकशी की वजह से झुठलाया।

إِذِ ٱنۢبَعَثَ أَشۡقَىٰهَا ۝١٢ فَقَالَ لَهُمۡ رَسُولُ ٱللَّهِ نَاقَةَ

जब उन में से बड़ा बदबख्त इन्सान उठा। उन से अल्लाह के पैग़म्बर (सालेह अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम अल्लाह की ऊँटनी से और उस

ٱللَّهِ وَسُقۡيَٰهَا ۝١٣ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمۡدَمَ

के पीने की बारी से डरो। लेकिन उन्हों ने (सालेह अलैहिस्सलाम) को झुठलाया, फिर उन्हों ने ऊँटनी के पैर काट दिए। तो उन पर

عَلَيۡهِمۡ رَبُّهُم بِذَنۢبِهِمۡ فَسَوَّىٰهَا ۝١٤ وَلَا يَخَافُ

उन के रब ने उन के गुनाह की वजह से अज़ाब भेज दिया, फिर उन को बराबर कर दिया, अल्लाह को उन के अन्जाम का

عُقۡبَٰهَا ۝١٥

डर नहीं था।

ركوعها ١ (٩٢) سُورَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةٌ (٩) اٰياتها ٢١

और १ रूकूअ है सूरह लैल मक्का में नाज़िल हुई उस में २१ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝١ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝٢ وَمَا خَلَقَ

रात की क़सम जब वो छा जाए! दिन की क़सम जब के वो रोशन हो जाए! नर और मादा को पैदा करने

الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝٣ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝٤ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى

वाले की क़सम! बेशक तुम्हारी कोशिश अलबत्ता अलग अलग है। फिर जिस ने दिया

وَاتَّقٰى ۝٥ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝٧

और तक़्वा इखतियार किया, और अच्छी बात की तस्दीक़ की, तो हम उस के लिए आसानी वाला घर आसान कर देंगे।

وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝٨ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهٗ

और जिस ने न दिया और जो बेपरवाह रहा, और अच्छी बात को झुठलाया, तो हम आसानी से सख्ती के

لِلْعُسْرٰى ۝١٠ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ۝١١

घर में उस को पहोंचा देंगे। और उस के कुछ काम नहीं आएगा उस का माल जब वो (गढ़े में) गिरेगा।

اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۝١٢ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝١٣

हमारे ज़िम्मे अलबत्ता रास्ता दिखा देना है। और हमारे ही हाथ आखिरत और दुन्या है।

فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۝١٤ لَا يَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ۝١٥

फिर मैं ने तुम्हें भड़कती हुई आग से डराया है। उस में वही बड़ा बदबख्त दाखिल होगा,

الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٦ وَ سَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝١٧ الَّذِيْ

जिस ने झुठलाया और ऐराज़ किया। और उस से दूर रखा जाएगा वो बड़ा मुत्तक़ी, जो

يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٨ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ

तज़्किए के लिए अपना माल देता है। और किसी का उस पर एहसान नहीं जिस का

مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۝١٩ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۝٢٠

बदला उतारा जाए। मगर उस के बुलन्दतरीन रब की रज़ा तलब करने के लिए।

وَ لَسَوْفَ يَرْضٰى ۝٢١

और बहोत जल्द वो राज़ी होगा।

اٰیَاتُھَا ۱۱ (۹۳) سُوْرَۃُ الضُّحٰی مَکِّیَّۃٌ (۱۱) رُکُوْعُھَا ۱

उस में ११ आयतें हैं सूरह दुहा मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالضُّحٰى ۝۱ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۝۲ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝۳

चाश्त के वक़्त की क़सम! रात की क़सम जब वो तारीक हो जाए! के आप के रब ने आप को न छोड़ा है और न आप से दुशमनी की है।

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ۝۴ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ

और अलबत्ता आखिरत पेहली वाली (दुन्या) से आप के लिए बेहतर है। और ज़रूर आप का रब आगे आप को देगा,

فَتَرْضٰى ۝۵ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۝۶ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا

के आप राज़ी हो जाओगे। क्या आप को उस ने यतीम नहीं पाया के फिर ठिकाना दिया? और आप को बेखबर पाया,

فَهَدٰى ۝۷ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۝۸ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ

फिर उस ने राह दिखाई। और आप को मुफलिस पाया, फिर आप को ग़नी कर दिया। इस लिए आप किसी यतीम पर

فَلَا تَقْهَرْ ۝۹ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝۱۰ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝۱۱ ع ۱۸

सख्ती न कीजिए। और किसी सवाल करने वाले को न झिड़किए। और अलबत्ता आप अपने रब की नेअमत को बयान कीजिए।

اٰیَاتُھَا ۸ (۹۴) سُوْرَۃُ الْاِنْشِرَاحِ مَکِّیَّۃٌ (۱۲) رُکُوْعُھَا ۱

उस में ८ आयतें हैं सूरह इन्शिराह मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝۱ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝۲

क्या हम ने आप के सीने को खोल नहीं दिया? और हम ने आप के ऊपर से आप का बोझ उतार दिया।

الَّذِيْۤ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝۳ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝۴

जिस ने आप की कमर तोड़ रखी थी। और हम ने आप के खातिर आप का ज़िक्र बुलन्द किया।

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝۵ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝۶

फिर बेशक सख्ती के साथ आसानी है। बेशक सख्ती के साथ आसानी है।

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝۷ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝۸ ع ۱۹

फिर जब आप फारिग़ हों, तो ज़्यादा मेहनत कीजिए। और अपने रब की तरफ रग़बत कीजिए।

اٰيَاتُهَا ٨ (٩٥) سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ (٢٨) رُكُوْعُهَا ١

उस में 8 आयतें हैं सूरह तीन मक्का में नाज़िल हुई और 1 रूकू है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝١ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝٢ وَهٰذَا الْبَلَدِ

अन्जीर की क़सम! ज़ैतून की क़सम! तूरे सीना की क़सम! इस अमन वाले शेहर (मक्का)

الْاَمِيْنِ ۝٣ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝٤

की क़सम! यक़ीनन हम ने इन्सान को बेहतरीन सूरत में पैदा किया है।

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝٥ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

फिर हम ने उस को फैंक दिया नीचों के नीचे में। मगर वो जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٦ فَمَا يُكَذِّبُكَ

और नेक अमल करते रहे उन के लिए ऐसा अज्र होगा जो खत्म नहीं होगा। फिर कौन सी चीज़ उस के बाद तुझे

بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٧ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨

हिसाब के झुठलाने पर आमादा करती है? क्या अल्लाह अहकमुल हाकिमीन नहीं है?

اٰيَاتُهَا ١٩ (٩٦) سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ (١) رُكُوْعُهَا ١

उस में १९ आयतें हैं सूरह अलक़ मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝١ خَلَقَ الْاِنْسَانَ

आप अपने रब का नाम ले कर पढ़िए जिस ने (मखलूक़) बनाई। इन्सान को बनाया जमे हुए

مِنْ عَلَقٍ ۝٢ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝٣ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝٤

खून से। आप पढ़िए और आप का रब सब से करीम है। जिस ने क़लम के ज़रीए इल्म दिया।

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝٥ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰىٓ ۝٦

इन्सान को वो इल्म दिया जो वो जानता नहीं था। हरगिज़ नहीं! यक़ीनन इन्सान अलबत्ता सरकशी करता है।

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝٧ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝٨ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ

इस वजह से के वो देखता है के वो मुस्तग़नी है। यक़ीनन तेरे रब की तरफ लौटना है। क्या आप ने देखा

يَنْهٰى ۙ﴿٩﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ؕ﴿١٠﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ

उस शख्स को जो रोकता है। बन्दे को जब वो नमाज़ पढ़ता है? क्या आप ने देखा के अगर वो

عَلَى الْهُدٰٓى ۙ﴿١١﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ؕ﴿١٢﴾ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ﴿١٣﴾

हिदायत पर है, या तक़्वे का हुक्म देता है? क्या आप ने देखा अगर वो झुठलाता है और ऐराज़ करता है?

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ؕ﴿١٤﴾ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ۬ لَنَسْفَعًا ۢ

क्या वो नहीं जानता के यक़ीनन अल्लाह देख रहा है? कोई बात नहीं! अगर वो बाज़ नहीं आएगा, तो हम उसे पेशानी के

بِالنَّاصِيَةِ ۙ﴿١٥﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ﴿١٦﴾ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۙ﴿١٧﴾

बाल पकड़ कर घसीटेंगे। खताकार झूठी पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे। फिर उसे चाहिए के अपनी मजलिस वालों को पुकारे।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۙ﴿١٨﴾ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩ ﴿١٩﴾

हम भी ज़बानिया फरिश्तों को बुला लेते हैं। हरगिज़ नहीं! आप उस का केहना न मानिए और सज्दा कीजिए और अल्लाह से क़रीब हो जाइए।

اٰيَاتُهَا ٥ (٩٧) سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ (٢٥) رُكُوْعُهَا ١

उस में ५ आयतें हैं — सूरह क़दर मक्का में नाज़िल हुई — और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ؕ﴿٢﴾

यक़ीनन हम ने इसे लैलतुल क़द्र में नाज़िल किया। और आप को मालूम भी है के लैलतुल क़द्र क्या है?

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ۬ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ؕ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ

लैलतुल क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फरिश्ते और रूह उस में अपने रब की इजाज़त से हर चीज़

فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ۙ﴿٤﴾ سَلٰمٌ ۛ۫ هِىَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

के मुतअल्लिक़ हुक्म ले कर उतरते हैं। फज्र के तुलूअ होने तक सलामती रेहती है।

اٰيَاتُهَا ٨ (٩٨) سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ (١٠٠) رُكُوْعُهَا ١

उस में ८ आयतें हैं — सूरह बय्यिना मदीना में नाज़िल हुई — और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿﴾

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ

जो लोग एहले किताब में से काफिर हैं और मुशरिकीन वो बाज़ आने वाले नहीं थे यहाँ तक के

حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝١ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٢

उन के पास रोशन दलील आ जाए। (यानी) अल्लाह के पैग़म्बर जो पाक सहीफों की तिलावत करते हैं।

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

जिन में मज़बूत किताबें हैं। और जिन को किताब दी गई वो अलग अलग फिरक़े नहीं हुए

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝٤ وَمَآ اُمِرُوْٓا

मगर इस के बाद के उन के पास रोशन दलील आई। हालांके उन को हुक्म नहीं था

اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا

मगर यही के वो इबादत करें अल्लाह की, उसी के लिए इबादत को खालिस रखते हुए, सब तरफ से एक ही के हो कर

الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥ اِنَّ الَّذِيْنَ

और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और यही सीधा दीन है। बेशक जो लोग

كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ

काफिर हुए एहले किताब में से और मुशरिकीन वो जहन्नम की आग में हमेशा

فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

रहेंगे। यही लोग तमाम मखलूक़ में सब से बदतर हैं। यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और नेक अमल

الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

करते रहे, यही तमाम मखलूक़ में सब से बेहतर हैं। उन का बदला उन के रब के पास

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ

जन्नाते अद्न हैं, जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी जिन में वो हमेशा रहेंगे।

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝٨

अल्लाह उन से राज़ी हुवा और वो अल्लाह से राज़ी हुए। ये उस शख्स के लिए है जो अपने रब से डरे।

ع ٢٢

اٰيَاتُهَا ٨ (٩٩) سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ (٩٣) رُكُوْعُهَا ١

उस में ८ आयतें हैं सूरह ज़िलज़ाल मदीना में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ

जब ज़मीन सख्त ज़लज़ले से हिला दी जाएगी। और ज़मीन अपने बोझ

اَثْقَالَهَا ﴿٢﴾ وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ

निकाल देगी। और इन्सान कहेगा के ज़मीन को क्या हुवा? उस दिन ज़मीन अपनी खबरें बयान

اَخْبَارَهَا ﴿٤﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ

कर देगी। इस वजह से के तेरे रब ने उस को हुक्म दिया है। उस दिन इन्सान वापस लौटेंगे

اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ

मुख्तलिफ़ जमाअतें बन कर ताके वो अपने अमल (के नताइज) देखें। फिर जो ज़र्रा भर भलाई करेगा

خَيْرًا يَّرَهٗ ﴿٧﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿٨﴾

तो उसे देखेगा। और जो ज़र्रा भर बुराई करेगा तो उसे देखेगा।

اٰيَاتُهَا ١١ (١٠٠) سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ (١٤) رُكُوْعُهَا ١

उस में ११ आयतें हैं — सूरह आदियात मक्का में नाज़िल हुई — और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ﴿١﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ﴿٢﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ

हांपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम! फिर उन घोड़ों की क़सम जो टाप मार कर आग निकालने वाले हैं! फिर उन घोड़ों की

صُبْحًا ﴿٣﴾ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ﴿٤﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ﴿٥﴾

क़सम जो सुबह के वक्त (दुशमन पर) हमला करने वाले हैं! फिर उस वक़्त गुबार उड़ाने वाले हैं। फिर वो फौज में घुस जाते

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ﴿٦﴾ وَاِنَّهٗ

हैं। बेशक इन्सान अपने रब का नाशुकरा है। और वो खुद

عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ﴿٧﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ﴿٨﴾

उस पर मुत्तलेअ है। और वो माल की महब्बत में अलबत्ता बड़ा सख्त है।

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ﴿٩﴾ وَحُصِّلَ

क्या वो नहीं जानता के जब उठाया जाएगा जो क़ब्रों में है। और ज़ाहिर कर दिया

مَا فِي الصُّدُوْرِ ﴿١٠﴾ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ

जाएगा जो कुछ सीनों में है। बेशक उन का रब उस दिन उन से

لَّخَبِيْرٌ ﴿١١﴾

बाखबर है।

رُكُوْعُهَا ١ (١٠١) سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ (٣٠) اٰيَاتُهَا ١١

और १ रूकूअ है सूरह क़ारिआ मक्का में नाज़िल हुई उस में ११ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ﴿٣﴾

खड़खड़ाने वाली। क्या है खड़खड़ाने वाली? और आप को मालूम भी है के खड़खड़ाने वाली क्या है?

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ﴿٤﴾ وَتَكُوْنُ

जिस दिन इन्सान बिखरे हुए परवानों की तरह हो जाएंगे। और पहाड़

الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ﴿٥﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ﴿٦﴾

धुने हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे। फिर जिस के पलड़े भारी होंगे,

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ﴿٨﴾

तो वो खुशगवार ज़िन्दगी में होगा। और जिस के पलड़े हलके होंगे,

فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

तो उस का ठिकाना हाविया है। और आप को मालूम है के वो क्या है? देहेकती आग है।

رُكُوْعُهَا ١ (١٠٢) سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ (١٦) اٰيَاتُهَا ٨

और १ रूकूअ है सूरह तकासुर मक्का में नाज़िल हुई उस में ११ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿١﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿٢﴾ كَلَّا سَوْفَ

एक दूसरे पर(दुन्या के ज़रिए) बाज़ी ले जाने की हिर्स ने तुम्हें ग़ाफिल रखा। यहाँ तक के तुम क़ब्रस्तान पहोंच जाते हो।कोई बात नहीं!

تَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ

आगे तुम्हें मालूम होगा। फिर कोई बात नहीं! आगे तुम्हें मालूम होगा। कोई बात नहीं! अगर तुम जानते इल्मुल यक़ीन

عِلْمَ الْيَقِيْنِ ﴿٥﴾ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ﴿٦﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا

के तौर पर (तो ऐसा न करते), तुम ज़रूर दोज़ख को देखोगे। फिर तुम ज़रूर उस को

عَيْنَ الْيَقِيْنِ ﴿٧﴾ ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾

यक़ीन की आँख के साथ देखोगे। फिर तुम से उस दिन नेअमतों के मुतअल्लिक़ ज़रूर सवाल होगा।

اٰيَاتُهَا ٣ — (١٠٣) سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ (١٣) — رُكُوْعُهَا ١

उस में ३ आयतें हैं — सूरह अस्र मक्का में नाज़िल हुई — और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَالْعَصْرِ ﴿١﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ﴿٢﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ज़माने की क़सम! बेशक इन्सान खसारे में है। मगर वो लोग जो ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾

और नेक अमल करते रहे और हक़ की एक दूसरे को तलक़ीन की और एक दूसरे को सब्र की तलक़ीन की।

اٰيَاتُهَا ٩ — (١٠٤) سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ (٣٢) — رُكُوْعُهَا ١

उस में ९ आयतें हैं — सूरह हुमज़ह मक्का में नाज़िल हुई — और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ﴿١﴾ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ﴿٢﴾ يَحْسَبُ

हलाकत है हर पीठ पीछे ऐब निकालने वाले के लिए, ताना देने वाले के लिए। जिस ने माल जमा किया और उस को गिन गिन कर

اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ﴿٣﴾ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ﴿٤﴾

रखा। वो समझता है के उस का माल उसे हमेशा ज़िन्दा रखेगा। हरगिज़ नहीं! ज़रूर उसे हुतमह में फैंक दिया जाएगा।

وَمَآ اَدْرٰكَ مَا الْحُطَمَةُ ﴿٥﴾ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ﴿٦﴾ الَّتِيْ تَطَّلِعُ

और आप को मालूम भी है के हुतमह क्या है? अल्लाह की भड़काई हुई आग है। जो दिलों को

عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ﴿٧﴾ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٨﴾ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿٩﴾

झांक लेती है। बेशक वो दोज़ख (हुतमह) उन को लम्बे सुतूनों में बांध कर ऊपर से बन्द कर दी जाएगी।

اٰيَاتُهَا ٥ — (١٠٥) سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ (١٩) — رُكُوْعُهَا ١

उस में ५ आयतें हैं — सूरह फील मक्का में नाज़िल हुई — और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ﴿١﴾ اَلَمْ يَجْعَلْ

क्या आप ने नहीं देखा के आप के रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया? क्या उन का

كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣

मक्र नाकाम नहीं कर दिया? और उन पर झुन्ड के झुन्ड परिन्दे भेजे।

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

जो उन पर कंकर की पथरियाँ फैंकते थे। फिर अल्लाह ने उन को खाए हुए भूसे की तरह बना दिया।

اٰيَاتُهَا ٤ (١٠٦) سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَّكِّيَّةٌ (٢٩) رُكُوْعُهَا ١

उस में ४ आयतें हैं सूरह कुरैश मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢

कुरैश की उल्फत की वजह से। उन के गर्मी और सर्दी के सफर से उल्फत की वजह से।

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ

फिर उन्हें चाहिए के इस घर के मालिक की इबादत करें। जिस ने उन्हें भूक में

مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

खाना दिया और जिस ने उन्हें खौफ से अमन दिया।

اٰيَاتُهَا ٧ (١٠٧) سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ (١٧) رُكُوْعُهَا ١

उस में ७ आयतें हैं सूरह माऊन मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ

क्या आप ने देखा उस शख्स को जो इन्साफ होने को झुठलाता है? फिर ये वही है जो यतीम को धक्के

الْيَتِيْمَ ۝٢ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣ فَوَيْلٌ

देता है। और मिस्कीन को खाना देने की तरग़ीब नहीं देता। फिर हलाकत है

لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥

उन नमाज़ियों के लिए। जो अपनी नमाज़ को भूल जाते हैं।

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝٦ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

जो दिखावा करते हैं। और मामूली चीज़ को भी मना करते हैं।

اٰيَاتُهَا ٣ (١٠٨) سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ (١٥) رُكُوْعُهَا ١

उस में ३ आयतें हैं सूरह कौसर मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢

बेशक हम ने आप को कौसर अती की। इस लिए आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और कुरबानी कीजिए।

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝٣

यक़ीनन आप का दुशमन वही दुम कटा है।

اٰيَاتُهَا ٦ (١٠٩) سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ (١٨) رُكُوْعُهَا ١

उस में ६ आयतें हैं सूरह काफिरून मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢

आप फरमा दीजिए ऐ काफिरो! मैं इबादत नहीं करता उस की जिस की तुम इबादत करते हो। और न तुम

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٣ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝٤

इबादत करते हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। और न मैं इबादत करने वाला हूँ उस की जिस की तुम इबादत करते हो।और न

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٥ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝٦

तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन है।

اٰيَاتُهَا ٣ (١١٠) سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ (١١٤) رُكُوْعُهَا ١

उस में ३ आयतें हैं सूरह नस्र मदीना में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۝١ وَرَاَيْتَ النَّاسَ

जब अल्लाह की नुसरत और फ़त्ह आ जाए। और आप इन्सानों को देखें के

يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۝٢ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ

अल्लाह के दीन में फौज दर फौज दाखिल हो रहे हैं। तो अपने रब की हम्द के साथ

رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

तस्बीह कीजिए और उस से मग़फ़िरत तलब कीजिए। यक़ीनन वो तौबा क़ुबूल करने वाला है।

(١١١) سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ (٦) — اٰيَاتُهَا ٥ — رُكُوْعُهَا ١

उस में ५ आयतें हैं — सूरह लहब मक्का में नाज़िल हुई — और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ

अबू लहब के दोनों हाथ टूटें और वो मरे। न उस के काम आया उस का माल

وَمَا كَسَبَ ۝٢ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣ وَّامْرَاَتُهٗ ۭ

और न उस की कमाई। अनक़रीब वो शौले वाली आग में दाखिल होगा, वो भी और उस की बीवी भी।

حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

जो लकड़ियाँ उठाने वाली है। उस की गर्दन में मज़बूत बटी हुई रस्सी होगी।

(١١٢) سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ (٢٢) — اٰيَاتُهَا ٤ — رُكُوْعُهَا ١

उस में ४ आयतें हैं — सूरह इख्लास मक्का में नाज़िल हुई — और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ

आप फरमा दीजिए के वो अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज़ है। न उस से कोई पैदा हुवा

وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

और न वो किसी से पैदा हुवा। और न उस के बराबर का कोई है।

(١١٣) سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ (٢٠) — اٰيَاتُهَا ٥ — رُكُوْعُهَا ١

उस में ५ आयतें हैं — सूरह फलक़ मक्का में नाज़िल हुई — और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ وَ

आप फरमा दीजिए मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूँ। उस की मखलूक़ के शर से। और

مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝٣ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

अन्धेरी रात के शर से जब वो आ जाए। और गिरहों में दम करने

فِي الْعُقَدِ ۝٤ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

वालियों के शर से। और हसद करने वाले के शर से जब वो हसद करे।

اٰيَاتُهَا ٦ (١١٤) سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ (٢١) رُكُوْعُهَا ١

उस में ६ आयतें हैं सूरह नास मक्का में नाज़िल हुई और १ रूकूअ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝١ مَلِكِ النَّاسِ ۝٢ اِلٰهِ

आप फ़रमा दीजिए मैं पनाह मांगता हूँ तमाम इन्सानों के रब की। तमाम इन्सानों के बादशाह की। तमाम इन्सानों

النَّاسِ ۝٣ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝٤ الَّذِىْ

के माबूद की। वसवसा डालने वाले, पीछे हटने वाले (शैतान) के शर से। जो

يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝٥ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

वसवसा डालता है लोगों के दिलों में। वो जिन्नात में से हो और इन्सानों में से हो।

फहरिस्त